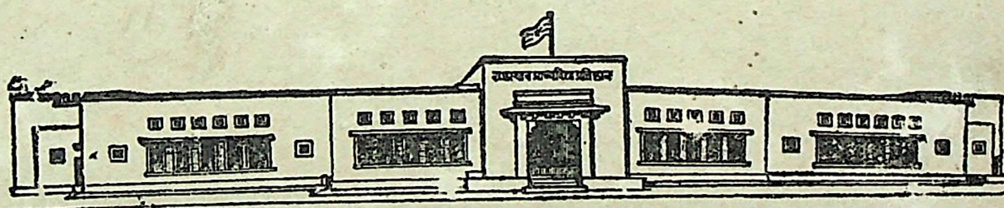
राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—फतहसिंह, एम.ए., डी.लिट्.

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ६६

गजगुणरूपक-बन्ध



प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR.

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक — फतहसिंह, एम.ए., डी.लिट्.

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ९९

गजगुणरूपक-बन्ध

सम्पादक

श्री सीताराम लालस

सम्पादक

राजस्थानी सबद कोस

प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

१९६८ ई०

मूल्य मूल्य ६.७५ रु.

प्रथमावृत्ति १०००

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिलभारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

फतहसिंह, एम.ए.,डी.लिट्.
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थाङ्क ९९

गजगुणरूपक-बन्ध

प्रकाशक

राजस्थान-राज्याज्ञानुसार

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

१९६८ ई०

वि० सं० २०२५ भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८९०

प्रधान - सम्पादकीय

श्री सीतारामजी लालस द्वारा सम्पादित प्रस्तुत ग्रन्थ का मुद्रण सन् १९६५ में प्रारंभ हो गया था, परन्तु संभवत इस ग्रन्थ को अधिकाधिक उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण बनाने की लालसा से निरन्तर नये परिशिष्टों को जोड़ने का कार्य चलता रहा और साथ ही हमारे विद्वान् सम्पादक को 'राजस्थानी सबद कोस' के विराट् प्रयत्न में भी लगा रहना पड़ा; इसीलिये ग्रन्थ के प्रकाशन में विलम्ब हो गया है।

कवि केशवदास के इतिहास-प्रसिद्ध चरित-नायक महाराजा गजसिंह उन अमर वीरों में से एक जगमगाते रत्न हैं जिनके अलौकिक शौर्य पर भारत माता गर्व कर सकती है। परन्तु इन वीरों के शौर्य का लाभ भारत भूमि को न मिल कर दूसरों को मिला यह जान कर विहारी के दोहे के उस बाज की याद आती है जो दूसरों के लिये ही अपनों का संहार करता रहा। फिर भी महाराजा गजसिंह पर लिखित यह प्रशस्ति-काव्य उनके अनुपम वीरता का अत्यन्त हृदय-ग्राही चित्रण करने के कारण हमारे सैनिकों के लिये स्फूर्ति और प्रेरणा का स्रोत बन सकता है।

अपने वर्तमान रूप में यह ग्रन्थ केवल 'गजगुणरूपक-बन्ध' काव्य ही नहीं है, अपितु इसके चार बहुमूल्य परिशिष्टों में उन अनेक वीरों की अमर प्रशस्तियाँ भी हैं जिनका उल्लेख गजगुणरूपक-बन्ध में हुआ है। ये प्रशस्तियाँ राजस्थानी-साहित्य की अमरनिधि हैं जो सहस्रों की संख्या में हमारे प्रतिष्ठान में तथा अन्यत्र संगृहीत हुई हैं और जिन में से कुछ का प्रकाशन श्री सौभाग्यसिंहजी शेखावत के सम्पादन में पृथक् रूप से हमारे द्वारा हो रहा है। यदि सम्पादक महोदय के शब्दों में 'इन गीतों ने इतिहास की उन महान् विभूतियों की स्मृति को अपने अंचल में आश्रय देकर जीवित रखा है जिनको कि इतिहास तक ने भुला दिया। स्यात् ही ऐसा कोई वीर योद्धा इन गीतों द्वारा प्रशंसित तथा सम्मानित होने से बचा हो।' इन गीतों का सम्पादन करते हुए प्रत्येक गीत के साथ विस्तृत शब्दार्थ तथा बहुमूल्य टिप्पणियाँ दी गई हैं और गीतों को सुबोध बनाने का स्तुत्य प्रयास किया गया है।

गजगुणरूपक-बन्ध नामक मुख्य ग्रन्थ का सम्पादन चार प्रतियों के आधार पर किया गया है और पाद-टिप्पणी में विस्तारपूर्वक पाठान्तर दिये गये हैं। राजस्थानी सबद कोस के सुयोग्य निर्माता द्वारा निर्धारित पाठ निःसंदेह अत्यन्त प्रामाणिक होगा और विद्वत्समुदाय में प्रशंसा प्राप्त करेगा। ग्रन्थ के प्रारंभ में जो शोधपूर्ण भूमिका दी गई है, उसमें कवि के जीवन तथा ग्रन्थ-सम्बन्धी महत्त्व-पूर्ण विषयों का समावेश हो गया है। कवि के विषय में लिखते हुए सम्पादक महोदय ने कुछ नये तथ्यों के आधार पर अपने उस मत को भी बदल दिया है जो उन्होंने राजस्थानी सबद कोस की प्रस्तावना में पृ. १४२ पर कवि की जन्म-भूमि के विषय में व्यक्त किया था। उदयपुर की शोध-पत्रिका (वर्ष १८, अंक १) में श्री सौभाग्यसिंह शेखावत ने संभवतः सर्वप्रथम कवि के पिता सदमल की छत्री पर उत्कीर्ण लेख के आधार पर कवि की जन्मभूमि छींडिया-नामक ग्राम में बतलाई थी, श्री लालसजी ने इस लेख के अतिरिक्त उस ताम्रपत्र का भी उल्लेख किया है जो जोधपुर के तत्कालीन महाराजा शूरसिंह ने सदमल को उक्त ग्राम प्रदान करते हुए जारी किया था। भूमिका और परिशिष्ट में और भी बहुत सी उपादेय सामग्री दी जा सकती थी, परन्तु ग्रन्थ का कलेवर बढ़ने के भय से तथा ग्रन्थ के प्रकाशन में और अधिक विलम्ब होने की आशंका से उसका देना संभव नहीं हो सका है।

ग्रन्थ के सुन्दर सम्पादन के लिये विद्वान् सम्पादक को मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। साधना प्रेस के व्यवस्थापक श्री हरिप्रसादजी पारीक भी ग्रन्थ के सुन्दर मुद्रण के लिये बधाई के पात्र हैं।

—फतहसिंह

माघ शुक्लापूर्णिमा सं. २०२४
जोधपुर

विषय - सूची

पृष्ठांक

पृष्ठांक

पृष्ठांक

भूमिका

ग्रन्थ-परिचय

राजस्थानी भाषा को समृद्ध बनाने वालों में केसोदास गाडण का प्रमुख स्थान हैं। तत्कालीन सामाजिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों के बीच राजस्थानी में वीर-काव्य-परम्परा में आपने भी अपने आश्रयदाता जोधपुर-नरेश महाराजा गजसिंह के अद्‌भुत पराक्रम, रण-कौशल एवं गुण-गरिमा के चित्रण के लिए 'गज-गुण-रुपक-बन्ध' वीर-काव्य की रचना की। इसमें महाराजा गजसिंह द्वारा किये गये सभी युद्धों का (विशेष रूप से सम्राट् जहांगीर के विद्रोही शाहजादा खुर्रम के विरुद्ध संवत् १६८१ में हाजोपुर पाटन के पास टोंस नदी के किनारे उसके वीर सेनापति भीम सीसोदिया के साथ किए गए युद्ध का) सांगोपांग वर्णन है। वीररस-निरूपण में कवि को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। रण-सज्जा, फौज की चढ़ाई, सैनिकों का वर्णन, घोड़ों का वर्णन एवं योद्धाओं के पारस्परिक युद्ध का वर्णन विस्तृत एवं विविध स्थानों पर होने के कारण ग्रंथ का कलेवर अवश्य बढ़ गया है, परन्तु भाषा की प्रौढता एवं ओजस्विता के कारण यह वर्णन भार नहीं प्रतीत होता। युद्धों के अंगों एवं उपांगों का वर्णन करते हुए कवि ने तत्कालीन सामाजिक जीवन एवं राजनीतिक स्थितियों का भी चित्रण किया है और प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख होने से, यह ग्रंथ इतिहास के लिये भी महत्त्वपूर्ण हो गया है।

ग्रंथसार

ग्रंथारम्भ में पंचदेव—सरस्वती, गणेश, महादेव, विष्णु और सूर्य्य की वन्दना की गई है तथा राठोड़-वंश का सम्बन्ध रघुवंश से मान कर कवि ने राव सीहा के पुत्रों का वर्णन किया है। कन्नोज-नरेश जयचन्द राठौड़ के पौत्र राव सीहा के पुत्र—आसथान, अज और सोनग थे। आसथान ने मारवाड़ में खेड पर, अज ने शंखोद्धार (द्वारिका के निकट) पर तथा सोनग ने ईडर (गुजरात) पर अधिकार करके अपने-अपने राज्य स्थापित किए। इसका उल्लेख करने के पश्चात् कवि ने महाराजा गजसिंह तक राठोड़ों की संक्षिप्त वंशावलि भी देदी है।

उक्त प्रस्तावना के पश्चात् कवि ने बलिष्ठ ग्रहों के योग में कुंअर गजसिंह के जन्म[1] का वर्णन किया है और साथ ही उनकी बाल्यकाल की सुन्दरता का

१—कुंअर गजसिंह की जन्म-तिथि—वि० सं० १६५२ (ई० सन् १५९५) कार्तिक शुक्ला ८ गुरुवार।

संकेत करते हुए, उनकी तरुणावस्था, पुरुषार्थ, दानवीरता, विद्वत्ता, संगीत-प्रियता आदि गुणों का उल्लेख किया है।

सवाई राजा शूरसिंह तथा कुंअर गजसिंह के राज्य-वैभव के भव्य वर्णन के साथ कवि ने राज-प्रसादों, बाजारों, तालाबों, उपवनों आदि का भी सुन्दर वर्णन किया हैं। तत्पश्चात् ग्रंथ में सवाई राजा शूरसिंह के, बादशाही राज्य के रक्षार्थ, दक्षिण में जाने[1] तथा उनकी अनुपस्थिति में उनके राज्य का कार्य-भार कुंअर गजसिंह द्वारा संभाले जाने का उल्लेख है।

शाही अफसर अब्दुल्ला खाँ के आग्रह पर महाराज-कुमार गजसिंह ने मेवाड़-राज्यान्तर्गत नाडोल-प्रान्त पर अधिकार करके उसकी रक्षा का कार्य-भार सम्हाला[2]। राजकुमार ने इस अवसर पर नाडोल, जोजावर, चांमळौद (चाणोद) खोड, सादड़ी, कुम्भलमेर आदि में विजय प्राप्त कर सोलंको, बालेसा, सींधल, सीसोदिया आदि राजपूतों का दमन किया।

महाराणा अमरसिंह के पुत्र राजकुमार कर्णसिंह ने अपने साथियों सहित अहमदाबाद से ऊँटों पर शाही खजाने को लेकर आगरे जाने वाली व्यापारियों की एक कतार का मारवाड़ के गाँव दूनाड़े तक पीछा किया। दैवयोग से कतार पहले निकल गई और ये निराश होकर वापिस लौट रहे थे। इसकी खबर भाटी गोविंददास को लगी जो उस समय नाडोल के थाने पर था। उसने मालगढ़ और भाद्राजून के पास इनका सामना किया। कुछ समय तक लड़ाई हुई; दोनों ओर के कई योद्धा काम आये। अन्त में कुंअर कर्णसिंह को भागना पड़ा[3]।

१—तुजुक जहांगीरी (पृ० ७४, अनुवादक-व्रजरत्नदास) में शूरसिंह का वि० सं० १६६५ (ई० सन् १६०८) में खानखाना अब्दुर्रहीम के साथ दक्षिण की तरफ जाना लिखा है। इसकी पुष्टि वीर-विनोद भाग २, पृ० २९६ तथा डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा कृत "जोधपुर राज्य का इतिहास" खण्ड १, पृ० ३७१ में भी होती है।

२—तुजुक जहांगीरी, पृ० ७५ के अनुसार मेवाड़ के लिए वि० सं० १६६६ की आषाढ़ बदि ५ (ई० सन् १६०९ के जून में) को महाबत खां के स्थान पर अब्दुल्ला खां नियुक्त हुआ। इसी अब्दुल्ला खां ने उग्रसेन के पुत्र कर्मसेन से सोजत छुड़ाकर इस शर्त पर राजकुमार गजसिंह को दे दिया कि वे नाडोल के थाने का प्रबन्ध करें। डॉ० ओझा कृत "जोधपुर राज्य का इतिहास" भाग १, पृ० ३७२ से भी इसकी पुष्टि होती है।

३—(अ) वीर विनोद; भाग २. पृ० २२६

(ब) पं० रामकर्ण आसोपा का "मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास" पृ० ३३६

(स) पं० विश्वेश्वर नाथ रेऊका "मारवाड़ का इतिहास" भाग १, पृ० ११८

(द) डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा कृत "जोधपुर राज्य का इतिहास" भाग १, पृ० ३७३,

"गोइंद पेखि जैसळगिरो, बाघ बीसमो वीरवर।
रिणवार रांण "अमरेस" रा, कुरंगां जेम गया कुंग्रर"। (पृ० १८)

महाराज-कुमार ने पुराना (सिरोही के राव सुरतांण द्वारा रायसिंह को मारने का) बदला लेने के लिए सिरोही पर आक्रमण किया और विजय प्राप्त की[1]।

महाराणा अमरसिंह को अधीन करने के उद्देश्य से बादशाह जहांगीर स्वयं एक बड़ी सेना लेकर अजमेर आया[2]। महाराणा ने शाही सेना का बहादुरी से मुकाबिला किया। तब बादशाह ने फरमान भेज कर राजा शूरसिंह को मेवाड़-विजय करने के लिए बुलाया। शूरसिंह ने शाही फौज के साथ मिल कर मेवाड़ वालों को पहाड़ों में भगा दिया। इसी बीच राजा शूरसिंह के बुलाने पर राजकुमार गजसिंह भी भाटी गोविंददास को लेकर उदयपुर पहुँच गये जिससे उसका बल और भी बढ़ गया। पिता ने राजकुमार गजसिंह को बादशाह से मिलाने के उद्देश्य से ही बुलाया था। महाराज ने महाराणा को संधि करने के लिए तैयार किया तथा संधि की बातें तय करवा कर गोगूंदे में शाहजादे खुर्रम व महाराणा को मिलाया। तत्पश्चात् महाराणा के ज्येष्ठ पुत्र राजकुमार कर्णसिंह को साथ लेकर शाहजादा खुर्रम बादशाह के पास अजमेर पहुँचा। बादशाह ने राजकुमार करणसिंह का यथोचित सत्कार किया[3]।

मेवाड़-विजय के उपरान्त बादशाह राठौड़ वीरों—महाराजा शूरसिंह, राजकुमार गजसिंह, केहरि (राजा कृष्णसिंह जो महाराजा शूरसिंह के भ्राता, करमैत या कर्मसेन करन राजा कृष्णसिंह का भतीजा) और भाटी गोविंददास आदि की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई शक्ति से सशंकित हुआ। उसने उनको परस्पर लड़ाकर निर्बल करने का विचार किया और एक दिन, जब राजकुमार गजसिंह बादशाह के दरबार में मुजरा करने आये, तब बादशाह ने उनके सामने ही

१—दूसरे ग्रन्थों में यह घटना इस प्रकार मिलती है कि सिरोही के राव की ओर से ऐसा प्रस्ताव हुआ कि पुराने वैर को समाप्त कर दिया जाय—
(अ) पं० रामकर्ण आसोपा "मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास" पृ० ३३७
(ब) पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ का "मारवाड़ का इतिहास" भाग १, पृ० १८९.

२—मेरे निजी संग्रह में संगृहीत ग्रंथ (कवि हेम सांमोर कृत) "भाखा चरित्र" में बादशाह का उस समय ज्यारत के बहाने से अजमेर आना लिखा है—

३—डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा कृत 'जोधपुर राज्य का इतिहास" भाग १, पृ० ३७८, वीर विनोद भाग २, पृ० २३७, २३८;—

केहरि (कृष्णसिंह) को भाटी गोविन्ददास को मारने के लिए उकसाया। यह देख कर राजकुमार गजसिंह ने क्रोधित होकर कहा कि भाटी गोविन्ददास को मारने का प्रयत्न करने वाला स्वयं अपने काल को बुलायेगा। अंत में बहुत कहा-सुनी के बाद दोनों अपने-अपने निवास-स्थान को चले गये। तत्पश्चात् कृष्ण-सिंह ने एक दिन अपने सामन्तों से सलाह करके भतीजे करन तथा चुने हुए साथियों-सहित पिछली रात को गोविन्ददास के मकान पर आक्रमण कर किया। गोविन्ददास ने जाग कर शत्रुओं का मुकाबिला किया और कई योद्धाओं को मारकर स्वयं वीरगति को प्राप्त हुआ। पास के ही मकान में सोये हुए महाराजा शूरसिंह भी हल्ला सुन कर जाग गये और तलवार लेकर बाहर आ गये। उसी समय महाराजकुमार गजसिंह भी अपने साथियों सहित पहुँच गये। युद्ध हुआ; केहरि (कृष्णसिंह) और करन मारे गये, किन्तु कर्मसेन भाग गया। इस युद्ध में दोनों ओर के कई योद्धा काम आये[1]।

बादशाह ने सम्मानपूर्वक सवाई राजा शूरसिंह को अपनी राजधानी जोधपुर जाने के लिए विदा किया। फिर बादशाह ने महाराजा शूरसिंह को कुछ ही समय पश्चात् घोड़ा व सिरोपाव देकर दक्षिण में उपद्रवों को दबाने के लिए भेज दिया[2]। जहां पर उन्हें बराबर सफलता मिलती रही।

जालोर के शासक पहाड़ खां पर बादशाह नाराज हो गया और उसे मरवा डाला तथा जालोर का प्रान्त राजा शूरसिंह को दे दिया[3]। सवाई राजा शूरसिंह

१—वीर विनोद भाग २, पृ० ५२३

डॉ० ओझा कृत "जोधपुर राज्य का इतिहास" भाग १, पृ० ३७९

पं० रामकर्ण आसोपा कृत "मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास" पृ० ३४१-३४२

पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ कृत "मारवाड़ का इतिहास" भाग १, पृ० १९२–१९३ के अनुसार वि० सं० १६७०, ज्येष्ठ सुदी ९ (ई० सन् १६१५ की २६ मई) की रात्रि के पिछले प्रहर में यह घटना हुई।

२—डॉ० ओझा कृत "जोधपुर राज्य का इतिहास" भाग १, पृ० ३८२ के अनुसार शूरसिंह ने वि० सं० १६७२ मार्गशीर्ष वदी ३ (ई० सन् १६१५ की अक्टोबर) को दक्षिण जाने की आज्ञा प्राप्त की; शूरसिंह के दक्षिण में जाने की पुष्टि पं० रेऊ के मारवाड़ इतिहास पृ० १९३ व आसोपा के 'मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास" पृष्ठ ३४४ से भी होती है।

३—"तारीख पालनपुर" सैयद गुलाब मियां-कृत; पृ० १५०-१६०, नवाबसर ताले मुहम्मद खां, पालणपुर राज्य नो इतिहास (गुजराती) भाग १, पृ० ५४–६२

डॉ० ओझा कृत "जोधपुर राज्य का इतिहास" पृ० ३९३; पं० रेऊ कृत मारवाड़ का इतिहास–पृ० १९४–१९५; पं० आसोपा कृत "मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास"—पृ० ३४५;

उन दिनों दक्षिण में थे और शासन का कार्य-भार राजकुमार सम्हाल रहे थे। उन्होंने राजकुमार को जालोर पर अधिकार कर लेने के लिए सूचित किया। जालोर पर उस समय बिहारी पठानों का अधिकार था। गजसिंह ने अपने सामन्तों को बुलाकर सेना इकट्ठी की और जालोर पर आक्रमण कर दिया। बिहारियों की ओर के नारायणदास काबा और कुछ अन्य राजपूत महाराजकुमार गजसिंह की ओर मिल गये और उन्होंने उस जालोर गढ़ को कुछ ही दिनों में फतह कर लिया जिसके लिये अलाउद्दीन को १२ वर्ष लगे थे। एक प्राचीन दोहा प्रचलित है;—

> "बारै बरस अलाउदी, खंप छूटो पड (फीटो) पतसाह।
> चढियां घोड़ां सोनगढ़, तैं लीनो गजसाह।"

जालोर-विजय के बाद गजसिंह ने उग्रसेन के पुत्र कर्मसेन पर जो लाडनू में था, चढाई कर दी। कर्मसेन निर्जल प्रदेशों में भटकता हुआ अरावली पर्वत की ओर चला गया। गजसिंह उसके पीछे लगे हुए थे; वे सोजत पहुँचे। वहां विजय-दशमी के दिन देवी का पूजन करके उन्होंने कर्मसेन पर चढ़ाई कर दी। वह भाग कर मेरों की शरण में चला गया। गजसिंह पहाड़ों में उसके पीछे लगे रहे और उन्होंने मेरों को दण्ड देना शुरू किया। इस पर कर्मसेन अपने प्राण लेकर हाडौती में चला गया।

सवाई राजा शूरसिंह अपनी अन्तिम अवस्था में दक्षिण में ही थे और वहीं महकर के थाने पर वि० सं० १६७६ की भाद्रपद शुक्ला नवमी (ई०सन् १६१९ की १९ तिम्बर) को उनका देहान्त हुआ[१]।

पिता के देहावसान पर गजसिंह आसोप-ठाकुर कूंपावत राजसिंह पर राज्य की रक्षा का भार डालकर स्वयं दक्षिण में बुरहारनपुर चले गये और वहीं पर विजयदशमी को उनका राजतिलक हुआ[२]।

> "झाझा झूळ सुभट्टां पासै।
> बैठो बाप तणै आं भासै॥
> ब्राहनपुर दसरावो थप्पै।
> जोसी तिलक मुहूरत अप्पै॥

१—वीर विनोद भाग २, पृ० ८१८।

२—पं० रामकर्ण आसोपा कृत 'मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास' तथा पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ-कृत 'मारवाड़-का इतिहास' के अनुसार वि० सं० १६७६ की आश्विन शुक्ला १० (ई० सन् १६१९ की ८ अक्तूबर) राज्याभिषेक हुआ।

विजै दसम्मी होम करावै।
विप्रां कन्ता वेद वचावे॥
निध नृप तिलक दियरा खत्र - घोडै।
मिळ मंगळीक किया राठौडे॥१॥"

महाराजा गजसिंह ने अपने पिता के समान दक्षिण के उपद्रवों को दबाने में बहुत सफलता प्राप्त की। अहमदनगर के बादशाह का मंत्री तथा दक्षिणी फौज का संचालक 'अंबर' बड़ा वीर और चालाक पुरुष था। इसने अस्सी हजार सवारों की फौज को शाही सेना के सामने भेजा। इसी फौज में याकूत खाँ-नामक एक वीर ने बादशाह जहाँगीर की सेना को परास्त करने का बीड़ा उठाया था। इसके साथ महाराष्ट्र, बंगाल, कर्णाटक; खान-देश, गोलकुण्डा, बीजापुर तथा कन्नड के हब्सी योद्धा भी थे।

महाराजा गजसिंह को बादशाद ने खांनखांनान् अब्दुर्रहीम के साथ दक्षिण के उपद्रव को दबाने के लिए नियुक्त किया था। महाराजा ने सेना के अग्रभाग (हरावळ) में स्थान-ग्रहण करके उक्त प्रचण्ड दक्षिणी सेना का बड़ी बहादुरी से मुकाबिला किया। खांनखांनान् समय-समय पर मुक्त-कण्ठ से इनकी प्रशंसा करके इन्हें उत्साहित करता रहता था।

यद्यपि वरसिंह बुंदेला रतनसिंह हाड़ा, चांदा सीसोदिया तथा खानखांनान् के पुत्र दाराब खाँ ने महकर के थाने पर मलिक अंबर की विशाल और शक्ति-शाली सेना का मुकाबिला करने से मुंह फेर लिया[1] किन्तु जोधपुर-नरेश महा-राजा गजसिंह ने दो प्रहर तक उससे युद्ध किया और उसके ५०० योद्धाओं को मार कर विजयश्री प्राप्त की।

मलिक अंबर का बार-बार आक्रमण होता रहता था। कवि ने ठीक ही

१— मेरे निजी संग्रह में संगृहीत कवि हेम सामोर कृत ग्रंथ 'भाखा चरित्र' से भी इस बात की पुष्टि होती है:—

'साह तणा ऊमरा, कोटि पैठा ले कांना।
आवै दळ आवरत, तणा दखिणाध दिवांना॥
कुहुक बांण जंबूर, हुए हथनाळि हवाई।
घर गिरवर थरहरं, करै दिनमांन लड़ाई॥
तिण वार सहुं हींदू तुरक, राजासाहि जिहंगीर रा।
राखिहो तुभ्र ओलै रहां, थंतखंभ जोधपुर॥१॥

(पृ० १५ B)

लिखा है कि आषाढ़-मास में जिस प्रकार वर्षा के बादल (ओमें) समय-समय पर उठते रहते हैं, उसी प्रकार दक्षिणी सेना बार-बार आक्रमण करती रहती थी और हर बार महाराजा गजसिंह हरावळ में स्थान-ग्रहण करके उसे परास्त करते थे[1]। एक बार मलिक अंबर ने अचानक शाही सेना को घेर लिया। रसद, इंधन आदि सब वस्तुओं की कमी पड़ गई।

ऐसे अवसर पर महाराजा गजसिंह ने हरावळ में ऐसी वीरता का परिचय दिया कि दक्षिणियों को घेरा उठाने पर मजबूर होना पड़ा।

महकर के थाने पर यह घेरा[2] इस ग्रंथ के अनुसार चार मास तक रहा तथा प्रत्येक ओर के सात-सात सौ सुभट मारे गये। दूसरा घेरा तीन माह तक रहा। मेहकर के उपद्रवों को समाप्त कर महाराजा गजसिंह बुरहानपुर गये। यहाँ भी काली घटाओं के समान दक्षिणी सेना इन पर छा गई। बुरहानपुर घिर गया। खांनखांनान् आदि ने पुनः महाराजा गजसिंह की ओर आशा-भरी नजरों से देखा और उन्हीं की वीरता द्वारा रक्षा हुई।

अब्दुर्रहीम खांनखांनान् ने अपनी ओर से बादशाह जहाँगीर को एक प्रशंसा-युक्त पत्र लिखा कि राठौड़ वीर महाराजा गजसिंह ने हर स्थान पर दक्षिणी सेना को रोका है और विजय प्राप्त की है। इस पर महाराजा गजसिंह को बादशाह की ओर से "दळ-थंभण" (दल – सेना को रोकने वाला) की उपाधि मिली[3]।

१—मेरे निजी संग्रह में संगृहीत—कवि हेम सामोर कृत ग्रंथ 'भाखा चरित्र' के अनुसार भी शाही सेना को जरा भी चैन नहीं मिलती थी :

'नित जरद पैहरिजे, नित पाखरीजे हैमर।
नित राग सिंधवौ, नित निसांण तणा सुर॥
नित ढ़ोवा ढूकड़ा, दळे हुवै वेढाळा।
नित वीर नारद चिरत, संडूर सचाळा॥
आवाज हुवै गाजे अनड़ बहै नाळि, गोळा बहै।
राजा हजूरि राजा तणां, रावत निरछरिया रहै।४॥(पृ० १५ B)

२—पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ के अनुसार भी घेरा तीन माह तक रहा :—
(मारवाड़ का इतिहास, पृ० २००)

३—ओझा कृत "जोधपुर राज्य का इतिहास" भाग १, पृष्ठ ३९०; रेऊ, पृ० २०० तथा २०१ के अनुसार महाराजा गजसिंह ने युद्ध में मलिक अंबर (चंपू) का लाल झंडा छीन लिया था। इस घटना की यादगार के उपलक्ष में तब से जोधपुर के राजकीय झंडे में लाल रंग की पट्टी लगाई जाने लगी, वि० सं० १६७८ में "दलथंभण" की उपाधि मिली।

"साह दिस्स मेलिया, खांनखांनां लिख कागल।
ऐ अजीत रट्ठवड, किता जैं जीता कदल ।।
सबळा सत्र संघरे, छले सबले पडि-गिरिया।
जेथ भिडे दलि पडे, तेथ आडा भुज धरियां ।।
कळि मूळ निभैंभण, कलि-मथण, ऊभो सिरि "अंबर" डहै।
पतिसाह परीछे ए प्रसिध, "दल थंभण" राजा कहै ।।४।।"
रट्ठोड रूप राए दीनो, सुरतांण नांम दलथंभण।
हिंदुवै मुसलमांणो, विरदावियै जोध विरदंता ।।३।।

यद्यपि खानखांनान् महाराजा गजसिंह आदि की सहायता से दक्षिणी सेनाओं की दाल नहीं गलने दे रहा था, किन्तु वह फिर भी बार-बार विभिन्न स्थानों पर उपद्रव करती रहती थी। अतः बादशाह ने शाहजादे खुर्रम को उक बहुत बड़ी सेना का सेनापति बना कर दक्षिण में जाने का हुक्म दिया जिससे वहां के उपद्रव हमेशा के लिए समाप्त हो जायँ।[1]

शाहजादा खुर्रम ने जो उन दिनों बागी होने की सोच रहा था, बनावटीपन से बादशाह के प्रति बहुत भक्ति-भाव दिखा कर उससे शेर सुलतान को मांग लिया और दक्षिण फतह करने का वादा किया। खुर्रम अपनी विशाल सेना के साथ बुरहानपुर पहुँचा। उसने महाराजा गजसिंह को सेनापति बनाया; दक्षिणी सेना भाग गई:—

"ताबीन दीन हिंदु तुरक, अउब पेख आतम सकति।
'दलथंभ' दळा विच थप्पियौ, जंतखंभ सेनाधपति ।।"

इस सफलता पर महाराजा गजसिंह का मंसब ५००० जात का कर दिया[2] साथ ही उन्हें नक्कारा, तोग, सुनहरी साज के घोड़े तथा जालोर तथा साँचोर के परगने दिये:—

१—वीर विनोद, भाग २, पृष्ठ ८१६; डॉ० ओझा– "जोधपुर राज्य का इतिहास" भाग १, पृ० ३६० तथा आसोपा पृ० ३५२ के अनुसार वि० सं० १६७६ (ई० सन् १६२२) में बादशाह ने खुर्रम को भेजा।

२—तुजुक जहांगीरी, जहांगीरनामा, वीर विनोद तथा अन्य ग्रंथों में इस अवसर पर गजसिंह का मसब ४००० सवार का किया जाना लिखा है।

३—वीर-विनोद भाग २, पृ० ३०५। डॉ० ओझा–जोधपुर राज्य–भाग १, पृ० ३६०, रेऊ– "मारवाड़ का इतिहास" पृ० २०१ के अनुसार बादशाह ने महाराज की दक्षिण की इन वीरताओं से प्रसन्न हो कर वि० स० १६७६ की चैत्र सुदि ६ (ई० सन् १६२२ की ११ मार्च) को इन्हें नक्कारा उपहार में दिया।

"महण-रम्भ मथियो, तेग तुडि दक्खण मारी।
पातिसाह हुइ प्रसन, हुकम किय पंच हजारी॥
मंडोवर नर-समंद, सीस मनसप वध्धारे।
दे नग्गारा तोग, तुरी साकति सिंगारे॥
फुरमास सुपारसि मोकली, दिढ़ राजा "दलथंभ" तूं।
जागीर दीध जोगणि-पुरे, कणिया-गिर सांचोर सूं॥"

तत्पश्चात् महाराजा गजसिंह ने मलिकापुर, रोहिण-खेड़ा, बालापुर महकर, निरोह, खिड़की, दौलताबाद, मुरगीपट्टन, खांनदेश, महाराष्ट्र, बराड़, अहमदनगर तथा सेतुबंध रामेश्वर तक सब स्थानों पर दक्षिणी सेना को परास्त कर दिया। इस पर सम्पूर्ण दक्षिणी सेना ने संगठित होकर पुनः महाराजा पर आक्रमण किया। इन्होंने बड़े जोश के साथ अपनी सेना को तैयार कर के प्रत्याक्रमण किया जिससे दक्षिणी सेना भाग गई।

महाराजा गजसिंह ने वैसे तो दक्षिण में कई स्थानों पर विजय प्राप्त की किन्तु उनमें निम्न पाँच स्थान अतिमहत्त्वपूर्ण थे— १ महकर, २ मेल्हाना, ३ बालापुर, ४ बुरहानपुर तथा ५ दक्षिण के शेष प्रान्त। जब साल भर तक दक्षिणी सेनाएँ महाराजा से लगातार परास्त होती रहीं, तो "अंबर" ने सभा कर के कहा कि उत्तरी सेना के सामने अपना पुरुषार्थ नहीं चलेगा और उसने बादशाह की अधीनता स्वीकार कर के संधि करली।

इस प्रकार महाराजा गजसिंह के सेनापतित्व में शाहजादे खुर्रम ने लगभग ढ़ाई-तीन मास में ही दक्षिणियों को अपने अधीन कर लिया और उसने भीम सीसोदिया[1] को भी विदा कर दिया। बादशाह का नूरजहाँ के बहकावे में आ कर खुर्रम को बादशाहत से वञ्चित करने के प्रयत्न करने के कारण शाहजादे खुर्रम के दिल में बादशाह के प्रति विद्रोह की अग्नि जल रही थी, अतः जिस "शेर सुलतान" (शाहजादे खुसरो) को बादशाह से मांग कर अपने साथ लाया था, उसे उसने मरवा डाला:—

"आणियो द्रोह अंतहकरण, पाडी खुरमह पंतरण।
ततकाल "सेर" सुरताण रो, कीधो अज्जुगतो मरण॥२॥ (पृ० १०७)

१—'रेऊ' ने "मारवाड़ के इतिहास" पृ० २०३ में लिखा है:—

"भीम मेवाड़ की उस सेना का सेनापति था, जो उस समय महाराणा कर्णसिंह की तरफ से बादशाही सेना में रहा करती थी। जहांगीर ने भीम को राजा की पदवी तथा टोडे की जागीर दी थी। कुछ समय बाद ही वह बादशाह की कृपा से पांच हजारी मंसब तक पहुँच गया था।"

'शेर सुलतान' (शाहजादे खुसरो) का वध करवा कर शाहजादा खुर्रम खांनखांनान् के साथ बुरहानपुर से मांडव आया। खुर्रम के साथ एक कुशाग्र-बुद्धि ब्राह्मण मंत्री था। इसका नाम सुन्दर था। बाद में इसकी वीरता से प्रसन्न होकर बादशाह ने इसे राजा विक्रमाजीत रायरायान की उपाधि दी थी। शाहजादे खुसरो (शेर सुरतांण) को मरवाने में इसका भी हाथ था।

मांडव पहुँच कर खुर्रम ने महाराजा गजसिंह को अपने पास बुलाया तथा उनकी वीरता की प्रशंसा करते हुये इन से गले मिला। फिर इन्हें जोधपुर जाने के लिए विदा कर दिया। महाराजा अपनी राजधानी लौटे[1]। जहाँ प्रजा ने उनका हृदय से स्वागत किया।

महाराजा गजसिंह लगभग छः मास तक अपनी राजधानी जोधपुर में बड़े ठाट-बाट से रहे। उन्हीं दिनों खबर मिली कि शाहजादा खुर्रम बागी हो गया जिससे शाही-क्षेत्रों में बड़ी उथल-पुथल हो रही है तथा खुर्रम के इस व्यवहार पर बहुत दुःखी व क्रोधित होकर[2] बादशाह ने उसे पकड़ने की आज्ञा दे दी:—

१—डॉ० ओझा 'जोधपुर राज०' भाग १, पृ० ३९०; पं० रामकर्ण आसोपा 'मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास' पृ० ३५२ के अनुसार महाराजा गजसिंह खुर्रम से विदाई लेकर बादशाह के पास गये और बादशाह से आज्ञा लेकर वि० सं० १६७९ (ई० सन् १६२२) के भाद्रपद शुक्ला १० को जोधपुर लौटे।

२—वीर विनोद, भाग २, पृ० २८१, २८२ के अनुसार —बादशाह खास अपनी तुजुक जहांगीरी नामक किताब में निहायत रंज से लिखता है :—

"वह पर्वरिशें और मिहर्बानियें, जो उस (खुर्रम) के हक़ में मुझ से जुहूर में आई हैं, मैं कह सकता हूं कि अब तक किसी बादशाह ने अपने बेटे पर न की होगी; जो कुछ मेरे बाप ने मेरे भाइयों को उहदे दिये थे, मैंने उसके नौकरों को इनायत किये, और ख़िताब व नेज़ा और नक्कारा उनको दिया गया, जैसा मैं सिलसिलेवार इस किताब में पहले लिख आया हूं, पढ़ने वालों से पोशीदा न रहेगा; जिस कदर तवज्जुह और मिहर्बानी उस पर की गई, कलम को उसके लिखने की ताकत नहीं है, जियादा रंज के सबब नहीं लिखा जा सकता, इस वक्त में जब कि सफ़र की थकान और मिज़ाज की कमज़ोरी और आवहवा की ना मुवाफ़क़त मौजूद है, मुझको सवार होकर ऐसे नालायक बेटे की तरफ़ चलना पड़ता है, बहुत से नौकर जिनको बहुत वर्षों तक मैंने पाला था, और अमीरी के दरजे पर पहुंचाया था और वह आज के दिन उज़बक या क़ज़लबाश क़ौम की लड़ाई में काम आते, वे बेदौलत (खुर्रम के लिए बादशाह द्वारा कुपित होकर रखा हुआ नाम) की बदबख्ती से बेफायदा सज़ा को पहुंचे, और मेरे हाथ से ख़राब हुए; लेकिन मैं खुदा का शुक्र करता हूं कि उस बुज़ुर्ग और पाक ने इस कदर हिम्मत और बुर्दबारी मुझको बख्शी है कि इन तमाम तक्लीफ़ों को उठा लूंगा, और

हठ-वादा हजरति, कोपि हटियो काळ'ग्रळ।
प्रळै-काळ उतपात, जांण बंधी वड मंडळ॥
आप मुख कियो हुकम, चोट हुई नग्गारां।
चडे मीच चंचळे, कूच कीयो दळकारां॥
जिहगीर कहै जमरूप हुई. खुरम कहां जाइ बप्पडो।
पैसै पयाळ अंबर चडै, जिहां जाइ वहां पक्कडो॥३॥

एक विशाल शाही-सेना खुर्रम के विरुद्ध रवाना हुई। खुर्रम भी मांडव से दल-बल सहित रवाना[1] हुआ। वह अजमेर से सांभर होता हुआ रणथम्भोर आया।

खुर्रम ने भीम सीसोदिया[2] के पास मेड़ते[3] हुक्म भेजा कि तुम सादूल को हराकर अजमेर पर कब्जा कर लो। खुर्रम की आज्ञानुसार भीम ने अजमेर पर चढ़ाई कर दी। सादूल कायर की तरह पहाड़ों में भाग गया किन्तु भीम उसे पकड़ कर खुर्रम के पास ले गया :—

उतारै अजमेर सूं, खुरम सनमुख आंण।
कर साहै 'सादूळ' नुं, खेलायो खूमांण॥३॥

खुर्रम अपनी सेना के साथ सीकरी पहुंचा। वहाँ के जूझारों ने खुर्रम से युद्ध करने के लिए तलवार चलाने के स्थान पर अपने आपको गढ़ में छुपा लिया।

अपनी उम्र के दूसरे अहवाल की तरह पर पूरा करके आसान कर लूंगा, लेकिन जो बात मेरे दिल पर भारी गुजरती है, और मेरे गैरत्दार मिज़ाज को परेशानी में डालती है, वह यह है कि ऐसे वक़्त में मुनासिब था कि मेरे नेकबख्त लड़के और साफ़ दिल सर्दार आपस में एक इरादा होकर कन्धार और खुरासान की कारगुज़ारी को, जो हिन्दुस्तान की बादशाहत के लिये इज्ज़त है, इख्तियार करते, इस बे-नसीब ने अपने पांव पर कुल्हाड़ी मार कर, इस इरादे को रोक दिया और कन्धार के मुआमले की गिरह मेरे दिल में पड़ी रह गई, जिसका सुलझना देर में होगा, मैं उम्मेद रखता हूं कि बुज़ुर्ग खुदा इन फिक्रों को मेरे दिल से दूर करेगा।"

१—जहाँगीर का आत्मचरित—जहाँगीरनामा (तुज़ुक जहाँगीरी) पृ० ७६२, अनुवादक—ब्रजरत्नदास। प्रकाशक-नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, प्रथम संस्करण, संवत् २०१४—देवीप्रसाद ऐतिहासिक पुस्तक माला २१ के अन्तर्गत।

२—भीम सीसोदिया महाराणा अमरसिंह का छोटा पुत्र था। शाहजादे खुर्रम के बागी होने पर यह बादशाह की सेवा से हटकर खुर्रम की ओर मिल गया।

३—मुहणोत नैंणसी री ख्यात भाग १, पृ० ३०-३१ के अनुसार उस समय मेड़ता बादशाह की ओर से भीम को जागीर में दिया हुआ था।

खुरम पोहतो सीकरी, है खढिए इळकार।
झूंझारे गढ़ झल्लिया, नह झल्ली तरवार।।१।। पृ० १२७

खुर्रम ने खांनखांनान् अब्दुर्रहीम तथा अपनी विशाल सेना के साथ दिल्ली की ओर कूच किया। जब बादशाह से तीन योजन दूर रहा तब उसने अपनी सेना के तीन भाग किये—१. भीम सीसोदिया के सेनापतित्व में, २. सुंदर ब्राह्मण (राजा विक्रमाजीत रायरायांन) के सेनापतित्व में और ३. अब्दुर्रहीम खान-खांनान् के पुत्र दाराब खाँ के सेनापतित्व में। घमासान लड़ाई हुई[1]। दोनों ओर के कई योद्धा काम आये। भीम सीसोदिया ने शाही सेना का बहुत संहार किया। उसी समय खुर्रम का सेनापति सुन्दर ब्राह्मण (राजा विक्रमाजीत रायरायांन) मारा गया[2]।

यद्यपि अब्दुल्ला खां का खुर्रम की फौज में मिल जाने के कारण शाही फौज की पराजय निश्चित थी, किन्तु खुर्रम के मंत्री सुन्दर ब्राह्मण के गोली लगते ही उसकी सेना में खलबली मच गई और उसकी विजय पराजय में परिणत हो गई। दोनों ओर से युद्ध बन्द हो गया। यद्यपि बादशाह की विजय[3] हुई किन्तु वह विजय किन परिस्थितियों में हुई इसके लिए बादशाह विचार में पड़ गया। अब्दुल्ला खां जैसा विश्वस्त सेनाध्यक्ष भी शाही सेवा को छोड़ कर खुर्रम की ओर मिल गया तो दूसरों द्वारा भी उसका अनुकरण करने की सम्भावना थी:—

१—वीरविनोद भाग २, पृ० २८३।

२—जहाँगीर का आत्मचरितः— जहाँगीरनामा (तुजुक जहाँगीरी)—अनुवादक-व्रजरत्नदास, पृष्ठ ७६९ से ७७३ तक में सम्पूर्ण घटना चक्र का सविस्तार वर्णन है। तथाः— मुगल दरबार भाग १— मआसिरुल उमरा (मुगल दरबार के हिन्दू सरदारों की जीवनियां) अनुवादक-व्रजरत्नदास, प्रकाशक-नागरी प्रचारिणी सभा काशी, देवीप्रसाद ऐतिहासिक पुस्तकमाला ९ के अन्तर्गत, प्रथम संस्करण संवत् १९८८ वि०, पृष्ठ ३८३ से ३९५ तक के अनुसार जहाँगीर के अठारवें जलूसी वर्ष हि० सं० १०३२ में परगना कोटला में शाही सेना और शाहजादे खुर्रम की सेना में मुठभेड़ हुई जिसमें शाही सेना के हरावल में नियुक्त अब्दुल्ला खां दस सहस्र फौज के साथ सुन्दर ब्राह्मण (राजा विक्रमाजीत रायरायांन) के साथ बनाई हुई पूर्व योजना के अनुसार शाही सेना को छोड़ कर शाहजादे की सेना में मिलने के लिए दौड़ा। सुन्दर ब्राह्मण भी उसकी तरफ बढ़ रहा था कि एकाएक एक गुप्त गोली आकर उसके शिर में लगी जिससे उसका काम तमाम हो गया।

वीर विनोद भाग २, पृ० ३०६ से भी इसकी पुष्टि होती है।

३—जहाँगीर का आत्मचरित- जहाँगीर नामा (तुजुक जहाँगीरी) अनुवादक व्रजरत्नदास, पृ० ७६९ से ७७३ तक।

घर फूटो घर कारणैं, घर में लग्गी लाहि।
जे जीतो तो हारियौं, दिल्लीवै पतिसाह ॥२॥ (पृ० १४२)

बादशाह का खुर्रम के उपद्रव से दुःखी व चिंतित रहने के कारण, उसके वजीरों ने सलाह दी कि विश्वासपात्र राठौड नरेश महाराजा गजसिंह को बुलाया जाय तो कभी पराजय का मुँह नहीं देखना पड़ेगा:—

वडे वजीरे मंत्रिए, कहियो बयण विचार।
जो आवै राठौड नृप, तो नह आवै हार ॥३॥

बादशाह ने इस सलाह से पूर्ण सहमत होते हुए महाराजा गजसिंह को अपने पास बुलाने के लिए फरमान भेजा जिसमें महाराजा से अपनी लज्जा रखने की प्रार्थना की:—

आप कहै पतसाह अचनग्गल । 'गाजीसाह' कमणा तो जांमल ।
तूं खुरसांण हिंदुवां आगल । किलंबां-रांइं लिखे इम कागल ॥१॥
खांडे-राव सिरै नव खंडां । मारू तो सिर भारथ मंडां ।
भारथ भलायो तो भूग्र डंडां । मांडे तूं थांभां ब्रहमंडां ॥२॥
तूं राजा दलथंभ कहायो । ए भर भार भुजें तो आयो ।
इल साईजादै दुंप उठायो । पातसाह फुरमांण पठायो ॥३॥
हुकम लिखे मोकलियो हजरति । तांय पहूंतो जोधां तख्तति ।
कमध वडी तो पासि करामति । पति मो रखी कहै दिल्लीपति ॥४॥

महाराजा गजसिंह, अपने राज्य का प्रबन्ध करके वि० सं० १६८० के चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की एकादसी को रवाना होकर, वि० सं० १६८० वैसाख सुदि १२, ई० सन् १६२३ ता० १ मई को बादशाह के पास पहुँचे[1]:—

दे नीसांणां घाऊ, चैत सुदी एकादसी ।
चढे कमंधां-राऊ, दिल्लीवै सुरतांण दिस ॥३॥ (पृ० १७१)

महाराजा गजसिंह अपने साथ निम्न सुभटों को लेकर जोधपुर से रवाना हुए। जब महाराजा गजसिंह बादशाह के पास पहुचे तो वह भुजायें पसार कर इनसे गले मिला[2] और कुशल-मंगल पूछ कर इनकी बहुत प्रशंसा की। बादशाह

१—"जोधपुर राज्य का इतिहास" डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा, पृ० ३९१

२—पं० गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने अपने 'जोधपुर राज्य के इतिहास' पृ० ३९२ में जोधपुर राज्य की ख्यात के आधार पर लिखा है कि बादशाह जहांगीर उन दिनों अजमेर में था। उसने शाहजादे परवेज को खुर्रम पर भेजने का निश्चय कर आगरे की तरफ प्रस्थान किया और गजसिंह को भी बुलवाया जो चाडसू (चाटसू) नामक स्थान पर जाकर उससे मिल गया।

ने महाराजा गजसिंह को शाहजादे खुर्रम से युद्ध करने का बीड़ा देकर, शाहजादे परवेज के साथ जाने का हुक्म दिया[1] :—

'परवेज' साह सत्थे, दे कमधज लज भूडंडे।
सुरतांण खुरम मत्थे, दे बीड़ो कीध फुरमांण ॥७॥ (पृ० १७८)

शाहजादे परवेज और महाबत खां की फौज के साथ महाराजा गजसिंह आगे बढ़े। बराड़ के पास युद्ध हुआ जिसमें खानखांनान् अब्दुर्रहीम को कैद किया गया[2]।

१—वीर विनोद भाग २ पृ० ३०६ तथा भाग २ के ही पृ० ८१९ के अनुसार बादशाह से शाहजादा खुर्रम बागी हुआ, उसके मुकाबले के लिए शाहज़ादा पर्वेज और महाबत खां के साथ विक्रमी १६८० ज्येष्ठ कृष्ण ५ (हि० १०३२ ता० १९ रजब = ई० १६२३ ता० १९ मई) को यह (राजा गजसिंह) पांच हजारी जात व चार हजार सवार का मंसब पाकर मुकर्रर हुए, और इनको पहली तरक्की के साथ जालोर और दूसरी तरक्की के साथ फलौदी का परगनह मिला, इसी वर्ष में मेड़ता भी मिल गया। जहांगीर का आत्म चरित—जहांगीरनामा (तुजक जहांगीरी), पृ० ७७७ में बादशाह जहांगीर ने बागी खुर्रम का पीछा करने के लिए शाहजादे पर्वेज के साथ भेजे जाने वा सुभटों में गजसिंह को 'महाराजा गजसिंह लिखा है। अतः इन्हें महाराज की उपाधि पहले मिल चुकी थी या उस समय दी गई होगी।

२—वीर वीनोद पृ० २८४, २८५, २८६ में खानखांनान् अब्दुर्रहीम के कैद होने की घटनाओं का वर्णन निम्न है :—

'शाहजादा पर्वेज बंगाले से शाही खिदमत में हाजिर हुवा। बादशाह जहांगीर ने उसको शाही फौज् का अफसर बनाकर शाहजादे खुर्रम के पीछे रवाना किया और पर्वेज का मददगार महाबतखां हुआ। शाही फौज जब मालवे में पहुंची तो शाहजादे शाहजहां ने भी अपनी फौज उसके मुकाबले को रवाना की, लेकिन रुस्तमखां (जिसको शाहजादे शाहजहां ने अवना दरजे से पच हजारी मंसब देकर गुजरात का सूबेदार बनाया था) भाग कर महाबतखां व पर्वेज की फौज से गए अपने साथियों से जा मिला, जिससे शाहजहां की फौज का इन्तिजाम बिल्कुल बिगड़ गया और कुछ अपने साथी सरदारों से शाहजादे का एतिबार उठ गया, तो जो अपनी फौज थी उसको बुलाकर किले मांडू से नर्मदा के पार होकर बैरमबेग बख्शी को थोड़ी फौज के साथ नर्मदा के किनारे छोड़कर आप किले आसेरगढ़ व बुर्हानपुर की तरफ चला गया, किसी कदर नर्मदा पार जो किश्तियां थीं वे बैरमबेग ने अपने कब्जे में कर ली। इस वक्त मुहम्मद तकी बख्शी ने एक चिट्ठी पकड़कर शाहजादे खुर्रम को नज् की, जो खानखांनान् अब्दुर्रहीम की तरफ से महाबतखां के नाम लिखी गई थी, उसमें शिअर दर्ज था—

सद् कसब नजर निगाह मेदारन्वम्।
वरना विपरीदमे ज़ि बे आरामी ॥

आमा किरि गजदळ रपडिया। खूंदालम कट्टक इम खड़िया ॥
राडि बरारी फूंके पडिया। खांनखांन जंजीरे जडिया ॥१॥'
(पृष्ठ १८६)

शाहजादा खुर्रम वहाँ से भागकर किले आसेरगढ़ व बुरहानपुर होता हुआ उड़ीसा, ढाका (बंगाल) में आया और वहाँ से वह इलाहाबाद व जौनपुर की ओर बढ़ा। इधर महाराजा गजसिंह भी शाही सेना के साथ हरावल (अग्रभाग)

अर्थ :—मुझको सैकड़ों आदमी निगाह रखते हैं, नहीं तो बेकरारी से निकल भागता।

जब यह चिट्ठी खानखांनान् को मय उसके लड़के के तलब करके शाहजादे ने दिखलाई तो उससे कुछ जबाब न दिया गया, इसलिए कैद किया गया।

शाहजहां किले आसेर में बहुतसा खटला मय लौण्डी बंदियों के छोड़ कर गोपालदास राजपूत को वहां का हाकिम बनाने के बाद आप बुरहानपुर की तरफ चला गया।

पीछे से शाहजादा पवज मय महाबतखां के शाही फौज को लेकर नर्मदा नदी पर आया लेकिन बैरमबेग शाहजादे खुर्रम का मुलजिम पेश्तर से ही किश्तियों को अपने कब्जे में कर लेने से दक्षिणी किनारे को तोपखाने व अपने बहादुर सिपाहियों से मजबूत करके लड़ाई को तय्यार था। महाबतखां ने नदी उतरना मुश्किल जान कर खानखांनान् अब्दुर्रहीम को पोशीदा लिखावट से अपनी तरफ मिलाया। उस बूढ़े ने भी महाबतखां के दाव में आकर शाहजादे को फरेब से कहा कि अब सुलह इख्तियार करना बिहतर है, मैं आपका खैरख्वाह हूँ, अगला कुसूर मुआफ कर दीजिए अब हर्गिज खिदमत गुजारी में फर्क न आवेगा। शाहजादा खुर्रम उसके कहने को सच मान गया और कुरआन की सौगन्द दिलाने पर उसको महाबतखां की तरफ रवाना किया, और उसके बेटों को अपने कब्जे में रक्खा, उसको चलते वक्त लाचारी से यह भी कहा कि हर तरह इज्जत हाथ से न देना चाहिए। खानखांनां दक्षिणी किनारे से हुक्म के मुवाफिक सुलह के लिए तहरीरी शर्तें कर रहा था जिससे जंगी लोग मय बैरमबेग के सुस्त हो गये। रात के वक्त शाही फौज के मुलाजिम नदी उतर आये और खानखांनां उनसे मिल गया। बैरमबेग ने भाग कर शाहजादे को इस हाल की खबर दी, शाही फौज ने बुर्हानपुर तक पीछा किया और शाहजादा खुर्रम गोलकुण्डा वगैरह गैर अमलदारी में होता हुआ उड़ीसा की तरफ पहुँचा।

बादशाह जहांगीर ने शाहजादे पर्वेज मय शाही लश्कर व बड़े अमीरों के बुर्हानपुर की तरफ से इलाहाबाद जाने का हुक्म दिया और पर्वेज को यह भी लिखा है कि—'खानखांनान् अब्दुर्रहीम नज़रबन्द रक्खा जावे क्योंकि उसका बेटा दाराबखां शाहजहां के पास है, पर्वेज ने वैसा ही किया।

जहांगीर का आत्मचरित—जहांगीरनामा (तुजुक-जहांगीरी) पृ० ७७७, ७७८, ७९१ से ८०१ तक में भी इसका उल्लेख है।

में रहकर खुर्रम का सामना (मुकाबिला) करने इलाहाबाद, काशी, गया की यात्रा करते हुए टोंस नदी के किनारे कोरटा में पहुँच कर ठहर गये। उस समय खुर्रम का पड़ाव खैरगढ़ में था। इससे दोनों की सेनाओं के बीच केवल दो कोस का फ़ासला रह गया। खुर्रम की सेना के अग्रभाग में महाराणा अमरसिंह का पुत्र सीसोदिया भीम अपने चुने हुए साथियों सहित नियत हुआ। इसके अतिरिक्त अब्दुलाखाँ, दरियाखाँ, पहाड़खाँ, कल्याणसिंह का पुत्र भीमसिंह राठौड़, बलु का पुत्र पृथ्वीसिंह, रामा का पुत्र हरदास तथा खुर्रम की सेना के अनेक योद्धा थे। शाहज़ादे खुर्रम ने बड़े जोश के साथ विशाल शाही सेना का सामना करने की तैयारी की।

शाहजादे खुर्रम ने अपनी सेना के सेनापति भीम सीसोदिया की वीरता का बखान करते हुए उसे उत्साहित किया और युद्ध का सारा उत्तरदायित्व उस पर डाला :—

'तांम रांण सीसोद, खुरम सुरतांण पडिग्गर।
मुझ सेन दळ-थंभ, आज कुंण तूझ बराबर॥
दिल्ली दावा-मुदी, तूं हिंज आगळ है रांणां।
तो दादौ 'संग्राम', ग्रहण मोखण सुरतांणां॥
खूंमांण दळे सुरसांण सूं, कमण जुद्ध मंडै बियौ।
'भीमेण' ऊठि 'अमरेस' रा, तो सिरि नेत परट्ठियौ॥५॥

भीम सीसोदिया ने भी बड़े उत्साह के साथ क्षत्रियोचित शौर्य का परिचय दिया।

शाही सेना के अग्रभाग में शाहजादे परवेज और महाबत खाँ की सलाह से महाराजा गजसिंह रखे गये।

अघपत्ति चढ़ै देव मैं अंस। रजपूत चढ़े छत्तीस वंस॥
मंडोवर राजा मुहरि मंड। डावै ली जोगणि भुजाडंड॥४७॥
राठोड बधे मेळसी राड। मुहरावत सिगळै मारवाड़।
गयणाग लागि ऊससै गात। हूओ हरोळ हिंदुवां छात॥४८॥

महाराजा गजसिंह के साथ आंबेर के राजा जयसिंह, बीकानेर के राजा सूरजसिंह, बुंदेला वरसिंघ देव, सारंगदेव, बहलोल खान, आलम खान आदि सुभट थे। अन्त में घमासान युद्ध प्रारम्भ हुआ। सीसोदिया भीम और महाराजा गजसिंह का मुकाबिला हुआ[२]। सीसोदिया भीम ने बड़ी वीरता

२—पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ 'मारवाड़ का इतिहास' प्रथम भाग पृ० २०३; पं० रामकर्ण आसोपा कृत मारवाड़ का सक्षिप्त इतिहास' पृ० ३५३, ३५४, ३५५ तथा

दिखलाई। उसने जटाजूट (जोताजोत) नामक एक भयंकर हाथी का भी काम तमाम कर दिया। सीसोदिया भीम और महाराजा गजसिंह में परस्पर भयंकर युद्ध हुआ। भीम का शरीर छलनी होगया। उसकी वीरता की जितनी प्रशंसा की जाय, कम है। अन्तिम समय तक लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ। भीम के साथ मानसिंघ सीसोदिया (शक्तावत)[1] कल्याणसिंह सीसोदिया, हरिदास राठौड़, कचरा कूंपावत, हरिसिंह भाटी आदि सुभट भी वीरगति को प्राप्त हुए:—

मानसिंघ सीसोद, भिडे रहियो भांणावत।
गोकळ[2] जीवत-संभ, विढ़े हूओ वड रावत॥
सीसोदो, 'कल्यांण' रहे रावत निम्भंयण।
हरीदास रट्ठवड, रहै 'कचरौ' रिण डोहण॥
हरिसिंघ हेक भाटी रहै, दुल्लह सुरतांणी घडा।
'भीमेण' रहतै 'अमर' रै, रहिया रावत अेतडा॥१०॥ (पृ० २४०)

भीम के मरते ही पहाड़खांन, दरियावखांन, अब्दुलाखां, हृदयनारायण हाडा, सादूळसिंह प्रमार[3], गयासबीर खोजा आदि भी खुर्रम के साथ कायरों की भांति भाग गये। यह युद्ध वि० सं० १६८१ की कार्तिक की पूर्णिमा शनिवार को हुआ था:—

सोळह सै संमत्त, हुओ जोगणपुर चाळै।
सम्मै एकासियै, मास काती वडाळै॥
पूनम थावरवार, सरद रित है पाळट्टी।
वीर खेत पूरब्ब रित्त हेमंत प्रघट्टी॥
सुरतांण खुरम भागौ भिडे, चाडि चकथां चक्कवै।
गजसिंघ प्रवाडौ खट्टियौ, बहै भीम चीतौडवै॥२०॥

कोपि तांम कमधज पछै उरि कूंत पहारै।
पयोधरा खडहडै हंस आया बळ हारै॥
—माला चरित्र पृ० २२A।

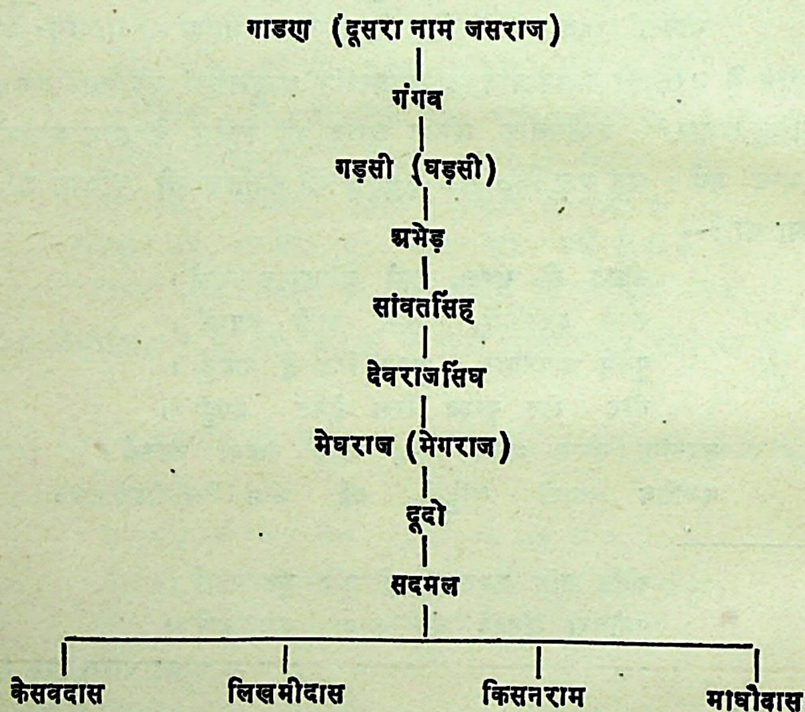
१—वीर विनोद, भाग २, पृ० २८६।

२—यह गोकळदास उक्त मानसिंह शक्तावत का भाई था। भीम के साथ बादशाह की सेना से मुकाबिला करते हुए यह भी पूर्ण घायल हो गया था। महाराजा गजसिंह द्वारा घायल अवस्था में युद्धस्थल से हटा लिया गया, जिससे बच गया। यह महाराजा गजसिंह के भूवा का लड़का भाई था। बाद में महाराजा ने इसे अपने राज्य में जागीर दी।
—मुहणोत नैणसी री ख्यात भाग १, पृ० २६

३—वीर विनोद भाग २ पृ० २८७।

कवि केसोदास गाडण—एक परिचय

'गाडण' चारण-जाति के अन्तर्गत एक शाखा है। इस शाखा के चारणों एवं उनके निजी गांव 'गाडणां' के सम्बन्ध में कवि बांकीदास ने अपनी ख्यात[1] में लिखा है—'पसायत (फरसारांम) गाडण री बेटी नाम मेळी (महळी) आढ़ा नूं परणायी—मेळी रो सावको बेटो हो जिण नूं मारने पसायत (फरसरांम) रा बेटा आढां री जमी अपणाय गाडणां नामक नगरी बसायी वाप कनै (जयसलमेर में)।' गाडण शाखा के सभी चारण इसी गाडणां गांव से निकले माने जाते हैं। यह भी सत्य है कि इस गांव पर अद्यावधि गाडण-शाखा के चारणों का ही अधिकार रहा है। पुष्कर (अजमेर) में करणी-मंदिर के पुजारी और चारणों के गुरु महाराज श्री रामदासजी पाराशर ब्राह्मण की बही पृष्ठ २४५ पर गाडणों की वंशावली[2] दी है जो यहाँ उद्धृत की जाती है :—



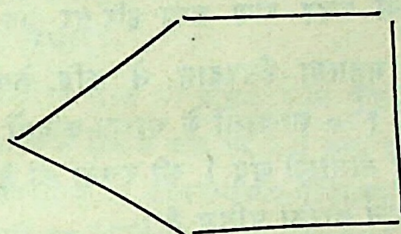
उपर्युक्त वंशावली के आधार पर गाडण की नवमी पीढ़ी में सदमल हुआ। वह बड़ा ही योग्य व्यक्ति था। इसकी योग्यता और कुशाग्रबुद्धि से प्रभावित

१—बांकीदास ख्यात-बात संख्या २१८७, पृ० १८०।

२—इसी प्रकार की वंशावली चारणों के राव (भाट) हीरदानजी रामासणी वालों की बही में बताई गई है।

तत्कालीन लवेरा के ठाकुर गोविंददास भाटी ने उसे अपने पास रख लिया। गोविंददास भाटी उस समय मारवाड़ राज्य का प्रधान था। वह सदमल को अपने साथ जोधपुर-नरेश के पास ले आया। यहां आकर सदमल ने अपनी काव्य-रचना एवं विद्वत्ता के आधार पर जोधपुर-महाराजा शूरसिंहजी से विशिष्ट सम्मान प्राप्त किया। सदमल को दरबारी कवियों के मध्य स्थान मिलने के साथ-साथ संवत् १६५३ में महाराजा द्वारा लवेरा के निकट छींडिया-नामक ग्राम जागीर में प्राप्त हुआ जो अद्यावधि सदमल के वंशजों के अधिकार में है। छींडिया-ग्राम की जागीर के प्रमाण में महाराजा शूरसिंहजी ने ताम्रपत्र बनवा कर दिया जिसकी नकल निम्न है :—

श्री परमेश्वरजी



सही

श्रीकृष्णजी

सिधश्री महाराजाधिराज श्री सुरिजसिंघजी बचनातु चारण सदू (सदमल) गांडण नूं मया करै गांव १ छींडीयौ उदकी अंबा रै पत्र लिखी दियौ। षेत्र २ वी सोयलामां है। षेत्र २ वी चाराळिया मां है छीडीया भेळा घाती देसी संवत् १६५३ वृषे वदि १२ दुवे श्रीमुख

गाडण-वंशावली से स्पष्ट है कि कवि केसोदास गाडण प्रसिद्ध कवि सदमल गाडण का सब से बड़ा पुत्र था। लिखमीदास, क़िसनदास और माधोदास इनके तीन और छोटे भाई थे। प्रारम्भ में कवि केसोदास अपने पिता को जागीर में प्राप्त ग्राम छींडिया में ही रहे। उनके पिता सदमल गाडण का देहावसान संवत् १६६९ में हो गया। गांव छींडिया की श्मशान-भूमि में सदमल गाडण की स्मृति में छतरी बनी हुई है जिसके शिला-लेख को यहां उद्धृत करना उपयुक्त ही होगा—

"स्वस्ति श्री आईनाथ सत्य संवत् १६६९ पोह सुदी १३ सोमवार दिन छत्रड़ी गाडण सदूजी सिर केसव लिखमीदास किसना माधवदास कांम करायो ....देवलोक"

पिता की भांति कवि केसोदास ने भी अपने काव्य-चातुर्य एवं व्यक्तित्व के प्रभाव से जोधपुर-नरेश महाराजा गजसिंह जी का राज्याश्रय प्राप्त किया।

महाराजा गजसिंहजी को अपने जीवन-काल में अनेक युद्ध लड़ने पड़े। कवि केसोदास ने इन युद्धों में प्रायः महाराजा के साथ ही रहे और उन्होंने महाराजा के रण-कौशल एवं उनकी शूरवीरता की प्रशंसा की। कवि केसोदास गाडण स्वामिभक्त तो थे ही परन्तु इसके साथ-साथ ईश्वरभक्त भी थे। ईश्वर में इनकी अटूट आस्था एवं अनुपम श्रद्धा थी। इनके समकालीन कवि महात्मा ईसरदास ने जिस प्रकार 'हरिरस' की रचना की है उसी प्रकार केसोदास गाडण ने भक्ति-विषयक 'विवेकवारता' ग्रंथ की रचना की। 'हरिरास' के सम्बन्ध में कवि केसोदास ने महात्मा ईसरदास की प्रशंसा करते हुए निम्न सोरठा कहा है—

जग प्राजळ तो जांण अक दावानळ ऊपरा।
राचियो रोहड़ रांण समंद हरि सूर वत ।।

इसके प्रत्युत्तर में महात्मा ईसरदास ने कवि केसोदास की कविता से प्रभावित होकर कहा कि १२० शाखाओं के चारण-कवियों ने अपने परमार्थ के लिए ही 'विवेकवारता' (नीसांणी छंद) की रचना की है। इसके सम्बन्ध में महात्मा ईसरदास का निम्न सोरठा प्रसिद्ध है :—

नीसांणंद नीसांण केसव परमारथ कियो।
पोह स्वारथ परमांण, सौ वीसोतर वरण सिर ।।

महात्मा केसोदास के सम्बन्ध में यह प्रसिद्ध है कि वे गेरुवे वस्त्र ही धारण करते थे और अपने आप को गोरखनाथ की शिष्य-परम्परा में मानते थे।[1]

१—इतिहास-प्रसिद्ध नेता मुंहता नैणसी अपनी संगृहीत गांवों की तवारीख में छीड़िया ग्राम के विषय में निम्न प्रकार से लिखा है—

छीड़ीयो राजा श्री सूरसिंघजी रो दत्त गाडण।
सदू दूदावत नूं हमै माधोदास बेटो सदू रो चारण ।।

इसी पृ० १—यह किंवदंती प्रचलित है कि बाल्यकाल में खेलते हुए एक स्थान पर कवि केसोदास की भेंट एक साधु से हुई। चारण-जाति का जान कर साधु ने बालक केसोदास से कुछ कविता कहने के लिए कहा, तब उसने अपने पिता द्वारा रचित महाराजा शूरसिंघजी की प्रशंसा का एक गीत सुनाया। इस पर साधु के यह पूछने पर कि वह किसी साधु के बारे में भी कुछ जानता है तब केसोदास ने निम्न दोहा सुनाया—

सोहे मुद्रा सोवनी मुकुट जटा सिर माथ।
अमर हूओ घर ऊपरै रंग हो गोरखनाथ ।।

इस सम्बन्ध में यह बात प्रचलित है कि एक समय राव रतन हाडा के निमन्त्रण पर वे बूंदी गए। इस समय उनके साथ एक अन्य कवि भी था। केसोदास साधु के समान ही गेरुवे वस्त्र धारण किए हुए थे और साथ वाला व्यक्ति सुन्दर वेश-भूषा में था। इसलिए राव रतन ने इसे ही प्रसिद्ध केसोदास समझकर उसका अत्यधिक मान-सम्मान किया और कवि केसोदास खड़े ही रह गए। केसोदास वहां से शीघ्र लौट पड़े। लौटते समय महल की सीढ़ियों से उतरते हुए, उन्होंने राव रतन के सम्बन्ध में अनेक दोहे कहे जिनमें से बहुत से अप्राप्य हैं। एक दो दोहे यहाँ द्रष्टव्य हैं—

गीतां दूहां कवतडां मूळ न राचै मन्न।
कपड़ो नूर खुदाय रो रीझै राव 'रतन्न'॥

कवि के जन्म-संवत् पर विचार—

पर्याप्त खोज के अनुसार आज भी प्रसिद्ध कवि केसोदास गाडण के जन्म-संवत् के विषय में प्रामाणिक रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता, केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है। ईश्वर-काव्य-गुम्फिका प्रथम भाग के अन्तर्गत प्रकाशित हरिरस की भूमिका में सम्पादक ठा० किशोरसिंहजी बार्हस्पत्य ने यह प्रमाणित किया है कि ईसरदासजी का जन्म-संवत् १५९५ में हुआ था। जैसा कि पूर्व के पृष्ठों में कहा जा चुका है, कवि केसोदास ने महात्मा ईसरदास के हरिरस की प्रशंसा की और ईसरदास ने कवि केसोदास-कृत विवेकवारता की प्रशंसा की।

केसोदास ने अपने 'गजगुण-रूपक-बंध' की रचना 'विवेक-वारता' के बाद में ही की, क्योंकि कवि गज-गुण-रूपक-बंध में मेवाड़ के राणा भीम सीसोदिया की मृत्यु-संवत् १६८१ लिखता है जो प्रामाणिक है, जब कि विवेक-वारता की प्रशंसा करने वाले महात्मा ईसरदास की मृत्यु के पश्चात् भी केसोदास अनेक वर्षों तक जीवित रहे। इस सम्बन्ध में एक यह भी प्रमाण है कि संवत् १६८३ में जोधपुर-नरेश गजसिंह ने केसोदास को सोबड़ास-नामक गांव जागीर में दिया था। अतः यहां यह स्पष्ट हो जाता है कि केसोदास महात्मा ईसरदास के समकालीन होते हुए भी आयु में उनसे छोटे थे। ईसरदास की मृत्यु-संवत् १६७५ के आस-पास मानी जाती है और इस समय उनकी आयु ८० वर्ष के लगभग थी

यह दोहा सुनकर साधु बड़ा प्रसन्न हुआ। कहते हैं कि यही साधु के आशीर्वाद से केसोदास को बाबा गोरखनाथ के दर्शन हुए। उन्होंने मन ही मन समझ लिया कि यही साधु गोरखनाथ है।

तो यह स्वाभाविक ही है कि संवत् १६८३ में महाराजा गजसिंहजी से ग्राम प्राप्त करने वाले कवि केसोदास का जन्म ईसरदास के जन्म-संवत् १५६५ के बाद ही हुआ होगा।

कवि केसोदास गाडण के पिता की मृत्यु-संवत् १६६६ के पूर्व ही हो चुकी थी, जैसा कि उनकी छतरी (स्मारक चिन्ह) के शिलालेख से प्रकट है और ईसरदास की मृत्यु-संवत् १६७५ के आस-पास मानी जाती है। दोनों ही के मृत्यु संवत् में कोई विशेष अन्तर नहीं हैं। कवि ईसरदास और केसोदास के पिता सदमल गाडण भी समकालीन ही थे। स्व० श्री किशोरसिंहजी बार्हस्पत्य ने हरिरस की भूमिका में महात्मा ईसरदास का जन्म-संवत् १५६५ सिद्ध किया है। इसके आधार पर सदमल गाडण का जन्म-संवत् अनुमानतः १५८५ और १५६० के मध्य ही ठहरता है। केसोदास सदमल के सब से बड़े पुत्र थे और यदि २५ वर्ष की आयु में सदमल के प्रथम पुत्र का जन्म माना जाय, तो कवि केसोदास का जन्म संवत् १६१० से १६१५ के बीच ही माना जा सकता है।

कवि केसोदास के जन्म-संवत् के निर्णयार्थ एक अन्य घटना भी विचारणीय है। केसोदास के समसामयिक कवि पृथ्वीराज राठौड द्वारा प्रसिद्ध ग्रंथ 'वेलि किसन रुकमणी री' की रचना-संवत् १६३७ में की गई। ग्रंथ की उच्चता एवं उसमें प्रकट अद्भुत कवित्व-शक्ति ने तत्कालीन कवि-समाज में उक्त रचना को पृथ्वीराज राठौड़ द्वारा रुचि होने में सन्देह उत्पन्न कर दिया। यह शंका की जाने लगी कि इस प्रकार की रचना किसी चारण कवि द्वारा ही की जा सकती है। इस पर महाकवि पृथ्वीराज राठौड ने इस शंका के निवारणार्थ कवियों का सम्मेलन किया जिसमें मारवाड़ के चार प्रसिद्ध चारणों को आमन्त्रित किया। ये चार कवि[1] माधोदास दधवाड़िया, केसोदास गाडण, माला सांदू तथा दुरसां आढा थे। चूंकि वेलि की रचना-संवत् १६३७ में हुई और १६५७ में इस ग्रंथ के ग्रंथकार पृथ्वीराज राठौड का स्वर्गवास हो गया। अतः यह सम्मेलन निश्चय ही संवत् १६४५ के आस-पास ही हुआ होगा; क्योंकि जब ग्रन्थ की रचना संवत् १६३७ में हुई तो इसके पश्चात् कुछ समम इसकी प्रतियाँ लिखने में लगा होगा और फिर इसकी प्रसिद्धि फैलने में ८-१० वर्ष का समय तो अवश्य ही लगा होगा।

१—'वेलि क्रिसन रुकमणी री' राठौड महाराज पृथ्वीराज-कृत, सम्पादक—ठा० रामसिंह व पं० सूर्यकरण पारीक, प्रकाशक हिन्दुस्तानी एकेडमी प्रयाग सन् १६३१ प्रथम संस्करण भूमिका पृ० ४६, ४७, ४८।

कार राठौड पृथ्वीराज का जन्म संवत् १६०६ में हुआ था और वेलि की रचना उन्होंने ३१ वर्ष की आयु में संवत् १६३७ में की थी। यदि चारण-कवियों के सम्मेलन को संवत् १६४५ के आस पास होना तथा उसमें कवि केसोदास की आयु ३०-३५ वर्ष के मध्य मानी जाय, तो उनका जन्म संवत् १६१० व १६१५ के मध्य ही ठहरता है। कवि केसोदास वेलि से बहुत प्रभावित हुए और इन्होंने इसकी प्रशंसा की।[1] इस पर महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ ने गाडण की प्रशंसा उन्हें गोरखनाथ का अनुयायी मान कर की—

केसो गोरखनाथ कवि, चेलो कियो चकार।
सिघ-रूपी रहता सबद, 'गाडण' गुण-भंडार॥

कवि केसोदास गाडण की मृत्यु कब हुई इसके सम्बन्ध में भी कोई प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं हुई है। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि कवि लगभग १०० वर्ष तक जीवित अवश्य रहा है, क्योंकि वि० सं० १७०१ में आगरे में अमरसिंह राठौड़ अपनी कटार का जौहर दिखाकर वीरगति को प्राप्त हुआ तब कवि ने अमरसिंह राठौड तथा उसके लिए लड़कर वीरगति प्राप्त करने वाले बलू चांपावत आदि के लिए गीत कहे हैं[2]। इससे यह तो स्पष्ट ही है कि संवत् १७०१ तक तो कवि के जीवित होने के ठोस प्रमाण-प्राप्त हैं।

साहित्यिक विवेचना

गाडण केसोदास-कृत 'गज-गुण-रूपक-बंध' में तत्कालीन जोधपुर महाराजा शूरसिंह के पराक्रमी युवराज गजसिंहजी के शौर्य-वर्णन द्वारा वीर-भाव-निरूपण का ही मुख्य लक्ष्य रहा है। महाराजा गजसिंहजी अद्वितीय वीर पुरुष थे। कवि को ऐसे पराक्रमी वीर के आश्रय में रहने का अनुपम सौभाग्य प्राप्त हुआ।

१—कवि केसोदास गाडण द्वारा 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' की प्रशंसा में कहा हुआ छप्पय यहां उद्धृत है—

वेद बीज जळ विमल सकति जिण रोपि सद्धर।
पत्र दोहा गुणपुहुप, वास लोभी लखमीवर॥
पसरी दीप प्रदीप, अधिक गहरी आडंबर।
जिकै सुद्ध मन जपै तेउ फल पांमै अम्मर॥
विस्तार कीध जुग जुगा विमळ धन्य क्रिश्ण कणहार धन।
अम्रत वेलि पीथळ अचळ, तैं रोपी कल्याण तन॥

२—अमरसिंह राठौड़ व बलू चांपावत की मृत्यु पर केसोदास गाडण द्वारा रचित गीत इस ग्रन्थ के परिशिष्ट में दिए गए हैं।

काव्य के प्रारम्भ में कवि-कर्म-परम्परानुसार मंगलाचरण-हेतु पंचदेव की स्तुति की गई है। तत्पश्चात् वीर-काव्य के नायक महाराजा गजसिंहजी की वंशावली का वर्णन है। मरुधर-नरेश शूरसिंहजी के कुल में उत्पन्न गजसिंहजी के बाल्य-काल का मनोहर वर्णन किया गया है। धीर-वीर गजसिंह जी में वीरता के लक्षण बाल्य-काल में ही प्रकट होने लगते हैं—

गात मेर गज भीम, महाजोधा ऊतळी बळ।
भुजां-डंड परचंड, जेम गंगाजळ ऊजळ।।
किरणा कळकळ कमळ सकळ झाळाहळ निम्मल।
तेज-पूंज राजांन, धीर कांधोधर धम्मळ।।

महाराजा शूरसिंहजी बादशाही साम्राज्य के विरोधी शत्रुओं के दमन के लिए जब दक्षिण में चले गए तो उनकी अनुपस्थिति में कुंअर गजसिंहजी राज्य-कार्य-भार स्वयं सम्हालते हैं और अपनी इस प्रारम्भिक अवस्था में ही बालेसा, सींघल, सीसोदिया आदि राजपूतों को परास्त कर अपने राज्य का विस्तार कर लेते हैं—

सोलंकी सारे मछर मारे ढंढोळै पहाड़।
बालीसा बोए फौजां ढ़ौए मळवट्टे मेवाड़।।
सींधळ संघारे बोल उतारे, मेले दळ कळि मूल।
खागे खूमांणां रेहलि रांणा निज थांणा नाडूळ।।

इसी बीच अवसर निकाल कर कवि नगर, बाजार, तालाब व उपवन-वर्णन द्वारा वस्तु-वर्णन का चमत्कार भी प्रस्तुत करता है।

काव्य का समस्त कथानक युद्धमय वातावरण से ही परिपूर्ण है। उदात्त नायक गजसिंहजी के शौर्य का वर्णन कर कवि ने उनका चरित्र पूर्णरूप से उभारा है। बादशाह जहाँगीर स्वयं युवराज गजसिंहजी के अद्भुत शौर्य-प्रदर्शन से प्रभावित थे। उन्होंने शाही दरबार में युवराज का सम्मान किया। बादशाह जालोर के शासक से नाराज थे अतः उन्होंने जालोर का प्रांत शूरसिंहजी को दे दिया। राजकुमार गजसिंहजी ने जालोर को अपने अधिकार में करने के लिए चढ़ाई की और वहाँ विहारी पठानों के साथ घमासान युद्ध कर अनेक पठानों को खेत रखा और विजय प्राप्त की—

भिळै कोट खग चोट बडा कमधां वरियांमां।
पड़ै राडि पट्टांण, चंद रवि चाडे नांमां।।
जाळंधर पलटियो, बडो रिण जंग भारथ करि।
बीहारी बिढ़ दियो, कियो साको झिणियागिरि।।

महाराजा शूरसिंहजी के निधन पर वि० सं० १६७६ में गजसिंहजी राज्य गद्दी पर आसीन हुए। महाराजा शूरसिंहजी अपनी अन्तिम अवस्था में दक्षिण के उपद्रवियों का दमन करने गए हुए थे अतः पिताजी के कार्य को पूरा करने के उद्देश्य से गजसिंहजी भी अपने राज्य का कार्यभार आसोप ठाकुर राजसिंह को सौंप दक्षिण में बुरहानपुर चले गए। वहाँ रहते हुए आप बादशाही-विद्रोहियों को दबाने में पूर्ण सफल हुए। प्रत्येक युद्ध में महाराजा गजसिंहजी की हरावळ (सेना के अग्रभाग) में स्थिति उनके अद्भुत पराक्रम का ही परिचायक है—

खाँन बरावा खड़कियो, ले मत्थै भर भार।
'गजण' कटक्कां हुई मुहिर, कळि मध्यण जोधार॥

× × ×

महम्मद चढ़े बहलो लखां, अै वैं पिट्ठांण अणी।
चालिया चढे चतुरंग दळ, मुहि दे मंडोवर धणी॥

× × ×

सुहड़ साखेत सगळौ सम्रोधा।
हुआ हरबल्ल 'रिणमल्ल' 'जोधा'॥

× × ×

गज-गुण-रूपक-बंध महाराजा गजसिंहजी के दक्षिण के युद्धों के वर्णन का ही काव्य है। युद्धों में महाराजा की रणसज्जा, उनका हरावल में स्थान, रण-कौशल और अरि-दल का संहार ही कवि का मुख्य लक्ष्य रहा है—

दळ भंजे दिखणाधरा, की गज बंध हटक्क।
गा नर सिंघ संपेखियो भूतां तण कटक्क॥
दल भंजे डेरा फरळि गमि दखणीं दहवाट।
गज केसरी धांसाडियो दोहणां वाळे दाट॥

× × ×

दक्खणी सेन आया अवांहं, पक्खरे तुरी पहिरै सनांहं॥
फाबि चतुरंग फोजां अचाळं, छप्पन कोडी फिरैं मेघमाळं॥

राजस्थानी साहित्य के वीर-काव्यों में सेना-वर्णन के लिए विशेष रूप से जोगियों की जमात से उपमा दी जाती है। यह मौलिक सूझ कवि केसोदास गाडण की है। कवि ने इसी वीर-काव्य में—

असरंग विभूत सनाह उपावै, लोह छत्तीस सिंघार लियं ।
सिध बारह पंथक तेरह साखा, 'केहरि' गोरखरूप कियं ।।
कमधज्ज तजे मनमोह कायाचौ, वीर तिसोह विसतयरियं ।
ततले निरबांण क राजतियाग, गोपीचंद भरत्थरियं ।।

जोगियों की जमात के साथ रूपक बांध योद्धाओं का सिद्ध - पुरुषों के अनुकूल वर्णन कर सेना का सजीव चित्र ही प्रस्तुत नहीं किया है, अपितु सैनिकों की अन्तर्भावनाओं को भी मुखरित कर दिया है । साधु-समाज के सिद्ध-पुरुषों को जिस प्रकार संसार के प्रति कोई मोह नहीं रह जाता और वे सांसारिक वृत्तियों से निर्लिप्त होकर ईश-आराधना में लवलीन हो जाते हैं उसी प्रकार युद्ध की ओर कूच करने वाले सैनिक भी सांसारिक मोह माया से पूर्ण विमुख हो जाते हैं । स्थूल संसार के प्रति विमुख होने की यह भावना ही उन्हें विजयश्री प्राप्त करने में सफल करती है—

बड रावत ऊससिया तिण वेळा, एम सुणे भुज आंमळता ।
ललकार हुवो भड आवे लासां, छोड़े तेज तुरी छिलता ।।
वरियांम लंगांण पलांण बणावो, अेस उपाड़ै ऊकड़ता ।
परचंड हुसंड किया तहि पक्खर, अंबर सांमा ऊछलता ।।

कवि ने काव्य की निरन्तरता में देश-काल की परिस्थितियों को भी प्रकट किया है । बादशाही साम्राज्य का जहाँ तहाँ विद्रोह हो ही जाता था । जालोर के पठानों का उपद्रव, दक्षिण के अफगान सरदारों का विरोध बादशाही साम्राज्य के प्रति असंतोष ही प्रकट करता है । शासक-वर्ग में वीरों के प्रति सम्मान की भावना भी विद्यमान थी । स्वयं बादशाह जहाँगीर ने गजसिंह की सफलता पर प्रसन्न हो पुरस्कार प्रदान किया था—

महण रंग मत्थियौ, तेग तुडि दक्खन मारी ।
पातिसाह हुइ प्रसन, हुकम किय पंच हजारी ।।

× × ×

मंडोवर नर - समंद सीस मनसप वधारे ।
दे नग्गारा तोग तुरी साकति सिंगारे ।।
फुरमांस सुपारसि मोकळी दिढ रामा दळथंभ तूं ।
जागीर दीध जोगिणपुरै कणियागिर सांचोर सूं ।।

सेना के कूच के वर्णन के साथ-साथ कवि ने रण में उन्मत्त वाजि-सेना का भी जो ओजस्वी वर्णन किया है वह भी द्रष्टव्य है—

चढ़िवा काज चंचळ। वाळि छूट वेंगागळ।
हरड़ किहाड़ा हीर। मांणके बोर हमीर।
गुरड़ सीहा गुलाल। चीतला चोरंगी चाल।
कविला काला केकांण। कमेत पंच किल्यांण।

× × ×

चौरंग दंत गयंदा चडंत, पाखांण भीत प्रांठू पडंत।
घूनी विसाल चौड़ी घडेय, मांणां गुण घाते आपड़ेय॥

सेनावर्णन, युद्धवर्णन आदि से कवि को अवकाश ही नहीं मिलता। अनायास ही जोधपुर में महाराजा के स्वागत के समय कवि श्रृङ्गार रस को भी छू लेता है—

गजबंधी गढ़ आवियौ, मेरी घाड वळेय।
जोवै मांहो जाळियां, गोरी गोख चढ़ेय।
गजबंधी बाधा विजै, मोती उच्छाळेय।
लूंण उतारै राइ-धी, चडियै अट्टाळेय।

इसमें, मिलन की सहज स्वाभाविक प्रफुल्लता को प्रकट किया गया है। इसी समय कवि ने नख-शिख वर्णन कर उक्ति-चातुर्य का परिचय भी दिया है—

के बाळा राइ-कुंअरि, केय मुग्धा कुळवंती।
के मध्या मांणणी, जिसी सूरज आयंती॥
पूगळभा पदमणी, कठिण असतन गज कुंभह।
चंपकवरनी तरणि, जंघ विपरीतक रंभह॥

पिक बांण जांण वेणी पनंग, हिरणाखी हंसा - गयणि।
रंगमहल सिंघ राजांन सुर, रमति राज - पुत्री रमणि॥

महाराजा गजसिंहजी जिस थोड़े से काल के लिए जोधपुर में आकर निवास करते हैं तभी तक के लिए कवि युद्ध से अवकाश पाकर शृंगार रस में रम जाता है। लेकिन शृंगार वर्णन के लिए कवि को अधिक समय नहीं मिलता। बादशाह जहांगीर के पुत्र खुर्रम का विद्रोह पुनः महाराजा को रण के लिए आमन्त्रित कर देता है। कवि पुनः वीर रस का सहारा लेकर अपने काव्य को आगे बढ़ाता है।

विद्रोही खुर्रम अपने दल-बल सहित सीकरी पहुँच कर अपनी सेना सुनियोजित करता है और वहां से दिल्ली की ओर कूच करता है। महाराजा गजसिंहजी के नेतृत्व में एक विशाल सेना खुर्रम को मार्ग में ही रोक लेती है। यहीं दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध होता है। युद्धवर्णन में कवि सिद्ध-हस्त है। कवि ने

शब्द-चित्रों द्वारा युद्ध को पाठकों के समक्ष सजीव बना दिया है। वर्ण-संयोजन एवं शब्द-सौष्ठव से ऐसा प्रतीत होता है मानो पाठक स्वयं युद्ध देखते हुए शस्त्रों की झनकार और रक्तधारा के बहाव को सुन रहे हैं—

खळहळे रत्त परनाळ खाळ, डोळियां पड़ै धड जूह डाळ।
करड के कंध संघाण घट्ट, फरडक्के फीफरां आळ फट्ट॥

× × ×

है तूट तुंड रुळि रुंड मुंड।
भाजै भुसुंड गै हाड गुंड॥

घोर-घमासान युद्ध में अनेक यशस्वी योद्धा खेत रह जाते हैं। अन्त में खुर्रम की फौज में खलबली मच जाती है और बागी शाहज़ादे की फौज भाग छूटती है। महाराजा गजसिंहजो को युद्ध में विजयश्री प्राप्त होती है।

समस्त काव्य में कवि गाडण ने जहाँ एक ओर सजीव युद्ध-चित्रण करते हुए काव्य के प्रमुख नायक महाराजा गजसिंहजी के अद्भुत रण-कौशल एवं अपूर्व पराक्रम का दिग्दर्शन कराया है वहाँ इतिहासप्रसिद्ध घटनाओं का वर्णन-नियोजन भी उचित रीति से किया है। घटनाओं से सम्बन्धित स्थलों एवं व्यक्तियों के नाम के साथ-साथ जहाँ तिथियों का वर्णन हुआ है उससे इतिहास-निर्माण में भी सहयोग प्राप्त होता है—

सोलह सै संमत्त हूओ जोगणपुर चाळै।
सम्मं एकासिये मासा काती वडाळै॥
पूनम थावर वार सरद रित है पालट्टी।
वीर खेत पूरब्ब रित्त हेमंत प्रघट्टी॥
सुरताण खुरम भागौ भिड़ै, चाडि चकथा चक्कवै।
गजसिंघ प्रवाड़ौ खट्टियौ, वहै भीम चीतोडवै॥

रसास्वादन

'गज-गुण-रूपक-बंध' के वस्तु-विवेचन के आधार पर यह स्पष्ट है कि प्रस्तुत वीर-काव्य के कथानक का मूल आधार जोधपुर महाराज गजसिंहजी की दक्षिण फतह एवं शाहजादा खुर्रम के साथ युद्ध की घटनायें हैं। समस्त कथानक आदि से अन्त तक युद्ध के वातावरण से ही आवेष्ठित है। अतः यह स्वीकार्य ही है कि इस वीर-काव्य का प्रमुख रस वीररस है। रीतिकालीन कवियों की परम्परा रही है कि वे अपने स्वरचित ग्रन्थों में प्रायः सभी रसों का समावेश करने के लिए प्रयत्नशील रहे हैं। राजस्थानो में रचित साहित्य भी इस

परम्परा से अछूता नहीं रह सकता। राजस्थान में अभी तक अधिकांश साहित्य राज्याश्रय में ही विकसित हो रहा था। कविगण वीर-रस की भूमिका पर ही साहित्य-सृजन कर रहे थे, फिर भी नवों रसों को अपने एक ही कथानक में एकत्रित करने से चूकते नहीं थे। कवि केसोदास गाडण ने भी अपने वीर काव्य 'गज-गुण-रूपक-बंध' के कथा-सूत्र में नवों रसों का नामोल्लेख कर इस परम्परा को निभाया है। यह तो मान्य है कि मात्र रस-नामोल्लेख से रस की निष्पत्ति सम्भव नहीं, काव्य-मर्मज्ञों के अनुसार तो यह ग्रंथ में दोष ही हो सकता है, अतः गज-गुण-रूपक-बंध में काव्य के प्रमुख वीर-रस के अतिरिक्त जिन अन्य रसों की परिगणना हो गई है उनकी विवेचना आगे की पंक्तियों में की जायेगी।

वीर रस—

गज-गुण-रूपक-बंध वीर-रस-प्रधान काव्य है। भरत मुनि ने वीर-रस की गणना शृंगार, रौद्र तथा बीभत्स आदि मूल रसों के साथ ही की है। वीर-रस का सम्बन्ध उत्तम प्रकृति वालों के साथ है। इसका स्थायी भाव उत्साह है—

'अथ वीरो नाम उत्तमप्रकृतिरुत्साहात्मकः।'

—ना० शा० ६ : ६६ ग

स्थायीभाव उत्साह का उदय, वीर आश्रय के हृदय में प्रतिनायक, शत्रु आदि आलम्बन विभावों के दर्शन से उत्पन्न होता है और उद्दीप्त होकर अनुभवों द्वारा प्रकट होकर एवं अनेकानेक संचारियों द्वारा पुष्ट होकर रस निष्पन्न होता है। यद्यपि वीर चार प्रकार के माने गए हैं—युद्धवीर, दयावीर, दानवीर और धर्म-वीर, तथापि युद्धवीर की परिस्थितियाँ अन्य सभी से भिन्न हैं। यह होते हुए भी स्थायी भावउत्साह सभी का एक ही है।

गज-गुण-रूपक-बंध महाराजा गजसिंहजी के युद्धों के वर्णन का ग्रंथ है। इसका प्रमुख नायक उदात्तधीर, उत्तम-प्रकृति-पुरुष वीरवर गजसिंहजी हैं। ग्रंथ में गजसिंह तथा इनके प्रतिनायक केहरि (कृष्णसिंह) करन, कर्मसेन, खुर्रम, सीसोदिया भीम, पहाड़खां, कल्याणसिंह सीसोदिया, हरिदास राठौड़, हरिसिंह भाटी आदि के युद्धोत्साह का सांगोपांग वर्णन हुआ है।

उठियो तिणवार वडो उतळी बळ सूरजसिंघ सह बळ।
कोपनळ काळ भुजाळ कमंधज दोमजि भंजण सत्रुदळ॥
किरणावळि सूरजि जेम कळक्कळ घूण घजब्बड़ खेड़ धणी।
चख लाल कियां मुखचोळ भरम्रह मेळै भूहां मूंछ अणी॥

तथा

ऊठियौ 'गजण' बरजागि आगि। जुड़िवा जडागि गयणागि लागि ॥
नीमझै भुज्ज नव सहस नाद। सादूळ सुणे किरि मेघ-साद ॥
वीरत्ति विढ़ेवा विळकुळेय। मुख राग मुच्छ भ्रूंहां मिळेह ॥
चख लाल कीध मुख कीध चोळ। कळकळे तेज विकसे कपोळ ॥

आदि छन्दों से स्पष्ट है कि वीरनायकों के हृदय वीरोत्साह से किस प्रकार परिपूरित हैं। योद्धा युद्धातुर प्रतीत हो रहे हैं। हो भी क्यों नहीं, स्थायीभाव के आलम्बन प्रतिनायक शत्रु के विभाव समक्ष है—

"केहरि" कहियो सांभलो ए खत्रीपण राह।
बोल न जाये सूरिमां काया जाइ त जाह ॥

× × ×

उठियौ राउ भाटी लागे, अंबरि दोमजि वासिग खांड डहै।
जुध सूतो कुंभकरन्न जगायौ, "गोइंददास" बाजांस ग्रहै ॥

× × ×

तवै 'भीम' वांका 'वचन्नं' तिपारं।
खुमांणे आदू जुद्ध सूं खूंदकारं ॥
हुवै 'भांण' रा भीच आगै दुभल्लं।
'मनौ' गोकळाणंद आखाड़ मल्लं ॥

अर्थात् शत्रु युद्ध के लिए ललकार रहा हो, सेना गज-बाजि सुसज्जित है—

गरजंत गजदल् जूह सब्बळ करै मैंगल् सारसी।
बंधंत चम्मर कसै हैमर पुट्ठि पक्खर आरसी ॥
पक्खरो रोल जल् बोल् किरि हिलोल् सिंध ए।
चतुरंग फवजा चींध धज्जां पुठि गज्जां बंध ए ॥

और धौंसा बज रहा हो—

वे घुरति नौबत्ति, तूर दम्मांण त्रिधाई।
तबल् ताल् कंसाल्, भरे बरघू सहनाई ॥

+ + +

गडि गडि निसांण मेघ मंडांण अंबर भांण रज छाया।

+ + +

गड गडै त्रंबक गोडि, रिणतूर कज्जे रोडि।
त्रंबक रोड़ि खड़े रिण तूरह, कायर कंपति रस्से सूरह ॥

और साथ ही युद्धभूमि में—

गरजंति धनख गुण बांण वणण घण खांडा ।
खडि खडि खाट खडै खडाखड् झाट झडाझड खग'''— ॥

शस्त्रों की खनखनाहट और झनझनाहट हृदय को रोमांचित कर रही हो तो वीरों के हृदय में उत्साह क्यों नहीं जागृत होगा। वीर-हृदयों में उमड़ा हुआ उत्साह शीघ्र ही वीरोचितकृत्यरूपी अनुभवों से प्रकट होता है—

गज हैमर पक्खरै, सिलह सुहडां पहरावै ।
आप कवच ओपवै, सत्रे संग्राम रचावै ॥
डाब लोह खटत्रीस, आभ उपाड़ै ऊंडल् ।
तांखि निलै तिस्सलो, भाग तीजै ग्रहि साबल् ॥
आरूढ हुए 'जै' नांम असि, रवि उग्गमाणि परगड़ै ।
गजसिंघ दमांमा गाजतां, चढ़ि आयो तब चापड़ै ॥

इसी प्रकार—

खीजिया जोध वाहे खडग्ग ।
वहै विपरीत वेला करारी, गजबंधी ऊठियौ तेग भूडंड उभारै ।
कटे कड़ियाल वहै करमाल्, जुटत्त बहादर बाहु अ जुद्ध'''''' ।

आदि अनुभाव वीरों के हृदय में उमड़े उत्साह को प्रकट करने के लिए पर्याप्त हैं। इस प्रकार अनेकानेक अनुभावों के द्वारा युद्ध के लिए परम उत्साह प्रकट करते हुए योद्धा रणोन्मत्त हो युद्ध में जुट जाते हैं—

जोधपुरो राजा जम्म जाल् । केवियां कूंत बाहे कराल् ॥
है घाट पड़ै पाधरी हीच । भारत्थ भिड़ै गजसिंघ भीच ॥

और युद्ध भयंकर रूप धारण कर लेता है—

रिण ताल् खाल् रगत्त । आरांण हू आवत्त ॥
जम जाल् जूटे काल् । करि-माल् काल् कराल् ॥

× × ×

खाल् रत्त खलहलै, जांण वरसाल् नदी जल् ।
गज तुरंग गुड़िया, गुडै भड हूवा गूंछल् ॥
रुंडमुंड रोलियां, भीम पाडियो भुजालौ ।
भारथ कुर-खेत रै, हुओ जुध लंका वालौ ॥

× × ×

सीसोदा कमधजां, जुद्ध मातो जोधारां ।
छाई घोर अंधार, धमस धारा अंगारां ॥

पक्खरिया है पडै, ढहै ढैंचाल् घैंघगर।
जीण साल् ऊजडै, पडै सुहड़ा पंचाहर ॥

× × ×

गज गाह् 'भीम' 'गाजी' व्याहक लाडी लाडलै ॥

और दुर्दान्त युद्ध की विकरालता को देख कवि को विवश होकर निम्न उदाहरणों का सहारा लेना पड़ता है—

जिम अरजण जुध करण, जेम भीम दूसासण।
जिम हणवंत जुध अखं, रामचदह जिमि रावण ॥

+ + +

लखमण इंद्र जितह कियौ, साखि ससि सूरज।
'सूर' उत कियौ जिम 'अमर' सुत जुड गजपत्ती भीम जुध।

इस प्रकार आलम्बनों से उद्दीप्त और अनुभवों से प्रकट वीरोत्साह 'धन्न पराक्रम सूरतन' सुनने की चाह और 'वरे बड़ा वर अच्छरा' आदि संचारियों द्वारा पूर्ण पुष्ट हो जाता है। इस प्रकार प्रस्तुत काव्य में वीर-रस निष्पत्ति को प्राप्त होकर पूर्णोत्कर्ष को पहुँचा है।

महाराजा गजसिंहजी के सभी युद्धों का वर्णन कवि की वीररस वर्णन की निपुणता तो प्रकट करता ही है परन्तु काव्य ग्रंथ के अन्तिम भाग में महाराजा गजसिंह और मेवाड़ के राणा अमरसिंह के पुत्र भीम सीसोदिया के बीच युद्ध का वर्णन सर्वोच्च है—

सीसोदा कमधजां जुद्ध मातो जोधारां
.........................लाडी लाडलै ॥

युद्धोन्मत्त गजसिंह जी को अर्जुन और भीम की उपमायें उस युद्ध-वर्णन को और सत्य बना देती हैं—

जिम अरजण जुध करण जेम भीम दूसासण
....गजपती भीमजुध ॥

रौद्र रस—

सांगोपांग वीर-रस-वर्णन के बीच रौद्र को पहिचानना कठिन सा हो जाता है। कारण भी स्पष्ट ही है कि वीर-रस के स्थायीभाव क्रोध के लिए आलम्बन शत्रु अथवा प्रतिनायक एवं उद्दीपन उनकी चेष्टायें हैं। दोनों के अनुभावों में भी सादृश्य है। कभी कभी रौद्रता में वीरत्व और वीरत्व में रौद्रता का आभास मिलता है। इतना होते हुए भी स्थायोभावों में अन्तर होता है।

इसी कारण से इसकी गणना प्रधान रसों में की गई है। राजस्थानी वीर-रस-काव्यों में वीर-रस के साथ रौद्र-रस के प्रचुर उदाहरण मिलते हैं। प्रस्तुत काव्य में युद्ध की विशेष परिस्थितियों में युद्ध-नायकों में उत्पन्न होने वाली खीझ एवं उनमें उत्पन्न कुपित भाव को कवि ने यथास्थान पर प्रकट किया है।

शाही दरबार में जब स्वयं बादशाह गोविन्ददास को मारने के लिए सरदार केहरि को उकसाता है तो केहरि उत्तेजित होकर गोविन्ददास को ललकारता है—

"केहरि" कहियो पैज करि, ग्रहिए चंद-पहास।
'गोइंद' गिणिया मारियौ, पख एकणि काइ मास।

तो गजसिंह का कुपित होना स्वाभाविक ही है—

"गज बंधी" इस आखियौ करि घूणै करमाल।
"गोइंद" माथै आवसी त्यां सिर आयो काल॥

जहांगीर बादशाह को अपने पुत्र खुर्रम के बागी होने की सूचना मिलने पर उसे क्रोध उत्पन्न हुआ है उसका चित्रण कवि ने अनूठा किया है—

जले पट्ट जहांगीर, दुक्ख लगौ दावानल।
धड़ हड़ि पौरसि धिखै, घ्रित आहुज का मंगल॥

और

हठ वादा हजरति, कोपि हठियौ कालानल।
प्रलैकाल उतपात, जाण बंधी वड मंडल॥
आप मुख कियौ हुकम, चोट हुइ नग्गारां।
चडै भीच चंचलै, कूच कियौ दलकारां॥
जिहगीर कहै जमरूप हुई, खुरम कहों जाइ बप्पड़ो।
पैसे पयाल अंबर चडै, जिहां जाइ तहां पक्कड़ो॥

बीभत्स रस—

युद्ध-वर्णन में जहाँ वीर-कर्म प्रकट करने के भाव से कवि नाना प्रकार के आलम्बनों, उद्दीपनों के द्वारा वीर-नायकों में उत्पन्न उत्साह को विभिन्न अनुभावों से प्रकट कराता हुआ विविध संचारियों से पुष्ट कराता है तब प्रसंगवश बीभत्स के दृश्यों का उपस्थित होना स्वाभाविक हो जाता है। गज-गुण-रूपक-बंध का अधिकांश भाग युद्ध-वर्णन का ही है। रणक्षेत्र में जहां वीर-नायक वीर-रस के स्थायीभाव उत्साह से परिपूरित हो 'भ्रूहां मूछ अणी कर चख लाल' और 'मुख चोल' कर स्वयं काल का विकराल-रूप धारण कर परस्पर बल तोलते हैं—

खग हुए खंडा खंड करि डंडी हुड, रिए भूइ रींहड़ रत रिड़ें ।
बीहारी वडि वडि तूटै घड़ि घड़ि अरिणयां चडि चहि अञ्भ अडै ।
झलूरि करि झरिणहरा दिसि गैरांगरिण तीमछ छरणमरण तेग तणै ।
असमांन अथर बरण रचै रांमाइरण रांम रांवरण उभै रिणै ।।

वहां—

रिए ताल् खाल् रगत, आरांरण हूं आवत ।
खल कंत स्रोणी खाल् पावस्स करि परनाल् ।।
वैताल् वीर मिलिया विहह ।
सीकौतरि सांकरिए महा सह ।।

और

हेकठा हुआ वलि् तणै हेत, पल्हारि वैतर भूत प्रेत ।
खेचरा भूचरा खेतपाल्, कालि्का पुत्र भैरव कंकाल् ।

का दृश्य उपस्थित होता ही है ।

जालोर के पठाणों से युवराज गजसिंह के हुए युद्ध का बीभत्स दृश्य यहां देखियेः—

हसि जोगरिए हुड हुड, गोलीरत गड गड, मंडै खफर पत्र मिल्ँ ।
तिल तिल हुइ टूकड़, वेलं तुर भड़, मच्छक तडफड़ तुच्छ जल्ँ ।
जंबक जख प्रघल मिलिया सम्मल् होऊं हूकल्रत हिल्ँ ।
डाइरिए भख डल् डल् चूंपे चल् वल् पल् भैंरववल् वल् भूत भिल्ँ ।

बागी खुर्रम की सेना के साथ महाराजा गजसिंह ने घोर घमासान युद्ध किया । अनेक शूरवीर धराशायी हुए । रक्त की नदियाँ प्रवाहित हो गईं । ऐसे स्थल पर कवि द्वारा वर्णित बीभत्स दृश्य दृष्टव्य हैः—

नवै कोडि कतियोंरण छप्पन कोडी चौमंडा ।
चौसट्ठी जोगणी, बीस चहै भुज डंडा ।।
रगत पिद्ध बलि् लिद्ध, जपै जैकार सकत्ती ।
कियौ संकर सिंगार रुंडमाल्ा गल् घत्ती ।।
कौतगि दीठ भासंकरह वरे वडा वर अच्छरां ।
राठोड़ दीध रण चाचरहि घूहड़ घवड़ पलच्चरां ।।

भयानक रस—

काव्य का कथानक जब युद्ध की घटनाओं से पूर्ण आवेष्टित है और जहां घनघोर युद्ध के दृश्य उपस्थित हैं वहां भयानक रस की सृष्टि होना संभव ही है । वीर नायक युद्धातुर हो रण के लिए एक दूसरे को ललकारते हैं, धौंसों और तुरही से गगन गूंज उठता है तो प्रस्तुत काव्य का कवि युद्ध में उत्पन्न भयानक स्थितियों के साथ हमारे सम्मुख आ ही जाता है ।

गुढै जूह मद-गंध सेन ग्रनमंध सुभट्टह।
घड वेहड करड कटै को पट्ट भ्रिकुट्टह॥
रगत खाल परिनाल लगै परगां पायाहल।
नवै कुली नागिंद्र हुग्रा स्रोणी बंबाहल॥
ऊजलै हूंत हूग्रो ग्ररण सेसनाग सेहस-फुणी।
तिण वार डरै तिण कारणै, पेख पदमण नागणी॥

फौज के कूच के समय नगाड़ों की घोर गड़गड़ाहट—

बे घुरत्ति नौबत्ति, तूर दम्मांम त्रिघाई।
तबल ताल कंसाल भरे बरघू सहनाई॥

समुद्र की तरह फौज उमड़ना, ग्राकाश में धूल के बवंडर छा जाना है—

खुर रज ऊछली, रजी लग्गी रवि मंडल।
चडी सेस सिरहत्थ पुहवि गाहट पग्गांतल॥
कमठ भार कसमस्स दाढ बाराह खडक्के।
मंडल मेर मेखला घमस धूली खि ढक्के॥

ग्रौर सेना का पर्वताकार एवं विशाल मेघकाय होना—

फाबि चतुरंग फौजां ग्रचाल॑।
छपन कोडी फिरै मेघमाल॑॥

निश्चय ही भयानक स्थिति प्रकट करते हैं।

बागी खुर्रम के विरुद्ध महाराजा गजसिंह के नेतृत्व में शाही सेना का कूच देखिये—

गोधूल गयण लग्गं, साहण उलट्टि सेन समूहं।
है-पाइ गाहि बंका, सर पधरी कीध पहाडहं॥
सरपां नव कुलाणिय, महि मंडल मेर मेखला।
परबत ग्रस्ट-कुलीस, धरणी-धर धूजिया त्रिण ऐ॥

श्रृंगार रस—

युद्धभूमि में ग्रपूर्व रण-कौशल दिखा विजयश्री वरण कर ग्रौर शाही दरबार में सम्मान प्राप्त कर वीरनायक का गर्व से ग्रपने रनिवास में प्रवेश करना ग्रौर वहाँ ग्रपनी लावण्यमयी रानियों से स्वागत में प्रेम-पुष्प एवं प्रेमालिंगन प्राप्त करना ग्रप्रासांगिक नहीं हुग्रा है। वीर काव्य गज-गुण-रूपक-बंध के प्रणेता कवि गाडण ने ग्रपने काव्य में वीर रस का ग्रजस्र स्रोत बहाते हुए यहीं श्रृंगार रस-वर्णन का ग्रवसर प्राप्त कर ही लिया। यद्यपि महाराजा गजसिंह के शौर्य-

वर्णन के साथ शृंगार-वर्णन का कवि का उद्देश्य नहीं रहा है फिर भी स्थिति उपस्थित होने पर कवि ने काव्य-खण्ड में सरसता लाने के लिए स्थिति का लाभ लेते हुए शृंगार-रस का वर्णन कर ही दिया है। प्रारम्भ में कवि ने अन्तः पुर की सुकुमारियों के रूप-सौन्दर्य का वर्णन किया है—

वप सोलह सिणगार वनित्ता। लखण बतीस संजुगत ललित्ता।
सोभा सारिख किरण सवित्ता। दीपै मंदर राज - दुहित्ता।
कनक-लता पत्र वसन्नक कांमणि। भूंहा भमर विराजै भांमिणि।
चपल-नयण प्रफुलत चंदांणण। किरि पेखे हि-त्रिगो कमोदणि।

काव्य के नायक महाराज गजसिंह के रनिवास का वर्णन करते हुए कवि वीर-नायक की वीर-रमणी के नख-शिख-वर्णन का अवसर निकाल ही लेता है। यह नख-शिख वर्णन समीचीन एवं प्रसंगानुकूल ही प्रतीत होता है। अनावश्यक ठेल-पेल नहीं हुई है—

चपल नेत्र सारंग, रेख भ्रूहां मकरंद।
दीपक नासा दिपंत, सरदरैणी मुख-इंदह।
डंसण बीज दाडंम, वेणि-वासंग-भुयंगम।
भटियांणी वर कमध-समद गंगानदि संगम॥

"कलियांण" सधू मोटै कुलहि सुवत महातम सुरपुरी।
इधकार सील अधिक वडै. जमलि कंत जैसल गिरि॥

कवि ने रूप-सौन्दर्य एवं नख-शिख वर्णन के लिए जहाँ विविध उत्प्रेक्षाओं एवं उपमाओं का सहारा लिया वहाँ वीरोचित नायक के कुल की मर्यादा का भी पूरा पूरा ध्यान रखा है—

लोयण चंचल चपल, अचल ध्रू जिम मन धारण।
कडि मयंद मुख इंद दीरघ वेणी अहि दारण॥
मद गयंद गतिमंद, काया जांणै ग्रभ कदलि।
वपि चंपक दल वरण सीस गुंजार करै अलि॥

सत्र साल पठीजै वीरभद्र प्रघट जांम है मह प्रथी।
जाडेचीज 'जसवंत' जांम धु जिसी गंगा भागीरथी॥

महाराजा गजसिंहजी के अन्तःपुर में आगमन के समय कवि ने वीर-नायक की वीर-रमणियों के रूप-वर्णन के साथ मिलन-सुख का भी मनहारी वर्णन किया है। संयोग की कल्पना में अपार सुख की अनुभूति स्वाभाविक ही है—

आज हुआ किल्लांण सह, आज हसंदा मुक्ख।
आप पधारे आंगणै साहिब दीना सुक्ख॥

राजा झूलरि रांणियां सोहै ईहीं भंति।
किरि वेधांणी किरतियां चंदो पूनम रति॥

प्रियतम के पाते ही प्रिया के सभी मनोरथ पूर्ण हो गए और मन-कमल खिल उठा—

सर्व मनोरथ पूरिया, सब्बं पूरी आस।
जांण कमोदणि सिस उदै, तन मन हुआ विकास॥

इस प्रकार कवि ने अपने वीर काव्य में शृंगार की परम्परा को निभाते हुए तत्कालीन सामंती-परम्परा एवं राजमहलों के जीवन की झलक भी प्रस्तुत की है—

एक खड़ी मुख-रूप निहालं। एक खड़ी सिर चम्मर ढ़ालं।
कांमलता पिण कणक वरन्नी। पास खड़ी सुख रास पतन्नी।

+ + +

दे सोतां धूहड़ मूलक्की। चंपक वरन कली किरि पक्की।
सांम सनमुख आवो सक्की। सह बैठी सिणगार चवक्की॥

अलंकार

काव्य में चित्ताकर्षक रमणीयता के उत्पादक अलंकार ही हैं, यह निर्विवाद मान्य है। कविता-कामिनी सभी अंगों-उपांगों से परिपूर्ण होने पर भी अलंकारों के अभाव में सौभाग्यशालिनी हो ही नहीं सकती। गज-गुण-रूपक-बंध में यद्यपि कवि का कर्म अलंकार-निरूपण नहीं रहा है फिर भी वर्णनानुकूल काव्य में अलंकारों का समावेश हो ही गया है। प्रस्तुत रूपकबंध आद्योपान्त पढ़ने से यह तो स्पष्ट हो ही जाता है कि अलंकारों के प्रति ग्रंथकार की न तो उत्सुकता ही रही है और न उदासीनता ही। ग्रंथ के मूल चरित्र महाराजा गजसिंह की वीरता का वर्णन ही कवि का लक्ष्य रहा है। अतः वर्ण्य विषय के साथ अलंकारों का प्रयोग स्वाभाविक रूप से हो गया है। समूचे काव्य में वस्तुवर्णन की धारा अबाध गति से प्रवाहित हुई है। उसी में नाना प्रकार के अलंकारों की उपस्थिति से कविता सौन्दर्याभिमुख हो गई है।

राजस्थानी काव्य-परम्परा का शब्दालंकार वयण-सगाई तो सर्वत्र छाया हुआ है। प्रायः प्रत्येक छंद में, यहाँ तक कि छन्द के हर चरण में वयण-सगाई का पालन हुआ है। ऐसा प्रतीत होता है मानो वयण-सगाई का पालन कवि-कर्म का प्रमुख अंग बन गया है। काव्य में यमक और श्लेष के भी पर्याप्त

उदाहरण प्रस्तुत हुए हैं। इनके अतिरिक्त शब्दालंकार में पुनरुक्तवदाभास तथा वीप्सा के उदारण प्राप्य हैं।

काव्य-ग्रंथ में अर्थालंकारों का प्रयोग भी प्रचुर मात्रा में हुआ है। उपमाओं, उत्प्रेक्षाओं तथा रूपक की बहुलता रही है। यथांस्थान एवं अवसरानुकूल कवि ने अपने उक्ति चातुर्य का भी परिचय दिया है। काव्य में उक्तियों का प्रयोग प्रसंगानुकूल एवं स्वाभाविक हुआ है। काव्य में अलंकार कहीं भी बोझ-स्वरूप नहीं हुए हैं और न ही उनके प्रयोग से वर्णन में कहीं अवरोध ही उपस्थित हुआ है। अनेकानेक स्थलों पर स्वाभाविक रूप से प्रयुक्त अलंकारों के मध्य काव्य-प्रवाह अनवरतरूप से प्रवाहित होता रहा है। रूपक-बंध में प्रयुक्त अलंकारों के कतिपय उदाहरण यहां समीचीन ही होंगे—

अनुप्रास—

'गज-गुण-रूपक-बंध' समस्त काव्य ही अनुप्रास की छटा से आच्छादित है। दोहे और छन्दों आदि के प्रत्येक चरण में अनुप्रास अलंकार किसी न किसी रूप में मिल ही जाता है—

कटै कडियाल वहै करमाल़। कुटक्के कोपर कंध कपाल़॥

\+ \+ \+

विप्पलाँ पलाँ आवलाँ बाढ़। ग्रीधलां खलां साबलां गाढ़॥
साबलां हुलां मँगला सल्ल। ढँचलां ढलां तूलाह ढल्ल॥

वयण सगाई—

राजस्थानी काव्य-साहित्य का यह अनिवार्य शब्दलंकार है। कवि ने मुक्त भाव से इसका प्रयोग अपने काव्य में किया है—

हेम में जडित हीर। जूग्रल़ै मौजा जंजीर।
दूसरे गंगा दवाढ़। जडी कडी जमदाढ़॥

\+ \+ \+

कुंजरां ढूंहरी ढाल कुंभा - थलं।
बादला जांण फाबत बींजा-चालं॥
धम्मली पीयली लाल नीली धजं।
गाजता जांण गोरंभ दीसै गजं॥

वीप्सा—

धडहडि धक धोम वलि़क खग धड़ि धड़ि।
रावत वडि वडि रोस चडै।
गडि गडि नीसांण गयण किरि गडि-ग्रड।
खांडा खडि खडि खाट खडै॥

यमक—

अणुहार अखाडौ इंद्र रौ जोधहपुरी इंद्रपुरी।
'गजसिंघ' इंद्र राजंद्र गति सरब इंद्र सांमग्धरी॥

उपमा—

कवि ने काव्य-ग्रंथ में वस्तु-वर्णन के लिए अनेक उपमाओं का सुसंयोजन किया है—

जिम धायौ जोगेस, बसहु दिख ज्याग विधूसण।
जिम धायौ ग्रह बांण पत्थ गौ ग्रह छाडावण॥
जिम धायौ हणमंत द्रोण - पव्वै उप्पाडण।
जिम धायौ भीमेण दैत लंक मोर विभाडण॥

पित वेरक धायौ फरस - धर संघारण सहसा - रजण।
धायौ कमहध ढिल्ली दलां, जिम अनंत गज - उग्रहण॥

+ + +

चख चंचल मन अचल कमल चख भुहां अलीअल।
तन ऊजल पति रत्त रूप भरता रुचि मंझल॥
केहरी जिम कडि क्रिस्स लगति चालंती गजिंद्रह।
सोभत्ति वेणी सरप हरै धीरज्ज खगिंद्रह॥
कुल मोटे बहुवां कुल धुवां मांन महातम निरवहै।
कण सूप जिहीं ओगण तजे, गुण मोताहल जिम ग्रहै॥

रूपक—

करिभरि कंकण सुकरि नेत्र वाधो सिखरालह।
वीर रस्स वरसोह कंठ लज्जी वरमालह॥
विकट रूप वीदणी, खुरम घड़ कीध आडंबर।
लगन प्रब्ब रणताल धमल मंगल सिंधु-सूर॥
अधपती बहुतरि ऊमरा सतरि - खांन सुरतांण रा।
दलथंभ 'गजण' दुल्लह हुओ जांन सैन जोगणपुर॥

+ + +

चपल नेत्र सारंग, रेख भूहाँ - मकरंद ।
दीपक - नामा दिपंत, सरद वेणी मुख इंद्रह ।।
डंसण - बीज दाडंम वेणि - वासंग - भुयंगम ।
भटियाणी वर कमध समद गंगा-नदि संगम ।।

उत्प्रेक्षा—

प्रचंडं गोलं नाल प्रचंड । बहुंते है कंपियौ ब्रहमंड ।
जुडंत खुरंम ग्रने जिहगीर । तिडां फिरि ग्रंवर उड्डं तीर ।।

+ + +

त्रिज्जडां त्रिजड वाजे नित्रीठ । डंडे हुड गेहरि जांण दीठ ।।
उड्डं तिमच्छ खागां ग्रघात । ग्राकास जांण उल्लका-पात ।।

छंद—

मध्यकालीन साहित्य में छंद-वैविध्य का प्रचुर प्रयोग रहा । हिन्दी-साहित्य के रीतिकाल में लाक्षणिक ग्रंथों की रचना एवं पांडित्य-प्रदर्शन की प्रतिस्पर्धा के कारण तत्कालीन कवियों ने संस्कृत ग्रौर हिन्दी के ग्रनेकानेक छंदों में काव्य-ग्रन्थों की रचना की । इसका प्रभाव राजस्थानी-साहित्य पर भी पड़ा । यद्यपि राजस्थानी-साहित्य में संस्कृत एवं प्राकृत के छंदों का प्रयोग पूर्वकाल से ही चला ग्रा रहा था परन्तु मध्यकाल में राजस्थानी एवं हिन्दी के ग्रनेकानेक छंदों का प्रचुरता से प्रयोग किया जाने लगा । "गज-गुण-रूपक-बंध" में भी कवि ने पचास से ग्रधिक छंदों का प्रयोग किया है । संस्कृत, प्राकृत, राजस्थानी एवं हिन्दी के ग्रनेक छंदों के प्रयोग से यह तो स्पष्ट ही है कि कवि छंदशास्त्र के पूर्ण ज्ञाता थे । विभिन्न छंदों की शैली में वीरकाव्य की रचना करने के पीछे कवि द्वारा ग्राचार्यत्व प्रकट करने की भावना नहीं है । कवि का मूल लक्ष्य ग्रपने ग्राश्रयदाता का वीरवैभव एवं पराक्रमपूर्ण उज्ज्वल चरित्र ही चित्रित करने का रहा है ।

ग्रपने ग्रन्थ में कवि ने संस्कृत के त्रोटक, काइव (काव्य) विद्युतमाला, भुजंगी, मोतीदाम, संयुक्ता छंदों का प्रयोग किया है । विदून्माला, विज्जूमाला, विदूमाला, विद्युतमाला के ही रूपभेद हैं । हिन्दी के वेग्रखरी, बैताल, पद्धड़ी, भ्रमरावली, ग्रडिल, ग्रर्द्धनाराच, ऊधोर, चांद्रायण, चौपाई, त्रिभंगी, नाराच, मोदिक, रूपक गति, लीलावती, विराज, हणूफाल छदों का प्रयोग ग्रधिकार-पूर्ण ढ़ंग से हुआ है । डिंगल के छंदों की रचना में कवि सिद्धहस्त थे । ग्रपने रूपक-बंध में गाथा, गाहा, झंपताली, डंडीयल, सवत, दुपइ, दुमला, पोमावती,

मथांण, मेहांणो, रंगिका, रैड़को, रसाउला, सिंहावलोकण, सारसी, हाकुटिया छंदों का सफल प्रयोग किया है। विषयानुकूल छंदचयन कवि की विशेषता रही है।

पुस्तक के आकार में अवांछनीय वृद्धि के भय के कारण ग्रंथ में प्रयुक्त छंदों का मात्र नामोल्लेख ही हो पाया है। छंदों की परिभाषा एवं लक्षण के अभाव में जिज्ञासु पाठकों को छंद-परिचय में कठिनाई अवश्य होगी परन्तु सुविधा की दृष्टि से छंदों की जानकारी के लिए आवश्यकतानुसार छंदग्रंथों का सहारा लिया जा सकता है। पाठकगण मेरी विवशता के लिए क्षमा करेंगे।

भाषा - शैली

'गज-गुण-रूपक-बंध' युद्धों में प्रदर्शित नायक गजसिंह के अद्भुत पराक्रम एव रण-कौशल के वर्णन का वीरकाव्य है। सम्पूर्ण काव्य में वस्तु-वर्णन की ही प्रधानता रही है इसलिए ग्रंथ में वर्णनात्मक-शैली का ही प्रयोग हुआ है। ग्रंथ में विविध परिस्थितियों के बीच भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रसंग उपस्थित हुए हैं। वहाँ कवि ने बड़ी चतुराई के साथ अपना भाषाधिकार प्रगट किया है। वीररस-प्रधान काव्य में जिस उत्तम-शैली की अपेक्षा की जाती है उसके दर्शन निश्चय ही हमें प्रस्तुत ग्रंथ में होते हैं। शत्रु को रण की चुनौती, संघर्ष की विकट स्थिति, वीरों की रणोन्मत्त दशा एवं भयंकर रण-स्थल का जिस प्रसंगोचित भाषा में वर्णन हुआ है उससे कवि की रस-निष्पादन की अपूर्व क्षमता स्वीकार करनी ही पड़ती है। संघर्ष-रत वीरों का वर्णन तदनुरूप शब्दावलि में देखिये—

भट्टके भोर फाटं झराड। झीको पडंत आसुरां झराड।
मरगडां जूह मुरडंत माड। चूनी हुइत चौसट्ठि हाड॥
भ्रिज्जंडा भ्रिजड वाजे भिभ्रीठ। डांडे-हुड गेहरि जांण दीठ।
उड्डे तिमच्छ खागां अघात। आकाश जांण उल्लकापात॥

प्रसंगानुकूल कोमल-कान्त पदावलि भी द्रष्टव्य है :—

कमल सयण बिलकुलें, मज्झि उर कमल विकासै।
कमलि कमलि सुभ वइण, कमलि दुरिजणं निकासै॥
कमल पेख उणहार, कमलवदनी - मुख मोहै।
कमल - नाभ थिय क्रिया, छभा परि कंमल सोहै॥
(५८-१)

पिक - बांण जांण वैणी पनंग, हिरणाखी हंसा - गमणि।
रंग - महल सिंघ राजान सुर, रमति राज - पुत्री रमणि॥
(१११-४)

प्रायः चारण कवियों के ग्रंथों में द्वित्त्व वर्णों की अधिकता का दोषारोपण किया जाता है परन्तु वास्तव में यह बात नहीं है। ध्वनिविशेष के ज्ञानाभाव एवं ग्रंथों का गहन अध्ययन न कर पाने के कारण यह मात्र अनुमान सा ही प्रतीत होता है। रूपक-बंध इस बात के लिए प्रमाण है। विविध प्रसंगों में शब्द-वैविध्य अवश्य है परन्तु द्वित्त्व-दोष नहीं आया है। कतिपय उदाहरण प्रस्तुत हैं :—

वर तुरंग उत्तंग, करण साकति विराजित।
मदोमत्त मातंग जांण, जल् बादल् गरजित॥
पहरावै सपिया, पटासन पैरावत्ता।
मौड बंधा ठाकुरां बडा सोहडी सामंतां॥
दे गांम तुरी द्रब लाख दे, हसत वंध कीया सुकवि।
कुरियंद 'गजैसी' कापियौ, गयौ समंद पै'ली पहवि॥

(५ –६)

स्रोण झील कमकमैं, कियै करिमरां चडाए।
रचे सेज रिण-भोम, कुसम अरि कमल् बिछाए॥
नखस तिक्ख सरकूंत, सहै अन-मंघ अचग्गल्।
पांण पयोहर कठण, मथै मैंगल् कुंभा-थल्॥

(१४१–५)

सपत दीप नवखंड, सपत दधि जल् थल् महिअल्।
एक भाग हज रत्त, मारि लीयौ महि मंडल्॥
पछिम देस पारंभ, लियौ लोहां उप्पाडै।
पूरब दिसि पतिसाह, लियौ लखदल् विब्भाडै॥
उतराध खंड असपति लियौ, दखण राज जोगणपुरै।
अकबर जलाल खाटी इला, जिती साह जिहंगीर रै॥

(६२–२)

सम्पूर्ण ग्रंथ में कवि ने शुद्ध साहित्यिक राजस्थानी भाषा का प्रयोग किया है। ग्रंथ वीररस-प्रधान होने के कारण भाषा ओजपूर्ण तो है ही, फिर भी प्रसादगुण ने भाषा को पूर्ण प्रवाहमयी बना दिया है। बोल-चाल के सामान्य शब्दों के अधिकाधिक प्रयोग के कारण भाव-दुरूहता बिल्कुल नहीं रह गई है। प्रसाद-गुण-युक्त भाषा-प्रवाह का उदाहरण देखिए—

राजा राणा मेलिया, कीध उकीलां वत्त।
वाद वडी सूं छंडियै, एहस आदू मत्त॥१।
रांणै राजा नूं कह्यो, मेल्है परधांनांह।
साह पगै धुन मोकलूं, जो थे अप्पौ बांह॥२॥

(२१–१–२)

देशी भाषाओं पर राजनैतिक प्रभाव के कारण अरबी-फारसी का प्रभाव पड़ चुका था। कवि की भाषा इस प्रभाव से वंचित न रह सकी। रूपक-बंध की शुद्ध राजस्थानी में कहीं-कहीं अरबी-फारसी के शब्द प्रयुक्त हो गये हैं, परन्तु उन सभी का प्रयोग जन-साधारण की बोल-चाल को भाषा में सामान्य प्रयोग होने के प्रभाव से अनायास ही हुआ है जान-बूझ कर विदेशी शब्दों को भरने की वृत्ति कवि की नहीं रही है। जरद, असमांण, स्याह, सबज, जोरदार, लसकर, हसम, हजरत, कूच, दरकूच, उकील, खिजमती, मुकाम, रहमांन, खुरसांण, खबरदार, दरबार, हुकम, सरहद, फौज, मीर, बहादर, फजर, सुल्तांन आदि जिन अरबी-फारसी शब्दों का प्रयोग हुआ है, वे जन-भाषा में व्यवहृत हो रहे थे।

काव्य-रचना में पाद-पूर्ति की प्रथा प्रचलित है। संस्कृत-साहित्य में भी इसके उदाहरण विद्यमान हैं। अमरकोश-कार ने, तु, हि, च, स्म, ह, वै, पादपूरणे—कह कर तु, हि, च, स्म, ह, वै को पादपूरक अव्यय शब्द ही बतलाया है। प्रस्तुत ग्रन्थ में यद्यपि पादपूर्ति की बहुलता नहीं हैं, फिर भी यत्र-तत्र, क, ह, स वर्ण पाद-पूर्ति के लिए प्रयुक्त हुए हैं। यथा:—

गुजर मांडव खंधार, प्रगट गढ़ परबत भालह।
रोहितास उड्डीस, गोलकूंडो वंगालह ॥

(६२-३)

गाइत्ति एक आप ग्रेह, मांएसीस मंगलं।
चमीर हीर हार चीर कांन हेम कुडलं ॥

(१३-१०)

डोहंत सूंडा डंड ए। स्रीखंड सरपक हिंड ए।
गज-वाग मत्थै मैंगलां। बलकत्त बीजक वद्दलां ॥

(७२-४)

प्राचीन राजस्थानी कवियों की यह परम्परा रही है कि वे व्यक्ति एवं स्थानविशेष के नामों को तोड़-मोड़ कर नाना रूप में प्रकट कर देते थे। इस रूप-भेद के पीछे प्रायः शब्द का महत्ववाची अर्थ एवं अल्पार्थ का ही आधार था। प्रस्तुत ग्रंथ में जो नामविशेष के रूप-भेद प्रयुक्त हुए हैं वे इस प्रकार हैं–

राव गांगा के लिए निम्न रूपभेदों का प्रयोग किया गया है—

गंग, गंगा, गंगे गंगेव, गांगे, गांगो।

महाराजा गजसिंह के लिए निम्न प्रयोग किये गये हैं—

गज, गजणं, गजण, गजपति, गजपत्ती, गजबंध, गजबंधी, गजमल्ल, गज-साह, गजसिंघ, गजसींघ, गजसींह, गजसीह, गजेसा, गजैसी, गज्जण, गज्जणवै, गाजो, गाजीसाह ।

इसी प्रकार खुर्रम के लिए निम्न हैं—

खुरम, खुरमि, खुरम्म, खूरंम, खूरम ।

उपर्युक्त रूपभेद की सूची से स्पष्ट हो जाता है कि ऐसे शब्दों या स्थानों को राजस्थानी भाषा-विज्ञान, व्याकरण, राजस्थानी संस्कृति आदि के पूर्ण ज्ञान के बिना समझना दुरूह हो जाता है ।

काव्य-ग्रंथ में प्रयुक्त मुहावरों एवं लोकोक्तियों ने जहाँ भाषा की सरलता एवं प्रवाह को बढ़ाया है वहाँ उसे प्रौढ़ एवं प्रांजल बनाने में भी सहयोग दिया है। स्थान-स्थान पर भावानुकूल मुहावरों के प्रयोग से कवि-कर्म चमत्कृत हुआ है—

आदीत अमूंझी छींक ज्यूं, जांणीजै जोधहपुरा ।
भरभार आज थारै भुजै, सहू काज सुरतांण रा ।।

(६१-५)

यहाँ पर रेखांकित पंक्ति में मुहावरे का प्रयोग हुआ है ।

त्रिकाल्ल-दरस्सी जोइसी,कहै एम आगम-कहा ।
असमांन उपद्रह थाइसै, उठी आग पांणी महा ।।

(११३-२)

यहां पर भी रेखांकित स्थान मुहावरेयुक्त भाषा में है ।

मूल न भावै मारका, दोय खंडा इक म्यांन ।

यहाँ पर एक म्यांन में दो तलवारों के न समा सकने का मुहावरा है ।

ग्रंथ की भाषा-शैली के विश्लेषण के आधार पर अधिकारपूर्वक कहा जा सकता है कि कवि केसोदास गाडणकृत 'गज-गुण-रूपक-बंध' निश्चय ही सहज, सरल, स्वाभाविक, ओज-मिश्रित प्रसादगुणपूर्ण प्रांजल राजस्थानी भाषा का ग्रंथ है जिसमें सशक्त भावों को छन्द-वैविध्य द्वारा अवसरानुकूल शब्दावली में प्रकट किया गया है। शब्द-लालित्य एवं रस-निष्पादन ग्रंथ की अपनी विशेषता है।

ऐतिहासिक मूल्यांकन[1]

कवि केसोदास गाडण जोधपुर नरेश महाराजा शूरसिंह और उनके ज्येष्ठ पुत्र महाराजा गजसिंह का समकालीन था । कवि युद्ध में प्रायः महाराजा के साथ

१. ऐतिहासिक मूल्याङ्कन में हमने ग्रंथ की प्रायः उन्हीं घटनाओं पर अधिक प्रकाश डाला है जिनके सम्बन्ध में इतिहासकार या तो मौन रहे हैं या पूर्ण स्पष्टीकरण नहीं दे सके हैं । अतः किसी पाठक को प्रारम्भ से अन्त तक सभी घटनाओं की जानकारी करना हो तो उन्हें ग्रंथसार देखना चाहिए ।

रहता था और उसने प्रायः आँखों-देखा हाल ही लिखा है, जब कि ख्यातों आदि की रचना सुनी-सुनाई बातों के आधार पर ही हुई है। वि० सं० १६८१, ई० सन् १६२४ में महाराजा गजसिंह द्वारा भीम सीसोदिया के मारे जाने की घटना के साथ ही ग्रंथ की भी समाप्ति हो जाती है, जब कि इस घटना के बाद भी स्वयं कवि, महाराजा गजसिंह, बादशाह जहाँगीर और बाद में बादशाह शाहजहाँ आदि सभी जीवित थे और महाराजा गजसिंह ने महत्वपूर्ण लड़ाइयां भी लड़ी थीं। अतः इससे यह प्रकट होता है कि ग्रंथ की रचना भी कवि ने संवत् १६८१-८२ में करली थी और ग्रंथ की समाप्ति के बाद उसने इसमें किसी भी घटना को जोड़ना उचित नहीं समझा। ग्रंथ में कवि ने कई ऐसे ऐतिहासिक तथ्यों की ओर संकेत किया है जो अभी तक गुप्त थे तथा जिनके बारे में गलत धारणाएँ बन गई थीं। अतः ऐतिहासिक दृष्टि से ग्रंथ की महत्ता में शंका करने की कोई गुंजायश नहीं रहती।

सर्वप्रथम कवि ने राठौड़-वंश का सम्बन्ध रघुवंश से जोड़ा है जिसका आधार पौराणिक है, इसके साथ ही इतिहास-प्रसिद्ध जयचन्द राठौड़ (सम्राट् पृथ्वीराज चौहान का समकालीन) के पौत्र सीहा के नाम का उल्लेख है और फिर सीहा के तीन पुत्र—आसथान, अज और सोनग का वर्णन है; जिन्होंने क्रमशः मारवाड़ में खेड़ द्वारका के पास में शंखोद्धार तथा गुजरात में ईडर-नामक स्थानों पर अपने राज्य स्थापित किए। इसके बाद महाराजा गजसिंह तक मारवाड़ नरेशों की वंशावली दी है। यह सब वर्णन इतिहास-सम्मत है।

वंशावली आदि के वर्णन के पश्चात् घटनाओं के उल्लेख के अन्तर्गत कवि ने सर्वप्रथम महाराजा शूरसिंह की गुजरात पर विजय का संकेत दिया है—

सूरसिंघ दिगपाल, एक पक्खर लख पक्खर।
गूजरवैं अरबद्द, कीध वंकासुर पधर॥

ऐतिहासिक दृष्टि से यह बात पूर्ण सत्य है। संवत् १६५२, ई० सन् १५९५ में बादशाह अकबर ने महाराज को गुजरात की सूबेदारी दी थी क्योंकि वहाँ का सूबेदार मुजफ्फर शाही आज्ञाओं का उल्लंघन करने लग गया था। अतः महाराजा शूरसिंह शाही सेना को लेकर पहले जोधपुर आये और वहाँ से अपनी सेना लेकर गुजरात की ओर रवाना हुए। चूंकि सिरोही के महाराव सुलतान ने महाराजा शूरसिंह के चाचा जोधपुर-नरेश राव चन्द्रसेन के पुत्र रायसिंह को जो दत्ताणी में रात को सोये हुए थे, आक्रमण करके धोखे से मार दिया था। अतः मार्ग में महाराजा शूरसिंह को सिरोही वालों से बदला लेने का स्मरण हुआ और इन्होंने (जैसा कि कवि ने उक्त पंक्तियों में गूजरवै गुजरात के साथ सिरोही

के लिए अरबद्द=आबू=सिरोही) वहाँ लूटमार करने की आज्ञा दे दी। वहाँ के महाराज राजसिंह ने बहुत-सा धन देकर उस समय के लिए तो अपने ऊपर आई हुई भयंकर आपत्ति को टाला। वहाँ से महाराजा शूरसिंह अपनी सेना लेकर गुजरात पहुँचे। मुजफ्फर भी बड़ा बहादुर व्यक्ति था। उससे घोर युद्ध करना पडा। अन्त में इनकी विजय हुई। फिर इन्होंने मुजफ्फर के बेटे बाग़ी बहादुर को भी जो उस इलाके में लूटमार कर रहा था, भगा दिया[1]।

तत्पश्चात् ग्रंथ में कवि ने, बादशाह द्वारा महाराजा शूरसिंह को दक्षिण में भेजे जाने का संकेत दिया है:—

पछिम पुरब उतराध, इला दखणाधह आगल़।
हिंदूवांण खुरसांण, दुहूं भुज्जे दुन्है छल़।
सूरसिंघ दिगपाल़, एक पक्खर लख पक्खर।
गूजरवै अरबद्द, कीध वंका सूर पधर।
दळथंभ देखि दिल्ली-धणी, दखण दीध आडो दळां।
तिणवार भल़ावें नियतणो, 'गाजीसाह' भुअव्वल़ां॥

पृ० १५, १६

यह बात भी इतिहास-सम्मत है। वि० सं० १६५६ ई०, सन् १५९९ में सुलतान मुराद की मृत्यु हो गई। तब शाहजादे दानयाल को दक्षिण की सूबेदारी दी गई और राजा शूरसिंह उसके साथ भेजे गये[2]।

ग्रंथ में महाराजकुमार गजसिंह द्वारा मेवाड़-राज्यान्तर्गत नाडौल थाने पर अधिकार करने का वर्णन है।

"वळो जूह विब्भाड़, डसण नाडूलउ पट्टै।
जोजावर चांमलोद, खोड आंमिख गल़ घट्टै॥
गिल़ै गूंद सादड़ी, सयल़ सावज मन रजै।
कोलर तोड़ि करंक, गूह गरजी खत भंजै॥

---

१. पं० रामकरण आसोपाकृत 'मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास' पृ० ३२५, ३२६;
डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझाकृत 'जोधपुर राज्य का इतिहास', भाग १, पृ० ३६४, ३६५;
पं० विश्वेश्वरनाथ रेउकृत 'मारवाड़ का इतिहास' भाग १, पृ० १८१-१८२।

२. मआसिरुल उमरा, भा २, पृ० १८२;
पं० विश्वेश्वरनाथ रेउकृत 'मारवाड़ का इतिहास' भाग १, पृ० १८३-१८४;
डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझाकृत 'जोधपुर राज्य का इतिहास' भाग १, पृ० ३६६

योढवाड़ बरड़ संघांण सह, कूंभ अंजि कूंभेण गिरि।
गजसिंघ कियौ गजकेसरी, सिंघनाद मेवाड़ सिरि।

इतिहास से यह वर्णन मेल खाता है। वि० सं० १६६५, ई० सन् १६०८ में महावतखाँ को मेवाड़ पर भेजा गया। उसने राणा के परिवार का सोजत में होने की शंका से सोजत को राजा शूरसिंह से हटवा कर राव चन्द्रसेन के पौत्र व उग्रसेन के पुत्र करमसेन को दिलवा दी। किन्तु महाबतखाँ के मेवाड़ में असफल होने के कारण उसके स्थान पर अब्दुल्लाखाँ को भेजा गया। उसने सोजत राजकुमार गजसिंह को इस शर्त पर लौटा दिया कि वे नाडौल के थाने की रक्षा का प्रबन्ध करें। महाराजकुमार गजसिंह ने ऐसा ही किया[1]।

जिस समय राठौड़ नाडौल के थाने पर तैनात थे, उन्हीं दिनों व्यापारियों द्वारा अहमदाबाद से शाही खजाने को लेकर मारवाड़ होते हुए आगरा जाने वाली ऊँटों की कतार को लूटने के लिए महाराणा अमरसिंह के पुत्रों (ज्येष्ठ कुमार कर्णसिंह आदि) ने अपने चुने हुए साथियों सहित मारवाड़ के गाँव दूनाड़े तक पीछा किया—

कमधज्जाँ नाडूल लसक्कर। लोहोडो खुरसांण मंडोवर॥
हेरि कतार नयर दूनाडै। मांडै डांण रांण मेवाड़ै॥—पृ० १७

जब नाडोल के थाने पर महाराजकुमार गजसिंह द्वारा नियुक्त भाटी गोविंददास को इसकी सूचना मिली तो उसने खाली हाथ लौटते हुए (क्योंकि खजाना तो पहले ही आगे निकल चुका था) महाराणा अमरसिंह के पुत्रों एवं सरदारों पर अचानक धावा बोल दिया। इस अचानक धावे से कुछ समय के संघर्ष के पश्चात् महाराणा अमरसिंह के पुत्र तथा सरदारों ने अपनी कुशल रण-नीति के अनुसार युद्धस्थल छोड़ना उचित समझा तथा वे वहाँ से पहाड़ों में चले गये—

भाटी राउ गज भीम, जुडे जांमलि रट्ठौडां।
जीता जोधपुराह, हारि हुई चीतौड़ां॥
देसपत्ती राउत्त, अमुह केतौ ऊजांणां।
ईसर सांमलदास, खेत रहिया खूमांणां॥
'गोइंद' पेखि जैसलगिरौ, बाघ वीसमो बीरवर।
रिणवार रांण 'अमरेस' रा, कुरंगा जेम गया कुंअर॥—पृ० १८

[1] डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझाकृत 'जोधपुर राज्य का इतिहास' भा० १, पृ० ३७२; पं० विश्वेश्वरनाथ रेउकृत 'मारवाड़ का इतिहास' भा० १, पृ० १८७-१८८; 'वीर विनोद' भा० २, पृ० २२५–२२६।

यह घटना भी पूर्ण सत्य है। महाराणा अमरसिंह मय अपने परिवार के पहाड़ों में भटक रहे थे। अब्दुल्लाखाँ एक बहुत बड़े शाही लश्कर के साथ मेवाड़ में घूम रहा था। राणा के पास लूट-खसोट के अलावा कोई चारा नहीं था। यह लड़ाई वि० सं १६६८, ई० सन् १६११ में मारवाड़ के भाद्राजून और मालगढ़ इलाके के पास हुई[1]।

जब महाराजकुमार गजसिंह और भाटी गोविन्ददास नाडौल के थाने पर थे, तब महाराजकुमार ने सिरोही पर चढ़ाई कर दी। जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है कि महाराजकुमार गजसिंह के पितामह के छोटे भाई (जो जोधपुर के शासक राय चंद्रसेन थे) के पुत्र रायसिंह को सिरोही के शासक महाराव सुरताँण ने दताँणी में रात को धोखे से आक्रमण करके मार डाला था। अतः महाराजकुमार गजसिंह द्वारा यह चढाई सिरोही वालों से पुराना बदला लेने के लिए की गई। सिरोही वालों ने आधीनता स्वीकार कर लो। कवि ने इस घटना का उल्लेख संक्षेप में किया है—

"मछरीकां सिर मछरियौ, राइजादौ राठोड़।
वैर पुरांणा वाळिवा, करै नवल्ली दौड़॥
गजबंधी दळ मेल्हिया, पहरे जोध जरद्द।
मारि मनांउ देवडा, हुव गंजूं अरबद्द॥२॥
सेन मेल मिवपुरी, फौज घेर धांसोहर।
जैतहत्थ कळिमत्थ, साथि भाटी रिण धोयर॥
कटि इम पडिगी रैं(ण) धणी अड्ढार गिरंदर।
लाया पाइ रकेब, कीध मछरीक रैहबर॥
राठोड़ कुंअर पक्खर खंद, कवण(भ्रू) समवड करै।
जमदाढ़ छोड़ विज्जै लई, कना राउ अरबद्द रै॥१॥
(पृ० १९-२०)

यह घटना सही मानी जाती है, किन्तु इसके बारे में विद्वानों के अलग-अलग मत हैं। डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा के अनुसार सिरोही के महाराज राजसिंह का छोटा भाई शूरसिंह देवड़ा सिरोही की गद्दी हासिल करना चाहता था; इसलिए उसने जोधपुर के राजा शूरसिंह को अपने पक्ष में लेने के लिए यह प्रपंच रचा। पं० विश्वेश्वर नाथ रेउ तथा पं० रामकर्ण आसोपा के अनुसार

---

१. 'वीर विनोद' भा० २, पृ० २२६।

सिरोही के महाराज राजसिंह ने पुरानी शत्रुता को समाप्त करने के लिए जोधपुर नरेश महाराजा शूरसिंह से भाटी गोविंददास के द्वारा प्रार्थना की थी।

तीनों इतिहासज्ञों के मतों का अध्ययन करने के बाद जब कवि के विचारों पर दृष्टि डाली जाती है, तो स्पष्ट प्रकट होता है कि महाराजकुमार गजसिंह द्वारा चढाई करने पर सिरोही का महाराज राजसिंह घबरा गया और उसने संधि कर ली। जो अहदनामा (तहरीर) वि० सं० १६६८, ई० सन् १६११ में सिरोही के महाराज राजसिंह तथा जोधपुर नरेश महाराजा शूरसिंह के बीच लिखा गया था उस पर राजसिंह के हस्ताक्षर भी मौजूद हैं। यद्यपि इस तहरीर पर बाद में अमल नहीं हुआ, किन्तु यह लिखा-पढी सिरोही के महाराज राजसिंह की इच्छा से ही की गई थी[1]।

इसके बाद ग्रंथ में बादशाह द्वारा महाराणा अमरसिंह को अधीन करने के उद्देश्य से अजमेर आने का वर्णन है तथा शाहजादे खुर्रम के साथ महाराजा शूरसिंह को राणा पर चढाई करने के लिए भेजने का उल्लेख है —

तांम साह जिंहगीर, लिखै मूक्यौ परमांणौ।
पळ खूटौ खुरसांण, सब्बळा अजुं खूमांणौ॥
मेर मेर सारिखौ, हुऔ इक इक्क पहाडह।
तौ पक्खै कमधज्ज, कमठ गंजे मेवाडह॥
सूरज्जमल्ल सुरतांण बळि, ग्रहे खाग लागो अरस।
आयौ अभंग नव साहसी, खडि तुरंग सिरि दस सहस॥३॥

महाराजा शूरसिंह ने चिट्ठी लिखकर अपने पुत्र गजसिंह को भी गोविंददास मंत्री के साथ मेवाड़ में बुला लिया —

राजा कागळ लिखै कुंअर, तेडे निय कन्हाळि।
मिळण मनोरथ करै, साह जाहगीर तणै छळि॥
चडै तांम गजपती, करे लसकर आडंबर।
भडवंका वर तुरी, लिया मदमत्ता कुंजर॥
जूहार उदैपुर जाइ किय, साथि मीच 'गोइंद' सगल।
इके रास हुआ फिरी एकठा, सूरज थावर बिने ग्रह॥५॥

---

१. पं० रामकर्ण आसोपा कृत 'मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास' पृ० ३३७, ३३८, ३३९।
पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ कृत 'मारवाड़ का इतिहास' भाग १, पृ० १८८, १८९, १९०।
डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा कृत 'जोधपुर राज्य का इतिहास' भाग १, पृ० ३७३, ३७४।

महाराजा शूरसिंह ने राणा को संधि के लिए तैयार करकेगो गूंदे में शाहजादे खुर्रम और राणा की भेंट करवाई। तत्पश्चात् महाराणा के ज्येष्ठ पुत्र कर्ण को लेकर खुर्रम अजमेर आया और बादशाह के दरबार में हाजिर हुआ, जहां बादशाह ने उसका अच्छा स्वागत किया [1] —

राजा बोल समप्पियौ, कहियौ रांण प्रमांण।
बे घोघूंदे मेलिया, खूंदालम खूमांण॥
खिजमति करण कबूला की, बळ छंडे समसेर।
खरम फतै कर हल्लियौ, साह पगे अजमेर॥४॥   (—पृ० २२)

साहिजादौ अजमेर. 'करन' हजरत पै लाए।
जर है गै सिर पाउ, बगसि खिजमति फुरमाए॥
कहै साह जिहगीर, खुरम सुरतांण (सुणे रहंत)।
तम सूर हम खुदाई, पीर पक्कंवर मुद्दत॥१॥

उक्त घटनाओं में प्रथम बादशाह के अजमेर आने की घटना के बारे में बादशाह जहांगीर स्वयं लिखता है– "इस (अजमेर) यात्रा में हमें दो कार्य विशेष रूप से करने थे, प्रथम तो मुइनुद्दीन चिश्ती के विशाल मकबरे का दर्शन करना था जिसकी प्रसिद्ध आत्मा की दुआ से इस प्रभावशाली परिवार को बहुत लाभ पहुंचा था और जिनकी दरगाह की हमने अपनी राजगद्दी के बाद जियारत नहीं की थी। दूसरा कार्य विद्रोही राजा अमरसिंह को परास्त कर भगाना था जो हिन्दुस्तान के राजाओं तथा जमीदारों में सबसे बड़ा था और जिसके नेतृत्व एवं प्राधान्य को उस प्रान्त के सभी राजाओं ने अंगीकार कर लिया था [2]।"

महाराणा अमरसिंह पर चढाई करने के लिए खुर्रम के साथ महाराजा शूरसिंह को भी भेजा जाना इतिहास-सम्मत है। ब्रजरत्नदास रचित "मआसिरुल उमरा" पृ० ४५५ में जहांगीर के ८वें राज्य वर्ष में शूरसिंह का खुर्रम के साथ महाराणा अमरसिंह पर जाना लिखा है। वीर विनोद, भाग २, पृ० २२९ से इसकी पुष्टि होती है।

---

१. पं० रामकर्ण आसोपा कृत 'मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास' पृ० ३३९, ३४०।
पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ कृत 'मारवाड़ का इतिहास' भाग १, पृ० १९०।

२. (अ) जहांगीर का आत्म चरित्र (जहांगीरनामा) अनुवादक—ब्रजरत्नदास, पृ० ३१७. १८.
(ब) गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने जोधपुर राज्य के इतिहास भाग १, पृ० ३७५ में लिखा है कि बादशाह वि०सं० १६७० के आश्विन सुदि ३, ई० सन् १६१३ ता० ७ सितम्बर को आगरे से रवाना होकर मार्गशीर्ष सुदि ७, ता० ८ नवम्बर को अजमेर पहुँचा।

महाराजा शूरसिंह द्वारा चिट्ठी लिखकर महाराजकुमार गजसिंह को बुलाया जाना इस बात से प्रमाणित करता है कि शाहजादे खुर्रम ने महाराणा को परास्त करने के लिए पहाड़ी प्रदेश में जगह-जगह शाही थाने बैठा दिये थे। सादड़ी के थाने पर (जो बहुत विकट था) महाराजा शूरसिंह को नियत किया गया[1]। शाही सेना उन पहाड़ी स्थानों से अपरिचित थी। अतः स्पष्ट है कि वहां पर महाराजा को अपने अनुभवी वीरों की आवश्यकता थी, इसीलिए उन्होंने चिट्ठी लिख कर कुंअर गजसिंह को बुला लिया जो गोविन्ददास आदि चुने हुए साथियों सहित वहाँ पहुँच गया। गजसिंह को बुलाने का दूसरा उद्देश्य, जैसा कि कवि ने संकेत किया है, यह था कि इस बहाने ज्येष्ठ कुंअर की बादशाह से भेंट करवा दी जायेगी।

"राजा कागल़ लिखै कुंअर तेडे निय कन्हलि।
मिल़न मनोरथ करै, साह जहांगीर एँ छलि॥

संधि की बातें तय करवाने में राजा शूरसिंह का कितना हाथ था इसके सम्बन्ध में यद्यपि विस्तृत वर्णन नहीं मिलता है किन्तु गोगूंदे में महाराणा को सम्मानपूर्वक खुर्रम के पास लाना,[2] संधि के समय महाराणा शूरसिंह का उनके पास मोजूद रहना[3] आदि बातें इस बात की द्योतक हैं कि मामले को तय करवाने में महाराज का सक्रिय योग रहा होगा।

संधि की शर्त के अनुसार खुर्रम द्वारा महाराणा के ज्येष्ठ कुंअर कर्ण को अजमेर लेजाया गया तथा बादशाह की सेवा में उपस्थित करने पर बादशाह ने उसको इनाम इकरार खिल्लअत आदि दी और सहर्ष अपनी सेवा में लिया[4]।

---

१. डॉ॰ गौरीशंकर हीराचन्द ओझा कृत 'जोधपुर राज्य का इतिहास' भाग १ —पृ॰ ३७३ (फुट नोट ५)

२. डॉ॰ गौरीशंकर हीराचन्द ओझा कृत 'जोधपुर राज्य का इतिहास' भाग १, पृ॰ ३७८ साथ ही यहां डॉ॰ ओझा ने संधि की तिथि वि॰सं॰ १६७१ फाल्गुन वदि २, ई॰ सन् १६१५ ता॰ ५ फरवरी दी है। तथा कर्ण को साथ लेकर खुर्रम के अजमेर पहुँचने की तिथि रविवार वि॰सं॰ १६७१ फाल्गुन सुदि २, ई॰ सन् १६१५ ता॰ १९ फरवरी दी है।

३. राजस्थान पुरातन ग्रंथमाला, ग्रंथाङ्क २१, पं॰ नरोत्तमदासजी स्वामी द्वारा संपादित "बांकीदास री ख्यात" पृ॰ ९५ पर "अमरसिंघ प्रतापसिंघोत" शीर्षक के अन्तर्गत संख्या १०६७, १०६८ व १०६९ देखिए। संख्या १०६८ में जो संवत् १६७४ दिया है उसके स्थान पर १६७१ होना चाहिए।

४. जहाँगीर का आत्मचरित (जहांगीरनामा) अनुवादक—ब्रजरत्नदास, पृ॰ ३४० ३४१, ३४३-३४६, ३४९, ३५३, ३५७, एवं ३६१।

तत्पश्चात कवि ने राठौड़ों की बढती हुई शक्ति से बादशाह जहांगीर के शंकित होने का संकेत दिया है। महाराजा शूरसिंह, कुंअर गजसिंह, भाटी गोविंददास, शूरसिंह के अनुज कृष्णसिंह, करमसेन उग्रसेनोत (जो जोधपुर नरेश राव चन्द्रसेन का पौत्र था) राव कर्णसिंह शक्तिसिंहोत (जो जोधपुर नरेश मोटा राजा उदयसिंह का पौत्र था और शूरसिंह व कृष्णसिंह का भतीजा था) तथा अन्य सामंत बड़े प्रबल थे। बादशाह किसी भी उपाय से इन्हें निर्बल बना देना चाहता था। वह यह जानता था कि जहां ये शाही साम्राज्य के स्तम्भ हैं वहां ये पुराना वैर भी नहीं भूलते हैं और बदला लेना अपनी शान समझते है[1]। अतः बादशाह जहाँगीर ने इनके इसी स्वभाव (बदला लेने का) से फायदा उठाने के लिए मन ही मन योजना बनाई—

हठियो सिर हिंदुवां माड मेले खूमांणां।
आदि वैर संभरै सरस दिल्ली सुरतांणां॥
राजा सूरजसिंघ जोध गजसिंघ जमज्जड।
किसनसिंघ करमंत 'करन' संपेख महाभड॥
गुण दोस गिणै इक सारिखा, घडै घाट मन भंज घड।
असपति तणै सह एकठा, हियै न मावै रढ्ढवड॥२॥—पृ० २३

यद्यपि बादशाह की इस शंका का संकेत किसी भी इतिहासकार ने नहीं दिया है, किन्तु इस ग्रंथ का रचयिता उन दिनों मौजूद था और इसकी पैनी नजर, कुशाग्र बुद्धि और चतुराई ने बादशाह के बुरे इरादों और राठौड़ों के प्रति शंका को भाँप लिया। दूसरे, राजपूत जाति एक लड़ाकू, खूंखार और अपनी आन पर मर मिटने वाली जाति थी। मेवाड़ को अधीन करने में बादशाह अकबर और बादशाह जहाँगीर को लोहे के चने चबाने पडे थे। महाराजा शूरसिंह के चाचा और मोटाराजा उदयसिंह के छोटे भाई जोधपुर नरेश राव चन्द्रसेन ने भी राणा प्रताप की तरह ही मुगल साम्राज्य से बराबर लोहा लिया था[२]। अतः राठौड़ों के पुनः शक्तिशाली हो जाने पर बादशाह का शंकित होना स्वाभाविक ही था। इस ग्रंथ के प्रकाशन से इतिहास का यह गुप्त तथ्य प्रकट हुआ है। अतः इस दृष्टि से ग्रन्थ की महत्ता और भी बढ़ जाती है।

---

१. जोधपुर नरेश राव चन्द्रसेन ने जीवन भर बादशाह अकबर से टक्कर ली थी।
२. पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ कृत 'मारवाड़ का इतिहास' भाग १, पृ० १६०।
इस सम्बन्ध में किसी कवि ने क्या ही यथार्थ कहा है—

अणरगिया तुरी ऊजला असमर, चाकर रहण न डिगियो चीत।
सारै हिंदुस्तान तणै सिर, पातळ नै चंद्रसेन प्रवीत॥

यद्यपि जहांगीरनामा में बादशाह ने इस घटना को अनजान बनकर लिखा है, किन्तु कोई भी मनुष्य स्वयं रचित षड्यंत्र को कैसे प्रकट कर सकता है।

चूंकि महाराजा शूरसिंह के वीर और चतुर मंत्री गोविन्ददास भाटी ने पहले कृष्णसिंह के भतीजे गोपालदास को अपने भाई के मार देने के कारण मार डाला था[1]। अतः बादशाह ने दरबार में कुंअर गजसिंह के सामने ही इसलिए उकसाया कि वह भाटी गोविन्ददास को मार कर अपने भतीजे का बदला ले।

"साह लगाडं रट्ठवड दोहों ढिल्ली डग्ग।
वाढ़ चढ़ें खुरसांण सूं, करि खुरसांणी खग्ग ॥१॥
'गाजीसाह' पधारियौ, चढ़ि मुजरै दरबार।
दिल्लीपति दीनो हुकम, केहरि गोइंद' मार ॥२॥—पृ० २४

गोविन्ददास को १५ दिन या एक महिने में मार देने का आश्वासन जब कृष्णसिंह द्वारा बादशाह को दिया गया, तब अपने क्षत्रियोचित स्वभाव के अनुसार राजकुमार गजसिंह अपने चाचा पर उबल पड़े और चेतावनी दे दी कि गोपालदास को मारने में भाटी गोविन्ददास के साथ मैं भी था, अतः गोविन्ददास

---

१. डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने "जोधपुर राज्य का इतिहास" भाग १, पृ० ३७९ के फुटनोट में जोधपुर राज्य की ख्यात के अनुसार गोपालदास के मारे जाने का वृतांत नीचे लिखे अनुसार दिया है—

वि०सं० १६६९ (चैत्रादि १६७०) ज्येष्ठ सुदि ७, ई० सन् १६१३ ताः १६ मई को भाटी गोविन्ददास के भाई सुरतांण पर राठौड सुन्दरदास, सूरसिंह (रामसिंहोत), राठौड़ नरसिंहदास (कल्याणदासोत) तथा गोपालदास* (भगवानदासोत) ने आक्रमण किया। सुरतांण मारा गया और गोपालदास घायल होकर निकल गया। इस पर कुंअर गजसिंह (और) तथा गोविन्दास ने उसका पीछा किया और मेड़ते के पास गांव खाखड़की में उसे मार डाला।

---

*पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ ने "मारवाड़ के इतिहास" भाग १, पृ० १९२ के फुटनोट में लिखा है कि गोपालदास पर आक्रमण होने पर सुरतांण ने उसका पक्ष लिया। जब सुरतांण मारा गया तो गोपालदास जख्मी होकर भाग गया। यह बात भाटी गोविदास को अच्छी नहीं लगी क्योंकि उसके भाई ने तो उसके लिए प्राण दिये और वह प्राणों के मोह से भाग गया। अतः उसने कुंअर गजसिंह को साथ लेकर, गोपालदास का पीछा करके उसे मार डाला। गोपालदास राजा सूरसिंह व कृष्णसिंह का भतीजा था किन्तु भाटी गोविन्ददास राजा शूरसिंह का प्रधानामात्य था। अतः उन्होंने उसका बदला नहीं लिया किन्तु उसके अनुज कृष्णसिंह ने गोविन्ददास को मार कर भतीजा गोपालदास का बदला लिया किन्तु कृष्णसिंह को भी अपने प्राण खोने पड़े।

को मारने के लिए आने वाला पहले मुझसे लड़कर अपनी मृत्यु को निमंत्रित करेगा। इस प्रकार बादशाह ने अपनी नारद-बुद्धि से दरबार में अपने ही सामने चाचा (कृष्णसिंह) और भतीजे (कुंअर गजसिंह) के बीच एक खाई उपस्थित कर दी—

"सनमुख साह निविद्धियौ कीधौ नारद कांम।
कळि लग्गी रठ्ठौड़ हर, मरसी के वरियांम ॥६॥ पृ० २५

जब कृष्णसिंह ने भतीजे कर्ण, कर्मसेन उग्रसेनौत तथा अपने कुछ चुने हुए साथियों सहित रात्रि को ऊषाकाल से पूर्व अजमेर में ही भाटी गोविन्ददास के डेरे (मकान) पर हमला कर दिया। गोविन्ददास भाटी नींद से जग गया और कई शत्रुओं का काम तमाम कर देने के बाद वीरगति को प्राप्त हुआ[१]। पास ही के महल में सोये हुए राजा शूरसिंह भी युद्ध के शोर-गुल से जग गये और नंगी तलवार लेकर बाहर आ गये और उसी समय राजकुमार गजसिंह भी वहां पहुँच गये। भयंकर युद्ध हुआ। कृष्णसिंह उसका भतीजा कर्णसिंह तथा अन्य कई योद्धा मारे गये किन्तु, जोधपुर नरेश राव चन्द्रसेन का पौत्र और उग्रसेन का पुत्र कर्मसेन युद्धस्थल छोड़कर भाग गया। दोनों ओर के कई वीर काम आये[२] —

किसनसिंघ कमधज्ज, मुओ गोअरधन मारे।
कमरसेन नीकळे कूंत गज कूंभ पहारे।
सकतसिंघ अंगरूह 'करन' रहियो पग मंडै।
सूर धीर नेठाहै, गया काइर बल छंडै।
आव्रत हुओ एक घड़ी, हुआ सुभट्टां सत्थरा।
संग्राम चक्रवूहा सत्रां, सूरसिंघ चक्रव्रत्तरा ॥२॥ —पृ०३१

बादशाह द्वारा राजा शूरसिंह को जालोर का हाकिम नियुक्त करना और गजसिंह का बिहारी पठानों से जालोर छीनना इतिहाससम्मत है[३]।

---

१. डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने "जोधपुर राज्य के इतिहास" भाग १, पृ० ३७६ में तुजक-इ-जहांगिरी के आधार पर इस घटना की तिथि ता० १५ खुरदाग (वि०सं० १६७२ ज्येष्ठ सुदि ६, ई. सन् १६१५ ता० २६ मई) दी है।

२. जहांगीर का आत्मचरित (जहांगीरनामा) अनुवादक—व्रजरत्नदास, पृ० ३६० के अनुसार बादशाह जहांगीर लिखता है कि 'कुल मिलाकर इस लड़ाई में छासठ आदमी मारे गये, जिसमें राजा की ओर के तीस तथा कृष्णसिंह के छत्तीस मनुष्य थे।

३. "तारीख पालनपुर" सैयद गुलाम मियां कृत, पृ० १५०-१६०; नवाब सर ताले मुहम्मद खां, पालणपुर राज्य नो इतिहास (गुजराती) भाग १ पृ० ५४–६२।
डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा कृत "मारवाड़ का इतिहास" भाग १, पृ० १९४, १९५
पं० रामकर्ण आसोपा कृत "मारवाड़ का इतिहास" पृ० ३४५

तत्पश्चात कवि ने राजकुमार गजसिंह द्वारा राव चन्द्रसेन के पौत्र और उग्रसेन के पुत्र कर्मसेन का पीछा करना लिखा है। इस घटना का वर्णन मारवाड़-जोधपुर राज्य का इतिहास लिखने वाले किसी लेखक ने नहीं दिया है। कर्मसेन लाडनू से भाग कर थली (निर्जल प्रदेशों) में भटकता हुआ अरावली की ओर गया। वहां से वह मेवों की शरण में गया। जब गजसिंह ने वहां भी उसका पीछा नहीं छोड़ा तो उसने हाड़ौती में जाकर अपने प्राण बचाये।

घटना की सत्यता के बारे में प्रथम तो इतना ही कहा जा सकता है कि कर्मसेन का पीछा करने के समय में ग्रंथ का रचयिता जीवित था। अब पीछा करने का कारण मुख्यतया यही हो सकता है कि कर्मसेन राजपूतों के नियम के अनुसार राज्य का असली हकदार था। जोधपुर के स्वामी राव चन्द्रसेन के तीन पुत्र थे, रायसिंह, उग्रसेन तथा आसकरण, जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है। रायसिंह को सिरोही के महाराव सुरतांण ने दतांणी में रात को आक्रमण करके धोखे से मार डाला था। दूसरे दो भाई उग्रसेन और आसकरण चौसर खेलते हुए किसी बात पर क्रुद्ध होकर मारे गये। रायसिंह के कोई पुत्र नहीं था अतः उग्रसेन का बड़ा पुत्र व राव चन्द्रसेन का पौत्र कर्मसेन की गद्दी का असली हकदार था। किन्तु कर्मसेन को गद्दी न देकर बादशाह अकबर ने राव चन्द्रसेन के भाई (मोटा राजा) उदयसिंह को जोधपुर की गद्दी दी जिसके पुत्र शूरसिंह व पौत्र गजसिंह थे। राव चन्द्रसेन का पौत्र कर्मसेन भी कुमार गजसिंह का समकालीन था। अतः राज्य के लिए आपसी अनबन होना स्वाभाविक है। इसके अतिरिक्त शाही दरबार में कर्मसेन अपने असली हकदार होने का रोना रो चुका था। उसी के अनुसार कर्मसेन को शाही मंसब और मारवाड़ का सोजत इलाका मिल चुका था जो बाद में महाराजकुमार गजसिंह को नाडोल के थाने की रक्षा करने पर पुनः मिल गया था। इसके अतिरिक्त भाटी गोविंददास को मारने में भी कर्मसेन ने कृष्णसिंह का साथ दिया था और बाद में रण-स्थल से बचकर भाग गया। चूंकि महाराजा शूरसिंह का पुत्र महाराजकुमार गजसिंह जोधपुर का स्वामी बनने वाला था, अतः उसके पास अधिक दलबल होने से उसको वहां से आगे भागकर अपनी जान बचानी पड़ी।

सवाई राजा शूरसिंह की मृत्यु, गजसिंह का राज्याभिषेक दक्षिण में होना, महाराजा गजसिंह द्वारा दक्षिण में निरन्तर शाही सेना के अग्रभाग (हरावल) में स्थान-ग्रहण करके वीरता दिखाना तथा दक्षिणियों को हर स्थान पर पराजित करके पीछे खदेड़ना, खुर्रम का दक्षिण में आना, शाही सेना की विजय

होना, गजसिंह का खुर्रम के पास से विदा होकर बादशाह के पास आना और वहां से विदा होकर अपनी राजधानी जोधपुर लौटना, खुर्रम का बाग़ी होना आदि घटनाएँ सभी इतिहास-सम्मत हैं।

इस सम्बन्ध में इतना अवश्य कहा जा सकता है कि महाराजा गजसिंह अपने राठौड़ वीरों के साथ, शाही अफसरों खांनखांनान् अब्दुर्रहीम, उसके पुत्र दाराबखाँ आदि के साथ थे। यद्यपि राठौड़ों ने सेना के अग्रभाग में लड़ कर हर स्थान पर दक्षिणियों को पीछे खदेड़ा, किन्तु शाही अफसरों ने सारा यश स्वयं लिया। इसी कारण फारसी-तवारीखों में इनकी वीरता का अधिक उल्लेख नहीं मिलता है।

बाग़ी होने पर खुर्रम मांडव से अजमेर, साँभर, रणथम्भौर, सीकरी होता हुआ आगरे और दिल्ली की ओर जाने का प्रयत्न करने लगा। इसी बीच खुर्रम ने महाराणा अमरसिंह के पुत्र भीम सीसोदिया को (जो उसके पक्ष में था और उस समय मेड़ते में था) यह हुकम भेजा कि तुम सादूळ को हरा कर अजमेर को अपने अधिकार में करलो।

"मूकयौ खुरम हुकम मेडत्तै। रांणे भीम दिसा रिण रत्तै।
वपि वांकम "सादूळ" वहत्तै। तूं अजमेर करै गढ फत्तै।
—पृ० १२४

उक्त सादूळ कौन था? उसका अजमेर को रक्षा से क्या सम्बन्ध था? इसके लिए इतिहासकार मौन हैं। यद्यपि वीरविनोद भाग २, पृ० २८७ में शार्दूलसिंह परमार का जिक्र है किन्तु वहाँ पर प्रसंग दूसरा है। वहाँ पर शार्दूलसिंह भीम सीसोदिया के साथ होता है और टोंस नदी के किनारे जब सेनापति महाबतखाँ और शाहजादे पर्वेज की अध्यक्षता में शाही सेना बाग़ी शाहजादे खुर्रम की सेना से (जिसके हरावल में भीम सीसोदिया था) भिड़ती है तो यह शार्दूलसिंह युद्ध-स्थल से भीम का साथ छोड़ कर भाग जाता है। साथ ही वीरविनोद में यह भी लिखा है कि यह भीम सीसोदिया का साला था। यह सब वृत्तान्त ठीक हो सकता है किन्तु किसी भी इतिहासकार ने यह स्पष्टीकरण नहीं दिया कि अजमेर की रक्षा करने वाला 'सादूळ' कौन था? जो खुर्रम के हुक्म से भीम सीसोदिया द्वारा मेड़ता से चढ़ाई करके हराया गया और पकड़ कर सीकरी में खुर्रम के सामने पेश किया गया। हमारी खोज के अनुसार इसके सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी निम्नलिखित है :—

इसका शुद्ध नाम शार्दूलसिंह परमार था और श्रीनगर (अजमेर) के स्वामी कर्मचन्द परमार का वंशज था। इसके पिता का नाम मालदेव था जो राणा

उदयसिंह की सेवा में था और उसको राणा की ओर से जागीर मिली हुई थी। किसी कारण से यह राणा को छोड़कर अकबर के पास चला गया। अकबर ने इसका सम्मान किया और जागीर दी, किन्तु जब अकबर ने चित्तौड़ पर आक्रमण करना चाहा, तब उसने अपने कर्त्तव्य को समझा और राणा के पास पुनः आ गया। राणा ने इसका सम्मान किया और पहले से भी अच्छी जागीर दी। फिर यह महाराणा की ओर से शाही सेना का सामना करता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ।

इसी मालदेव के छः पुत्र थे जिनमें शार्दूलसिंह भी एक था। इसके एक भाई का नाम सांगा था। यह अपने उसी भाई के साथ महाराणा को छोड़कर बादशाह के पास चला गया। बादशाह ने उन्हें बदनोर (मेवाड़) की सनद जागीर में दी। अतः वे सकुटुम्ब आकर मसूदे में रहने लगे। बदनोर में पहले से ही राठौड़ रहते थे, अतः परमारों ने उन पर चढ़ाई की और विजय प्राप्त की।

ये श्रीनगर (अजमेर) के कर्मचन्द के वंशज थे और उन दिनों बादशाह उन पर महाराणा की सेवा छोड़ देने के कारण खुश था, अतः अजमेर की रक्षा का भार बादशाह द्वारा या उसके शाहजादे पर्वेज जिसकी जागीर में उन दिनों अजमेर था) द्वारा शार्दूलसिंह को दिया गया। चूंकि शाहजादा खुर्रम बाग़ी हो चुका था, अतः वह शाही इलाकों पर अधिकार कर लेना चाहता था। इसीलिए उसने अपने पक्ष के भीम सीसोदिया को हुक्म भेजा कि तुम 'सादूल' (शार्दूलसिंह परमार) को हराकर अजमेर पर कब्जा करलो। भीम उस समय मेड़ते में था, क्योंकि मुहणोत नैणसी की ख्यात, भाग १, पृ० ३०-३१ के अनुसार प्रकट होता है कि मेड़ता उन दिनों भीम सीसोदिया को जागीर में दिया हुआ था, अतः उसने बाग़ी शाहजादे खुर्रम को आज्ञानुसार अजमेर पर चढ़ाई करके शार्दूलसिंह को परास्त किया और पहाड़ों में भागते हुए शार्दूलसिंह को पकड़ कर सीकरी में खुर्रम के सामने पेश किया। वीरविनोद के अनुसार चूंकि यह भीम सीसोदिया का साला था, अतः संभव है सीकरी में साला-बहनोई में मेल हो गया हो और यह शार्दूलसिंह परमार भी भीम सीसोदिया के साथ बाग़ी शाहजादे खुर्रम का पक्षपाती हो गया होगा। वीर-विनोद के संदर्भ से जैसा कि ऊपर उल्लेख किया जा चुका है जब वि० सं० १६८१, ई० सन् १६२४ में भीम सीसोदिया का युद्ध टोंस नदी के किनारे शाही सेना से हुआ, तो वह अपने बहनोई भीम का साथ छोड़कर कायर की तरह भाग गया।

कवि ने ग्रंथ के अन्त में भीम सीसोदिया और महाराजा गजसिंह के युद्ध का

वर्णन किया है। भीम बाग़ी शाहजादे खुर्रम की सेना के अग्रभाग (हरावल) में था और महाराजा गजसिंह शाहजादे परवेज़ और महाबतखाँ की सेना में थे।

अब प्रश्न यह है कि युद्ध में भीम सीसोदिया की मृत्यु किसके हाथ से हुई। इस ग्रंथ के प्रकाशन से पूर्व इस सम्बन्ध में इतिहासकारों ने पूर्ण स्पष्टीकरण नहीं किया था। हमारी खोज के अनुसार भीम सीसोदिया को महाराजा गजसिंह ने ही मारा था; निम्न प्रमाणों से यह बात पूर्ण स्पष्ट हो जायगी—

प्रथम प्रमाण तो यही है कि वि० सं० १६८१ ई० सन् १६२४ में जब टौंस नदो के किनारे यह इतिहास-प्रसिद्ध महायुद्ध हुआ तब इस ग्रन्थ का रचयिता जीवित था। अतः उससे अधिक जानकारी दूसरा कौन दे सकता है ?
कवि के निम्न छप्पयों पर दृष्टिपात कीजिये—

चीतोडी चालणी अंग हुओ आरख्खह।
कुरव्व दल अंतरै, जांण भीखम पितामह।
आरुहता भगदंत आसी रागां चाडंतौ।
गै जूहा गोड तो, खग्ग भूबलि़ झाडंतौ।
भूडंड वधे ब्रहमंड लग, धन्न पराक्रम सूरतन।
पाडियो जोध आउट्टमो, दौढ़ौ रावत कुंभक्रन ॥८॥

—पृ० २३९

खाल़ रत्त खल़हल़ं, जांण वरसाल़ नदी जल़।
गज तुरंग गुड्डिया, गुडै भड हूवा गूंछल़।
रुंडमुंड रोल़िया, "भीम" पाडियौ भुजाल़ौ।
भारत कुरखेत रै, हुओ जुध लंका वाल़ौ।
गजसिंघ गिरंदां कमधजां, माहि मेर माझी खडौ।
पतसाह दुहूं गजसाह प्रब, हुइ नीमडियौ हेकडौ ॥१२॥

—पृ० २४१

रांमायण रांमचंद, वहै कूंभक्रन रांमण।
हणमंत खोडो हुओ, मरै जीवियो लखंमण॥
अरजण भारत्त कियौ, लियण हथणापुर ढूकौ।
जैं-दसरथ अहि-वन्न करन मरियौ धडूकौ॥
गजसिंघ कियौ गजगाहणौ, "भीम" मारि भागौ खुरम।
कमधज्ज पखै जीतौ कमण, साज़ं नाद संग्रांम इम ॥१७॥

—पृ० २४२

जिसौ पत्थ भारत्थ, रांम जीतौ रांमायण।
जिसौ लखण इंद्रजीत, भीम भग्गै दुज्जोधण।
जिसौ जोध बल़िभद्र, पल़ंब दांणव संहारियै।
जिसौ वीर नरसिंघ, हरिणकस्सिप वंहरियै।

साझियै तिपुर संकर जिसो, वांमण चंपि पयाल् वलि् ।
गजसिंघ 'भीम' गोडव्वियो, तिसौ दीठ रवि चक्र तलि् ।।१८।।
—पृ० २४३

"सोल्ह सै संमत्त, हूग्रो जोगणपुर चाल् ।
सम्मै एकासियै मास काती वडाल् ।
पूनम थावर वार, सरद रित है पालट्टी ।
वीर खेत पूरब्ब रित्त हेमन्त प्रघट्टी ।
सुरतांण खुरम भागौ भिडै, चाडि चकथां चक्कवै ।
गजसिंघ प्रवाडौ खट्टियो, वहै भीम चीतोडवै ।।२०।।
—पृ० २४३

उपर्युक्त छप्पयों के अनुसार यही सिद्ध होता है कि भीम सीसोदिया महाराजा गजसिंह द्वारा ही मारा गया। यहाँ पर यह शंका पैदा हो सकती है कि कवि महाराजा का आश्रित था, यद्यपि अभी तक किसी भी इतिहासकार ने इस ग्रंथ का संदर्भ देकर शंका प्रकट नहीं की है, तथापि ख्यातों और फारसी तवारीखों में मेल नहीं होने के कारण वीरविनोदकार तथा डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने गजसिंह द्वारा भीम का मारा जाना नहीं लिखा है और ख्यातों के आधार पर इस घटना को एकांगी और पक्षपातपूर्ण बतलाया गया है[1]। इसके जवाब में यह कहा जा सकता है कि स्थान-विशेष के एक या दो राज्याश्रित कवि तो पक्षपातपूर्ण तथा झूठ लिख सकते हैं, किन्तु गजसिंह द्वारा भीम को मारे जाने के विभिन्न स्थानों के कवियों के विभिन्न गीत मिलते हैं, क्या उन सभी ने (जो गजसिंह के आश्रित नहीं थे) पक्षपातपूर्ण तथा झूठ लिखा है ? प्रमाण के लिए उनमें से कुछ गीतों को (परिशिष्ट में न देकर) यहां उद्धृत किया जाता है।

गीत वडो सांणोर

मथै ज्याग रिण महण असुरां सुरां मारकां,
वाधियो मंड़ोवर खाग वाहै ।
पियालो जहर रो "अमर" रो विरद-पत,
"सूर" रो महारुद्र लियो साहै ।।१।।
जुध समंद विरोल् देव दांणव जिहीं,
दूसरां नरां नह भाग दीधो ।
"सूर" तण सगह विख हुतौ सीसोदियो,
कमध त्रय नयण गरकाव कीधो ।।२।।

---

१. डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझाकृत जोधपुर राज्य का इतिहास भाग १, पृ० ३९४; वीरविनोद भाग २, पृ० २८८

हीलोल़ै समर समदर गहर हेकठा,
दरसियौ ग्राहाड़ौ हल़ाहल़ दाय ।
जटाघर जेम गजसाह राजा जुड़ै,
घूंट कीधौ भलौ हेकणी छाप ॥३॥
ग्रखाड़ौ महोदध डोहते ऊकठौ,
पंथ ग्रन सुपह विमुहा पधारै ।
"भीम" सिरखा कहर "माल" हर भयंकर,
जहर "गाजी" संकर तूंहीज जारै ॥४॥
(किसनौ ग्राढौ)

वेलियौ सांणोर

गजबंधी हंस ग्रभिनमै "मांगे,"
सुज निज हेत खेध कर साथ ।
जल़ जिम खल़ मूके साहिजादौ,
"भीमै" दूध भखियौ भाराथ ॥१॥
मलप मुणाल जिहीं जुध माथै,
दाखै दुनी वदै देसोत ।
चगतां वार मार चाल़वियौ,
गिलि़यौ पै मिलि़यौ गहलोत ॥२॥
सावक सूरजसिंध समोभ्रभ,
पै म वेर जांणौ सप्रमांण ।
नीर टाल़ जहांगोर सुनंदण,
खोर जिहीं भखियौ "खूंमांण ॥३॥
भाल हरै वध सुछल़ महारिण
ग्राखै सह मांनव सुर-ईस ।
पांणी ग्रसुर विरोल़ै पीधौ,
भारी दूध तणी पर भीम ॥४॥
(कल्यांणदास महडू)

गीत-वेलियौ सांणोर

कुर-खेत ग्रनै बांणा-रस कल़हण,
धारां मार उडाड़ै धींग ।
खाधा "भीम" ग्रढ़ारै खोयण,
सोईज 'भीम' खाद्यौ गजसींग ॥१॥
जुजठल़ ग्रनै दुजोयण जुड़िया,
दाव खुरमं जांहगीर दियौ ।
मंडोवरै वीकोदर नांमी,
कर तंडल़ ग्राचमन कियौ ॥२॥

बंधवां वेध खेध चढ़ बैठे,
खेटं धरती तणे खरं ।
"सांगा' हरो सालियो समहर,
हुवां वेढ़ रिडमाल हरं ।।३।।

पोरस प्रभत निमो जोधपुरा,
वडा प्रवाडा भुजां वणं ।
अमराबत मखियो आखाडं,
तिजडां मुहडे "सूर" तज ।।४।।

(चतरी-मोतीसर)

पं० रामकर्ण आसोपा ने अपने 'मारवाड़ के संक्षिप्त इतिहास' में पृ० ३५४-५५ के अनुसार सीसोदिया भीम हाथी पर सवार था। महाराजा ने उसी को लक्ष्य बनाया। उस समय महाराजा के साथ तीन सामंत वीर थे। कूंपावत गोरधन, खींची शंकरदास और गोविंददास जो हाथी से कुछ दूर रह गया और शत्रुओं से लड़ता मारा गया। कूंपावत गोरधन तलवार चलाता हुआ महाराजा के आगे बढ़ा। खींची शंकरदास दोनों हाथों में दो तलवार रखता और दोनों तलवारों से काम लेता था। कूंपावत गोरधन शंकरदास से हमेशा मजाक किया करता कि यह दुगना लोहे का भार क्यों उठाते हो ? वह उत्तर में हंस कर कहता कि कभी काम पड़े तब देख लेना। यहां तलवार चलाते-चलाते महाराजा की तलवार टूट गई तब शंकरदास ने अपने बांये हाथ की तलवार महाराजा को दे दी। यद्यपि सिलहखाने (शस्त्रागार) का दरोगा लवेरा ठाकुर साथ में था, परन्तु वह उस मारामारी में पीछे रह गया था। महाराज ने भीम को पीछे से हाथी पर से गिरा कर उसी खींची की तलवार से भीम का काम तमाम किया। बादशाह की विजय हुई। खुर्रम भाग गया। महाराजा ने उस सेवा से प्रसन्न होकर खींचियों के अधिकार में सिलहखाना (शस्त्रागार) दिया। वह अब तक खींचियों के अधिकार में रहा।

प्रसिद्ध इतिहासकार पं० आसोपा साहब के उक्त लेख को भी यदि कोई शंका की दृष्टि से देखे, तो उक्त लेख में वर्णित दो तथ्यों के अन्य प्रमाण दिये जाते हैं जिनमें से पहला तथ्य है—भीम सीसोदिया का युद्ध में हाथी पर सवार होना (महाराजा गजसिंह ने भाला फेंक कर भीम को हाथी पर से गिराया और फिर मारा), इसकी पुष्टि उदयपुर के बाबू रामनारायण दूगड़ के "महाराजा-भीम सीसोदिया" निबंध से (जो नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग १, संवत् १९७७ के पृ० १८२ से १९० पर छपा है) होती है। इस लेख में यह भी लिखा गया

है कि महाराजा गजसिंह ने ही युद्ध के परिणाम को पलट दिया और शाही हार को जीत में परिणति कर दिया तथा भीम को मार कर बागी शाहजादे खुर्रम को भगा दिया।

भीम को महाराजा गजसिंह द्वारा हाथी पर से गिराये जाने का प्रमाण एक अन्य ग्रंथ (जो मेरे निजी संग्रह में संगृहीत है) में मिलता है। यह ग्रंथ कवि हेम सांमोरकृत 'भाखा-चरित्र' है। इसके अनुसार:—

कोपि तांम कमधज पछै उरि कूंत प्रहारं।
पयोधरा खडहडै हुंस आया बल़ हारै॥

—पृ० २२ (A)

अर्थात् कमधज (राठोड़ गजसिंह) ने तब कोप करके कूंत (भाले) से सीने पर प्रहार किया, तो बादल जैसे काले रंग के समान हाथी पर से भीम नीचे गिरा और गिरते समय उसका प्राण (हुंस) बलहीन हो गया।

दूसरा तथ्य जो पं० आसोपा के उक्त लेख में है, वह है भीम से लड़ते हुए महाराजा गजसिंह की तल्वार टूटना और खीची शंकरदास द्वारा अपनी दूसरी तलवार देना, जिससे भीम का काम तमाम हुआ था। इस तलवार के टूटने का उल्लेख मेरे निजी संग्रह में संगृहीत जोधपुर के स्व० किशोरदानजी बारहठ के संग्रह का एक गीत (जिसकी रचना भीम सीसोदिया के अग्रज महाराणा कर्णसिंह के कहने पर उनके दरबारी कवि सौदा बारहठ खेमराज खेमपुरा (मेवाड़) वाला ने की थी) होती है। यह गीत नीचे उद्धृत किया जाता है:—

अंग लागै बांण जूजंवा उडै, गै गजै वाजै गुरज।
भाजे नहीं दिली-दल़ भिडंता, भीमड़ा हड़मत तणा भुज ॥१॥
बरंगल़ झड़ै ऊधड़ै बगतर, चौधारां धारां खग चोट।
ओट होय मंडियौ अमरावत, काल़ौ पड़ै न मैंमत कोट ॥२॥
गोल़ा तीर आछटै गोल़ा, दोल़ा आलमतणा दल़।
पड़ दड़यड़ चड़यड़ चहुं पासै, खूमांणै लूंबिया खल़ ॥३॥
'पातल' हरा ऊपरा पड़ भव, खल़ सूटा तूटा खड़ग।
"पांडवनामी" नीठ पड़ियौ, लग ऊगमण आथमण लग ॥४॥

उदयपुर-राज्य के इस कवि ने अपने उक्त गीत में तलवार टूटने का उल्लेख किया है। जैसा कि गीत के अन्तिम द्वाले से स्पष्ट संकेत मिलता है—तलवार टूटी (टूटा खड़ग), पांडवनामो (पांडव भीमसेन के नाम वाले) भीम सीसोदिया को मारा (पाडियौ)। उक्त गीत उदयपुर वाले बाबू रामनारायण जी दूगड़ के निबन्ध के अन्तर्गत 'नागरी प्रचारणी पत्रिका' में भी छप चुका है।

तीसरा राजस्थान पुरातन ग्रंथमाला जयपुर, द्वारा प्रकाशित ग्रंथ (ग्रंथांक २१—'बांकीदास री ख्यात' पं० नरोत्तमदासजी स्वामी द्वारा संपादित) के पृ० २७ पर मुद्रित वात संख्या २८७ उद्धृत की जातो है—"संवत् १६८१ रा कातो सुद १५ महाराज गजसिंघजी सीसोदिया भीम अमरसिंघोत नूं जंग में मारियो।"

चौथे राजगढ़ के शासक ठाकुर अर्जुन गौड़ का दरबारी कवि महेसदास रावकृत "राव अमरसिंघजी को साको" में महाराजा गजसिंह द्वारा भीम सीसोदिया को मारे जाने का उल्लेख है, यथा——

"राजा "सूर" रं पाटि गजसिंघ राजै।
बसू उपरां जेणि रा त्रंब बाजै।
भड़े तेणि गंगा-तटे भीम भंजै।
वलै साहि जिहांन अपांन बंजै।।"

मेरे विचार में उपर्युक्त प्रमाणों के होते हुए भीम सीसोदिया का महाराज गजसिंह द्वारा मारे जाने में संदेह करने का कोई स्थान नहीं रहता है।

प्रति परिचय

गज-गुण-रूपक बंध के सम्पादन में उपयोग में लाई गईं प्रमुख हस्तलिखित प्रतियां निम्न हैं:—

(अ) यह प्रति मेरे लघु भ्राता जैतदान के संग्रहालय की है। इस प्रति में प्रतिलिपिकार ने नाम, काल व स्थान का कोई उल्लेख नहीं किया है। मूल प्रकाशित भाग इसी प्रति पर आधारित है।

(आ) यह प्रति राजस्थान-प्राच्य-विद्या-प्रतिष्ठान जोधपुर के भूतपूर्व संचालक पद्मश्री मुनिजी महाराज श्रीजिनविजयजी से प्राप्त हुई। इस प्रति में भी प्रतिलिपिकार का नाम, काल और स्थान प्राप्त नहीं हुआ। पाठान्तर प्राय: इसी प्रति से उद्धृत किए गये हैं।

(इ) यह प्रति भी प्राच्य-विद्या-प्रतिष्ठान से प्राप्त हुई। आवश्यक पाठान्तर देने के निमित्त इसका सहयोग भी लिया गया है।

इनके अतिरिक्त एक और प्रति (जो मेरे निजी संग्रहालय की है) का भी उपयोग ग्रंथ के अर्ध-भाग के प्रकाशन के पश्चात् हो सका है क्योंकि यह प्रति मुझे ग्रंथ के अर्ध-भाग-प्रकाशन के पश्चात् ही दृष्टिगत हुई। यह प्रति जोधपुर के पुरोहित श्रीमोतीलाल द्वारा लिखित है तथा इसका पाठ मूल 'अ' प्रति के पाठ से अधिक समता रखता है।

ग्रंथ का शीर्षक जो मुख्य पृष्ठ पर दिया गया है, प्रति 'अ' के अनुसार ही, अधिक उपयुक्त एवं ग्रंथपरिचयात्मक मान कर, लिया गया है।

राजस्थानी में दो अक्षरों वाले शब्दों में जिनका पहला अक्षर आ स्वर से युक्त हो तथा दूसरा अक्षर अनुनासिक हो-अनुनासिक वर्ण के पूर्वाक्षर पर प्रायः अनुस्वार लगता है। सम्पादन में मैंने इस अनुस्वार को स्वीकार करके मूल पाठ सर्वत्र अपनाया है।

इसी प्रकार प्राचीन राजस्थानी में 'ड़' का उच्चारण नहीं था अतः प्राचीन प्रतियों के अनुसार ही मूल पाठ में सर्वत्र ड को ड़ न करके ज्यों का त्यों 'ड' ही रहने दिया है। किन्तु ल और ळ की ध्वनि का ध्यान रखकर यथास्थान ल या ळ कर दिया है यद्यपि हस्तलिखित प्रतियों में प्रायः ल की ही बहुलता है।

आभार प्रदर्शन

प्रस्तुत काव्य-ग्रंथ के सम्पादन में प्राच्य-विद्या-प्रतिष्ठान के उप निदेशक श्री गोपालनारायणजी बहुरा द्वारा पर्याप्त सहयोग प्राप्त हुआ है। मैं आपके प्रति हृदय से आभारी हूं। साथ ही डॉ० पुरुषोत्तमलालजी मेनारिया को भी, जिन्होंने समय-समय पर प्रूफ-संशोधन में मुझे सहयोग प्रदान किया, हृदय से धन्यवाद अर्पित करता हूं। साथ ही कवि केशवदास के जीवन-सम्बंधी अमूल्य एवं महत्वपूर्ण सामग्री प्रदान करने के लिए श्री देवकरणजी बारहट, इंदोकली का भी हृदय से आभार प्रकट करता हूं। ग्रंथ के शुद्ध एवं सुव्यवस्थित प्रकाशन के लिए श्री हरिप्रसादजी पारीक, व्यवस्थापक साधना प्रेस, जोधपुर भी धन्यवाद के पात्र हैं।

सीताराम लाळस

शरद् पूर्णिमा, सं० २०२४
दि० १७ अक्टूबर, १९६७

गाडण केसोदास कृत

गज गुण रूपक-बंध

—•—

।। श्री गणेसाय नमः ।। श्री मदिस्टाय नमः ।। स्त्री सद्गुरुभ्यो नमः ।।
। "गुण रूपक-बंध" महाराजा श्री गजसिंघजी नूं गाडण केसोदास कृत लिख्यते ।*

पंचदेव मंगळाचरणम्

गाहा

देवी सुमंति[1] - दायाः, वीणा[2] - करेणि हंस - वाहणयाः ।
जग - जिणणी[3] जोगमायाः तस्यै सारदाय नमो[4] ।।१।।

सूंडा[5] - डंड प्रचंडौः, मूसा आरूढ़ मेक मय[6] दंतौः ।
ईस्वर[7] उमया[8] पुत्रौः[9], तस्मै गुणेसाय[10] नमो[11] ।।२।।

अरधंगि हेम - पुत्रीः, सरपौ कंठेणि वाहणौ सांडौ ।
सिखा[12] - नेत भाल चंदौः, तस्मै[13] रुद्राय नमो[14] ।।३।।

धारणौ गदा चक्रौः[15], संखौ[16] पदम पांणि[17] सारंगौ ।
कमळा - कंत[18] कनौः, तस्मै नाराइण नमो[19] ।।४।।

अंतरिख[20] वोम मगौः, खेड़ण[21] सपतास मेकरथ-चक्रौ[22] ।
सारिथि[23] पंग अरुणौः, तस्मै[24] सूरज्याइ नमो[25] ।।५।।

आ – * श्री गणेशायनमः ।। श्री मदिष्टादेवाय नमः ।। श्री सद्गुरुभ्यो नमः ।। गुण रूपक-बंध महाराजा श्री गजसिंघजी नूं गाडण केसोदास कृत लिष्यते ।

इ – * श्री गणेशायनमः ।। अथ गुण रूपक वंध महाराझा श्री गजसिंघझी रो गाडण केसोदास कह्यो लिषतं ।

१ आ.इ. सुमति । २ वाणा । ३ आ. जिणजी । इ. झिणणी । ४ आ.इ. नमः। ५ आ. श्रूंडा । ६ इ. मथ । ७ आ. ईश्वर । ८ आ.इ. ऊमया । ९ आ. पुत्तौ । १० आ.इ. गुणेशाई । ११ आ.इ. नमः । १२ आ.इ. सिष । १३ आ. तसमै । १४ आ.इ. नमः । १५ आ.इ. चक्रो । १६ आ. संपो । इ. संपौ । १७ आ. पदमयणि । इ. पदमयाणि । १८ आ.इ. कमलाकंत । १९ आ. नमः । इ. नम । २० आ.इ. अंतरिष । २१ आ.इ. षेडण । २२ आ.इ. चक्रौ । २३ आ. सारथि । २४ आ. तसमै । २५ आ.इ. नमः ।

दूहा

आदि सकत्ति[१] गुणाधिपति[२], हो हर हरि ग्रह - राउ[३] ।
पंचइ[४] देव प्रसन्न[५] हुइ[६], आपौ[७] बुद्धि[८] पसाउ[९] ॥१॥

वांणि अनादह फुड[१०] वयण[११], सुभ भाखा सरजित्त[१२] ।
गाहा करई[१३] वर[१४] रसाउला[१५], दूहा छंद कवित्त[१६] ॥२॥

पूरब वंस वरणण

रुघवंसी राठौड हर[१७], तेरह साख[१८] कमंध ।
विमर सकत्ती[१९] वरणवां[२०], बंधे रूपक बंध ॥३॥

सतजुग त्रेता[२१] द्वापुरहि, कळि-जुग्गे[२२] खत्र[२३] धौड[२४] ।
सिर नवखंडां[२५] मेदनी, चिहूं[२६] जुगे राठौड[२७] ॥४॥

अवसर दांन ज अप्पही[२८], रिण भज्जै[२९] मुंह[३०] मोड[३१] ।
राठोडां[३२] कुळ मेहणौ, ते खत्री[३३] पण खौड[३४] ॥५॥

कवित

प्रिथमी[३५] आदि जुगादि वीर बसुधा वर खत्ती[३६] ।
वळि[३७] राजा चक्कवै[३८] मांनधाता चकवत्ती[३९] ॥
भारथही[४०] कुरुखेत[४१] करन गौ कत्थ[४२] रहावै[४३] ।
मेछा बांण भळावि, क्रीत[४४] कमधजां भळावै[४५] ॥

---

१ आ.इ. सकति । २ आ. गुणाधपतिः । ३ आ. ग्रहराऊ । इ ग्रहराव । ४ आ. पुंचंइ । इ. पंचैई । ५ आ.इ. पूसन । ६ आ. हुई । ७ इ. आयौ । ८. आ.इ. बुधि । ९ इ. पसाऊ । १० आ.इ. फुड । ११ अ. चयण । १२ आ. सरजितः । इ. सरझित । १३ अ. कर । इ. काई । १४ आ. बर । १५ इ. साऊला । १६ आ.इ. कवित । १७ आ. हरः । १८ आ.इ. साष । १९ आ.इ. सकती । २० आ. वर्णवां । इ. वरणवा । २१ आ.इ. तेता । २२ आ.इ. जुगे । २३ आ. षत । इ. षत्रू । २४ इ. धोड । २५ आ. नवषेडां । इ. नवषंडा । २६ आ.इ. चिहु । २७ आ. रठौड़ । २८ आ इ. अपही । २९ आ. भजै । इ. भझै । ३० आ.इ. मुह । ३१ आ. मोड । इ. मोड । ३२ आ. रठौडां । इ राठोडां । ३३ आ. षत्ती । इ. षत्री । ३४ आ.इ. षोड । ३५ आ. पृथमा । इ. प्रथम । ३६ आ.वरषती । इ. वरषत्री । ३७ इ. बलि । ३८ आ.इ. चकवै । ३९ इ. चक्रवती । ४० आ.इ. हि । ४१ आ. कुरुखेत । ४२ आ.इ. कथ । ४३ आ. रहावे । ४४ आ.इ. क्रित । ४५ आ. भलावै ।

जैचंद हुओ दळ[1] पांगुळौ[2], असी लक्ख[3] साहण सधर।
छत्तीस[4] वंस राजा[5] कुळी[6], वडो वंस राठौड[7] हर ॥१॥

राव सीहा री द्वारका जात्रा ओर लाखा फूलांणी नै मारणौ

सेतरांम संभ्रमी[8], इळा[9] ऊठियै[10] कनूजा[11]।
जगत जात रिणछोड, कीध वेदो-गति पूजा[12]।
चाओडौ परचाड वहै लाखौ[13] फूलांणी।
धारां धड ऊतारि चाडि राठौडां[14] पांणी।
पड गाहै[15] पट्टण[16] आप बळ[17], दोमझि[18] भंजै कच्छ[19]दळ।
पूरब्ब[20] हूंत[21] आवै[22] पछिम, सीह प्रवाडौ[23] किय[24] सबळ ॥२॥

सीहै जाइ[25] संदेस् कथन कहियौ[26] कमधज्जां[27]।
मारि लियौ[28] मारकां, किसा पूरदीप सकज्जां[29]।
सीह वयण समधरे, खडग[30] ऊपाडे[31] हत्थळ[32]।
सीहैरा सींघळी[33] सींह[34] ऊठिया[35] सहस बळ।
परभोम लई[36] समंदां[37] लगै, राठौडां[38] साका रहै[39]।
गळहत्थ[40] वंस गोहिलां तणौ, वैड[41] खड्ग[42] गहि[43] संग्रहै[44] ॥३॥

राव सीहा रा पुत्रां रौ वरणण—गजसींघ तक मारवाड़ रा राठौड़ राजाओं री वंसावळी

सीहै[45] आप सीरखा[46], जोध जाया कांधोधर।
आसथांन अणभंग, अज्ज[47] सोनंग[48] दुनै कर।

---

१ आ.इ. दल। २ आ.इ फंगुलौ। ३ आ.इ. लष। ४ इ. छत्रीस। ५ इ. राझां। ६ आ.इ. कुली। ७ आ. रठोड। ८ आ.इ. संभ्रूमी। ९ इ. ईला। १० आ.इ. ऊठीयै। ११ इ. कनूझा। १२ इ. पूझा। १३ आ. लष। १४ आ. रठोडां। इ. राठोडां। १५ आ.इ. गाहे। १६ आ इ. पटण। १७ आ. ब:। १८ आ. दोमजि। १९ आ.इ. कछ। २० आ.इ. पूरब। २१ आ. हुत। इ. हुंत। २२ आ. आवे। २३ आ पृवाडौ। २४ आ.इ. कीय। २५ आ.इ. जाई। २६ आ. कहीयौ। इ. कहीयो। २७ आ.इ. कमधजां। २८ इ. लियो। २९ आ.इ. सकजां। ३० आ इ. षडग। ३१ इ. उपाडे। ३२ आ.इ. हथल। ३३ आ. सीघला। इ. सींघली। ३४ आ.इ. सीह। ३५ आ.इ. उठीया। ३६ आ इ. लइ। ३७ आ.इ. समदां। ३८ आ. रठोडा। इ. राठोडां। ३९ आ.इ. रहे। ४० आ.इ. गलहथ। ४१ आ. वेढ। इ. पेड। ४२ आ. इ. षडग। ४३ इ. हि। ४४ आ.इ. संग्रहे। ४५ इ. सीहे। ४६ आ. सीरिषा। इ. सारिषा। ४७ आ. अज। इ. अझ। ४८ आ.इ. सोनिग।

मुरधर संखो[1] धार, लियौ[2] लोहां बळि[3] ईडर।
वसू[4] लाख[5] छत्तीस[6] पूठि कन्नौज[7] वडो घर।
आसथांन तणौ[8] धूहड हुओ[9], राइपाळ[10] धूहड तणै।
राठौड[11] सदा लगे आदि हर, समवड दिल्ली[12] गंजणै[13] ॥४॥
कन्हराव कुळ[14] तिलक, जोध[15] जग[16] जेठी[17] 'जाल्हण'[18]।
छाडौ तीडौ सलख[19], वीर वैरी विभाडण।
चूंडराव[20] रिणमल्ल[21], राउ[22] 'जोधौ'[23] रढ[24] रांमण।
'सूजौ'[25] 'वाघौ'[26] 'गंगेव', 'माल' गढ[27] कोट पलट्टण[28]।
उदैसिंघ गई वाळण[29] इळा[30], सूरसिंघ सांमुद्र[31] भणि।
गजसिंघ[32] हुओ उतपन्न[33] ग्रहि, जांणि[34] बियौ[35] सिसिहर गयणि ॥५॥

महाराजकुमार गजसिंघ रो जनम

घड़ी मंडि[36] घडियाळ[37], जोइ जोतिक[38] जोंईसी[39]।
जनम-जोग[40] लिख[41] लिखौ[42], तांम[43] त्रीकाळ[44] दरस्सी[45]।
व्रहसपती[46] बुध[47] सुक्र[48] केत केयद[49] महाबळ[50]।
राहु छनीछर छठै[51], छठै थिय[52] सूरज[53] मंगळ[54]।
उडपती[55] भवण इग्यारमै[56], आगम[57] कंध अनम्मियौ[58]।
'गजबंध' इता[59] बळिवंत[60] ग्रह, ले जस[61]-राति जनम्मियौ[62] ॥६॥

---

१ आ.इ. संषोघार। २ इ. लीयौ। ३ आ.इ. बलि। ४ आ. वसुं। इ. वसूं। ५ आ.इ. लाष। ६ आ.इ. छतीस। ७ आ. कनौज। इ. कनौझ। ८ इ. तणो। ९ आ.इ. हूओ। १० आ. राईपाल। इ. रोयपाल। ११ इ. राठौड। १२ इ. ढिली। १३ इ. गंझणौ। १४ आ.इ. कुल। १५ इ. झोध। १६ इ. झग। १७ इ. झेठी। १८ इ. झाल्हण। १९ आ.इ. सलष। २० आ.इ. चुंडराव। २१ आ.इ. रिणमल। २२ इ. राऊ। २३ आ. जोधो। इ. झोधो। २४ आ. रंट रामण। इ. रंढ रांमण। २५ आ.इ. सूजो। २६ आ. वाघ। २७ अ. मालगट। २८ आ.इ. पलटण। २९ आ.इ. वालण। ३० आ.इ. ईला। ३१ आ.इ. समुद्र। ३२ इ. गझसिंघ। ३३ आ.इ. उतपन। ३४ इ. झांणि। ३५ आ. बीयौ। इ. बीयो। ३६ आ. मंड। ३७ इ. घड़ियाल। ३८. इ. झोतिक। ३९ इ. झोइसी। ४० इ. झोग। ४१ आ.इ. लिष। ४२ आ. लीषो। इ. लीष्यौ। ४३ आ. ताम। ४४ आ. त्रिकाल। इ. त्रकाल। ४५ आ.इ. दरसी।, ४६ आ. वृहसपति। इ. वृहस्पति। ४७ आ.इ. बूध। ४८ आ. श्रुक्रं। इ. श्रुक्र। ४९ आ. केय: द। इ. कदये। ५० आ.इ. महाबल। ५१ आ.इ. छवै। ५२ आ.इ. थीयौ। ५३ आ. सुरज। इ. सूरझि। ५४ आ.इ. मंगल। ५५ आ. उडपति। इ. उडमति। ५६ आ.इ. ईग्यारमै। ५७ आ. अग्राम। ५८ आ. अनमीयो। इ. अनभीयो। ५९ आ.इ. ईता। ६० आ.इ. बलिवंत। ६१ इ. झस। ६२ आ. जनमीयो। इ. झनमीयो।

महाराज कुमार गजसींघ रो वरणण

कमळ[१] वीय ससि-कळा[२], कळा[३] वडती[४] जग[५] वदै ।
कळाहीण[६] खळ[७] हुवै, जेम[८] निस पूनिम चंदै ।
भुज[९] विसाळ[१०] लंकाळ[११], वरण झाळाहळ[१२] सुंदर[१३] ।
भरि मातै भाद्रवै, जांणि[१४] ऊगौ[१५] भासंकर ।
बत्तीस[१६] लखण[१७] सुभ आचरण, बाळपणै[१८] हूओ[१९] तरुण ।
कमधज्ज[२०] कुंअर[२१] कमधज्ज हर[२२], राजहंस मूरति मइण[२३] ॥७॥

गात मेर गज[२४] भीम, महा जोधा[२५] ऊतळी[२६]-बळ ।
भुजां[२७]-डंड परचंड, जेम गंगा-जळ[२८] ऊजंळ[२९] ।
किरणां कळ कळ[३०] कमळ[३१], सकळ[३२] झाळाहळ[३३] नृम्मळ[३४] ।
तेज पूंज राजांन, धीर कांधोधर धम्मळ[३५] ।
कमधज्ज[३६] वंस ऊदोत[३७] कर, कमधज्जां[३८] कुळि[३९] आभरण ।
गरजियौ[४०] पित्ता बैठै 'गजण', पिता पाट पाटो-धरण ॥८॥
कांधमल्लही[४१] सऊ[४२], जोध रिणमल[४३] तणै घरि ।
पिडि अचल्ल[४४] अणपल्ल[४५], ठल्ल[४६] गज[४७] ढाहण मच्छरि[४८] ।
खळ[४९] प्रत्थळ खळ[५०] सयळ[५१], बत्थ[५२] दे बळह[५३] तणी परि ।
खड्ग[५४] झल्ल[५५] जग भल्ल[५६], करण आंकल्ल[५७] घरणा अरि ।

---

१ आ.इ. कमलि । २ आ.इ. ससिकला । ३ आ.इ. कला । ४ इ. चडती । ५ इ. झग । ६ आ.इ. कलाहीण । ७ आ.इ. षल । ८ इ. झेम । ९ इ. भुझ । १० आ.इ. विसाल । ११ आ.इ. लंकाल । १२ आ.इ. झालाहल । १३ आ. श्रुंदर । १४ आ. जाणि । इ. झांणि । १५ आ. उगौ । १६ आ.इ. बतीस । १७ आ.इ. लषण । १८ आ.इ. बालयण । १९ आ. हूंओ । २० आ.इ. कमधज । २१ आ.इ. कुअर । २२ आ.इ. कमधज । २३ आ.इ. मईण । २४ आ. गझ । २५ इ. झोध । २६ आ. अतुलीबल । २७ आ. भुजा । इ. भुझा । २८ आ. गंगाजल । इ. गंगाझळ । २९ आ. उजल । इ. उझल । ३० आ,इ. कलकल । ३१ आ.इ. कमल । ३२ आ.इ. सकल । ३३ आ.इ. झालाहल । ३४ आ. नृमल । इ. निरमल । ३५ आ.इ. धमल । ३६ आ. कमधज । इ. कमधझ । ३७ आ.इ. उदोत । ३८ आ.इ. कमधजां । ३९ आ.इ. कुलि । ४० इ. गरझियो । ४१ आ.इ. कोधमल । ४२ आ. सउ । इ. हीसल । ४३ आ.इ. रणमल । ४४ आ.इ. अचल । ४५ आ.इ. अणपल । ४६ आ.इ. टल । ४७ इ. गझ । ४८ आ.इ. मछरि । ४९ आ.इ. बल पथल । ५० आ.इ. षल । ५१ आ.इ. सयल । ५२ आ.इ. बथ । ५३ आ.इ. षल । ५४ आ.इ. षडग । ५५ आ.इ. झल । ५६ आ.इ. भल । ५७ आ.इ. आकल ।

जस गल्ह रहावण जे सहल, मइयळ[1] भंजै मेहवर।
'गजमल्ल'[2] 'मल्ल'[3] 'गंगे' कुळी[4], रिण दुझल्ल[5] रट्ठौड[6]-हर ॥९॥

नर नरिंद अणनिंद, विंद वांकिम्म[7] वीर वर।
सुत सुरिंद[8] हरचंद, कंद काढ़ण केवी हर।
देहाचंद दुडिंद[9] इंद[10] फुणियंद मिणंधर[11]।
नर संमद राजिंद, ऋपां[12] गोविंद विसंभर।
विभाड[13] गयंद मयंद[14] विध, महि सांमंद इधकै मच्छरि[15]।
'सूरउत'[16] प्रगट नवनंद सिर, गरु अति मेर गिरंद सिरि[17] ॥१०॥

बांण पत्थ[18] बळि[19] भीम, जिसौ अहंकार[20] हि रांमण[21]।
जिसौ वाच जुजठिल्ल[22], जिसौ मांणाहि[23] द्रोजोवण[24]।
समरि करन[25] बळिराव, दांन दद्धीच[26] जिसौ भणि।
साहस विकमाईत, भोज राजा[27] जांणै पणि[28]।
आरंभ रांम आरंभ गुरु, पारधही फरसां धरण[29]।
गजसिंघ महण गंभीर पण, कळा तेज सैंहस[30] किरण[31] ॥११॥

एक राऊ[32] थप्पइण[33], एक रावां ऊथप्पण[34]।
एक राव गढ़ लियण, एक रावां गढ़ अप्पण[35]।
एक राव परिभवण, एक रावां पडि गाहण।
एक राव जङ गमण, एक राऊ[36] सरणै रक्खण[37]।
इक[38] राव रंक करि रोळवण, एकां आलंबण थियौ[39]।
कमधज व्रजागि[40] 'गज' केसरी, आगि खाइ[41] इम ऊठियौ[42] ॥१२॥

---

१ आ.इ. मईयल। २ आ.इ. गजमल। ३ आ.इ. मल। ४ आ.इ. कुलि। ५ आ.इ. दूझल। ६ आ. रठौड। इ. राठौडं। ७ आ.इ. वांकिम। ८ आ. सुरिद। ९ अ. दुपिंड। १० आ. ईद। ११ आ.इ. मिणधर। १२ आ.इ. कृपा। १३ इ. विभा। १४ आ. मयद। १५ आ.इ. मछरि। १६ इ. सूरत। १७ आ.इ. सिर। १८ आ.इ पथ। १९ आ.इ. बलि। २० आ. अैहैकार। इ. अैहैकार। २१ आ.इ. रामण। २२ आ.इ. जुजिढिल। २३ आ.इ. माणहि। २४ इ. टोजोवण। २५ आ. क्रर्न। इ. क्रंन। २६ आ. दधीच। २७ इ. राभा। २८ आ. जाणवण। इ. झांण-पणि। २९ आ.इ. फरसाधरण। ३० आ.इ. सहस। ३१ आ.इ. किण। ३२ इ. राउ। ३३ इ. थपइण। ३४ आ. उथपण। इ. ऊथपण। ३५ आ.इ. अपण। ३६ आ.इ. राव। ३७ आ.इ. रषण। ३८ आ.इ. एक। ३९ आ.इ. थीयौ। ४० आ.इ. वृजागि। ४१ आ.इ. षाई। ४२ आ.इ. उठीयौ।

दूहा

कोटां[1] मेवट गढ गिळण, सुरितांणां उरिसल्ल[2]।
'गाजीसाह' अभिन्नमो[3], दादौ 'माल' दुझल्ल[4] ॥१॥

दांने लख[5] कोडी दियण, जुडि जीपण रिण जंग[6]।
सूरजिसिंघ[7] समोभ्रमी[8], दूजौ 'गंगा' अभंग ॥२॥

गजपत्ती[9] दातार गुर, सहि कांमे संमरत्थ[10]।
रिण डोहण रिणमल जिसौ, जोध जिसौ कळिमत्थ ॥३॥

तेरां साखां[11] जस[12] तिलक, राठौडां[13] छळ रक्ख[14]।
वीर उपन्नौ[15] वीरवर, सिद्धां[16] धरि[17] साधिक्क[18] ॥४॥

इन्द्र[19] प्रभत इंद्रह विभौ, इंद्र छभा अैनांण।
इन्द्र समीवड रट्ठवड[20], हिंदूवै सुरतांण ॥५॥

छन्द रंगिका (रेंगीका)

इंद अस्ट[21] भौ[22] आपांण, भौ तार जांमणि[23] भांण।
चवुदहौं[24] विद्या जांण[25], बहोतरि[26] कळा[27]।
राग छत्तीस[28] मांणग रंग, सास्त्र[29] कोक सुचंग।
कमध अनंग अंग, धणी कमळा[30] ॥१॥

हृद भूखण[31] वस्त[32] हीर, नित कमकमै नीर।
चंदण पेंक[33] अंबरि[34], चंपक दळ।

---

१ आ.इ. कोटा। २ आ.इ. उरिसल। ३ आ.इ. अभिनमो। ४ आ.इ. दुझल। ५ आ.इ. लष। ६ इ. झंग। ७ आ. सूरजसिंघ। इ. सूरझिसिंघ। ८ आ. समोभूमी। ९ आ.इ. गजपती। १० आ इ. समरथ। ११ आ.इ. साषां। १२ इ. झस। १३ इ. राठोडां। १४ आ.इ. रष। १५ आ.इ. उपनो। १६ आ.इ. सिधां। १७ अ. यरि। १८ आ.इ. साधिक। १९ आ. ईंद्र। २० आ. रठवड। इ. राठवड। २१ आ.इ. अष्ट। २२ आ.इ. भो। २३ आ.इ. जामणी। २४ अ. चवदहां। २५ इ. झांण। २६ आ. बहोतरी। इ. वहोतरी। २७ आ.इ. कला। २८ इ. छत्रीस। २९ आ. सास्त। ३० आ.इ. कमला। ३१ आ.इ. भूषण। ३२ इ. वसत। ३३ अ. पेक। ३४ आ. अंबरि।

काया केसरी[१] किसनागरि, जबाधि मै जळहरि[२] ।
म्रिग[३] नाभ[४] मलैतरि, मयाचळ ॥२॥

भ्रख[५] अढार भोजण भांणि, तंवोळ[६] मुख[७] तरणि ।
वाजेंद्र राह वाहणि, आरूढ वळे[८] ।
रिति वरखा[९] सरद्द[१०] हैमंत सैंसर हद[११] ।
वसंत गीखम[१२] सद्द[१३] सुख[१४] सगळे ॥३॥

हेक चाढंत सीस हुकंम्म[१५], नमंत एक अनंम[१६] ।
खडग[१७]धारी खतम, आगळि[१८] खडा[१९] ।
जुड़ै झालियां[२०] वागां जंगम गडड़ै जूह दुगम ।
काछियां[२१] पाइ कम कम, स्रम[२२] कन्नडा[२३] ॥४॥

वंस छत्तीस[२४] पांतवळ, कोठारां हुवै कळळ[२५] ।
प्रगट न सदा सबळ[२६], ऊपट[२७] पला ।
दे दे[२८] हुवा रिदबट दन्न[२९], ऊधमै घिरत अन्न[३०] ।
'वाघा'[३१] हरौ खट वन्न[३२], करै सबळा[३३] ॥५॥

'चूंडै'[३४] सारिखौ[३५] चरु सुगाळ[३६] भला ही भलौ[३७] भूपाळ[३८] ।
कमधज प्रजंपाळ[३९], अनंत करं[४०] ।
दीपै भुजाई देव[४१] मै कळा, रांणो रांणि रावताळा[४२] ।
भडां हुवै भाटकळा[४३] आठौ पुहरं ॥६॥

---

१ आ.इ. केसरि । २ आ.इ. जलिहरि । ३ आ. मिृग । इ. मृग । ४ अ. माभ । ५ आ. भृष । इ. भष । ६ आ. इ. तंबोल । ७ आ.इ. सुष । ८ आ.इ. वले । ९ आ.इ. वरषा । १० आ.इ. सरद । ११ आ.इ. हृद । १२ आ.इ गीषम । १३ आ.इ. सद । १४ आ.इ. सुष । १५ आ. हुकम । इ. हूंकम । १६ आ. अनम । १७ आ.इ. षडग । १८ आ.इ. आगली । १९ आ.इ. षडा । २० आ.इ. झालीयां । २१ आ.इ. काछीयां । २२ आ.इ. शूम । २३ आ.इ. कनडा । २४ अ.इ. छतीस । २५ आ.इ. कलल । २६ आ.इ. सबल । २७ आ.इ. उपट । २८ आ.इ. दै दै । २९ आ.इ. दन । ३० आ.इ. अन । ३१ आ.इ. वाघा हरो । ३२ आ. षटबन । इ. षट-वृन । ३३ आ.इ. सबला । ३४ आ.इ. चुंडै । ३५ आ.इ. सरिषौ । ३६ आ.इ. चर सुगाल । ३७ आ.इ. भलो । ३८ आ.इ. भुपाल । ३९ आ. पृजंपाल । इ. पृज-पाल । ४० आ. कर । ४१ इ. दैव । ४२ आ.इ. रावताला । ४३ आ. इ. भाटकला ।

ओळगै[1] ओटै लाख यार[2] झालिये[3] खागे[4] जूंझार[5] ।
सांमंत[6] निरोहासार, सोहड सूरा ।
चूरै[7] प्रिसण आवध चोट, मंछराळा मन मोट ।
प्रचंड[8] दुबाहा कोट, प्रवाडै[9] पूरा ॥७॥

लंभ बगसिजै कोड्री लाख[10], ड्रूंगर खट[11] भाख[12] ।
तिलक तेरह[13] साख[14], कमध कहै[15] ।
चवै कीरति चंक[16] चारण, गज-पात कहै गुण ।
पवंग गयंद पण, सांसण लहै[17] ॥८॥

आगै हुवंत नट औसर[18], संगीत सपत सुर,
नमंत निरत कर, पैगति निमै[19] ।
अद[20] मादळ वाजै अदंग[21] अउबभति उपंग,
निरूपै गीत नादंग, जस न जिमै[22] ॥९॥

सीमंडल[23] रबाब सार, रुद्द[24] वीणा झणंकार[25] ।
तंत मझि घोर तार, ग्रांमा[26] त्रिहुणै[27] ।
ताळ[28] कंसाळ[29] झालरी टेक, अघोटी कच्छिबी[30] एक ।
आगळी[31] वाजै अनेक[32], विवह वणै[33] ॥१०॥

रोड़ि द्रुमति ढ़ोल रवद, सहनाई[34] भेर सद्द[35],
निफेरी भेरी निनद, नीसांण घुबै[36] ।
पंच सद[37] दमांम[38] पूर, रुडे[39] डूड रिणतूर ।
प्रमांणै[40] मेघ पडूर (पडर), हैरांन हुवै ॥११॥

---

१ आ. ओलेगै । इ. ओलगै । २ आ. लष यार । इ. लाषयवार । ३ आ. झालीए । इ. झालीयै । ४ आ.इ. षागे । ५ आ.इ. झूंझार। ६ आ.इ सामंत । ७ अ. चरै । ८ अ. प्रचाडै । ९ अ. प्रबाडै । १० आ.इ. लाष । ११ आ इ. षट । १२ आ.इ. भाष । १३ अ. तई । १४ आ. इ. साष । १५ आ. कहे । १६ आ.इ. चंड । १७ आ. लहे । १८ इ. ओर । १९ अ. निमे । २० आ.इ. मृद । २१ आ.इ. मृदंग । २२ आ. जिमैं । २३ आ. श्रीमंडल । २४ आ.इ. रुद वीणा । २५ आ.इ. झणकार । २६ आ.इ. ग्राम । २७ आ. त्तिहणे । २८ आ. ताल । २९ आ.इ. कंसाल । ३० आ. इ. कछिबी । ३१ आ.इ. आगली । ३२ आ.इ अनिक । ३३ आ.इ. वणे । ३४ इ. सहनाइ । ३५ आ.इ. सद । ३६ आ.इ. घुणे । ३७ आ. पंच सब्द । इ. पंचसबद । ३८ आ. माम । इ. दमाम । ३९ आ. रूडे । ४० आ. प्रमांणे । इ. प्रमांण ।

निमौ[१] साहिब खेड[२] नरेस, आसति मति आदेस,
पर राठां हूंत[३] पेस, मेल्है[४] मंडळी[५] ।
गढ़ जोधांण इसौ[६] गहन, कुअर[७] दूसरौ[८] करन ।
सूरिज माल सुतन् सहंस[९] बळी[१०] ॥१२॥

सवाई महाराजा सूरसींघ तथा महाराज् कुमार गजसींघ रो वरणण

॥ कवित्त ॥

सहस पंच चत्र गांम[११], मंडि नवकोट मुरद्धर[१२] ।
असी सहंस[१३] रावतां, असी सह सहाई[१४] पखर[१५] ।
इळ[१६] भूचै[१७] आइ पद्द[१८], असी सहसां असवारां ।
सूं[१९] लडिया[२०] नवलाख[२१] खुंद[२२] खारां खंधारां[२३] ।
राठौड मौड[२४] हिंदुवांण[२५] सिरि, महा द्रुग्ग[२६] गढ़ जोधपुर ।
गजसिंघ कुंवर[२७] नृप[२८] सूरसिंघ, सहुवै[२९] वंदै सुर असुर ॥१॥

मंडोवर मुरधरा, खेत[३०] लोहडा[३१] खुरसांणह[३२] ।
नर समंद[३३] तै नांम[३४], सहू[३५] सिर हिंदुसथांनह[३६] ।
सातवीस मद मोख[३७], गुडै[३८] मैंगळ[३९] मद मत्ता[४०] ।
सहस पंच रट्ठौड[४१], जोध असमांण[४२] छिबत्ता[४३] ।
गजसिंघ कुंअर[४४] कुंअरां[४५] तिलक, मल्ल[४६] जेम जीपण कळह ।
जैचंद "पंग" राजा जिसौ, सूरजसिंघ राजा सुपह ॥२॥

---

१ आ.इ. निमो । २ आ.इ. षेड • नरेंस । ३ आ.इ. हुंत । ४ इ. मेल्हे । ५ इ. मंडली । ६ आ. ईसौ । इ. इसो । ७ यह शब्द आ. और इ. में नहीं मिला । ८ इ. दूसरो । ९ आ.इ. सहस । १० आ.इ. बली । ११ आ. चत गांम । १२ आ.इ. मुरधर । १३ आ.इ. सहस । १४ इ. साहइ । १५ आ. पषर । इ. पाषर । १६ आ इ. ईल । १७ आ. भुचे । इ. भुंचे । १८ आ.इ. पद । १९ आ.इ. सु । २० आ.इ. लडीया । २१ आ.इ. लाष । २२ इ. दुंद कारां । २३ आ.इ. षंधारां । २४ आ.इ. मोड । २५ आ.इ. हिंदूवांण । २६ आ. द्रुग । इ. दुरंग । २७ आ.इ. कुवर । २८ आ.इ. नृप । २९ आ सहूवै । ३० आ.इ. षेत । ३१ आ. लोहङा । इ. लोहड़ा । ३२ आ.इ. षुरसांणह । ३३ आ.इ. समद । ३४ इ. नाम । ३५ इ. सहु । ३६ आ.इ. हिंदूसथांनह । ३७ आ.इ. मोष । ३८ इ. गुड़ै । ३९ आ.इ. मैंगल । ४० आ.इ. मदमता । ४१ आ. रठौङ । इ. राठोड । ४२ आ.इ. असमांण । ४३ आ.इ. छिबता । ४४ आ. कुअर । ४५ आ. कुअरां । ४६ आ.इ. मल ।

राज्य वैभव वरणण

गाथा

साहण समंद सूरौ, ईस्वर[1] अवतार देव राजिंद्रौ[2] ।
कविळास[3] जोधद्रुगो, कुमेरौ संपदा पण ए[4] ॥१॥

जोधपुर तुल मेरौ, तेरह[5] साखां[6] कोडि तेतीसौ[7] ।
तथौ[8] "गजसाह" इंद्रौ[9] वित चित विसेखांयु[10] ॥२॥

गज[11] कोटि राज द्वारौ, मिंदर उतंग महल अटाळा ।
संपेख[12] धांम[13] वांम[14], विसक्रमा[15] विभ्रम[16] भवेत ॥३॥

नगर वरणण

छन्द नाराच[17]

उतंग[18] चंग भीत चीत, मंड चंड मंदरं ।
कळी[19] सपेत जांणि सेत, धार धम्मला गिरं[20] ।
पहाड कोटि कम्मसीस[21] पेखिए[22] प्रचंड ए ।
जळद्द[23] हद्द[24] रूप जांणि, मेघमाळ मंड ए ॥१॥

महल्ल[25] गौख[26] सोभ[27] मांन, कुंदनी[28] कळस्स ए[29] ।
पणंत काच नील व्रन्न[30], आरिखे[31] अरस्स ए[32] ।
पबै[33] गिरां पगार पौळि[34], लोहमै कपाट ए ।
(जु) स्रिगमेर[35] सीस जांणि, ओपियंत[36] आट ए ॥२॥

---

१ आ.इ. ईश्वर । २ आ.इ. राजिंद्रो । ३ आ.इ. कवलास । ४ आ. ऐ । ५ अ. तेइ । आ. तेई । ६ आ. साषां । इ. सषां । ७ आ. तेतीसो । ८ आ.इ. तथा । ९ आ.इ. इंद्रो । १० आ.इ. विसेषायु । ११ आ.इ. गढ कोटि । १२ आ.इ. संपेष । १३ आ.इ. धाम । १४ आ. वामं । इ. ठामं । १५ आ.इ. विसुक्रमा । १६ आ. विभ्रमं । १७ आ.इ. नाराज । १८ आ.इ. ऊतंग । १९ आ.इ. कली । २० आ.इ. धमला गिरं । २१ आ.इ. कमसीस । २२ आ.इ. पेषीयै । २३ आ.इ. जलद । २४ आ.इ. हद । २५ आ.इ. महल । २६ आ.इ. गोष । २७ आ. सोभ । २८ इ. क्रुंदनी । २९ आ.इ. कलसए । ३० आ. पून । इ. पून । ३१ आ.इ. आरिषे । ३२ आ.इ, अरसए । ३३ आ. पवे । ३४ आ.इ. पौलि । ३५ आ.इ. श्रिग मेर । ३६ आ.इ ओपीमंत ।

जरद्द[१] लाल सेत स्याह, जाळियां[२] पखांण ए[३] ।
सपत्त[४] मै खणा[५] आंमास, ओपि असमांण ए[६] ।
विराज मांन राजथांन कमंधज्ज[७] भूपती ।
जुगत्ति[८] राजगत्ति[९] जांणि, इंद अंमरावती[१०] ॥३॥

विनोद गीत नाद भेद, सद्द[११] घंट झालरी ।
प्रसाद देव पूजिइत, अंबिका हरोहरी ।
निसा जळंत[१२] दीपजोत, मिंदरं[१३] उजाळ ए[१४] ।
सदा सरब्बदा[१५] हुवत्त[१६], जांण दीपमाळ ए[१७] ॥४॥

उदै अरक्क[१८] ऊगहंत, माळ लक्ख[१९] मंडही ।
स्रीवंत[२०] साह लाखपत्ति[२१], कवि क्रोड[२२] दी धुही ।
वियास[२३] भट्ट[२४] के महंत, जोतिकी ब्रहांमणं[२५] ।
कथा पुरांण[२६] भागवंत, भारथं रांमाइणं ॥५॥

रुघव्व[२७] जुज्ज[२८] सांमवेद[२९], आंमना अथब्बणं[३०] ।
त्रईस[३१] रांण[३२] वेद मंत्र[३३], बोलियंत[३४] बंभणं[३५] ।
जुडित्त[३६] एक जोरदार, थोर भुज्ज[३७] डंड ए[३८] ।
जेठी प्रचंड ग्रीठ[३९] पिंड मल्ल[४०] जुध्ध[४१] मंड ए ॥६॥

भणंत एक व्याकरण, वीर इस्ट[४२] के करै ।
तरक्क[४३] नीति[४४] सासत्रांणि[४५], एक मुक्ख[४६] उच्चरै[४७] ।

---

१ आ.इ. जरद । २ आ.इ. जालीयां । ३ पषांणए । ४ आ.इ. सपत । ५ आ. इ. षण । ६ आ.इ. आसमाणए । ७ आ.इ. कमधज । ८ आ.इ. जुगति । ९ आ.इ. राजगति । १० आ.इ. अमरावती । ११ आ.इ. सद । १२ आ.इ. जलंत । १३ आ. मिंदर । १४ आ.इ उजलए । १५ आ.इ. सरवदा । १६ आ.इ. हुवत । १७ आ.इ. दीपमालाए । १८ आ.इ. अरक १९ आ.इ. लष । २० आ.इ. श्रीवंत । २१ आ.इ. लाषपति । २२ आ.इ. कोड । २३ आ.इ. व्यास । २४ आ.इ. भट । २५ आ. व्रहा- मणं । इ. ब्रह्मणं । २६ आ. पुराण । २७ आ.इ. रुघव । २८ आ.इ. जुज । २९ आ. सामवेद । इ. सांमहेद । ३० आ. अथवणं । इ. अथबरणं । ३१ आ. त्तइंस । ३२ आ.इ राण । ३३ आ. मंत । ३४ आ. बोलीयंत । ३५ बेभणं । ३६ आ. जुडित । इ. जुडित । ३७ आ.इ. भुज । ३८ आ. डडए । ३९ अ. ग्रीव । ४० आ. इ. मल । ४१ आ.इ. जुघ । ४२ आ. इष्ट । इ. इसट । ४३ आ.इ. तरक । ४४ इ. निति । ४५ आ.इ. सासत्राणि । ४६ आ.इ. मुष । ४७ आ इ. उचरे ।

मारतं एक सव्व[१] धात, केळवै[२] रसायणं[३] ।
अगाध[४] वैद राज राज[५] ओखदी[६] विचारणं ॥७॥

ऋखी[७] विणज्ज[८] आकरांणि[९] , पसू चौपदी घणी ।
अनेक संपदा[१०] उपाउ, लाछि[११] चत्तुरंगणी[१२] ।
पदंम[१३] राग लाल पाच, नीलया[१४]-मिणी[१५] नगं ।
पन्ना कनक्क[१६]मैं[१७] जडाउ[१८] जोइ[१९] मोहियै[२०] जगं ॥८॥

बाजार वरणण

करै वणिज्ज[२१] एक हट्ट[२२] रूप सक्कलत्त ए[२३] ।
साखा[२४] चौतार मुक्खमल्ल[२५], रेसमी वसत्त ए[२६] ।
करंत एक दांन पुन्नि[२७] जिग्ग[२८] होम जप्प[२९] ए ।
करंत एक राग रंग, मोहिए[३०] सरप्प ए[३१] ॥९॥

गाइत्ति[३२] एक आप ग्रेह, मांणणोस[३३] मंगळं ।
चमीर हीर हार चीर, कांन हेम कुंडळं[३४] ।
सिंगार खोड[३५] मै[३६] संजुत्त[३७] सुंदरी वखांण ए[३८] ।
पंयच[३९] आंगुळी[४०] जु पांण, कांम पंच बांण ए[४१] ॥१०॥

अनेक एक पेखियंति[४२], रुप मै[४३] चिरत्त ए[४४] ।
वसंत पट्टणं[४५] विसाळ[४६], जोति मै[४७] नखत्त ए[४८] ।

---

१ आ. सब । इ. सर्वं । २ आ. केलवे । इ. केलवै । ३ आ.इ. रसायिणं । ४ आ. आगाध । इ. अगाधि । ५ वेदराट । ६ आ.इ. ओषदी । ७ आ.इ. ऋषी । ८ आ. बिणझ । इ. विणज । ९ आ.इ. आकराणि । १० आ. सपदा । ११ आ.इ. लछि । १२ आ. चतुरंगणी । इ. चत्रुरगणी । १३ आ.इ. पदम । १४ आ. निलया । इ. निलयी । १५ इ. मीणी । १६ आ.इ. कनक । १७ आ.इ. मै । १८ आ.इ. जड़ाव । १९ अ. जोई । २० आ.इ. मोहीयै । २१ आ. वाणिज । इ. बणिज । २२ आ.इ. हठ । २३ आ.इ. सकलतऐ । २४ आ.इ. साषा । २५ आ.इ. मुषमल । २६ आ.इ. वसतए । २७ आ.इ. पुनि । इ. पुन्य । २८ आ.इ. जिग । २९ आ.इ. जपण । ३० आ.इ. मोहीयै । ३१ आ.इ. सरपए । ३२ आ.इ. गाइति । ३३ अ. माणणी । ३४ कुंडलं । ३५ आ. इ. षोड । ३६ अ. मे । ३७ आ.इ. संजुत । ३८ आ. वषांणए । इ. वषाणए । ३९ अ. पमंच । ४० आ.इ. आंगुली । ४१ आं. बाणए । ४२ आ.इ. पेषीयंती । ४३ अ. में । ४४ आ.इ. चिरतए । ४५ आ.इ. पटणं । ४६ आ.इ. विसाल । ४७ अ. में । ४८ अ.इ. तषतए ।

वसै[१] अढारहै वरन्न[२] लोक मै[३] अपार ए ।
वसै[४] छतीस[५] पूण[६] जात, कज्जि[७] रोजगार ए ॥११॥

तालाब उपवन आदि वरणण

अहौनिसा[८] कहौ हुवंत, लाख[९] लोक[१०] नग्गरं[११] ।
हिलोळ[१२] जांणि हूकळंत[१३], सद्द[१४] नद्द[१५] सग्गरं[१६] ।
सरोवरां तटाक[१७] हौद, तीरथं प्रमांण ए[१८] ।
वावी अनूप कूप वाइ, नीझरै निवांण ए[१९] ॥१२॥

आरुब झूत्र ओपवांन[२०], अंब वाग ओप ए ।
अठार[२१] भार अदब्भू[२२], अजू अजू अजोप ए ।
गुलाब मालती सुगंध, सेवती सुपड्डुलं[२३] ।
तरांणि पंच केवडाकि, केतकी परिम्मलं[२४] ॥१३॥

जंभीर[२५] दाख[२६] बीज[२७] पूर, व्रक्ख[२८] कोळ[२९] बद्दरी[३०] ।
खिजूर[३१] ताड नाळिकेर, दाडिमी जळंधरी[३२] ।
सदा फळांणि[३३] निंबुआंणि[३४] , राइणी[३५] महूअडा ।
कल्हार जंबुई[३६] नारंग - रंग वाग रूअडा ॥१४॥

भुजंग वेलि चंदनी[३७], न कुंज[३८] मै[३९] तमाळ ए ।
अनेक व्रक्ख[४०] अन्नि[४१] अन्नि, रुप मे रसाळए[४२] ।
चळांणि[४३] पत्रियांणि[४४] वट्ट[४५], आंबली[४६] असंभ ए ।
बकांणि नींब[४७] में बहत्त, ईखियै[४८] अचंभ ए ॥१५॥

---

१ आ. वसे । २ आ.इ. वरन । ३ अ. में । ४ आ. वसे । ५ इ. छत्रीस । ६ आ. पुण । इ. पवण । ७ आ. कजि । ८ अ. अहौनिस । ९ आ.इ. लाष । १० आ. ल्लोक । ११ आ.इ. नगरं । १२ आ.इ. हिलोल । १३ आ.इ. हुकलंत । १४ आ. इ. संद । १५ आ.इ. नद । १६ आ.इ. सगरं । १७ आ.इ तटाके । १८ आ.इ. प्रमाणए । १९ आ.इ. नीवांणए । २० आ. ओपवान । इ. ओपमांन । २१ आ.इ. अढ़ार भार । २२ आ.इ. अद भू । २३ आ.इ, सुपडलं । २४ आ.इ. परमलं । २५ इ. जंबीर । २६ आ.इ. दाष । २७ आ.इ. बिज । २८ आ. वृष । २९ आ, कोल । ३० आ.इ. बदरी । ३१ आ.इ. षिजूर । ३२ आ.इ. जलंधरी । ३३ आ.इ. फलाणि । ३४ इ. निबु आणि । ३५ इ. रांइणी । ३६ आ. जंबूइ । ३७ आ.इ. चंदनि । ३८ आ. कुज । ३९ अ. में । ४० आ.इ. वृष । ४१ आ.इ. अनि । ४२ आ.इ. रसालप । ४३ अ. चलाणि । ४४ आ. पत्तियांणि । इ. पत्रियांण । ४५ आ.इ. वट । ४६ आ. आबली । ४७ आ.इ. नीब । ४८ आ. इषीयै । इ. ईषीयै ।

महाराजकुमार गजसिंघ रो बडा महाराजा री अनुपस्थिति में राज्य भरा सम्हाळणो

दूहा

गड्ढ[1] जोधपुर इन्द्र[2] पुर, छबि सोभा अणपार।
कवि जीहा कहि दक्खवै[3], केतौइक विसतार ॥१॥

दरि है गै घरि राइधी[4], भड वंका दीवांण।
की इंद्रापुर[5] अग्गळौ[6], घटि कीं सूं[7] जोधांण[8] ॥२॥

बापूह वित अच्छेह[9] में, आपह चित अच्छेह।
'गज्जण'[10] मांणै साहिबी, ज्यूं[11] महि मांणै मेह ॥३॥

दुहूं[12] भुजै[13] सुरतांण बळ[14], दुहूं[15] भुजे कुळ[16] लाज।
राजा सरहद्दां[17] लियै, कुंअर[18] भुगत्तै[19] राज ॥४॥

राजा राज भळावियौ[20], 'गाजीसाह' नरेस।
आसा[21] पै औ[22] जोधपुर, आ धरती औ[23] देस ॥५॥

धमळौ बापू कारियौ[24], बाळौ[25] है बळि बंड।
धुरि माथौ धूणै नहीं[26], भरि ओडै भूडंड[27] ॥६॥

महाराजा सवाई सूरसींघ रौ दखिण में गमन

कवित्त

पछिम पुरब[28] उतराध, इळा[29] दखणाधह[30] आगळ[31]।
हिंदूवांण[32] खुरसांण[33], दुहूं[34] भुज्जे[35] दुन्है छळ[36]।

---

१ आ.इ. गढ। २ इ. इजपुर। ३ आ.इ. दषवै। ४ आ.इ. राईधी। ५ इ. इडापुर। ६ आ.इ. अगलौ। ७ आ. सुं। इ. सू। ८ आ. जोधाण। ९ आ.इ. अछेह। १० आ इ. गजण। ११ आ. ज्युं। १२ आ.इ दुहु। १३ आ.इ. भुजे। १४ आ.इ. । छळ १५ दुहु। १६ आ इ. कुल। १७ आ.इ. सरहदां। १८ आ.इ. कुअर। १९ आ.इ. भुगतै। २० आ.इ. भलावीयो। २१ आ.इ. आ सा। २२ इ. ओ। २३ आ.इ. ओ। २४ आ. बापुकारीयो। इ. वापुकारीयो। २५ आ.इ. बालो। २६ आ.इ. नही। २७ आ. भुडंड। इ. भुहडंड। २८ आ. पूर्व। इ. पूरब। २९ आ. इला। इ. ईला। ३० आ. दषणाधह। इ. दिषणाधह। ३१ आ.इ. आगल। ३२ आ.इ. हिंदूवांण। ३३ आ. षुसांण। इ. षुरसांण। ३४ आ.इ. दुहु। ३५ आ. भुजे। ३६ आ.इ. छल।

सूरसिंघ दिगपाळ[1], एक पक्खर[2] लख[3] पक्खर[4] ।
गूजरवै[5] अरबद्द[6], कीध वंका सूर[7] पधर[8] ।
दळ थंभ[9] देखि[10] दिल्ली[11] धणी[12], दखण[13] दीध[14] आडौ[15] दळां[16] ।
तिण वार भळावै[17] निय[18] तणौ, 'गाजीसाह' भुग्रब्बळां[19] ॥१॥

महाराजकुमार गजसींघ रौ मेवाड़ पर आक्रमण तथा नाडूळ पर अधिकार करणौ

मेद पाट खुरसांण[20], आदि बकवाद[21] संभारे[22] ।
साहि कीध फुरमांण, खांन[23] सुरतांण हकारै[24] ।
चढे[25] सेन चतुरंग, सपत किरि साइर[26] फट्टा[27] ।
एक लाख[28] असवार, आवि मेवाड निहट्टा[29] ।
ऊबरा खांन[30] बहतरि[31] सतरि, प्रजाबंध पाडे मढां ।
नाडूळ[32] 'सिंघ' गळ[33] गज्जियौ[34], गोढ़वाड ऊपरि[35] गढ़ां ॥२॥

वळौ[36] जूह विब्भाड[37], डसण नाडूळ[38] उपट्टै[39] ।
जोजावर चांमळोद[40], खोड[41] आंमिख[42] गळ घट्टै[43] ।
गिळै[44] गूंद[45] सादडी, सयळ[46] साव्ज[47] मन रंजै[48] ।
कोलर तोडि[49] करंक, गूह[50] गरजी खत[51] भंजै[52] ।
गोढ़वाड बरड संधांण[53] सह, कूंभ[54] भंजि कूंभेण गिरि ।
गजसिंघ[55] कियौ[56] गज केसरी, सिंघनाद मेवाड सिरि ॥३॥

---

१ आ.इ. दिगपाल । २ आ.इ. पषर । ३ आ.इ. लष । ४ आ.इ. पषर । ५ आ.इ. गुजरवै । ६ आ.इ. अरबद । ७ अ आ. सर । ८ अ. पद्धर । ९ आ.इ. दल-थंभ । १० आ.इ. देषि । ११ आ.इ. दिली । १२ आ. द्धणी । १३ आ.इ. दषण । १४ आ. दीद्ध । १५ आ.इ. आडा । १६ आ.इ. दलां । १७ आ.इ. भलावे । १८ आ. इ. नीय । १९ आ.इ. भुग्रबलां । २० आ.इ. षुरसांण । २१ इ. बकवादौ । २२ आ. इ. संभारै । २३ आ.इ. षांन । २४ आ.इ. हकारै । २५ आ.इ. चटे । २६ आ.इ. साइ । २७ आ.इ. फटा । २८ आ.इ. लाष । २९ आ.इ. निहटा । ३० आ.इ. षांन । ३१ आ. बहतिरि । इ. बहितिरि । ३२ आ.इ. नाडूल । ३३ आ.इ. गल । ३४ आ. गजियौ । इ. गजयौ । ३५ आ,इ. उपरि । ३६ आ.इ. वलौ । ३७ आ.इ. विभाड । ३८ आ.इ. नाडूल । ३९ आ.इ. उपटे । ४० आ.इ. चांमलोद । ४१ आ.इ. षोड । ४२ आ.इ. आमिष । ४३ आ.इ. घटे । ४४ आ.इ. गिले । ४५ आ. गुदं । इ. गुद । ४६ आ.इ. सयल । ४७ आ.इ. सावज । ४८ आ.इ. रंजे । ४९ आ.इ. तोड़ि । ५० आ.इ. गुद । ५१ आ.इ. षत । ५२ इ. भंजे । ५३ आ. संघाण । इ. ससंधाण । ५४ इ. कूभ । ५५ इ. गजांसिंघ । ५६ आ.इ. कीयौ ।

दूहा

है पाई[1] गिरि गाहिजे, मारीजै[2] मैवास ।
निस वासर नागाद्रहा[3] , हियै[4] न पूजै सास ॥१॥

वरळाई[5] सोळंकिया[6] , घूरां बळी[7] पहाड ।
घा बाळीसां[8] सींघलां[9] , गमिया जडां उपाड ॥२॥

छन्द हाकुडिया[10]

सोळंकी[11] सारे मछर मारे, ढंढ़ोळै[12] पहाड ।
बाळीसा बोए फौजां ढोए, मळवट्टै[13] मेवाड ।
सींघल[14] संघारे बोल उतारे, मेले दळ[15] कळि[16] मूळ[17] ।
खागै[18] खूमांणां[19] रेहलि रांणा, निज थांणा[20] नाडूळ[21] ॥१॥

गाहा चौर[22] [चौसर]

कमधज्जां[23] नाडूळ[24] लसक्कर[25] ।
लौहोडो[26] खुरसांण[27] मंडोवर ।
हेरि कतार नयर दूनाडे[28] ।
मांडै[29] डांण रांण मेवाडै ।

दूहा

मेवाडौ ओळोभियौ[30], धारि पहो मन धोड ।
जोधपुरो[31] जीपै सदा, जुध हारै चीतोड ॥१॥

---

१ आ० पाइ । इ. पापाई । २ आ.इ. मारिजै । ३ नागद्रहा । ४ आ.इ. हीयै । ५ आ.इ. छरळाई । ६ आ.इ. सोलंकीयां । ७ आ.इ. बळी । ८ बालीसा । ९ आ.इ. सींधलां । १० आ.इ. हाकुटीया । ११ आ. सोलींकी । इ. सोलंकी । १२ आ.इ. ढंढ़ोले । १३ आ.इ. मलवटे । १४ आ.इ. सीघल । १५ आ.इ. दल । १६ आ.इ. कलि । १७ आ.इ. मूल । १८ आ.इ. षागे । १९ आ.इ. पूमांणा । २० आ.इ. थाना । २१ आ.इ. नाडूल । २२ आ. गाहा चोर । इ. गाहा चोरस । २३ आ.इ. कमधजां । २४ आ.इ. नाडूल । २५ आ.इ. लसकर । २६ आ. लौहीड़ो । इ. लोहेड़ो । २७ आ.इ. षुरासांण । २८ इ. दूनाडै । २९ आ.इ. मांडे । ३० आ. औलोभीयो । इ. आलोजीयो । ३१ आ.इ. जोधपुर ।

सूं[1] थांणौ नव[2] साहसौ, रांण जरूकी राडि[3] ।
धाडां कारण[4] मेलिया[5] , दस सहसै[6] दळ[7] चाडि ।।२।।

छंद तवत[8]

मेवाडै[9] रांण[10] तणा दिल मुरधर चालै दळ[11] चतुरंग ।
घोडां पडताळ भडां घांसाहड, पररांण पडिभंग ।
दळ[12] वळिया[13] पाछा डांणी हूँ[14], लांभौ मन्नै[15] भिड वाउ ।
आयौ तिण वेळा[16] 'गोइंद' आडौ, भेडक भाटी राउ ।।१।।

महारांणा की पराजय

कवित्त[17]

भाटीराउ गजभीम, जुडे[18] जांमळि रट्ठौडां[19] ।
जीता जोधपुराह, हारि हुई[20] चीतौडां[21] ।
देसपती[22] राउत्त[23], अमुह केतौ ऊजांणां ।
ईसर[24] सांमळदास, खेत[25] रहिया[26] खूमांणां[27] ।
'गोइंद' पेखि[28] जैसळगिरौ[29], बाघ वीसमौ वीरवर ।
रिणवार रांण 'अमरेस' रा, कुरंगां[30] जेम[31] गया कुंअर ।।१।।

महाराजकुमार गजसींघ रौ सिरोही पर आक्रमण

दूहा

मछरीकां[32] सिर मछरियौ[33], राइजादौ[34] राठौड ।
वैर पुरांणा[35] वाळिवा, करै नवल्ली[36] दौड ।।१।।

---

१ आ.इ. सु । २ इ. नह । ३ इ. राड़ । ४ इ. करण । ५ आ.इ. मेलीया । ६ दस सहंस । ७ आ.इ. दल । ८ आ. तवत् । ९ आ.इ. मेवाड़े । १० आ. राण । ११ आ.इ. दल । १२ आ.इ. दल । १३ आ.इ. वलीया । १४ आ.इ. हु । १५ आ.इ. मने । १६ आ.इ. वेला । १७ आ.इ. कवित । १८ आ.इ. जुड़े । १९ आ. रठौडां । इ. राठौडां । २० आ.इ. हुइ । २१ इ. चीतौड़ां । २२ आ. देसपति । २३ आ.इ. राउत । २४ आ. इसर । २५ आ.इ. षेत । २६ आ. रहीया । इ. रहीयां । २७ इ. षुमांणां । २८ आ.इ. पेषि । २९ आ.इ. जेसलगिरौ । ३० आ. कुरंगा । ३१ आ. इ. जिम । ३२ आ. मछीरका । ३३ आ.इ. मछरीयौ । ३४ इ. राईजादो । ३५ आ. पुरांणां । ३६ आ.इ. नवली ।

गजबंधी[1] दळ[2] मेल्हिया[3], पहरै[4] जोध[5] जरद्द[6]।
मारि मनांउ देवडा[7], हुव गंजू[8] अरवद्द[9] ॥२॥

छंद त्रिभंगी

ऊंपरि[10] अरबद्दं[11] कोपि मरद्दं[12], जडं जरद्दं[13] जुध वद्दं[14]।
नीसांण निनद्दं[15], पंच सबद्दं[16] रोडि रवद्दं[17] घण सद्दं[18]।
हालै[19] दळ[20] हद्दं[21], जांणि[22] जळद्दं[23] गयण गरद्दं[24] मिळि[25] तद्दं[26]।
फत्तै[27] सिरि हद्दं[28], रैण[29] रहद्दं[30] रांवां मद्दं[31] थिय[32] रद्दं[33] ॥१॥

पैमाल पेहट्टं[34], घाट दुघट्टं[35], हींसा[36] फट्टं[37] घण थट्टं[38]।
राठोड सुभट्टं[39], आखि निहट्टं[40], बंध प्रघट्टं[41] रिणवट्टं[42]।
छिल्लै[43] मे(ह)[44] णांणं, दळ[45] असमांणं[46], खेड[47] प्रमाण[48] खुरसांण[49]।
चाते चहुआंणं, बलि केवांणं, चाढ़ि[50] चखांणं[51] सिस भाणं ॥२॥

महाराजकुमार री सिरोही पर विजय

कवित्त

सेन मेल सिवपुरी, फौज घेर[52] घांसोहर[53]।
जैतहत्थ[54] कळि[55] मत्थ[56], साथि भाटी[57] रिण घोयर[58]।

---

१ इ. गजबंधीया। २ आ.इ. दल। ३ आ.इ. मेलीया। ४ इ. पहरे। ५ आ. जोधो। ६ आ.इ. जरद। ७ इ. देवड़ा। ८ आ. गजूं। ९ आ.इ. अरबद। १० इ. ऊपड़ि। ११ आ.इ. अरबदं। १२ आ.इ. मरदं। १३ आ.इ. जरदं। १४ आ. इ. वदं। १५ आ.इ. निनदं। १६ आ.इ. पंच-सबदं। १७ आ.इ. रवदं। १८ आ.इ. सदं। १९ आ.इ. हाले। २० आ.इ. दल। २१ आ.इ. हदं। २२ आ. जाणि। २३ आ.इ. जलदं। २४ आ.इ. गरदं। २५ आ.इ. मिलि। २६ आ.इ. तदं। २७ आ.इ. फतै। २८ आ.इ. हदं। २९ आ.इ. रेण। ३० आ.इ. रहदं। ३१ आ.इ. मदं। ३२ आ.इ. थीयो। ३३ आ.इ. रदं। ३४ आ. पेहदं। इ. पेहटं ३५ आ.इ. दुघटं। ३६ इ. हीसा। ३७ आ.इ. फटं। ३८ आ.इ. थटं। ३९ आ.इ. सुभटं। ४० आ.इ. निहटं। ४१ आ.इ. प्रघटं। ४२ आ.इ. रिणवटं। ४३ आ.इ. छिले। ४४ आ.इ. मणाणं। ४५ आ.इ. दलं। ४६ आ.इ. असयाणं। ४७ आ.इ. षेड। ४८ आ. पुमाणं। इ. पुमांणं। ४९ आ.इ. षुरसांण। ५० आ.इ. चाडि। ५१ आ. चषणं। इ. चषांणं। ५२ आ. घेरै। इ. पुरे। ५३ आ. घांसहर। इ. घांसांहर। ५४ आ. जेतहथ। इ. जैतहथ। ५५ आ.इ. कलि। ५६ आ.इ. मथ। ५७ आ. भांटी। ५८ आ.इ. घोयर।

कटि इम पडिगी[१] रैं(ण), धणी अड्डार गिरंदर[२] ।
लाया पाइ[३] रकेव[४] , कीध मछरीक रेंहबर[५] ।
राठौड[६] कुंग्रर[७] पक्खर[८] खंद[९] , कवण(भ[१०]) समवड करै ।
जमदाढ़ छोड विज्जै[११]लई, कना राउ ग्ररबद्द[१२] रै ।।१।।

बादशाह जहांगीर रौ अजमेर आगमन और राजा सूरसींव नै बुलाणौ

पातिसाह अजमेर, आप आयौ गुडि[१३]पक्खरि[१४] ।
सतरि खांन[१५] खीटिंया[१६], अनै उबरा(व) वहत्तरि[१७] ।
हुआ[१८] ग्रीध समसांण, वाढ़[१९] करिकां कूंबूग्रळ ।
नर हय गय पळ[२०] खीण[२१], मत्त पल जंबू संमळ[२२] ।
असपति[२३] राउ सांम्ही[२४] अरज, इम मेल्है[२५] सिख[२६] सुर असुर ।
गंजैत रांण राठौडि नृप[२७], 'अमर' रांण[२८] नृप[२९] सिलै[३०] गुर ।।२।।

तांम[३१] साह[३२](ह) जिंहगीर[३३], लिखे[३४] मूक्यौ[३५] परमांणौ ।
पळ खूटौ[३६] खुरसांण[३७], सब्बळा[३८] अजुं खूंमांणौ[३९] ।
मेर मेर सारिखौं[४०], हुऔ[४१] इक इक्क[४२] पहाडह ।
तौ पक्खै[४३] कमधज्ज[४४], कमण गंजै मेवाडह ।
सूरज्जमल्ल[४५] सुरतांण बळि[४६], ग्रहे खाग[४७] लागौ ग्ररस ।
आयौ अभंग नव साहसौ[४८], खडि[४९] तुरंग सिरि दस सहस ।।३।।

---

१ आ. गिरें । इ. गिरे । २ आ. अढोर गिरवर । इ. अढार गिरवड । ३ इ. आ. पाई । ४ आ. रेह । इ. रकेब । ५ रेहबर । ६ इ. राठोड । ७ आ.इ. कुवर । ८ आ.इ. पषर । ९ इः खद । १० इ. तूस । ११ आ इ. वेजै । १२ आ.इ. अरबद । १३ इ. गुड । १४ आ.इ. पषरि । १५ आ.इ. षांन । १६ आ. षीटीया । इ. षीढीया । १७ बहतरि । १८ आ. हूआ । इ. हूवा । १९ आ.इ वाडि । २० आ.इ. पल । २१ आ.इ. षीण । २२ आ.इ. समल । २३ आं.इ. असपति । २४ आ. सांमी । २५ आ. मेल्है । इ. मेलै । २६ आ.इ. लिष । २७ आ.इ. नृप । २८ आ. राण । २९ आ. नृप । ३० आ.इ. सेलगुर । ३१ आ.इ. ताम । ३२ आ. संह । ३३ आ.इ. जिहगीर । ३४ आ. लिषै । इ. लिषे । ३५ आ. मूकऔ । ३६ आ. षूटौ । इ. षूटो । ३७ आ.इ. षुरसांण । ३८ आ.इ. सबल । ३९ आ. षुभाणौ । इ. षुभांणो । ४० आ.इ. सारिखौ । ४१ आ. हुवौ । इ. हुवो । ४२ आ.इ. इक । ४३ आ. पषै । इ. तोषै । ४४ आ.इ. कमधज । ४५ आ. सुरजमल । इ. सूरजमल । ४६ अ. बलि । ४७ आ.इ. षाग । ४८ अ. तवसाहसौ । ४९ आ.इ. षडि ।

सवाई राजा सूरसींघ री विजय

रूकरस राठौड गुरड प्रगटौ[1] गैणागा ।
नवकुळ[2] दळ[3] दस हंस[4], चडे[5] अलंगे[6] पडि भग्गा[7] ।
मिळिया[8] के मारिया[9], झडप चंचां[10] खग[11] झाटां ।
पंख[12] सोकां वाजंत, हमस[13] पाए हैथाटां ।
मेवाड हुवा नागां मंडळ[14], साफराफ पाहाड[15] सह ।
इकलंग[16] कंठ रहियौ[17] 'ग्रमर', चील-सेख[18] चीतौड[19] पह ॥४॥

सवाई राजा सूरसींग री महाराजकुमार गजसींघ नै पत्र लिख नै बुलाणी

राजा कागळ[20] लिखै[21] कुंग्रर[22] तेडे निय[23] कन्हळि[24] ।
मिळण[25] मनोरथ करै[26], साह[27] जाहंगीर[28] तणै छळि[29] ।
चडै[30] तांम[31] गजपती[32], करे लसकर ग्राडंबर ।
भड वंका वर तुरी, लिया मदमत्ता[33] कुंजर ।
जूहार[34] उदैपुर जाइ किय[35] साथि भीच 'गोइंद' सगह ।
इके रास[36] हुग्रा[37] किरि एकठा, सूरज थावर बिनै ग्रह ॥५॥

महाराजा सवाई सूरसींघ री महारांणा नै समझा नै बादसाह सूं सुलह कराणी

दूहा

राजा रांणां मेलिया[38], कीध उकीलां वत्त[39] ।
वाद वडां[40] सूं[41] छंडियै, एहस[42] ग्राद्र मत्त[43] ॥१॥
रांणै[44] राजा नूं[45] कह्यौ, मेल्है[46] परधांनांह ।
साह पगै[47] धुन[48] मोकळूं[49], जो थै[50] ग्रप्पौ[51] बांह ॥२॥

---

१ इ. प्रगटयौ । २ ग्रा.इ. नवकुल । ३ ग्रा.इ. दल । ४ ग्र. सैस हुंस । ५ ग्रा. चडै । ६ ग्रा.इ. ग्रलंगे । ७ ग्रा.इ. भगा । ८ ग्रा.इ. मिलीया । ९ ग्रा.इ. मारीया । १० ग्र. चंचा । ११ ग्रा.इ. षग । १२ ग्रा.इ. पंष । १३ ग्रा.इ. हमंस । १४ ग्रा.इ. मंडल । १५ ग्र. पाहोड । १६ ग्रा. एक लंग । इ. एकलग । १७ ग्रा.इ. रहीयौ । १८ ग्रा.इ. चील-सेष । १९ ग्र. चीत्रौड़ । इ. चीत्तौड । २० ग्रा.इ. कागल । २१ ग्र. लिषै । २२ ग्रा.इ. कुग्रर । २३ ग्रा.इ. नीय । २४ ग्रा.इ. कनली । २५ ग्रा.इ. मिलण । २६ ग्रा.इ. करे । २७ ग्रा. सांह । २८ ग्रा.इ. जिहंगीर । २९ ग्र. बलि । ३० ग्र. चडै । ३१ ग्रा.इ ताम । ३२ ग्रा. गमूपति । इ. गजपति । ३३ ग्रा.इ. मदमता । ३४ ग्रा.इ. जुहार । ३५ ग्रा.इ. कीय । ३६ ग्रा.इ. एक । ३७ ग्रा. हूग्रा । इ. हूवा । ३८ ग्रा इ. मेलीया । ३९ ग्रा.इ. वत । ४० ग्रा. वडा । ४१ ग्रा.इ. सु । ४२ ग्रा. एहेस । ४३ ग्रा.इ. मत । ४४ ग्रा. राणै । ४५ ग्रा. नू । ४६ ग्रा. मल्हे । ४७ ग्रा.इ. पगे । ४८ इ. कनि । ४९ इ. मोकलुं । ५० ग्रा. थै । ५१ ग्रा.इ. ग्रायौ ।

राजा बोल समप्पियौ[१], कहियौ[२] रांण प्रमांण ।
बे घोघूंदै[३] मेलिया[४], खूंदालम[५] खूमांण[६] ॥३॥

खिजमति[७] करण कबूला[८] की, बळ[९] छंडे समसेर ।
खुरम[१०] फतै कर हल्लियौ[११], साह पगे अजमेर ॥४॥

साहजादा खूरम री विजयी होनै बादसाह रै पास महाराजकुमार करण री लेनै अजमेर में आगमण

छन्द वैताल

नीसांण रोडि दमांम[१२] नौबति[१३], भेरि पंच-सबद्द[१४] ए ।
लख[१५] थाट मोगर लीण लसकर, गिगन धूळ गरद्दै[१६] ए ।
फरहरा चोधां[१७] ढेळिकि नेजां[१८], कुंजरां सिर ढ़ल्ल[१९] ए ।
अजमेर दिस हूंता उदैपुर, कटक इण परि चल्ल[२०] ए ॥१॥

संमूह[२१] सेन असंख[२२] सफां, भ्रिग्ग[२३] मुज्झै[२४] मंझळी[२५] ।
मल्हपति फौजां मुहरि मैंगळ[२६], सूंड[२७] डोहै सिंघळी[२८] ।
पडताळ पवंग[२९] रोळि[३०] पक्खर[३१], घोर गैंमर[३२] घट्ट[३३] ए ।
दीसै न अंबर डाबि डंबर, उदध जांणि उलट्ट[३४] ए ॥२॥

गज थाट ध्रू सग्गडस[३५] गज दळ[३६], क्रमे[३७] कोअण कंठळं[३८] ।
परबत्त[३९] माळ[४०] कि[४१] हेम हल्लै[४२], मेघमाळ[४३] कि[४४] वद्दळं[४५] ।
धडहडै[४६] सात पंयाळ[४७] धूजै, सेख[४८] नाग धडक्क[४९] ए ।
खित[५०] भार दाढ़ वाराह खड़कै[५१], कोम[५२] कंध कड़क्क[५३] ए ॥३॥

---

१ आ.इ. समपीयौ । २ आ. कहीयौ । इ. कहीयो । ३ आ.इ. घोघूदे । ४ आ. इ. मेलीया । ५ आ.इ. षुदालम । ६ आ. षुमाण । इ. षुरसांण । ७ आ.इ. षिजमति । ८ आ कबूंल । ९ आ.इ. बल । १० आ.इ. षुरम । ११ आ.ड. हलीयौ । १२ आ.इ. दमाम । १३ आ. नोबीति । १४ आ.इ. पंच सबद । १५ आ.इ. लष । १६ आ.इ. गरदक । १७ आ. वीघां । १८ आ. नेजा । १९ आ.इ. ढल । २० आ.इ. चल । २१ आ.इ. समूह । २२ आ.इ. असंष । २३ आ.इ. मिृग । २४ आ. मुझै । इ. मुजै । २५ आ.इ. मझली । २६ आ. मेगल । इ. मैगला । २७ आ. सुड । इ. सुंड । २८ आ. सिघली । २९ अ. पष । ३० अ. रोलि । ३१ आ.इ. पषर । ३२ आ. गैंमर । ३३ आ. इ. घट । ३४ आ.इ. उलट । ३५ आ.इ. सगडू । ३६ आ.इ. दल । ३७ आ. क्रुमे । ३८ अ. कंवलं । ३९ आ.इ. परबत । ४० आ.इ. माल । ४१ आ.इ. क । ४२ आ इ. हले । ४३ आ.इ. मेघ-माल । ४४ आ.इ. क । ४५ आ.इ. वदलं । ४६ आ.इ. घड़हड़े । ४७ आ.इ. पयाल । ४८ आ.इ. सेष । ४९ घड़क । इ. घडक । ५० आ.इ. षित । ५१ आ. षडके । इ. षड्के । ५२ इ. कोरम । ५३ आ. कड़क । इ. कडक ।

दस दस्स[१] कोस मुकांम डेरा, खुरम[२] खेल[३] सिकार ए।
संघरै नाहर रोझ सांबर, अरस पंख[४] उतार ए।
अजमेर आयौ साहजादौ, 'करन' सत्थे[५] आंण[६] ए।
परबर्तां पासै लाल पंडर, गयण गूडरा तांण ए ॥४॥

बादसाह जहांगीर रौ कुमार करणसींघ रौ सनमांन करणौ

॥ कवित्त[७] ॥

साहिजादौ अजमेर 'करन' हजरत[८] पै लाए।
जर[९] है गै सिरपाउ, बगसि खिजमति[१०] फुरमा ए।
कहै साह जिंहगीर[११], खुरम[१२] सुरतांण (सुणेरहंत[१३])।
तम सूर हम खुदाइ[१४], पीर पक्कंबर[१५] मुद्दत[१६] ॥१॥

राठौड़ां री बढती सूं बादसाह रौ संकित होणौ

मखसूद[१७] हुआ हूई फतै, बहुत तेग मारी सबळ[१८]।
तम दीया हिंदुसथांन[१९] सब, खुरासांण[२०] दिल्ली[२१] मंडळ[२२] ॥१॥

हठियौ[२३] सिर हिंदुवां[२४] माड मेले खूमांणां[२५]।
आदि वैर संभरे[२६] सरस ढिल्ली[२७] सुरतांणां।
राजा[२८] सूरजसिंघ[२९], जोध गजसिंघ[३०] जमज्जड[३१]।
किसनसिंघ[३२] करमैत, 'करन' संपेख[३३] महाभड।
गुण दोस गिणै इक[३४] सारिखा[३५] घडै घाट मनभंज घड।
असपति[३६] तणै सह एकठा, हियै[३७] न मावै रट्ठवड[३८] ॥२॥

---

१ आ.इ. दस। २ आ.इ. षुरम। ३ आ.इ. षेल। ४ आ.इ. पंष। ५ आ.इ. सथे। ६ आ. आण। ७ आ. कवित। ८ आ. हझरत। ९ आ. झर। १० आ.इ. षिजमति। ११ आ. जिंहगिर। इ. जिहगीर। १२ आ.इ. षुरम। १३ अ. रै रहत। १४ आ. षुदाई। इ. षुहाय। १५ आ. पकंबर। इ. पैकंबर। १६ आ.इ. मुदत। १७ आ.इ. मषसूद। १८ आ.इ. सबल। १९ आ. हिंदूसथांन। २० आ.इ. षुरासांण। २१ आ.इ. दिली। २२ आ.इ. मंडल। २३ आ.इ. हठीयो। २४ आ.इ. हिंदूवां। २५ आ.इ. षुमांणां। २६ आ.इ. संभरै। २७ आ.इ. ढिली। २८ आ. राझा। २९ आ. सुरजसिंघ। इ. सूरजिसिंघ। ३० आ. गझसिंघ। ३१ आ.इ. जमजड। ३२ आ. किस्नसिंघ। ३३ आ.इ. संपेष। ३४ आ.इ. एक। ३५ आ.इ. सारिषा। ३६ आ.इ. असपति। ३७ आ.इ. हीयै। ३८ आ. रठवड़। इ. राठवड।

सूरसिंघ 'केहरी', कळह करिवा काळ[१] नळ ।
एक खेत[२] ऊपना[३], एक पांणी झाळाहळ[४] ।
वाढ़ गाढ़[५] बह वधै[६] अणी असमांन अडक्कै[७] ।
पांण मांण अंहकार[८], खेध[९] वेधह[१०] खरडक्कै[११] ।
रहमांण विनांणी हत्थ[१२] तै, भंजण घडण संसार जग ।
सुरतांण हुओ[१३] खुरसांण सिरि, खेडपती[१४] हुआ खडग[१५] ।।३।।

सूरजमाल[१६] नरिंद, कनै गोइंद गज केसरि ।
पखै[१७] आप कोइ अवर, गिणै नह आपा ऊपरि[१८] ।
भड भुजाळ भड सिहर, मेर मांझी 'मांनावत' ।
कुंभकरण[१९] अवतार, दुरिति इक[२०] दौढ़ौ रावत[२१] ।
काळौ पहाड़ु केल्हणहरौ, देख[२२] साह दीयौ हुकम ।
राठोड हुवा हठि मारिवा, ग्रास वेध 'गोइंद'[२३] जम ।।४।।

गाथा

पावकौ जमसपौ[२४] वेस्या तुरिया[२५] पांणियौ[२६] वहणै[२७] ।
तसकर तुरक नरिंदौ[२८], आपांण कदे न हुवंतं ।।१।।

बादसाह रौ किसनसिंघ नै भड़काणौ

दूहा

साह लगाडै रट्ठवड[२९] द्रौहौ ढिल्ली[३०] डग्ग[३१] ।
वाढ़ चढ़ै खुरसांण[३२] सूं[३३], करि खुरसांणी[३४] खग्ग[३५] ।।१।।
'गाजीसाह' पधारियौ[३६], चढ़ि मुजरै दरबार ।
दिल्लीपति[३७] दीनौ हुकम, केहरि 'गोइंद' मार[३८] ।।२।।

---

१ आ.इ. कालनंल । २ आ.इ. षेत । ३ आ.इ. उपना । ४ आ.इ. झालाहल । ५ अ. गाट । ६ आ. बधे । ७ आ. अड़कै । ८ आ. अँहकार । ९ आ.इ. षेघ । १० आ. बेघह । ११ आ.इ. षरड़कै । १२ आ.इ. हथ । १३ आ.इ. हूवौ । १४ अ. षेडपति । १५ आ.इ. षडग । १६ आ. सुरजमाल । १७ आ.इ. पषै । १८ आ.इ. उपरि । १९ आ. कुंभकनं । इ. कुंभकरन । २० आ.इ. एक । २१ आ.इ. रावत्त । २२ आ.इ. देष । २३ आ. गोइद । २४ आ. सरयौ । इ. सरपौ । २५ आ. तुरीय । २६ आ. पाणीयौ । २७ आ. वेहणै । २८ आ. मरिदौ । २९ आ. राठवड । इ. रठवड । ३० आ.इ. ढिली । ३१ आ. डग । ३२ आ.इ. षुरसांण । ३३ आ.इ. सु । ३४ आ.इ. षुरसांणी । ३५ आ.इ. षग । ३६ आ.इ. पधारीयौ । ३७ आ.इ. दिलीपति । ३८ आ.इ. मारि ।

महाराजकुमार गजसींघ रो किसनसींघ नै पडूतर

बळ[1] भरियै[2] गह पूरियै[3] , असमर ऊभारेह[4] ।
गजबंधी इम अक्खियौ[5] , 'केहरि'[6] पूंतारिह ॥३॥
'केहरि'[7] कहियौ[8] पैज करि, ग्रहियै[9] चंद-पहास[10] ।
'गोइंद' गिणियां[11] मारियौ[12], पख[13] एकणि काइ मास ॥४॥
गजबंधी इम[14] आखियौ[15], करि घूणे करमाळ[16] ।
'गोइंद' माथै आवसी[17], त्यां सिरि आयौ काळ[18] ॥५॥
'केहरि' वेडी (वै)[19] घणूं[20], मज्जीठी[21] मुहराइ[22] ।
करन[23] 'कमौ' एकै मतै, बे ऊभा पडगाहि ॥६॥
कुंअर[24] पयंपै 'केहरि', करि मोसूं[25] रिणताळ[26] ।
'गोइंद' हूंतौ[27] साथि मौ, मै वूहौ गोपाळ[28] ॥७॥
वयणै[29] गाढा[30] वड चडै, मूठी गाढ़ा[31] खग्ग[32] ।
हाजरती[33] दरबार मै[34], विरता बीयै[35] वग्घ[36] ॥८॥

कवि वाच

सनमुख[37] साह निविद्धियौ[38], कीधौ नारद कांम[39] ।
कळि[40] लग्गी[41] रट्ठौड[42] हर, मरसी के वरियांम[43] ॥९॥
डेरै[44] हालोहळ हुई, हुआ सचाळां[45] सत्थ[46] ।
आज विहांणै रट्ठवड[47] करिसी[48] को भारत्थ[49] ॥१०॥

---

१ आ.इ. वल । २ आ.इ. भरीयौ । ३ इ. पुरीयौ । ४ आ. उभोरह । इ. उभारेअ । ५ आ.इ. अषीयौ । ६ आ. केहिर । इ. केअरी । ७ अ. केहिर । ८ आ.इ. कहीयौ । ९ आ.इ. ग्रहीयै । १० इ. चंपक हास । ११ आ.इ. गिणीया । १२ आ.इ. मारीयौ । १३ आ.इ. पष । १४ आ. एम । १५ आ.इ. आणीयौ । १६ आ.इ. करिमाल । १७ आ. आवसि । १८ आ.इ. काल । १९ अ.आ. वेडावै । २० आ.इ. घणु । २१ आ.इ. मजीठी । २२ आ.इ. मुहराई । २३ आ. कर्न । २४ आ.इ. कुअंर । २५ आ मोसुं । इ. मोसु । २६ आ.इ. रिण ताल । २७ आ. हुंतौ । इ. हुतो । २८ आ.इ. गोपाल । २९ आ.इ. वयणे । ३० अ. गाठा । ३१ अ. गठा । ३२ आ. षाघा । इ. षघ । ३३ आ.इ. हजरती । ३४ अ. में । ३५ आ. वियै । ३६ आ.इ. वघ । ३७ अ.इ. सनमुष । ३८ आ.इ. निबिधीयौ । ३९ आ.इ. काम । ४० आ.इ. कलि । ४१ आ. लगि । इ. लागी । ४२ आ. रठोड़ । इ. राठोड । ४३ आ. इ. वरीयांम । ४४ आ.इ. डेरे । ४५ आ. सचाला । ४६ आ.इ. सथ । ४७ आ. रठवड । इ. राठवडि । ४८ इ. करसि । ४९ आ.इ. भारथ ।

गाथा

कुरु पिंड वेध वसुधा, अपण मंझेण झुज्झयौ[1] उभए ।
कुरखेत[2] जुद्ध[3] समयौ, विणसिण काळ[4] बुद्ध[5] विपरीती[6] ॥१॥
राजा जुजठळ-राओ, धारए मन धू खत्र[7] ध्रमांणै[8] ।
पाळणं[9] पैज प्रतंग्या, दुरजोधनौ 'केहरी' मांणं[10] ॥२॥

किसनसींघ रौ आपरी परगै सू परामरस
दूहा

'केहरि' परिगहि पालियौ[11], करि परधांनै गूझ (गुज्झ) ।
राजा राठौडे[12] वडौ, जै सूं[13] मांडि म झूझ (झुज्झ) ॥१॥
'केहरि' कहियौ[14] सांभळी, ऐ[15] खत्री[16] पण राह ।
बोल न जाए[17] सूरिमां[18], काया जाइ त जाह ॥२॥

छन्द रोमकंध

बकवाद[19] हुओ[20] वधि वैर वडै घरि, बौलैय[21] भारी बोल हुवा ।
विढ़सी भड धूहड आज विहांणै, कत्थन[22] कोपि कहै[23] कडुवा ।
कुं(ण) तेजमहाढ़ अणी काढ़ावै[24] वाढ़ाळां मुंहि[25] वाढ़ पडै ।
जिणसाल[26] तियार करंत जरादी, घाय विनांणिय[27] लोह घडै ॥१॥
हैथट्ठ[28] हसंम[29] हळव्वळ[30] हूकळ[31], दीठ हळोहळ[32] चाल दळां[33] ।
भडझूळ[34] गहंमहकां गड भाळै[35], वेढ़[36] हुई[37] ए-वीस वळां[38] ।
प्रभणै इम 'केहरि' तेड परिग्गह[39] मैं कळपै[40] तन मूझ तणौ ।
पतिसाह[41] उतांमळ[42] मूझ समापै[43], मो इकवार[44] अछै मरणौ ॥२॥

---

१ आ.इ. झुझयौ । २ आ. कुरषैत । इ. कुरषेत । ३ आ.इ. जुध । ४ आ.इ. काल । ५ आ. बुध । इ. बुधि । ६ आ. विपरीति । इ. विपरीतं । ७ आ.इ. षत्र । ८ धू-मांणै । ९ आ.इ. पालण । १० इ. मांण । ११ आ.इ. पालीयौ । १२ आ. राठौडे । इ. राठौड़े । १३ आ. सुं । इ. सु । १४ आ.इ. वहीयौ । १५ आ. ए । १६ आ.इ. षत्री । १७ आ.इ. जायै । १८ आ.इ. सूरमा । १९ आ.इ. वकवाद । २० इ. हुवौ । २१ आ. बोलेय । २२ आ.इ. कथन । २३ आ.इ. कहे । २४ इ. कढ़ावै । २५ आ.इ. मुहि । २६ आ.इ. जीणसाल । २७ आ. वेनांणीय । २८ आ.इ. हैथर । २९ आ.इ. हसम । ३० आ.इ. हलवळ । ३१ आ.इ. हुकल । ३२ आ. हालोहल । ३३ आ.इ. दल । ३४ आ.इ. झूल । ३५ आ.इ. भाले । ३६ आ.इ. विंद । ३७ आ. हुई । ३८ आ.इ. वलां । ३९ आ.इ. परिगह । ४० आ.इ. कलपे । ४१ इ. पतसाह । ४२ आ.इ. उतांमल । ४३ आ.इ. षमाण । ४४ आ.इ. एक वार ।

मन मूझ तणे वीमाह जिसौ म्रत[1], मारु 'गोइंद'[2] आप मरे।
आग्रौ[3] भड साथि जिकौ[4] मो आवै काळ[5] निमत्त[6] सरीर करे।
मम ढ़ील करौ हल वार म लावौ, वेग चढ़ौ[7] वहिळा[8] वहिळा[9]।
भिडता भड सूरज[10] मंडळ[11] भेदै, भूळ[12] भरै रंभ भूझ भला[13] ॥३॥

सामंतां री तैयारी

वड रावत ऊससिया[14] तिण वेळा, एम सुणे भुज आंमळता[15]।
ललकार हुवौ[17] भड आवै लासां, छोडै तेज तुरी छिलता।
वरियांम[18] लगांण पलांण वणावौ[19], असे[20] उपाडै ऊकडता[21]।
परचंड हुसंड किया[22] तहि पक्खर[23], अंबर सांमा ऊछळता[24] ॥४॥

जोधारां री जोगियां री जमात सूं कवि री रूपक बांधणौ

जिण साल[25], जुआंण[26] करंत जरादी, जूसणं बाधै[27] जम्मजडा[28]।
हृद ओप विटोप रंगावळि हाथळ, सूमात्रा[29] करि सिद्ध[30] खडा[31]।
डिल[32] खट्ट[33] त्रिसूं डंड आवध डाबै, पौरिस रावत पूअरियौ[34]।
आवै[35] अहि कूंत दरग्गह[36] ऊभा[37], थाट थिडंबै[38] औथरियौ ॥५॥

असटंग[39] विभूत सनाह उपावै, लोह छत्तीस[41] सिंघार लियं[42]।
सिध बारह पंथक तेरह साखा[43], 'केहरि' गोरख रूप कियं[44]।
कमधज्ज[45] तजे मनमोह कायाचौ, वीर तिसौह विसतयरियं[46]।
तत ले निरबांण क राज तियाग[47], गोपीचंद भरत्थरियं[48] ॥६॥

---

१ आ. मृत। इ. मित। २ इ. गीइंद। ३ अ. आडौ। ४ आं इ. जिके। ५ आ.इ. काल। ६ आ.इ. निमत। ७ आ.इ. चडौ। ८ आ.इ. वहिला। ९ आ.इ. वहिला। १० आ. सूरझ। इ. सुरज। ११ आ.इ. मंडल। १२ आ.इ. भूल। १३ आ.इ. भुला। १४ आ.इ. उससीया। १५ आ.इ. वेला। १६ आ.इ. आपंलता। १७ आ.इ. हुओ। १८ आ.इ. वरीयांम। १९ आ. वणावो। इ. बणावे। २० अ. ऐस। आ. अैस। २१ आ.इ. उकडतां। २२ आ. कीया। २३ आ.इ. पषर। २४ आ.इ. उछलता। २५ आ.इ. जीण-साल। २६ इ. जूआण। २७ आ.इ. बांधे। २८ आ.इ. जमजड़ा। २९ आ.इ. सुमाता। ३० आ.इ. सिध। ३१ आ.इ. षडा। ३२ आ इ. डीले। ३३ आ.इ. षटत्रीस। ३४ आ.इ. पुअरीया। ३५ आ.इ. आवे। ३६ आ.इ. दरगहि। ३७ आ.इ. उभा। ३८ थिडबे। ३९ आ. अष्टंग। ४० इ. उपावे। ४१ अ. बतीस। ४२ आ.इ. लीयं। ४३ आ.इ. साषा। ४४ आ.इ कीयं। ४५ ला.इ. कमधज। ४६ आ.इ. विसथरीयं। ४७ आ. तियागे। ४८ आ.इ. भरथरीयं।

पग वांमां[1] वांम रकेब परट्ठवि[2], धूहड धारणमन्न[3] धुम्रं[4] ।
बळि वंत[5] तुरीगम[6] चंमर[7] बांधै, आरोता[8] भगदंत हुम्रं[9] ।
चडिया[10] कमधज्ज[11] चडेवा चौरंगि, पांणै[12] भाला पाकडिया[13] ।
... ... ॥७॥

प्रभात रो गोइंद पर आक्रमण तथा गोइंद रो मुकाबलो करणो

आया रवि ऊगै[14] 'गोइंद'[15] ऊपरि[16], ताता लोही रातिसिया[17] ।
असि छांड[18] रकेबां कूंत[19] ऊपाडै, धाराळां[20] काढ़े[21] घसिया[22] ।
उठियौ[23] राउ[24] भाटी लागे[25] अंबरि, दोमजि वासिग[26] खांड[27] डहै ।
जुध सूतौ कुंभकरन्न[28] जगायौ, 'गोइंददास'[29] बांणास ग्रहै ॥८॥

जुध वरणण भाटी गोइंद रो वीरगति प्राप्त होणो

आया भड, भाटी दौढ़ी आडा, रावत दौढ़ा[30] रूक्फल[31] ।
प्रिथिराज[32] 'गोइंद'[33] 'कमौ' 'भादौ' पडि, कूंभो[34] 'सूजो' 'मांन' कळ[35] ।
चहवांण 'नरो' 'हुल' 'पातल'[36] चौरंगी[37], भूप कलावत 'रूप' भडै ।
बालाउत 'तोगौ' 'केसव'[38] बेवै, लोह 'गोइंद' रांणौत[39] लडै[40] ॥९॥

भिडियौ[41] रुघनांथ भूपाळ समोभ्रम[42], धार पहार विरूड[43] धडै[44] ।
पहला[45] वरियांम[46] इता[47] पडिया[48], ता पाछै गोइंददास[49] पडै[50] ।

---

१ आ. वांमौ-वांम । इ. वांमोवांम । २ आ.इ. परठोवि । ३ आ.इ. मन । ४ आ.इ. धूम्रं । ५ आ.इ. बलियतं । ६ इ. तुरंगम । ७ आ.इ. चमर । ८ इ. आरोहिता । ९ आ.इ. हूम्रं । १० आ.इ. चडीय । ११ आ.इ. कमधज । १२ आ.इ. पांणे । १३ आ.इ. पाकडीया । १४ आ. उगं । १५ आ. गोइद । इ. गोईद । १६ आ.इ. उपरि । १७ आ. रातिसीया । १८ आ. छांडि । इ. छाडि । १९ आ.इ. कुत । २० आ. धारांलां । इ. धांराला । २१ इ. कढि । २२ आ.इ. घसीया । २३ आ.इ. उठीयो । २४ अ. राय । इ. राऊ । २५ इ. लागं । २६ आ. वासिगं । इ. वासिग । २७ अ. षाड । २८ आ. कुंभकर्न । इ. कूभंकर्न । २९ आ. गोइददास । इ. गोईद दासं । ३० इ. दोढा । ३१ आ.इ. रुकफलु । ३२ आ. पिथीराज । ३३ आ. गोइद ३४ आ. कूभौ । ३५ आ.इ. कलु । ३६ अ. पान । ३७ आ. चौदिग । इ. चौरंगि । ३८ आ. किसव । इ. केसर । ३९ अ. राणौत । ४० आ. लडे । ४१ आ. भिडयौ । ४२ आ.इ. समोभ्रम । ४३ अ. विरुड़ । ४४ अ. धसे । ४५ आ.इ. पैहला । ४६ आ.इ. वरीयांम । ४७ आ.इ. एता । ४८ आ.इ. पडीया । ४९ आ. गोइददास । ५१ आ. इ. पड़ै ।

रिमराह तियार[1] बंधै[2] रणवट्टां[3] 'खेम'[4] समोभ्रमि[5] रोकि खळां[6] ।
रूकै[7] रिमराह बहादर राजै भार ग्रहै[8] निय[9] भूम्रबळां[10] ॥१०॥

महाराजा सवाईसींघ रो युद्धारथ तैयार होणो

उठियौ[11] तिणवार वडौ उतळीबळ[12] सूरजसिंघ सह(स)[13] बळ[14] ।
कोपनळ[15] काळ[16] भुजाळ[17] कमंधज[18], दोमजि[19] भंजण[20] सत्रु दळ[21] ।
किरणांवळि[22] सूरजि[23] जेम[24] कळक्कळ[25] घूण घजब्बड[26] खेड[27] घणी ।
चख[28] लाल कियां[29] मुख[30] चोळ[31] वरन्नह[32], मेलै[33] भ्रूंहां मूंछ[34] अणी ॥११॥

अति सूरिति[35] आवस जेती[36] ऊफणि[37], वांणए रूप जिहीं[38] वधियौ[39] ।
विढवा दळ सांम्ही दीन्ही विक्खां[40], जांणै[41] अतंक जागवियौ[42] ।

महाराजकुमार गजसींघ रो आगमण

आयौ 'गजसाह' उभारि असंमर[43], जोध तयांरां जोधपुरौ ।
मुह आगळि[44] तात तणौ[45] कळि[46] माती, मारण केवी 'माल' हरौ ॥१२॥

जग जेठ भलौ जुध राजा जांमळि[47] आप पराक्रम दाखि[48] इसौ ।
कुअरां गुर[49] आच करंमर[50] कीयौ, जोध अरज्जन[51] भीम जिसौ ।
बळ[52] दाखवि[53] वेली बापूकारै[54], ऊभा रोस उभांखरिया[55] ।
दळनायक[56] बेटौ बाप दुसासण, बैवै[57] वासंग[58] बज्जरिया[59] ॥१३॥

---

१ आ.इ. तियारां । २ आ.इ. बंध । ३ आ. रणवटै । इ. रणवट । ४ आ.इ. षेम । ५ इ. समोभ्रम । ६ आ.इ. षलां । ७ आ.इ. रुके । ८ आ. ग्रहे । ९ आ.इ. नीय । १० इ. भुम्रबलां । ११ आ.इ. उठियो । १२ आ. ऊतलीबल । १३ आ. सहस । १४ आ. वलं । १५ आ.इ. कोपनल । १६ आ.इ. काल । १७ आ.इ. भुजाल १८ आ.इ. कमधज । १९ आ. दोमति । २० अ. जंजण । २१ आ.इ. दल । २२ आ. किरिणावलि । इ किरणावलि । २३ आ. सुरजि । इ. सूरिजि । २४ आ. जेंम । २५ आ.इ. कलकल । २६ आ. धजवड । इ. धजंवड । २७ आ.इ. षेड । २८ आ.इ. चष । २९ आ.इ. कीयां । ३० आ.इ. मुष । ३१ आ.इ. चोल । ३२ वरणह । ३३ आ.इ. मेले । ३४ इ. मुछां । ३५ आ.इ. सुरिति । ३६ आ. जिही । ३७ आ.इ. ऊफणि । ३८ आ. जिही । ३९ आ.इ. बधीयौ । ४० आ. विषां । इ. वीषां । ४१ आ.इ. जांणे । ४२ आ.इ. जागवीयौ । ४३ आ.इ. असमर । ४४ आ.इ. आगलि । ४५ आ.इ. तणौ । ४६ आ.इ. कलि । ४७ आ.इ. जांमलि । ४८ आ.इ. दाषि । ४९ इ. गुरां । ५० आ. करभर । इ. करमरं । ५१ आ.इ. अरजन । ५२ आ.इ. बल । ५३ आ.इ. दाषवि । ५४ आ. वापुकारे । इ. बापुकारै । ५५ आ. उभांषरीया । ५६ दलनायक । ५७ आ.इ. बे । ५८ आ.इ. वासग । ५९ आ.इ. बजरीया ।

जुध वरणण

आया राठौड[1] राठौडां[2] ऊपरि[3] , तूटै तेग तिमंछ तिसा ।
ऊलक्कापात[4] हुवै तिक अंबर, नाखत्र[5] जांणि खिरंत[6] निसा ।
जुध सीस पडंत[7] धडांहं जोळा, वीजळ[8] धक्क[9] चरक्क[10] वहै ।
गळिबांह[11] लोळावट[12] होय[13] गळोवळ[14], गूथाबत्थ[15] सुभट्ट[16] ग्रहै ।।१४।।

मतवाळां जेम घुमंत महाभड, लोह तणी छक लालुरता ।
जमदूठ उठंतं टवे जमदाढ़ां, वाहै आवध वीबरता ।
जुध मातौ रीठ डंडैहड 'जांणौ', खाग[17] खडाखड[18] खाट[19] खडै[20] ।
राजारा साजा ऊभा[21] रावत, पैला रावत खेत[22] पडै ।।१५।।

घोराडि जमद्दढ़[23] फाटि फटै[24] घट, नीसर सुस्सर[25] सेल नरां ।
वाढ़ाळ[26] वहै रत खाळ[27] विछूटै[28], रंभ वरै वरमाळ वरां ।
झूझारां[29] झाट मिळै[30] खग[31] झाळां[32], जाळै तुगांम[33] तोप दुग्रौ ।(जु)
दळथंभ[34] दळां[35] विच 'सेखौ'[36] दूजौ, होळी 'केहरि' थंभ हुग्रौ ।।१६।।

गज-ग्राह ग्रहित्त पडित्त गडूथळ[37], लोह वडौ अवसांण लहै[38] ।
कळिमूळ[39] (हु)[40] ग्रौ करि 'कंदळ[41] 'केहरि' 'केहरि' 'जांमळि' क्रन्न[42] कहै[43] ।
जोधा रिणमाल दुहू[44] दळ[45] जूटा, पूरि[46] लडाइय[47] जोर पडी ।
पळ हांड झूहा[48] सिरखा[49] पडयालग, हूग्रौ[50] भारथ[51] हेक घडी ।।१७।।

---

१ इ. राठोड । २ राठोडां । ३ ग्रा.इ. उपदि । ४ ग्रा.इ. उलकापात । ५ ग्रा.इ. नाषत्र । ६ ग्रा.इ. षिरंत । ७ ग्रा.इ. पंडति । ८ ग्रा.इ. वीजल । ९ ग्रा.इ. धक । १० ग्रा.इ. चरक । ११ ग्रा.इ. गालिबाह । १२ ग्रा.इ. लोलावट । १३ ग्रा.इ. हुए । १४ ग्रा.इ. गलोवल । १५ ग्रा.इ. गुथावथ । १६ ग्रा. सुभट । १७ ग्रा.इ. षाग । १८ ग्रा.इ. षडा षड । १९ ग्रा.इ. षाट । २० ग्रा. षड़ै । इ. षडै । २१ ग्रा.इ. उभा । २२ ग्रा.इ. पेत । २३ ग्रा.इ. जमदढ । २४ ग्रा. फटें । २५ ग्रा.इ. सुसर । २६ ग्रा. वाटाल । इ. बाढाल । २७ ग्रा.इ. षाल । २८ ग्रा.इ. विघुटै । २९ ग्रा. झूझारा । इ. झुझारां । ३० ग्रा.इ. मिलै । ३१ ग्रा.इ. षग । ३२ ग्रा.इ. झालां । ३३ ग्रा.इ. तुगम । ३४ ग्रा.इ. दलथंभ । ३५ ग्रा.इ. दलां । ३६ ग्रा इ. सेषो । ३७ ग्रा.इ. गडुथल । ३८ ग्रा.इ. लहे । ३९ ग्रा.इ. कलिमूल । ४० ग्रा. हूग्रो । इ. मुग्रो । ४१ ग्रा.इ. कंदल । ४२ ग्रा. कर्न । इ, करन । ४३ ग्रा.इ. रहे । ४४ ग्रा.इ. दुहुं । इ. दुहु । ४५ ग्रा.इ. दल । ४६ ग्रा.इ. पुरि । ४७ ग्रा.इ. लडाई । ४८ ग्रा. दूहा । इ. हूग्रा । ४९ ग्रा.इ. सिरषा । ५० हुग्रो । ५१ ग्रा. भारथं ।

किसनसींघ रो साथियां सहित वीरगति प्राप्त होणो

कवित्त

पखै[1] इंद[2] आवध्ध[3], कमण झेलै कर वज्जर[4]।
पक्खै[5] खाटंग-धर[6], जरै कुण खारो[7] जैहर[8]।
पक्खै[9] गोरखनाथ[10], कमण जाइ[11] पैसे विमर।
पखै[12] रांम दहकंध, कमण[13] वेधै[14] एकै सर।
हणमंत पखै[15] वांनर अवर, कवण कूदि[16] लंघै महण।
गजसिंघ पखै[17] पूजै कळिह, सूरसिंघ जांमळि[18] कमण ॥१॥

किसनसिंघ कमधज्ज[19], मुझौ[20] गोअरधन मारे।
करमसेन नीकळै[21], कूंत गज कूंभ पहारे।
सकतसिंघ अगरूह, 'करन' रहियौ[22] पग मंडे।
सूर धीर नेठहै[23], गया[24] काइर बळ[25] छंडे।
आव्रत्त[26] हुऔ[27] एकै घडी, हुआ[28] सुभट्टां[29] सत्थरा[30]।
संग्रांम चक्र वूहा सत्रां[31], सूरसिंघ चक्कव्रत्त[32] रा ॥२॥

'माधव' मांन 'किसोर' सग्रह[33] 'रासौ' 'सूरिजमल'।
पांचै(इ) वीरमदेव[34], जांणि 'माधौ' 'गांगौ' तल।
'वाघ' सुत्त[35] 'गोपाळ, खेत[36] 'चांपा' हर ओपम।
लखमण[37] संभ्रम 'प्राग'[38], 'माल' 'सुरतांण' समोभ्रम[39]।
चहवांण पांच[40] कूरम उभै, भीम वाघ भाटी पडे[41]।
सो[42] साठ रहै[43] 'केहरि' सरस, राठोड़ां रिण नीमडे[44] ॥३॥

---

१ आ.इ. पषै · २ इ. इद। ३ आ.इ. आवध। ४ आ इ. वजर। ५ आ.इ. पषै। ६ आ. वाटंगधर। इ. षागंषट। ७ आ. षारी। इ. षायै। ८ आ.इ. जहर। ९ आ. इ. पषै। १० आ. गोरषनाथ। इ. गोरषनाथ। ११ आ. जाइ। इ. जाय। १२ आ.इ. पषै। १३ आ. कम्मण। १४ आ.इ. छैदे। १५ आ.इ. पषै। १६ आ. कुदि। १७ आ.इ. पषै। १८ आ इ. जामलि। १९ आ.इ. कमघज। २० आ.इ. मूम्रो। २१ आ.इ. नीकले। २२ आ.इ. रयौ। २३ आ. नेठहे। २४ आ. गाया। २५ आ.इ. वल। २६ आ.इ. आव्रत। २७ आ.इ. हूंम्रो। २८ आ. हूआ। इ. हुवा। २९ आ. इं. सुभटां। ३० आ.इ. सथरा। ३१ आ. सता। ३२ आ. चक्रपति। इ. चक्रवित। ३३ आ. सगृह। इ. सगह। ३४ आ. वीर्मदेव। ३५ आ.इ. सुत। ३६ आ.इ. षेत। ३७ आ.इ. लषमण। ३८ आ. पयाग। इ. ध्रयाग। ३९ इ. समोभृम। ४० आ. पंच। ४१ आ.इ. पडै। ४२ आ.इ. सोह। ४३ अ. रहै। ४४ इ. निमडे।

महादुरग[१] अजमेर, सूर जीतौ[२] रिण चाचर ।
जळियौ[३] जोगणपुरौ, वाइ जांणै वैसन्नर[४] ।
पाखरिजै[५] गजथट्ट[६], खांन[७] सुरतांण मिलै दळ[८] ।
कटक बंध अनिमध्ध[९], हुऐ फौजां हीलोहळ[१०] ।
गजसिंघ साह मुंह आगळी, ग्रहै बाथ पडतौ[११] गइणि[१२] ।
अडपियौ[१३] सांड ऊदग्ग[१४] रू, सिंघ[१५] मांड सुरतांण सुणि ।।४।।

महाराजा सवाई सूरसींघ रौ जोधपुर आगमण

पातसाह[१६] आळोज, मन्न[१७] विच्चार[१८] विमासै ।
बळ[१९] छळ[२०] दळ[२१] दक्खवै[२२], पांण विन्नांण[२३] कळासै[२४] ।
दे घोडौ सिरपाउ, हुकम कीयौ छंडे हर ।
जाह देस आपणै[२५], सीख[२६] दीन्ही दें आदर ।
नौंबत्ति[२७] नगारे वाजते, चमर ढुळंते[२८] चौसरैं[२९] ।
जगजेठ राव जोधहपुरौ[३०], जोधपुरह[३१] आयौ घरे ।।५।।

चंद्राइणा

सूरिजसिंघ नरिंद, जोधपुर आविया[३२] ।
नोबोति[३३] रोडि दमांम[३४], निसांण रुडाविया[३५] ।
सद्द[३६] हुआ[३७] सहनाइ[३८], बुरंग निफेरियां[३९] ।
परिहां वजि[४०] काहूळ[४१], डंड[४२] वळे[४३] (घाड) फेरियां[४४] ।।१।।

---

१ आ. दुर्ग । इ. दुरंग । २ आ. जितौ । ३ आ.इ. जळीयौ । ४ आ. वेसनर । इ. वैसनर । ५ आ. पाषरिजै । इ. पाषरीजै । ६ आ.इ. गजथट । ७ आ.इ. षांन । ८ आ.इ. दल । ९ आ. अनमंध । इ. अनिमंध । १० आ.इ. हीलोहल । ११ इ. डगती । १२ आ. गईणि । इ. गयणि । १३ आ.इ. अडपीयो । १४ आ. उदगरु । इ. उबरु । १५ आ.इ. सीघ । १६ आ. पातिसाह । १७ आ.इ. मन । १८ आ.इ. विचार । १९ आ.इ. बल । २० आ.इ. छल । २१ आ.इ. दल । २२ आ.इ. दषवे । २३ आ. इ. विनांण । २४ आ.इ. कलासे । २५ आ.इ. आपरै । २६ आ.इ. सीष । २७ आ. नौबति । इ. नौबत । २८ आ.इ. ढुलंते । २९ आ. चौसरे । ३० आ.इ. जोधपुरौ । ३१ आ.इ. जोधपुर । ३२ आ. आवींया । इ. आवीया । ३३ आ. नोवत । इ. नौबति । ३४ आ. दसांम । इ. दमांन । ३५ आ.इ. रुडावीया । ३६ आ.इ. सद । ३७ आ. हूआ । ३८ अ. सनाई । आ. असनाई । ३९ आ. फेरीया । इ. निफेरीया । ४० इ. वाजि । ४१ आ. काहल । इ. काहुलि । ४२ आ. डूल । ४३ आ.इ. वले । ४४ आ.इ. फेरीयां ।

वांनैता[१] असवार. गयंद सिंगारिया[२] ।
हूआ[३] मंगळचार, कवी[४] सुभकारिया[५] ।
मुंहि आगळि 'गजसाह', पराक्रम भांमणा ।
परिहां ऐसा[६] पूत सपूत[७] क(नित) वधांमणां ॥२॥

राजा महले[८] बैस क, चमर ढुळाविया[९] ।
सैणां मनै[१०] संतोख[११], खळां[१२] नह भाविया[१३] ।
डरिया[१४] नैडा देस, औद्रावौ[१५] अन्नडां[१६] ।
परिहां काढ़ै पिसण[१७], कंथ रहै[१८] अच्चडां[१९] ॥३॥

महाराजा सूरसींघ रौ दखण में जाणौ तथा महाराजकुमार गजसींघ रौ सासण भार सम्हाळणौ

रहिया[२०] जोध दुरंग[२१] चौमासौ[२२] एकडा ।
साहि बुलाए पासि, पठाए[२३] मेवडा ।
ले घोडौ[२४] सिरपाउ, दखिण[२५] दिस चल्लिया[२६] ।
परिहां हुंदा 'गजण', भोम भर झल्लिया[२७] ॥४॥

दूहा

राजा दखिण[२८] विराजियौ[२९] गा दखणी[३०] हुइ[३१] रद्द[३२] ।
साह[३३] सुपारिस सांभळे, की फत्तै सरहद्द[३४] ॥४॥

मांझी मेर अभंग भड, मारु अमली-मांण[३५] ।
गिळण गढां[३६] भूखाळुऔ[३७], ओबासै[३८] जमरांण ॥२॥

---

१ आ. बानैतां । २ आ. सिंगारीया । इ. सिगारीया । ३ आ.इ. हुआ । ४ इ. कवि । ५ आ.इ. सुभकारीया । ६ आ. अैसा । इ. अेसा । ७ आ.इ. सयुत । ८ आ. मैहले । ९ आ.इ. ढुलावीया । १० अ. मन । आ. मने । ११. आ.इ. संतोष । १२ आ.इ. षलां । १३ आ. भावीया । ई. चावीया । १४ आ.इ. डरीया । १५ इ. औद्रवो । १६ आ.इ. अनडां । १७ आ.इ. पिसणां । १८ आ.इ. रहावै । १९ आ.इ. अचडां । २० आ.इ रहीया । २१ आ. द्रुरंग । २२ आ. चोमासो । २३ आ. पठाऐ । २४ आ.इ. घोडो । २५ आ.इ. दषिण । २६ आ.इ. चलीया । २७ आ.इ. झलीया । २८ आ.इ. दषिण । २९ आ.इ. विराजीयो । ३० आ.इ. दषणी । ३१ आ. हुई । इ. हुय । ३२ आ.इ. रद । ३३ आ. साहं । ३४ आ. सरहद । ३५ आ. अमली-माण । ३६ आ. गटां । ३७ आ.इ. भूषालुऔ । ३८ आ. ओवासे ।

अधपत्ती[१] इनि आसनां[२], महिपति द्रौहै मन्नि[३] ।
निजर दियै[४] नव साहसौ, किरि[५] बारहमौं सन्नि[६] ॥३॥

बादसाह रौ जाळोर रा सासक पहाड़खां सूं नाराज होणौ तथा जाळोर रौ प्रदेस महाराजा सूरसींघ नै मिळणौ

रुठौ[७] सीस विहारियां,[८] दिल्लीपति[९] सुरतांण ।
खांन[१०] पहाड विभाडियौ,[११] बैठा फिरै[१२] पठांण ॥४॥

खांना[१३] ऊपर[१४] खीजियौ[१५] खूंदालम्म[१६] रहंम[१७] ।
राजा नूं[१८] जाळौर रौ, दीनौ साह हुकंम[१९] ॥५॥

राजा कागळ मेलियौ,[२०] लिक्खाडे[२१] चड चोट ।
जिम जांणै[२२] तिम मारलै, कुंअर[२३] कणैगिर[२४] कोट ॥६॥

ज़ोधपुरौ जुध जीपवा, गढ़ लेवा 'गज़साह' ।
विरती[२५] कोडी[२६] विळकुळै,[२७] रीसांणौ रिमराह[२८] ॥७॥

चिहुर अलक्का[२९] ऊधरौ,[३०] विकसै[३१] वदन[३२] विसाळ ।
चोळ[३३] वरन्न[३४] कपोळ[३५] किय,[३६] रत्ता[३७] लोचन माळ ॥८॥

आंखै[३८] रोस कसाइया, किय[३९] मूंछां बिय[४०] चंद ।
चाढै[४१] भूंहां[४२] बंकियां,[४३] कि(र) कणणियौ[४४] मइंद ॥९॥

जोधपुरै जाळोर सिरि, कांम[४५] तिकौ पकडेह[४६] ।
कीयौ[४७] आरंभ कळहरौ[४८] बाहरि चादर देह[४९] ॥१०॥

---

१ आ. अधपती । इ. अधपति । २ आ. आसना । ३ आ, मनि । इ. मन । ४ आ. दिय । इ. दीयै । . ५ आ. करि । ६ आ.इ. सनि । ७ आ. रुठो । ८ आ.इ. विहारीयां । ९ आ इ. दिलीपति । १० आ.इ. षांन । ११ आ.इ. विभाडीयौ । १२ आ. फिरे । १३ आ.इ. षांनां । १४ आ.इ. उपरि । १५ आ.इ. षीजीयौ । १६ आ.इ. पुदालम । १७ आ.इ. रहम । १८ आ.इ. नु । १९ आ. हुकम । २० आ.इ. मेलीयौ । २१ आ.इ. लिषाडे । २२ आ. जाणे । २३ इ. कुअर । २४ आ. कणेगिरि । इ. कणैं-गिरि । २५ आ.इ. विरति । २६ आ. कोड । इ. कोडि । २७ आ.इ. विलकुले । २८ रिभूराह । २९ आ.इ. अलकां । ३० आ.इ. उधसे । ३१ आ.इ. विकसे । ३२ आ. बरन । ३३ आ.इ. चोल । ३४ आ.इ. वरन । ३५ आ:इ. कपोल । ३६ आ.इ. कीय । ३७ आ.इ. रता । ३८ आ.इ. आंषै । ३९ आ.इ. कीय । ४० आ. बाय । ४१ इ. चाढी । ४२ आ. भूहां । ४३ अ. वंकीयां । इ. वेकीयां । ४४ आ.इ. कणणीयौ । ४५ आ. क्राम । ४६ आ. पकडेआ । इ. पकरेअ । ४७ आ. कीये । ४८ आ. कलह रो । ४९ आ. देअ ।

महाराजकुमार गजसींघ री जाळोर विजय करण री तैयारी

राजा कांम[1] भळावियौ,[2] राखे[3] विकळी[4] कत्थ[5] ।
कह्यौ[6] वजीरां[7] 'गजपती',[8] तेडौ[9] साऊ[10] सत्थ[11] ॥११॥

चीरी फाटी चहु[12] दिसे,[13] सांमी[14] कमधज्जांह[15] ।
कटक पधारौ[16] ठाकुरे, जोधा रिडमल्लांह[17] ॥१२॥

छन्द सिंहावलोकण[18]

रिणमल इक[19] जोधा अनै[20] अखैरज,[21] एक एकह लख[22] पखर[23] ए[24] ।
चांपा चत्रबाह अनड चलता,[25] परबत डूंगर गर भक्खर[26] ए ।
मुह रावत मछर भयंकर मांडण, महि मंडळावत मछराळं ।
पातावत परभुसींह[27] पंचांइण, रूपा जीपण रिणताळं ॥१॥

कळिहण[28] करनोत[29] वडा[30] काळंनळ, भेडक नाथू[31] निवड भडं ।
लखथाट[32] करे[33] दहवाट लखंमण,[34] घण धाए वर[35] त्रिधि[36] घिघडं ।
सूरा[37] 'अडूबाळ' सुजड हथ 'सांडा', 'जैता' जंगमल जैत्राई[38] ।
कांधिल कळिमूळ[39] सदा कळि[40] चालण, वैरा वेढ़क[41] वरदाई[42] ॥२॥

'भीमौत' 'सतावत' 'अरडक मल्लां', 'कांना' 'पूना' 'रिणधीरं'[43] ।
'देहल' 'जैसींघ'[44] 'अनै' 'गोगादे', 'वीरम' 'माला' वर वीरं ।
'जेतमल' 'सोभिति' 'लखा'[45] जमज्जड[46] घूहड 'ऊहड' खत्र घोडं[47] ।
सक सींधल[48] धांधलि अनियै[49] सूंडा, तेरह[50] साखा[51] राठौडं ॥३॥

---

१ आ. काम । २ आ.इ. भलावीयौ । ३. आ.इ. राषेवी । ४ आ. विकलि । इ. विकल । ५ आ.इ. कथ । ६ आ. कह्यो । ७ आ. वजीरा । ८ आ. गजपति । ९ आ.इ. तेडो । १० आ. साउ । ११ आ.इ. सथ । १२ आ. चिहु । इ. चहु । १३ इ. दीसे । १४ इ. सांम्ही । १५ आ.इ. कमधजां । १६ आ. पधारो । १७ आ. रिडमलांह । इ. रिणमलांह । १८ आ.इ. समिया लोकण । १९ आ.इ. एक । २० आ. अने । २१ आ. अषरज । इ. अषैराज । २२ आ. लष । २३ आ.इ. पषर । २४ आ. ऐ । २५ आ.इ. चलंता । २६ आ.इ. भषर । २७ आ. भुइसीह । २८ आ.इ. कलिहण । २९ अ.इ. करनौत । ३० आ. बड़ा । ३१ आ.इ. नाथु । ३२ आ.इ. लषथाट । ३३ अ.इ. करै । ३४ आ.इ. लषमण । ३५ इ. वरि । ३६ आ. तिधि । ३७ इ. सुरा । ३८ अ. जैताई । ३९ आ.इ. कलिमूल । ४० आ.इ. कलि । ४१ आ. वैढक । ४२ आ बरदाई । ४३ इ. रिणधरं । ४४ आ, जेसीघ । इ. सींघ । ४५ आ.इ. लषा । ४६ आ.इ. जमजड । ४७ आ. षत-घोंड । इ. षत्र घोडां । ४८ आ.इ. सीघल । ४९ आ. अनीयै । इ. अनीयै । ५० आ. तैरह । ५१ आ.इ. साषा ।

छप्पन[१] मै कोडि छात्राळा[२] छिडिया,[३] जादव भाटी जोधारं ।
साखोधर[४] सोढा सोहड[५] सजूंभा,[६] पैंतीसै[७] साख[८] पमारं ।
वड गूजर[९] तूंग्रर[१०] के[११] वाघेला[१२], हाडा खीची[१३] चहवांणं[१४] ।
चाळूक[१५] चंदेल अनै[१६] चाऊडा,[१७] के कछवाहा निरबांणं[१८] ॥४॥

दहिया[१९] पडिहार इंदा[२०] आसाइच[२१], गोहिल नै हुल पीपाडा ।
गैलोत[२२] अनै मांगळिया[२३] गाढ़ा, एक (......) सीसोदा हाडा[२४] ।
डोडीया डोड दाहिमा डाभी, झाला झालण करिमालं ।
बहियोला[२५] बारड मौहील मौरी[२६], वइस[२७] अनै[२८] सिक्खरवालं[२९] ॥५॥

जम जड के जाट चाहिलं[३०] जोया, के मुकवांणा[३१] मल्हणासं ।
बहु भूझारा कभुटा वोडांणां,[३२] गौड[३३] उदाळण परिग्रासं ।
राजकुळी वंस छतीसेइ[३४] रावतं, वीरति वंका वरियांमं[३५] ।
मांरूधर[३६] सांम तणै छळि[३७] मिळिया[३८], करण कणैगिरि[३९] संग्रामं ॥६॥

सांमतां रो वरणण

सांमंत[४०] जिके हणमंतह,[४१] सिरखा लख[४२] दळ सूं[४३] एकल्ल[४४] लडै ।
वैरा[४५] कजि जिके[४६] अधडची[४७] समवड, चौरिंग[४८] यदां दांत चडै ।
आखडै[४९] जिके सद्दा[५०] आवटियळ[५१], रिणरिद्धल[५२] जीपंति[५३] रिणं ।
सूरातन[५४] जिके सहस बळ[५५] सूरा, पह सादूळा[५६] पंचाइणं[५७] ॥७॥

---

१ आइ. छपन । २ अ. छत्राला । आ. झाला । ३ आ. छिडीया । ४ आ.इ. सांषोधार । ५ आ. सौहड । ६ आ. सजूझा । ७ आ. पेंतीसे । ८ आ.इ. साष । ९ आ. वडगुजर । १० आ तुअर । इ. तुंवर । ११ अ. कै । १२ आ. बाघेला । १३ आ.इ. षीची । १४ आ. चहवाणं । १५ आ.इ. चालुक । १६ आ. अने । १७ आ.इ. चाउड़ा । १८ आ. निरबाण । १९ आ.इ. दहीया । २० आ. इंद्रा । इ. इद्रा । २१ इ. आसायच । २२ आ. गैलोत । २३ आ.इ. मांगलीया । २४ आ.इ. आहाडा । २५ आ.इ. बहीयोला । २६ इ. मारी । २७ आ. वईस । २८ आ. अने । २९ आ.इ. सिषरवालं । ३० आ. चाहिल । ३१ आ. मुकवांण । ३२ इ. बोडाणां । ३३ आ.इ. गोड । ३४ इ. छत्रीसेइ । ३५ इ. वरीयामं । ३६ आ. मारुधर । ३७ आ.इ. छलि । ३८ अ .इ. मिलिया । ३९ आ. कणैगिर । ४० आ.इ. सामंत । ४१ आ.इ. हणमंत । ४२ आ.ड. सरिषा । ४३ आ.इ. लष । ४४ इ. सुं । ४५ आ.इ. एकल । ४६ इ. वैरां । ४६ इ. जिकै । ४७ इ. अधवी । ४८ अ. धोरि । . इ. चौरिग । ४९ आ.इ. आषडे । ५० आ.इ. सदा । ५१ आ. आवटीयल । इ. आवढीयल । ५२ अ.इ. रिधल । ५३ अ. जीपंत । ५४ आ.इ. सुरातन । ५५ आ.इ. बल । ५६ आ.इ. सादूला । ५७ इ. पचंईणं ।

बळवंत[१] जिके अरजण बांणपतो,[२] झूझ सरीखा[३] गजा झलं ।
भगदंत[४] जिके आरुता भेडक, भूरी[५] भीखम[६] करन सलं ।
दुस्सासण[७] जिके जिसा दुरजोधन, रिख[८] असथामां द्रोण[१०] रिखं[११] ।
भारथ[१२] भुइ[१३] जिके कदे नह भाजै, परदळ[१४] भंजण पांच मुखं[१५] ॥८॥
पिडि संगम जिके मंडै[१६] हुइ[१७] पांच(म)रु, घुघए[१८] मन धरै घडै[१९] ।
दुहु बांहां[२०] जिके लहै लख[२१] निय[२२] दिढ, विढा इकांणि[२३] तरवार वडै ।
चड्ढै[२४] रिण जिके पुजै रिण चाचरि, सुजडे पिसणां पाडि सिरं ।
वीटांणा[२५] जिके रहै रावत वट, माभी परबत मेर[२६] गिरं[२७] ॥९॥

पठांणां री वरणए

पट्ठांए[२८] जिके पग न दियै पाछा. सिर पग मंडै[२९] सहस फणं ।
खांडेराव[३०] जिके खडग हथ[३१] खींवर,[३२] ग्रहै भुजै पडतौ गयणं ।
कळहेवा[३३] जिके वडा[३४] कुदरत मै[३५], हांम सबळि[३६] खळ[३७] वहए हियै[३८]
त्रिजडां[३९] मुंहि जिके वरै त्रिविधिघड, देखे[४०] जम मुंहि[४१] पूठ[४२] दियै[४३] ।१०
ग्रहि बाथां जिके उपाडै गिरवर,[४४] काढै[४५] कुंजर[४६] डसण करै[४७] ।
ऊथाळै[४८] जिके मछरिया[४९] आहवि,[५०] धरा नकुळ जिम कूंत धरै[५१] ।

पुन सांमंतों री वरणण

वड[५२] रावत जिके वडा[५३] ग्रह[५४] वेढक, झडपै अरियए खडग[५५] झडं ।
आया जूहार[५६] कुंअर गुर[५७] आगळि,[५८] भड कमधज लख[५९] अवरभडं ।११

---

१ आ.इ. बलवंत । २ आ.इ. बंणापति । ३ आ. सरिषा, इ. सिरषा । ४ इ. भगदंद । ५ आ.इ. भुरी । ६ भीषम । ७ आ.इ. दुसासए । ८ आ. दुर्जेधन । ९ आ.इ. रिष । १० इ. द्रेए । ११ आ.इ. रिष । १२ इ. भारथि । १३ इ. भुय । १४ आ.इ. परदल । १५ आ. पंचमुषं । इ, पाचमुषं । १६ अ. मडै । १७ इ. हुई । १८ अ. धंघए । १९ आ. घड़े । २० आ.इ. बालं । २१ आ.इ. लष । २२ आ.इ. नीय । २३ आ.इ. इकए । २४ आ.इ. चढै । २५ इ. विटांए । २६ आ. मरे । २७ आ. गिरुं । २८ आ. पठाए । इ. पठाए । २९ इ. माडे । ३० आ.इ. षडिराव । ३१ आ.इ. षडग हथ । ३२ आ.इ. षीवर । ३३ आ. कलहैवा । इ. कलहेव । ३४ आ. बडा । ३५ अ. में । ३६ आ.इ: सबलि । ३७ आ.इ. षल । ३८ आ.इ. हीयै । ३९ आ. तिजडां । ४० आ.इ. देषे । ४१ आ.इ. मुहि । ४२ आ.इ. पूठि । ४३ आ.इ. दीयै । ४४ आ. गिर्वर । ४५ अ. काटै । ४६ अ.इ. कुजर । ४७ आ. करे । ४८ अ. उछाळै । ४९ आ.इ. मछरीया । ५० आ. आहंवि । ५१ आ. धरे । ५२ आ. बड । ५३ आ. बडा । ५४ आ.इ. गृह । ५५ आ.इ. षडग । ५६ आ.इ. जुहार । ५७ आ.इ. कुअर गुर । ५८ आ.इ. आगलि । ५९ आ.इ. लष ।

गाहा चौसर

भड वंका राठौड[१] सुभट्टं[२] । सळखाहर[३] सांमंत[४] सुभट्टं[५] ।
सांम[६] दरग ही[७] मिळै[८] सुभट्टं[८] । साख[९] छतीसां तणा सुभट्टं[१०] ॥१॥
थिडिबे थिडिबे[११] थिडिया थट्टं[१२] । थीया कटकह कोग्रणं थट्टं[१३] ।
हूकळ[१४] कळ[१५] हूबै[१६] हयंथट्टं[१७] । गहंमह हुए गुडे गज थट्टं[१८] ॥२॥
... ... ।
हैगड भड गैघड हालोहळ । हाकल[१९] होल चाळ[२०] हालोहळ[२१] ॥३॥
साहण वाहण हसम संभाळै[२२] । सीलां[२३] डेरां रखत[२४] संभाळै[२५] ।
भरिया माल सिंदूक संभाळै । साथै लियए काज संभाळै ॥४॥

सेना का कूच वरणण

छन्द विद्रमाला

हुई चाल हळ वळ[२६], हम तम हालोहळ[२७] ।
ग्रराबां[२८] नाळि[२९] उपाडि,[३०] चोटां नूं नगारा चाडि ॥१॥
गज नाळि[३१] गोळां[३२] बांण, ग्रनंमंध[३३] ग्रसमांण ।
ग्रणिया[३४] फरासै[३५] ऊंठ,[३६] पलांणै घातिया[३७] पूठ[३८] ॥२॥

ऊंटां री वरणण

जमाज गोरा व जूंग[३९] । गूगळा[४०] मई[४१] गडंग ।
पंडरा राता[४२] प्रचंड । भूरा काळा[४३] भळि[४४] खंड[४५] ॥३॥

---

१ ग्रा. राठोड । २ ग्रा.इ. सुभटं । ३ ग्रा.इ. सलषाहर । ४ ग्रा. सामंत । इ. सामत । ५ ग्रा.इ. सुभटं । ६ ग्रा.इ. साम । ७ ग्रा.इ. हि । ८ ग्रा.इ. सुभटं । ९ ग्रा.इ. साष । १० ग्रा.इ. सुभटं । ११ ग्रा.इ. थिडिबे थिडिबे । १२ ग्रा.इ. थटं । १३ ग्रा.इ. थटं । १४ ग्रा. हूकल । इ. हुकल । १५ ग्रा.इ. कल । १६ ग्रा.इ. हुवे । १७ ग्रा.इ. थटं । १८ ग्रा.इ. गजथट । १९ ग्रा.इ. हांकल । २० ग्रा. हालचाल । २१ ग्रा.इ. हालोहल । २२ ग्रा. सभाले । इ. संभाले । २३ ग्रा.इ. सिलां । २४ ग्रा. इ. रषत । २५ ग्रा. सभाले । इ. संभाले । २६ ग्रा.इ. हलवल । २७ ग्रा.इ. हालोहल । २८ ग्रा.इ. ग्ररापा । २९ ग्रा.इ. नालि । ३० ग्रा. ऊपाडी । ३१ ग्रा. गजनालि । ३२ ग्रा.इ. गोला । ३३ ग्रा. ग्रनमंध । इ. ग्रनमध । ३४ ग्रा.इ. ग्रांणीया । ३५ ग्र. फेरासे । ३६ ग्रा.इ. ऊठ । ३७ ग्रा. घातीया । इ. घातीए । ३८ इ. पुठि । ३९ ग्रा.इ. जुग । ४० ग्रा.इ. गुगला । ४१ ग्रा.इ. मइ । ४२ ग्रा. रीता । ४३ ग्रा. इ. काला । ४४ ग्रा.इ. मलि । ४५ ग्रा.इ. पंड ।

बिन्ह बिन्ह लाजां बंध[१] । कमळा[२] दीरघ[३] कंध ।
मसी[४] झरै मदोमत्त[५] । रुंडी[६] कोसा विरतं[७] ॥४॥

सिलहां कोठी सिंदूख[८] । उपाडै[९] ऊंठ[१०]असंख[११] ।
डुंगा[१२] भारिया[१३] दरक्क[१४]। करै कुंट[१५] केसरक्क[१६] ॥५॥

कमळा किया[१७] कतार । भर[१८] बुडी[१९] तंग भार ।
लेह[२०] देह छोडीजै लास । विलोहणै[२१] वरहास ॥६॥

घोडां री वरणण

चढिवा[२२] कांज चंचळ[२३] । वाळि छूट[२४] वैंगागळ[२५] ।
हरड[२६] किहाडा हीर । मांणके[२७] बोर हमीर ॥७॥

रोझौ निला गंगाजळ । हंसला नैंण काजळ ।
अस सेराहा अऊब । खैंग[२८] रोहला हाबूब[२९] ॥८॥

गुरड सीहा गुलाल । चीतळा चौरंगी चाल ।
कविला[३०] काळा[३१] केकांण । कमेत[३२] पंचकिल्यांण[३३] ॥९॥

करडा के कबूतर[३४] । भूरडा[३५] स्याह भमर ।
चंपला सोनडा जंग । पयला तेजी पवंग ॥१०॥

अबलक सीविराजी । तापणा महूडा[३६] ताजी ।
लालमां मोला[३७] लाखीक[३८] । कुलिथ्या केवी कोडीक ॥११॥

म्रिघला[३९] चक्कवा[४०] मोर । कूदणा झंपां[४१] किसोर ।
अैराकी ऊन्हा अलल्ल[४२] । भाडजी आरबी भल्ल[४३] ॥१२॥

---

१ आ.इ. बघ । २ आ.इ. कमला । ३ इ. दिरघ । ४ इ. मसि । ५ आ.इ. मदोमत । ६ इ. रुडि । ७ इ. उरत । ८ आ.इ. सिदूष । ९ आ. ऊपाडे । १०आ. आ इ. ऊठ । ११ आ.इ. असंष । १२ आ.इ. डुगा । १३ आ.इ. भारीया । १४ आ.इ. दरक । १५ आ.इ. कुटे । १६ आ.इ. कसरक । १७ आ. कीया । इ. कीय । १८ अ. भरै । १९ आ. छुडि । २० आ. लहे । २१ आ.इ. विलोहणे । २२ आ. चढीया । २३ आ. चंचल । २४ आ. छूटे । २५ आ. वैंगागल । इ. वेगागल । २६ अ. हरडिया । २७ आ. माणक । २८ षैंग । २९ अ. षांबूब । ३० आ.इ. कविला । ३१ आ.इ. काला । ३२ आ.इ. कमैत । ३३ आ. पंच किल्यांण । इ. पंच कल्यांण । ३४ इ. कबुतरा । ३५ आ.इ. भुरडा । ३६ आ. महुडा । ३७ इ. मौला । ३८ आ.इ. लापीक । ३९ आ. मिघला । इ. मृघला । ४० आ.इ. चकवा । ४१ आ. झंय । ४२ आ.इ. अलल । ४३ आ.इ. भल ।

मुगट कछी सुमाग । जबाधिया[१] वच्छ नाग[२] ।
बदकसमी बेलारी । खैंग[३] बगसी खंधारी[४] ॥१३॥

केवी[५] केची मुक्करांणी[६] । खेत[७] जाया[८] खुरसांणी[९] ।
सांमंद्री[१०] वेग मैं सर[११] । पेखियै[१२] प्रबत्तै[१३] पर ॥१४॥

मोरै घरै[१४] छोट मोट । गया परबितौ गोट ।
घूमडा घाटी घडाळ । पांणी पंथा[१५] पटा वाळ ॥१५॥

तुरकी[१६] ताजी तुरंग । विलाती देसी विडंग ।
घूना[१७] चित्तांगिया[१८] थैंग । खेड[१९] रा नीपना खैंग[२०] ॥१६॥

घणा घणा मोला[२१] घोडा । पाइग्गहां पाटी - होडा[२२] ।
आगला धडे अलंब । अंजूली[२३] पियै[२४]ज अंब[२५] ॥१७॥

वेग लीयै[२६] मूंठी[२७] वाव । राज रथं पंखां राव[२८] ।
मैंगळां ऊरध मंड । खेसै[२९] आठ[३०] भीत खंड[३१]॥१८॥

खुरै[३२] खांना[३३] पडै खुरी[३४] । तांनामांना[३५] करै तुरी ।
फौरा दीयै[३६] फरगट्ट[३७] । नाच छंद जिही नट्ट[३८] ॥१९॥

सुघा वाघ सरवंग । आरखे[३९] चित्रांम[४०] अंग ।
अंतरिक्ख[४१] वहै ओळ । अंभ गळै[४२] घाते गोळ ॥२०॥

डहै जेम कपि[४३] डांण । वाज वोम रा विवांण ।
जोध लिये बाथां जोड । छूटै हुई छोड छोड ॥२१॥

लाइजै मुखै[४४] लगांण । पूठी मांडीजै[४५] पलांण ।

---

१ आ.इ. जबघीया । २ बछ्छ नाग । ३ आ.इ. षैंग । ४ आ.इ. बंघारी । ५ आ. केबी । ६ आ.इ, मुकरांणी । ७ आ.इ. षेत । ८ आ- जायां । ९ आ.इ. षुरसांणी । १० आ. सामंद्री । ११ आ. सरा । १२ अ, पेषीये । इ. बेषीयै । १३ आ, प्रबतै । १४ आ. घडे । १५ आ,इ, पाणी पंथा । १६ आ.इ. तूंरकी । १७ आ. घुना । १८ अ. चित्रांगीया । १९ आ-इ. षेड । २० आ.इ. षैंग । २१ आ.इ. मोलो । २२ आ. पाटि-घाडा । २३ इ. अंजुगी । २४ इ. पीयै । २५ अ. अंग । २६ आ. लियै । इ. लीये । २७ आ.इ. मुठी । २८ आ. पंषराव । इ. पंषराउ । २९ आ.इ. षेसै । ३० आ.इ. आठु । ३१ आ.इ. षंड । ३२ आ. पुर । इ. वुरे । ३३ आ.इ. षांना । ३४ आ.इ. पुरी । ३५ आ. ताना-माना । इ. तांना-यांना । ३६ अ. दियै । ३७ ३७ आ.इ. फरगट । ३८ आ.इ. नट । ३९ आ.इ. आरषे । ४० आ. चित्राय । ४१ आ. अंतरिष । इ. अंतरीष । ४२ आ.इ. गले । ४३ आ.इ. कपी । ४४ आ.इ. मुषे । ४५ आ. मांडील ।

जोधारां रौ वरणण

आचागळै[1] भडे असि। किया[2] खडा तंग कसि ॥२२॥

तरस्सीया[3] ऋहंटाळ[4]। जोध लियौं[5] जीणसाळ[6]।
सूरतन[7] चडी[8] सोह। लिया[9] खटत्रीस[10] लोह ॥२३॥

भाला टवै[11] हुआ भड। ऊभा[12] लोह मैं अनड।
आंमलै[13] खवा अयार। आलोमल्ला[14] असवार ॥२४॥

मांटी पणै घणै मन्नि। विकसीया वीर तन्नि।
सांम नू[15] निरोहा सार। जु आंण करै जुहार ॥२५॥

पांडवां[16] नीलो पलांण[17]। असी[18] घोडै[19] राव आंण।
वैडतै[20] उमै विकास। आरिखै[21] जिसो उचास ॥२६॥

ऊपनौ[22] अमूल[23] खांण। खेंग[24] डूमै[25] खुरासांण[26]।
एराकी पखे असंभ। रमै मांडै[27] नाटारंभ ॥२७॥

प्रघळौ पटाट पूर। गाढ दाढ गज्ज-ऊर[28]।
लोइ[29] दीप मै लोचन्न[30]। कांगरि[31] सारीखा कन्न[32]। २८॥

थोर पींडा पग्ग थंभ। गात जांणै गजखंभ।
सतेज रूप साहण। वाजिंद राज वाहण ॥२९॥

तुरी सपतास तूल[33]। झाटक्कीयौ[34] नांखी[35] भूल।
वैसासीयै[36] दीन्ही वाच। डावहियै[37] लगांण[38] डाच ॥३०॥

---

१ आ. आचगले। २ अ. कियां। ३ आ.इ. तरसीया। ४ आ. ऋहुंटालै। ५ अ. लीय। इ. लियै। ६ अ. जीरण साल। आ. जीर्णं साल। ७ आ. सुरतन। ८ आ. चड़ी। इ. चढी। ९ आ. लीयां। १० आ.इ. षटतीस। ११ आ. टवे। इ. टवे। १२ इ. उभा। १३ आ. आमलै। १४ आ.इ. आलोमला। १५ आ.इ. सांमनु। १६ पांडवा। १७ आ. पलांणि। १८ इ. असि। १९ आ.इ. घोडे। २० आ.इ. वेउते। २१ इ. आरीषे। २२ आ.इ. उपनौ। २३ आ.इ. अमुल। २४ आ.इ. षैग। २५ आ. डूमे। २६ आ.इ. पुरसांण। २७ आ. माडै। २८ आ.इ. गजउर। २९ इ. लोई। ३० आ.इ. लोचन। ३१ आ. कागारि। ३२ आ.इ. कन। ३३ आ.इ. तुल। ३४ आ.इ. झाटकीयौ। ३५ आ. नांषि। ३६ अ. वैससियै। ३७ अ. डाहियै। ३८ इ.आ.इ. लगाण।

तांण तंरा तुरी तणौ । फाबि जीण नाग फणौ[1] ।
गज्ज-ग्राह[2] गळै त्यार । हींडोळियौ[3] जेम हार ॥३१॥

ओपी[4] रुप मैं[5] अजब्ब । तूरी[6] कीयौ[7] मुरातब्ब ।
सांमी[8] आगळी सिंगार । आंणीयौ[9] लूंण[10] ऊतारै[11] ॥३२॥

महाराजकुमार गजसींघ रौ वरणण

कमंध[12] 'गज' केसर । पाघ बांधै पाटोधर ।
खेडेचै[13] खेलवा खत्र । पहिरै पंचै वसंत्र ॥३३॥

हेम[14] मैं[15] जड़ित हीर । जूग्रळै मौजा जंजीर ।
दूसरै 'गंगा' दवाढ़ । जडी कडी जमदाढ ॥३४॥

सादी बाधी सम्मसेर । मच्छरीयौ[16] माझी मेर ।
तांण सींग निभै तरण । भेडावीयौ[17] भूथारण ॥३५॥

कंदील अनै कबांण । वींद[18] वींदणी[19] वखांण ।
काढी ढाल ले कमंध । बांधी खवै अलीबंध ॥३६॥

धूणीयौ[20] चौधार धारी[21] । वीजळता[22] मोहा[23] वारी[24] ।
खेड[25] दळै खेड पती[26] । माल्हीयौ[27] मयंद गती[28] ॥३७॥

जोधारां री नांमावळी तथा वरणण

कवित्त

सहस कज्ज कमधज्ज, जिकै ढाहै गज ढल्लां ।
खेमकरण[29] अंगरुद[30], रूप जोधां रिण मल्लां ॥

---

१ आ. फणो । २ आ.इ. गजग्राह । ३ आ. हीडोलीयौ । ४ इ. ओपि । ५ अ. मे । ६ आ.इ. तुरी । ७ अ. कियौ । ८ आ. साम । इ. सांम । ९ अ. आंणियौ । १० आ.इ. लूण । ११ आ.इ. उतार । १२ अ. कमध । १३ आ. षैडेचे । इ. षैंडेचै । १४ आ. हिय । १५ अ. जे । इ. मै । १६ अ. मछरियौ । इ. मछरियो । १७ अ. भेडावियौ । १८ आ.इ. बींद । १९ आ. बींदणी । २० अ. धूणियौ । २१ अ.इ. धरि । २२ आ. वीजलता । २३ आ.इ. मेह । २४ आ. वारि । २५ आ.इ. षेड । २६ आ.इ. षेडपति । २७ अ. माल्हियौ । २८ आ.इ. गति । २९ आ. षेमक्रनं । इ. पेमकरन । ३० इ. अंरूद ।

उदिया-सिंघ[1] 'महेस', जिसौ[2] जंग जेठी 'मांडण'।
जिसौ[3] देद प्रिथिराज[4], जिसौ[5] जैतौ[6] पंचाइण[7] ॥
पंडरि धीर सांमंत[8] परि[9], इळा पाटि छळि[10] उधरै।
गजसिंघ सहाइत गज धरि, जिसौ क्रन[11] राव 'मल' रै ॥१॥

सन्नाहे भड सुहड[12], जिके[13] असवार अचग्गळ।
परि अध्धर पाइक्क[14], सेत बांबळ[15] पाए दळ ॥
तीर दार खंधार वणै[16], सिलहां रिण पक्खर।
गय ढल्लां फरहरै[17], धजा ओछायौ अंबर ॥
हाऊल[18] हमस हंसा रवण, घण दमांम भेरी घुरै।
गजसिंघ लियण जाळोर[19]गढ़, चढियौ[20] हय गय पक्खरै ॥२॥

छंद अरधनाराच[21]

दमांम भेर सद्द ऐ[22]। न फेर तूर नद्द ऐ[23] ॥
क्रमे[24] कडक्क कोअणं[25]। समूह साहणं घणं ॥१॥

थिडै[26] थिडंब थट्ट ऐ[27]। समंद[28] जांण फट्ट ऐ[29] ॥
ढळिक्कि ढाल गैमरां। पुऊर[30] रोळ पक्खरां ॥२॥

गुडै गयंद[31] भल्ल ऐ[32]। पहाड जांण चल्ल ऐ[33] ॥
हसत्त जूथ हींडळै[34]। क मेघ[35] माळ सल्लळै ॥३॥

सपेत दंत[36] अग्ग ऐ[37]। घटाक पंथ बग्ग ऐ[38] ॥
धजा घैघंगरां[39] सिरै[40]। भमै क पंख भक्खरै ॥४॥

---

१ इ. उदीयासिंघ। २ आ. जिसो। ३ इ. जिसो। ४ आ. प्रिथीराज। इ. प्रीथीराज। ५ इ. जिसो। ६ अ. जेतो। ७ आ. पंचांइण। इ. पचाइण। ८ इ. सामंत। ९ आ. वरि। १० अ.आ. छल। ११ आ.इ. क्रनं। १२ आ.इ. सोहड। १३ इ. जिके। १४ इ. पाईक। १५ आ. वांवलं। १६ आ.इ. वणे। १७ आ. फरहर। इ. फरहरे। १८ आ. हाहुल। इ. हाऊला। १९ अ. जालोर। २० आ. चडियौ। इ. चढीयो। २१ आ. नाराज। २२ इ. ए। २३ इ. ए। २४ आ. क्रमं। २५ इ. कोइणं। २६ आ.इ. थिडे। २७ आ. ए। २८ आ.इ. समद। २९ अ. फटए। इ. ऐं। ३० आ.इ- पुउर। ३१ आ. गयद। ३२ आ.इ. ए। ३३ आ. ए। ३४ आ.इ. हीडले। ३५ अ. कंमघ। ३६ इ. दांत। ३७ इ. ए। ३८ आ ए। ३९ इ. घेघरां। ४० इ. सिरे।

डोहत सूंड[१] सिंघळी[२] । घटा विराज सांमळी ।।
घमंकि घंट घुग्घरं । सिंदूर[३] सीस चम्मरं ।।५।।

पटा वहंत मद्द ऐ[४] । (कि) धरा मै जळद ऐ ।।
नेजा[५] बरक्क[६] फब्ब ऐ[७] । (सु)ताड व्रिक्ख[८] पब्ब ऐ[९] ।।६।।

झरंत दांण कुंजरं । गिरै कि नीर नीझरं ।।
मदोमसत्त[१०] मैंगळं । करै[११] प्रवीत[१२] काजळं ।।७।।

आरूढ पीलवांणा ऐ । गजिंद - वाग पांणाए ।।
धटा फवज्ज धूधळी[१३] । चमक्कि कूंत[१४] वीजळी ।।८।।

नीसांण रोडि वज्जऐ । गगन्न[१५] जांणि गज्ज[१६]ऐ ।।
समीर वेग चंचळं[१७] । वांनैत[१८] जोध वद्दलं ।।९।।

नलं ऋहक्क हेमरां । सरे क बोल दद्दरां ।।
रजी सुभट्ट पीजरै । तुरंग जेम[१९] हींजरै[२०] ।।१०।।

इळादि डंब उल्लडै । पवंग वाग ऊपडै[२१] ।।
खुरां ज खोणि वीखणी । पतंग छाइ[२२] पोइणी[२३] ।।११।।

वहै क वाज पत्थए । अकास[२४] मै क रत्थऐ ।।
सीरंम[२५] साह[२६] नस्सहै । विवांण[२७] उड्डिया[२८] वहै ।।१२।।

पाए पवंग[२९] पौडए । धरा धमस घौड[३०] ए ।।
हमस्स असी[३१] हंख ए । सिंचांण जांण पंखए ।।१३।।

---

१ आ.इ. सुंड । २ आ. सिंघली । इ. सींघली । ३ आ. सिदूर । इ. सिंदुर । ४ आ.इ. ए । ५ आ.इ. नेज । ६ आ. बैरक्क । ७ इ. ऐ । ८ आ. व्रिषी । ९ आ.इ. ए । १० आ. मदोमसत । इ. मादोमसत । ११ आ. करे । १२ आ. प्रवित । इ. पृवित । १३ आ.इ. घुलली । १४ आ.इ. कूत । १५ इ. गगनि । १६ आ.इ. गज । १७ आ.ई. चचलें । १८ आ.इ. वानैता । १९ इ. तेज । २० आ. हीजरै । इ. हीजर । २१ आ.इ. उपडे । २२ आ.इ. छाई । २३ आ. पोईणी । इ. योईणी । २४ आ. आकाश । इ. आकास । २५ आ. शीरम । इ. सीरम । २६ आ. शाह । २७ इ. विवाण । २८ आ.ई. उडीया । २९ आ. पावंग । इ. पावग । ३० आ. घोड । इ. घोडि । ३१ इ. असि ।

विडंग बाज छुट्ट[1] ए। परवांण पाय फुट्ट[2] ए।
खणंक[3] नाळि है खुरां। प्रडंति आगि पत्थरां ॥१४॥

ध्रमै[4] व्रहास[5] नास ऐ। वजै उरद्ध सास ऐ।
त्रछोळ[6] ताळ ए मिळै। ऐलांण फीण ऊछळै ॥१५॥

फौडा[7] विसंभ फाड[8] ए। तुरंग[9] कोमंड ताड ए।
कट्टक फौज[10] कंठळा। अणी खिवत साबळा ॥१६॥

भडां गरद्द लग्ग ए। खेलंत जांणि[11] फग्ग ए।
सिरै[12] विवांण[13] झिग्ग ऐ। क्रितक्क जांण उग्ग ए ॥१७॥

नरांक कोप झल्लरा। कोटिक्क भीत कांकरां।
रजी अरक्क विद्द ऐ। पूरण्ण[14] (मा) के चंद ऐ ॥१८॥

कुरंग सिंघ रुझ ऐ। मरंति मज्झि मुज्झ ऐ।
अरस्स खेह ढकए[15]। पंयाल सात पंकए ॥१९॥

भुइग[16] भार[17] सप्पए। फणां[18] सहस्स तप्पए।
वराहै धूजि दड्डऐ। कडक्क कोम[19] कंधए ॥२०॥

पहाड झाड वन्नए। रहद्द कीध रन्नऐ।
उडंति डाब डंबरे। लग (१) सिलीण अंबरे ॥२१॥

गिगन्न गोमं गूधळां। गिरंद मेर मेखळां।
बहौत[20] सेत बंबळां। समूळ सब्बळा दळां ॥२२॥

आया राठौड है खडे। प्रजा चढंत[21] अन्नडै।
भगांण भोमिया[22] डरै। गया अलंग ऊतरै[23] ॥२३॥

---

१ आ.इ. छुट। २ अ.आ. छुट। ३ इ. जणंक। ४ आ.इ. धूमै। ५ आ.इ. व्रहास। ६ इ. त्रंषोल। ७ इ. फौरा। ८ इ. झाड। ९ इ. तुरां। १० आ.इ. फोज। ११ अ.आ. जांण। १२ आ.इ. सिरे। १३ अ. चिवांण। १४ आ. पूर्णा। १५ इ. ढंक। १६ आ. भुयग। इ. भुयंग। १७ इ. भारां। १८ आ.इ. फणं। १९ आ. काम। २० आ. बौहत। इ. बोहत। २१ इ. चडंत। २२ आ.इ. भोमीया। २३ अ. ऊतरै। इ. उतरे।

महाराज कुमार रौ ससेना जाळोर पहुंचणौ

दूहा

जाळंधर आयौ 'गजणं, गय गज्जै हय हींस[१] ।
चढे[२] गिरंद्दां डंबरा, गयणं गिरदां सीस ॥१॥

देवळ काबा मनि डरै, बोडा भड बालौत ।
सगळा आवैं[४] सांमहा[५], मिळिया[६] देखैं मौत ॥२॥

रजपूते[७] मुइ[८] भागियै[९], दळ मूका[१०] छळ देस ।
वीहारी वंजे नहीं, सूना मेल्हे नेस ॥३॥

इम[११] कहियौ[१२] विहारियां[१३], ओटि नत्त की काई ।
आज धणी हम सोनिगर, हम इक[१४] धणी खुदाइ ॥४॥

मीयां खांन मिलक्क सेह, ऊंडा[१५] मंडे[१६] पग्ग ।
एक कर घतें[१७] दढ्ढियां, इक[१८] कर धूणै[१९] खग्ग ॥५॥

वीहारी[२०] दिन वंकडै[२१], वंका सेख जुआंण[२२] ।
रहिया[२३] गढ जाळोर[२४] सूं, संकळपैं आपांण ॥६॥

गाथा

जुधे[२५] दुलंभ मरणौ, जुधे उघाप दांणवां देवां ।
साके सम[२६] भागक्रते[२७], रांमणौ[२८] रामचंदस्य[२९] ॥ (रां)

विहारियां रौ वरणण

कवित्त

धरे मन्न धूधडै[३०], कोटि पैठा सोभाऊ[३१] ।
असली जादा[३२] अभंग, मिलक मीरं बरसाऊ[३३] ॥

---

१ इ हीय । २ आ. चडे । ३ इ गरदां । ४ इ. आवै । ५ आ. सांहांमा । इ. सांम्हा । ६ इ. मीलीया । ७ आ. रजपूत । इ. रजपूतो । ८ इ. भुई । ९ आ.इ. भागीए । १० आ.इ. मुका । ११ इ. ईम । १२ आ. कहीयो । इ. कहायो । १३ इ. विहारीयां । १४ आ.इ. एक । १५ आ.इ. उडा । १६ अ. मंडे । १७ आ. घाते । १८ आ.इ. एक । १९ आ. धुणे । इ. धुणै । २० आ. विहारी । २१ आ. बंकडे । २२ आ.इ. जुआण । २३ आ.इ. रहीया । २४ आ. जाळोर । २५ इ. जुगे । २६ इ. समे । २७ आ. कृते । २८ आ.इ, रामणो । २९ इ. रामचंदश्च । ३० आ.इ. धुधडै । ३१ इ. सोभाउ । ३२ आ. असलीजाता । ३३ आ. वरसर ऊ ।

अल्ला एक करीम, रब्ब रहमांणे[1] संभारे[2] ।
कहि खुदाइ खालिक्क, इलम[3] कत्तेब[4] विचारे ।।
बळिवंत जोधं (वू) ढण[5] हरो, सूर धीर साकौ करण ।
संकळप्पि[6] प्रांण जाळोर सूं[7], नीमे रहिया[8] निज मरण ।।१।।

जिम[9] राजा हम्मीर[10], कियौ[11] साकौ रिणथंभर ।
राइसेण गढ़ जेम, कियौ[12] पूरणमल[13] तूंअर[14] ।।
अचळदास गागुरण, रैण 'मूल'[15] जेसांणै[16] ।
सौम मंडोवर[17] कियौ[18], करे सातळ सिवियांणै[19] ।।
चीतौड[20] कियौ[21] जैमल चडे, 'पातळ' पावै द्रुग[22] सिरि[23] ।
पट्टांण करै कान्हड[24] पछै, साकौ जिम गढ सोनगिरि ।।२।।

कापड माल असंख, हेम मिण रयण विभूखण ।
परिमळ चंदन अगर, पांन कप्पूरह[25] अस्सण ।।
भरै[26] अन्न भंडार, सालि गोधूम[27] सघण घण ।
ध्रित तेल गुळ लूण[28], लगै[29] अहिफेणह सांबण[30] ।।
खड ईंधण[31] पांणी वैसनर, सरब[32] थोक संग्रह[33] करै[34] ।
जाळोर[35] नांम[36] करवा जरू, चढि पठांण नह ऊतरै[37] ।।३।।

जुध - वरणण

जवर जंग जंत्र मैं, असंख आराबा[38] छूटै[39] ।
वोम गोम धडहडै[40], टूंक[41] पाहाडां[42] तूटै[43] ।।
गडि गडि गोळा नाळि, विज खडडै किरि अंबर ।
अगन बांण ऊछळे[44], धोम धूंहा[45] रव डंभर[46] ।।

---

१ आ. रहमान । इ. रहमाण । २ इ. संभरे । ३ इ. ईलम । ४ आ.इ. कतेब । ५ बूटण । ६ आ. संकलपि । इ. संकलप । ७ आ. सुं । ८ आ.इ. रहीया । ९ आ. जीम । १० आ.इ. हमीर । ११ आ.इ. कीयो । १२ आ.इ. कीयो । १३ आ. पूणंमल । १४ आ.इ. तुअर । १५ आ. मुल । इ. मुलु । १६ इ. जेसाणै । १७ आ. मंडोअर । इ. मंडोअर । १८ आ. कीयौ । इ. कीयो । १९ आ. सिवीयांणै । इ. सीवीयांणै । २० इ. चीतोड । २१ इ. कीयो । २२ आ.इ. द्रुग । २३ इ. सिर । २४ आ. कान्हड । २५ इ. कपुरह । २६ इ. भरे । २७ इ. गोधुम । २८ आ. लूंण । २९ आ.इ. लगे । ३० इ. वाबण । ३१ आ.इ. इंधण । ३२ आ.इ. सबँ । ३३ आ. सग्रह । ३४ आ.इ. करे । ३५ आ. जालोर । ३६ आ.इ. नाम । ३७ इ. उतरे । ३८ आ. आरा । ३९ आ.इ. छुटै । ४० आ. धड़ हड़ै । ४१ आ.इ. दुक । ४२ पहाडां । इ. पहीडां । ४३ आ.इ. तुटे । ४४ आ.इ. उछले । ४५ आ.इ. धुआरवं । ४६ आ. उब्भर । इ. उभर ।

आवंत्त[1] घोर अंधार[2] मैं[3] , सोर घोर माचै[4] सघण ।
घोम-रिख जांणि धूंहर[5] रचै[6], जोजन - गंध्रा रित रमण[7] ॥४॥

सूर धीर सांमंत[8] , बिजड[9] जूटण बंगाळां[10] ।
रागां हाथळ टोप, पैहरि जरदां छकडाळां ॥
ले छतीस आवध्ध, भुजे हुचीयां छडाळां ।
सहस अध्ध झूंझार[11], चढ़े गज ऊपर माळां[12] ॥
अणभंग जोध असमांन[13] दिस, ऊतरिया[14] असमांनरा ।
कमधज्ज कणैगिरि लूंबिया[15], किरि लंका गढ वांनरा ॥५॥

छंद सिंघालोकण[16]

विढे[17] वीजांजळ गुडिया गज दळ, दमगळ हूंकळ कळियळ ए ।
बळिवंत अतुळ बळ, जूटा[18] चिहुं बळ (वळ) झळहळ दळ वीजळ ए ।
घण भेरी घरहर, हुई सिंधु[20] सुर[21] ढूका[22] कुंजर कोट ढहै[23] ।
गीधणियां[24] गह हुबर छायो अंबर, रथ रातंबर तांणि रहै ॥१॥

कतियांणी[25] कह कह नारद डह डह, हेका टह टह वीर हसै[26] ।
बड रावत ब्रह ब्रह पोरसि प्रह प्रह दूडी[27] ठह ठह होठ डसै[28] ।
पडियालग पींजरे[29] हुइ[30] हुब, हींजर गाजै[31] गिरवर गोम ग्रहै[32] ।
ओल्हार अणीसर जमधर खंजर, धडि धडि असमर धार वहै[33] ॥२॥

सुजडां मुंहि[34] संघर[35] लडिया लसकर, डिगमिग काइर कळह डरै ।
खागां पळ खंडर कटि सिर कूपर[36] स्रोणी खप्पर सकति भरै ।
धारां रंति[37] घंरहर, दळपळ डाल्हर[38] झटकै[39] पै कर सोस झडै[40] ।
बडडै घाइ[41] बगतर, फाटै[42] बडफर, रुके विनूर रीठ पडै ॥३॥

---

१ आ. आतत । २ आ. अंधरे । ३ अ. मे । ४ आ.इ. मावै । ५ आ. धुहर । ६ आ.इ. रचे । ७ आ. रमणं । ८ आ.इ. सामंत । ९ आ. विजड़ । १० आ. बंगाला । ११ आ. भूझार । १२ आ. भालां । १३ आ. असमान । १४ आ.इ. उतरीया । १५ आ. लूबीया । इ. लुंबीया । १६ अ. सिंघलोकण । १७ अ. वीरे । आ. विटे । १८ आ. जुटा । इ. जुटी । १९ आ. दल-झल । २० आ. सिघु । २१ आ. सूर । २२ अ. टूका । २३ अ. टहै । २४ अ. गीधणी । इ. गीधणीयां । २५ आ. कतीयांणी । इ. कतीयाणी । २६ आ. हसे । २७ आ. दुडि । इ. रुडां । २८ आ. डसे । २९ आ. पीपोरज । ३० आ. हुई । ३१ आ. गजे । ३२ आ.इ. ग्रहे । ३३ आ. वहे । ३४ आ. मुहि । ३५ अ. सथर । ३६ आ.इ. कुपर । ३७ आ. तल । इ. रति । ३८ आ. डाव्हर । ३९ आ. झटक । इ. झटके । ४० आ.इ. झडे । ४१ अ. घाइ । ४२ अ. फाटे ।

धू[1]नाचै भड धड, फींफड[2] फडहड, लोडे[3] लडथट लोहि लडे[4] ।
बीयै[5] दळ वड चढ हुई हडवड, जोवै[6] घडतड अनड अडै[7] ॥
वीहांरी[8] धूहड[9] वाजै[10] धजवड, तूंग त्रिसीगड तुड तरसै[12] ।
दोमजि रत दडि-अड[13] जांण[14] नदी नड, जोटा जमजड जोध खसै ॥४॥

वळकै वीजूजळ कुटके[15] कम्मळ, सूं[16] सर साबळ झळहळ ए ।
अडडे[17] कांब्रूसळ कुटकै कम्मळ, सोणी[18] रळ-चळ खळहळ ए ॥
करमाळां कड कड पडि सिर दड दड, भाजै मरगड कंध भडां ।
खैंगरजै खैंगड[19] लागै लोहड, धाइ उजड पड घूम घडां[20] ॥५॥

गाहट थट गडथळ भंग अंग भड खळ, अणिया[21] बरघळ अणी ।
सुजड़ां मुंहि[22] उरबळ कटि घटि ऋंगळ नीमडि आघळ हुवै नरां सरां ॥
झूंझझारा[23] खग झट खळ दळ खळखट, खेटो खत्रवट खेड घणो ।
कडि कडि कंठि कोपट, गोधम गजथट, धाइ आवट[24] घर मार घणो ॥६॥

तुटंट[25] कसण तण, जिरहां[26] जूसण[27], खंडे उड्डुण खंडर ए ।
कळि हुविया[28] कोअण, निहस निभैमण, जूध दुसासाण[29] जुध कर ए ॥
आव्रत[30] कळ ऊकल गहण गळोवळ, सिलहां सकंळ ऊजडियं ।
भड भिडै भुजां बळ सुजडै[31] सैंफळ[32], घोमग उच्छळ[33] घडहडियं ॥७॥

खग हुए खंड़ां खंड किरि डंडीहड, रिण भुइ रींहड[34] रत[35] रिडै[36] ।
वीहारी[37] वडि वडि तूटै घडि घडि, अणियां[38] चडि चहि अब्भ अडै[39] ॥
झळरि करि झणिहण[40] दिसि गैणंगणि[41], तीमछ[42] छणमण तेगतणै[43] ।
असमांन अथरबण रचै[44] रांमाइण, रांम रांमण ऊभै रिणै[45] ॥८॥

---

१ आ.इ. धुना । २ आ.इ. फीफड । ३ अ. लोडै । ४. अ. लडै । ५ आ. बियै । इ वियै । ६ अ.इ. दोवै । ७ आ.इ. अडे । ८ आ.इ. विहारी । ९ आ. धुहड । इ. धूहडंड । १० आ.इ. वाजे । ११ आ. तुग । इ. त्रुग । १२ आ.इ. तरसे । १३. इ. दडीअड । १४ आ. जाण । १५. अ. कुटकै । १६ आ.इ. सुं । १७ आ. कठडे । इ. कडडे । १८ आ.इ. ओणी । १९ आ. उज्यड । २० आ.इ. घुसघडां । २१ आ.इ. अणीयां । २२ आ.इ. मुहि । २३ आ.इ. झूझारां । २४. आ.इ. अवट । २५ अ. तुटंस । २६ इ. जिरहा । २७ आ इ. जुसण । २८ आ.इ. हुबीया । २९ आ. दूसासण । ३० आ.इ. आवृत । ३१ आ. सुजडे । ३२ इ. सैंफल । ३३ इ. उच्छलि । ३४ आ. रिहड । ३५ इ. रति । ३६ आ. रिडे । ३७ आ. विहारी । इ. बिहारी । ३८ आ.इ. अणीयां । ३९ आ. अडे । ४० आ.इ. झणहण । ४१ अ.आ. गैणंगण । ४२ आ.इ. तिमछी । ४३ आ.इ. तणे । ४४ आ. रचे । ४५ आ.इ. रिणे

अंग अंग अवल फट मिळ धाए मैवट, धार धजव्वट धोम धिखै ।
आहुडिया[१] अविभ्रट[२] बध्धे रिणवट, वळिवंन बाथट बल्ल बखै ।।
भड खळिया भंभर वेहक[३] वज्जर, वढिया[४] पक्खर विहंड वपै[५] ।
पळ खंडिया[६] पंजर पडै पंचाहर, जै जै संकर सकति जपै[७] ।।९।।

हसि जोगणि हडहड, गोळी रत गड गड, मंडै[८] खफर पत्र मिळै ।
तिल तिल हुइ टूकड, वेलै तुरभड, मच्छक तडफड तुच्छ जळै ।।
जंवक जंख प्रघळ[९] मिळिया[१०] सम्मळ[११] होऊं हूकळ रत[१२] हिळै ।
डाइणि[१३] भख डळ डळ चूंपै[१४] चळवळ पळ भैंवर वळ वळ भूत भिळै ।।१०।।

महाराज कुमार री विजय

कवित्त

भिळै[१५] कोट खग चोट, वडा कमधां वरियांमां[१६] ।
पडै राडि पट्टांण, चंद रवि चाडे[१७] नांमां ।।
जाळंधर पलटियौ[१८], वडौ रिण जंग भारथ करि ।
वीहारी[१९] बिढ़[२०] दियौ[२१], कियौ[२२] साकौ[२३] किणियागिरि[२४] ।।
'गजसाह' वडै 'गजसाह' छळि, अगनि बांण आतस[२५] सहे[२६] ।
पडिहार एक 'पांचा सभ्रम[२७]' रायसिंघ रिणभूंइ[२८] रहे[२९] ।।१।।

वीर गति प्राप्त खास खास पठांण जोधाआंरी नामावळी

वडो जोध सामंत[३०], पडे[३१] जबदळ प्रचंडह ।
खेत पडे[३२] ताजखां, पडे[३३] केहरि बळिबंडह ।।

---

१ आ आहुडीया । इ. आहूडीया । २ आ. अवीभ्रट । इ. अवियट । ३ आ. वहैक । ४ आ.इ. वढीया । ५ आ.इ. वपे । ६ आ.इ. वंडीया । ७ आ.इ. जपे । ८ आ.इ. मंडेई । ९ अ. प्रत्थळ । १० आ.इ. मिलीया । ११ आ.इ. संमल । १२ इ. रति । १३ इ. डाइण । १४ आ. चूपैं । इ. चूपे । १५ आ. मिले । १६ आ.इ. वरीयांमां । १७ आ.इ. चांडे । १८ आ.इ. पलटीयो । १९ आ.इ. विहारी । २० आ. विट । २१ आ.इ. दीयो । २२. आ.इ. कीयो । २३ आ. साको । २४ आ. कणीयागिर । इ. कणीयां गिर । २५ आ. आतम । २६ आ. सहै । २७ आ.इ. सभ्रम । २८ आ.इ. भुइ । २९ आ. रहै । ३० आ.इ. सामंत । ३१ अ.आ. पडै । ३२ अ.आ. पडै । ३३ अ.आ. पडे ।

चंद खांन चतखांन, पडे[1] प्राफी पतिसाहै।
पडे[2] खान सेलार, कणै द्रुगहि पडिगाहै॥
संग्रांम इता साऊ पडे, वाहंता तरवारियां[3]।
जाळोर[4] नांम करिवा अमर, मर दीनौ वीहारियां[5] ॥२॥

तणा देस रजपूत[6], देस गढ चाढि[7] न मूग्रा।
हुग्रा[8] सरब भुई[9] भूत[10], देव सिद्धांण न हूग्रा[11]॥
काबे बळि छंडियौ[12], हुआ[13] फेरा ऊबोडा[14]।
सांमि[15] ध्रम्म परिहरे, घरे किसा बाधा घोडा॥
चहुवांण[17] न ग्रौसर चूकता[17],(···) ऐ जुगतौ जगि थयौ।
बालोत[18] पंचाइण[19] सोनगिरि, चढे[20] सरगि ऊतरि गयौ ॥३॥

जाळोर विजय कर महाराज कुमार रौ जोधपुर पहुंचणौ।

महाराज कुमार रौ स्वागत

दूहा

जुद करि पट्ठांणां सरिसि, गढ जाळंधर लीय।
'गजपति' ग्रायौ जोधपुर, मंगळ धमळ हरीय ॥१॥

कर सूं[21] करि कुकुंम[22] तिलक, चाढै[23] चावळ भाळ।
कुंग्रर बधावै राइकुंवरि[24], ले सोव्रन[25] मै थाळ ॥२॥

छंद भमराळी

लिय कुकुंम चंदन तंदुलयं[26] महियं[27]।
मुख गावत मंगळ धंमळयं सहियं[28]॥
घण वाजत घोर त्रंबागळयं[29] घुरियं[30]।
कवि कीरति बिंद कोळाहळयं करियं ॥१॥

---

१ ग्र. पडे। २ ग्र.ग्रा. पङे। ३ ग्रा.इ. तरवारीया। ४ ग्र. जालोर। ५ ग्रा.इ. विहारीयां। ६ ग्रा.इ. रजपुत। ७ ग्रा.इ. चाढ। ८ ग्रा.इ. हूग्रा। ९ इ. भूय। १० इ. भुत। ११ ग्रा.इ. हूग्रा। १२ ग्रा.इ. छंडीयौ। १३ ग्रा.इ. हूग्रा। १४ इ. उबौडा। १५ ग्रा. सांमि-ध्रम। इ. सांम·ध्रम। १६ इ. चहूवांण। १७ इ. चुकता। १८ ग्रा. बालौत। १९ ग्रा.इ. पचांइण। २० ग्रा. चडे। इ. चडै। २१ ग्रा.इ. सुं। २२ ग्रा.इ. कुंकम। २३ ग्रा. चाडे। २४ ग्रा. राय कुग्रारे। इ. राइकुग्रर। २५ ग्रा. ग्रोवून। इ. सौवून। २६ ग्रा तंडूलयं। इ. तंदूलयं। २७ ग्रा.इ. महीयं। २८ ग्रा.इ. सहीयं। २९ ग्रा. तंबागल। ३० ग्रा. घुंघरियं।

आंमना चत्र वेद ब्रहंमांणयं[1] विप्रयं[2] ।
रुघ जुज्जर सांम अथरवणयं[3] जपयं ॥
वेदो धुनि जै जै सब्बदयं वरणयं ।
गुंजार रव भेर पडं-सदयं घणयं ॥२॥

रंग राग विणेद विसातरयं[4] बहुयं[5] ।
चडि चाडति सुंदर मिंदरयं[6] सहुयं ॥
मिरण मांणक[7] कुंदण कंकणमं दिपतं ।
मोताहळ हार विभूखणयं वणितं ॥३॥

'गजसाह' वधाउत चातुरया ललिता[8] ।
चहुवै दिस चंमर[9] चौसरया ढुळिता ॥
मसि कर जळ हुइत, भाळिअल्ळ[10] दुयणं[11] ।
परि पूनिम चंद कळा कमळं सयणं ॥४॥

कवित्त

सैणां ठरिया[12] नयण, हिया[13] प्रसणां परजळिया ।
जस प्रताप वाधियौ[14], घाउ नीसांणा वळिया[15] ॥
घर घर मंगळचार, मौहत चढियौ[16] मंडोवर ।
नाद वेद वरतिया[17], सुकवि बोलै सुभ अक्खर ॥
जोधपुर द्रुग्ग[18] जोधपुरी, कळा तप तेज कळ कळै ।
भाद्रवै मास भीनै सिहरि, किरि भासंकर झळहळै ॥१॥

डरै[19] माड मेवाड, वळौ पाहाड[20] द्रबक्कै[21] ।
आकंपै[22] अरबद्द, सीस देवडां चमक्कै ॥
जडिजै गढां किमाड, प्रज्ज भाजै परराठां ।
खळां खंड खळभळै, इळा दहलै दिस आठां ॥

---

१ आ. ब्रह्माणयं । २ आ. विृप्रयं । ३ आ. अथर्वंणयं । ४ अ. विसालयं । इ. विसतरयं । ५ आ.इ. बहूयं । ६ आ. मिदरयं । ७ आ. माणक । ८ इ. लुलितां । ९ आ.इ. चमर । १० आ.इ. भालीअल । ११ दुघंणं । आ. दुघंणं । १२ आ.इ. ठरीया । १३ आ.इ. हीया । १४ आ.इ. वाधीयौ । १५ इ. वणलीया । १६ आ.इ. चढीयौ । १७ आ.इ. वरतीया । १८ आ. द्रुग । इ. दुरंग । १९ आ.इ. डरे । २० आ. पहाड । २१ आ. द्रब्यके । इ. द्रमंके । २२ आ. आकप

फेरिया[1] उलाक चिहुंवै[2], दिसी हुई[3] राजथांनां हटक ।
मेलिया[4] 'गज्जरग' मंडोवरै, करमसैन माथै कटक ॥२॥

ले सुभट्ट अविग्राट[5], आप चढियौ[6] कोप कर ।
साठ कोस इळकार, कियौ[7] 'उंगरावत' ऊपर ॥
खुरताळां विक्खणी, घणी लग्गी आयासां ।
नह सुणिजै नीसांण, वंसू[8] वाजी वरहासां ॥
गज सिंघ परिग्रह आगळै, हाक मार आयौ हणूं[9] ।
'करमैत' उडी[10] कपूर वरि, गौ छंडे गढ लाडणूं ॥३॥

थळ ज़ंगळ आरांन, जेथ गिरि नहीं[11] सरोवर ।
जळ पयाळ काइ गिगन, भोम उद्दास भयंकर ॥
तेथ फिरे रडवडे थकित, हुआै पंथ डूलौ ।
लांघणियौ भूखियौ, सीह किरि डांणा हूलौ ॥
साह बळ वडौ विहबळ, हुवै त्रिखावंत जळ मौकळै ।
कळि मूळ आइ पैठौ, कमौ, भूंइ कंठै भाखर वळै ॥४॥

कुंवर[12] तांम[13] 'गजपती' चढे गढ सोजत[14] आयौ ।
आरंभ पारंभ करे, करण जुध रोस कसायौ ॥
नव[15] दुरगा नवरात, वीस भुअडंड प्रचंडा ।
पुहप[16] धूप नइवेद, सकति पूजी चांमंडा[17] ॥
देवी मनाई विज्जैदसम, चतुरंग दळां चढियौ[18] भरणि ।
कह ताज मेर माझी, 'कमौ, गयौ भाजि मेरां सरणि ॥५॥

गज दळ धूस[19] गडूस, मेल चतुरंग महादळ ।
पाइल बांणावळी, खडे खंधार चहुं-वळ[20] ॥
गिरकंदर पाहाड[21], गाहि पाए केकांणं ।
किया[22] मट्ठ मैवास[23], प्रज्ज पाळी मेल्हांणं[24] ॥

---

१ अ. फिरियां । इ. फेरिया । २ आ.इ. चिहुवे । ३ आ.इ. हुइ । ४ आ.इ. मेलीया । ५ आ. अवीग्राट । इ. अवीग्रट । ६ आ. चडीयौ । इ. चढीयौ । ७ आ.इ. कीयौ । ८ आ.इ. वसु । ९ आ.इ. हणु । १० आ.इ. उडि । ११ आ.इ. नही । १२ आ.इ. कुवर । १३ आ.इ. ताप । १४ आ.इ. सोझत । १५ आ. नवा । १६ इ. पोहप १७ इ. चामुंडा । १८ आ.इ. चडीयौ । १९ इ. धुंस । २० आ. चंहु । इ. चहूं । २१ आ.इ. पहाड । २२ आ.इ. कीया । २३ अ. मेवास । २४ इ. मेल्हाणां ।

घंस फेरि घरां सिरि वालरां, सुणी वात देसे दसे।
'गज बंध' वळौ गिरि घूणियौ,[1], तिकर ताड कुंजर खसे ॥६॥

ले पाए घातिया[2], मेर साखा कर वाढे।
वंळा-बंध ढंढोळ, 'कमौ' अलगां हूं[3] काढ़े ॥
भड तुरंग वीणार, चडै[4] माफी गज केसर।
फौज लगै फूलियै[5], दीध परराठां पस्सर ॥

गज सिंघ भए गज केसरी, काळ पेख करमरा छरा।
उग्रसेन समोभ्रम[6] हुंस ले, गयौ. तांम[7] हाडा घरा ॥७॥

महाराजा सवाई सूरसींघ रौ सुरगबास

रांम राज जोधपुर, सहूं[8] हरचंद वारौ।
मास पंच खट मास, साह आपे वाधारौ ॥
दखणाधी[9] सरहद्द, वडा[10] जीता आखाडा।
वडा प्रिसण परभवे, वडा खाटिया[11] प्रवाडा ॥

खेंगरे खग्ग खळ घासियां[12], अभंग नाथ उदमाद्मै।
दिन दिन प्रताप जस आगळै, सूरसिंघ नूप[13] आथमैं ॥८॥

सोळसै संमत, वरस[14] छहतरै[15] बयट्ठै।
सुकळ पक्ख भाद्रवै, घुम्मि वरखा घण वुठ्ठै ॥
दक्खण[16] देस मुहंम, नयर मुक्कांम महीकर[17]।
भुगति आउ[18] भूपाळ, वरस गुणचासां भीतर ॥

चौईस[19] वरस राजस करे[20], सूरसिंघ नूप[21] द्वापुरौ।
इक[22] छत्र नवे[23] गढ भोगवे[24], मुग्रौ[25] राउ मंडोवरौ ॥९॥

जपै[26] मुक्ख जैरांम, पक्ख तेरै उजवाळण।
काया मंजन करे, चीर पहिरे आभूखण ॥

---

१ आ.इ. घुणीयो। २ आ.इ. घातीया। ३ आ. हु। इ. हुत। ४ आ इ. चडे। ५ आ.इ. फूलीयो। ६ इ. समोभूम। ७ आ.इ. ताम। ८ आ. सहु। इ. सहूं। ९ अ. दक्षणधी। इ. दषणाधि। १० अ.आ. बडा। ११ आ.इ. षाटीया। १२ आ.इ. घासीया। १३ आ. नृप। इ. निृप। १४ इ. वरत। १५ इ. छहरै। १६ अ. दषण। इ. दिषण। १७ आ. इ. महिकर। १८ आ. आव। १९ आ. चोइस। इ. चोवीस। २० आ. करै। २१ आ.इ. निृप। २२ आ.इ. एक। २३ आ.इ. नवैगढ। २४ आ.इ. भोगवै। २५ आ.इ. मूओ। २६ आ.इ. जपे।

वीनौ[1] पीत सनेह; प्रेम निरवाहे पावन।
लाज मांण[2] ग्रैहकार[3], सिरै चाढ़ै[4] सूरातन॥
कूंरमि पमारि कमधज्ज सूं[5], भटियांणी[6] कुळ छळ भळै।
जोधपुर हुई जादवि सती, पावक च्यारे प्रज्जळै॥१०॥

ग्रस्ट[7] पात्र सब चंग, काइ[8] तरुणि काइ[9] बाळा।
पिक हुंसइ ग्रालाप, कंठ मोहित मुगताळा॥
मेकवीस मूरछा, त्रिण(ह)ग्रांम[10] निसपति[11] सुर।
लहण भेउ खटराग कांठ, भ्रक्खै[12] मोखंतर॥
ग्रपछरांन मारू पह इधक, सरस गीत संगीत ध्रुनि।
ऐहडै ग्रखाडै सूं[13] गयौ[14], सूरसिंघ स्रग्गह भवनि॥११॥

जई[15] सूर ग्राथमै, तई दिस हुई[16] दखण।
खंळ हुग्रा खित प्रघटह[17], प्रघटह[18] तारा गयंगण[19]॥
सूरिज[20] वंसी कमळ, तुरक हिंदू[21] संकुडिया[22]।
गड्ढ़ द्रुग[23] परसाद, तीह ले ताळा जडिया[24]॥
ग्ररणोद ग्रउगम जांणियै[25], गौ[26] ग्राधारे ग्रगम-गमै।

गजसींघ रो वरणण

दखणाध 'गजेसी' दीपियौ[27], किरि देवायर[28] ऊगमै॥१२॥

ग्रायौं दक्खण इळा, खेड इलकार तुरंगम।
राजखिघ राखियौ[29], कोट रखवाळ दुरगंम॥
सुहड[30] साथि[31] रिणमाल, जोध जोधा दूसासण[32]।
संभाए साहिबी, भार झालियौ[33] ग्रथरवण॥

---

१ इ. विनो। २ ग्रा. माण। ३ ग्रा. ग्रैहंकार। इ. ग्रहंकार। ४ ग्रा.इ. चाडे। ५ ग्रा.इ. सु। ६ ग्रा.इ. भटीयांणी। ७ ग्रा.इ. ग्रसट। ८ इ. काई। ९ इ. काई। १० ग्रा.इ. ग्राम। ११ ग्र. निसपुत। ग्रा. निसपत। १२ इ. ग्रपे। १३ ग्रा.इ. सुं। १४ ग्रा. गयों। १५ ग्रा. जइ। १६ ग्रा. हुइ। १७ ग्रा.इ. प्रघट। १८ ग्रा.इ. प्रघट। १९ ग्रा. गयणे गण। इ. गयणंगण। २० इ. सूरज। २१ ग्रा. हींदू। इ. हीदु। २२ ग्रा.इ. संकुडीया। २३ ग्रा. दुर्ग। इ. दुरंग। २४ ग्रा.इ. जडीया। २५ ग्रा.इ. जांणीयो। २६ ग्रा.इ. गो। २७ ग्रा.इ. दीपीयौ। २८ ग्रा. देवाइर। इ. देवाईर। २९ ग्रा.इ. राषीयो। ३० ग्रा.इ. सोहड। ३१ इ. सथि। ३२ इ. दुसासण। ३३ ग्रा. झालीयौ। इ. झालयौ।

परचंड पराक्रम दाखवे, पित्त[1] वीवनै[2] पंच दिन ।
'गजसाह' वसुह राखी पगे, डहे भुज्ज डिगियौ[3] गिगन ॥१३॥

सूरज सिंघ[4] त्रिसींग[5], गयौ खग त्याग सुधारे ।
मंडोवरि आथांण, तात (...) छळि उद्धारे ॥
उड्डि महाभर कंध, भार भलपण संब्बाहे ।
वेगड वांमी[6] वहण, प्रिथी प्राम्रो पतिसाहे ॥
गैणाग ज्यार पड़ियौ[7] गळै, बळहारी[8] भुम्रडंड बळ ।
तिण तार 'गजेसी' त्राडियौ[9], घुर[10] हिलोळ बाळौ घमळ ॥१४॥

महाराजा गजसींघ री राजतिलक

छंद ग्रडल

झाझा भूळ सुभट्टां पासै ।
बैठौ[11] बाप तणै[12] आंमासे[13] ॥
व्राहनपुर[14] दसरावौ थप्पे[15] ।
जोसी तिलक मुहूरत[16] अप्पी ॥
विजै दसम्मी होम करावै ।
विप्रां कन्ना वेद वचावे ॥
निघ[17] नूप[18] तिलक दियण[19] खत्र घौडै ।
मिळ मंगळीक किया[20] राठौडे ॥१॥

छंद जात दुपई

'सूरजमल' संभ्रम राज संप्रापत, मंडप ताखत मंड ए ।
सिंघासण बैस छत्र तांणे[21] सिरि, दीपति कन्न (क)मंड ए ॥
नव दुरगा नवे[22] खेट वरदाई, कर गि मंगळीक रच्चए ।
बंदिण जैकार बिंद कोळा हळ, विप्रां[23] वेदउ वच्च ए ॥१॥

---

१ आ. पिता । २ आ. विवा । इ. विवृनै । ३ आ.इ, डिगीयौ । ४ आ. सुरज-सिंघ । ५ आ.इ. त्रिसीग । ६ आ. व्रांमी । ७ आ.इ. पडीयौ । ८ आ. बलहार । ९ आ.इ. त्राडीयौ । १० आ. घुर । ११ आ. वैठो । १२ आ. तणो । १३ अ. आभासे । १४ आ. व्राहनपुर । इ. वृांहनपुर । १५ आ. थपे । इ. थपै । १६ आ. मुहुरत । १७ अ. तिय, आ. निय । १८ आ.इ. नृप । १९ आ.इ. दीयण । २० आ.इ. कीया । २१ आ.इ. तांणे । २२ आ.इ. नवै । २३ इ. विपां ।

चंद आघ्रांण सार गंध क्रिस-नागर, कसतूरी[1] ऊपट्ट ए।
सोरंभ अबीर कमकमो केसर, परिमळ जांणक हट्ट ए॥
कुंदन मै थाळ द्रोब दधि कुकंम,[2] पूरित अक्खत तंदुळं।
इत्यादिक गीत नाद वेदव[3]-धुनि, मंगळ धमळ मंगळं॥२॥

सुभ वासुर सुब्भ जोग वेळा, तिल्लक्क निलाट[4] तांण ए।
सोळह मुखि कळा चंद संपूरण[5], द्वादस[6] ऊगति[7] भांण ए॥
निछरावळि कीध नांखि नंजीरव[8], मोताहळ ऊच्छाळ ए।
राठोडां[9] 'गजण' देव मै राजा, चिहु[10] दिसि चम्मर ढाळ ए॥३॥

सुहडा[11] स्रब[12] अंग चंग दिग्गंवर, राइ[13] अंगण सोभ ए।
मधुकर गुंजार[14] डंबरी सांमल, परिमळ[15] वास लोभ ए॥
अबंक नीसांण रोडि तूरारव[16], भेरी गुहीर[17] सद्द ए।
बरघू[18] नफेर[19] डोड सहनाई, जांणक मेघं नद्द ए॥४॥

सिणगारे सरब[22] हेम मे साकति, गळै गज्जगाह बंध ए।
वेगागळ वाजराज वाहण या, दीपत सरल ([20]) कंध ए॥
सिंदूर[23] हिचोळ कूंभ सूंडाहळ[24], धज पताख[25] ढाळ ए।
सोहै सरजीत[26] पंख संजुगता, फिर परबत-माळ ए॥५॥

गज रूपां सीस फाबि फरहरिया[27], उण उणिहार इक्ख ए।
आरुहि करि अछर मेर गिरि स्रिगी, विभ्रम स्रिगक पेख ए॥
वीणा मरदंग[28] ताळ स्रीमंडळ, झणहण सद्दक झल्लरी।
चढि[29] चढि गज[30]गमणि मिंदरे गोखे गावै गीतक सुंदरी॥६॥

---

१ अ.इ. कसतुरी। २ इ. कुकम। ३ आ.इ. वेद। ४ आ.इ लिलाट। ५ आ. दसपुरण। इ. सपूरण। ६ इ. द्वादसि। ७ अ. उदति। इ. उदंत। ८ इ. नझी-रव। ९ अ. राठोडां। १० आ.इ. चिंहु। ११ आ.इ. सोहड। १२ आ.इ. श्रव। १३ इ. राई। १४ इ. गुंझार। १५ इ. पारिमल। १६ इ. तुरारव। १७ आ.इ. गुहिर। १८ इ. बरघु। १९ इ. नफेरि। २० आ. सनाइ। इ. सनाई। २१ इ. जांणिक। २२ आ.इ. श्रब। २३ इ. सिंदुर। २४ इ. सूडाहल। २५ इ. पताक। २६ इ. सराझीत। २७ इ. फरिहरिया। २८ आ.इ. मृदंग। २९ आ.इ. चडि। ३० इ. गझ।

संपूरणं[1] छभा इंद्र राजा[2] परि, सांमंत[3] सोहड थट्ट ए।
जंपै[4] आसीस जै जया सबद, चारण विप्रक भट्ट ए॥
पाळ गजां पांच दोमजां प्रिथमी, जां[6] ळग मेर मेखळा।
तां लग कमधज्ज राज चिंजी[7] ह्वै, भुगतै[8] राजं कमळा ॥७॥

छप्पय

कमळ सयण बिळकुळै[5], मज्भि उर कमळ विकासै।
कमळि कमळि सुभ वइण, कमळि दुरिजणं निकासै॥
कमळ पेख उणहार, कमळ वदनी मन मोहै[10]।
कमळ-नाभ थिय क्रिया, छभा परि कमळ सोहै॥
अभिखेक हुओ उत्तम जुगति, जोध दिय[11] जांमळी[12]।
'गजसाह' कमळि वणियो[13] तिळक, किरि मयक सकंर कमळि ॥१॥

धरि सींघासण[14] अधर, पाटि बैंठो पाटोधर[15]।
आपण पै[16] ईसवर, चमर ढोळावै[17] चोसर॥
इंद्र छभा किर अमर, निडर राठौड निभे-नर।
पहु रैणाइर पसर, धणी नवकोट छिहंतर॥
अल्ळंब[18] अढारै[19] राइहर, 'वाघ' वंसोधर वीण वर।
'गजसाह' सीस मेघाडंबर, किरि[20] सुमेर सिरि[21] कळपतर ॥२॥

मेघनाद गडडंत, गुडै मैंगळ गडडंता।
सुहड[22] पुरख मैरयण, रयण भूखण क्राइता[23]॥
ओपि वनै फळ पुहप, थिया[24] मनछाफळ प्रापत।
सत्रां सापति थियो[25], नाक विग्रह आइ[26] संपत॥

---

१ आ.इ. संपूर्णं। २ इ. राझा। ३ आ.इ. सांमत। ४ इ. जंपे। ५ इ. विपक। ६ आ.इ. जां। ७ आ. चिजीवे। ८ आ.इ. भुगते। ९ आ. दुरिजणा। १० आ.इ. मोहे। ११ आ. दीपे। १२ आ. जांमलि। इ. जंमलि। १३ आ.इ. वणीयौ। १४ इ. सिसाण। १५ आ.इ. पाटोधर। १६ आ. पे। १७ आ. ढोलावे। १८ आ.इ. अलब। १९ अ. अटारै। २० आ.इ. किर। २१ आ. सिर। २२ अ. सोहड। २३ इ. काइता। २४ आ.इ. थीया। २५ आ. थीयौ। २६ आ. आई।

संपेख तेज जम रवि उदै, मुगट - बंध वांदै समंद।
'गजबंध' महीपति जोधपुर, जिम अजोधिया[1] रांमचंद[2] ॥३॥

प्रभ्रिति[3] इंद्र प्रताप, पाक पिंड तेज प्रभा-कर।
क्रोध जम्म वैभव कुमेर, दिढ मेर गिरव्वर॥
दधि म्रजाद[4] बळि सेख, नाग भूतेस[5] भलप्पण।
रूप कांम आरंभ रांम[6] सर, विद्या अरजण॥

बळि राउ चाउ धीरज ध्रू, कळप व्रिच्छ छाया करण।
कमधज्ज न्रिपति[7] क(...क) रता कियौ[8], संग्रहि इत्ता सरब गुण॥४॥

राठौडां सौंह वधी, वधी सोह हिंदुसथांनां[9]।
वरंकरार[10] नव कोट, हसम राखिया[11] खजांनां॥
दिल्लीवे[12] सुरतांण, वाज वंका वैगागळ[13]।
सूंटी[14] ले मेल्हीया[15], जूह मद वहता मैंगळ॥

चास धव वरस चौईस[16] में, राजा नांम विराजियौ[17]।
जग जेठ 'गजैसी' जनमियौ[18], थाळ भलांई वाजियौ[19] ॥५॥

वर तुरंग उत्तंग[20], कणै साकति[21] विराजित।
मदोमत्त मात्तंग, जांण[22] जळ वादळ गरजित॥
पहरावै[23] सपिया[24], पटासन पैरावत्ता[25]।
मौड बंधां ठाकुरां, बडा सोहडी सांमत्तां॥

दे गांम तुरी द्रब लाखदे, हसत वंध[26] कीया सुकवि।
कुरियंद[27] 'गजैसी' कापियौ[28], गयौ समंद[29] पै'ली पहवि[30] ॥६॥

---

१ आ.इ. अजोध्या। २ आ. रायचंद। ३ आ. प्रभृति। इ. प्रभति। ४ आ.इ. मृजाद। ५ आ. भूतस। इ. भुतेस। ६ आ. राम। ७ आ इ. न्रिपति ८ आ.इ. कीयौ। ९ इ. हिंदसथांनां। १० इ. वरकरार। ११ आ.इ. राषीया। १२ आ. दिलीवे। इ. दीलीवै। १३ आ. वेगागल। इ. मेगागल। १४ आ. सुंटी। इ. श्रुटी। १५ आ.इ. मेल्हीया। १६ इ. चौइसै। १७ आ.इ. विराजीयौ। १८ आ.इ. जनमीयौ। १९ आ.इ. वाजीयौ। २० आ.इ. उतंग। २१ आ. सकति। २२ आ. जाण। २३ आ.इ. पैहरावै। २४ आ.इ. समपीया। २५ आ. पेरावत। इ. पेरावतां। २६ आ. हस्तबंध। २७ आ.इ. कुरीयंद। २८ आ.इ. कापीयौ। २९ आ.इ. समद। ३० आ.इ. पहव।

किया[१] रांम[२] आरंभ, जिकै[३] दळ आरंभ कीजै।
जिकै[४] पत्थ[५] जीपतौ, जिकै[७] भारथ जीपी जै॥
जिकै[९] 'वीक' कापतौ[१०], जिकै[११] पर दुख कापी जै।
तिकै[१२] भोज[१३] पूछतौ, जिकै[१४] वातां पूछी जै[१५]॥
सुख जिके इंद्र[१६] भुगतै सरगि, जिकै सुक्ख स्रब[१७] भोगवै।
अवतार वीर राजा[१८] इसौ, 'गजपत्ती' राठौडवै॥७॥

असि उलास उच्चास, जिसा ऐरापति[१९] कुंजर।
कांमधेन[२०] निज धरा, कोटि साखाह कळिपतर॥
सुहड[२१] सघण सुर-छभा, सुकवि जण[२२] किता सुधाकर।
अस्ट[२३] भोग संजोग, पांण पिथमी[२४] पुड ऊपर॥
कुळ धू[२५] कळित्र[२६] इंद्रांणी[२७], गीत नाद संगीत गुण।
भ्रित-लोक[२८] इंद्र[२९] कोइ महपती, तो 'गजपत्ती' 'सूर' तण॥८॥

सूरसिंघ[३०] दसरत्थ[३१], पित्ता तिण पाटि[३२] महीपत।
'सलख' वंस[३३] रुघवंस[३४], अवधपुर[३५] जोधां तक्खत॥
दळ मेळे चतुरंग, पदम[३६] अट्ठारह वांनर।
पट्ठांणां जुध करै[३७], लीध लंका जाळंधर॥
दिग-विजै जंग जीपण दखण, 'गजण' अंगजी गढ़ वरै।
सिर-ताज[३८] सलक्खां सामंतां[३९], रांमचंद राठौड रै[४०]॥९॥

असि अंभग आरुढ़, गुरड आरुढ़ भयंकर।
डंडा[४१] आवध छत्रीस, चक्र[४२] सारंग गदाधर॥

---

१ आ.इ. कीया। २ आ. रांम। ३ आ. जिके। इ. झिके। ४ आ. आ. जिके। इ. झिके। ५ आ. पथ्थ। इ. पथ। ६ इ. झीपतौ। ७ आ. जिके। इ. झिके। ८ इ. झिपीझै। ९ आ. जिके। १० आ.इ. कापता। ११ आ. जिके। १२ इ. जिके। १३ इ. भोझ। १४ आ.इ. जिके। १५ इ. पूछीजै। १६ इ. ईंद्र। १७ आ.इ. श्रब। १८ इ. राझा। १९ आ. अैरापत्ति। इ. अेरापति। २० आ. कामधेन। २१ आ.इ. सोहड। २२ इ. झण। २३ इ. असट। २४ इ. प्रिथमी। २५ इ. धु। २६ इ. कलि। २७ इ. इद्रायणी। २८ आ. मृत-लोक। २९ इ. इद्र। ३० इ. सूरिसिंघ। ३१ आ. दशरथ। इ. दसरथ। ३२ इ. पाट। ३३ आ. वंश। ३४ आ. रुघवंश। ३५ आ. अवधेपुर। इ. अवधिपुर। ३६ इ. पदंम। ३७ आ. कर। ३८ इ. सिरताजां। ३९ आ.इ. सामितां। ४० आ. रे। ४१ आ. डंड। ४२ आ.इ. चक्रं।

पाट पबै उद्धरण दुजड[1], भंजण दळ ळाखां।
जुरा-सिंध सारिखां, दळण दाणवां[2] असंखां ॥
किल्यांण[3] सदा जै जै कुसल, नित जीपण जुध नव नवां।
'गजबंध' कमध्धां मांहि[4] जिम, जिम हरि मांही पांडवां[5] ॥१०॥

पंच इंद्री[6] निग्रिहे[7], ग्रहे छत्रीसेइ[8] आवध।
इडा पिंड सुखमणा, त्रिविधि[9] घडि मंडि घडासुध ॥
सुवपि जोग संग्रांम[10], जोध विद्या अभियासी।
तांण बांण कोमंड[11], चंद्र[12] सूरिज[13] आकासी[14] ॥
सुत[15] सूरज[16] मालम दिस दसू[17], अर के भंजण काळ रिम।
'गजबंध' कमध्धां मंझळी, सिधां मज्झि गोरक्ख जिम ॥११॥

महाराजा गजसींघ रौ वरणण

दूहा

सविता जिण[18] सीत (ळ) हुवै, कंपै[20] सीत परज्ज।
तिण दिस 'गजपत्ती' नृपत[21], तप दाखै कमधज्ज ॥१॥

कवित्त

तप दाखै[22] कमधज्ज, तेज सूरिज[23] प्रक्कासै।
रवि द्वादस उद्यौत[24], दिसी चिंहु[25] द्वादस[26] मासै ॥
खाग आग वरजाग, प्रिसण बाळै पर जाळै।
खत्रवाट कुळवाट, पाट परियां[27] उजवाळै[28] ॥
सांमत[29] सहस[30] सहंस किरण, तेज पुंज्ज पौरसि प्रभित[31]।
गजसिंघ तेथ[32] तत्तौ थयौ, जेथ थाय[33] सीतळ सवित ॥१॥

---

१ अ. दुजण। २ आ. दाणवां। ३ आ. किल्यांण। इ. कल्यांण। ४ आ. मांही। ५ इ. पंडवां। ६ इ. इद्री। ७ इ. निग्रहे। ८ अ. छतीसइ। ९ अ. त्रिविध। १० आ. संग्राम। ११ आ. कोमड। १२ अ. चंद। १३ आ.इ. सूरिज। १४ अ.आ. आक्कांसी। १५ आ.इ. सुरज। १६ आ. सूत। १७ आ.इ. संदसू। १८ इ गजबं। १९ इ. झिण। २० इ. कंपे। २१ आ.इ. नृपति। २२ इ. दषै। २३ आ.इ. सुरिज। २४ अ. उद्योत। २५ अ. चिहु। २६ आ. द्वादश। २७ आ.इ. परीयां। २८ अ. अजवालै। २९ आ. सांयत। इ. सामंत। ३० आ.इ. सहस। ३१ इ. प्रभेत। ३२ आ. तेत। ३३ आ.इ. थाइ।

सपत दीप नवखंड, सपत दधि जळ थळ महिम्रळ[1] ।
एक भाग हजरत्त, मारि ळीयौ महि मंडळ ।।
पछिम देस पारंभ, लियौ[2] लोहां उप्पाडे ।
पूरब[3] दिस[4] पतिसाह, लियौ[5] लख दळ विब्भाडे ।।
उतराध खंड असपति लियौ, दखण राज जोगणपुरै ।
अकबर जलाल खाटी इळा, जिती साह जिहगीररै ।।२।।

दिल्ली मंडळ मैं दरोळ

जोगणपुर लाहौर, थटौ भक्खर मुळतांणह ।
कासमीर काबल्ल, तिती जंभी[6] तुरकांणह ।।
गुजर मांडव खंधार, प्रगट गढ़ परबत-माळह ।
रोहितास उड्डीस, गोळकूंडौ बंगाळह ।।
अहमदानगर आसेर गढ़, पातिसाह पालट्टिया ।
पूरब्ब पछिम उत्तर, दखण च्यार चक्क चकतै लिया[7] ।।३।।

खुरासांण दिस लंक, वेध लग्गा पति (सा) हां ।
दळ असंख आवंदा, गुडे माझी गळि बाहां ।।
जोगणिपूर पह काज, तुरक हिंदू बे लडिया[8] ।
मारू सेर मयंद, मेर माझी आहुडिया ।।
गजसिंघ गढ़ां कोटां गिळण, जैत खंभ ज(म) राउ सौ ।
राठौड हियै दक्खण धडैं, नवौ साह नव-साहसौ ।।४।।

'सूरजम' (ळ) गो सरगि, साह निव्वाज विविन्नौ ।
मन तुरकां हिंदुवां, तांम वैराग उपन्नौ ।।
खांन मीर उमराव, सहू डोळी पतिसाही ।
पौरसि[10] राखी पगे, 'गजण' दे हत्थौ वांही ।।
दखणाध दमंगळ दाखिवा[11], आंगमिया[12] उतराधि[13] दळ ।
सूत्रियौ[14] जुध्ध सुरतांण[15] सूं, प्रारंम आरंभ की (धौ दळ) प्रबळ ।।५।।

---

१ आ. महीग्रल । इ. महियल । २ आ.इ. लीयौ । ३ इ. पुरब । ४ आ. देश, इ. देस । ५ आ. लीयौ । इ. लीयो । ६ आ.इ. जमी । ७ आ.इ. लीया । ८ आ.इ. लडीया । ९ आ.इ. आहुडीया । १० आ. पोरसि । इ. पौरिस । ११ इ. दाषीवा । १२ आ.इ. आंगमीया । १३ अ. उतराध । १४ आ. सूत्तीयौ । इ. सूत्रीयो । १५ इ. षुरसाण ।

उत्तराधि[1] दखणाधि[2], उभै आहुडै वदीता ।
जद ज(द) दिन पध्धरो, तीह जद भारथ जीता ।।
असिपति[3] दळ 'गजपत्ति', लोह त्रिविधा[4] घड[5] लाडो ।
आगळि[6] हिंदुसथांन[7], इळा[8] खुरसांणह आडो ।।
कमधज्ज पित्ता जिम कल्लवा, बेहसि बाधो नेत सिरि ।
क्रांमत्ति हुंइ खित कारणै, गढ़ जोधह गिरि[9] देवगिरि[10] ।।६।।

गाथा

जुद्धो वरजित दोखो, दक्खण सनमुख भो-अणो ।
वरजित सा दक्खण हृण खगे, राठोडे[11] भुहणो कर ए ।।

महाराजा गजसींघ रौ दखणाध मैं दरोळ मेटण सारू गमन

छंद सारसी

दखणीस डंबर खरळ सक्कर, थेट मोगर थंड ए ।
उमराव[12] बहतर[13] खांन सत्तर सीस उत्तर खंड ए ।।
खिडिया खंधारं जोरदारं सेन पारं पक्ख ऐ ।
केता हजारं तेग मारं अस्स मारं लक्ख ए ।।१।।
छत्रपती[14] छिडिया[15] थाट थिडिया[16] गयंद गुडिया[17] मत्त ए ।
तांणे कबांणं करि[18] जुवांणं गोण बांणं घत्त ए ।।
दौलताबादं[19] नांम जादं मिळि[20] मुरादं[21] भीर ए[22] ।
करणाट कंकण देस दक्खण धूंम्रे[23] अधारण धीर ए ।।२।।
विज्जयानग्गर छिडे विहु्र दुर्रात खप्फर दूठ ए ।
मरहट बराडं भड किमाडं गिड पहाडं ग्रीठ ए ।।
गढपती गूंडं[24] गोळकूंडं झाड - खंड लग्ग ए ।
सेत मै बधं अन्नमंधं[25] करण जुध्धं खग्ग ए ।।३।।

---

१ अ. उतराध । २ दषणाध । ३ अ. असपति । ४ इ. विधी । ५ इ. घउ । ६ अ. आगल । ७ आ.इ. हीदुसथांन । ८ इ. ईला । ९ आ. गिर । १० आ.इ. देव गिर । ११ आ.इ. राठोडे । १२ आ. ऊमराव । इ. ऊमरा । १३ आ. हुतर षांन । इ. बहुतर षांन । १४ आ.इ. छत्रपति । १५ आ.इ. छिडीया । १६ आ.इ. थडीया । १७ आ.इ. गुडीया । १८ आ.इ. कर । १९ आ.इ. दौलतावादं । २० आ.इ. मिल । २१ आ इ. मरदं । २२ अ. मरदं । इ. मिरदं । २३ आ.इ. धूम्र । २४ आ.इ. गुडं । २५ इ. अनिबंधं ।

नासत्रबक्कं छिडि कटक्कं सिंध लक्कं सेन ए।
पंचाळ देसं पंडिवेसं[1] इळानरेसं ऐन ए॥
मल्यार मंडळ वीजिया जळ दक्खणी दळ संमिळै[2]।
कन्नडा हबसी दैत[3] वंसी चिंहूं[4] दिस्सी सालळै॥४॥

सेना रौ वरणण

गरजंत गजदळ जूह सब्बळ करै मैंगळ सारसी।
बंधंत चम्मर कसै हैमर पुट्ठि पक्खर आरसी॥
पक्खरां रोळं जळा-बोळं[5] किरि हिळोळ सिंध ए[6]।
चतुरंग फवजां चींध धज्जां पुठि गज्जां बंध ए॥४॥

आवै अछाया दैतराया रोद्र[7] काया रूप ए।
अन्नड कराळा वड वडाळा भड भुजाळा भूप ए[8]॥
लुग्धा सिघांणी काळ बांणी पंख वांणी बोळ ए।
परबत्त मेरं जुध्ध पेरं समस्सेरं तोल ए॥६॥

पाई[9] कवट्टं रिण प्रघट्टं खाग भट्टं खेल ए[10]।
दूंठ दुगम्मं करै स्रम्मं जोर जमं ठेळ ए॥
अज्जां(न) बांहं रिम्मरांहं पातिसाहं मांन ए।
गैढल्ळ गाहं नरां नांहं खाग वांहं खांन ए॥७॥
पाहाड[11] पिंडं गिडि प्रचंडं भुजां डंडं भीम ए।

जोध जवन्नं[12] निभै[13] मन्नं सूर तन्नं सीम ए॥
वीराधिवीरं मिळं[14] मीरं सूर धीरं सत्थ[15] ए।
आरेण मत्ती भीम भत्ती बांण पत्ती पत्थ ए॥८॥

कळि मत्थ कोमं सत्र सोमं पस्स लोमं सी(स) ए।
कंधार काळं जम्म जाळं विक्कराळं दीस ए॥
बाहंत घावं मंडि[16] पावं नागरावं मत्थ ए।
भारत्थ भल्लं भूम्भ भल्ळं बाह बल्ळं बत्थ ए॥९॥

---

१ इ. पंडवेसं। २ इ. सुमिले। ३ इ. दैत्य। ४ आ. चिहु। ५ अ जल-बोलं। ६ इ.ऐ.। ७ इ. रोद्रि। ८ आ.इ. वडे वडालूा अनड कराला (इस प्रकाक का पाठ भेद है) ९ इ. पाइ। १० इ.ऐ। ११ इ. पहाड। १२ अ: जवानं। १३ इ. न्हिभै। १४ आ.इ. निले। १५ इ. स्टथ। १६ इ. मंड।

घांनंक - धारी बळाकारी मांलहारी[1] मद्द ए ।
सूरा सिपाई तुंग ताई सकज्जाई हद्द[2] ए ।।
वाहंत पांणं असम्मांणं जम्मरांणं जोध ए ।
सहुवै सकूपं रिण कूपं काळ - रूपं क्रोध ए ।।१०।।

जमराउ[3] जैसा रूप ऐसा साळ(है) पैसा लाख ए ।
बांहां बिहूरा अंग भूरा सेन सूरा साख ए ।।
पहरै नरांमा पंचठांमां अंग जांमा ओप ए ।
सोहै सकाजा[4] सीस ताजां[5] सार मोजां[6] जोप ए ।।११।।

दूहा

इळ[7] कारण आरंभ कियो[8], पूरो कियो[9] पारंभ ।
दक्खणियां[10] दळ से मिळे, मत्थण महिणारंभ[11] ।।१।।
केताइ हिंदू[12] खेडिया[13], केताइ पंडरवेस[14] ।
हूवा खिडिकी[15] हेकठा, लंक उडल्ळा देस ।।२।।

मलिक-अंबर

छंद अडिळ

दखणी फोज[16] छिडे[17] असमांनं ।
बहुतरि सतरि ऊमरा खांनं ।।
दखणी पिंडिक[18] मिळे दुयंगम ।
नवसै नदीक साइरि[19] संगम ।।१।।

कोट मुलक खिडिया केताइ खंड ।
व्याइ वसूहक फाटौ व्रहमंड[20] ।।
वडा वडा आवै वरियांमं[21] ।
'अंबर' आगै करैं सलांमं ।।२।।

---

१ इ. सांमहरी । २ इ. हथ ३ आ. इ. जमराव । ४ इ. सकजां । ५ इ. तजां । ६ मौजा । २२ इ. ईला । ७ आ.इ. कीयो । ८ आ.इ. कीयो । ९ आ.इ. दषणीयां । १० इ. महिलारंभ । ११ इ. हीदू । १२ आ.इ. षेडीया । १३ इ. पंडवेस । १४ इ. षिडीकी । १५ इ. १५ इ. फोज । १७ इ. चिडे । १८ इ. पिंडक । १९ इ. साइर । २० इ. वृम्हंड । २१ आ.इ. वरीयांम ।

ऐहा जोध बहसीया आया ।
काजळ मसि(क) वरनी काया ॥
माथै छत्रस ऊजळ दीठा ।
बळियै व्रिक्ख किरि हंस बयठा ॥३॥

बादसाह री अंबर रै विरुद्ध बीड़ो फेरणो

सगळै तेड़ि खांन सुरतांणं ।
बीडो अप्पि अप्पि फुरमांणं ॥
असी सहंस असवारां घोडां ।
कीधं[1] विद्या[2] ऊपरि राठौडां ॥४॥

आकुत खांन असक्कत माझी ।
दक्खण दळै तेग तै प्राझी ॥
सहतैरंरि ताबीन समप्पै ।
सेनाधपति सेन मझि थप्पै ॥५॥

आकूत खां (याकूत खा) रो बीड़ो उठाणो

छंद बोमळा

आकूतह खांन झाळै पांनं छट्टै साहण पंखाळा ।
लाए लग्गाएं मंडि पलांणं घोडे पक्खर थंभ साळा ॥

सैना रो वरणण

तह कीध तुरंगं तांणै तंगं बंधे चंमर[3] गजगाहं ।
लीया वरियांमे 'अंबर' आंमे सूरे पूरे सन्नाहं ॥१॥

रंगावळि सत्थळ हत्थे हत्थळ झूळरियाळा[4] धू टोपं ।
जडिया[5] ले जूसण बंधे कस्सण सिद्धक जांणै सक्कोपं ॥
गुरजां चकमारां अंग अयारां डाबे पट्टां जमदड्डं ।
खंडा खुरसांणी तेगां पांणी सींगी[6] नेजा सन्नड्ढं ॥२॥

दुध्धार गुपती खंजर कत्ती सूंनर[7] कस्सी कोमंडं ।
छोही तरगाळी ढल्लां काळो छत्रीसेइ आवध डंडं ॥

१ इ. किधा । २ प्रा. विध्या । ३ इ. चमर । ४ प्रा.इ. झूलरीयाला । ५ प्रा.इ. जडीया । ६ प्रा. सीशी । इ. सीगी । ७. इ. सुतर ।

डंड - आवध डाबे[1] फारिक फाबे[2] वीरति[3] वंका झूंझारं[4] ।
सल्लांमां कीयां ऊभा मीयां सांम सनमुख सिल्लाएं ॥३॥

खळहळतां डांणां खंभूठांणां[5] गोड करंता गज - भारं ।
ढल्ला ढळकावी चींध[6] वणावी पूठि चढ़न्ना पोतारं[7] ॥
गडडंता मैंगळ पाए सांकळ कोटां भंजण किंमाडं ।
सिंदूर वखांणै गेरू जांणो मेघ क घोया पाहाडं ॥४॥

दीपै दंताळा वयंड काळा ऊभा लागै आकासै ।
पिलवांण पटाभ्भर काळा कुंजर लोक त्रिहुं हुआ तंमासै ॥
सबजे जर दाई लाल सिहाई वांनै छायो व्रहमंडं ।
फररा बैरक्कां फावी[8] कटकां जांणक[9] फूले वन-खंडं ॥५॥

कवित्त

खंड देस गढकोट, मुलक मांणं तम महाघर ।
कनक मंड[10] मांडंत, छत्र सिर[11] मेघाडंबर ॥
पाटंबर पैहरंत, सूफजर बाफ मसंजर ।
जम दाढ़ां नमि जडित, कडां जडिया[12] जर कंबर ॥
जोगिंद हुआ सिलहां जडे, दिढ़ दाखवि देवग्गिरा ।
चंचळे खांन सत्तरि चडे, चडे बहुत्तरि उमरा ॥१॥

तणा मीर मरहट्ट, तणा बंगाळ बराडह ।
कुंकण करणाटक्क, खांन देसां नमियाडह ॥
गोळकुंड महिमुंड, तुंड मंडिळा तिलंगा ।
वेदुर वीजापुरा, कनड हबसी अणभंगा ॥
सांमद उअल्ला सैतबंध, हिंदू[13] हम्मीरह खरा ।
आकूत खांन साथे इता, दळ चढिया[14] दक्खण-धरा ॥२॥

---

१ अ. डावे । आ. डाबो । २ आ. फोबे । ३ इ. विरती । ४ आ.इ. झूंझारं । ५ इ. षांभूठांणा । ६ आ.इ. चीध । ७ इ. पोतार । ८ इ. फाबि । ९ आ.इ. जांणिक । १० अ. डंड । ११ आ.इ. सिस । १२ आ.इ. जडीया । १३ आ. इ. हीदू । १४ अ. चडीया ।

फौज री कूच

छंद डंडीग्रळ १

दम्मांमा घाउर[2] भेर भिहाऊ[3] है गैराऊ[4] दळ चडिया[5] ।
वज्जे सहनाई[6] नौबत घाई तूंर त्रिघाई[7] गडगडिया[8] ॥
रुडिया[9] रिणतूरं[10] त्रंबक पूरं वाजि पडूंरं[11] असमांणं ।
खेहां घमरोळं मिळि गोघोळं पक्खर रोळं केकांणं ॥१॥

हाहूळि हुलाहं हूहि हुकाहं सेन अबांह उल्लट्टं ।
गिरि कंदर कूरं झंगर झूरं वाजि पडूरं[12] उप्पट्टं ॥
खडिया[13] ऊमग्गं ऊपडि वग्गं द्रमे पनग्गं पायाळं ।
हाहस्स हसम्मं सटा[14] सिरम्मं असी उरम्मं पडताळं ॥२॥

द्रौडा-रव[15] द्रम्मी वाजि दिसम्मी गूडळं जम्मो गैणग्गै[16] ।
फुण सेस सहस्सं[17] धूजि[18] धमस्सं पंथ हमस्सं है-पग्गे[19] ॥
वाराह धडक्कै[20] दाढ़ खडक्कै कंध कडक्कै कूरम्मं[21] ।
सम्मूह सळक्कै कूंत वळक्कै खैगं खळक्कै कैजम्मं[22] ॥३॥

असमांन अलब्बं थाट[23] थिडब्बं[24] उड्डि दिडब्बं अणपारं ।
सरतांण[25] घनंखं खांडै पंखं अडे असंखं खंधारं ॥
घण जांणिक[26] घट्टा साहणं छुट्टा सातक फट्टा सांमद्रं ।
सणणो[27] सीचांणां[28] जेम[29] विवांणां वांनर डांणां वाजिद्रं[30] ॥४॥

खैगां खुरताळे खोणा[31] उछाळे असी[32] अफाळै असवारां ।
चतुरंगह[33] चल्ले हेमक हल्ले फूल उझल्ले झूझारां ॥

---

१ इ. डडग्रल । २ आ. घाऊ । इ. घाउ । ३ आ. भिहाऊं । इ. निहाऊ । ४ इ. गैराउ । ५ आ.इ. चडीया । ६ आ. सनाई । इ. सेहनाई । ७ इ. त्रिधाइ । ८ आ.इ. गड गडीया । ९ आ. रुडीया । १० इ. रिणतुर । ११ इ. पंडुर । १२ आ. पडुरं । १३ आ. इ. षडीया । १४ आ. साटी । इ. साटा । १५ आ.इं. द्रोडारव । १६ आ. गैणायो । इ. गैणायगै । १७ आ.इ. सहसं । १८ इ. धुजि । १९ अ. है । २० घडंके । २१ आ. कूरयं । इ. क्रूरंमं । २२ आ.इ. केजमं । २३ इ. छाटि । २४ इ. छिडबं । २५ इ. सरसांण । २६ इ. जाणिक । २७ इ. सणणे । २८ आ. सीचांणां । इ. सिचांणां । २९ आ. जैम । ३० आ. विजंद्रं । ३१ अ.आ. षोल । ३२ इ. असि । ३३ आ.इ. चतरंगह ।

पाहाड[1] सिरंगे[2] पंथ पवंगे[3] गोम निहंगे गूघोळं[4] ।
पाधर किय[5] पट्टं वन्न विकट्टं जांणि[6] उलंट जळ बोळं ॥५॥

धूजंत धरती फौज वहत्ती ह्म्मंस मत्ती हैं[7] पाए ।
वहतां वरहासां बाजै नासां चोट चौरासां न सुणा ए ॥
गडगडि[8] नीसांण मेघ मंडांण अंबर भांण रज छाया ।
हींसा-रव[9] घोडे[10] दखणो दौडे वागां जोडे दळ धाया ॥६॥

दखणी सेना रो वरणण

गाहा

दळ मारत आया दखणाधा ।
फट्टां दळ वादळ उतराधा ॥
वरसै[11] आगि वहंतां बांणा[12] ।
ठौडि ठौड[13] हूं उट्ठे थांणा ॥१॥

दखणी दक्खण पस्सरिया दळ ।
किरमं कडा करस्सण मेहळ ॥
दखणी कटक चहूं दिस दौडै ।
महिकर नह[14] मुहक्यो[15] राठौडै ॥२॥

मूक्या लिखि 'दाराब' उतांमळ ।
'खांनाखानं' सांमुहा[16] कागळ ॥
हुवा कटक्के दखणी हाऊ ।
व्राहनपुर[17] आया वाहाऊ[18] ॥३॥

खांना खांन रो महाराज गजसींघ ने विरदावणो

कवित्त

खांना खांन नबाब, 'गजण' कहियो[19] औनाडह[20] ।
तूं[21] परचंड पहाड, लोह ओछाड[22] किमाडह ॥

---

१ आ.इ. पहाड । २ आ.इ. सिरगे । ३ इ. वहगे । ३ अ. गूघालं । ५ आ.इ. कीय । ६ आ.इ. जाणि । ७ अ.आ. हे । ८ अ आ. गड गड । ९ आ.इ. हीसारव । १० अ.आ. घोड । ११. आ.इ. वरसे । १२ अ.आ. बांणां । १३ अ आ. ठौड ठौड । १४ इ. न । १५ इ. महक्यो । १६ आ. सामहा । इ. सामुहा । १७ इ. वांहनपुर । १८ इ. वहाऊ । १९ आ.इ. कहीयो । २० इ. ओनाडह । २१ आ.इ. तुं । २२ इ. ओछाडह ।

तूं[1] आगळ हिंदुवां, तुंहिज[2] हम्मीरां आगळ ।
तैं भंजे मेवाडि[3], किया[4] खळ-खट्ट वहे खळ ।।
दखणाधि दळ फाटौ उदधि, रहै न दूजै[5] रोकियौ[6] ।
कमधज्ज ऊठि कर तेग लैं, तो भुज भार खडक्कियौ[7] ।।१।।

महाराजा गजसींघ री जोस मैं आणौ

वयणे[8] वाकारियौ[9], तांम माझो गज केसरी ।
पवन पूर ऊफणै[10], जळण जांणै[11] वन अंतरि ।।
बळि राजा बांधवा, वोम किर लागौ वांमण[12] ।
विजै जेम वैराट, भीम भंजण दूसासण ।।
हणमंत द्रोण हिल्लोळवा, वीरा - तन किरि विळकुळै ।
दळ-थंभ विढण दखणाधि[13]सूं[14], ऐम[15] ऊठियौ[16]भुज आंमळै ।।२।।

बळ देखे बोलियौ[17], सुणौ खांनां सुरतांण ।
'सूरजमल' मो पित्ता, तणि थूडे[18] अरि थांणां ।।
सबळ भार मो भुजै, तणौ परियां परचंडां ।
दधि फाटौ वंध दूं, हुई ज झेलूं व्रहमंडां[19] ।।
मो तेग वंदै[20] हिंदू[21] तुरक, जेती ऊगे आथमै ।
'गजसाह' कहै पतिसाह दळ, मो[22] उभै[23] कुण आंगमै ।।३।।

राजद्वार कोठार, जीण - सालां काढीजै ।
जरद जरद्दी घडै, लोह लोहै कूटीजै ।।
वेनांणी वेगळा, वाढ घालै केवांणां ।
कूंत बांण कीजंति, अणी तीखा खुरसांणां ।।
कापिजै कनक दीजै भडां, बाहिर आपै वारिग्रह ।
मारू[24] नरिंद महिकर दिसा, पारंभ आरंभ कीध पह ।।४।।

---

१ आ.इ. तुं । २ इ. तुं हीज । ३ अ.आ. मेवाड । ४ आ.इ. कीया । ५ अ.आ. दूजो । ६ आ.इ. रोकीयो । ७ आ.इ. षडकीयो । ८ अ.आ. वसणै । ९ आ.इ. वाकारीयो । १० आ.इ. उफणे । ११ आ.इ. जांणं । १२ आ. वायाण । इ. वामण । १३ अ.आ. दषणाध । १४ आ. सुं । इ. सु । १५ अ. इम । १६ आ.इ. उठीयो । १७ आ.इ. बोलीयो । १८ आ.इ. थूरे । १९ आ.इ. वृह्मांडां । २० अ. वधे । २१ आ. हींदु । इ हींदू । २२ आ.इ. मो । २३ इ. उभो । २४ अ. मारु ।

दूहा

व्राहन-पुर[1] खट[2] मास रहि, होळी रमे वसंत।
तंग तुरंगां तांणियां[3], खेलण खत्र निभ्रंत[3] ॥१॥

कारण तांमै कुंजरां, जोहड़ां सजोहड़ांह।
सीहां सत्थ उतांमळौ, परिगह राठौड़ांह ॥२॥

गाथा

अरजणो नदं घोखो, सूरज सपतास[5] इंद्र एरापति[6]।
गोमंद[7] गुरडन्याए, नेजा डा[8] सिंघ आरुडह[9] ॥

कवित्त

ग्रहे वज्र जिम भुजा, चढे ऐरापति इंद्रह।
नंद गोरव जिम[10] पथ, चढे[11] कर ग्रह कोमंडह ॥
ग्रहे आच'र त्रिसूळ, चढे[12] जिम संकर धम्मळि।
चढे[13] रांम खगपति, गदा चक्र गहे भुअब्बळि ॥
सूरज्जि जेम सपतास चढि[14], पदमपांण आवध ग्रहै।
गजसिंघ लोह खटत्रीस ले, इम 'जे' पूठी आरुहै ॥२॥

गोडी-रव गैमरां, जूह वहतां तळ जोडां।
घंटा-रव पक्खरां, हुए हींसा-रव[15] घोडां ॥
ढौवा-रव ढिग ढिगै, गोम गैणा-रव गज्जै।
गुंजा-रव भेरियां[16], धनक टंका-रव वज्जै ॥
सुंडोर वसे नेसां हणे, किरि लहरी-रव ऊपडै।
राठौड जमळि 'गजसाह' री, तुरां पूठि नाहर चडै ॥२॥

सेना रो वरणण

छंद संजुता[17]

नीसांण नद्द निफेरियं[18]। दम्मांम काहुळि भेरियं[19]।
रिण तूर वाजि जंबूर ए। आवाज गाज निहंग ए ॥१॥

---

१ अ.आ. व्राहनपुर। २ इ. घट। ३ आ.इ. तांणीया। ४ इ. निभंत। ५ इ. सपताइ। ६ आ ग्रैरापति। इ. ग्रेरापति। ७ आ. गोमद। इ. गेमद। ८ इ. मा। ९ इ. आरुढ। १० इ. जि। ११ इ. चढ। १२ इ. चडे। १३ इ. चडे। १४ इ. चडि। १५ इ. हीसारव। १६ आ.इ. भेरीयां। १७ अ.आ. संजुत। १८ आ.इ. नफेरीय। १९ इ. भेरीयं।

वाजित्र नोबति वज्ज ए । घण जांण भाद्रव गज्ज ए ।
चतुरंग सेनह चल्ल ए । है-थाट हैमक हल्ल ए ॥२॥

परबत पंख प्रचडंए । मल्हपति[1] मांणक डंड ए[2] ।
मदमोख जूह महाबळी । सदरूप[3] मेघक सिंघळी[4] ॥३॥

डोहंत सूंडा[5] डंड ए । स्रीखंड सरपंक हिंड ए ।
गज-वाग[6] मत्थै मैंगळां । वळकत्त वीजक वद्दळां ॥४॥

गुडियंत जूह गडाड ए । सरजीत जांणि[7] पहाड ए ।
मदगंध मद ऊमंड ए । हय पाई रजनी ऊडु ए ॥५॥

गंभीर गडिग्रड ढोल ए । पड-सद्द परबत बोल ए ।
खुर रव(ज) खैंगां थाइयं । रज धूळ अंबर[8] छाइयं ॥६॥

गोधूळ गौम गहत्त ए । वरहास वेग वहत्त ए ।
पडताळ पाइ पवंग ए । भुम्र[9] भार कंपि भुम्रंग ए ॥७॥

असि झंफ मंकड[10] पाळ ए । धडकंति सात पंयाळ ए ।
खेडंत[11] खैंग जुबांण ए । सुर जांणि[12] वोम विवांण ए ॥८॥

जन्नांख वाजि पलांण ए । किरि सोक[13] पंख सिंचांणए ।
उल्लट्ट थट्ट थिडंब ए । दिसि अब्भ उड्डु दिडंब ए ॥९॥

ग्रहराउ[14] मज्झि गरद्द ए । किरि चंद राति सरद्द ए ।
अहिराव कूरम[15] कोड ए । मसतक्क भारह मोड ए ॥१०॥

वरहास दौडे वेगळा । किरि खडै[16] नभ उर मंडळा ।
हुइ हमस धम धम है-खुरां । वाजंत धम-धम पाखरां ॥११॥

हालंत हैमर लीण ए । ऐहलांण[17] झर हरि फीण ए ।
'गजसाह' राव[18] राठौड ए । किरि पत्थ गो ग्रह दौड ए ॥१२॥

---

१ इ. मल्हति । २ इ. मंड । ३ अ. सदरुप । ४ आ. सिघली । ५ आ.इ. सुंडा । ६ अ.आ. बन बाग । ७ आ.इ. जांण । ८ आ. अबर । ९ आ.इ. भूम्र । १० आ. मंड़क । ११ इ: षडंत । १२ आ. जाणि । १३ इ. सोष । १४ इ. ग्रहराऊ । १५ आ.इ. कुरम । १६. इ. षडे । १७ आ.इ. अैहलांण । १८ इ. राऊ ।

महाराजा गजसिंघ रौ वरणण

कवित्त

जिम धायौ जोगेस, वसुह दिख ज्याग विघूसण ।
जिम धायौ[1] ग्रह बांण, पत्थ गौ[2] ग्रह छाडावण[3] ॥
जिम धायौ हणमंत, द्रोण पव्वै उप्पाडण ।
जिम धायौ भीमेण, दैत लंक मीर विभाडण ॥
पित वैर क धायौ[4] फरसधर, संघारण सहसा-रजण[5] ।
धायौ कमध्ध ढिल्ली[6] दळां, जिम अनंत गज उग्रहण[7] ॥१॥

तणी चाढ़ सुरतांण, खेडि आयौ खुद्रा असि ।
दघि महिकर दळ वधे, पेखि राजा पूर[8] ससि[9] ॥
चढ़ि[10] आया सांमहा, सुहड[11] साखेत[12] भुजाळा ।
कियौ सनमुख जुहार, आप आपे अंकमाळा ॥
कमधज्ज मिळे सूं[13] कमधजां, हीया परफूल्ळंत हुवै ।
वंदियौ[14] "गजण" बिय चंदवरि, तांम तुरक्कै हिन्दुवै[15] ॥२॥

सह सुभट्ट अविअट्ट, बंधि रिणवट्ट सत्रांणां[16] ।
लोह मरट्ट विकट दियै[17], किरच.........कबांणां ॥
ज्यां प्रघट्ट खतवट्ट[18], कोट अपलट्ट पलट्टै ।
ज्यां निकट्ट भौ नही, निपट संग्रांम निहट्टै ॥
खळ-खट्ट करै खागां मुहै, सूरज्ज हट्ट समूह गह ।
कमधज्ज दियण[19] पसणां पहट, थिडे थट्ट हूंआ थडह ॥३॥

गजदंतां मुहि[20] चडै, जिके गजदंत विभाडै ।
गाढ़ि सीम गज भीम, गयण गजरूप भमाडै ॥
करन द्रोण भीखम्म, जिसा भूरी भगदंत्तह ।
घन्न रिद्ध घन रज्ज, वाच जुजुठल्ळ निभ्रांतह[21] ॥

---

१ इ. ध्यायो । २ इ. गो । ३ इ. छुडावण । ४ इ. ध्यायो । ५ इ. सहसारभण । ६ आ. दिली । ७ इ. ऊग्रहण । ८ इ. पूर्ण । ९ अ.आ. सुसि । १० इ. चडि । ११ इ. सोहड । १२ इ. साषैत । १३ इ. सु । १४ आ.इ. व्रंदीयो । १५ आ. हींदुवे । इ. हीदवे । १६ इ. सुत्राणा । १७ आ.इ. दीयें । १८ आ.इ. षत्रवट । १९ इ. दीयण । २० इ. मुंह । २१ इ. निभ्रंछह ।

भगवाट गिणै पुत्रह वधू, वांमां अंग त्रिविध्घ घड ।
कमधज्ज राऊ जांमळि कमध, जांणि मेर जांमळि अनड ।।४।।

जै जीतौ दखणाध, हाकि हबसी दळ सब्बळ ।
जै भागो मेवाड, मींढ सूं[1] दिल्ली मंडळ ।।
जै जीतौ अजमेर, घडी मांही घण चक्कह ।
जै लीयौ जाळोर, भिडे पट्टांण कटक्कह ।।
वरियांम[2] मेरं माझी वडा, जिसा जोध हथणापुरा ।
सांमंत[3] सहू[4] भेळा हुआ[5], गिडि[6] प्रचंड गजसिंघ रा ।।५।।

दूहा

राठौडै[7] पिडि[8] गाहियौ[9], गज बंधी भूपाळ ।
पूनिम चंद पडग्गरै, जांणि नखत्रां माळ ।।१।।

एका एक अभंग भड, थिया थिडंबै[10] थट्ट ।
मारू[11] मांझी[12] मारका[13], कुण कुण वडा सुभट्ट ।।२।।

राठौड़ां री जुदी २ साखावां री नांमावळी

कवित्त

'जोधा' 'चांपा' 'अखा', भला भणि 'डूंगर'[14] भाखर ।
'मांडण' 'मंडळा' 'करन', वरण फौजां वीर-व्वर ।।
'रूपा[15]' 'नाथू' 'सलख', 'पात' 'कांवल्ल[16] 'जग्गंमल' ।
'जैतमाल' 'अडबाळ[17]', 'लखा' 'सांडा' वैरस्सल'[18] ।।
एक एक नमै खत्र आगळा, भाला हत्था भड सिहर[19] ।
नव समंद खांण नवसाहसा, राठौडां रिणमल्ल हर ।।१।।

'जोधा'[20] 'सूजा'[21] अणी, अणी 'सूजा'[22] ही 'ऊदा'[23] ।
वड रावत 'वरसींघ'[24], दुरित दुस्सासणं[25] 'दूदा' ।।

---

१ इ. सु । २ आ.इ. वरीयांम । ३ आ.इ. सामंत । ४ आ.इ. सोह । ५ आ. हुआ । इ. हुवा । ६ इ. गिड । ७ आ.इ. राठोडे । ८ आ. पिडी । इ. पिड । ९ आ.इ. गाहीयो । १० आ.इ. थिडंबे । ११ इ. मारु । १२ आ. माझी । १३ इ. मारिका । १४ इ. डूगर । १५ इ. रुपा । १६ आ.इ. काधल । १७ आ. अडवाल । १८ आ.इ. वैरसलि । १९ आ.इ. सेंहर । २० आ.इ. जोध । २१ इ. सुजा । २२ इ. सुजा । २३ इ. उदा । २४ आ.इ. वरसिंघ । २५ आ. दूसासण । इ. दुसासण ।

'करमसिंघ'[१] कळिमत्थ[२], रूक[३] 'राईसिंघ'[४] रढ़ाला।
'वीदा' 'विक्रमाइत्त'[५], 'भीम' 'भारमल' भुजाळा ॥
'सिवराज' अनै 'जोगा' सगह, प्रिथी प्रमांणै प्रग्गडा[६]।
जोधपुर इता जोधां तणा, महण[७] मेर जेवड घडा[८] ॥२॥

कुण कुण कहि दाक्खियै[९], सहू[१०] भेळौ सलखाइण[११]।
जिकै[१२] जोध वरियांम[१३], तिके बत्थह पंचाइण[१४] ॥
'उहड'[१५] 'सींघल'[१६] अभंग, तेर साखा राठोहड।

भाटियां री साखाश्रां री नांमावळी

'जेसो' 'केल्हण'[१७] 'अरजणोत'[१८], भला भाटी खत्र धोहड़ ॥

चोहांण

चोइस[१९] साख चहुवांण हर, 'सोनगिरा'[२०] के 'देवडा'।
ब्रह्मंड[२१] न मावै वीर रस, खडग हत्थ दरगहि खडा ॥३॥

दोनूं तरफ री सेना री वरणण

दूहा

सिळह भडां व्है[२२] कैजमां[२३], गुडि[२४] पाखर गजथट्ट।
सूं[२५] बाधी दखणाधि[२६] दळ, राठौडे रिणवट्ट ॥१॥

दुहुं[२७] दळ हाळोहळ सबळ, दुहुं[२८] दळ घुरै दमांम।
दमगळ मातौ दुहुं[२९] दळां, दुहुं वै[३०] कोस मुकांम ॥२॥

कटकां काइ[३१] संख्या नही[३२], कोई सांहणे न पार।
डेरा दिक्खणियां[३३] तणा, फिरि[३४] धोळा गिरि[३५] धार ॥३॥

---

१ आ.इ. करमसीह। २ आ. कालिमंथ। इ. कलिमथि। ३ आ. रुके। इ. रुक। ४ इ. रंढाला। ५ आ. विकमाइत। इ. वीकभाइत। ६ इ. प्रघडा। ७ इ. महड। ८ इ. घड। ९ आ. दषीयो। इ. दाषीयौ। १० आ.इ. सहु। ११ इ. सलषाईण। १२ इः जिके। १३ आ.इ. वरीयांम। १४ आ. पचाइण। इ. पचांइण। १५ इ. उहड। १६ इ. सीघल। १७ इ. केलण। १८ आ. अरजनीत। इ. अरजणीत। १९ इ. चोवीस। २० इ. सोनिगरा। २१ आ. व्रह्मंड। इ. व्रहमंड। २२ इ. है। २३ इ. केजभ। २४ आ. गुड। इ. गिड। २५ आ. सुं। इ. सु। २६ इ. दषण। २७ आ.इ. दुहु। २८ आ.इ. दुहु। २९ इ. दहू। ३० दुहुअै। ३१ इ. काई। ३२ आ. जही। ३३ आ. दिषणीयां। इ. दिषीणीयां। ३४ इ. फिर। ३५ इ. धौलागिर।

दखणाधा उतराध दिसि[1], अगि व्रजागि[2] वहंत ।
जांणे बांण प्रधान हुइ, जुध भारथ मातंग ।।४७।।

दखणी सेना रो वरणण

छंद मोतिक[3]

दक्खणि[4] सेन खडै जळ बोळह ।
पूठि पवंगां पक्खर रोळह ।।
कैंजम जीण तुरंग में राजित ।
पाखरिया[5] किरि पंख परब्बत ।।१।।

पूठि[6] भिडज्जां आरुहिया[7] भड ।
तिस रुप[8] लेय छतीसे त्रिज्जड ।।
सत्तरि खांन बहुत्तरि ऊमर ।
सीस[9] विराजित[10] मेघाडंबर ।।२।।

वांना[11] ओपै[12] हद्द विहद्दह ।
लाल सपेत स्याह जरद्दह ।।
बैरक चींध[13] धजा गज डंबर ।
नेजै नेजै मीर बहादर[14] ।।३।।

फाबी फौज घडां चतुरंगणि ।
फूळे जांणि पळास क[15] फागणि ।।
जगमग[16] जीण - साळ···मरद्दां ।
जांणे[17] वीज खिवंत जळद्दां ।।४।।

अंबक[18] रोडि रूडै[19] रिण तूरह ।
काइर कंपति रस्सै सूरह ।।
फौज चडी घण थाट घांसाहर[20] ।
एह समुद्र क फाटौ अंबर[21] ।।५।।

---

१ इ. दिसा । २ आ.इ. वृजागि । ३ आ. मोदिका । ४ इ. दषणे । ५ आ.इ. पाषरीया । ६ इ. पुठि । ७ आ.इ. आरुहीया । ८ आ.इ. रूप । ९ इ. सिस । १० इ. विरजित । ११ आ.इ. वाना । १२ आ. ओपे । १३ आ.इ. चीध । १४ आ.इ. बाहादर । १५ इ. पलस । १६ आ.इ. जगमगै । १७ इ. जांणि । १८ इ. अंबके । १९ आ.इ. रुडे । २० आ.इ. घासाहर । २१ आ. अबर ।

खोहड[1] खांन खडे खरहंडह।
मेइण[2] धुंधलियौ[3] व्रहमंडह[4] ॥
नेजा दखणियां[5] दळ अंतर।
जांणे वास पहाडां ऊपर ॥६॥

ऊलटिया[6] दखणाध तणा दळ।
मेघ मंडांण[7] क तारा मंडळ ॥
मांडे फौज गडूंस[8] महिक्कर।
आया थाट 'गजैसी'[9] ऊपर ॥७॥

कवित्त

दळ मेहळ ऊपडै, भमर रज डम्मर अम्मै।
असंख बांण आतस्स, गयण पंखारव गम्मै ॥
पसरि पंख है पाई[10], इळा[11] उड्डु[12] आधंतरि।
जरद लाल इक[13] स्याह, वरन वांना विःबहुथरि[14] ॥
संपेखि तीड दिक्खण सुहड[15], इडग मेर माझी अनड।
'गजसिंघ' मात केही गिणै[16], ग्रह समूह[17] ग्रीधळ गुरड ॥१॥

महाराजा गजसिंघ रो बरणण

गज हैमर पक्खरै, सिलह[18] सुहडां[19] पहरावै[20]।
आप कवच ओपवै, सत्रै[21] संग्रांम रचावै ॥
डाब लोह खटत्रीस[22], आभ उपाडै ऊंडळ।
तांणि निळै तिस्सलौ, भाग तीजै[23] ग्रहि साबळ ॥
आरुढ़ हुए 'जै' नांम[24] असि, रवि ऊगमणि परगडै।
'गजसिंघ' दमांमा[25] गाजतां, चढ़ि[26] आयौ तब चापडै ॥२॥

---

१ आ. वोहड। इ. षोहण। २ आ. गइण। ३ इ. घुघलियौ। ४ आ. व्रह्मंड। इ. वरहमंड। ५ आ. दषिणीया। इ. दषणीयां। ६ आ.इ. उलटीया। ७ आ. मांडांण। ८ इ. गडुस। ९ आ. गजेसी। १० इ. पाई। ११ इ. ईला। १२ आ.इ. उडे। १३ आ.इ. एक। १४ आ. विहपरि। इ. विवहपरि। १५ आ.इ. सोहड। १७ इ. गीणै। १७ इ. समुह। १८ इ. सीलह। १९ आ.इ. सोहडां। २० आ.इ. पैहराव। २१ इ. सूत्रि। २२ अ.इ. षटत्रीस। २३ आ.इ. त्रीजै। २४ आ.इ. नाम। २५ आ. दमांमां। २६ इ. चडि।

गाथा

इक्को[1] सहस-किणो, किति मेराइ[2] अंधकारस्य।
संपेख[3] दक्खण सेना, कमधज्ज हसियं कोपि ॥१॥

जुध वरणण

छंद हणूफाळ

दखिणाध दळ असवार । चाळीस दूण हजार।
चापडै[4] खेत चडेउ[5] । असमांण फौज अडेउ[6] ॥१॥

राठौड रिणवट बद्धि । जमदूत निहटा जुद्धि।
हैं कळळ हूकळ[7] हुब्बि । दम्मांम दोमझि घुब्बि ॥२॥

विपरीत विस्सम घात । किरि[8] बांण वज्रहै पात।
वर जाग बूंग वहंति । किरि अग्गि द्रस्टि हुवंति ॥३॥

धोकार वाजि धनंख । उड्डंति तीर असंख।
हैकंपि हुइ[9] व्रहमंड[10] । गरजंति गुण कोमंड ॥४॥

आतस्स घोर अंधार । लै[11] कार मांर संधार।
घण चक्र उत्तरियांणि[12] । कुरु-खेत भारथ जांणि ॥५॥

वाजंति नाळ निहाउ । किरि कूत वीज[13] सिळाउ।
ऊड्डंति आगि दवंग[14] । नाखत्र जांणि निहंग ॥६॥

खिवि पटा खंडा धार । झिळमळै[15] झळ हळ सार।
रिण रचै सिंधू राग । खिळ मिळै नागा खार ॥७॥

है थाट हैमर हींस[16] । गडडाट गैमर क्रीस।
गड़गडै[17] त्रंबक गोडि । रिण तूर वज्जै रोडि ॥८॥

गुण बांण सींधणि[18] गाढ़ । वाहंत्ति तांणक वाढ़।
बंदूक[19] वांणे मार । भालोड भंग भंमार ॥९॥

---

१ आ. इको। इ. सको। २ आ.इ. मंराइ। ३ इ. सेपेष। ४ आ.इ. चापडे। ५ आ.इ. चडेऊ। ६ इ. अडेऊ। ७ इ. हुकल। ८ इ. फिर। ९ आ.इ. हुई। १० आ.इ. व्रह्मड। ११ आ.इ. लो। १२ आ. उतरिपांणि। इ. उतरियांणि। १३ इ. विज। १४ आ.इ. देवग। १५ आ. मिल मले। इ. झिलमिले। १६ अ. हीस। १७ आ. गडगडे। इ. गड गडं। १८ आ. सीधणि। १९ आ.इ. बंदूष।

रिण-ताळ खाळ रगत्त । आरांण हू[1] आव्रत्त[2] ।
जम[⁗] जाळ जूटै[3] काळ । करि-माळ झाळ कराळ ॥१०॥

खळकंत स्रोणी खाळ । पावस्स करि पर-नाळ ।
धाराळ धोम धडक्क[4] । कळ ळति कोम कडक्क[5] ॥११॥

निहसंति जोध नत्रीठि[6] । रिण रूक वापरि[7] रीठ ।
बे निहस सेन निसंक । किरि रांम[8] रांमण[9] लंक ॥१२॥

महाराजा गजसींघ री विजय

कवित्त

महिकर दळ रक्खियौ[10], कोट[11] मंडै[12] केवांणां ।
अंबर[13] वूठी[14] अगनि[15], बूंद घण गोळा[16] बांणां ॥
बूंदेलो वरसिंघ[17], 'रतन' नह[18] आयो हाडौ ।
'चांदौ' सीसोदियौ[19], फिरै[20] नह[21] फोजां[22] आडौ ॥
'दाराव-खानै[23] नायो मुदत, अरक अंत[24] आयौ खरै[25] ।
द्वौ[26] पहर[27] जुद्ध दखणाध सुं[28] कीयौ जुडै जोधपुरै[29] ॥१॥

दळा-कार दखणाधि[30], खपे खीटा पळ खुट्टा[31] ।
जादव राइ[32] सारखा, अणी दस आठ पलट्टा ॥
रूपे रूप चाडावि, पडै[33] 'आसौ' पिडि संगम ।
अखैराज चहुवांण, पडै[34] आगळी पराक्रम ॥
पांच सै खेत दखणी[35] पडे, रिण वंकै दिन पध्धरै ।
गज थटां भांजि जीते 'गजण', महाजुध्ध मंडोवरै ॥२॥

---

१ आ. हुई । इ. हुइ । २ आ.इ. आव्रत । ३ इ. जुटै । ४ आ.इ. धरेक । ५ आ. टक । इ. करेक । ६ इ. नत्रीठे । ७ आ. वापिरि । ८ आ.इ. राम । ९ आ.इ. रावण । १० आ.इ. राषीयो । ११ इ. कोटि । १२ आ.इ. भडे । १३ इ. अवरि । १४ आ. बूठां । इ. वूठो । १५ आ. आग । १६ आ.इ. गोलां । १७ इ. वनसिंह । १८ इ. नहि । १९ आ इ. सीसोदीयो । २० आ.इ. फिरे । २१ इ. नहि । २२ आ. फोजा । इ. फोजां । २३ आ.इ. दाराबषांन । २४ इ. जंत । २५ अ. षडै, आ. षडो । २६ आ. दोइ । इ दोय । २७ आ.इ. पोहर । २८ आ.इ. सुं । २९ आ. जोधपुरं कीयो जडै । ३० आ. दणाधि । ३१ आ. षुटा, इ. षूटा । २३ इ. राय । ३३ आ.इ. सारिषा । ३४ आ.इ. पडे । ३५ आ.इ. दणीयर ।

दूहा

दळ भंजे[1] दिखणाधरा[2], की 'गजबंध' हटक्क ।
गा नरसिंघ संपेखियौ[3], भूतां[4] तण कटक्क ॥१॥

दळ भंजे डेरा फुरळि, गमि दखणी दहवाट ।
गज केसरी[5] घ्रांसाडियौ[6], दोइणां[7] वाळै दाट[8] ॥२॥

जूमंग्गे[9] जूए मुहे, हुए[10] दखणि[11] जळा[12] हीण ।
किरि वरखा रित[13] चालिया, घणहर वूठै लींण ॥३॥

वांन वधारे[14] कमधजां, आधारे असमांन ।
'गजबंधी' नव साहसै, भागा बारह खांन ॥४॥

चौपाई

'गजबंधी[15] ज रहै[16] जसबोल । दीना जैत दमांमां[17] ढोल ।
दक्खण[18] फौजां[19] चहूं[20] पास । वद्दल[21] फट्टा[22] जांणि[23] अकास ॥१॥

दखणी छंडि दिसा दखणांध । आया फिर सांमा उतराध ।
जोधपुरै[24] जीता संग्रांम । तब चहुं कोसे किया[25] मुकांम ॥२॥

'पुनः अंबर रौ आक्रमण'

दूहा

दक्खणियें[26] घेरौ[27] कियौ[28], कटके[29] कोइ[30] न थग्ग[31] ।
अन घ्रत[32] खड ईंधण[33], दुलभ[34] चिहु दिस रोके मग्ग ॥१॥

लूंण[35] कपूर समांन थिऊ, अन सोव्रन[36] सम भाग ।
तेल थयौ मुरहेळ[37] सम, हय सुहडां[38] थयु[39] आग ॥२॥

---

१ इ. भांजे । २ आ.इ. दषणाधरा । ३ आ.इ. सपेषीयौ । ४ आ.इ. भुजां । ५ इ. केहरि । ६ आ. घ्रासाडीयौ । इ. घुंसाडीयौ । ७ इ दोयणा । ८ द्राट । ९ आ.इ. जूमगे । १० इ. हुई । ११ आ. दषणी । इ. दाषिणी । १२ आ. जली । इ. जल । १३. इ. रुत । १४ इ. वाधारे । १५ आ. गजबधी । १६ आ. रहे । इ. षटै । १७ आ. दमामा । इ. दुमामा । १८ आ. दषण । १९ आ.इ. फौज । २० आ.इ. चुहुं । २१ आ.इ. वदल । २२ आ.इ. फटा । २३ इ. जांण । २४ आ. जोधपुरै । २५ आ.इ. कीया । २६ आइ. दषणीये । २७ आ.इ. घेरो । २८ अ.इ. कीयौ । २९ आ.इ. कटक । ३० आ. कोई । ३१ आ. थठा । ३२ आ.इ. घृत । ३३ आ. ईंधण । इ. इधण । ३४ आ.इ. दुलंभ । ३५ आ. लुंण । ३६ इ. सोवंन । ३७ आ.इ. सुरहेल । ३८ आ. इ. सोहडां । ३९ आ.इ. थयौ ।

बादसाही सेना में गजसींघ रो हरावळ मैं होणौ

दोळौ दिल्लीवै[1] दळां, ओळौ मंडै[2] ओट[3] ।
जोधा[4] रिणमल्लां[5] कियो[6], भालां हूंदो[7] कोट ॥३॥

आतस बाजी गाडियां[8], आराबा अनमंध ।
गड्डै गोळी[9] नाळियां[10], किरि लहरी र व[11] सिंध ॥४॥

राठोडै[12] रिण सूंत्रियो[13], सू[14] दखणाध दळांह ।
जोगण-पुर[15] रौ[16] जूवटौ, माथै जोधपुरांह ॥५॥

तवियौ[17] तुरकां हिंदुवां[18], असपति[19] दळ अणियांह[20] ।
चालौ लें चतुरंग दळ, डेरै[21] दक्खणियांह[22] ॥६॥

खांन वरावा[23] खडकियौ[24], ले मत्थै भर भार ।
'गजण' कटक्कां हुई[25] मुहरि, कळि मथ्थण[26] जोधार ॥७॥

कवित्त

चड खांन "दाराब"[27], रहम दा दळ निय[28] जांमल ।
सूरसिंघ[29] कमधज्ज, चढे[30] राजा नूप[31] जंगळ ॥
राउ[32] हाडौ[33] "रतन्न", चढे[34] चंदौ खूमांणिह ।
राजा वरसिंघ दे, चढे[35] सेनै[36] महिरांणह[37] ॥
महम्मद चढे[38] बहलोल खां, औ बै पिट्ठांण[39] अणी ।
चालिया[40] चडे चतुरंग दळ, मुहि दे मंडोवर[41] धणी ॥१॥

घुरे भेर दम्मांम, नाद गरजे[42] नीसांणह ।
गडडि[43] मेघ गयणाग[44], जांण कूतह[45] कल्यांणह[46] ॥

---

१ दीलीचै । २ आ.इ. मंडे । ३ आ. ओट । ४ आ. जोधा । ५ इ. रीणमलां । ६ इ. कीयो । ७ आ. हुंदो । ८ आ.इ. गाडीयां । ९ इ. गोला । १० आ.इ. नालीयां । ११ लैहरी र व । १२ अ.आ. राठोडै । १३ आ.इ. सूत्रीयो । १४ आ.इ. सुं । १५ अ. जोगणीपूर । इ. जोगणिपूरी । १६ आ. रो । १७ आ.इ. तवीयो । १८ आ.इ. हीदुवां । १९ इ. असिपते । २० आ.इ. अणीयांह । २१ आ. डेरे । २२ आ.इ. दषणीयांह । २३ आ. वारावा । इ. वरावां । २४ आ.इ. षडकीयो । २५ इ. हूइ । २६ इ. मथण । २७ इ. वाराव । २८ आ. नीय । २९ आ. सुरसिंघ । ३० आ. चडे । ३१ आ. नूप । इ. नृिप । ३२ आ.इ. राव । ३३ आ. हाडो । ३४ आ.इ. चडे । ३५ आ. चडे । ३६ आ.इ. सोने । ३७ आ. महिराणह । ३८ आ.इ. चडे । ३९ आ. पठाण । इ. पठांण । ४० आ.इ. चालीया । ४१ आ. मंडावर । ४२ आ.इ. गरजे । ४३ आ. गडडी । इ. गडिड । ४४ आ. गयणां । ४५ आ.इ. कतक । ४६ इ. कल्याणह ।

धज पताख फरहराट, लंकी[1] गज आलम ढल्लां ।
घटा रूप गज फौज, दंति[2] किरि पंति बुगल्लां ।।
पँमाळ गोम पक्खर गहण, खुरासांण[3] बैठो खिडै[4] ।
दिखणाध[5] सीस उतराध[6] दळ, आयौ अल्लक ऊपडै ।।२।।

गाथा

रयणी भूखण[7] चंदो, आकास भूखणो[8] भांणो ।
भूखण भूतळ[9] इंदो, भूखण[10] साह फौज "गजसिंघो" ।।१।।
दुल्लह[11] राउ[12] राठौड, दखण घणा[13] कांम मैंमती[14] ।
कारण पांण ग्रहणो, सांम्है ले मुक्कियौ[15] बांण ।।३।।

जुध वरणण

छंद रैंड़की (रैंणकी)

गरजंति घनख गुण बांण बरण घण ।
　　　　आग अकारण उडुवियं[16] ।
गज थाटां गहण गणण गयणंगण ।
　　　　सोक सणण भरपूर[17] थियं[18] ।।
मंगळ झळ विमळ लगै रवि मंडळ ।
　　　　तांमस[19] हूकळ कळळ तुरै ।
लळ वळ पुंज सुंड झळळ दांतूसळ ।
　　　　धिख धारुजळ ढोल घुरै ।।१।।
असमर झट झपट विकट थट आवट ।
　　　　गो[20] गाहट थट गरट गहै[21] ।।
ऊकट थिय[22] काट सुभट लख आरट ।
　　　　खळखट रिणवट खडग वहै ।।

१ इ. लिक । २ इ. दंत । ३ आ. षुरासाण । ४ इ. षिरे । ५ अ. दषणाध । ६ इ. उतांराघ । ७ इ. भुषण । ८ इ. भुषणो । ९ इ. भूंतल । १० इ. भुषण । ११ आ. दुलह । इ' दुलइ । १२ इ. राव । १३ इ. घणां । १४ इ. मैंमती । १५ आ.इ. मुकीमो । १६ आ.इ. उडबीयं । १७ आ. भरे-पूर । इ. सर-पूर । १८ आ.इ. थीयं । १९ आ.इ. तामस । २० आ.इ. गो । २१ आ.इ. गहे । २२ आ.इ. थीयो ।

घडहडि[1] धक धोम वळिक[2] खग घडि घडि ।
रावत वडि वडि रोस चडै ।
गडि गडि नीसांण गयण[3] किरि[4] गडि-ग्रड[5] ।
खांडा खडि खडि खाट खडै[6] ॥२॥

गयंदां ढळ ऊथळ - पथळ गयंडोथळ[7] ।
मूळ नहीं सळ दुभ्ळ मुडै ।
रत्तळ भ्ळ खखळ बखळ खळळ रिणरीधळ ।
जोध रिणमल[8] अपल जुडै ॥
कमधज भुज निमज सकज सुसुपह् कज ।
राखै रज रिणतूर[9] रुडै ॥
दम्मांमां गरज वहै व्रज दोमज ।
गज पाताडक[10] भुरज गुडै ॥३॥

तूटै[11] भड निवड त्रिजड भ्ड तिमछै ।
वाढ[12] अंतेवड[13] विहुंड वपै[14] ।
छूटंती[15] रुहिर नडड[16] दड वड छिळि ।
धारां धजवड सुहड[17] ध्रपै[18] ।
खळ हळ रत खाळ भ्बकि खग भ्ळ-हळ ।
कंठल वळवळ वीज कळां ।
कळ ऊकळ[19] हुए[20] गळोव(ळ) कंदळ ।
आफळ धाया उभै दळां ॥४॥

दखणी सेना री पराजय

कवित्त

सोर धीर……सम्मूह्[21], बांण ऊच्छळै वळंता ।
वहै आग वरजाग, वोम किरि[22] वीजळ लंता ॥

---

१ इ. धडि धडि । २ इ. वालिक । ३ आ. गयंण । ४ आ. किरी । ५ आ.इ. गडीग्रड । ६ आ.इ. षडे । ७ आ.इ. गडोथल । ८ इ. रिणरण । ९ इ. तुर । १० इ. षाताडक । ११ आ.इ. तुटै । १२ आ. वाट । १३ इ. अंत्रेवड । १४ आ.इ. वपे । १५ आ.इ. छूटंति । १६ आ.इ. दडड । १७ आ.इ. सोहड । १८ आ. अंपे । इ. ध्रपे । १९ आ.इ. उकल । २० आ.इ. हूए । २१ आ. समूह । इ. समुह । २२ इ. कीरि ।

हुए मीर संघार, सोक सर डूर विछूटै ।
प्रळै काळ आव्रत[1], फौज फौजां मुहि जुट्टै[2] ॥

गर्जसिंघ भडां किम्माड थिउ[3], कीए[4] आगळि कमधजे ।
डेरा पिमूकि[5] गा[6] दक्खणी, किरि पनंग कांचू[7] तजे ॥१।

दळ उत्तर दिक्खणी, उभै आहुडै[8] जियारां[9] ।
अगन बांण घमसांण, घांण[10] ऊतरै तियारां ॥
गोअरधन भौ[11] जसू, पडे राउ[12] रयण सहवर[13] ।
बूंदी[14] पह मछरीक, खडग वाहै खडग्गधर ॥

सातसै पडे पल्ला[15] सुहड[16], उल्लाई भड एतडा ।
कमधज्ज जुध्ध महकर[17] कियौ[18], बे पतिसाहां प्रग्गडा[19] ॥२॥

करि संग्राम सु[20] दखण, तुरक हिंदू[21] बाहुडिया[22] ।
है पक्खर परहरे, गज्ज किरि गिरिवर[23] गुडिया[24] ॥
असि वागां ऊपडी, फौज फारक्कां धाई ।
दळ दखणी ऊलटा, ऊब[25] आसाढ़ क आई ॥

अगनिमै बांण छूटा असंख, वळी वीढ चिहुंवै[26] वळां[27] ।
पछिवांण[28] हुवौ[29] पूठी[30] रखौ, "गजण" तांम[31] दिल्ली दळां ॥३॥

नीमडियौ[32] भारत्थ, कथ राखी कमधज्जे ।
किया[33] जोध खळहांण, भार पडतौ ग्रहि भुज्जे ।
पच्छवांण[34] पग्गार[35], हुंग्रौ[36] राजा मंडोवर[37] ।
रुडै[38] ज़ैत रिण तूर(फ), वडौ जीतौ जुडि जागर ।

---

१ आ. आवृता । इ. आवृत । २ इ. जुटे । ३ इ. थीउ । ४ इ. कीयों । ५ आ. पैमकि । इ. पैमुक । ६ इ. ग्मा । ७ इ. कंचू । ८ आ.इ. आहुडे । ९ इ. जीयारां । १० आ. घाण । ११ आ.इ. भो । १२ आ. राऊ । १३ आ.इ. सहोवर । १४ आ. बुंदी । १५ आ.इ. पैला । १६ आ.इ. सोहड । १७ इ. महिकर । १८ आ.इ. कीयो । १९ प्रघडां । २० आ. सुं । २१ आ.इ. हींदु । २२ आ. बाहुडीया । इ. बाहूडीया । २३ आ.इ. गिरवर । २४ आ.इ. गुडीया । २५ आ.इ. उब । २६ आ चिहुवें । २७ आ. वुलां । २८ आ.इ. पछिबाण । २९ आ. हूओ । इ. हुओ । ३० आ. पूठि । इ. पुठि । ३१ आ. ताम । ३२ आ.इ. नीमडींयो । ३३ आ.इ. कीया । ३४ आ.इ. पछबाण । ३५ इ. पगां । ३६ आ.इ. हूओ । ३७ इ. मंडोवरा । ३८ इ. जुडं ।

दळकार हठै दखणाध रा, दिल्ली फौजां निरबही[1] ।
किरि जांण अपूठा[2] बाहुडै[3], जांन[4] वौलाए मांडही ॥४॥

हे पलांण न ऊतरे, रहै दळ चाके[5] चडिया[6] ।
मिळै कोट मेवट्ट, घण घट घाए[7] घडिया[8] ।
गयण गीध ढक्कियौ[9], खिवे[10] असमर ऊबांणा[11] ।
वहै बांण विपरीत, ...सोक[12] जांणै सीचांणा[13] ।

जोधार अहोनिस जाळवै[14], जीण-सांल डीले जडी ।
तिण वार हुवौ[15] हिंदू[16] तुरक, कोई गजसिंघ समवडी ॥५॥

उतराधी दक्खणी, कटक[17] बै वै आरूढा[18] ।
कापड चोपड खपै, अन्न खड ईंधण खूटा ॥
प्रळै काळ पेखियौ[19], वांडि करकां[20] मंडांणी[21] ।
जोधपुरां जळ चडे, बियां[22] ऊतरियौ[23] पांणी ॥

देवगिरि[24] अन्नै जोगणि पुरां, सबळौ भारथ सूत्रियौ[25] ।
महिरांण महिक्कर[26] मत्थतां[27], च्यार मास विग्रह कियौ[28] ॥६॥

महिकर घेरौ[29] सबळ, कियौ[30] दखणाधि कटक्कां ।
गढ़ दुरंग घेरियौ[31], प्रजा भागी परिचक्कां[32] ॥
नको[33] प्रांण विन्नांण, नेस फीका[34] खुरसांणी ।
गयणंगण[35] डोलियौ[36], सीम चंपी सुरतांणी ॥

राठौड राउ रोहै रिणह, खडग दाढ खळ खंडरै[37] ।
वाराह सिंध बाळा-पुरह, आयौ दळ आगळ करे[38] ॥७॥

---

१ आ.इ. निरवही । २ इ. अपुठा । ३ आ.इ. बाहूडे । ४ आ इ. जान । ५ आ. चाके । ६ आ.इ. चडीया । ७ आ. घाऐ । ८ आ.इ. घडीया । ९ आ. ढकीयौ । इ. ढांकीयौ । १० आ.इ. षिवै । ११ आ.इ. उबांणा । १२ आ.इ. सौक । १३ इ. सीचाणा । १४ आ. जालवे । १५ आ. हूवौ । १६ आ.इ. हींदू । १७ इ. कटैक । १८ इ. आरुढा । १९ आ.इ. पेषीयौ । २० आ. करंकां । २१ इ. मंडाणी । २२ आ.इ. बीयां । २३ आ.इ. उतरीयौ । २४ इ. देवगिर । २५ आ इ. सुतीयौ । २६ आ.इ. महिकर । २७ आ. मथातां । २८ आ.इ. कीयौ । २९ इ. घेर । ३० आ.इ. कीयौ । ३१ आ.इ. घेरीयौ । ३२ आ.इ. परिचकां । ३३ आ.इ. नका । ३४ आ.इ. सीफां । ३५ आ.इ. गयणांगण । ३६ आ.इ. डोलीयौ । ३७ अ.आ. षडरे । ३८ अ. करै ।

चडे बेल वरियांम[1], सुजळ ते आगळ चंचळ।
गरजि नाद गंभीर, रोडि रिणतूर[2] त्रंबागळ[3] ॥
असंख फीण ओपत्ति[4], बहुत चीधां बैरक्कां।
मारवाड मरजाद, भडां अनडां मारक्कां ॥
अणतांघ[5] कूंत[6] असमर भमर, कच्छ मच्छ कूरम सबळ।
"गजबंध" मंडांणौ मेरगिर, सपतसिंघ[7] दखणाध दळ ॥८॥

नित्त जुध्ध मंडिजै, नित्त सिलहां पहिरीजै[8]।
नित्त तंग तांणिजै, नित्त कैकांण[9] कसीजै ॥
नित्त खडग खडखडै, नित्त पळ-चरां ध्रवीजै[10]।
नित्त जोध निहसंति, नित्त गज दळ गाहीजै[11] ॥
नित्त हुवै प्रवाडा नव नवा, नित राखीजै अच्चडां।
राठौड रिमां जड धोइवा, धारां धोवै धजवडां ॥९॥

दखणी सेना रो फेर आक्रमण

छंद मैणाउळी

दक्खणी सेन आया अबाहं।
पक्खरे तुरी पहिरै[12] सनाहं।
फाबि चतुरंग फौजां अचाळं।
छपन कोडी फिरें मेघमाळं ॥१॥

मछरियौ[13] "गजपती" मेर माझी[14]।
पल्लिवा प्रज्ज राठौड प्राझी।

जुध वरणण

महाराजा गजसींघ रो हरावळ में होणौ

सुहड[15] साखेत[16] सगळी सम्रोधा।
हुआ हरवल्ल रिणमल्ल जोधा ॥२॥

---

१ आ.इ. वरीमांम। २ आ.इ. रिणतुर। ३ आ. त्रंबिगल। इ. त्रंबागलि। ४ आ. ओपति। ५ आ. अणताथ। ६ आ.इ. कूत। ७ आ.इ. सषत-सिंघ। ८ आ.इ. पहीरीजे। ९ आ.इ. केकांण। १० आ.इ. घबीजै। ११ आ.इ. गाहिजै। १२ आ.इ. पहरै। १३ आ.इ. मछरीयो। १४ इ. मांझी। १५ आ. सुहंड। १६ आ.इ. साषेत।

आंमहो सामंहा छूटि बांणं ।
घड घडै[1] घोम घुबि[2] आसमांणं ।
गड गडै नाळि छूटंति गोळा ।
जांणक उडंति मेहे किलोळा ॥३॥

मारू ए[3] दखणि ए[4] जुद्ध मातो ।
त्रिविध[5] घड ऊछळै लोह तातो ।
छूटि[6] कोवंड[7] गुण बांण[8] गाजै[9] ।
फारकां मारिकां हाक वाजै ॥४॥

काळ भैरव रुद्र भद्र काळी ।
हरखि हसि दीध नारद्द ताळी ।
दखण सूं दियौ[10] राठौड बत्थां[11] ।
रवी[12] रह तांण[13] आकास[14] रत्थां[15] ॥५॥

रूक[16] आवाहिया[17] दैवराए ।
गाजि व्रहमंड[18] घाए निहाए ॥
खीजिया[19] जोध वाहै खडग्गं ।
विसरि किरि जीह वासिग्ग[20] नग्गं[21] ॥६॥

वहै[22] विपरीत वेळा करारी ।
कूंत किरमाळ नेजा कटारी ॥
घजवडां धार रुळ[23] रुंड मुडं ।
विहंड फड वाढ़ खंडह विहंडं ॥७॥

महाराजा गजसींघ री विजय

राउ राठौड रिणताळ जीतो ।
विढे[24] पतिसाह प्रिथमी वदीतो ॥

---

१ इ. घडहडे । २ इ. घुवि । ३ आ. ऐ । ४ इ. ऐ । ५ आ.इ. त्रिबिधि । ६ आ.इ. छुटि । ७ अ. कोमंड । ८ आ. बाण । ९ इ. गजे । १० आ.इ. दीयो । ११ इ. बथां । १२ आ.इ. रवि । १३ इ. रहे । १४ आ. आकारथं । १५ आ. रथं । १६ अ. रुक । १७ आ.इ. आवाहीया । १८ आ. बृह्मंड । इ. बृहमंड । १९ आ. षीजीया । इ. षिजीया । २० आ. वासिग । इ. वासग । २१ आ.इ. नगं । २२ आ. वहे । २३ अ. रुळि । २४ इ. विडे ।

लडण "गजसाह" असमांन लग्गे ।
अरध लख दखणी तांम[1] भग्गे ॥८॥

कवित्त

दखिण खेत कुरुखेत[2], महा जुध[3] भारथ मत्तै ।
भारि ओडि भुवडंड[4], बाथ भरतै निहसत्तै ॥
इग्यारै खोहणी, खांन बारैह विभाडै ।
अरि उलाळ रिणताळ, गज्ज गयणाग भमाडैं[5] ॥
कमधज्ज गरजि कंठीर जिम, महाकोप[6] चडियौ[7] मछरि[8] ।
गंजसिंघ तेग वाही गजां, बाला-पूरि बलाल वरि ॥१॥

दक्खणवै दळ असंख, चिहूं[9] पासै[10] चतुरंगह ।
गडडि नाळि गाडियां[11], बोल पडसंद[12] निहंगह ॥
ढोल दमांमा[13] घुबै[14], हुवै[15] है-थाट हमल्लै ।
घरणि[16] घूज[17] धम हमे, सपत पंयाळ[18] दहल्लै ॥
खुरसांण लंक पती[19] खहण, खेघ वेध वूहा खडग ।
पतिसाह दळां पाधर हुग्रौ[20], राड रोह मुर मास लग ॥२॥

गुण धनख धौकार, भेर नीसांण निनद्दह[21] ।
ईळा पुडि ऊपडै[22], विकट वंकी सरहद्दह ॥
घोम झाळ[23] घड हडै[24], प्रळै पाक दरस्सै ।
अगनि बांण पडि वूंद[25], जांण व्रहमंड[26] वरस्से ॥
चौफेर फिरै[27] चतुरंग दळ, घण सरूप त्रिसरी[28] घडां ।
दळ थंभ दखण आडौ डहै, भड किमाड उत्तर भडां ॥३॥

---

१ आ.इ. ताम । २ इ. कुरुषेत्र । ३ आ.इ. माहाजुध । ४ इ. भुजडंड । ५ आ.इ. भमाडे । ६ आ.इ. माहा कोप । ७ आ.इ. चडीयौ । ८ आ.इ. मछिरि । ९ आ.इ. चिहुं । १० आ.इ. पासे । ११ आ.इ. गाडीयां । १२ आ.इ. पडसद । १३ आ. दमांम । १४ आ. घुब । इ. धुवे । १५ आ.इ. हुवे । १६ इ. घरिण । १७ आ. घुज । इ. घुजि । १८ आ. पयाल । इ. पायाल । १९ आ. लकपंती । २० आ.इ. हूवौ । २१ आ.इ. निनदह । २२ आ. उपाडे । इ. उपडे । २३ अ. धोमझाल । २४ आ.इ. घदहडे । २५ आ.इ. बुंद । २६ आ.इ. वृह्मंड । २७ आ.इ. फिरे । २८ आ. त्तिसरी । इ. तिसरी ।

दुजड दांत आळाय, आग दवंगे उडंते।
पारध्धी पाडतौ, तुंड उप्पाडे कूंते[1]।
हेडवतौ है-थाट, किये[2] मज्जीठे कम्मळ।
उर आगळ घातियै[3], डार सुरतांण तणै[4] दळ।
पूरणा नदी पांणी[5] पियै[6], रोस चईनौ[7] रठ्वड[8]।
वाराह सिंघ आयौ विढे, साजै नाद अभंग भड ॥४॥

दूहा

सांड त्रिसिंघ अखाड-सिंघ, पौरिस[9] जोघ प्रचंड।
तोडर बांधे आडियौ[10], "गजबंधी" बळि-वंड[11] ॥१॥
पाधारे ब्रांहान-पुर[12], साथ स-जूभ्रै पास।
राजा चमर ढुळावियौ[13], पित हुंदै[14] आंमास[15] ॥२॥

विजय प्राप्त कर महाराज गजसींघ रो बुरहानपुर में आगमन

कवित्त

ब्रांहन-पुर[16] "गजपती"[17], आवि बैठो आंमासै[18]।
खट दूण आदीत[19], तेज आंणणि आभासै ॥
धमळ ग्रेह वर तरण, धमळ सिरि[20] मंगळ गाए।
वेद मंत्र अभिषेक, सयण[21] आणंद ज थाए ॥
जैकारबिंदं कोळाहळह, कमधज्जां ग्रह[22] जस कुसळ।
चाहंत[23] प्रजा ओटै चडी, च्यार कोस चतुरंग दळ ॥१॥

फेर बुराहान पर घेरो

के हबसी कन्नडा[24], केइ[25] पाईक फरीधर।
के राजा के राव, केई[26] रावत्त बहादर ॥

---

१ आ. कूत। २ आ.इ. कीयौ। ३ आ.इ. घातीयौ। ४ आ.इ. तणै। ५ आ.इ. पाणी। ६ आ.इ. पीयै। ७ आ. चईतौ। ८ इ. राढवड। ९ आ. पौसि। इ. पौसी। १० आ.इ. आडीयौ। ११ आ.इ. बिलवंड। १२ आ. ब्राहन पुर। इ. वृाहन पुर। १३ अ.आ. ढलावीयौ। १४ आ. हदै। १५ इ. अैमास। १६ आ. ब्रांहन पुर। इ. वृांहन पुर। १७ आ. गजपति। इ. गजपत। १८ आ. आमासे। १९ इ. आवधीत। २० इ. सिर। २१ इ. सघण। २२ अ. ग्रह। २३ अ.आ. चाहत। २४ इ. कंनडा। २५ इ. केई। २६ इ. केइ।

गिणतां लाभै ग्यांन, न को[1] घोडां असवारां ।
पार न को पायदळां, खिडे खोहण खंधारां[2] ॥
सुरतांण खांन मीयां[3] मिलक, कुण जांणे भड केतडे ।
दुरवेस फौज दखणाधरी, असणि जांणि करसण पडै[4] ॥२॥

सबज लाळ सप्पेत[5], वरण[6] पीतंबर वांना[7] ।
तुरै[8] बंध गजगाह, चडौ[9] असवार दिवांना[10] ॥
सेना[11] चतुरंग मै, छोळ[12] दरियाव[13] क छिल्लै ।
फौज रूप फाबंति[14], वसंत वणराइक[15] फुल्लै[16] ॥
गै-थाट गुडै[17] है, पक्खरे कससे[18] कोरण तेवडा ।
उतराध दळां सिरि[19] ऊपडै[20], घटा टोप दक्खण[21] घडा ॥३॥

ब्रांहनपुर[22] घेरियौ[23], कटक दखणाधी आए ।
गोधांम[24] कंदल हुए[25], दुंद दमंगळ उट्ठाए[26] ॥
फिरै[27] भूळ नेजाळ, हमस है पाए बाजी ।
हम्मीरां हिंदुवां[28], रही राठौडां बाजी ॥
दिसि निहंग बूंग[29] उड्डै दवंग, अगन[30] बांण[31] उड्डै बहत[32] ।
आवंत मलैतर उड्डिया[33], अहिक पंख मिण संजुगत ॥४॥

खांन खांना रौ महाराजा गजसींघ नू बिरुदाणौ

सोबै साहिब सरद[34], खांन खांना दळ मांही ।
"गजबंधी" पडगरै[35], वडौ कमधज्ज वडां ही ॥
तूं राजा रिणखंभ, धीर दळ थंभ धराधर ।
नव कोटी[36] सै धणी, तेरै साखां[37] उज्जागर ॥

---

१ आ.इ. न को । २ इ. षंधारा । ३ इ. मियां । ४ आ.इ. पडे । ५ आ.इ. सपेत । ६ आ.इ. वणे । ७ आ. वांनां । ८ आ.इ. तुरे । ९ इ. चडे । १० आ. दीवांना । इ. दिवानां । ११ इ. सैन । १२ आ. छोल । १३ आ.इ. दरीयाव । १४ इ. फाबती । १५ आ.इ. वणराई । १६ आ.इ. फूलै । १७ आ. गुडि । १८ इ. कसठे । १९ इ. सिर । २० आ. उपडं । २१ इ. दषण । २२ आ. ब्रांहन पुर । इ. वृांहन पुरी । २३ आ. घेरीयो । इ. थेरीयो । २४ आ.इ. गोधम । २५ आ.इ. हूए । २६ आ.इ, उठाए । २७ आ.इ. फिरे । २८ इ. हींदुवां । २९ आ. बूग । इ. बूंग । ३० इ अनंगन । ३१ आ. बाण । ३२ इ. बहुत । ३३ आ.इ. उडीया । ३४ अ.आ. सरब । ३५ आ.इ. पडगरे । ३६ इ. नव्र कोटा । ३७ आ. साष ।

आदीत अमूंझी[1] छीक[2] ज्यूं[3], जांणोजै जोधह पुरा[4]।
भरभार आज थारै भुजे[5], सहू[6] काज सुरतांणरा ॥५॥

महाराजा गजसींघ रो जोस में आणो

"गजबंधी" ऊठियौ, तेग भूडंड उभारै।
किरि पाखरणो[7] सिळह, सुहड[8] सोह[9] बापुकारे[10] ;
"जै" तुरग्ग[11] आरूढ़[12], हुए[13] कमधज्ज महाभड।
पडे चोट नीसांण, पडे पडसद्दा अन्नड।
सम्मूह चडे सुरतांणरा, कटक बंध कोअण सघण।
जांणियौ[14] तांम[15] तापी नदी, दे अण-मांन[16] आयौ महण ॥६॥

सेना रो बरणण

छंद दुडिला (दुर्मिला)

दम्मांम[17] डहुहह तूर[18] त्रहतह गोळ[19] गहम्मह गैगुडियं[20]।
चल्ले चतुरंगह सेन असंखह आरिख अब्भह ऊपडियं[21]।
तपती[22] नद्दि[23] ऊतरि[24] आया[25] पाधरि लागै[26] "अंबर" लख्ख दळं।
घण झूंफै घुस्सर[27] दक्खण ऊपर वोळ मंडोवर बांह[28] बळं ॥१॥
मलपै घड मैंगळ[29] सूंड लळवळ हालि हळोहळ जूह हिलै।
सुरतांण तणा दळ साहण सब्बळ छोळ हीळोहळ[30] जांण छिलै।
फोजां गजडंबर लीण(।) लसक्कर दक्खण उत्तर आहूडिय[31]।
वहै बांण[32] विसन्नर[33] घिख्खियौ[34] घोमर ताळ भयंकर ता(व)डियं[35] ॥२॥

जुध बरणण

वह छूटै कैबर सोक[36] नलीसर सींघणि[37] संघर साचवियं[38]।
धुबि जांण[39] धराहर सालुळि सेहर मेघ महाभर माचवियं[40]।

---

१ आ. अमूझी। २ आ. छीक। ३ आ.इ. ज्यूं। ४ आ. जोधपुरा। इ. जोधपुर रा। ५ आ.इ. भुजे। ६ आ.इ. सहु। ७ इ. पाषर। ८ आ. सोहड। इ. सौहड। ९ अ.आ. सौह। १० अ.आ. पुकारे। ११ आ.इ. तुरंग। १२ आ. आरुढ। १३ इ. हूए। १४ आ.इ. जांणीयो। १५ आ. ताम। १६ आ. अणमान। १७ आ.इ. दमाम। १८ आ.इ. तुर। १९ इ. गो। २० आ.इ. गुडीयं। २१ आ. उपडीयं। इ. ऊपडीयं। २२ आ.इ. तपति। २३ इ. नदी। २४ इ. उतरिअ। २५ इ. आध। २६ आ.इ. लागे। २७ आ. घुंसर। इ. घूसर। २८ इ. बाह। २९ आ.इ. मैंगल। ३० अ.आ. हालोहळ। ३१ आ.इ. ओहुडीयं। ३२ इ. वांण। ३३ आ. विसनर। इ. विसंनर। ३४ आ.इ. घिषीयो। ३५ आ. तूडीयं। इ. त्राडीयं। ३६ इ. सौक। ३७ आ. सीधाणि। इ. सीधणि। ३८ आ.इ. साचवीयं। ३९ आ. जाणं। ४० आ.इ. माचवीयुं।

ग्रौईड[1] ग्रथब्बण भाद्रव स्रावण कस्सस कोरण कंठळियं[2] ।
विपरीत वरस्सण कट्टक कोम्रण सेन महाघण सम्मळियं[3] ।।३।।

गैणागि गडी-ग्रड ढोल[4] निध्रस्सड[5] पावस त्रींगड[6] छंट पडै ।
रोहराळ नदी नड दांमणि[7] दुज्जड[8] घम्म[9] विनै घड लूंब लडै[10] ।
खग कूंते[11] खिव्वणि चम्मकि दांमणि[12] सैन कळाइणि[13] सुब्भटयं[14] ।
हुइ हाक हणे-हणि[15] मेघ महाघणि उत्तर दक्खण[16] ग्रारटयं ।।४।।

रत खाळ रळ-तळ पालर प्रग्घळ[17] होहूं हूकळ थट्ट हुवै[18] ।
वळ-कंत विजूजळ[19] वीजक वद्दळ ढोल[20] त्रिमंगळ[21] वोम घुबै[22] ।
मुडिया[23] पिंड[24] मैंगळ[25] ग्रस्सि उच्छंछळ[26] रावत विम्मळ लडि पडियं[27] ।
दुजडा दूनै[28] दळ विढ्डै सब्बळ कंदळ[29] पेखै रिव खडियं[30] ।।५।।

ग्रसमांनक ग्रज्भर घार ग्रसम्मर तूंट तरोवर तुंग नरं ।
डहलाए दद्दर हींसै हैमर फूटि[31] सरोवर पाळ फरं ।
दळ भागा बिंदुर[32] नीधक निड्डर चूहड मच्छर धन्न हियं[33] ।
वूहां किरि वज्जर चौरंगि चक्कर गज्ज गिरव्वर सै गुडियं[34] ।।६।।

महाराजा गजसींघ री विजय

कवित्त

गुडे गज्ज पाहाड[35], टूंक[36] ढ़हिया[37] कूंभाथळ ।
वज्रपात करमाळ, गुडे तूटें कंबूं-सळ ।।
गयण ढोल गडगडे, सीह खळ ग्राफ(ळ)[38] भज्जै ।
सकति पत्र[39] सरभरै, सोणा नदियां[40] नड वज्जै ।

---

१ ग्रा. ग्रोहड । इ. ग्रोइड । २ ग्रा.इ. कंठलीयं । ३ ग्रा.इ. समलीयं । ४ ग्र. ढाल । ग्रा. टोल । ५ ग्रा. मिध्रसड । इ. निध्रसड । ६ ग्रा. त्तीगड । ७ ग्रा.इ. दाभणि । ८ ग्रा. दुजड । इ. दुजडि । ९ ग्रा. घमं । इ. घूम । १० ग्रा. लडे । इ. लूडे । ११ ग्रा. कूते । १२ ग्रा.इ. दामणि । १३ ग्रा. कलाईण । १४ ग्रा.इ. सुभटयं । १५ ग्रा. हणी-हणि । १६ ग्रा. दषण । इ. दिषण । १७ ग्रा प्रगल । १८ ग्रा.इ. हुवे । १९ इ. वीजूलल । २० ग्रा. ढाल । २१ ग्रा. तिमंगल । २२ ग्रा.इ. धुवे । २३ ग्रा.इ. मुड़ीया । २४ ग्रा.इ. पिड । २५ ग्रा. मैग । इ. मैंगल । २६ ग्रा. उच्छंचल । २७ ग्रा.इं. पडीयं । २८ ग्रा.इ. दुनै । २९ ग्रा. कंदण । ३० ग्रा.इ. षडीयं । ३१ ग्रा.इ. फुटि । ३२ इ. विदुर । ३३ इ. घनहीयं । ३४ ग्रा.इ. गुडीयं । ३५ ग्रा.इ. पहाडी । ३६ इ. टूक । ३७ ग्रा.इ. ढहीया । ३८ इ. ग्राभल । ३९ ग्रा. यंत्र । ४० ग्रा इ. नदीयां ।

धड मोर नवी परि नाचियो[1], दक्खण फौजां आइयां।
"गजबंध" मेह विपरीत गति[2], वूठो सिरि[3] वैराइयां[4] ॥१॥

पडे[5] जोध जरदैत, पडे[6] बरहास[7] सपक्खर।
पडै[8] बांण एक लक्ख, सीस "जिहंगीर" लसक्कर॥

वीरगति प्राप्त प्रमुख वीरां री नामावळी

पडे[9] रीठ करमरां, पडे खग्गां पाहारां[10]।
पडे[11] मार दळ भार, पडे[12] फळ खंड अपारां॥

संग्रांम[13] पडे ग्रीधण समळ, रगत पूज[14] रैणा[15] चडे[16]।
"जसवंत" समोभ्रम खाटि जस, प्रिथीराज[17] भाटी पडे[18] ॥२॥

कियौ[19] जुद्ध भारत्थ, धमस धारां धमरोळै[20]।
घोमा रवि ढंकियौ[21], गयण पड बांणै-गोळै[22]।
भइ बहतरि ऊमरा[23], खांन सत्तरि[24] थहरिया[25]।
तिण वेळा तुडि-तांण, विढण मारू बळ भरिया[26]।

काळ प्रळै पेखि[27] पैंतीस[28] कुळ, लोहि लडंतां लह बहे[29]।
पांच रूप[30] हुवौ[31] नव कोट पह, राउ अवर ओळै रहै[32] ॥३॥

बादसाह नूं खांन खांना रौ जुधरी विजय रो पत्र। महाराजा गजसींघ नै दळथंभण री पदवी मिळणी

साह दिस्स मेलिया[33], खांन खांनां लिख कागळ।
ऐ अजीत रट्ठवड, किता[34] जै जीता कंदळ॥
सबळा सत्र संघरे, छळै सबळै पडि-गिरिया[35]।
जेथ भिडे[36] दळि पडे, तेथ आडा भुज धरिया[37]॥

---

१ अ.आ. नचीयां। २ आ.इः गत। ३ इ. सि। ४ इ. वैराईयां। ५ अ. पडै। ६ अ. पडै। ७ आ. परहास। ८ अ. पडै। ९ अ. पडै। १० आ.इ. पहारां। ११ अ. पडै। १२ अ.आ. पडै। १३ आ.इ. संग्राम। १४ आ. पूजत। १५ अ.आ. रेणो। १६ अ. चडै। १७ अ. प्रीथीराज। १८ अ. पडै। १९ आ.इ. कियो। २० आ.इ. धमरोले। २१ आ.इ. ढंकीयो। २२ आ.इ. बांणे-गोले। २३ आ. उमरा। २४ आ. सतरि। इ. संतरि। २५ आ.इ. थरहरीया। २६ आ.इ. भरीया। २७ इ. पेषियै। २८ आ.इ. पैंतीस। २९ अ. आ. बहै। ३० अ.आ. रुप। ३१ आ.इ. हूवो। ३२ आ. रहै। ३३ आ.इ. मेलीया। ३४ आ.इ. किताइ। ३५ आ.इ. पडिगीरिया। ३६ आ. भीडे। इ. भीड। ३७ आ.इ. धरीया।

कळि मूळ निर्भंमण, कळिमथण, ऊभो[1] सिरि "अंब्रर" डहै ।
पतिसाह परीछै ए प्रसिध, दळथभंण राजा कहै ॥४॥

दखण में फ़ेर दरोल

साहजादा खूरम नें सेनापति बणाय भेजणौ

तांम साह सनमुक्ख, खुरम ऊभौ[2] सुरितांणह ।
दे बीडौ[3] सिर दखिण, हुकम कोयौ फुरमांणह ॥
तूं[4] सरहद्दां[5] लियै[6], तुंहिज[7] सरहद्दां लाइक ।
तूं[8] सरहद्दां धणी, तुंहिज[9] सरहद्दां नाइक[10] ॥
खूंदालम जपै तूं[11] खुरम, सुकरि[12] खग्ग संभाहियौ[13] ।
भर भार भळावै भोम छळि, पिता पूत पडिगाहियौ[14] ॥५॥

बादसाह सूं खुरम री सेर खां री मांग करणी

तब बोलियौ[15] खुरम्म, अरज हजरत्त सुणीजै ।
एक कौल इक[16] जाब[17], कहूं[18] जो[19] कहियौ[20] कीजै ॥
हम खिजमत कबूल, हम्म फरजन्न तुमारै ।
हम[21] सिरि[22] ऊपरि रजा, हुकम हुम कियौ[23] आरै ॥
साहिजादौ जपै साह सूं, मन मांही[24] द्रोहै मतै ।
सुरतांण "सेर" अप्पौ मुझै, करूं मार दक्खण फतै ॥६॥

गाथा

काळे कोक न छळियं[25], अहि मांनव देव[26] दांणवौ ।
दिलेस बुध नासं, आपे खुरमि "सेर" सुरतांणं ॥१॥
अहि गरळ काळ कूटं, हळा-हळं[27] रौपियं बियं[28] ।
अंकूर नैव पतं फळ, लगसी कोइ[29] निरवांणं ॥२॥

---

१ आ॰ उभो । इ. उभो । २ आ.इ, उभो । ३ अ. बीडो । इ. बीडो । ४ आ.इ. तुं । ५ आ. सरहवां । ६ आ.इ. लीयै । ७ आ.इ. तुहीज । ८ आ.इ. तु । ९ आ.इ. तुइज । १० इ. नाईक । ११ आ.इ. तु । १२ आ. सुकरी । इ. तुकरि । १३ आ.इ. संभाहीयौ । १४ इ. पडिगाहीयो । १५ आ.इ. बोलीयौ । १६ आ.इ. एक । १७ आ. जाव । १८ आ.इ. कहु । १९ इ. जौ । २० आ.इ. कहीयो । २१ आ. हंम । २२ आ.इ. सिर । २३ आ.इ. कीयौ । २४ आ. माही । इ. मांहे । २५ इ. छलीयं । २६ आ. दैग । २७ आ.इ. हालाहलं । २८ आ.इ. बीयं । २९ आ.इ. कोई । ३० आ.इ. नीरबांण ।

सेना री वरणण

छंद बिग्रखरी

खूंदालम[1] खुरम पडेगरि । दीनौ बीडौ दक्खण ऊपरि[2] ।
लाख करोड माल खज्जीना । है गै मुलक मया करि दीना ॥१॥

साथे हिंदू[3] मुस्सलमांणं । हिंदुसथांन[4] खिडे खुरसांणं ।
मुळ गळ[5] ऊज्बकि खुरसांणी । वोलै जेम विहंगम बांणी ॥२॥

दुइ दुइ तरकुस[6] पासि[7] जुवांणां[8] । दुइ दुइ[9] टंक अठार कबांणां[10] ।
चढिया[11] घोडै[12] मीर बहादर । पावां लग रुळदी पाखर ॥३॥

हूवौ[13] टांमक घाव नगारै[14] । कसमोराह खडे इल-कारै[15] ।
दक्खण ऊपरि[16] मंडे डांणा[17] । खुरम किया[18] दर-कूच[19] पयांणा[20] ॥४॥

चतुरंग सेन असंख्यां चल्लै । हेमाचळ परबत किरि हल्लै ।
देम दगग्गे सेन रवद्दं । किरि ऊलटिया[21] सात समद्दं ॥५॥

गरडे गज्ज वहंतां दांणा । अभर हुवा घणहर अह्निनांणा ।
गै गुडिया[22] मद - गंध गडांडं । कुळ अठंक[23] सर जीत पहाडं ॥६॥

दांतूसळ दीपै घड दंती । सांमा घटा जांणे बगपंती ।
हींडुळता[24] गै जूह[25] हमल्लां । ढलकै काळी पीळी ढल्लां ॥७॥

परबत - माळ क चल्लै पाए । धजां पताखां अंबर छाए ।
फौजां मुहरि मलप्पै मैंगळ । पेरे[26] जांणि[27] पवन्नै वादळ ॥८॥

खिडिया[28] खोहण खांन खंधारं । भाजै वन्न अढारह भारं ।
दळ पाए ऊपडिया[29] डंबर । औधूळियौ[30] गरद्दो[31] अंबर ॥९॥

---

१ आ. षुंदालम । इ. षुदालम । २ आ.इ. उपरि । ३ आ. हीदुं । इ. हींदु । ४ आ. हीदुसथांन । इ. हींदुसथांन । ५ इ. मुगलल । ६ आ.इ. तरकस । ७ इ. पास । ८ इ. जुवाणां । ९ इ. दुई दुई । १० आ. अटार । ११ आ.इ. चडाया । १२ आ.इ. घोडे । १३ आ.इ. हुवौ । १४ आ.इ. नगारे । १५ इ. ईल-कारे । १६ आ.इ. उपरि । १७ आ.इ. डाणां । १८ आ इ. कीया । १९ आ.इ. दर-क्रुच । २० आ. पयाणा । इ. पयांणां । २१ आ.इ. उलटीया । २२ आ.इ. गुडीया । २३ आ.इ. अठक । २४ आ.इ. हीडुलता । २५ इ. जह । २६ आ.इ. परे । २७ आ.इ. जांण । २८ आ.इ. विडीया । २८ आ.इ. उपडीया । २९ आ. ओघुलीयो । इ. ओघूलीयो । ३० आ. गरदी । इ. गरदां ।

पुड वसुधा वरहासां[1] पाए । थरहर थाळ तणी परि थाए ।
पार पखै[2] असवार पाइदळ[3] । पंख समारिक चल्ले मेहळ ॥१०॥

कूदंता वहता कंकांणां[4] । रत्ता फीण झरै ऐलांणां[5] ।
पवंग[6] पगां तळि पत्थर फोडे[7] । धम धमके जम उपद्रव घोडे ॥११॥

उछळते खैंगे असराळे । खांना खोण पडे खुरताळे ।
थोके थोके[8] घाट थिडंबं[9] । दौडे असि ऊडंति[10] दिडंबं ॥१२॥

ऊपडि[11] फौज घटा आडंबर । रजधूळ[12] हि छायौ रातंबर ।
चडिया[13] घडे घडालां चंचळ । वाजै[14] नास वहैं वेगागळ ॥१३॥

वांक मुहा वाजिद विवांणां[15] । दांढां[16] पीसै रोस लगांणां[17] ।
धरती धमस तुरां धमधमी । वाढै[18] साढ[19] सेट सीरम्मी ॥१४॥

सावज सीह मरए संभाही[20] । मूंझै त्रिग्ग फवज्जां मांही ।
लग्गा वहण असंख्यां लसकर । तैं धूजिया तिणैं धरणीधर ॥१५॥

खुरम सताब खडे अस तामं । बारह बारह कोस मुकामं ।
खुरम खवा असमांन डहंतौ । मांडव[21] आयौ मार कहंतौ[22] ॥१६॥

वेगो आयौ न करी वेरूं । खांडे करि सूं दक्खण खेरू ।
रत्ता[23] मुग्गळ नीली टोपी । ततकाळे नरबद्दा लोपी ॥१७॥

दक्खणियां[24] घर वांहण[25] आदौ । व्रांहन पुर[26] आयौ साहिजादौ[27] ।
देख खुरम दखणी दळ भग्गे । किरि दीठौ पंखराऊ[28] पनग्गे ॥१८॥

दखणी दळ रो पलायन

कवित्त

पन्नंगे पेखियौ[29], जांणि पंखराउ[30] प्रघट्टौ ।
किरि दीणै कुंजरां[31], सीह सादूल[32] निहट्टौ ॥

---

१ आ. बरहासां । २ आ.इ. पषे । ३ इ. पाईदल । ४ आ. केकाणं । इ. केकांण । ५ इ. अैलाणां । ६ आ.इ. पवग । ७ इ. घोडे । ८ इ. थोका थोक । ९ आ. थिडवै । १० आ.इ. उडंति । ११ आ.इ. उपडि । १२ आ.इ. रज-धुल । १३ आ.इ. चडीया । १४ इ. वावै । १५ आ. वेवांणां । इ. देवाणं । १६ आ. दांटां । १७ आ. लागाणं । इ. लगाणं । १८ आ.इ. वाजे । १९ इ. साट । २० इ. सभांही । २१ आ. माडव । २२ आ. कहतो । २३ इ. राता । २४ आ.इ. दषणीयां । २५ इ. आयी । २६ आ.इ. ब्रांहन पुर । २७ आ.इ. शाहिजादी । २८ आ. पंषराउ । २९ आ.इ. पेषीयो । ३० इ. पंषराऊ । ३१ इ. कूजरां । ३२ इ. सादुल ।

अरक पेखि किर उदौ, मिटे तम[1] तारामंडळ ।
गयौ सीत भैभीत, जांणि[2] पेखे जाळंनळ ।।

नरसिंघ वीर आराधियै[3], भूत प्रेत भाजंत जिम ।
सुरतांण खुरम संपेखियै[4], गा दखणी[5] दहवाट तिम ।।१।।

व्रांहन-पुर[6] निज तखत, आंवि बैठौ[7] साहिजादौ ।
सरहद्दां सुरतांण, आप बळि आप मुरादौ ।।
राजा राठौडवै, मेर माझी मुंह आगळ ।
पहरावै[8] पड़गरै[9], भार दीनौ भुज्जांबळ ।।

ताबीन दीन हिंदु[10] तुरक, अउब पेख आतम सकति ।
दळथंभ दळां विच, थप्पियौ[11] जेत खंभ सेनाधपति[12] ।।२।।

जुध में विजय प्राप्त, बादसाह रौ खुस होणौ, महाराजा गजसींघ नूं पंच-हजारी रौ पद तथा जाळोर, सांचोर रा परगना मिळणा

महण-रंभ मथियौ[13], तेग तुडि दक्खण मारी ।
पाति साह[14] हुइ प्रसन, हुकम किय[15] पंच हज़ारी ।।
मंडोवर नर-समंद, सीस मनसप वध्धारे ।
दे नग्गारा तोग, तुरी साकति सिंगारे[16] ।।

फुरमास सुपारसि मोकळी, दिढ[17] राजा दळथंभ तूं[18] ।
जागीर दीध जोगणि-पुरै, कणिया-गिर[19] सांचौर सूं[20] ।।३।।

सेना रो वरणण

वाळण दक्खण वसुह, कटक बंध चढ़िया[21] कोम्रण ।
भेरी पंच सद्द[22] तांम[23], ...सुणियै[24] लग जोजण ।।

---

१ आ.इ. तब । २ आ. जाए । ३ आ.इ. आराधीयै । ४ आ.इ. संपेषीयै । ५ इ. दिषणी । ६ आ. व्राहनपुर । इ. व्राहनपुर । ७ इ. वैठौ । ८ आ. पेहरावै । इ. पैहरावै । ९ आ.इ. पडगरे । १० आ.इ. हीदू । ११ आ.इ. थपीयो । १२ आ. सानाधपति । इ. सेनाधिपति । १३ आ.इ. मथीयो । १४ इ. पतसाह । १५ आ.इ. कीध । १६ आ. सिघारे । १७ आ. दीढ । १८ आ.इ. तु । १९ आ.इ. कणीया-गिरि । २० इ. सुं । २१ आ. चढोया । इ. चडीया । २२ आ. पंच सब्द । इ. पंच सबद । २३ अ. नांम । २४ आ.इ. सुणीयै ।

हिंदू[1] मुसळमांन, खांन सुरतांण[2] चइन्ना ।
हळवळि मेंगळ[3] हुए, सुजळ किरि वादळ भीना ॥

चतुरंग पंच फौजां अणी, भूल न जाये[4] झल्लिया[5] ।
नृप[6] सहस नेत नव साहसौ, दळ बारह घण चल्लिया[7] ॥४॥

हैं - खुर रज ऊछळी, रजी लग्गी रवि - मंडळ ।
चडी सेस सिरहत्थ, पुहवि[8] गाहट पग्गां तळ[9] ॥
कमठ भार कसमस्स, दाढ़ बाराह खडक्के ।
मंडळ मेर मेखळा, धमस[10] धूळी[11] रिव[12] ढक्के[13] ॥
सम्मूह सेन संख्या पखै, जाइ लसक्कर जूजुए[14] ।
पतिसाह दळां दीनी पसर, गिरि झंगर पद्धर हुए[15] ॥

छंद रूपकगति[16]

"गजबंध सुणे आवंता । दखणी दळ दूर[17] पहूंता[18] ।
मलिका पुर फेर दूवाई[19] । नव कोटे नौबत्त वजाई ॥१॥

जाई रोहणी खेडा[20] लीया । अधरती घाटां लंघीया ।
पह देवल गा पध्धारे । दळ थंभ दमांम दिवारे ॥२॥

"गजबंधी" सीह विरत्ता । दखणी दळ भाजि विगूता ।
बालापुर[21] महिक्कर छोडे । दखणी दळ भागा होडे ॥३॥

धोपट्टै लीध धरत्ती । जिहंगीरे[22] आंण वरत्ती ।
वीरातन[23] वागां जोडे । चांपी भुइ चढ़ियो[24] घोडे ॥४॥

"गजबंधी" नाहर गज्जे । दखणी गा कुंजर भज्जे ।
"गजबंध" निरोहै[25] पुगा[26] । मुख बारह सूरज ऊगा[27] ॥५॥

---

१ आ. हींदु । इ. हीदु । २ आ. सुरताण । ३ आ.इ. मैगल । ४ आ.इ. जायै । ५ आ.इ. झलीया । ६ इ. नृप । ७ आ.इ. चलीया । ८ इ. पुहव । ९ इ. तलि । १० इ. धुमस । ११ इ. धुली । १२ इ. रवि । १३ आ.इ. ढंके । १४ आ.इ. जूजूए । १५ इ. हूए । १६ इ. रूपक सकति । १७ इ. दुर । १८ आ.इ. पहुता । १९ इ. हुवाई । २० इ. रोहिण बेडा । २१ आ.इ. बालापुर । २२ आ.इ. जिहगीर । २३ आ.इ. वीरांतन । २४ आ.इ. चढीयो । इ. चडीयो । २५ इ. नीरोहे । २६ इ. पगा । २७ अ.इ. उगा ।

कमधज्ज उदोतं कवट्टं । किरि कांठळ[1] भाणं प्रघट्टं[2] ।
दोळा दळ दिल्ली वाळा । पंच रूप करि प्रब्बत-माळा[3] ॥६॥
सांमंद विरोळ सकज्जै । धमचक्क किया कमधज्जे ।

खिड़की गढ़ ध्वंस

सुरतांणतण दळ सत्थे । खडि आया खिडकीमत्थे ॥७॥
"गजबंध"[4] कमध्ध निहट्टा । तब साह निवाज पलट्टा ।
दखणी "गजबंध" विडारे । गौ "अंबर" डंबर हारे ॥८॥
दखणी दहवाटां कीयां । दौलत्ताबाद डरीयां ।
गज थाटां कीध गाहट्टां । ढंढोळे हाट चौहट्टां ॥९॥
मंड मैडी चित्तर-साळा[5] । गढ ढ़ाहै गोख अटाळा ।
कमठांणा पौळ पगारं । किय[6] कोट सैलोट समारं ॥१०॥
धमळा-हर[7] धोम धिखाया । किरि लाखा जमहरि[8] लाया ।
पटसाळा मिंदर पाडे । जड बंद्धा सहर उजाडे[9] ॥११॥
गढ़ भंजे भीत किमाडं । उत्थांमै जडां उपाडं ।
सात खणा महल मंडाणं । किय[10] ढाहि पंखांण पखांणं ॥१२॥
पाडे किया[11] पहट[12] मैदानं । दरबार दिवांणह-खांनं[13] ।
उध्धै पुडि दखण उपाडे । खंडे मीर खपाड[14] पछाडे[15] ॥१३॥
गुळ चावळ गोहूं[16] पाया । तब लूटि लसक्कर धाया ।
"गजबंधी" आपो[17] पांणां । वरतावण दक्खण आंणां ॥१४॥

ध्वस्त नगर रो वरणण

कवित्त

जेथि[18] दीप दीपता, तेथि[19] प्रजळै हुत्तासण[20] ।
जेथि हसति गूंजता[21], तेथि[22] गुंजै[23] पंचाइण[24] ॥

---

१ आ.इ. कांठलि । २ इ. प्रगटे । ३ इ. प्रबत-माला । ४ इ. गजबंधी । ५ आ.इ. चित्र-साला । ६ आ.इ. कीय । ७ इ. धमल-हरे । ८ आ.इ. जमहर । ९ आ.इ. उपाडे । १० आ.इ. कीय । ११, आ. कीय । इ. कीयां । १२ इ. पह । १३ आ.इ. दीवांणह-षानं । १४ इ. षषाडं । १५ इ. पछाडं । १६ आ.इ. गोहु । १७ इ. आयो । १८ आ.इ. जेथ । १९ आ.इ. तेथ । २० आ. हुतासणं । इ. हुतासण । २१ आ.इ. गुंजता । २२ इ. तेथ । २३ इ. गुंजे । २४ इ. पचाइण ।

जेथि[1] रंग-आंमास, तेथि क्रीडंति[2] कुरंगह ।
जेथि नृपति[3] बैसता, तेथि उड्डंत[4] विहंगह ।।
त्रिय तेथि रेख काजळ नयण, भुम्रण तेथि भरिया[5] भसम ।
खेडपति कीध खिडकी-तखत, वसुह रीत विपरीत इम ।।१।।

जडामूळ[6] उप्पाडि, भांजि खिडकी-गढ़ दक्खण[7] ।
हबसी दळ हेडवे, मारि[8] लग मुग्गी-पट्टण ।।
खांन देस मरहट्ट, बराड मुलक वस[9] कीया वंका ।
सेत-बंध रांमेस, भंग पडियौ[10] गढ़[11] लंका ।।
अहमदा नगर हूआ उभै, कटकबंध काबिल[12] तणा ।
गढ लियण[13] सींह[14] गुंज्जारियौ[15], आवि खडग्गह पूरणा ।।२।।

विग्रह चाळा वधे, खसे खुरसांणह धायौ ।
दखण[16] दमंगळ[17] करे, सरद साहिजादौ[18] आयौ ।।
सबळ भीड संभळी, झूंझ ग्रहियौ[19] झूंझारे[20] ।
सांम कांम[21] हणमंत[22], कमध[23] कुळ मग संभारे ।।
मंडळीक कळीधर मारकौ, ऊससि लग्गौ[24] अंबहर ।
आइयौ[25] तांम[26] असि ऊलके[27], रांम भीची[28] जिम राजधर[29] ।।३।।

दळ लंका[30] दखणाधि, रूप माया राकस्सी[31] ।
बहुतरि[32] सत्तरि[33] चडे, खांन ऊंबरा[34] हबस्सी ।।
वाज पंख सीचांण, वाज विव्वांण उडाया ।
पवन आतुर[35] पेरिये[36], जळद जांणे किरि धाया ।।

---

१ अ. जेथ । इ. जंथि । २ आ. क्रीडती । इ. क्रिडंति । ३ आ. नृपति । इ, नृपत । ४ आ.इ. उडंति । ५ आ.इ. भरीया । ६ इ. जडामूल । ७ इ. दिषण । ८ अ. मगरि । ९ आ.इ. वसि । १० आ.इ. पडीया । ११ इ. लग । १२ इ. काबिली । १३ आ इ. लीयण । १४ इ. सीह । १५ आ.इ. गुजारीयौ । १६ इ. दषणि । ~~१७ आ.~~ दमगळ । १८ आ. साहिजादो । इ. साहजादो । १९ आ. ग्रहीयौ । इ. ग्रहीया । २० आ.इ. झूझारे । २१ इ. काम । २२ आ. हंणमंत । २३ आ. कमंध । २४ इ. लागौ । २५ आ.इ. आवीयौ । २६ आ.इ. ताम २७ आ. उलके । इ. उलंके । २८ आ.इ. भीच । २९ इ. राधर । ३० लंक । ३१ इ. राकरसी । ३२ इ. बहितर । ३३ आ. सतरि । इ. सितर । ३४ आ. उंबरा । इ. उमरा । ३५ इ. आतुर । ३६ आ. पेरीयौ । इ. पेरीयां ।

असमांण बांण आचे लिया[1], सेन सडंबर सालंळै ।
कोटांण[2] कोटि कोम्रण कटक, आया दळ वद्दळ मिळै ॥४॥

वखणी वळ री फेर हुल्लौ

दूहा

मिळ दळ वद्दळ आविया[3], दखणी घस लागाह[4] ।
जरा[5] सजे[6] तुरियां[7] चढे[8], भागा[9] अणभागाह ॥१॥

दोमज[10] छळि बळ दक्खण[11], खीटावण खुरसांण ।
दीनौ[12] आवे[13] दखणिऐ[14], कटके कोस मल्हांण[15] ॥२॥

कटके काछी[16] तणे, "गाजीसाह" नरिंद ।
बाधे नेत विराजियौ[17], भौडक बाधै विंद ॥३॥

असती[18] नरपति गजपती[19], ओळोभै[20] त्रिउ राउ[21] ।
कहौ[22] हमीरां[23] हिंदुवां[24] करिसौ[25] केहौ[26] दाउ[27] ॥४॥

"गजण" गरज्जै बोलियौ[28], करि ग्रहियै[29] केवांण ।
भलां भिडंतां आगळी, बाहुडियां[30] पछवांण[31] ॥५॥

सेना री कूच

छंद विराज

हुओ[32] भेर घावं । निसांणं निहावं ।
सहन्नाइ[33] सद्दं । नफेरी[34] ननद्दं ॥१॥

---

१. आ. लीया । इ. लियां । २ आ. कोटाण । इ. कोटांन । ३ इ. आवीया । ४ आ.इ. लगाह । ५ आ. जारां । ६ आ. साजे । इ. साजे । ७ आ. तुरीए । इ. तुरीये ८ आ.इ. चडै । ९ इ. भागाइ । १० आ.इ. दोभजि । ११ इ. दषवण । १२ इ. दीजो । १३ अ. आवै । १४ इ. दषणीए । १५ अ. मल्हाण । इ. मैलाण । १६ आ. कांबि । काछिवै । १७ आ.इ. विराजीयौ । १८ इ. असपति । १९ अ. गजपति । २० आं आलीभै । इ. आलांजे । २१ आ. त्रिउ राऊ । इ. त्रिहू राहू । २२ आ. कहो । इ. कहैं । २३ आ. अमीरां । २४ आ. हींदुवां । इ. हीदूवां । २५ आ.इ. करिसां । २६ इ. केहो । २७ आ.इ. दाऊ । २८ आ.इ. बोलीयौ । २९ आ.इ. ग्रहीयै । ३० आ.इ. बाहुडीयां । ३१ इ. षछ-वांण । ३२ इ. हुवो । ३३ आ.इ. निसांण । ३४ आ.इ. सहनाई । ३५ आ.इ. निफेरी ।

पहं खेड पत्ती[1] । चडे चक्रवत्ती[2] ।
खडे खंग खुद्रं । कियौ[3] रूप रुद्रं ॥२॥

समूहं[4] सुभट्टं । गुडे गज्ज थट्टं ।
दळाकार दौडं । तुरां वाज[5] पोडं ॥३॥

वसू[6] धाव जाए । रजी भांण छाए ।
क्रमे कोम[7] सेनं । मिळे रज्जमेनं ॥४॥

घरत्त धमस्सं । आंकपै अरस्सं ।
ताजव्वै तोखारं । खिडै जांणि[8] तारं ॥५॥

वहै वाज लीणं । झरै[9] मुक्खि फीणं ।
मवैं मग्ग मोणं । अमूझत्त ओण[10] ॥६॥

हिले हेम थट्टं । फिरे वोम फट्टं ।
भाद्रव्वें आसोजं[11] । घटा जांणि फौजं ॥७॥

सिरे उतराधं[12] । खडे दक्खणाधं ।
थिडे थट्टं काळा । किरि[13]मेघ[14]माळा[15] ॥८॥

भडां दाखिरोसं[16] । खडे खट्ट कोसं ।
आंणी गज्ज साहं । रचे रिम्म राहं ॥९॥

जुध वरणण

आतस्सं अपारं । मिळे अंधकारं ।
हुबे[17] बांणि[18] होमं । धुबे झाळि धोमं[19] ॥१०॥

हथनाळ गोळा । पडै[20] जांणि[21] ओळा ।
करग्गे[22] केवांणं[23] । निमज्जै[24] जुवांणं[25] ॥११॥

नाराजे कोमंडै । करे तीर उड्डै ।
घनंरवे धौकारं । भालोडे भंभारं ॥१२॥

---

१ आ. षेडयती । इ. षेडपति । २ आ.इ. चक्रवती । ३ आ.इ. कीयो । ४ इ. समुहं । ५ इ. वाजि । ६ आ.इ. वसु । ७ इ. कामसेनं ८ आ. जाणि । ९ इ. झरे । १० इ. आणं । ११ आ. आसोजं । १२ अ. उतरधां । १३ इ. किरे । १४ आ. माघ । १५ अ.आ. काळा । १६ आ.इ. दषिरोसं । १७ इ. हुषे । १८ इ. बाण । १९ इ. धामं । २० आ.इ. पडे । २१ आ.इ. जांण । २२ अ. करगे । इ. करंगे । २३ इ. कबाणं । २४ आ. निभजे । इ. निवजै । २५ इ. जूवाणं ।

सरै[1] सोक एहं । मिळे जांण मेहं ।
मने उद्दमद्दं । किलक्के नारद्दं ॥१३॥

वीरम्मै वैताळं[2] । खिल्ले खेतपाळं ।
कटक्कां कसस्से । सुभट्टं सनस्से ॥१४॥

केवांणां[3] सकज्जां[4] । किया[5] काढ़ि धज्जां ।
रिणं तूर[6] वागा । खिवै[7] खाग नागा ॥१५॥

महा जुध्ध मत्तं । इसौ आवरत्तं ।
रूके उड्डि रीठं । गुडे जोध ग्रीठं[8] ॥१६॥

लडै लोह हत्थं । गहे गूथ-बत्थं[9] ।
पडै[10] सोस पांणं[11] । छणक्कै केवांणं[12] ॥१७॥

निहस्सै निराटं । करम्माळ[13] झाटं[14] ।
हुए[15] हुब्ब[16] सोरं । घणं[17] घाइ घोरं[18] ॥१८॥

जग-ज्जेठ जूटै[19] । फरी कूंत फूटै[20] ।
कटक्के[21] कराळं[22] । जुआ[23] जीण – साळं ॥१९॥

अवाजै[24] औगाढं । तेगां जम्मदाढ़ं[25] ।
है – थाटे हिलोळं । धारा धम्मरोळं[26] ॥२०॥

मिळे ताळ तातो । धका-धोम[27] मातो ।
हिले रत्तं खाळं । नदी जांण नाळं ॥२१॥

मुहे रूक माडं । हुए[28] चूक[29] हाडं ।
भडां कंध भाजै । धडां धार वाजै ॥२२॥

भिडै[30] भींच[31] भल्लं । ढहे ढींच-ढल्लं[32]
भूमे ले पयाळा । करे मत्त वाळा ॥२३॥

---

१ आ.इ. सरे । २ आ. वेताल । इ. वैताले । ३ आ. केपाणं । ४ आ. सकजां । इ. सकजा । ५ आ.इ. कीया । ६ इ. तुर । ७ आ.इ. षिवै । ८ अ. गीठं । ९ आ.इ. गुथ बथं । १० इ. पडे । - ११ इ. पाणं । १२ इ. केवाणं । १३ इ. करंमाल । १४ इ. फाटं । १५ आ.इ. हुऐ । १६ इ. हूव । १७ इ. घण । १८ इ. घोरं । १९ आ. जूटे । २० इ. फुटै । २१ इ. कूटके । २२ इ. कडालं । २३ आ.इ. जूआ । २४ आ.इ. आवाजै । २५ इ. जंमदाढं । २६ आ. घमरालं । २७ अ. घका-घेम । २८ इ. हुऐ । २९ इ. चुक । ३० आ. भिडे । ३१ आ.इ. भीच । ३२ आ.इ. हींच ढलं ।

करै[1] कील कोधं[2] । जुडै[3] जुद्ध[4] जोधं ।
उरे उब्भ - राडं । झटक्के झराडं ॥२४॥

वहै सम्म सेरं । झरै झट्ट झेरं[5] ।
कटै ग्राच ग्रोणं । रडै रत्त सोणं ॥२५॥

तुरां तूठ[6] तुंडुं । सुंडाळा[7] भुसंडं[8] ।
भडां भोम जाए । गडत्थल्ल[9] खाए ॥२६॥

घडं[10] रत बूडै । भडां हंस ऊडै ।
खिवै खग्ग धारां । गुडै गज्ज भारां ॥२७॥

जुटे[11] जम्म जाळं । वपै विक्कराळं ।
बाहूडंड[12] पिंडं । बांणासै[13] विखंडं ॥२८॥

पडे[14] पूर लोहं । महा जुद्ध मोहं[15] ।
घोरं धार तम्मं । सवित्ता विभ्रम्मं[16] ॥२९॥

वदै तेण वारं । देवत्ता जैकारं ।
ढोवै रंभ रत्थं । बरै वींद तत्थं ॥३०॥

त्रिपत्ता तियारं । हुए मंसहारं[17] ।
कमाळी कपाळं । रचै[18] रूंड - माळं ॥३१॥

महाराजा गजसींघ री विजय

कवित्त

रुंड[19] मुंड सै खंड, गुडे गज मांणक डंडह ।
ग्रगनि बांण ग्रारिक्ख, वीज विरखा[20] व्रहमंडह[21] ॥
बांध नेत रिण खेत, सैद ग्रल्ली मेंहमूंदह[22] ।
हैफखांन संभ्रमी[23], पडै पोरस्स मयंदह ॥

१ ग्रा.इ. करे । २ इ. काधं । ३ ग्रा.इ. जुडे । ४ इ. जुधि । ५ ग्र. फेर । ६ ग्रा.इ. तुट । ७ ग्रा.इ. सुडाला । ८ ग्रा. ग्रासंडं । इ. ग्रसुडं । ९ ग्रा. गडूथल । इ. गुडथल । १० ग्र. घडं । ११ ग्रा.इ. जूटै । १२ इ. बाहुडंड । १३ ग्रा.इ. बांणांसे । १४ ग्रा.इ. पडे । १५ ग्रा. महं । १६ ग्रा. विभ्रमं । इ. विभ्रंमं । १७ इ. मांसहारं । १८ ग्रा.इ. रचे । १९ इ. रूंड । २० इ. वरीषा । २१ वृहमंडह । इ. व्रह्मंडह । २२ इ. महमदह । २३ सभ्रमी ।

उपडी वाग "अरजण" हरी, सूर[1] धीर सत आगळै ।
तिण दीह रहे "डूंगर"[2] तणो[3], "राघव" भाटी रिण-खळै ।।१।।

नेजालै[4] नांमिया[5], मारि[6] भाले चोधारै[7] ।
चूरि थाट चापडै, सैद पडिया[8] चडि सारै[9] ।।
माथै मंडोवरां, जुद्ध जुवटो[10] मंडांणो ।
लई वाग ग्रह खाग, लाख घोडां[11] उज्जाणो ।।

"गजसिंघ" कियौ[12] गोधम वडो, दळ भागो दखणाघरो ।
तिण वार हुओ[13] महि आगळी, "राजसिंघ" "खेमाळ"रो ।।२।।

हबसी दळ हाकियो[14], मार[15] कमधे कळि-मूंळे[16] ।
गया छाड[17] रिण-भूम[18], जांणि[19] पंखी हुइ[20] ढल्ळे ।।
अगनि बांण वांहति, खिरै असमांन के तारे ।
मिणै जांणि ब्रहमंड[21], धोम डोरी पस्सारे ।।

दळ-थंभ हुओ[22] पछिवांण दळ, आप पराक्रम अन्न-भै ।
कमधज्ज तांम[23] संग्रांम किय[24], जुडे जांम[25] एकह उभै ।।३।।

प्रिथम मेक संग्रांम[26], कियौ[27] महिकर आथांणह[28] ।
बियो[29] कीध रिणजंग, दिखण कटके मेल्हांणह[30] ।।
तियौ[31] कीध रिणताळ, बहसि बाला-पुर आए ।
चौथौ ब्राहन-पुरे[32], जुद्ध जीतौ घण घाए[33] ।।

"गज साह" भिडे पतिसाह छळि, हेठि हेठि अविणासु हुअ[34] ।
पंचमै जुद्ध दक्खण फत्ते[35], तै की[36] "सूरजमाल" सुअ[37] ।।४।।

---

१ आ.इ. सुर । २ इ. डुंगर । ३ इ. तणो । ४ आ.इ. नेजालां । ५ आ. नांमीयां । इ. नांमीया । ६ इ. भार । ७ इ. चोधारे । ८ इ. पडीया । ९ इ. सारं । १० आ. जुवटो । ११ आ. थोडां । १२ आ.इ. कीयो । १३ आ.इ. हुओ । १४ आ.इ. हाकीयो । १५ इ. मारि । १६ इ. कल-मूले । १७ इ. छाडि । १८ अ. रिण-भ्रम । १९ आ.इ. जांण । २० आ. हुई । २१ आ. ब्रह्मंड । इ. ब्रह्मंड । २२ आ. हूओ । इ. हुओ । २३ आ.इ. ताम । २४ आ.इ. कीय । २५ आ.इ. जाम । २६ इ. संग्राम । २७ आ. कियो । इ. कीयो । २८ आ.इ. आथाणेह । २९ आ. वियो । इ. बियो । ३० इ. मेहलांण । ३१ आ. तीयो । इ. त्रीयो । ३२ आ.इ. ब्राहनपुर । ३३ इ. घाऐ । ३४ इ. हूअ । ३५ आ.इ. फते । ३६ अ. आ. कीध । ३७ आ.इ. सूअ ।

दूहा

सिंघ फतै करि गाजियो[1], दखणी भांज दुझल्ल ।
पाडि पमायो सू पछे[2], सोई सच्चो मल्ल ॥१॥

महाराजा गजसींघ री विजय

केवांणै जीते कळह[3], घुरते नीसांणेह ।
मेल्हांणै[4] मंडोवरो, आयो आपांणेह ॥२॥

जोधपुरे जुध जीपतै, बळ दक्खै बांणास[5] ।
दक्खणिये[6] पळ खूटते[7], हूआ[8] बारह मास ॥३॥

"अंबर" आंपांणी[9] छभा, कीधौ[10] बैसि विचार ।
पौरस[11] पार न लब्भ[12] ही, उत्तर[13] पंथ अपार ॥४॥

दखणाधे उतराधसूं[14], करि क्रांमत्ति[15] उखेळ ।
सीले[16] कौले[17] कागळ, सगळां कीधौ[18] मेळ ॥५॥

सलै[19] हुई[20] सुख ऊपनौ[21], भागी दळां दुवाळि ।
सीमां नीमां गढ मुलक, सगळे लिया[22] संभाळि ॥६॥

जे[23] थांणै भड ऊठिया[24], बैठा ते थांणैह[25] ।
सोगठ्ठी सतरंज जिम, आपो आंपांणेह[26] ॥७॥

राजा "गाजी" सारिखा, से वड्डा सिरदार ।
दखणी मार मनाविया[27], मार कहीजै सार ॥८॥

कवित्त

मार सार मारकां...[28] इळा...[29] हूवै[30] आंपांणी ।
मुहि खग्गां है-खुरां, जेह रक्खी ते मांणी ॥

---

१ इ. गाजीयो । २ इ. पछै । ३ ग्रा.इ. कह । ४ इ. मेलांणे । ५ ग्रा. बाणास । इ. बणास । ६ ग्रा.इ. दषणीये । ७ ग्रा.इ. षुटते । ८ ग्र. हूई । ग्रा. हुग्री । ९ ग्र. ग्रापांणी । १० इ. किधो । ११ ग्रा.इ. पोरस । १२ ग्रा.इ. लभ । १३ ग्रा.इ. उतर । १४ ग्रा.इ. सुं । १५ ग्र.इ. क्रामति । १६ ग्र.ग्रा. सील । १७ ग्र. कौल । १८ इ. कीघो । १९ ग्रा.इ. सल । २० ग्रा.इ. हुइ । २१ ग्र.इ. उपनो । २२ ग्रा.इ. लीया । २३ इ. जै । २४ ग्रा.इ. उठीया । २५ ग्रा.इ. थांणेय । २६ ग्र.इ. ग्रापांणेय । २७ ग्रा.इ. मनावीया । २८ ग्र. मारका । २९ इ. ईला । ३० ग्र. हुवै ।

वर केता वीळिया[1], कळह केताइ[2] कुनारी[3] ।
पुरख न परणी[4] किणिह[5], आद[6] जुगादि[7] कुआरी ॥

गढ लियण[8] कोट[9] मैवट्ट में, कमधज दिखण[10] मथण कळी ।
महि तैहिज[11] मार मनावि[12] इम, खेडेचा राउ[13] खग-बळी ॥१॥

दखणाधो[14] की फतै, पंच[15] खट पक्खां[16] मांही ।
दक्खणियौ[17] दे देस, पेस दीनी सगळांही[18] ॥
मेद-पाट राजिंद्र, देखि सरहद्दां दोडौ[19] ।
गुडवांणे[20] मेल्हियौ[21], "भीम" रांणौ चीतोडौ[22] ॥

आंणियौ[23] द्रोह अंतह करण, पाडी[24] खुरमह पंतरण ।
ततकाळ "सेर" सुरतांण रौ, कीधौ अज्जुगतौ मरण ॥२॥

गाथा

विकमाईत[25] नांम[26] व्राहम्मण[27] ।
बूझे मंत्र कुंमत्री[28] बंभण ॥
अंतह करण दुरम्मति आई ।
वहै खुरम्मह जेठौ भाई ॥१॥

खुरम का मांडव आगमन

भूलौ भरम खुरम भव हारे ।
पाप[29] कमायौ[30] भ्रात पहारे ॥
आतम सूं[31] अहनिस[32] आळोजै ।
नव खंड पह नमिया[33] नवरोजै ॥२॥

---

१ आ. वौलीया । इ. वोलीया । २ आ. केइ । इ. केलाई । ३ इ. कलिनारी । ४ आ. पिरणी । ५ आ. किणेह । इ. किणीह । ६ इ. आदि । ७ इ. जुगादि । ८ आ.इ. लीयण । ९ इ. कोट । १० इ. दिषणी । ११ आ.इ. तैहीज । १२ आ.इ. मनावी । १३ इ. राऊ । १४ इ. दषणधी । १५ इ. पांच । १६ इ. षषां । १७ आ. दषणीयो । इ. दषणीयां । १८ आ. सगलांई । इ. सगलाई । १९ आ. दोडो । २० आ.इ. गुंडवांणे । २१ आ.इ. मेल्हीयो । २२ आ. चीतोडो । इ. चित्रोडो । २३ आ.इ. आंणीयो । २४ आ.इ. पडी । २५ आ.इ. विकमाइत । २६ आ.इ. ताम । २७ आ. व्रह्मण । इ. व्रहामण । २८ आ. कुमत्ती । इ. कुमित्री । २९ अ. आ. पाय । ३० आ. कमांयो । कमायो । ३१ आ.इ. सुं । ३२ आ.इ. अहोनिस । ३३ इ. मीया ।

व्रांहन-पुरसूं[1]　चडे　सताबं ।
साथे　खांना　खांन[2]　निबावं ॥
मारि　सेर　सुरतांण　पमायौ ।
महुण　मथेवा　मांडव[3]　आयौ ॥३॥

दूहा

मांडव आय[4] मुकांम किय[5], दळ वद्दळ आंणेय ।
समियांण[6] असमांण[7] सूं[8], जूजाऊ[9] तांणेय ॥१॥

दियौ दिलासा ऊबरां[10], करै कटक्कां चाळ ।
गढ़ मांडव ओगाजियौ[11], सिरि दिल्ली लंकाळ ॥२॥

मांडव आगम मेह रित[12], महलां मज्झ रहास ।
फुरमायौ "गजसाह" नूं[13], तुम[14] आवौ हम पास ॥३॥

खुरम प्रवांणा मेलिया[15], लीधा राठोडेय[16] ।
"गजबंधी"[17] आयौ खडे, चडि तीन्हे[18] घोडेय[19] ॥४॥

दळ भंजे गंजे दखण, चंद चडावे[20] नांम ।
खेडेचा[21] राउ[22] खुरमनूं[23], आवे कीध सलांम[24] ॥५॥

खुरम संतोख पडग्गरै, अँकमाळा आपेय ।
सीख मया किरि[25] देसनूं[26], दीनी आदर देय ॥६॥

महाराजा गजसींध री जोधपुर आगमन

मनछा फळ प्रापत हुआ[27], हुआ[28] मनोरथ सिद्ध ।
जोधपुरै दिस जोधपुर, चडे पयांणौ[29] किद्ध[30] ॥७॥

धरि पूठी[31] घर सांमहा, सहू[32] जुवांणां सत्थ ।
मनरत्त मनमत्थसूं[33], मन चाहै मनरत्थ ॥८॥

---

१ आ.इ. सुं । २ इ. षांन षां । ३ इ. मंडप । ४ आ.इ. आव । ५ आ.इ. कीय । ६ आ.इ. समीयांणां । ७ इ. असमान । ८ आ.इ. सुं । ९ आ. झूझाउ । इ. जूझाउ । १० आ.इ. उबरां । ११ आ.इ. ओगाजीयो । १२ अ. रिमं । १३ आ.इ. तुं । १४ आ.इ. तम । १५ आ.इ. मेलीया । १६ इ. राठोडेह । १७ अ. गजबंधा । १८ आ. तीन्ह । १९ इ. घोडेह । २० अ.आ. चडावै । २१ आ.इ. षेडेचै । २२ इ. राऊ । २३ आ.इ. नूं । २४ इ. सलाम । २५ इ. करि । २६ आ.इ. नुं । २७ आ.इ. हूआ । २८ इ. हूआ । २९ आ. पयांणां । ३० आ. किध । इ. कीध । ३१ आ.इ. पुठी । ३२ आ. सहु । इ. अहू । ३३ आ.इ. सुं ।

साथ सऊब[1] आवळे, मारग वूठा मेह।
आयौ नव कोटी धणी, ऊबळ[2] के तुरियेह[3] ॥९॥

"गजबंधी गढ[4] आवियो[5], मेरी घाउ वळेय।
जोवै मांही जाळियां[6], गोरो गोख चडेय ॥१०॥

गज-बंधी बाधाविजै[7], मोती उच्छाळेय[8]।
लूंण[9] उतारै राइ-धी, चडियै[10] अट्टाळेय ॥११॥

महाराजा रौ सुआगत

छंद लीलावती

सुख प्रांमियौ[11] सजणां दुक्ख थियौ[12] दुजणां।
लोक रळियांमणौ[13] लियै[14] भांमणां ॥
रिण-तूर[15] रूडांमणां ढोल[16] धूवांवणां[17]।
तोरण दरपणां प्रोळ - पणां ॥१॥

मिण मांणक आभूखणा, पहिरे[18] गहणां।
मंगळ गाइणां[19] धमळ घणां ॥
सिर[20] पहुप वरसणां अबीर उडांमणां।
निरखियौ[21] नयणां सयळ जणां ॥२॥

चत्र वेद व्राह्मणं[22] भली विध[23] भणणां[24]।
अभिखेक अप्पणां तिलक तणां ॥
गुणं कहो[25] गुणियणां[26] विप्रां चारणां।
आसीस उलावणां, सुभ वयणां ॥३॥

सिणगार सुहामणां, महलायत खणां।
पूर राइ - अंगणां, चौक रयणां ॥

---

१ आ.इ. सउबै। २ आ.इ. उवला। ३ आ. तुरीवेह। तुरीरोह। ४ इ. गज। ५ इ. आवीयो। ६ आ.इं. जालीयां। ७ इ. बंधाविजै। ८ आ. उछालेय। इ. उछालेह। ९ आ.इ. लुंण। १० आ.इ. चडीये। ११ आ.इ. प्रांमीयो। १२ आ.इ. थीयो। १३ आ.इ. रलीयांमणां। १४ आ.इ. लीये। १५ आ.इ. रिण-तुर। १६ आ. टोल। १७ आ.इ. धुषांमणां। १८ आ. पहरे। इ. पहिरे। १९ अ. गायणां। २० अ.आ. सिरि। २१ आ.इ. निरषीयो। २२ आ. बृहमणां। इ. ब्राह्मणं। २३ आ. विधी। २४ अप्पणां। २५ इ. कहि। २६ आ.इ. गुणीमणां।

"गजसाह" गरजणां, तम - चर जीवणां ।
मंगळ हुवा[1] वधावणां[2] हरख घणां हरख घणां ॥४॥

दूहा

हुआ[3] हरख वद्धांमणां, मंगळ धमळ सुणेस ।
कियौ जोध अभिन्नमै[4], गढ जोधांण प्रवेस ॥१॥
दळ भंजे[5] दखणाधरा, "सूरजमल्ल"[6] सुतन्न[7] ।
आयौ काळी मांण मळि, जांणै[8] गोकळ कन्नह[9] ॥२॥

महाराजारौ जोधपुरमें निवास

कवित्त

चित्र-साळां[10] चित्रजै, महल मंडप मॉडीजै ।
धमळ ग्रेह धमळिजै, देव चंदण अरचीजै[11] ॥
दिवां दीप-माळका, भडां भरियौ[12] राइ[13]-अंगण ।
पुन्न कळिस परठिया[14], धजा पत्ताखा[15] तोरण ॥
गजसिंघ तपै जोधांण गढ़, सीस छत्र भळ-हळ कमळ ।
नव रंग नवल्ला नेह थिउ, नाद वेद मॅंगळ धमळ ॥१॥

अस्ट-सिद्ध नवनिध[16], हुआ[17] ग्रह नवैइ[18] सवाडा ।
भै भाजै ... परठि, सदा साजा दीहाडा[19] ॥
हुवा[20] मेह नव नेह, दीप दळ भूखण दच्छी ।
लोकां घरि[21] लिछमी[22], नंद गौ-अल करि लच्छी ॥
जप जाप होम कीजै जिगन, वरन खट्ट प्रांमै[23] वरौ ।
जोधपुर आज अजुधा-पुरी[24], रांम राज कमधज्ज रौ ॥२॥

कसतूरी ऊपट्ट, महिक सोरंभ मळैतर ।
कमकम्मो कपूर[25], अनै[26] केसर किसनागर ॥

---

१ इ. हूवा । २ आ. वधामणां । ३ इ. हूवा । ४ आ. अभिन । इ. अभिनमै । ५ इ. भांजे । ६ आ.इ. सुरजमल । ७ आ.इ. सुतं । ८ आ.इ. जांणे । ९ आ.इ. कन्ह । १० आ.इ. चित्र-साला । ११ इ. अरचिजै । १२ आ.इ. भरीयो । १३ इ. राई-अंगण । १४ आ. परठीया । इ. पठिया । १५ इ. पताका । १६ आ. नवामैध । १७ आ.इ. हूआ । १८ आ.इ. नवैई । १९ आ.इ. दिहाडा । २० आ. हुआ । इ. हूवा । २१ इ. घर । २२ इ. लीछमी । २३ आ. प्रमै । २४ इ. अजोध्या-पुरी । २५ इ. कपुर । २६ आ. अने ।

ग्रंनि[1] अबीर जबाधि, विवह अन्नेक परिम्मळ।
चंपक दळ केतकी[2], कुसम सेवती सुपडुळ।
नीसांण[3] सद्द सुणिये[4] नहीं, भेर नाद मरदंग घण ॥
आघ्रांण[5] महल्ले अंग रहण, इम अलिअर गुंजारवण ॥३॥

के बाळा राइ-कुंअरि[6], केय मुगधा कुळवंती।
के मध्या मांणणी, जिसी सूरज क्रांयंती ॥
पूगळ भा पदमणी, कठिण[7] असतन गज कुंभह।
चंपक बरनी[8] तरणि, जंघ विपरीतक रंभह ॥
पिक-बांण[9] जांण वैणी पनंग[10], हिरणाखी हंसा-गमणि[11]।
रंग-महल सिंघ राजांन सुर[12], रमति राज-पुत्री रमणि ॥४॥

राग रंग ध्रुनि चित्त, ताल वीणा[13] मरदंगह।
पातरये[14] गति निरति, तांन[15] गुण ग्यांन उपंगह ॥
खड्ग रिखभ गंधार, मद्दि पंचहम निखादह।
सरिस कंठ सुर-सपत, गीत संगीत अलापह ॥
अणुहार अखाडो[16] इंद्ररौ, जोधह-पुर[17] इंद्रा-पुरी।
"गजसिंघ" इंद्र[18] राजंद्र[19]-गति, सरब इंद्र[20] सांमगरी ॥५॥

इंद्र छभा किरि छभा, द्वारि गडडंत गयंदह[21]।
नर नरिंद[22] ओळगै, कळा किरि चंद-दुडंदह[23] ॥
सुगंध[24] तरणि[25] तंबोळ, राग सांभळिजं कांनै।
वाहण भुअण वसत्र, भक्ख[26] सतरह[27] भोजन्नै ॥
अस्टादि भोग इंन्द्रादि-मुख[28], ढळै[29] सीस चौसर चमर।
भोगवै[30] लच्छि भरतार जिम[31], "गजपती" नूप[32] छत्र-धर ॥६॥

---

१ आ. अेनि। २ आ. कैतकी। ३ आ. नीसाण। ४ आ.इ. सुणीयै। ५ आ. आघ्राण। ६ आ.इ. राय-कुंअरि। ७ अ. कंठ। ८ आ. बरनी। ९ इ. पिक-वाण। १० इ. पनग। ११ आ.इ. हंसा-गमणी। १२ इ. सुंर। १३ आ. विणा। १४ आ. पातरियं। इ. पातरेये। १५ इ. तीन। १६ आ.इ. अषाडो। १७ आ.इ. जोधपुर। १८ इ. इंद्र। १९ आ. रांजिद्र। इ. रांजिद्रि। २० इंद्र। २१ आ. गयदह। २२ आ.इ. निरिंद। २३ आ. चंद-दुंडदह। २४ आ. सुगंधं। २५ आ. तंरणि। २६ आ. भष। इ. भ्रष। २७ इ. सतर। २८ इ. इंद्रादिमुख। २९ इ. ढुले। ३० आ. भोगवै। ३१ इ. जीभ। ३२ आ.इ. निृप।

दूहा

"गजबंधी"[१] जोधांण[२] गढ़ि, दसराहौ[३] पूजेय[४] ।
जूहारी[५] दिप-माळका[६], होळी फाग रमेय ॥१॥
सरद हिमं तह रिति सिसिर, की कीला सुख भोग ।
घूना[७] मिंदर[८] धौहरै[९], सिसि[१०] वदनी[११] संजोग[१२] ॥२॥
रत्ता सांमो[१३] धरम सूं[१४], रांमा[१५] कांम ही रत्त ।
मन मोटा दिन पद्धरा, भड वंका गहमत्त ॥३॥
दत[१६] देतां घन[१७] मांणतां, जगि सुणतां जसवास ।
वसुधा इण[१८] पर[१९] वोळिया[२०], नव्र कोटी खट-मास ॥४॥
चंचड कोरड जव चिणा, चीना केकांणेह ।

खुरम रौ विद्रोह

इत्तै गोधम ऊठियौ[२१], दिल्ली सुरतांणेह[२२]...
... ... ॥५॥
मांडव्र[२३] खुरम ग्रडप्पियौ[२४], हालावियां[२५] हमल्ल ।
साह विरोधण कळि मथण, इळ[२६] करिवा ऊथल्ल ॥६॥

खुरम रा विद्रोह री खबर फैलणी

कवित्त

नव नंद[२७] कोपिया[२८], दुंद मातौ तुरकांणै ।
मांडव वैठो खुरम, ग्रावि दिल्ली[२९] सिरिहांणै ॥
हूग्रो[३०] हाहाकार, प्रिथी दमगळ[३१] पेखीजै ।
जवनां जावण मूळ[३२], ग्रेह[३३] ग्रागम जांणीजै ॥

---

१ ग्रा. गजवंधा । २ ग्रा.इ. जोधाण । ३ ग्रा. दशराहो । ४ ग्रा. पुजेय । इ. पुजैय । ५ ग्रा. जुहारी । इ. जुहारि । ६ ग्रा.इ. दीपमालका । ७ इ. घुना । ८ ग्रा.इ. मिदर । ९ ग्रा. घोहरे । इ. घोलहर । १० इ. सिस । ११ ग्रा. बदनी । १२ ग्र. सांजोग । १३ ग्रा.इ. सामी । १४ ग्रा.इ. सुं । १५ ग्रा. रामां । इ. रामा । १६ ग्र. दन । इ. घन । १७ ग्रा. घन । १८ इ. ईण । १९ ग्रा.इ. परि । २० ग्रा.इ. बोलीया । २१ ग्रा. ऊठीयो । इ. उठीयो । २२ ग्रा. सुरताणेह । २३ ग्रा. माडव । २४ ग्रा.इ. ग्रडपीयो । २५ ग्रा. हालवीया । इ. हलावीया । २६ इ. ईल । २७ ग्रा. नदं । २८ ग्रा.इ. कोपीया । २९ इ. दीली । ३० इ. हुवो । ३१ ग्रा.इ. दमंगल । ३२ इ. मुल । ३३ ग्रा.इ. राह ।

पातिसाह[1] पासि[2] कागळ गए, सुणी वात विपरीत परि ।
सुरतांण सेर वूंहा[3] खुरम, कासमीर आई[4] खबरि ॥१॥

जळे पट्ट जिहगीर[5], दुक्ख लागो[6] दावा-नळ ।
घडहडि[7] पौरसि[8] घिखे[9], घ्रित आहुज क मंगळ ॥
कळि लागी[10] मुग्गळां, तांम[11] हसियौ[12] जोगण-पुर ।
वसूं हुवे घर वेध*, अगै विढ़िया[13] पांडव-कुर[14] ॥

त्रिक्काळ-दरस्सी जोइसी[15], कहै एम[16] आगम-कहा ।
असमांन उपद्रह थाइसै, उठी आग[17] पांणी[18] महा ॥२॥

बादसाह रो खुरम रै विरुध आदेस

हठ-वादा हजरति, कोपि हठियौ[19] काळ'नळ[20] ।
प्रळै-काळ उतपात, जांण[21] बंधी[22] वड मंडळ ॥
आप मुख कियौ[23] हुकम, चोट हूई[24] नग्गारां ।
चडे[25] भीच चंचळे[26], कूच[27] कीयौ[28] दळ-कारां ॥

जिहगीर[29] कहै[30] जमरूप हुइ[31], खुरम कहां जाइ[32] बप्पडौ ।
पैसै पयाळ अंबर चडै, जिहां[33] जाइ[34] तहां पक्कडौ ॥३॥

के लख पखर प्रचंड, तेज तीनो[35] तोखारह ।
के लख हिंदू[36] तुरक, लाख केताइ[37] असवारह ॥
के लख अस्त्र[38] कमाल, लाख केताइ[39] पाइदळ[40] ।
के लख वाजि,निसांण[41], जांण[42] गडडंत[43] निधी-जळ[44] ॥

---

१ अ. पतिसाह। २ इ. पास। ३ इ. वूहो। ४ इ. आइ। ५ आ.इ. जिहंगीर। ६ आ. लागो। ७ इ. घडहडियो। ८ इ. पौरिस। ९ आ. घिघिषे। १० इ. जागी। ११ आ.इ. ताम। १२ आ.इ. हसीयो। * इ. प्रति में पाठ इस प्रकार है 'वसुह वेध घर वेध'। १३ आ.इ. विढीया। १४ इ. पंडव-कूर। १५ इ. जोईसी। १६ आ. ईम। १७ इ. आगि। १८ आ. पाणी। १९ आ. हठीयो। इ. हिठीयो। २० आ.इ. काल-नल। २१ आ. जाण। २२ आ. बधी। २३ आ.इ. कीयो। २४ आ. हुइ। इ. हुई। २५ अ. चडै। आ. चढे। २६ आ.इ. चंचलै। २७ इ. कुच। २८ अ. कियो। २९ इ. जिहंगीर। ३० इ. केहै। ३१ इ. हुई। ३२ आ. जाइ। इ. जाय। ३३ इ. जहां। ३४ आ. जायै। इ. जाय। ३५ इ. तीना। ३६ आ. हीदूं। इ. हीदु। ३७ आ.इ. केताई। ३८ आ.इ. असतर। ३९ आ.इ. केताई। ४० आ. पाईदल। इ. पाय-दल। ४१ आ. नीसांण। नांसांण। ४२ आ. जाण। ४३ इ. गडडंति। ४४ इ. निधि-जल।

केतला[1] लक्ख धांनंख-धर[2], केताइ[3] लख गैमर[4] गुडे[5] ।
जिहगीर[6] पयांणे परठियौ[7], दिल्ली दिस हैमर चडे[8] ।।४।।

साही सेना रौ कूच

छंद त्रोटक

खुंहदालम[9] आरुहि है खडियं[10] ।
गति भीति[11] गिरव्वर गै गुडियं[12] ।।
घण भेर दमांम निसांण[13] घुरे[14] ।
घुबियंति[15] क मेघ असाढ़[16] धुरे[17] ।।१।।

रिण-तूर[18] पयंच-सब्द[19] वेद[20] रुडै[21] ।
गयणाग क[22] अंबनिधी गडडै[23] ।।
ढळकै[24] गज-ढालां ढूहरियं[25] ।
अनडां[26] सिरि[27] जांणक अच्छरियं[28] ।।२।।

पट हत्थ मदोमत पक्खरियं[29] ।
वन जांण वसंत[30] गिरव्वरियं[31] ।।
परचंड पटाभर पंथि पुळं ।
किरि जांणि परब्बत अट्ठ-कुळं ।।३।।

मलपंति मदोमत्त मैंगळयं[32] ।
वरखा रित जांणक वद्दळयं[33] ।।
घण झंडा लोड वियंड-घडा[34] ।
किरि[35] हा दीनक[36] पग खडा ।।४।।

---

१ आ. केतलाई । इ. केतलाइ । २ आ.इ. धानंष-धार । ३ इ. केताई । ४ अ. डोमर । ५ अ.आ. गुडै । ६ आ.इ. जिहंगीर । ७ आ.इ. परठीयो । ८ अ.आ. चडै । ९ आ. षुंदालम । इ. षुदालंम । १० आ.इ. षडीयं । ११ अ. भांति । आ. भाति । १२ आ.इ. ग्रुडीयं । १३ आ.इ. नीसाण । १४ अ.आ. घुरै । १५ आ. धुवीयंति । १६ इ. आसाढ । १७ आ.इ. घुरै । १८ इ. रिण-तुर । १९ इ. पयंच सबद । २० आ. वेद । २१ आ.इ. रुडे । २२ इ. गयत्तिग । २३ आ.इ. गडडे । २४ आ.इ. ढलके । २५ आ.इ. ढुहरीयं । २६ अ. अंनडा । २७ इ. सिर । २८ आ.इ. अछरीयं । २९ आ.इ. पषरीयं । ३० आ. वसत । ३१ आ. गिरवरीयं । इ. गिरवरीयां । ३२ आ. मेगलयं । इ. मैगलीयं । ३३ आ. वदलयं । इ. वदल । ३४ आ. विपुंड-घडा । इ. निहंड-घडा । ३५ आ इ. फिर । ३६ इ. दीनंष ।

काळी घड पावस कंवळयं[1] ।
बग पंकति[2] दीप दंतूसळयं[3] ॥
हिलिया[4] भद्र जातिय[5] हींडुळता[6] ।
परबत्त क पंखिय[7] संजुगता[8] ॥५॥

थियौ[9] चोळ[10] सिंदूर कुंभाथळयं[11] ।
वन[12] गेरुअ[13] जांण विंभाचळयं ॥
चींधाळां[14] चींध[15] अयास चडे[16] ।
अनली-पंख[17] जांण भमै अनडै ॥६॥

घण चम्मर सीस गयंद घटा ।
जड-धारक मेर विखेर जटा ॥
गडडंति गुडंता मत्त-गयं ।
गरजंतिक[18] जांणय[19] गोरंभयं ॥७॥

सूंडाळां[20] आलम ढल्ल सिरै ।
नन्नावधि[21] वंसक नंद-गिरै ॥
घंटा-रव घूघर[22] सद्द हुए ।
बोलंत विहंगम[23] जांण घुवै[24] ॥८॥

पिलवांणां[25] आंकस पांण धरे ।
सुज दांमणि[26] जांणि खिवै[27] सिहरै[28] ॥
धज स्याह वरन्नह धम्मळियं[29] ।
परि लाल[30] सबज्जह पीयळयं[31] ॥९॥

किरणां रवि कूंत[32] करक्कळयं[33] ।
नभ जांणक नाखत्र मंडळयं ॥

---

१ इ. कंवलयं । २ इ. पंगति । ३ आ.इ. दंतुसलयं । ४ आ.इ. हिलीया । ५ आ.इ. जाती । ६ अ. हिंडुलता । इ. हीडूलता । ७ आ.इ. पंषी । ८ आ. संजुगत्ता । ९ इ. थीयो । १० आ. चौल । इ. चौ । ११ आ. कूभाथलयं । इ. कुंभाथलयं । १२ आ.इ. व्रन । १३ आ. गेरू । इ. गेरूं । १४ आ.इ. चीधाला । १५ आ.इ. चीध । १६ अ. चडै । १७ आ. अमली-पंष । १८ आ. गंरजंति । इ. गरजांतिक । १९ आ.इ. जांणे । २० आ.इ. सुडाला । २१ आ. ननावधि । इ. नजावधि । २२ आ. घुघर । २३ आ. विहगम । २४ इ. घुवे । २५ आ.इ. पीलवांणां । २६ आ.इ. दामणि । २७ आ.इ. षिवै । २८ आ.इ. सेहरे । २९ आ.इ. धमलीयं । ३० इ. लाग । ३१ अ. पीपलियं । ३२ इ. कुंत । ३३ आ. करकलयं ।

दुरवेस छिले जिंहंगीर दळं ।
हिले सातसमद्र क·····हेमजळं ॥१०॥

खूंदालम[1] फौज चडे खडिया[2] ।
असमांन क आभा ऊपडिया[3] ॥
पर तारां[4] सीरम साट पडै[5] ।
धज खेडै लागा खेंग घडै[6] ॥११॥

नळ बाजि[7] विडंगां राग नरै[8] ।
पारेवर बोलै जेण परै[9] ॥
तेजागळ तेज[10] तुरंग तिडैं[11] ।
नाखत्रव जांण निहंग खिडै ॥१२॥

झिरिया[12] अहलांणै[13] फीण झडै ।
खुरताळे खांना खोण पडै ॥
फडडाटा खेंग करै[14] फुरणे ।
नड[15] नीर हुबै किरि[16] नीझरणे[17] ॥१३॥

इळ[18] वाज वजावै[19] ऊपडता[20] ।
रिणतूर नसां भिळजै रुडता ॥
डांणां[21] किरि पाउ[22] पलंब डहै ।
वाजिद्रक वेग[23] विवांण वहै ॥१४॥

असवार दिवांना[24] तेज[25] तुरी[26] ।
खित नांखै[27] खेंग[28] उपाडि खुरी ॥
ऋमिया[29] दळ कोअण काबळरा ।
धडकंत रसातळ धूजि[30] धरा ॥१५॥

---

१ आ. षुंदालम । इ. षुदालम । २ आ. षडीयां । इ. षडीयां । ३ आ. ऊपडीया । इ. उपांडीया । ४ आ. पडनारां । इ. पडतालां । ५ आ.इ. पडे । ६ आ.इ. घडे । ७ इ. वजे । ८ आ.इ. नरे । ९ आ.इ. परे । १० इ. तेग । ११ आ. त्तिडै । इ. त्रिडै । १२ आ. झेरीया । इ. झैरीया । १३ आ. अैलांणे । इ. अंणांण । १४ आ. करे । १५ इ. निड । १६ आ. किरे । १७ इ. निझरणे । १८ इ. ईल । १९ इ. वजवे । २० आ. उपडता । २१ इ. डाणां । २२ इ. पाऊ । २३ बेग । २४ इ. दीवांना । २५ इ. तिज । २६ आ. तूरी । २७ इ. नाषै । २८ आ.इ. षेंग । २९ आ.इ. ऋमीया । ३० आ.इ. धूजि ।

गरदां धर अंबर गूंधाळियौ[1] ।
धमळा - गिर डूंगर[2] धूंधुळियौ[3] ॥
कटकां विच मीर सिकार करै ।
म्रिघ[4] नाहर संबर रोझ मरै ॥१६॥

कुदरत्ती कोमँड तांण[5] करै ।
छेदंत विहंग दुहंग[6] सरै ॥
रज धूधळ[7] समूह मिळे रयणं ।
ग्रहपत्ति प्रछन्न थयौ गयणं ॥१७॥

परबत्तां ऊपर[8] पंथ डहै[9] ।
गिरकंदर झंगर मोर गहै ॥
खुरसांण खुरम्म[10] सिरै खडियं[11] ।
उतराधक कंठळ ऊपडियं[12] ॥१८॥

भुजिया[13] दळ वादळ फौज झडां ।
घण सांवण[14] भाद्रव जांण घडां ॥
पमँग्गं पडताळ[15] पँयाळ[16] प्रमै[17] ।
भर भार सिरं[18] हर हार भ्रमै[19] ॥१९॥

जड ऊबड[20] व्रिक्ख[21] पडंत जुग्रा[22] ।
है पाए पहाड मसट्ट[23] हुग्रा[24] ॥
पति-साह[25] पयांण[26] पुरं...[27] कियं[28] ।
असमांनक अस्सणि[29] ऊलटियं[30] ॥२०॥

---

१ ग्रा. गूंधालीयां । इ. गुंधलीयां । २ ग्रा. डूगर । ३ ग्रा. धूधलीया । इ. धुधलीयां । ४ ग्रा. मृध । इ. म्रिग । ५ इ. ताण । ६ ग्र. दहंग । ७ ग्रा.इ. धूल । ८ इ. उपर । ९ ग्रा. डेहं । इ. डहे । १० इ. षुरंम । ११ ग्रा.इ. षडीयं । १२ ग्रा.इ. उपडीयं । १३ ग्रा.इ. भुजीया । १४ ग्रा. श्रावण । इ. श्रांवण । १५ ग्रा. पडताल । १६ ग्रा.इ. पयाल । १७ ग्रा. प्रमे । इ. द्रमे । १८ इ. सिर । १९ ग्रा.इ. भ्रमे । २० ग्रा.इ. उबड । २१ ग्रा. व्रिष । इ. व्रष । २२ ग्रा.इ. जूग्रा । २३ ग्रा.इ. मसट । २४ ग्रा. हूग्रा । २५ इ. पतसाह । २६ इ. पयाणै । २७ ग्रा.इ. पुर । २८ ग्रा.इ. कीयं । २९ ग्रा. ग्रसणि । इ. असण । ३० ग्रा. ऊलटीयं । इ. उलटीयं ।

दूहा

साह दळां जळ साइरां[1], जळहर[2] बूंदां[3] धार।
अंबर तारां महि त्रणां[4], केहो[5] लब्भै पार ॥१॥

ऊंड-पणो[6] पायाळ[7] में, ऊंच-पणो[8] व्रहमंड[9]।
असपति आरँभ तप अरक, सर अरजण कोमंड ॥२॥

गाथा

सुरतांण[10] दळ मेघांण[11] वद्दळं।
सपत समद्र पांणियं[12] सयळं[13] ॥
उडियण[14] रयणी गयणं[15]।
कुण संख्या मांनव करए ॥१॥

अग्रे दळाय पांणी मझि दळां।
कादमं गहणं ॥
दळ पुडि उडि[16] रेयणं[17]।
कौतूहळ[18] कोडि त्रियासा ॥२॥

कवित्त

नह संख्या कुंजरां, न का संख्या केकांणां।
नह संख्या हिंदुवां[19], संख नह[20] मुस्सळयांणां[21] ॥
नह संख्या लसकरां, न का संख्या नीसांणां[22]।
संख न का उमरांन[23], न को[24] खांनां सुरितांणां[25] ॥
नेजां न संख नेजाइतां[26], न को संख पाई-दळां[27]।
असपत्ति तणी फौजां असंख, मिळे कहळे मेहल्ळा ॥१॥

---

१ इ. सायरां। २ आ. जहर। ३ इ. बुदां। ४ आ. तणां। इ. त्रिणां। ५ आ. कैहो। इ. केहो। ६ इ. उडपणो। ७ आ.इ. पयाल। ८ इ. उचपणौं। ९ आ. ब्रह्मंड। इ. वृह्मंड। १० इ. सुरताण। ११ आ.इ. मेघाण। ११ आ.इ. पाणीय। १३ आ. सयंलं। १४ आ.इ. उडपण। १५ आ. गयंणं। १६ इ. उडी। १७ इ. रयणं। १८ आ.इ. कोतूहलं। १९ आ. हीदुवां। इ. हींडवां। २० इ. नही। २१ आ. मुसलमांणां। इ. मुसलमाणं। २२ इ. निसाणां। २३ इ. उमरां। २४ आ. न कौ। २५ आ. सुरिताणं। इ. सुरेताणं। २६ इ. नेजाइता। २७ आ. पाइ-दल। इ. पाय-दंलां।

सेना का पड़ाव

खड खूटा[1] जंगळे, खूटिगा[2] लाकड इंधण[3] ।
पांणी खूटा[4] द्रहे, कूंप[5] वापी लेखै कुण ॥
गाहट्टे गज दळां, कीध कादम्म सरोवर[6] ।
नह खूटा जळ नयां, जहां संगम रैणायर ॥
मुक्कांम कीध जोगण - पुरै[7], खूंदालम्म[8] लसक्करां[9] ।
गयाणाग[10] किया[11] गूडे[12] खडा, छांह हुई[13] सिर डूंगरां[14] ॥२॥

दूहा

तंबू[15] तांण सिराइचा[16], सहु[17] छाया वन - खंड ।
इळ पुडि ईंडा[18] मेल्हिया[19], किरि व्यायौ व्रहमंड[20] ॥१॥

फौजां डेरा फाबिया[21], दीसै हद्द विहद्द ।
सबज वरना स्याह व्रन[22], लाल सपेत[23] जरद्द ॥२॥

साह बइठा सोहिया[24], सभा[25] मसंदी[26] सज्झ[27] ।
चंद दिपंदा[28] वेखिया[29], जांण नखत्रां मज्झ[30] ॥३॥

विवह वरन्ना[31] कप्पड्डा, विवह वरन्नी[32] पाग ।
फजर हुवंदी फूलिया[33], जांण मलूकां[34] वाग ॥४॥

जांमे कसब जडाव नग, मरदां कळा अनूप[35] ।
जोति चिरागां[36] जगमगै[37], हेक हुवंदा रूप[38] ॥५॥

---

१ इ. षुटा । २ इ. षुटगा । ३ आ.इ. इंधण । ४ इ. षुटा । ५ आ. कूप । इ. कुवां । ६ इ. सरोवरां । ७ आ. जोगण-पूरै । ८ आ.इ. षुदालम । ९ आ. लसकारां । इ. लसकरां । १० आ. गयणांग । इ. गयणाग । ११ आ.इ. कीया । १२ आ. गूडर । इ. गुडर । १३ आ.इ. हुइ । १४ आ. डूगरां । इ. डुगरां । १५ इ. तंबु । १६ इ. सिरायचा । १७ इ. सहू । १८ इ. इंडा । १९ आ. मेल्हीया । इ. मेलीया । २० आ. व्रह्मंड । इ. वृह्मंड । २१ आ.इ. फाबीया । २२ आ. वरना । इ. व्रना । २३ इ. सफेद । २४ आ. सोहीयो । इ. सोहीया । २५ आ.इ. छभा । २६ इ. समंदी । २७ आ.इ. संभ । २८ आ. दीपदा । २९ आ.इ. वेषीया । ३० आ.इ. मंझ । ३१ आ. वरना । इ. वरंना । ३२ आ. वरनी । इ. वरंनी । ३३. आ.इ. फूलीया । ३४ मलुकां । ३५ इ. अनुप । ३६ इ. चीराकां । ३७ आ. जगमगे । ३८ आ.इ. रुप ।

काइब

सिंघासणौ वा इंद्रासणौ वा, प्रिथोपती[1] वा सरगपती वा ।
भ्रितं सुरो वा भ्रितं नरो वा, दिलीसरौ वा जगदीस रौ वा ॥१॥

गाथा

वंसौ वधति[2] बहुग्रं, अंतर[3] गति गंठि[4] वेध उतपन्नौ ।
संजोगि[5] अगनि[6] पतंगौ[7], प्रजळयं[8] अप मज्झेण ॥१॥
पितह पुत्र विरोधे, भ्रितह सोम[9] विग्रहे भ्राता ।
सजण जणा[10] निक्रोधे[11], खिम्या[12] समौ भेख जो नथि ॥२॥
जुग्रलं[13] हिंदुसथांन[14], घात सपत दीप सपतमैं ।
प्रबळ उपद्रह पेखे, खिति[15] डोलिथं[16] सीस खुरसांण[17] ॥३॥

दूहा[18]

दिलीसां भला भावता, खूंदाळम[19] खंधार ।
मांडव साहं खुरम्म रा, आया खब्बरदार ॥१॥
खुरम कटक्के अग्गळौ, साह दळे असमांन ।
मूळ न मावै मारका, दोय[20] खंडा इक म्यांन[21] ॥२॥
खालिक[22] खूरम न मन ही, नह मन्नै पीरांह ।
ऊभौ[23] खांडै ऊभियौ[24], आडौ हम्मीरांह ॥३॥
कळि[25] लग्गी सुरतांण घर, हैवै हुवा[26] उदास ।
तब कहा दीजे[27] थिग्गडो[28], जब फट्टै आकास ॥४॥

गाहा चौसर

सुणि सुरतांण[29] खुरम सुरतांणं[30], करि कांमंति[31] धुके बांणं ।
आगम बोलै वेद पुरांणं, खागै आवटिस्यै खुरसांणं ॥१॥

---

१ इ. प्रिथीपति । २ इ. वघती । ३ इ. अंतरि । ४ इ. गंठ । ५ इ. संजोग । ६ इ. अगन । ७ अ. पतंगौ । ८ इ. प्रजालयं । ९ इ. सम । १० इ. जण । ११ आ. निक्रोध । इ. निक्रौधे । १२ इ. ष्यमा । १३ इ. जूग्रल । १४ आ. हिंदुसथांनं । इ. हिंदूसथानं । १५ इ. षितं । १६ आ.इ. डोलीयं । १७ आ.इ. षुरसाणं । १८ इ. दूहा । १९ आ.इ. षुदालम । २० आ. दोइ । २१ आ.इ. एक । २२ इ. षालक । २३ आ.इ. उभौ । २४ आ. उभीयौ । इ. उभीयै । २५ इ. कल । २६ आ. हूआ । इ. हूवा । २७ अ. दीजे । २८ आ. थीगडी इ. थेगडी । २९ आ. सुरिताण । इ. सुरताण । ३० इ. सुरताणं । ३१ इ. कामंति ।

नरां नरिंदां[१] पार न लब्भै, वोरति[२] खुरम विढेवा विब्भै ।
साहतणो घर[३] फाटो सब्भै, ऊमर[४] माड पडै की अब्भै ॥२॥

लाखां स्यांन असंखां लसकर, बांह[५] लहै दुहूं लाख बहादर ।
आरंभ खुरम किया[६] आडंबर, चालण चाळा दीनी चादर ॥३॥

खंभूठांणां[७] गयंद खडोए, पावस जांण[८] परब्बत घोए ।
ढंचाळां सिर[९] ढल्लां सोए, पक्खर रोळ पंगंगां होए ॥४॥

खुरम री सेना रौ कूच

छंद ऊधोर

हूऔ[१०] खुरम हय असवार । वाजत्र वाजिया[११] तिण वार ।
रोड दमांम बंब रवद्द । सारस जांण बोलै सद्द ॥१॥

तडडै बुरंग त्रास निफेर[१२] । भाहर सद्द वाजै[१३] भेर ।
घुरि निसांण[१४] नौबत[१५] घाइ[१६] । साद सुहांमणा[१७] सहनाइ[१८] ॥२॥

चडिया[१९] भड तुरे चड चोट । काळी ध्रूस[२०] ऊपंड[२१] कोट ।
वागा[२२] जोड फौज वणाव । दम्मै दगगियो[२३]. दरियाव[२४] ॥३॥

खुर रव खैंग डंबर खेह । मिळिया[२५] जांण बारह मेह ।
ऊलटि[२६] सै नमै अखियात[२७] । सायर[२८] जांण[२९] फाटा सात ॥४॥

हिलिया[३०] खंभूठांणां हूंत[३१] । आगळि[३२] सिंघळी[३३] अदभूत[३४] ।
ऊंतग स्यांम गत्ति[३५] अजब्ब[३६] । पावस जांण घोया पब्ब ॥

मद्दोमत्त खंभ मरोड । जूह वहंति[३७] गैतूळ[३८]-जोड ।
मस्सी वरन[३९] मद्द मसत्त[४०] । पांखां[४१] उड्डिया[४२] परबत्त ॥६॥

---

१ आ.इ. नरिदां । २ इ. विपरीत । ३ इ. घरि । ४ आ.इ. उभर । ५ इ. वाह । ६ आ.इ. कीया । ७ इ. षांभुठाणां । ८ इ. जांणि । ९ आ. सिरि । १० इ. हुम्रो । ११ आ. वाजीया । १२ इ. नफेरि । १३ आ. गजेय । इ. वाजैय । १४ आ.इ. निसाण । १५ आ. नौवति । इ. नौवत्ती । १६ इ. घाई । १७ इ. सुहमणो । १८ इ. सहनाई । १९ आ.इ. चडीया । २० इ. ध्रह । २१ आ. उपडि । इ. उपर । २२ इ. वागां । २३ आ. दगगीयो । इ. दगगीयो । २४ आ.इ. दरीयाब । २५ आ.इ. मिलीया । २६ अ.आ. उलट । २७ इ. अषीयात । २८ आ. साइर । २९ आ.इ. जांणि । ३० आ. हिलीया । इ. हेलीया । ३१ आ.इ. हुंत । ३२ अ. आगल । ३३ आ.इ. सिघली । ३४ इ. अदभुत । ३५ इ. गीति । ३६ आ. अजिब । ३७ आ. वहव्ंति । इ. वहवहंत । ३८ आ.इ. गैतल । ३९ इ. वरंन । ४० इ. मसंत । ४१ अ. पाषो । इ. पाषां । ४२ आ. उडीया । इ. उडीयां ।

चडियै[1] गयण गज चीधांह । गुड्डी[2] जांण[3] फब्बि गिरांह ।
वाजै वीरघंट[4] विसाळ । पक्खर पूठि[5] घूघर-माळ[6] ॥७॥

ओप[7] सिंदूर तेल अपल्ल । गडडे[8] बाज ढळकै ढल्ल ।
वहता विडंग[9] दाखै वेग । मारुत पेरियौ[10] किरि मेग[11] ॥८॥

है-थट समद[12] जांण[13] हिलोळ । पमगां[14] हमस[15] पक्खर रोळ ।
क्रमते खुरमरै कटकेह । वसुधा बीखणी[16] विडंगेह ॥९॥

गिरवर डहर भ्रंगर गाहि[17] । पाघर किया[18]पमंगा[19]पाहि[20]।
थट्टं[21] ऊलटा गज - थाट । वहता करै ऊजड[22] वाट ॥१०॥

धरत्ती[23] घमस[24] तुरियं[25]धाउ । आकंप[26] हैकंपै[27] अहिराउ[28] ।
घसमस[29]धरणि फौजां[30]धूस[31] । गजदळ गरट थाट गडूस ॥११॥

खेडै खुरमं लसकर खूब[32] । अंबर वहै[33] जांणै[34] ऊब[35] ।
फोरै[36] खुरी फरहरताह । घोडा रहै घरहरताह ॥१२॥

खित पुडि[37] पडी भांति खुरांह[38] । तीना ऊरवरवं तुरांह ।
तपिए[39] ताळुए उतंग । पीसै मुहे[40] लोह पवंग ॥१३॥

तेजी तापडंत ततार । ऊपर[41] आवळा असवार ।
विडंगां दौड दडवडतेह । फुरणै[42] नास फडहडतेह ॥१४॥

साकुर[43] खडे पाखर सेर । फौजां वहै जोजण फेर ।
भल असवार भलहोडेह[44] । घमघम कैजमां[45] घोडेह ॥१५॥

---

१ आ.इ. चडीयै । २ आ.इ. गूंडी । ३ आ. जाण । इ. जांणि । ४ आ. वीरघंटं । ५ इ. पुठि । ६ आ.इ. घुघर-माल । ७ आ.इ. ओपि । ८ आ. मरुडे । ९ अ. विहंग । १० आ.इ. पेरीयो । ११ इ. वेग । १२ इ. समंद । १३ इ. जांणि । १४ आ. पवगां । इ. पवंगां । १५ इ. हसम । १६ इ. विषणी । १७ आ. गहि । १८ आ.इ. कीया । १९ आ.इ. पवंग । २० आ. पाइ । इ. पाई । २१ आ.इ. थिटब । इ. थिडंब । २२ आ.इ. उझड । २३ इ. धरति । २४ इ. घमसि । २५ आ.इ. तुरीयां । २६ इ. आकप । २७ आ. हैकपे । इ. हैकपै । २८ इ. अहिराऊ । २९ आ. घसमसि । ३० आ. फोजां । ३१ इ. घूसि । ३२ इ. षुब । ३३ आ. वह । ३४ आ. जांणे । ३५ इ. उब । ३६ आ. फोर । इ. फीरा । ३७ इ. पुडी । ३८ इ. षूरांह । ३९ आ. तपीए । इ. तपीऐ । ४० इ. मूहे । ४१ आ. उपरि । इ. उपर । ४२ आ.इ. फुरणे । ४३ इ. साकुंर । ४४ इ. भल-दोडेह । ४५ आ.इ. केजमां ।

झळहळ बूग साबळ[1] भूल । गुडिली[2] गयण मिलि गोधूल[3] ।
ऊपर[4] रजी[5] धार अंधार । दौडे[6] खुरमरा दळकार[7] ॥१६॥

पमंगां[8] पछट[9] खेहां पूर[10] । सूझै नहीं अंबर सूर ।
खिडिया[11] खुरमरा खरहंड । वसुधा धूंधाळा[12] व्रहमंड[13] ॥१७॥

परबत गहींजै[14] पाय[15] । थरहर भोम हैकंप थाय[16] ।
सीरम सेट[17] वाजै[18] साट । झरहर पसर हैमर झाट ॥१८॥

गडडै गयंद करता गोडि । रुडता दमांमां हुय[19] रोडि ।
द्रम्मी[20] वाज[21] घोडा दौडि[22] । पत्थर पंथां[23] भाजै पौडि[24] ॥१९॥

हैथट हुमस[25] हाहस होय । कटकां[26] ग्यांन संख न कोय[27] ।
लैणां[28] चलै[29] वळ-वळ लूर । खांन पठांण लसकर खूर[30] ॥२०॥

तांणै[31] मीर तीर घनंख । पाडै[32] गयण हूंता[33] पंख ।
दिस-दिस[34] मारिजै तिण दीह । सूग्रर[35] रोझ सांबर सीह ॥२१॥

साहण[36] सेन स्रब[37] चढ़ियाह[38] । आभा जांण ऊपडियाह[39] ।
आयौ[40] खुरम कर[41] इलकार । कोटां हुग्रौ[42] हाहाकार ॥२२॥

गाहा चौसर

गढ मांडव[43] बहुता[44] गुड्डि[45] पक्खरि । पूरै पारंभ दिल्ली[46] ऊपरि[47] ।
भंग अजै-गढ तोडै सैंभरि[48] । खुरम खडे आयौ रिणथंभरि ॥१॥

---

१ इ. भाबल । २ आ. गूडीली । ३ आ. मिलिगो । इ. गोमिलि । ४ आ. उपरि । इ. उपडि । ५ इ. घोर । ६ इ. दोडे । ७ आ. हलकार । ८ आ. पवगां । इ. पवंगां । ९ आ.इ. पछटि । १० इ. पुर । ११ आ.इ. षिडीया । १२ आ.इ. घुघला । १३ आ.इ. व्रहमंड । १४ आ. गहिजै । इ. गाईजै । १५ आ. पाइ । इ. पाई । १६ आ. थाइ । इ. थाई । १७ आ.इ. सेढ । १८ आ. वाजे । १९ आ. हुइ । इ. हुई । २० आ. द्रंमी । इ. द्रमीं । २१ आ.इ. वाजि । २२ इ. दोडि । २३ आ. पंथं । इ. पंथं । २४ इ. पोडि । २५ इ. हसम । २६ आ. कुंटक । इ. कटके । २७ आ.इ. कोइ । २८ इ. लीणां । २९ आ.इ. चले । ३० इ. षुर । ३१ आ.इ. तांणे । ३२ इ. पाडे । ३३ आ हुंता । इ. हूता । ३४ आ. दिसि दिसि । इ. दीस दीस । ३५ इ. सूवर । ३६ अ. सांहण । ३७ आ. श्रब । इ. सब । ३८ आ. चढीयाह । इ. चडीयाह । ३९ आ.इ. उपडीयाह । ४० इ. आयो । ४१ आ.इ. करि । ४२ आ हूंओ । इ. हूओ । ४३ आ.इ. मांझ । ४४ आ.इ. वहुता । ४५ आ.इ. गुडि । ४६ आ. दिली । इ. दीली । ४७ आ.इ. उपरि । ४८ आ. सैभरी । इ. सैभर ।

पसर पमंगां[1] भंग पहाडे[2] । चहुं[3] दिसि[4] प्रजा अलंगां चाडे ।
आयौ खुरम खडग उप्पाडे । कोटां जडिया[5] कुलफ किमाडै[6] ॥२॥

भिडे[7] साह-सूं[8] आपौ[9] भांणौ । जालिम खुरम करे जुलमांणौ ।
भोम पडे[10] नवखंड भगांणौ[11] । माथै ढिल्ली गाढ मंडांणौ[12] ॥३॥

मूक्यौ खुरम हुकम मेडत्तै । रांणें[13] "भीम" दिसौ रिण रत्तै ।
वपि वांकम[14] सादूळ[15] वहत्तै । तूं अजमेर करे गढ़ फत्तै ॥४॥

भीम सीसोदियां री सेना रौ वरणण

गाहेवा[16] अजमेर गिरव्वर । सूं[17] सादूळ माडंवा सम्मर ।
करग उपाडै "भीम" क्रिरम्मर । वधियौ[18] बांमण[19] जेम विकोदर ॥५॥

ईसर भीम पिथै कुळ मोडे[20] । खुरम सहाय[21] खत्रीवट घोडै[22] ।
सीसोदौ[23] सांमंत[24] सजोडै[25] । रांणौ[26] पडगरियौ[27] राठौडे[28] ॥६॥

मांझी[29] मोगर थटां मोडौ[30] । घाते[31] लखां दळां विच[32] घोडौ[33] ।
देसां दसां ऊपरे दौडौ । चढियौ[34] कळि चालण चीतोडौ[35] ॥७॥

छंद अडिल

असि भीम चडे । असमांन अडे ।
दम्मांम सदं । नीसांण नंदं ॥१॥

रिणतूर रुडै । गजथाट गुडै ।
दळ ऊलटियं[36] । गिर गाहटियं[37] ॥२॥

किरि हेम हिलै । सांमंत छिलै ।
ताजंत तुरी । मुख वंकि दुरी ॥३॥

---

१ आ. पवंगा । इ. पवंगां । २ आ. पहाडै । ३ आ. चिहु । इ. चिहूं । ४ आ. दिशि । इ. दिस । ५ आ.इ. जडीया । ६ आ.इ. कमाडे । ७ आ. भिड । इ. भिडण । ८ आ. सा सु । इ. साह सुं । ९ इ. आपां । १० अ. पडै । इ. करै । ११ अ. भगाणौ । १२ इ. मंडाणौ । १३ इ. राणै । १४ आ.इ. वांकिम । १५ आ. सादुल । १६ आ.इ. गहेवा । १७ आ.इ. सुं । १८ आ.इ. वधीयो । १९ आ.इ. वामण । २० आ.इ. मोडे । २१ आ. साहइ । इ. सहाई । २२ आ.इ. घोडै । २३ आ. सीसोदौ । इ. सीसोदो । २४ इ. सामंत । २५ इ. सजोडे । २६ आ. राणौ । २७ आ.इ. पडगरीयौ । २८ आ.इ. राठोडे । २९ इ. मोझी । ३० आ.इ. मोडौ । ३१ आ. घातै । इ. पाते । ३२ इ. वीच । ३३ इ. घोडो । ३४ आ.इ. चडीयौ । ३५ आ. चीतोडौ । इ. चीत्रोडो । ३६ आ.इ. उलटीयं । ३७ आ.इ. गाहटीयं ।

असि नास तिडे[1] । खरहंड खिडै[2] ।
पायाळ द्रमे[3] । सिरि[4] सेस भ्रमे[5] ॥४॥

है हींस हुम्रं । भैभंग भुम्रं[6] ।
भुज फौज भडां । घण रूप घडां ॥५॥

पड़ताल तुरे[7] । मिळि खेहु[8] खुरे ।
रज - डंबरयं । ढकि अंबरयं ॥६॥

हैं थाट हुबै[9] । नीसांण घुबै ।
भद्र - जात भलं । ढळकंत ढलं ॥७॥

वाजंत द्रमी । हैकंपि[10] जमी ।
हिल हैमरयं । लख पक्खरयं ॥८॥

फांबतं गजं । फररंत धजं ।
गुडि गैमरयं । किरि भक्खरयं ॥९॥

गिर झंगरयं । थिय[11] पद्धरयं ।
पुळि जंगमयं । रूळि कैजमयं ॥१०॥

चतुरंग दळं । दधि[12] जांण[13] हलं[14] ।
पैमाल घरां[15] । दस देस खरां ॥११॥

असि वेग वहै । गिरि[16] स्रंग गहै ।
रवि रैण[17] मिळै । मिहि[18] मैन मिळै ॥१२॥

दुइदूण दिसा । रजधूळ निसा ।
झिळि झूळ भरां[19] । तुडि वाजि तरां[20] ॥१३॥

असमांन फटा । किरि मेघ[21] घटा ।
गज गोडि करै । मद-दांण[22] झरै ॥१४॥

दळ देख डरै । भ्रिघ[23] मूंझ मरै ।
भिळि भोमि[24] तणी । पुडि वोम पणी ॥१५॥

---

१ आ.इ. त्रिडे । २ आ.इ. षिडे । ३ आ.इ. द्रमे । ४ इ. सिर । ५ आ. भ्रम । इ. भ्रमे । ६ आ. भूम्रं । ७ आ.इ. तुरे । ८ इ. षे । ९ आ.इ. घुबे । १० आ. हकंपि । ११ आ. थीय । १२ इ. दधी । १३ इ. जाण । १४ आ. हलां । इ जलां । १५ इ. घरा । १६ इ. गिर । १७ आ.इ. रेण । १८ इ. मिह । १९ इ. नरां । २० इ. तुरां । २१ आ. मेंघ । २२ अ. सद-दांण । २३ अ. भ्रग । २४ इ. भोम ।

फुण[1] नागि निमै[2] । गयणागि[3] गिमै[4] ।
रज पीजरयं । हय हींजरयं ॥१६॥

सट सीरमयं[5] । असि ऊरमयं[6] ।
क्रमि कोअणयं । लख सांहणयं ॥१७॥

घ्रू - मन्न घड़ै[7] । खुमांण[8] खड़ै ।
खडि - वाह[9] कियं[10] । मेल्हांण लियं[11] ॥१८॥

भीमेण भडं । ओपिये[12] अनडं[13] ।
चीतौड[14] घणी[15] । मुख मूंछ[16] वणी ॥१९॥

वन प्रज्जळयं । किरि मंगळयं ।
नर सिंघ रुखं । थियौ[17] पंच-मुखं ॥२०॥

भुज नीम जयं । दिढ[18] दाखवियं[19] ।
सादूळ दुडे[20] । पाहाड[21] पुडे[22] ॥२१॥

सादूल सींघ रो पलायन

कवित्त[23] छप्पै

पाहाडै[24] सादूळ[25] । भाजि चढियौ[26] भिडवायौ ।
चीतौडौ[27] चतुरंग । भीम दळ मेले आयौ ।
बळि बोलै[28] सीसोद[29], मूंछं[30] वळ[31] घाळै[32] मच्छरि[33] ।
अभै-दांन आपियौ[34], आव[35] पैलालि विनौ करि[36] ॥
सोभाग[37] सजीवन औखधी[38], तिण कारण तुडि बत्थ भरि ।
अजमेर उपाडिस[39] काइ[40] अनड, पबै-द्रोण हणमंत परि ॥१॥

---

१ अ. फुल । २ आ. निमे । ३ आ. गयणाग । ४ आ. गिमे । ५ आ. सीमंयं । ६ इ. उरमयं । ७ इ. घूडै । ८ इ. घुमांण । ९ इ. खडवाह । १० आ.इ. कीयां । ११ आ.इ. लीयं । १२ आ. ओपीयै । इ. ओपीयै । १३ आ. अनंड । इ अनड । १४ आ. चीतोड । इ. चित्रोड । १५ आ. घंणी । १६ इ. मुछ । १७ आ.इ. थीयो । १८ आ.इ. दिठ । १९ आ.इ. दाषवीय । २० अ. दुडै । २१ आ. पंहाड । इ. पहाड । २२ अ. पुडै । २३ आ.इ. कवित । २४ आ.इ. पहाडे । २५ इ. सादुल । २६ आ.इ. चडीयो । २७ आ. चीतोडो । इ. चित्रोडो । २८ आ. बोले । २९ आ. सीसोद । ३० आ.इ. मुछ । ३१ इ. बलि । ३२ आ.इ. घाले । ३३ आ.इ. मछरि । ३४ आ.इ. अपीयो । ३५ आ.इ. आवि । ३६ इ. विनोकरि । ३७ इ. सोभाग । ३८ आ.इ. ओषधी । ३९ आ. उपाडीस । इ. उपडसी । ४० इ. काई ।

अजमेरा ऊतरै[१], कमळ कूं[२] बोल चडावै[३] ।
मेल्हि[४] पराक्रम मछरं, कुळह काळक्ख[५] लगावै[६] ।।
जत्त सत्त गरू-अत[७], तजै[८] पोरस आपांणो ।
अडप छाडि अहंकार[९], हुए[१०] बळ - हीण निमांणो ।।
निज सीस नमै[११] जळ निग्गमें[१२], पुणो[१३] सौंस[१४] वीआपरो ।
लुघ[१५] तूळ[१६] हुए[१७] लज्जावियो[१८], नांम सिंघ सादूळरो ।।२।।
तेज रोस तांमस[१९], सत्त सूरातन छोडै ।
सबळ-पणो[२०] मेल्हियो[२१], नहीं[२२] लाह थळ संकोडै[२३] ।।
लोभ मोह - बंधणो, गयौ गळ बंधण बध्धौ ।
जिह[२४] भखतौ आंमंख[२५], तेह दंतै त्रिण खध्धौ ।।
गह दाख[२६] गीत[२७] गावाडतौ, तूं[२८] राठौडां ईढ-गर[२९] ।
"सादूळ" न एतौ गरबियो[३०], गरब पहारी ईसवर[३१] ।।३।।

दूहा

खुरम पौहतौ सीकरी, है खढिए[३२] इळकार ।
झूझारे गढ़ झल्लिया[३३], नह झल्ली[३४] तरवार ।।१।।
सादूलै संकळ सहै[३५], तोडै लाज[३६] जंजीर ।
स्रोण सलो-भो[३७] चीतवै[३८], गिणो[३९] निलो-भौ[४०] नीर ।।२।।
उतारै[४१] अजमेर सूं[४२], खुरम सनमुख[४३] आंण[४४] ।
कर साहे "सादूळ" नुं, खेलायो[४५] खूमांण[४६] ।।३।।

---

१ आ. उतरे । इ. ऊतरे । आ.इ. कु । ३ आ.इ. चडावे । ४ इ. मेलि । ५ आ. कालक । इ. कालंक । ६ आ.इ. लगावे । ७ इ. गरुअत । ८ आ.इ. तजे । ९ आ.इ. अैहंकार। १० इ. हूए । ११ आ. नमे । इ. निमै । १२ आ.इ. नीग । १३ आ. पूणो । इ. पूंणो । १४ आ.इ. सांस । १५ इ. लुघु । १६ इ. तुल । १७ इ. हुवे । १८ आ.इ. लजावीयो । १९ अ. नामंस । २० आ.इ. पण । २१ आ.इ. मेल्हीयो । २२ आ. न । इ. ने । २३ आ इ. संकोडे । २४ आ.इ. जेह । २५ इ. आमंष । २६ आ.इ. दाषि । २७ इ. गित । २८ इ. तु । २९ आ.इ. इढ गर । ३० आ इ. गरबीयो । ३१ आ. इसवर । ३२ आ. हैखडीय । ३३ आ.इ. झलीया । ३४ आ.इ. झलीया । ३५ इ. सहे । ३६ इ. लात । ३७ अ. सलोणी । ३८ आ. चीतवे । इ. चितवे । ३९ आ.इ. गिणे । ४० इ. न लोभो । ४१ आ. उतारे । इ. ऊतारे । ४२ इ. सुं । ४३ इ. सनमुंष । ४४ आ.इ. आणि । ४५ आ. पेलायो । इ. षेलायो । ४६ आ.इ. षुमांणि ।

लाख लसक्कर ऊदडे[1], चढिया[2] घोडां चूच[3] ।
जंगम जोगण-पुर दिसा, खुरम खडे[4] दर-कूच ॥४॥

खुरम री सेना रो दिल्ली री ओर कूच

छंद मथांण

काबल्ली चूच[5] । खड़े दर-कूच ।
सहू[6] सुरतांण । खडे खुरसांणं ॥१॥

खुरम्म[7] खंधार । उलट्टि अपार ।
गरज्जि निसांण । करै[8] असमांण ॥२॥

दमांमां[9] चंड । धुबै[10] ब्रहमंड[11] ।
क्रमै[12] दळकार । गुडै[13] गज-भार ॥३॥

तुरां पडताळ । धडक्कि[14] पयाळ ।
डरै दस-देस[15] । तपै[16] फुण सेस ॥४॥

क्रमंत केकांण । क वोम विवांण ।
वहै वरहास । धमंत्ता[17] नास ॥५॥

सिरंमां[18] साट । हुबै[19] हाय-थाट ।
धरा रज-धूळ । मुडै[20] व्रिख[21] मूळ ॥६॥

पम्रक्खर-रोर[22] । लसक्कर लोर ।
क्रमै[23] दळ कोम । गह-मह[24] गोम ॥७॥

गरज्जंत नाग । किरै[25] गयणाग ।
सयंकळ[26] तोड । करै तळ-जोड ॥८॥

गुडै गज-रूपं । क मैघ सरूप ।
गयंद गडाड । प्रतक्क[27] पहाड ॥९॥

---

१ आ.इ. उपडे । २ आ. चढीया । इ. चडीया । ३ आ. चूंच । इ. चुच । ४ अ. षडै । ५ इ. चुंच । ६ आ.इ. सहु । ७ आ. षुरम । इ. षुरंम । ८ आ.इ. करे । ९ इ. दमांमां । १० आ. धुवे । इ. धूवे । ११ आ. व्रहमंड । इ. वृह्मंड । १२ आ.इ. क्रमे । १३ आ.इ. गुडे । १४ आ. धडकी । इ. धडकि । १५ इ. दसरेस । १६ आ.इ. तपे । १७ आ.इ. धमता । १८ आ.इ. सीरमां । १९ आ.इ. हुवे । २० इ. मुडे । २१ आ. विृष । इ. वृष । २२ आ. रार । इ. रोल । २३ आ.इ. क्रमे । २४ अ. गव्यमह । २५ आ.इ. फिरे । २६ इ. सघकल । २७ आ.इ. प्रतिक ।

दिपै[1] गय दंत । घटा बग - पंत ।
सळक्कि समूह । हयत्थट हूह ॥१०॥

वसुध्धा वट्ट । पैमाल पहट्ट ।
गोधूळ गरद्द । पाखे गय - मद्द ॥११॥

छिले[2] दधि छौळ । दळां वधि लोळ[3] ।
पवंगां[4] पाइ[5] । पडै खड हाइ[6] ॥१२॥

घुजै[7] धमहम्म । वाराह कुरम्म[8] ।
कटक्कह - बंध । सप्तह सिंध[9] ॥१३॥

चलै चतुरंग । मुभ्भंत कुरंग ।
उरव्वड[10] अस्स[11] । धरा धसमस्स[12] ॥१४॥

हैपाइ[13] हमस्स[14] । धाइत धमस्स ।
गा त अलंग । पहाड सिरंग ॥१५॥

हैं - थाट हसम्म[15] । हालंत हैजम्म[16] ।
नगारां नद्द । गिरा पड-सद्द[17] ॥१६॥

गयंद गुडंत । निसांण रूडंत[18] ।
तूरी दवडंत । धरा धडडंत ॥१७॥

कटक्क क्रमंत । भाला चमकंत ।
खडै[19] खरहंड । खळभ्भल खंड ॥१८॥

वसध्धा वाज । गिरव्वर गाज ।
दगग्गे देम । जळानिध[20] जेम ॥१९॥

तुरां उखरंब । उडंत[21] दिडंब ।
अधार उधोळ । धारा धमरोळ ॥२०॥

कटक्क कांधार । समूह[22] सेलार ।
पयांण करंत । मेल्हांण दियंत ॥२१॥

---

१ इ. दियै । २ आ.इ. छिले कि । ३ आ. लोल । ४ आ. पवंगा । ५ आ. पाई । ६ आ.इ. हाई । ७ आ. घूजे । इ. घूजै । ८ आ. कूरम । इ. कूरंम । ९ आ. सिध । १० आ. उरवड । इ. उरवडि । ११ आ. असि । १२ आ. धसमसि । १३ इ. पाई । १४ आ.इ. हमस । १५ आ.इ. हसंम । १६ आ. हैजंम । इ. हैज्मं । १७ आ.इ. पडिसद १८ आ.इ. रुडंति । १९ आ.इ. षडे । २० आ. जलनिध । २१ इ. उडंति । २२ समुह ।

फौज रौ पड़ाव

कवित्त छप्पै

पतिसाहां दळ पडे[1], उभै मेहल[2] अहिनांणै[3] ।
जमीदोज कियं[4] खडा, गयण छायौ समियांणै[5] ॥
धोळा कप्पड कोट, जांणि धमळा-गिर धारां ।
निसाचारा[6] कै प्रळै, वंस किरि भार अढारां ॥
जीहां[7] खुरम्म ऊपर[8] जमी[9], दोई[10] खुंदालम[11] आहुडै[12] ।
मुक्कांम किया[13] दिल्ली-मंडळ, आसमांन[14] गूंडर[15] अडै[16] ॥१॥

बे घुरत्ति नौबत्ति, तूर[17] दम्मांम त्रिघाई ।
तबल ताळ कंसाळ, भरे[18] बरधू[19] सहनाई ।
चौघडियौ[20] नीसांण[21], रोड[22] रिणतूरां आगळ[23] ।
मही धूम-मत्थांण[24], कन्ह अवतार क गोकळ ॥
दहलिया[25] तांम च्यारै दिसी[26], दस द्रिग-पाळ[27] डरप्पिया[28] ।
जुध करण एक[29] जोगण-पुरह, बेयतिसाह अडप्पिया[30] ॥२॥

हुई[31] हालोहळ[32] सबळ, धुरै निसांण नगारा ।
करै[33] कोप क्रांमत्ति[34], कथन बोलंत करारा ॥
गज्जनाळ[35] गडिग्रडै[36], भार मत्थै गज-भारां ।
चौकी फौज चडंत, भूल भूठां जूंझारां[37] ॥
असमांन[38] उभैदळ ऊलटा, उदधी[39] जांण उलट्टिया[40] ।
पाधरै खेत पतिसाह बे, नेजा गाडि निहट्टिया[41] ॥३॥

---

१ अ. पडै । २ अ. माहल । आ. महल । ३ आ.इ. अहिनांणे । ४ आ. कीय । इ. कीया । ५ आ. समयाणे । इ. समीयांणे । ६ इ. निसचरा । ७ आ.इ. जिहां । ८ आ.इ. उपरि । ९ इ. जिमी । १० आ. दोइ । इ. दोय । ११ आ.इ. षुदालस । १२ आ. आहुडे । इ. आहूडे । १३ आ.इ. कीया । १४ आ.इ. असमांन । १५ आ. गूडर । इ. गुडर । १६ आ.इ. अडे । १७ इ. तुर । १८ अ.आ. भरै । १९ इ. वर्धू । २० आ.इ. चोघड़ीयो । २१ इ. निसांण । २२ आ. रोड । २३ इ. अगल । २४ अ. धुम-मथांण । २५ आ.इ. दहलीया । २६ इ. दीसि । २७ इ. द्रीगपाल । २८ आ.इ. डरपीया । २९ इ. ऐक । ३० आ.इ. अडपीया । ३१ इ. हूई । ३२ इ. हालोहल । ३३ इ. करे । ३४ इ. क्रमंति । ३५ आ. गजनालि । इ. गजनाल । ३६ आ.इ. गडीअडे । ३७ आ.इ- झूझारां । ३८ आ. असमांण । ३९ आ.इ. उदधि । ४० आ. उलटीयां । इ. उलटीया । ४१ इ. निहटीया ।

तब खूरम[1] सुरतांण, खांनखांना ले सत्थह ।
उभै मेक जोजन्न[2], पूठि रहियौ[3] भारत्थह ।।
"भीम" रांणा खूमांण[4], बियौ विकमाइत[5] बंभण[6] ।
त्रियौ खांन दाराब, मुहर मंडै कळि मत्थण ।।

जिहंगीर खुरम जुडसी उभै, साखी[7] चंद दुडिंद[8] सुर ।
जोगणी - पीठ निहटा जवन, किर हथणापुर पंड कुर ।।४।।

कुर पंडव कळहिया[9], उभै कुर - खेत रिणंगण[10] ।
हुम्रौ[11] जांम भारत्थ, खपे अड्ढारह खोहण[12] ।।
जुजठिल्लह[13] दुज्जोण[14], मारि हथणा-पुर लीधौ[15] ।
भीखम द्रोण करन्न, कळह अरजण सूं[16] कीधौ ।।

बोळंत[17] सकति मो वळि[18] हुई, सुभट असंखां संघरे[19] ।
स्रोण इक[20] आज खप्पर भरसि[21] तई[22] एक खप्पर भरै[23] ।।५।।

चमर तेल सिंदूर, ढाळ माथै ढैचाळां ।
केकांणां कैजम्म[24], पंख किरि परबत माळां[25] ।।
असपती गजपती, फौज नरपत्ती फाबै[26] ।
जीण - साळ जोगिंद्र, डंड छक आवध डाबै ।।

ऊजळा[27] जरद मरदां अंगे[28], ऊंडौ[29] जांणक अंब द्रह ।
जिहंगीर रूप सिधांणवै, चडै[30] साह बंधै सिलह ।।६।।

गजां धूण[31] धाराळ, पिसण कुंजर ऊलाडण ।
भुजाडंड नीमजै[32], पैज परतापी[33] पाळण ।।

---

१ आ.इ. षुरम । २ आ. जोजन । इ. जोजंन । ३ आ.इ. रहीयौ । ४ आ. षुमांण । इ. षुंमांण । ५ इ. किकमाइत । ६ इ. बांभण । ७ इ. साष । ८ इ. दुडंद । ९. आ.इ. कलहीया । १० आ. रिण-गणि । इ. रिणयणि । ११ आ. हूम्रौ । इ. हूंवौ । १२ आ.इ. षोहणि । १३ आ. जुजुठिलह । १४ आ. दुजोण । इ. दुरुजोण । १५ आ. लिधौ । १६ आ.इ. सुं । १७ इ. बोलंति । १८ इ. बल । १९ अ. संघरै । २० इ. एक । २१ अ. भरति । २२ आ.इ. तइ । २३ इ. भरे । २४ आ.इ. केजम । २५ इ. पंरतमालां । २६ इ. फाबे । २७ आ.इ. उजला । २८ इ. अंग । २९ इ. उडौ । ३० आ.इ. चडे । ३१ इ. धुंण । ३२ आ. नीगजे । ३३ इ. परतंत्रिया ।

वीकोदर वीर वर, अनड पाहाड[1] असंकित ।
त्रिविध[2] फौज रचिअणी, अरध आठम[3] चंद्राकत[4]

सीसोदिया भीम री तैयारी

करि सिंघनाद कैलप्पुरी[5], दळां - थंभ दोखह दही ।
गरजियौ[6] "भीम" माती गहण, नेत-बंध[7] नागांध्रहौ[8] ॥७॥

गरजै गुण कोमडं, बूग छूटै[9] नळियारां[10] ।
कै बरळागि[11] खतंग, अंग घोडां असवारां ॥
पूर सौक[12] पखाळ[13], अरस छायौ आघंतरि ।
सरापंज किउ[14] पंथ, जांण खंडी - वन ऊपरि ॥
घड हुडै[15] धोम आतस घिखै, गैं लख पक्खर है गुडै[16] ।
रिणतूर[17] रूडै दळ आहुडै[18], बे खूंदालम[19] रिण चडै[20] ॥८॥

गाथा

विभ्रम विमोह चित्तं, सपत तुरंग तांणियं[21] सविता ।
वासर विसाळ लहियं[22], चक - वांणै मंगळ भवण ॥१॥

जुधवरण

* छंद मोती दांम

बिहूं[23] पतसाहां[24] बध्धौ[25] नेत ।
खरौ खुरसांण चईनो खेत ॥
महा जुध माती गोळै मार ।
अराबां[26] आतस छूटि[27] अपार ॥१॥

---

१ आ.इ. पहाड । २ इ. विघ । ३ अ. आठूं । आ. आठ । ४ आ. चंद्राक्रित । इ. चंद्रक्रित । ५ आ. कैलपूरी । इ. कैल पुरी । ६ आ.इ. गरजीयो । ६ इ. नेत्रबंध । ८ इ. नागंध्रहो । ९ आ. छूटे । १० आ. नलीयारां । ११ इ. बरलाषि । १२ आ.इ. सोक । १३ इ. पंषराल । १४ इ. कीउं । १५ आ.इ. घडहुडे । १६ आ.इ. गुडे । १७ इ. रिणतुरं । १८ आ. आहुडे । इ. आहूडे । १९ आ.इ. षुदालम । २० इ. चडे । २१ आ.इ. तांणीयां । २२ आ.इ. लहीयां । *आ.इ. प्रति में "अथ छंद मोती दांम" है । २३ आ.इ. बिहु । २४ इ. पतिसाहां । २५ आ.इ. बाधो । २६ इ. आराबा । २७ आ. छूटी ।

प्रचंडे[१] गोळै नाळ प्रचंड ।
वहंतै हैकंपियौ[२] ब्रहमंड[३] ।।
जुडंत[४] खुरंम अनै जिहगीर ।
तिडां[५] किरि[६] अंबर उड्डु तीर ।।२।।

*कोमंड गरज्ज हुए हलकार ।
भडां भालोड करंत भंभार ।।
एकूकी[७] मूठ[८] विछुट्ट[९] असंख ।
परै सर फूटै[१०] कोरी पंख ।।३।।

बिन्है दळ आहरता बंगाळ ।
रवद्र रूप हुए[११] रणताळ[१२] ।।
इळा[१३] पुडि घूज[१४] धुबे असमांण ।
अदभ्भुत ऊकाळियौ[१५] आरांण ।।४।।

वहै बीजूजळ[१६] हद्द - विहद्द[१७] ।
नचंत[१८] विनोद[१९] करंत नारद्द ।।
तमासै[२०] भांण हुओ[२१] रथ तांण[२२] ।
कहक्कह[२३] वीर हंसे[२४] कतियांण[२५] ।।५।।

झटक्कै धोम भटक्कै झाळ ।
घडां बिहुं घूम[२६] मचै घम-चाळ ।।
निदस्सै[२७] जोध जुआंण नित्रीठ ।
रुकां महिमात्तौ[२८] आकारीठ ।।६।।

बसक्कि झबक्कि बळक्कै सार ।
घावां मिळ तिम्मर घोर अंधार ।।

---

१ इ. प्रचंडे । २ आ.इ. हैकंपीयो । ३ आ. ब्रह्मंड । इ. व्रहमंड । ४ आ. जुडति । इ. जुडितं । ५ आ.इ. तीडां । ६ इ. कीरि । * आ. में यह पंक्ति "गरजि कोमंड हुए हलकार" । ७ इ. एकुकी । ८ इ. मुठ । ९ आ. विछूट । इ. विछूटी । १० आ.इ. फुटै । ११ आ. हुवै । इ. हुवं । १२ इ. रिणताल । १३ इ. ईला । १४ आ.इ. धुजि । १५ आ.इ. उकलीयो । १६ इ. विजुजल । १७ इ. हथ-विहद । १८ आ. नाचंति । इ. नाचंत । १९ आ. विणोद । इ. विणोद । २० इ. तमासो । २१ आ. हूओ । २२ इ. तांणि । २३ आ.इ. कह कह । २४ आ. हसे । २५ आ कतीयांणे । इ. कतीयांण । २६ इ. घुम । २७ आ. निदसै । इ. निदर्पें । २८ इ. मुहि मातो ।

सुभट्ट　विढ़ंत　वहै　समसेर ।
झराळ[1]　वढीवै[2]　सूळा　झेर ॥७॥

खडा - खड झाट[3] झडा - झड खग्ग ।
पडै　निरलंग　नरा　सिर　पग्ग ॥
झडां　करि - माळ　रिखग्ग　झडंत ।
पडै[4]　भुइ[5]　घाउ　निहाउ　पडंत ॥८॥

खळक्कै　स्त्रोण　छळक्कै　खाग ।
भडां　बह　अंग　हुवै　बहु　भाग ॥
उभै　पतिसाह　भिडै　अण - भंग ।
रमांइण[6]　भारथ　ए　रिण - जंग ॥९॥

हणै[7]　हण　हींजर　हैमर　हींस[8] ।
कळीयण　हूकळ　कुजंर[9]　क्रीस ॥
तुटंत[10]　तिमच्छ[11]　तणा　तरवार[12] ।
उलक्कापात[13]　उडां　उणिहार[14] ॥१०॥

पडै　पळ　खंडर[15]　पिंड　प्रचंड ।
वहै　घाउ　खागै　खंड　विहंड ॥
हुवै[16]　दळ सक्कळ[17]　हूक[18]　हमल्ल ।
ढहै　ढेचाळ　सहेता　ढ़ल्ल ॥११॥

•अबै　रुडं　मुडं　भडां　धड　अंत ।
मरग्गड　भाजि　असंध　मुडंत[19] ॥
असिमर　घाउ　वहै　वढ　आड ।
*हुवे　ति　मिरी　वढ़　गूडन　हाड ॥१२॥

---

१ आ. झराला　इ. झरालां । २ इ. वढिवे । ३ आ.इ. झाटि । ४ आ.इ. पिड । ५ इ. भुइई । ६ इ. रमांईण । ७ आ.इ. हणौ । ८ इ. हीस । ९ आ.इ. कूंजर । १० आ. तुटित । इ. तुटिति । ११ आ.इ. तिमछ । १२ आ. तरवारि । इ. तरिवारि । १३ आ. उलकापात । इ. उलकापाति । १४ इ. उणुहारि । १५ इ. पलि षंडर । १६ आ.इ. हुवे । १७ आ.इ. सबल । १८ इ. हुक । • आ. प्रति में यह पंक्ति "बे रुंड भडां धड बेहड अंत" । १९ इ. मुडत । * आ. प्रति में यह पंक्ति "हुवति मिरी वढ गूड न हाड" । इ. प्रति में यही पंक्ति "हुवंति मीरी वड गुड न हाड" ।

उडै खग[1] चोट घडां सू[2] अंत[3] ।
भडांचा सीस दडांचो भंत[4] ॥
अणी सर फूटै कूंत[5] अग्रांस ।
वबार[6] बपै[7] किरि वाजै व्रांस[8] ॥१३॥

कटै कडिग्राळ[9] वहै करमाळ ।
कुटक्कै कोपर कंध कपाळ ॥
बगत्तर जोध हुवंति[10] बिसुद्ध ।
जुटंत बहादर बाहुग्र जुद्ध ॥१४॥

संग्रांम खडग्ग वाहंत सनद्ध ।
वपै[11] पळ तंडळ ऊखळ वंद्ध ॥
वढै जरदैत जडाळ वहंति[12] ।
तुटंत[13] गडा किरि साबिण[14] तंति ॥१५॥

दड - हूड सीस पडंत दडाक ।
बडीयण[15] बंध असंघ बडाक ॥
समीवड आहुडिया[16] सुरतांण ।
खूटै[17] खर-हंड[18]तणा खुरसांण[19] ॥१६॥

किलंब कटक्कै ऊकट - काट[20] ।
गड्डस्स[21] गरट्ट गहै गज - थाट ॥
पडै उर - बल्ल[22] गडोथळ पिंड ।
भडा - भड[23] खल्ल जुवा[24] भुजदंड ॥१७॥

पडंति गयंद खडग्ग पछाड[25] ।
प्रळै किरि वज्रह[26] पत्त[27] पहाड ॥

---

१ आ.इ. षाग । २ आ. सुं । इ. सु । ३ आ.इ. अति । ४ आ.इ. भति । ५ आ.इ. कूत । ६ आ.इ. वा बार । ७ इ. वपे । ८ इ. व्रांस । ९ इ. कडीयाल । १० आ. हुविति । इ. हुविसि । ११ आ.इ. वपे । १२ आ.इ. वहति । १३ आ. तूंटंति । इ. दूटंति । १४ आ. साबेण । इ. साबण । १५ इ. बडीयड । १६ आ.इ. आहुडीया । १७ आ. षूटै । इ. षूटे । १८ अ. षड-हुंड । आ. षहहंडि । १९ आ. षुरसांणि । २० आ. उकट-काट । इ. उगट-गाट । २१ आ इ. गडस । २२ आ. उर-बल इ. डर-बल । २३ इ. भडां-भड । २४ आ.इ. जूवा । २५ इ. पछाड़ि । २६ इ. वज्र । २७ इ. पति ।

जरद्दां जेम चमक्कें[1] जागि ।
उठंति[2] भटक्कि[3] झटक्कै आगि ॥१८॥

बथां[4] जग-जेठ जुटै वळ-बंड ।
पडै गळि-बाहां[5] जोध प्रचंड ॥
वहोहळ[6] तेग खांडा-हळ[7] वाढ़ ।
दुवा सूं सेल पटा जंम दाढ़ ॥१९॥

राउत्तां[8] गात बंबाळ[9] रगत्त ।
करंमर[10] वाहि[11] किया[12] करवत्त ॥
अणी झबरक्क हुलां ऊझेल[13] ।
सनाह सुं सुतणं तोडै सेल ॥२०॥

धसै वरियांम[14] वहै खग-धार ।
विढ़ंति[15] सुवप्प पडंत विहार ॥
लडै हिक[16] सांमां लोह लियंत[17] ।
दियै हिक[18] पाव चडे गज-दंत ॥२१॥

लडै हिक[19] लालुरता छकि लोह ।
पडै हिक[20] पाइक ऊठै[21] छोहि[22] ॥
आवै हिक[23] वाहै[24] खग्ग उभारि ।
मुखां हिक[25] जोध कहै मारि मारि ॥२२॥

भिडे[26] हिक[27] नीजुडिऐ[28] भ्रकुटेह[29] ।
चडे हिक[30] रोस पडंत[31] चटेह[32] ॥

---

१ अ. चमक । इ. चकमक । २ अ. उरंति । इ. उडंति । ३ आ. भटकि । इ. भटाकि । ४ आ.इ. बाथां । ५ आ. गल-बांहो । इ. गलिबांहां । ६ आ.इ. वहोहुल । ७ अ. षंडाहल । आ. षांडहल । ८ इ. रावता । ९ आ.इ. बबाल । १० आ.इ. करमरि । ११ आ.इ. वहि । १२ आ.इ. कीया । १३ आ इ. उझेल । १४ आ.इ. वरीयांम । १५ इ. विढंत । १६ आ. हेक । इ. ऐक । १७ इ. लीयंत । १८ आ.इ. हेक । १९ आ.इ. हेक । २० आ.इ. हेक । २१ आ.इ. उठै । २२ इ. छोह । २३ आ.इ. हेक । २४ अ. वावै । २५ आ.इ. मुषा-हेक । २६ इ. भिडे । २७ आ.इ. हेक । २८ आ. नीजुडीए । इ. निजुडीये । २९ आ. भ्रिकुटेय । इ. भिकुटेय । ३० आ.इ. हेक । ३१ आ.इ. पडंति । ३२ अ.इ. चडेय ।

जुटै हिक[1] बथां[2] जोध जुआंण[3] ।
पौरस्स हुवै हिक[4] वाहै पांण ॥२३॥

भरै हिक[5] स्रोणी पिंड भुजाळ ।
विढै हिक[6] वीर हुआ[7] विकराळ ॥
करै हिक[8] हाकां जोध कंठीर ।
धारां हिक[9] भीक हुवै धर धीर ॥२४॥

चडै हिक[10] लोह[11] विवांणै[12] चीत[13] ।
वळै[14] हिक[15] खाइ गुडा विपरीत ॥
पिसै[16] के दांत भुजै[17] करि प्रांण ।
मुहै[18] चडि हेक[19] पडै मुह - तांण[20] ॥२६॥

खमै हिक[21] आवध गोडी खाय[22] ।
गडै हिक[23] भागै गुंछळ थाय[24] ॥
धड-द्धड[25] तूटै एक[26] धसंति ।
हिणै खग[27] खागै हेक हसंति ॥२६॥

जुडै[28] हिक[29] वींभरता[30] जम - दूत ।
कढै[31] हिक[32] मारि अणी सर कूंत ॥
वहै[33] हिक[34] घाउ वदै विख बांण ।
रिखै हिक गोळीयां[35] रिण-ढांण[36] ॥२७॥

उडै हिक[37] उड्डुण घाउ[38] असंभ ।
गुडै हिक[39] पाखरिया[40] गज - खंभ ॥

---

१ आ.इ. हेक । २ आ. वाथां । इ. वाथां । ३ इ. जुवांण । ४ आ.इ. हेक । ५ आ.इ. हेक । ६ आ.इ. हेक । ७ आ. हूआ । इ. हूअ । ८ आ.इ. हेक । ९ आ.इ. हेक । १० आ.इ. हेक । ११ इ. लोह । १२ इ. विवणै । १३ इ. चित । १४ आ. वल । इ. वहै । १५ आ.इ. हेक । १६ आ.इ. पीसै । १७ आ.इ. भुजे । १८ आ.इ. मुहे । १९ अ. हिक । २० इ. मूहतांण । २१ आ.इ. हेक । २२ आ. षाइ । इ. षाई । २३ आ.इ. हेक । २४ आ.इ. थाई । २५ आ.इ. धडि-धडि । २६ आ. अेक । इ. हेक । २७ आ. षाग । २८ आ. जुड़े । इ. जूडै । २९. आ.इ. हेक । ३० आ. वीबरता । इ. बिवरता । ३१ आ. काढे । ३२ आ.इ. हेक । ३३ आ. वाहै । ३४ आ.इ. हेक । ३५ आ.इ. गोलीयां । ३६ आ. रिण-ढाल । इ. रिण-ढंणी । ३७ आ.इ. हेक । ३८ इ, घाई । ३९ इ. हेक । ४० आ. पापरीया । इ. पापरी ।

वदै हिक[1] जै जै रांमह वाच ।
उछाळै हेक[2] छछोहा आच ॥२८॥

गळोवळ हेक[3] चटा - बख[4] गूंथ ।
लळावट[5] हेक लुळै हुइ[6] लूंथ ॥
चळ-व्वळ हेक हुआ[7] व्रन चोळ ।
धारां मुहि हेक दियै[8] घमरोळ ॥२९॥

रिणंगण हेकां आंत्र[9] रुळंत ।
हसत्ता दांतां हिक हींडुळ - अंत[10] ॥
लडै हिक[11] लागै लोहस - लोध ।
जमद्दढ़ टेक उठै हिक[12] जोध ॥३०॥

भयांनक हेक करै भराथ[13] ।
हिकां[14] मसतक्क पडै पग हाथ ॥
वेंणी - डंड[15] हेकां वीखरियाह[16] ।
लुटै[17] भुंइ[18] हेक लुही[19] भरियाह[20] ॥३१॥

घुमै[21] हिक[22] जोध सहै घण घाव ।
पड़ै पिंड हेकां स्रोण प्रवाव ॥
कटारां वाहै हेक कराळ ।
घडां सिर हेक ध्रवै धाराळ ॥३२॥

वाहै हिक[23] तेग भुजै[24] बरियांम[25] ।
वीरारस हेक विढै वरियांम[26] ॥
गुडै हिक[27] खाग[28] तुरी मद - गंध ।
गुडावै हिक[29] गुडै गज बंध ॥३३॥

---

१ आ.इ. हेक । २ आ. हिक । ३ आ. हिक । आ. हैक । ४ आ. चटा-वृष । ५ आ.इ. लोलावट । ६ इ. हुई । ७ आ. हूवा । इ. हूअ । ८ इ. दीयै । ९ इ. आंत । १० इ. हिंडूलयंत । ११ आ.इ. हेक । १२ आ.इ. हेक । १३ आ.इ. भाराथ । १४ आ.इ. हेकां । १५ इ. वेणी-डंड । १६ आ. विषरीयाह । इ. विषरीयांह । १७ आ.इ. लोटै । १८ आ. भूइं । इ. भूई । १९ आ.इ. लोही । २० आ.इ. भरीयाह । २१ आ. घूमै । इ. घुंमै । २२ आ.इ. हेक । २३ आ.इ. हेक । २४ आ.इ. भुजे । २५ इ. भरियांम । २६ आ.इ. वरीयांम । २७ आ. हेक । २८ आ. षागि । इ. षगि । २९ आ-इ. हेक ।

धुकै भड हेक धजव्वड[१] धाइ[२] ।
ग्रिणै हिक जोध वडै गज ग्राहि ।।
मिळै हिक रोस घणै रिण मांहि ।
फिरै हिक[३] फारक फेरी खाहि[४] ।।३४।।

धारां मुहि[५] हेक उडावै[६] धूप ।
जुडै हिक[७] जोध हुम्रा[८] जम - रूप ।।
पडै पिंडि[९] भोम तजै हिक[१०] प्रांण ।
खगां[११] मुहि हेक हुवै खळ हांण ।।३५।।

वीरा-रस हेक न मेल्है[१२] वाद ।
निहस्सै हेक करै सिंघ-नाद ।।
सिरै[१३] हिक धार प्रहार सहंत ।
लोहां मुहि हेक सुगत्त[१४] लहंत ।।३६।।

स्रोणी हिक[१५] हूम्रा[१६] व्रन्न[१७] सिंदूर ।
सिरै हिक[१८] तूटै[१९] जूटै सूर ।।
गडग्गड[२०] जोगणि रत्त[२१] गिळंत ।
हडहड नारद रिक्ख[२२] हसंत ।।३७।।

वडव्वड वीजळ[२३] धार वहंत ।
लडत्थड संकर सीस लहंत ।।
झडज्झड ओझड[२४] आवध झट्टं ।
लडल्लड लागै[२५] लोह सुभट्ट ।।
खडक्खड खंडा - खाट[२६] खडंत ।
धडध्धड हूंता[२७] ध्रूंह पडंत[२८] ।।३८।।

---

१ इ. धजवडि । २ इ. घाई । ३ आ.इ. हेक । ४ आ.इ. षाइ । ५ इ. मांहि । ६ आ.इ. उडाडे । ७ आ.इ. हेक । ८ आ. हूआ । इ. हुवा । ९ अ. पिंड । १० आ.इ. हेक । ११ आ. षाग । इ. षागां । १२ इ. मैले । १३ इ. सिरे । १४ आ. मुगत । इ. मुगति । १५ आ.इ. हेक । १६ इ. हुआ । १७ इ. व्रन । १८ आ.इ. हेक । १९ इ. तुटे । २० आ.इ, गड गड । २१ आ. रत । इ. रगत । २२ आ.इ. रिष । २३ आ. वीजुल । इ. विजुल । २४ आ.इ. ओझड । २५ आ. लागे । २६ आ.इ. षडाषड २७ इ. हूता । २८ इ. पडंति ।

कडकड त्रिज्जड[१] आवट - कूट[२] ।
फडफड प्रांण अणी सिर फूट ।।
हयब्भड सीस दडह्‌ड होइ[३] ।
तडफ्फड मच्छक[४] तोछै तोइ[५] ।।३९।।

भडीयड भांजि मरग्गड मूंड ।
रडव्वड रैण[६] करंडक रूंड ।।
झडप्फड पंखणि[७] सावज[८] भूळ ।
गुडंत गयाघण[९] गात्र सथूळ[१०] ।।४०।।

कवित्त

गुडै जूह मद - गंध, सेन अनमंध सुभट्टह ।
धड बेहड[११] ऊकरड[१२], कटै कोपट्ट भ्रिकुट्टह[१३] ।।
रगत खाळ परिनाळ, लगं पग्गां पायाळह[१४] ।
नवै कुळी[१५] नागिंद्र[१६], हुआ स्रौणी बंबाळह ।।
ऊजळै[१७] हूंत हूओ[१८] अरण[१९], सेसनाग[२०] सैहस[२१] फुणी[२२] ।
तिण वार डरै[२३] तिण कारणै, पेख[२४] पदमण नागणी ।।१।।

भोम भार झल्लियौ[२५], खडग झल्लै[२६] खूमांणै[२७] ।
कियौ[२८] सेन संघार, जांणि रूठै[२९] जमरांणै ।।
तबल वाजि असवार, पडै[३०] पक्खरिया[३१] हैमर ।
मीयां[३२] मीर मिलक्क[३३], खांन खुरसांणी खप्फर[३४] ।।
बंभण[३५] वजीर राजा बिरद, भारथ ओडवि उभै भुअ[३६] ।
सुरतांण खुरम दळ सेनपति, 'वीकम' खंड विहंड[३७] हुअ[३८] ।।२।।

---

१ आ.इ. त्रिजड । २ इ. आवट-कुट । ३ इ. होय । ४ आ. मछक । इ. मछिक । ५. इ. तोई । ६ आ. रेण । इ. रेणु । ७ आ.इ. पंषण । ८ आ. सावज । ९ आ. गया याड । इ. गय घड । १० इ. सथुल । ११ इ. वेहाड । १२ आ. उकरड । इ. उरकरड । १३ आ. भिकुटह । इ. भिकूटह । १४ आ.इ. पयालह । १५ आ.इ. नवै-कुल । १६ आ. नागिद्र । १७ आ.इ, उजलै । १८ इ. हूवो । १९ इ. अरूण । २० आ.इ. सेषनाग । २१ अ. सह । इ. सहस । २२ इ. फूणी । २३ आ. डरे । २४ अ. पेष । २५ आ.इ. झलीयो । २६ आ. झले । इ. झलें । २७ आ.इ. षुमाणै । २८ आ. कीयौ । इ. कीयो । २९ अ.आ. रुठे । ३० आ.इ. पडे । ३१ आ.इ. पषरीया । ३२ इ. मीरां मी । ३३ आ. मिलक । इ. मीलक । ३४ इ. प्रफर । ३५ इ. बांभण । ३६ आ. भूअ । ३७ अ. विहंड । ३८ अ. हूअ ।

जिही[1] सींह[2] सादूळ, नळै[3] हत्थळ[4] उपाडै[5] ।
छरा खग्ग ऊनंग, लग्ग गैणंग भमाडै[6] ॥
सिंघल दियौ साबल्ले[7], हिणै हेकूकी[8] हत्थळ ।
करडि कुंभ[9] गय गुडे, धरणि ओलरि दांतूसळ ॥

मोती अमुल जिहिं[10] झड पडै[11], भागमंत पामंत[12] नर ।
भूपाळ[13] कियौ[14] गोपाळरै, रिण चाचरि लज्जी नयर ॥३॥

रचि[15] अजाद[16] गज तुरी, बंधि[17]पेडी[18] धड बेहड ।
स्रोण अंब[19] अण थाग[20], मच्छ कूरम्म तुरी भड ॥
चिहुंर[21] जाळ सेव्रल्ल[22], लहरि[23] लग्गै[24] केवांणह ।
ओडणि[25] कमळणि पत्र, भ्रमर[26] गूंजै नीसांणह[27] ॥

पणिहार[28] सकति पांणी भरै, स्रोणी[30] खप्पर कूं भलै ।
"गोपाळ"तणै मंजन कियौ[31], रिण तळाइ भूपाळ ले ॥४॥

स्रोण[32] झील कमकमै, कियै[33] करिमरां चडाए ।
रचे[34] सेज[35] रिण-भोम, कुसम अरि कमळ विछाए[36] ॥
नखस[37]तिक्ख[38]सर कूंत[39], सहै अन-मंध[40]अचग्गळ[41] ।
पांण पयोहर कठण, मथै मैंगळ कुंभा - थळ ॥

विपरीत रहसि वीरा रसहि[42], रिण दूझल[43]हुइ[44]रट्टवड[45] ।
सूतौ संग्राम करि स्रोण-हर, भूप मांण संग्रांम घड ॥५॥

---

१ इ. जीही । २ आ.इ. सीह । ३ आ.इ. नला । ४ आ.इ. हथल । ५ आ. उकंडे । ६ आ.इ. भमाडे । ७ आ.इ. सबल । ८ आ. ककूकी । इ. हेंकुकी । ९ आ. कूभ । इ. कूंभ । १० आ.इ. जहां । ११ इ पडे । १२ अ. पाममंत । १३ आ.इ. भुपाल । १४ आ.इ. कीयौ । १५ आ. रचे । १६ आ.इ. मृजाद । १७ इ. बंध । १८ इ. पैडी । १९ इ. अंबर । २० इ. ऐणताग । २१ आ.इ. चिहोर । २२ आ. सोव्हतल । इ. सेवत । २३ आ. हरि । २४ आ.इ. लगै । २५ इ. ओडण । २६ आ.इ. चमर । २७ आ. गूजै । इ. गुंजै । २८ इ. निसांण । २९ आ. पसाहर । इ. पणहारि । ३० इ. श्रोणी । ३१ आ.इ. कीयौ । ३२ आ. श्रोणो । इ. श्रोणी । ३३ आ. कीयैं । इ. कीये । ३४ इ. रचै । ३५ आ. सेभ । ३६ इ. विछाये । ३७ आ. नषसि । ३८ आ. तीय । इ. तीयर । ३९ आ.इ. कूत । ४० आ. अन मंधि । इ. अनिमंध । ४१ आ.इ. अचगल । ४२ आ.इ. रसह । ४३ आ.इ. दुझल । ४४ इ. हुई । ४५ आ. रठवड । इ. राडवड ।

ईस सीस संग्रहे[१] , रुंड - माळा किउ[२] सद्धर[३] ।
अमख[४] ग्रीध उग्रजै, भूत वैताळ निसाचर ।।
पंखाळा नहराळ, सयळ[५] सावच्जह[६] धप्पै[७] ।
भखै[८] रत्त[९] भरि[१०] पत्र, सकति आसीस समप्पै[११] ।।
भूपाळ भिडे[१२] भीमेण छळि[१३], अच्छरमोह मूक्यौ[१४] सबळ ।
अंतरह जोति अविणास यह, गयौ भेद सूरज - मंडळ[१५] ।।६।।

गाथा

धारां तीरथ समंदौ, स्रोणी[१६] सलिल[१७] सुरभं[१८] भरए[१९] ।
परि[२०] पहुत्ता[२१] सुरौ, बैसै ग्रीध उडीयं[२२] हंसा ।।१।।
हड हड नारद हस्सियं[२३], पांण ग्रहण पेखियं[२४] सुहडां[२५] ।
मोता - हळ गज डसणं, रंभा आभूखणं चुणए[२६] ।।२।।
गै जूह मत्त गुढियं[२७], पिडे पळ खंड धार पहाडां ।
विपरीत वज्र पतंक, विहर सिंघ परबत्तह ।।३।।
वसुधा स्रोण सुरंगी, तुरियां[२८] धसळ वित्थुरी[२९] रैणा ।
आदू चपळ सहावौ, हुइ रत्ती हुइ अणरत्तह ।।४।।

कवि-वाच

दूहा

साहिजादौ सुरतांण, बे नाइक बाधै नेत ।
किरि हथणापुर कळहिया[३०], कुर-पंडव कुर-खेत ।।१।।
घर फूटौ घर कारणै, घर में लग्गी लाहि[३१] ।
जे जीतौ तो हारियौ[३२], दिल्लीवै पतिसाह ।।२।।

---

१ आ. सग्रहे । २ आ.इ. कीउ । ३ आ.इ. सधर । ४ आ.इ. अमंष । ५ इ. सघल । ६ आ. सांवजह । इ. सावजह । ७ आ.इ. धपे । ८ आ. भषे । ९ आ. रत । इ. रगत । १० इ. परि । ११ आ.इ. समपे । १२ आ.इ. भिडै । १३ इ. छल । १४ इ. मूंक्यो । १५ इ. सूरिज-मंडल । १६ इ. श्रोणी । १७ अ. सलि । १८ आ.इ. सुरंभ । १९ आ भरषा । २० परी । २१ आ. पहिता । इ. पहूंतां । २२ इ. उडयं । २३ आ.इ. हसीयं । २४ ओ.इ. पेषीयं । २५ आ. सोहडां । इ. सोहडो । २६ इ. चुणऐ । २७ आ.इ. गुडीयं । २८ आ.इ. तुरीयां । २९ आ.इ. विथुरी । ३० आ.इ. कलहीया । ३१ इ. भाहि । ३२ आ.इ. हारीयो ।

खुरम कहै मन बंध बळ, आतुर म हुइ[1] अधीर।
काइर[2] हुवां[3] न छूटि[4] है, जब[5] रूठौ जहंगीर[6] ॥३॥

साहिजादौ सुरतांण बे, रिण झूझै[7] रिम राह।
डार परिग्गह करि मुहरि, नीसरियौ[8] वारांह ॥४॥

खूंदालम[9] आगळ[10] खुरम, तौइ न कुसळ पडंत।
जे[11] पैसै पायाळ[12] तळ, जे असमांन चड़ंत ॥५॥

सत पराक्रम सूरमां, मन्न म हुआ[13] उदमाद[14]।
रोस फुणिंदां रंढ़ त्रियां[15], हम्मीरां हठ वाद ॥६॥

गाहा चौसर

पुत्रां कजि खाटै[16] धन पित्तं।
पुत्रां हूं घर हुवै प्रवित्तं[17] ॥
असुभ हुवै[18] तब[19] होइ[20] अहितं[21]।
विह[22] लिखियौ[23] बुधी[24] विपरीतं ॥१॥

ग्रहै[25] कवण[26] गिर-मेर[27] गिरव्वर[28]।
ऊबडियौ[29] कुण[30] सांधै अंबर[31] ॥
पाखै कुण राखै परमेसर।
साहतणौ घर फाटौ सायर ॥२॥

भिडवायौ सारौ[32] भुआ-मंडळ[33]।
वसुधा गोधम गहण चिहूं-वळ[34] ॥
किलबां महण[35] मत्थेहण[36] कंदळ।
दिल्ली मातौ[37] दुंद[38] दमंगळ[39] ॥३॥

---

१ इ. हूई। २ इ. कायर। ३ इ. हूआं। ४ आ.इ. छुटीयै। ५ इ. जम। ६ आ.इ. जिहंगीर। ७ आ. झुंझे। ८ आ. निसरीयो। इ. निसरीयो। ९ आ.इ. षुंदादम। १० आ.इ. आगलि। ११ अ.आ. जै। १२ आ.इ. पयाल। १३ आ.इ. हुवा। १४ अ. उनमांद। आ. उनभाव। १५ आ.इ. त्रीयां। १६ आ.इ. षाटे। १७ इ. पवित्रं। १८ इ. होवै। १९ अ. त। इ. होय। २० इ. अहितं। २१ इ. वेह। २२ आ. लिषीयो। इ. लीषीयो। २३ आ. बुध। इ. बुधि। २४ इ. ग्रह। २५ इ. कबांण। २६ आ.इ. मेर गिर। २७ आ.इ. गिरवर। २८ आ.इ. उवडीयो। २९ इ. कूण। ३० अ.आ. अमर। ३१ आ.इ. सारो। ३२ आ.इ. भूअ-मंडल। ३३ आ.इ. चिहुंवल। ३४ आ. किल-बांम। ३५ आ. हण-मथेण। ३६ आ. मांतो। ३७ दुद। ३८ आ.इ. दमगल।

मारामार[1] हुई[2] महि - मंडळ ।
मेछां[3] भंग पडै महि - मंडळ ॥
मांडै धीर नको महि - मंडळ ।
मच्छ गळा - गळ[4] दिल्ली - मंडळ ॥४॥

गाथा

कुपिया[5] कुटंब कळहौ, पावस पंथांण रोग प्रब्बळए[6] ।
दुरमत्ती[7] दुस्ट पुत्रौ, दूभरियं[8] पंच दुखाई ॥१॥

कुक्याऊ[9] कुळह मज्झे हुइयं, अद्याप तात न हुइण[10] ए ।
आदू पुरांण सुणिय[11], पांणह कमण कवियं[12] पांण ॥२॥

विकराळ काळ वदन, दारण दुजीह गरळ मैमत्तौ ।
विपरीत[13] कुळह ब्रती, इजगूरं या डिंभरुं गिळ ए ॥३॥

संसार मगन माया, कांमौ[14] क्रोधं लोभ मोहांणौ[15] ।
स्वारथ हित[16] करणौ, को[17] भ्राता तात[18] पुत्राई[19] ॥४॥

मुगळांणं[20] मुगध बुद्धी[21], कि[22] गुर सब्द[23] साधु उपदेसौ ।
दिन्न[24] मेक उदधि रहणौ, नह[25] मूंचित मगधांण[26] ॥५॥

दूहा

बादसाह रो विचार में पड़णो

मुग्गळवै[27] मां[28] दाखियो[29], मन लागंती[30] मार ।
जद झलिये[31] मुख मंझळी, तद केहो[32] उपचार ॥१॥

---

१ आ. मारामर । इ. मारा मारा । २ आ.इ. हुई । ३ इ. म्लेच्छां । ४ आ.इ. गिलागिल । ५ आ. कुपीया । ६ आ.इ. पवल । ७ अ. दुरमति । ८ अ.आ. दुभरीयं । ९ अ. कुक्याउ । इ. कुव्याउ । १० इ. हुहिण-ए । ११ इ. सुणीयं । १२ आ.इ. कपियं । १३ इ. विप्रीत । १४ इ. कामो । १५ इ. मोहिणो । १६ आ. हैत । इ. हेत । १७ इ. कूं । १८ अ. नात । इ. भ्रां । १९ आ.इ. पुत्रांइ । २० आ.इ. मुगलाण । २१ आ.इ. बुधी । २२ इ. कि । २३ आ. शब्द । इ. सबद । २४ आ,इ. दिन । २५ इ. नहि । २६ आ.इ. मछगांधाण । २७ आ. मूगल । इ. मुगलवै । २८ इ. मा । २९ आ.इ. दोषीयो । ३० इ. लागीती । ३१ आ. झलीयै । इ. फलीयै । ३२ इ. केहो ।

असपत[1] राव ओलीझियौ[2], विध[3] जिण वांकम[4] होइ।
कुमति[5] पग ऊपरं[6] कहै[7], कहौ[8] सुमंती कोइ ॥२॥

वडे वजीरे मंत्रिए[9], कहियौ[10] वयण विचार।
जो आवै राठौड नृप[11], तौ नह[12] आवै हार ॥३॥

धन सूरातन धन अडप, धन राठौडां ईस[13]।
सुणि सुरतांण कबूल की, वात विसव्वा-वीस[14] ॥४॥

बाहसाह रौ महाराजा गजसींघ नै सहायता सारू बुलावणौ

गाहा चौसर

आप कहै पतसाह[15] अचग्गळ[16]।
"गाजीसाह" कमणा[17] तो जांमळ॥
तूं[18] खुरसांण हिंदुवां[19] आगळ।
किलंबां-राइं लिखे इम कागळ ॥१॥

खांडै[20]-राव सिरै नव-खंडां।
मारू तौ[21] सिर भारथ मंडां[22]॥
भारथ[23] भळायौ[24] तौ[25] भूअ-डंडां[26]।
मांडे[27] तूं[28] थांभां व्रहमंडा[29] ॥२॥

तुं[30] राजा दळ-थंभ कहायौ।
ए[31] भर भार भुजै तो आयौ॥
इळ साइजादे[32] दुंद[33] उठायौ।
पातसाह[34] फुरमांण पठायौ ॥३॥

---

१ आ.इ. असपति। २ आ. ओलोभीयौ। इ. आलोभीयौ। ३ आ. विधि। ४ इ. वंकम। ५ आ इ. सुमतिज। ६ आ. उपरि। ७ अ. कहौ। ८ आ.इ. कहै। ९ आ. मंत्रीए। इ. मंत्रीये। १० आ.इ. कहीयौ। ११ आ.इ. नृिप। १२ इ. नहि। १३ आ. इस। १४ आ.इ. विसवा-वीस। १५ आ.इ. पतिसाह। १६ इ. अचगल। १७ इ. कवण। १८ आ.इ. तु। १९ आ. हींदूवां। इ. हीदूवां। २० आ. पांडेराव। २१ अ. तो। २२ अ. मंडे। २३ अ. भार। २४ आ. भलीयौ। २५ अ. तो। २६ इ. भूअडंडे। २७ आ. मांडै। २८ आ. तु। इ. तुं। २९ आ. ब्रह्मडां। इ. बूह्मडे। ३० आ. तु। इ. तुं। ३१ इ. ऐ। ३२ आ. साईजादे। इ. साहिजादे। ३३ इ. दुद। ३४ आ. पातिसाह। इ. पतिसाह।

हुजम लिखे मोकळियौ[१] हजरति ।
तांम[२] पहूंतौ[३] जोधां तख्खति[४] ॥
कमध वडी तो पासि[५] करामति ।
पति[६] मो रखी[७] कहै दिल्ली पति ॥४॥

दूहा

"गजपत्ती दिस मेल्हियौ[८], असपती फुरमांण ।
खुरम विलग्गौ राह हुइ[९], तौ छूटै खुरसांण ॥१॥
कमण सहींदू कुण तुरक, कमण कहैवा पीड ।
तो[१०] पाखै राउ राठवड[११], बियै न भज्जै भीड ।
हिंदूवै[१२] सुरतांण तूं, तूं सुरतांणां[१३] संड[१४] ।
तूं सुरतांणां[१५] चींतगर[१६]; तूं[१७] सुरतांणां[१८] चंड[१९] ॥३॥
गाड पडंतै "गजपती, पूठो जोध अडूर ।
तूं साह आलम समरियौ[२०], छीक अमूझी[२१] सूर ॥४॥
जोधपुरौ जोगणिपुरै, जग - जेठी वळवंत ।
लेण क लंका रांमचंद, हक्कारै हणमंत ॥५॥
"गजबंधी"[२२] तेडावियौ[२३], सगळौ[२४] साऊ[२५] सत्थं ।
इळि[२६] नवकोटी मुरधरा, कुण कुण सुहड[२७] समत्थ ॥६॥

महाराजा गजसींघरा सांमंतांरी सभा

छंद पध्धरी

"राजधर" आदि रिण भीम पत्थ ।
"खेमाळ" समोभ्रम[२७] खडग हत्थ ॥

---

१ आ.इ. मोकलीयो । २ आ.इ. ताम । ३ आ. पहुंतो । इ. पहुतो । ४ आ. तषति । इ. तषत । ५ आ. पास । ६ आ. पाढी । इ. पत । ७ आ.इ. राषी । ८ आ.इ. मेल्हीयो । ९ इ. हूय । १० अ. तो । ११ इ. रठवड । १२ आ. हींदूवं । इ. हींदुवै । १३ इ. सुरताण । १४ इ. सड । १५ इ. सुरतांणा । १६ इ. चितगिर । १७ आ.इ. तु । १८ इ. सुरताणा । १९ इ. चड । २० आ.इ. समरीयो । २१ अ. अमुही । २२ अ. गज वंधा । आ. गजवंधा । २३ आ.इ. तेडावियो । २४ इ. सगलो । २५ आ.इ. साउ । २६ इ. इल । २७ आ. सोहड । इ. सोहडण । २८ अ. समोभ्रमे ।

अजमेर कियो[1] जुध आसमांन[2] ।
आसोप तखत्तह राज - थांन ॥१॥

नवकोट धणी "गाजी" नरेस ।
दाहिणी[3] भुजा दीपै[4] महेस ॥
"सूरिजमल" पिता[5] सत्रु[6] संघारि ।
जिण लियो[7] मांन चहुवांण[8] मारि ॥२॥

मंडोवर रूप महेसदास ।
उतळी - बळ[9] पौरस अस्सहास[10] ॥
"दळपत्त"[11] सुत ओपम दळेय ।
दादौ[12] उदियासिंघ[13] "मालदेय" ॥३॥

"आसकन्न" कमध्धज अवीयाट[14] ।
परि-भवै[15] जेण पह मेद - पाट ॥
दळ - थंभ पिता "देदौ" अडूर ।
चहुवांणा[16] प्रवाडै लियो[17] सूर ॥४॥

जग - जेठ खत्री - गुर "खेम" जाउ ।
पीपाड[18] तखत्तह[19] कंन्हराउ ॥
दखणाध[20] देस विढ़ियौ[21] अगाहि ।
मुर दीह रहै[22] रिण[23] - खेत मांहि ॥५॥

खाडुक-मल[24] "मानौ" "खेम" नंद ।
चहुवांण जेण[25] भांजियौ[26] "चंद" ॥
बिरदैत जोध घाटै[27] - बराड ।
"गोइंद"[28] कणैठ काळौ - पहाड ॥६॥

---

१ आ.इ. कीयो । २ आ.इ. असमान । ३ अ. दांहिणी । इ. दाहणी । ४ इ. दापै । ५ आ.इ. पिता । ६ अ. सत्र । आ. सत । ७ आ.इ. लीयौ । ८ इ. चहुवांण । ९ आ. अतली बल । इ. अत्रुल-बल । १० आ.इ. असि हास । ११ इ. दलपति । १२ अ. दादो । १३ आ.इ. उदीयासिंघ । १४ इ. अवियाट । १५ आ. परिभवे । इ. परिभव । १६ इ. चहुवांण । १७ आ.इ. लीयो । १८ इ. पीपड । १९ आ.इ. तषतेह । २० आ. दषणाद । इ. दषणाधि । २१ आ.इ. विढीयो । २२ इ. रिहे । २३ इ. रिणै-पेत । २४ अ. षाड-कमळ । आ. षडकमलू । २५ आ. जेम । २६ आ.इ. भांजीयो । २७ आ. घाठ-बराड । इ. घाट-बराड । २८ इ. गेयंद ।

जगमाल　महेवै　जैंतहत्थं[1] ।
"मालै" तिलक्क रावळ समत्थ ।।
"दूदा" सु - नंद[2] दूसरौ "मेघ" ।
राठौड वहै व्रत त्याग तेग ।।७।।

भगवांन दास भाराथ[3] मल्ल ।
"वगडी" तखत्त[4] आखाडमल्ल[5] ।।
लांगडो हणुं जिम[6] लियण[7] बाथ ।
ओगम लागे[8] अणभंग नाथ ।।८।।

"जसवंत" मंडोवर दिग्गपाळ ।
"माहेस" कळोधर मच्छराळ ।।
"सादूळ" पिता विढ मरण दीह ।
देवडो संघारे समर सीह ।।९।।

"माधव" मयंद गय घड विभाड ।
पूरणलोत[9] प्रिसणां[10] पछाड ।।
है - थाट चलावै चाढ[11] हीक ।
मडळीक हरौ गिड मंडळीक ।।१०।।

नरपाळ काळ मांझी[12] निडार ।
"भांणौत[13]" भुज[14] नवकोट भार ।।
जैसिंघ हरौ जीपत्ति[15] जंग ।
इक पखर लक्ख पक्खर अभंग ।।११।।

बल्लाळ लहै[16] बिहुं[17] बांह लक्ख ।
राठौड रूप तेरहां[18] सक्ख ।।
"गोपाळ" समोभ्रम काळ जम्म ।
दहिया[19] घड डोहण भड दुगम्म ।।१२।।

---

१ इ. जैत्र हथ ।　२ आ.इ. सुतन ।　३ अ. भराथ ।　४ इ. तषेत ।　५ आ. आषड-मल । इ. आषडमल ।　६ इ. जियण ।　७ आ. लीयैण ।　८ आ.इ. लगै ।　९ आ. पूरणमलोत । इ. पूरमलोत ।　१० इ. पिसणां ।　११ आ.इ. चाडि ।　१२ आ.इ. माझी ।　१३ आ. भाण उत । इ. भांण उत ।　१४ इ. भुजे ।　१५ आ. जीपति ।　१६ इ. लहे ।　१७ इ, विहु ।　१८ आ.इ. तेरहै ।　१९ इ. दहीयां ।

वीठल्लदास वीराधि[1] - वीर ।
सांमंत अभंग रिण सूरधीर ।।
दहियौ[2] जिण मोडण जडि दवाढ ।
खींवर रिण वाहै खडग वाढ ।।१३।।

गोअरधन[3] गाढिम लोह - गड्ढ ।
सग्रांम - चंद समोभ्रम सनड्ढ ।।
बाळा - पुर विढियौ[4] बळ प्रमांण ।
वड रावत लौडौ[5] खुरासांण ।।१४।।

संग्रांम कांम "राजो" स "कूप" ।
राठौड प्रमांणै पंच - रूप ।।
"विसनावत" वीरति[6] वधी धाड[7] ।
मेडतियौ[8] मुइयड[9] भड किमाड ।।१५।।

गोपाळ दास गरूअत[10] मेर ।
पर घड विभाड पक्खरह सेर ।।
"सुंदर" सुतन्न सात्रवां[11] सल्ल ।
मरजाद महा नेठाह - मल्ल ।।१६।।

अणडोल असंकत आसक्रन्न[12] ।
मांनावत माझी निभै - मन्न ।।
"झूंझार[13] भार असमांन झेल ।
ईसर[14] हर ओपम रिण अठेल ।।१७।।

"जगतौ"[15] भुजाळ जमजाळ जोध ।
कमधज्ज भयंकर काळ क्रोध[16] ।।
"रांमउत" "रूप" राठौड वंस ।
अवतार वीरम - देव अंस ।।१८।।

---

१ इ. वीराध-वीर । २ आ.इ. दहीयो । ३ इ. गोवर-धन । ४ आ.इ. विढीयो । ५ आ.इ. लोडो । ६ इ. वीरत । ७ इ. वधीयाड । ८ आ. मेडतीयो । इ. मेडतीयो । ९ अ. मुईअड । १० आ. गरुअत । ११ आ.इ. सत्रुवां । १२ आ. आसक्रन । इ. आसक्रंन । १३ आ. झुझार । इ. झूझार । १४ आ.इ. इसर । १५ आ. जगतो । इ. जगता । १६ इ. क्रोध ।

हरदास विढ़ै वाहक्क मन्न ।
तुडतांण तुग[1] "नाहर" सुतन्न ।।
"सुरजन्न" हरौ समहर[2] अपल्ल ।
राठौड अभनमो[3] रायमल्ल[4] ।।१९।।

"राजौ" निराट रिम थाट - चूर ।
"सांवळ" सुतन्न ऊजळौ सूर ।।
अभनमौ भोज अणखूट चाइ[5] ।
घण कोपि आवूं घड वरण घाइ[6] ।।२०।।

जगनाथ तखत पाली जडाग[7] ।
अखराज[8] हरौ वरजाग[9] आग[10] ।।
दूसरौ[11] "मांन" माभी[12] दुभल्ल ।
मछरीक जिसौ मूंछाळ[13] मल्ल ।।२१।।

चहवांण "घाळ"[14] चम्मर[15] बंबाळ ।
सूरमौसीह सांमत सिंधाळ[16] ।।
"सिखरा" सुतन्न साचोर[17] सोह ।
दूसरौ "क्रन्न" अरि घडा डोह ।।२२।।

नरसिंघ दास नेठाह[18] धीर ।
जगमाल सुत्त कमधज[19] कंठीर ।।
उजवाळै "ऊंदां" हर[20] अबीह ।
डूंगरसी "जसवंत" तेजसीह ।।२३।।

"मोहण" आभूखण मारवाड[21] ।
राठौड जुडै जीपंत राड[22] ।।
"गोपाळ"तणौ खत्रियां[23] नगेम ।
खग त्याग अभनमौ[24] 'रयण' 'खेम' ।।२४।।

---

१ इ. तुड तुंग तांण । २ आ.इ. समहरि । ३ इ. अभिनभो । ४ इ. राइमल । ५ इ. चाई । ६ इ. घाई । ७ आ.इ. जडागि । ८ आ.इ. अषैराज । ९ इ. वरेजाग । १० आ.इ. आगि । ११ इ. दुसरो । १२ इ. मांझी । १३ आ. मूछाल । इ. मुछाल । १४ आ.इ. घाल । १५ आ.इ. चंमर । १६ आ. सिधाल । १७ इ. साचौर । १८ आ. नैठाह । १९ आ. कमधझ । २० आ.इ. उदांहर । २१ आ.इ. मारवाडि । २२ आ.इ. राडि । २३ आ. षत्तीयां । इ. षत्रीयां । २४ इ. अभनम ।

"अजमाल" भयंक ऊहडां[1] छात ।
"गिरमेर"तणा गिरमेर गात ।।
"कोढणा" धणी कमधजे राह ।
नव - कोटी आगळ नरां - नाह ।।२५।।

गोपाळय जांणै दसै[2] देस ।
नव - गढ किमाड माडह नरेस ।।
आसाव्रत[3] केवी करण अंत ।
काळै - नळ[4] भाटी करड दंत ।।२६।।

दळ रूप दळां ओपम "दयाळ" ।
बांहां प्रळंब[5] भाटी बांहाळ ।।
"गोपाळ"तणौ किरमाळ झल्ल ।
मछरीक वहै जिण[6] सहस मल्ल ।।२७।।

"केसव" "अजीत" सरजीत कोट ।
"वाघ" उत वरण अरि घड[7] अबोट ।।
"माल" हरौ[8] ओपम महि अजाद[9] ।
नव-गढ नरेस नव-गढां-नाद नाद ।।२८।।

मछरत्त[10] भीच[11] भाटी मरद्द ।
"अचळेस"[12] अचग्गळ रामचंद ।।
"सुरतांण"[13] पिता बंधियै[14] नेत ।
मुड[15] मांझी[16] मारै[17] मूअै[18] खेत ।।२९।।

रिण धोधर "बेणौ" प्रथीराज[19] ।
भाटियां[20] भुजे भाराथ लाज ।।
अजमेर मुओ[21] "गोइंद" तात ।
सकबंधी जांणै दीप सात ।।३०।।

---

१ आ.इ. उहडां । २ इ. दस । ३ आ.इ. आसाव्रत । ४ आ. काले-नल । इ. काल-नल । ५ आ. पलंब । ६ आ. जिसा । ७ इ. घडि । ८ आ.इ. मल हर । ९ आ.इ. मृजाद । १० आ. मछरत । इ. मछरंत । ११ इ. भाच । १२ इ. अचलस । १३ आ. सुरीतांण । १४ आ.इ. वधीयै । १५ आ. मुर । १६ आ. मोझी । इ. माझी । १७ आ.इ, मारे । १८ आ. मूओ । १९ आ.इ. प्रिथीराज । २० आ.इ. भाटीयां । २१ आ.इ. मूवौ ।

"ईसर" वहंत वपि वीर - व्रत ।
भाटियां[1] - राउ सांमह भगत्त ॥
हरदास तणौ[2] मारकां[3] हद्द ।
रण - ताळ काळ पाखर रवद्द ॥३१॥

हरदास न चूकै चाइ[4] चौज ।
अणहूंतै[5] वीकम[6] हुतै भौज[7] ॥
खग त्याग उजाळै टाळि खोड[8] ।
कांनावत जादम छपन कोड[9] ॥३२॥

रुघनाथ भीम भाटी भुजाळ ।
काळौ पहाड चालतौ काळ ॥
जोग-रज पिता नूप[10] छळि निभ्रंत ।
जमदाढ़ हणै[11] गरज प्रांण अंत ॥३३॥

"भगवांन" "भांण" वैचत्र[12] बाह ।
सुरतांण तणा समहर सनाह ॥
"रामेण" कळोधर "रूप" रेण ।
सारखा[13] अरज्जण भीमसेण ॥३४॥

देवडौ "अंचळ" दोमज[14] दुबाह[15] ।
"रावत्त" समोभ्रम[16] रिमां - राह ॥
"डूंगरे" मेर "परबत" "माळ" ।
अरबद्द अढ़ारै - गिरि[17] उजाळ[18] ॥३५॥

कळि-मूळ कमधज्ज "रूप"[19] कन्न ।
तुडि भुइ[20] अपल "जैमाल" तन्न ॥
अभनम्मौ "वीदौ" "भारमल्ल" ।
"बालां" हर[21] ओपम बाथ बल्ल ॥३६॥

---

१ आ.इ. भाटीयां । २ इ. हरौ । ३ इ. मारको । ४ आ.इ. चाई । ५ आ.इ. अणहुतै । ६ इ. विकम । ७ आ. फोज । इ. मोज । ८ आ. षाड । इ. षोडि । ९ इ. काडि । १० आ.इ. नूप । ११ आ.इ. हिएाँ । १२ इ. वेचत्र । १३ आ.इ. सारिष । १४ आ. दोमंझ । इ. दोमजि । १५ इ. दूबाह । १६ इ. समोभ्रम । १७ आ. अटारै-गिर । इ. बारैगिर । १८ आ. उजाल । १९ इ. कूंप । २० आ. भूइ । इ. भूई । २१ इ. बाला-हर ।

आसक्रन्न[1] वडौ[2] एकाधपत्ति[3] ।
नींब-उत[4] नमौ[5] आतम सकत्ति ॥
ओपमा[6] करन्नै अणं - नींद[7] ।
वरियांम[8] कुंआरी[9] घडा[10]-वींद ॥३७॥

"नरहरौ"[11] निडर "कल्यांण" नंद ।
कमध्धज पराक्रम कपी[12] चंद ॥
आया कणैठ, बंधव अबीह ।
त्रिवधी घड डोहण तेजसीह[13] ॥३८॥

पूरणह - मल्ल बाहां पलंब[14] ।
"ईंदा" हर[15] राखै रूकि अंब ॥
वर - वीर धीर सुरतांण वेत ।
वाखांण चौरासी वीर - खेत ॥३९॥

पडिहार भीम भुज दांन भत्त ।
प्रिथमी[16] दीप जांणै सपत्त ॥
थाकै सति साहंस[17] विस्सरांम ।
"नाद"[18]उत कियौ[19]रवि चंद नांम ॥४०॥

अनि अन्नि राज वंसी अनेक ।
इक्काह[20] भलौ वरियांम[21] एक[22] ॥
मोटा गढ़ जोधपुरै मझार ।
रावत्त मिळै राजां[23] दुवार ॥४१॥

आवंत[24] दरग्गह अन्न - मंध[25] ।
मौड - बंधा ठाकर मुगट - बंध ॥
जोधपुर धणी आगळ[26] जोधार ।
दीवांण[27] बइट्टा करि जुहार ॥४२॥

---

१ आ. आसक्रंन । २ आ.इ. वडो । ३ आ. एकाधपति । इ. ऐकाधपति । ४ आ.इ. नीब उत । ५ आ. नमो । इ. मो । ६ आ.इ. ओपम । ७ आ.इ. अण-नीद । ८ आ. वरयांम । इ. वरीयाम । ९ आ.इ. कुआरी । १० आ. घडां । ११ इ. नर हरो । १२ आ.इ. कपि । १३ इ. तेजसिंह । १४ इ. प्रलंब । १५ आ. ईंदा हर । इ. इंदाहर । १६ आ.इ. प्रिथमी । १७ इ. साहस । १८ आ. नाद ऊत । १९ आ.इ. कीयो । २० आ. दूकाह । इ. एकाह । २१ आ.इ. वरीयांम । २२ आ इक : २३ आ.इ. राज । २४ अ. आवत । २५ आ.इ. अनि-मंध । २६ आ. आगली । इ. आगलि । २७ इ. दीवाण ।

सांमंत[1] सुहड[2] दीपै[3] सरब्ब ।
जीपंत जिके जुध महा - प्रब्ब ॥
प्रौचाळ[4] महा जोधा प्रचंड ।
डोलता[5] डहै नभ भुजा - डंड ॥४३॥

ढैचाळ ढलां[6] ढाहण[7] सगाह ।
भड सिहर[8] जोध आजांन - बाह[9] ॥
चाचरै जिकै चांडंत देग ।
तेजरी तीह[10] तूटंत तेग ॥४४॥

दळ सुहडा[11] सूरा - तन दिपंति ।
पांन सूं दीप किरि प्राजळंति[12] ॥
दिग्गंबर देहा देव - गात ।
आदीत दुवां - दस[13] मुखै[14] आत ॥४५॥

वेहद्द हद्द वागै वणाव ।
चम्मीर हीर जांमै जडाव ॥
जगमगै जोप कसबी[15] अनूप ।
नोलक्क मसंजर लाल सूप ॥४६॥

आभूखण सोहै अंग अंग ।
सिर पाग[16] वादळाई सुचंग ॥
केसरिया[17] वागा वपे किद्ध[18] ।
सोहिया[19] सुहड[20] आखाड-सिद्ध[21] ॥४७॥

वरियांम[22] विराजै तेण वार ।
आभूखण वसत्रां अलंकार ॥
डांबिये[23] फरी सेले दुवाढ ।
जरकम्मर[24] तेगां जम्मदाढ ॥४८॥

---

१ आ.इ. सामंत । २ आ.इ. सोहड । ३ इ. दीपे । ४ आ.इ. पुचाल । ५ आ.इ. डोलतै । ६ आ.इ. ढल । ७ इ. गृहाण । ८ आ.इ. सेहर । ९आ. अजांन-बाह । इ. अजान-बाह । १० इ. त्यांह । ११ आ.इ. सोहड । १२ अ. प्राजलंत । १३ अ. दुआ - दस । १४ इ. मुषे । १५ आ. कसमी । १६ आ.इ. पाघ । १७ आ.इ. केसरीया । १८ आ. क़िध । इ. कीध । १९ आ.इ. सोहीया । २० आ. सौहड । इ. सोहड । २१ आ.इ. अषाड-सिध । २२ आ.इ. वरीयांम । २३ आ.इ. डाबीयै । २४ आ. ज़रकमर । इ. जरंकमरं ।

कोमुंड खवै कडि कसै तूंण[1]।
भड - पत्थक भीखम करन[2] द्रोण ॥
केसर तिलक्क भाळीग्रळेय[3]।
मुक्कता - माळ सोहै गळेय[4] ॥४९॥

हिरनमै पन्न हीरै[5] जडित्तं।
सांकळा करग्गे सुसोभित ॥
मुद्रका सुकर - साखा सुभग्ग।
मिण जांण दिपै फुण सेस नग्ग ॥५०॥

ग्राभरण रयण उद्यौत कार।
सौरंभ म्रग्ग - मद[6] रंभ सार ॥
देहा[7] विलेप स्रीखंड डाळ।
मालती चंपका[8] पुहुपमाळ[9] ॥५१॥

ग्रहि - वेल पत्र कप्पूर[10] सुक्ख।
तंबोल लाल सोहंत मुक्ख ॥
ग्राघ्रांण[11] छभा परिमळ ग्रसंख।
गुंजारव[12] डंबर भ्रमर[13] पंख[14] ॥५२॥

सोरंभ[15] फूट जब्बाध[16] एम।
घण वूठं जळहर लहर[17] जेम ॥
पेखियै[18] तास[19] सोभा[20] परम्म[21]।
किसनागर ग्रंबर जख कदम्म ॥५३॥

सूंघै सरीर किय[22] गरक्काब।
ग्रब्बीर नीर पहरै गुलाब ॥
सम्मूह सुहड[23] परिमळ सुभट्ट।
गांधियां[24] तणा[25] किरि[26] जांण हट्ट ॥५४॥

---

१ ग्र. तोण। इ. णि। २ इ. क्रन। ३ ग्रा इ. भालीग्रलेह। ४ इ. गलेह। ५ इ. हीरे। ६ ग्रा.इ. मृग-मद। ७ इ. देहां। ८ ग्रा.इ. चंपक। ९ ग्रा.इ. पुहपमाल। १० ग्रा. कपूर। इ. कपुर। ११ ग्रा.इ. ग्राघ्राण। १२ ग्रा.इ. गूंजारव। १३ ग्रा.इ. भमर। १४ ग्र. षंष। १५ ग्रा. सोंरभ। १६ ग्रा. जब्राध। इ. जुबाध। १७ इ. पलहर। १८ ग्रा. पेषीयै। इ. पेषीयै। १९ ग्रा. नास। २० इ. सौभा। २१ ग्रा. परम। इ. परंम। २२ ग्रा. थीयो। इ. कीयो। २३ ग्रो.इ. सोहड। २४ ग्रा.इ. गांधीया। २५ इ. तणां। २६ ग्र. किर।

रावत्त सहू राठौड देव ।
'गजपती' इंद[1] दूजौ[2] 'गंगेव' ।।
राजांन[3] राउ[4] राठौड धन्न ।
किरि जांण दीठ अवतार कन्ह ।।५५।।

गजसिंघ मेर गिरमेर गात ।
सिंघासण[5] आसण सीस छात[6] ।।
चौसर[7] सीस चम्मर ढुळंत[8] ।
कीरती[9] सुकब चारण भणंत ।।५६।।

'रुध' सांम वेद वाचंत[10] विप्र[11] ।
नखतैत राय[12]जद सुणंत[13]नृप्प[14] ।।
दीसंत[15] दुयँग[16] पद देव-गत्ति ।
दीवांण वडौ वड देसपत्ति ।।५७।।

दीवांण सुहड दीपै सुवंस ।
पाबासर जांणै राजहंस ।।
रावत इसा[17] मिळिया[18] राजिंद्र ।
अणुहार छभा सुर[19] जांण इंद्र[20] ।।५८।।

दूहा

इंद्रापुर आरख[21] इसा, प्रथमी[22] इंद्र[23] प्रताप ।
इंद्रा[24] छभा कमधां छभा, इंद्र 'गजैसी' आप ।।१।।

मध नायक[25] 'मांडण' हरौ, 'राजौ' भीम भुजाळ ।
सयळ छभा पंगति सुहड[26], जांणक[27] मुगतामाळ ।।२।।

चाचर सूर पऊर[28] गह, चाचर चाडै देग ।
लक्ख लहै दुहु वांह-बळि, दुइं[29] दुइं बंधै तेग ।।३।।

---

१ इ. ईंद्र । २ इ. दुजो । ३. आ. राजान । ४ इ. राव । ५ इ. सींघासण । ६ आ. छत्र । इ. छात्र । ७ अ. चौसरी । ८ आ.इ. ढुलंती । ९ आ. कीरति । इ. किरति । १० इ. वाचंति । ११ इ. व्रिप । १२ आ. राइ । इ. राई । १३ आ. सुणत । इ. सुणंति । १४ आ.इां नृिप । १५ आ. दीसंति । १६ आ. दुयंगग । इ. दुयंगम । १७ इ. ईसा । १८ इ. मिलीया । १९ इ. सूर । २० आ.इ. ईद्रं । २१ इ. आरीष । २२ अ.इ. प्रिथमी । २३ इ. इंद्र । २४ इंद्र । २५ आ. नाइक । इ. नाईक । २६ आ. सोहड । इ. सोहडि । २७ आ.इ. जाण । २८ इ. पउर । २९ अ. बलि ।

दीठी हेक दईव-गति, जोधपुरै दीवांण ।
सुहड[1] गडे-वड भड सिहर, मिळिया[2] रांणो[3]-रांण ॥४॥

कवि-वाच

गाथा

गजसिंघो[4] राजिंदौ, खत्रियें[5] राजसिंघ वर-खत्री[6] ।
सुर अधपत्ती[7] इंदो[8], सुर तेतीस क्रोड[9] सुरामुक्ख[10] ॥२॥
सिधांण छभा रुद्रो:[11], बळि पयाळ स्रग इंद्रांणो[12] ।
रट्ठौड वीर वसुधाः, त्रिभवणे[13] छभा चतुरहः ॥२॥
सुरपुरी अनंत सिद्धा, नभे नाखत्र-माळ नवलख ।
तेत्रीस[14] क्रोड,[15] सुरए, तेरह साखा[16] वंस राठौड्ह[17] ॥३॥
पाबासरेण हंसा, सिंघलदीपेण[18] सिंह[19] सादूळा ।
वीजा चले न नग्ग[20], जोधपुर जोध कमधज्जं ॥४॥
लिजीयो[21] नयरेण हीरा, सायर मझेण रतनं नेपती ।
स्रोवण[22] मेर सिखरे, सुहडा[23] सिध खेत मंडोवर ॥५॥
सांमंत[24] सुहड[25] सूरां[26], जोधा रिणमल जोधवरियांमं[27] ।
दीवांण[28] देसपत्ती, मिळिया[29] थट मेखळा-मेर ॥६॥

महाराजा गजसींघ रो वरणण

गाहा चौसर

साखेतां[30] सुहडां[31] सांमंतां[32] । विरदैतां जोधां वळवंतां[33] ।
'गाजीसाह' सिरैंगै[34] मंतां । रांणो-रांण[35] मिळै रावतां ॥१॥

---

१ आ.इ. सोहड । २ आ.इ. मिलीया । ३ आ.इ. रांणो-रांण । ४ आ.इ. गजसिंघो । ५ आ. षत्रीये । इ. षत्रीइ । ६ आ. वरषती । इ. वरषत्री । ७ आ. अघपती । इ. अधिपती । ८ आ. इंदो । इ. इंदो । ९ आ.इ. करेड । १० आ.इ. सुरमुष । ११ आ. रूदो । इ. रुदो । १२ आ. इद्राणो । १३ अ. तिभवणे । आ. त्रिभवण । १४ आ.इ. तेतीस । १५ आ.इ. कोड । १६ आ. सषा । इ. साष । १७ आ. रठोड । १८ आ. सीघलदीपेण । इ. सींघल दीपेण । १९ आ.इ. सीह । २० आ.इ. नगं । २१ अ. लीजे । आ. लिजी । २२ आ. श्रोवण । इ. श्रोण । २३ आ.इ. सोहड । २४ आ.इ. सामंत । २५ आ. सोहेड । इ. सोहड । २६ इ. सूरो । २७ आ. वेरीयांम । इ. वरीयांम । २८ इ. देवांण । २९ आ. मिलीयां । इ. मिलीया । ३० आ.इ. सषेतं । ३१ आ.इ. सोहडां । ३२ आ.इ. सामंतां । ३३ आ.इ. बलिवंतां । ३४ इ. सिरंगै । ३५ आ. राण राण ।

वीच छभा "गजसाह" विराजै । छत्रपाट सिंघासण छाजै ।
साजै नाद दिहाडै साजै । देखि कळा ससि[1] पूनम[2] लाजै ॥२॥
वीरति[3] मुख सूरति विळकुळियं[4] । कमधज तेज कमळ कळमळयं[5] ।
किसन वरण माझिल कंठलियं[6] । सूरज[7] किरण जांण झळहळियं[8] ॥३॥
सांम[9] धरम कुळ धरम संभारै[10] । आच "गजैसी" खडग उभारै[11] ।
ऊफणियौ[12] असमांन अधारै । मिळिया[13] मूंछ अणी भूंहारै[14] ॥४॥
साहस बळ छळ पेख सनसरियं[15] । राव राठौड वीर रस्सरिसीयं ।
क्रूंत त्रिभाग धूण[16] करसीयं । हठि चढि[17]कोप मुलक मुख[18]हसियं ॥५॥
कमध[19] कहै कर रूक[20] कळासौ । आतम जोध विद्या अभियासौ ।
वात रहै ब्रहमा वरसासौ । हुयसी जुद्ध नहीं ऐ[21] हासौ ॥६॥

महाराजा रा सांमंतां रौ वरणण

उठिया[22] सीह करै औवासी । वीजळ परतक चौमंडावासी[23] ।
थोडै जंग घणघणा[24] थासी । कोइ[25]मत मंत्र[26]सुमत्ति[27]प्रकासी ॥७॥
वांका[28]भीचि[29]घणै भरियावळि[30] । इम बोलिया[31] भुजाडंड आंमळि[32] ।
भिडता भांजै सबळ भुजां बळि । अै मुह रावत तो[33]मुंह[34]आगळि[35] ॥८॥
सुहडां[36] करि जुहार सव्वांही । राज महेल राज धू-आंही[37] ।
राजा पद्धारै रळियांही[38] । मुख हसतै राव लग्गन[39] माही ॥९॥

तेपुर - वरणण

कांमाकांम कमधज दीठौ[40] । पलकां अतंर[41] अमी पइट्ठौ[42] ।
रत्ता लोचन मुक्ख[43] मजीठौ[44] । आवि सिंघासण[45] सिंघ बइट्टै[46] ॥१०॥

---

१ आ.इ. सिसि । २ इ. पूनिम । ३ आ. वीरती । इ. विरति । ४ आ.इ. विलकुलीयं । ५ आ.इ. कलकलीयं । ६ आ. कंठलीयं । इ. कंठालीयं । ७ इ. सुरज । ८ आ.इ. झलहलीयं । ९ आ.इ. साम । १० आ.इ. संभारे । ११ आ.इ. उभारे । १२ आ.इ. उफणीयौ । १३ आ.इ. मिलीया । १४ आ.इ. भुंहारे । १५ आ. सांये । इ. सीयं । १६ आ. धुंण । इ. धुणे । १७ आ.इ. चडि । १८ आ. मूष । १९ इ. कमधज । २० आ. रूक । २१ इ. ए । २२ आ.इ. उठीया । २३ अ. चांमडवासी । २४ इ. घणै घण । २५ इ. कोई । २६ आ. मंत । २७ आ.इ. सुमति । २८ आ. वाका । २९ आ.इ. भीच । ३० आ.इ. भरीयावली । ३१ आ.इ. बोलीया । ३२ इ. अंमलि । ३३ इ. तो । ३४ आ. मुह । ३५ आ. आगली । ३६ आ.इ. सोहडां । ३७ आ. धुआंही । इ. धुआई । ३८ आ.इ. रलीयां । ३९ आ. लगन । ४० आ. दिढौ । ४१ आ.इ. अंतरि । ४२ आ. पयिठौ । इ. पयठौ । ४३ इ. मूष । ४४ आ. मजेठौ । ४५ आ. सिघासण । ४६ आ. बयिठौ । इ. बयठौ ।

वप[1] सोळह[2] सिणगार[3] वनित्ता । लखण बतीस संजुगत ललित्ता[4] ।
सोभा सारिख[5] किरण सवित्ता । दीपै[6] मंदर राज दुहिता ॥११॥
कनक-लता पत्र वसत्रक कांमणि । भूहां[7] भमर[8] विराजै भांमीणि ।
चपळ नयण प्रफुलत चंद्रांणण[9] । किरि पेखे हि-भ्रिगो[10] कमोदणि ॥१२॥
वदन कळा सोळह सिसहर वरि । कोमळ वप्प[11] वरन्नी केसरि[12] ।
वांमा अंग वणी वर सुंदरि[13] । कनकलता जांणे[14] कळप्पतरि[15] ॥१३॥
दैसौतां धूडह[16] भूलक्की । चंपक वरन कळी किरि पक्की ।
सांम सन-मुख आवी सबकी । सह बैठी सिणगार चवक्की ॥१४॥

गाथा

सिव सकत्ती सम मुगती[17], सिव मझि सकति सकति सिव मझे ।
आतम सकति सकति सिद्धी, सिव सकति पिंड व्रहमंडी[18] ॥१॥
प्राचीन करम सुभए[19], पुरखा[20] पाइत उत्तमा[21] महिला ।
कुळ-दीप पुत्र जिणयै[22], कुळ धू[23] बिनै रूप संजुगता ॥२॥

कवित्त

सीळ-मांन संजुगत, कळा सोळह ससि-वरणी[24] ।
वाघ-लंक पिक-वांणि[25], हंस-गमणी भ्रिग-नयणी[26] ॥
जिण जायौ "जसवंत", पाट पायौ सिंघासण ।
खुम्मांणी[27] पण खत्र, अंग लग्गौ[28] आभूखण[29] ॥
सारधू "भांण" सुहाग सूं[30], उदै-भाग आदीत वरि ।
कुळ-वहू "मल्ल" "गंगेव" घरि[31], कुळ-पुत्री "हम्मीर"[32] हरि ॥१॥

---

१ आ.इ. वपि । २ आ.इ. सोलंह । ३ आ. सिघर । इ. सिघार । ४ इ. ललता । ५ आ. सारष । ६ इ. दिपै । ७ आ. भ्रूहा । इ. भ्रुहं । ८ आ.इ. भ्रमर । ९ आ. चंद्राणिणि । इ. चंद्राणणी । १० आ. हिमग । इ. हिम्रग । ११ आ.इ. वपि । १२ आ. केसुरि । इ. कैसुरि । १३ आ. सुंदरी । १४ आ.इ. जांणो । १५ आ.इ. कलपतरि । १६ आ. धूडी । १७ आ.इ. जुगती । १८ अ.आ. व्रहमंडी । १९ आ. सुभुऐ । इ. सुभए । २० इ. में यह पंक्ति निम्न प्रकार है । 'पुरषा पाइत उजला उतमा महिला" । २१ अ. उत्मा । २२ आ. जिणये । इ. जिणऐ । २३ अ. धुव । २४ आ.इ. सिसि-वरणी । २५ आ. पिक-वाणि । इ. पिक-वांण । २६ आ. मिृग-नयनी । इ. मृग-नयणी । २७ इ. षुमांणी । २८ आ. लगो । इ. लगै । २९ आ. आभुषण । ३० अ. सम । ३१ अ.आ. घर । ३२ आ.इ. हमीर ।

सुवपि सोळ स्रंगार[१], लाज बत्रीसैइ[२] लक्खण[३]।
खम्या धरम धीरज्ज, सीळ संतोख सतोगुण[४] ॥
रंभा देवांगना, रतन्न ग्रब्भा[५] पति रत्ती।
गंगा गवरि लिछम्मि, जिसी सीता सतवत्ती[६] ॥

अखैराज - वंस जसराज - धू, धू - जिम धारण नह फिरी।
'अमरेस' पुत्र जिण जनमियौ[७] धन[८] चहुवांण[९] कणै-गिरी ॥२॥

मन गंगा-जळ-नृमळ, वदन किरि[१०] पूनम[११] ससिहर[१२]।
सुवप व्रन्न[१३] सोव्रन्न[१४], गात मैंमंतक गैमर ॥
कडि[१५] लंछण केहरी, जंघ जांणै जाळधंर।
राइ-आंगण[१६] गति क्रमति, हंस किरि[१७] मांण-सरोवर ॥

'जग रूप' सधू 'जगनाथ' - कुळ, पदमणि किरि[१८] सूरज प्रभा।
बनीतौ कुलीण कुरम वडी, परम लछि पती वल्लभा[१९] ॥३॥

चपळ नेत्र सारंग, रेख भ्रूहां[२०] मकरंद।
दीपक - नासा दिपंत[२१], सरद - रैणी मुख - इंद्रह ॥
डंसण - बीज[२२] - दाडंम[२३], वेणि - वासंग[२४] - भुयंगम।
भटियांणी[२५] वर कमध, समद[२६] गंगा नदि[२७] संगम ॥

'कलियांण'[२८] सधू मोटै कुळहि, सुवप महातम सुरसरी।
इधकार सील अधिक वडै, जमळि[२९] कंत जैसल - गिरी[३०] ॥४॥

दुति सोभा दांमणी[३१], वरन आदीत वरन्नी।
भाव - सिंघ सारधू[३२], देव कन्या[३३] उतपन्नी ॥
आप सकति अवतार, अउब आभूखण अंबर।
करग[३४] पंच किरि साख, कांम जांणै[३५] पंचे-सर[३६] ॥

---

१ आ.इ. सिगोर। २ इ. बतीसैइ। ३ आ.इ. लषण। ४ इ. सतगुण। ५ इ. ग्रभा। ६ इ. सतवंती। ७ इ. जनमीयौ। ८ इ. धण। ९ अ. चहवांण। १० अ. किर। ११ इ. पूनिम। १२ इ. सिसहर। १३ इ. व्रंन। १४ इ. सोव्रंन। १५ इ. कडियां। १६ आ. अंगण। इ. अंगणि। १७ अ. किर। १८ अ.आ. किर। १९ इ. पति-वल्लभा। २० इ. भ्रुहं। २१ इ. दिपंति। २२ इ. बीय। २३ इ. दाडिम। २४ आ. वासिग। इ. वासग। २५ आ.इ. भटीयांणी। २६ आ.इ. समंद। २७ आ. गंगा नहि। इ. गंगा नदी। २८ आ.इ. कलीयांण। २९ अ. जमल। ३० इ. जेसल-गिरी। ३१ इ. दामणी। ३२ इ. सारघु। ३३ इ. किन्या। ३४ इ. करगं। ३५ इ. जांणे। ३६ इ. पंचई-सर।

बतीस[1] लखण चौसठ[2] कळा, आंबेरी उत्तम सहज।
कूरंम[3] संपेखे[4] मुख कमळ, सरद इंद्र पावंत[5] लज ॥५॥

त्रिहुं पक्ख ऊजळी[6], कमळि[7] निकळंक कळा निधि।
मांण महातम मरट, अगड सूरातन अव्वधि[8] ॥
अविता पारब्बती, कना कमळा सावंत्री।
जमना गंगा जिसी, चंद्र-भागा सरसत्ती ॥

'चंद्रभांण' सधू चंद्रा वदनि, चंद्रावत सीसोदणी।
रूपक चडावण रांम-पुरी[9], इधक रूप इंद्रायणी[10] ॥६॥

लोयण[11] चंचळ चपळ[12], अचळ ध्रू जिम मन धारण।
कडि मयंद[13] मुख इंद्र[14], दीरघ वैणी अहि दारण ॥
मद गयंद गति मंद, काया जांणै अभ[15] कंदळि।
वपि चंपक दळ वरण[16], सीस गुंजार करै अलि ॥

सत्र साल[17] पढीजै[18] वीरभद्र[19], प्रघट[20] जांम है मह प्रथी[21]।
जाडैचोज 'जसवंत' जांम, ध्रु जिसी[22] गंगा भागीरथी ॥७॥

नवसात् ससि[23] वदन, अरक कांइत्तक[24] ऊजळ[25]।
डसण हीर[26] किर ललित, मुक्ख लोयणां[27]...भीभळ ॥
कमळ पत्र कर चरण, कंठ मोताहळ माळा।
अवित अंग मन चंग, गंग जांणै[28] जळ धारा ॥

सारधु[29] सिखर महि-ऋन्न सुभ्र, रूप अनोपम वेरावळ रची।
चहवांण इंद्र कमधज्जरै, साचौरी सुंदर सच्ची ॥८॥

चख चंचळ मन अचळ, कमळ चख भुहां[30] अलीअळ[31]।
तन ऊजळ[32] पति रत्त[33] रूप भरता रुचि मंझळ[34] ॥

---

१ इ. बत्रीस। २ इ. चौसठि। ३ इ. कूरमे। ४ इ. संपेषै। ५ इ. पावंतज। ६ इ. उजली। ७ अ. कमल। ८ इ. अविधि। ९ इ. रांम-पुरि। १० इ. इंद्राइणी। ११ इ. लोइण। १२ अ. पल। १३ आ.इ. मयंक। १४ अ आ. इद्र। १५ अ. अंभ। १६ आ.इ. वरन। १७ आ. सतसाल। १८ आ. पढजै। इ. पढुजै। १९ इ. वीरभ्रद। २० इ. प्रघठ। २१ आ. प्रिथी। २२ अ. ध्रूजि। २३ आ. सिसी। इ. सिस। २४ आ. कांईतक। इ. कांइतक। २५ आ.इ. उजल। २६ आ.इ. हीरन। २७ आ.इ. लोइण। २८ आ.इ. जांणे। २९ अ. सारधी। इ. सारधू। ३० इ. भ्रूहां। ३१ इ. अलियल। ३२ आ.इ. उजल। ३३ अ. पतिरंन। ३४ इ. मंडल।

केहरि जिम कडि क्रिम्स, लगति चालंती गजिंद्रह[१] ।
सोभति वैंणी[२] सरप, हरै[३] धीरज्ज खगिंद्रह[४] ॥
कुळ मोटै बहुवां कुळ धुवां, मांन महातम[५] निरवहै ।
कण सूप जिहीं[६] औगण[७] तजै[८], गुण मोताहळ जिम ग्रहै ॥९॥

आदू मंजन करिध, पाट पेहरे देही दळ ।
नयणे[९] कज्जल रेख, तिलक कुंकम भाळीयळ ॥
कर्णं कांन त्राटंक[१०], वेण नासा मोतीहळ[११] ।
हार उर[१२] चंदन विलेप, रची[१३] कांकण कटि मेखळ ॥
गळि पुहप माळ नूपर[१४] पगे[१५], अति तंबोळ[१६] मुख चातुरी ।
सिणगार[१७] सबांही[१८] खोडसै[१९], सह[२०] सोहै[२१] वर सुंदरी ॥१०॥

जिहं[२२] वांणक्क[२३]कटाख[२४], चपळ नयणी चंद्राणणि[२५] ।
के कुरंग लोचना, कांम अक्खी केकांणी ॥
सूकेसी[२६] उर - वसी[२७], ध्रितेची मैना[२८] रंभा ।
इंद्र - लोक अपछरा, इसी[२९] उणहारि असंभा ॥
गजसिंघ गहंतरि गजगमणि, इन्द्र अखाडै एहडी[३०] ।
के पात्र अलापै गेव - कंठ, के खवासि कन्हलि खडी ॥११॥

छंद अडिल्ल

एक खडी मुख रूप निहाळै । एक खडी सिर[३१] चम्मर ढाळै ।
कांम लता पिण कणक[३२] वरन्नी[३३] । पास खड़ी सुख रास पतन्नी ॥१॥
धुंकार[३४] हुई भ्रिद[३५] मांदळ । वीण रबाब ताळ स्रीमंडळ ।
गीत संगोत सपत सुर गाए । आगळि पात्रअखाडी[३६] थाए[३७] ॥२॥

---

१ आ. गजिद्रह । २ आ.इ. वेणी । ३ अ.आ. धरै । ४ आ.इ. षगिदह । ५ आ. माहातम । ६ आ.इ. जिही । ७ आ. औगुण । इ. ओगुण । ८ इ. तजे । ९ इ. नेयणे । १० आ. ताटंक । ११ इ. मोताहळ । १२ आ.इ. डोर । १३ आ.इ. रचि । १४ अ.आ. नूपुर्यें । १५ आ. अंगे । १६ इ. तंबोल । १७ अ.आ. सिण-घार । १८ अ. आ. सांबाही । १९ अ. षोडसै । २० आ. सेह । इ. सोह । २१ इ. सोहै । २२ आ.इ. जीह । २३ अ. बाण इ. बांणक । २४ अ.आ. कटाषु । २५ आ.इ. चंद्राणिणि । २६ आ. इ. सुकेसी । २७ अ.आ. ऊर-वसी । २८ इ. मेना । २९ आ.इ. ईसी । ३० आ. ईहडी । ३१ आ.इ. सिरि । ३२ अ. कण । इ. कनक । ३३ इ. वरणो । ३४ अ. दोऊंकार । इ. दाऊंकार । ३५ अ.आ. मृिद । इ. मिंदर । ३६. इ. आषाडो । ३७ इ. थाऐ ।

राग छतीस[१] तरंग अनंगं । रूप अनूप अनोपम रंगं ।
बोलीजै[२] सुख निस - वासर । आणद गीत विणोद[३] अवस्सर ॥३॥

गाथा

रण - वास राज - रमणी, सूरज[४] किरण[५] तुल सोभा[६] ।
फूलीक कांम वल्ली, करि मज्झे कांम आरांम ॥१॥

दूहा

राजा राज-कुंवारियां[७], आंगण[८] पधारेह ।
आदर मांन समप्पियौ[९], दख्खे[१०] पति[११] सनेह ॥१॥

राजा झूलरि[१२] रांणियां[१३], सोहै ईहीं[१४] भंति[१५] ।
किरि वेधांणै किरतियां[१६], चंदौ पूनम[१७] रति[१८] ॥२॥

आज हुआ[१९] किल्लांण सह, आज हसंदा[२०] मुक्ख ।
आप पधारे आंगणै, साहिब[२१] दीना सुक्ख ॥३॥

सबै मनोरथ पूरिया[२२], सब्बै पूरी[२३] आस ।
जांण कमोदणि[२४] सिस उदै, तन मन हुआ[२५] विकास ॥४॥

सहुआं[२६] कुळ वड्डै जनम, सहुवां[२७] वड्डा भाग ।
सहु[२८] छत्रपति[२९] पूतियां[३०], सहुआं[३१] सही[३२] सुहाग[३३] ॥५॥

राजा निय[३४] रणवास हूं[३५], अक्खी[३६] एक[३७] सु वत ।
नृप[३८] सोभा खत्री धरम, त्रिय[३९] सोभा पति व्रत[४०] ॥६॥

---

१ इ. छत्रीस । २ अ. वोलीजे । इ. बोलीजे । ३ इ. विनोद । ४ अ.आ. सूरजि । ५ आ. किरणां । इ. किरण । ६ इ. सोभा । ७ आ.इ. कुवारीयां । ८ इ. अंगण । ९ आ.इ. समपीयो । १० आ. देषे । ११ आ. पीत । १२ आ. झुलरि । १३ आ.इ. रांणीयां । १४ अ. ईही । इ. एही । १५ अ. भत्त । आ. भत । १६ आ.इ. किरतीयां । १७ इ. पुंनम । १८ अ. रत । १९ आ.इ. हूआ । २० इ. हसीदी । २१ इ. आहिब । २२ आ. पुरीया । इ. पूरीयां । २३ आ.इ. पुरी । २४ इ. कमोदनि । २५ इ. हुवा । २६ आ.इ. सहूवां । २७ इ. सहूवां । २८ इ. सहुवां । २९ आ.इ. छत्रपती । ३० आ. पुतीयां । इ. पूत्रीयां । ३१ आ. सहुवां । इ. सहूवां । ३२ आ.इ. ही । ३३ इ. सोहाग । ३४ आ.इ. नय । ३५ आ. हुं । इ. हू । ३६ इ. आषी । ३७ आ. इक । ३८ आ.इ. नृिप । ३९ अ. त्रीय । आ. तीय । ४० आ.इ. पतिव्रत ।

त्रिय[1] वांमै वर दांहिणं, वयण सु आखै[2] वांम[3] ।
घमलज वांमी धुर वहै, धमळै[4] ऊदौ[5] नांम ।।७।।

जो[6] नृप[7] पूती[8] नह दियै[9], दासी दूध[10] अहार ।
तौ विहरै गिरि वज्र[11] जिम, खत्री[12] खग्ग पहार ।।८।।

धन कुळ वहुआं[13] कुळ धियां[14], जीनां[15] ऐह[16] जुगत ।
जिन्हां उद्दर[17] ऊपजै[18], "अमरज" जेहा पुत्त[19] ।।९।।

महाराज गजसींघरै पुत्रांरो वरणण

कवित्त

सूरज पुत्र करन्न[20], पेट कूंता उतपन्नौ[21] ।
पवन पुत्र हणमंत, उदर अंजनी उपन्नौ[22] ।।
ईस[23] पुत्र खट-मुक्ख[24], पुत्र जनमे[25] रुद्रांणी[26] ।
राघव दसरथ पुत्र, जणे कउसल्या[27] रांणी ।।
जनमियौ[28] पुत्र कणहैगिरो[29], "अमर" कुंवर[30] गजसिंघरौ ।
बेपक्ख सुद्ध आदू[31] बिरद, पुत्रां एह पटंतरो[32] ।।१।।

"अमर" धरम आंकूर[33], पटौ[34] दीयौ[35] पाटौ-धर ।
राजहंस प्रम अंस, जिसौ सूरज्ज[36] सुधाकर ।।
मयण कांम मूरत्ति[37], गात गिरवर वींझा-चळ[38] ।
वडौ वीर वीराधि[39], सिंघ रूपी सहंस - बळ[40] ।।

---

१ इ. त्रीय । २ आ. अंषै । इ. अषै । ३ आ. वाम । ४ अ.आ. घमलेति । इ. घमलति । ५ आ. नुदो । इ. नुदो । ६ आ.इ. जो । ७ आ. नृप । इ. निृप । ८ आ. पुती । इ. पुत्री । ९ आ. दिपै । १० आ. दुध । ११ आ. व्रज्र । १२ आ. षत्ती । १३ आ. बहूआं । इ. वहूवां । १४ आ.इ. धीयां । १५ आ.इ. जिना । १६ आ.इ- ऐ । १७ आ.इ. उदर । १८ आ.इ. उपजै । १९ आ.इ. पुत्र । २० अ. रन । इ. करंन । २१ आ. ऊपनो । इ. उतपनो । २२ आ. उपनो । इ. उपंनो । २३ अ.इ. इस । २४ आ.इ. षटंमुष । २५ आ. जनमै । इ. जन । २६ आ. रुदांणी । इ. इंद्रांणी । २७ अ.आ. केउसल्या । २८ अ.आ. जनमीयो । २९ आ.इ. कणौ-गिरी । ३० आ. कुवर । इ. कुअर । ३१ इ. आदु । ३२ आ. पंटतरो । ३३ इ. अंकुर । ३४ आ. पटि । ३५ अ.आ. उदीयो । ३६ अ.आ. सूरिज । ३७ आ.इ. मुरति । ३८ आ. वीझाचल । इ विझाचल । ३९ आ. विराधि । ४० आ.इ. सहस-बल ।

राइजादे[1] ओपम राठवड[2] विहुंवै[3] पक्ख निरंमळा[4] ।
बळवंत कुमर[5] बिय[6] चांद[7] जिम, कुंवरां[8] -गुर चढती[9] कळा ।।२।।

मज्जीठै[10] मुहरंग, नयण जोती जाळंनळ ।
विक्ख[11] वंक क्रिस लंक, थोर बाहू[12] डंड[13] हत्थळ ।।
दीरघ देहा खंभ, करी भांजै कुंभाथळ ।
कांमण[14] भूखण[15] डसण, हार पहरै[16] मोताहळ ।।
गजसिंघतणो गज गौडवण[17], जोघपुरो जस अग्गळो ।
बळवंत - कमंध[18] जसह सबळ, सींह समंधी[19] सिंघळो ।।३।।

दीपक हूंत दीपक, अबं हूं अंबक उग्गै ।
सिध हूंता[20] साधिक्क, वीर घर[21] वीरक[22] जग्गै ।।
समंद[23] हूंत किरि सोम, सोम हूंता[24] सिद्धांणह ।
सत हूंत किरि धरम, ध्रम्म[25] हूंता किल्यांणह ।।
नाद हूं वेद उतपन[26] हुओ[27], मेरग्गिर हुंता हिरंन ।
'अमरेस' हुओ[28] गजसिंघसूं[29], जांण दिवाकर[30] हूंत[31] दिन ।।४।।

साखां भुज्ज विसाळ, गात गुरू-अत[32] गह्वर ।
पलव हय गयंद[33] सुहडू[34], मौज महिमा मति मंजर ।।
जड पंयाळ[35] पै जुअल[36], सीस व्रहमंड[37] विलग्गे ।
कळू - वाउ डंडूळ[38], डिगै नह[39] डोलै[40] जुग्गे ।।
अद्धार - वरण आलंब वण, खट - दरसण छाया मिळै ।
'अमरेस' इंद्र गजसिंगरै, आंणि कळप - तर फळै ।।५।।

---

१ आ. राइजादे । इ. राईजादै । २ आ. रठवड । इ. रठोडवै । ३ इ. वै । ४ आ.इ. निरमला । ५ अ. कुसघ । ६ इ. वीय । ७ अ. वाद । ८ इ. कुअ । ९ अ.आ. चडती । १० आ. मजीठं । इ. महीजीठै । ११ आ.इ. वि्पवंक । १२ आ. बाहु । १३ इ. भुज । १४ आ.इ. कामिण । १५ आ.इ. भुषण । १६ इ. पैहरं । १७ इ. गोड-वण । १८ इ. बलिवंत-कमध । १९ आ.इ. समघो । २० आ.इ. हुतां । २१ आ. घरि । २२ आ. वीर । २३ इ. समंद्र । २४ आ. हुंत । इ. हुता । २५ आ.इ. धरम । २६ इ. उतपंन । २७ इ. हूओ । २८ इ. हुवो । २९ इ. सुं । ३० आ.इ. देवाकर ३१ आ.इ. हुंत । ३२ अ. गरुअत । ३३ इ. गय । ३४ आ. सोहड । इ. सोहड । ३५ आ.इ. पयाल । ३६ आ.इ. जूअल । ३७ आ.इ. वृह्मंड । ३८ आ. डडूल । ३९ इ. नहि । ४० इ. डोडै ।

गाथा

पुत्रां[1] सपूत उद्दिया, सुणिये[2] कांनै क्रीत[3] आपांणी[4] ।
वित्तांनि विमळ वित्तं, किं किं जै स्रग[5] भोगादि ॥१॥

पांणी नरिंद पुत्रां[6], भोमी गढ व्रद[7] भारिया[8] ।
खट - मेक[9] जतन कीजै[10], कथितं[11] आदि जुगादि ॥२॥

दूहा

मिळि मंत्री परधांन मैं[12], विधि दक्खै विच्चार ।
जळ रक्खण गढ[13] जोधपुर, के रक्खौ जोधार ॥१॥

नरां मंडोवर नर समंद, खिति लोडौ[14] खुरसांण ।
है[15] केइ[16] देस न हक्कडौ, दोइ तेहा वाखांण[17] ॥२॥

सभै[18] अभै थंभ दे, सब्भै[19] ही खत्र - धौड ।
सब्भां[20] ही दिन पद्धरौ, सभ वंका राठौड ॥३॥

पट्टांणां नव लाख सूं[21], लडिया[22] बांधे चाळ ।
राजा रावत रक्खिया[23], रिणमल महि रखपाळ ॥४॥

कवित्त

सेरसाह सुरतांण, तुरी नव लक्ख पलांणे ।
आयौ सिरि "माल दे", करन तै सूं[24] तुड - तांणे[25] ॥
मांडण सीहौ वहै, सैंड[26] गंजे सींधल[27] हर ।
अकबरि मांगी कुंअरि[28], तांम मुख दीनौ[29] उत्तर ॥

तै पाट तूंग कूंपां तिलक, खेम-क्रन्न[30] अणभंग भड ।
तै "खेम" तणौ खांडा - हथौ, कन्न[31] मेर माझी निवड ॥१॥

---

१ आ. पुत्ता । २ आ.इ. सुणीयै । ३ इ. कीरत । ४ इ. अपांणी । ५ इ. अर्ग । ६ आ. पुत्ता । ७ इ. व्रिद । ८ आ.इ. भारीया । ९ इ. षट-मेष । १० इ. कीजे । ११ अ. कथतं । १२ अ. मे । इ. में नहीं है । १३ आ. गट । १४ आ. लोडो । इ. लोडो । १५ आ.इ. हे । १६ आ.इ. कै । १७ इ. वषांण । १८ इ. अभै । १९ आ.इ. सभैइ । २० आ.इ. सभां । २१ आ.इ. सुं । २२ आ.इ. लडीया । २३ आ.इ. रषिया । २४ आ.इ. सुं । २५ इ. तुडि-तांणै । २६ इ. सुड । २७ आ. गजैसीध । २८ इ. कुअरि । २९ इ. दीन्हो । ३० आ.इ. षेमक्रंन । ३१ आ.इ. कंन ।

छळ महेस मुर देस, मुग्रो[1] डीघोड महारिण ।
परणे अकबर घडा, चढे[2] गज दांतां तोरण[3] ॥
समर-सींह देवडौ, वहै[4] सादूळ रिणं-गण[5] ।
नांम जांम अरबद्द[6], तांम[7] बैठो इंद्रासण[8] ॥
तिण पाट रूप रिणमल्ल-हर, कूंप क्रन्न[9] कुळ उद्धरण ।
सिणगार[10] 'जसौ' नवसाहसौ[11], तेरे[12] साखां आभरण ॥२॥

सेरसाह रिणमांह[13], जैत ढाहण गजढल्लह ।
खूंदालम[14] किउ[15] खडौ[16], तवे[17] मुख तोबा अल्लह ॥
प्रिथीराज मेडतै, मुग्रौ[18] सामंत निभै-मण[19] ।
सत्र[20] चवदै सिंघार, कियौ[21] भारथ[22] रांमाइण[23] ॥
तै पाट[24] 'वाघ' 'वगडी' तखत[25], 'वाघ' सुतन[26] भड वांकडौ[27] ।
भगवांन डहै असमांन भुज[28], हेक हणमंत[29] लांगडौ[30] ॥३॥

'चांपै'[31] जेसौ[32] चरड, अनड माझी[33] अडसाळौ ।
भांगेसर[34] दांणवां[35], जेण भग्गो भालाळौ ॥
'जैतमाल' अण-पाल, वींद[36] मेवाड तणी घड ।
सिवियांणे सोझति[37]; 'भांण' रोळिया[38] भडां घड ॥
तै 'भांण' तणौ अवसांण-सिद्ध, वडा जुद्ध डोहण विमर ।
जोधार पखर लक्ख जिसौ, निरो एक[39] पक्खर निडर ॥४॥

मिणि-अड[40] नेपति[41] भडां, खग्ग वाहां खत्र-घोडां[42] ।
खुरासांण सम सांण, तखत आदू राठौडां ॥

---

१ आ.इ. मुवो । २ आ.इ. चडे । ३ आ.इ. तोरणि । ४ आ. वहे । ५ आ.इ. रिण-गणि । ६ इ. अरबद । ७ आ.इ. ताम । ८ आ.इ. इंद्रासणि । ९ इ. क्रंन । १० इ. सीणगार । ११ इ. नवे साहसी । १२ इ. तेरै । १३ आ.इ. रिणमाह १४ आं.इ. षुदालम । १५ आ. कीउ । इ. कीयो । १६ आ. वडो । १७ आ.इ. तवे । १८ इ. मूंवो । १९ इ. निभै-मण । २० आ. सत्त । इ सत्रु । २१ आ इ. कीयो । २२ आ. भारत । २३ आ. रांमांइण । इ. रांमाईण । २४ आ. पाटि । इ. में नहीं है । २५ आ.इ. तषति । २६ आ. सुतं । इ. सुन । २७ आ.इ. वंकडो । २८ इ. भुयर । २९ अ. हणंमत । ३० इ. लांगणौ । ३१ आ.इ. चांपे । ३२ इ. जेसो । ३३ इ. मांझी । ३४ इ. भांगे । ३५ अ.आ. वांणवां । ३६ इ. वीद । ३७ आ. सोझत । ३८ आ.इ. रोलीया । ३९ इ. ऐक । ४० इ. मिण-अड । ४१ अ. नेपत । ४२ आ. छत-घोडां ।

मलीनाथ भाराथ, गाहि गोरी गज थट्टां ।
तेरह तुंगां[1] तुरक, भिडे भागा दह - वट्टां ।।
आराध[2] अलख आदीक घर[3], सिद्ध खेत सूरति[4] घणै[5] ।
'जगमाल' तेण 'दूदै' तणौ, पाट - मल्ल[6] रावळ तणै ।।५।।

जगतिसिंघ 'रांम' सू, नरौ जगमाल सुतन्नह[7] ।
गाढ़ां - गुर 'गोइंद', खत्री सुत खेम-करन्नह[8] ।।
भाटी 'ईसरदास', भुजे नव कोटतणा छळ ।
ऊहड[9] 'मांडण' 'अजौ', उभं नवकोटी[10] आगळ ।।
तुडि-तांण[11] 'अमर' 'सुरिजना' तणौ, सांम[12] कांम[13] वाहण सुजड ।
राखिया[14] राइ[15] राठौडवै, कुमरां पासि इता[16] सुहड[17] ।।६।।

गयण - थंभ दळ - थंभ[18], संभ जिक्कै जीवत्तह ।
देस - थंभ दळ - थंभ, हत्थ कुळ - थंभ वडा - ग्रह ।।
जैत - खंभ रिण - खंभ, मारि गज - खंभ मदोमत ।
देहा - खंभ असंभ, जिसा गोरंभ परव्बत ।।
पारंभ करण आरंभमै, लियण लंभ सोरंभ - जस ।
रखपाळ मंडोवर[19] राखिया[20], भू डंडे रक्खे अडस ।।७।।

गाहा

पुन्नौ[21] पर - उपगारौ, कारिज सांमी[22] देव कारिजौ ।
ततकाळेण ताळ-विमाळ[23] न कीजै, ए कीजै तत-काळेण ।।

महाराजा गजसींघरौ दरबार में पधारणौ जोसियांसूं मूहरत पूछणौ

गाहा

गजबंधी दीवांण पधारे[24] । इम कहियौ[25] मन मही[26] विचारे ।
चाड इसी[27] जिण वेग चडीजे । दिस[28] सुरतांण पयांणौ[29] कीजे ।।१।।

---

१ इ. तूंगा । २ इ. आराधि । ३ इ. घरि । ४ आ.इ. सुरति । ५ इ. थणै । ६ आ.इ. पाटि-मल । ७ इ. सुतंनह । ८ इ. षेमकरंनह । ९ इ. उहड । १० आ. न कोटी । ११ आ.इ. तुड-तांण । १२ आ. सांमि । १३ आ. कांमि । १४ आ.इ. राषीया । १५ प्रति इ. में राइ शब्द नहीं है । १६ इ. ईता । १७ आ. सोहड । इ. सोहड । १८ इ. गढ थंभ । आ. भड - थंभ । १९ आ. मांडोवर । २० आ.इ. राषीया । २१ आ.इ. पनौ । २२ आ.इ. सांमि । २३ इ. प्रति में न नहीं है । २४ अ.आ. पधारै । २५ आ.इ. कहीयौ । २६ आ.इ. मांही । २७ इ. ईसी । २८ इ. दिया । २९ अ. पयांणै ।

वेद मंत्र पाठी चत्र - वेदह । जांणै[1] जोतिख भेद सुभेदह ।
होम दियै[2] आहूत[3] हुतासण । तेडे तांम[4] इसा[5] व्रहंमण[6] ॥२॥
तिलक दुआ - दस वसत्र[7] कखंबर । करै. सदा खट करम निरंतर ।
राजा वंदन कीध उभै कर । आस्री - वाच विप्रां[8] इम उच्चर ॥३॥
नृप[9] कमधज विप्रां[10] इम[11] बूझै[12] । आगम निगम तुम्हां सह सूझै ।
निरति[13] सुरति[14] मन चेतन रक्खौ । दिस सुरतांण पयांणौ दक्खौ ॥४॥
जांण प्रमांण प्रमांण जोइसी । दैवंग[15] देख त्रिकाळ - दरस्सी ।
सुभ-वासर सुभ-जोग सांपन्नौ[16] । जोसी खरौ-स मुहुरत[17] दीनौ ॥५॥

कवित्त

सिद्ध-जोग रवि-जोग, सुद्ध[18]-दिनमांन[19] सहू[20] सिसि[21] ।
दिसा-सूळ[22] थयौ[23] पूठि[24], वळै जोगणि बांमी दिसि[25] ॥
तारा-बळ चंद्र-बळ, घडी-अम्रत[26] साधारण ।
चतुर पंच सह बळी, नांम वाहण सुभ वाहण ॥
तिथि-वार[27] नखत्र उत्तम करण, पण महूरत[28] नृप[29] चडे ।
किल्यांण[30] हुवै सिध[31] कांमना[32], तांमह[33] अस्सड संपडै ॥१॥

दूहा

कोम्रण कोम कटक्कमे, वोम विलग्गै वद्धि ।
कीध[34] सतावी साह दिस[35], चडण महूरत[36] मद्धि[37] ॥१॥

इस्ट देव पूजा

राजा पूजै सिव[38] सकति, चाढ़ै[39] धूप[40]-नैवेद[41] ।
कुंकम-तिलक निलाट दे, विप्र[42] भणंदा[43] वेद ॥२॥

---

१ आ.इ. जांणे । २ आ.इ. दीयै । ३ आ. आहुत । ४ आ. ताम । इ. प्रति में नहीं है । ५ इ. ईसा । ६ आ.इ. ब्राहमण । ७ आ.इ. वसंत्र । ८ आ.इ. व्रिपां । ९ आ.इ. नृप । १० आ.इ. व्रिपां । ११ आ. ईम । १२ आ. बूंजे । १३ इ. निरत । १४ आ. सुरत । १५ आ.इ. देवग । १६ आ. सापनो । इ. सपनो । १७ इ. महूरत । १८ आ. सुध । इ. सुधि । १९ आ.इ. दिनमान । २० आ.इ. सहु । २१ इ. सिस । २२ इ. दिसा-सुल । २३ आ. थायो । इ. थियो । २४ आ. पुठि । २५ आ. दिसी । इ. दिस । २६ अ. अमृत । २७ इ. तियवार । २८ इ. मुहूरत । २९ आ.इ. नृप । ३० इ. कल्यांण । ३१ अ. सुभ । आ. सुध । ३२ आ. कामना । ३३ आ.इ. ताम । ३४ इ. किध । ३५ इ. दीस । ३६ इ. मुहूरति । ३७ आ.इ. मधि । ३८ आ. शिव । ३९ आ.इ. चाडे । ४० इ. धुप । ४१ अ. नेवेद । ४२ आ. व्रिप । ४३ आ. भणादा । इ. भणांदा ।

पूठी[१] वांमै[२] दाहिणै, आगळि अग्गे-वांण[३]।
राजा "गाजी साह"नूं, राखंदो रहमांण[४] ॥३॥

दीहा[५] पाधर वंक गय, भुज धरिये[६] कुळ-भार।
चोळ-वरन्ने लोचने, आयौ आप दुवार ॥४॥

गै गोडी-रव है कळळ, सुहड गडौ-वड थट्ट।
सुभ मंगळ जै जे सबद, बोलै चारण भट्ट ॥५॥

नाथ-निरंजण[७] अलख महा, महा मंगळ बह नांमि[८]।
सिव सकती सम जुगति जग[९], जग जणणी जग जांमि[१०] ॥६॥

कवित्त

दियण[११] बुद्धि रिध सिद्ध, विघन छेदन लंबोवर[१२]।
नारसिंघ हणमंत[१३], अचळ नह[१४] खंडी[१५] अम्मर॥
जग[१६]जणणी जग जांमि, सकति तुलज्या[१७] महमाई[१८]।
सरब[१९] ग्रहां सूरज्ज, सरब देवांह सवाई॥
नवनाथ अनंत सिधांणवै, भैरव अट्टै संभरै।
सुर बळ सु जोग क्रम समपिया, इस्ट नांम आदिह करै ॥१॥

महाराजारो घुड़ सवार होणो

खुरासांण नैपत्ति, असल ऐराकी चंचळ।
पाखर मै परचंड, पंख पाहाड[२०] अचग्गळ॥
ऊंचासो[२१] इंद्ररै[२२], रांमरै गुरड[२३] विहंगम।
सूरजरो सिलह "जै", जिसौ सपतास तुरंगम॥
असवार वडो असमांन गति, घूहड धूजै वड घडै।
पह पूठि चडै जैवंत भड, पाउ[२४] परट्ठै पाघडै[२५] ॥२॥

---

१ इ. पुठि। २ इ. वामै। ३ आ. अगेवांण। इ. आगेवांण। ४ अ. रमांण। इ. रिमांण। ५ इ. दिहा। ६ आ.इ. घरीयै। ७ आ. नीरंजण। ८ आ.इ. नामि। ९ आ.इ. जगत्र। १० आ.इ. जामि। ११ अ.आ. दिअण। १२ अ. लंबावर। इ. लंबोदर। १३ आ. णमंत। इ. हणवंत। १४ इ. न। १५ अ. षंडा। १६ आ.इ. जगि। १७ अ. तुलज्वा। इ. तुलजा। १८ इ. महामाई। १९ अ.आ. सर्ब। २० आ.इ. पहाड। २१ आ.इ. उचासो। २२ इ. ईद्ररै। २३ इ. गुरडं रांमरै पाठ है। २४ आ. पाव। २५ आ.इ. पागडै।

सोरठा

राउ[1] प्रबळ रिण - ताळ, गाढां गुर थाए 'गजण' ।
चढतां[2] चमर - बंबाळ, 'जै' तूं[3] जोधांहर घणी ।।१।।

चढ़ियौ[4] मछर चडेह, रोपै रांम रकेब है ।
भोळौ[5] भंग पडेह, सिव नाटा - रंभ "सूर उत" ।।२।।

दे नीसांणां घाउ, चैत सुदी[6] एकादसी[7] ।
चढे[8] कमंधां[9] - राउ, दिल्लीवै सुरतांण दिस ।।३।।

महाराजा गजसींघरा दळरौ वरणण

गाहा

भेळा जूल झळक्कै भालै । मुहर[10] कियौ[11] जोधै[12] रिणमालै ।
साहण - समंद दिलीचै[13] सांमौ । दीनौ 'गाजीसाह' दमांमौ ।।१।।

नौबति रोडि[14] हुई[15] नीसांणां[16] । अंबर गाजि[17] वाजि[18] असमांणां ।
जांण प्रभाकर जोत[19] प्रगट्टी । गढ़ हूं चढि[20] आयौ तळ - हटी[21] ।।२।।

छोडि महावत[22] खंभूठांणां[23] । मद - तळ[24] जोड वहंतां दांणां[25] ।
घूघर[26] घंट कसे अंबाडी । गय चीधां[27] गयणाग[28] भमाडी ।।३।।

सिलह संदूक[29] सलीते[30] वड्डे । लद्दे ऊंट[31] चलाए[32] गिड्डे ।
लारोलार कतारां[33] हल्ली । काती ज़ांण कुरज्झां[34] चल्ली ।।४।।

चढै[35] चले चतुरंग[36] महादळ । वीजक जांण[37] वलक्के साबळ ।
वाजी घोडां[38] पाइ धरत्ती । छूटा सांहण[39] हाहुल माती ।।५।।

---

१ इ. राव । २ अा. चडता । ३ अा.इ. तु । ४ अा. चडीयो । इ. चडीया । ५ अा. भोला । ६ अा.इ. सुदि । ७ इ. ऐकादसी । ८ अा. चडे । इ. चडै । ९ अा.इ. कमधां । १० अा.इ. मोहर । ११ अा. कीयो । इ. कीयो । १२ अा.इ. जोधे । १३ अ.अा. दिलीवै । १४ अ. रोड । १५ अा. हुइ । १६ इ. निसांणह । १७ अ. गजि । १८ अ. वजि । १९ अा. जोति । २० अा इ. चडि । २१ अ. नलहठी । अा. तलहठी । २२ अ. महघस । २३ अा. षंभू-ठाण । इ. षंभुठांणा । २४ अ. मदत । २५ इ. डांणां । २६ इ. घुघर । २७ अा. चीधं । २८ अा. गयंणाग । २९ अा. सिंदूष । इ. संदूष । ३० इ. सलीचे । ३१ अा.इ. उट । ३२ अ. चाए । ३३ अा. कतादां । इ. कतांरां । ३४ अा. कूरझां । इ. कुरझां । ३५ अा.इं. चडे । ३६ अा. चतूरंग । ३७ इ. जांणे । ३८ इ. घोडां । ३९ इ. सांहिण ।

दळ रो कूच

अथ चंद्रायण

चौटां घोर[1] निहाय[2], नगारा वज्जिया[3] ।
भेर बुरंग निनद्द, क अंबर गज्जिया[4] ।।
सद्द हुआ[5] सहनाइ[6], समुद्र[7] उझळिया[8] ।
राजा[9] 'गाजीसाह', दिलो दिस[10]चल्लिया[11] ।।१।।

ढेचाळां[12] सिर[13] ढल्ल[14], ढळक्कै[15]ढूहरी[16] ।
खेहा मज्झि दुडिंद, क चंद सरव्वरी ।।
ऊपडियां[17] असमांन क, कोरण तेवडा ।
वांक[18] मुहा वर हास, महाभड वंकडा ।।२।।

सीरम सेढां[19] सट, तुरंगम तप्पडै ।
पाहाडां पड - सद्द, निसांण[20] गडग्गडै ।।
साहण[21] थट्ट सुभट्ट, असंख[22] अपार है ।
चौमासै किरि जांण, चलै घण बार है ।।३।।

हिल्लै हेम - पहाड, क हैथट[23] हिल्लिया[24] ।
फट्टौ जांण अकास, क साइर[25] छिल्लिया[26] ।।
हुई हमस्स धमस्स, पंयाळ[27] दहल्लिया[28] ।
कमधज्जे केकांण, दिली[29] दिस ढल्लिया[30] ।।४।।

गाथा

गोधूळ[31] गयण लग्गं, साहण[32] उलट्टि[33] सेन समूहं ।
है - पाइ गाहि वंका, सर पधरी कीध पहाडहं ।।१।।

---

१ इ. घोइ । २. आ. निहाइ । इ. निहाई । ३ आ.इ. वजीया । ४ आ.इ. गजीया । ५ आ. हूआ । ६ आ. सहनांई । इ. सहनाई । ७ आ. समंद्र । ८ आ.इ. उझलीया । ९ अ. राजी । १० इ. दिच । ११ आ.इ. चलीया । १२ अ. टैचाळां । १३ आ. सिरि । १४ आ. ठल । १५ आ. ठलकै । १६ आ. ठूहरी । १७ आ. उपडीया । इ. उपडी । १८ इ. वंक । १९ अ.आ. सेटां । २० आ.इ. नीसांण । २१ अ. सांहण । २२ अ. असष । २३ इ. हैवथट । २४ आ.इ. हिलीय । २५ आ. साईर । २६ आ.इ. छिलीया । २७ आ.इ. पयाल । २८ आ.इ. दहलीया । २९ आ. ठिली । ३० आ. ठिलीया । इ. ढिलीया । ३१. इ. गोधूल । ३२ अ.आ. सांहण । ३३ आ. उलटि ।

सरपां नव - कुळाणिय, महि - मंडळ मेर - मेखळा ।
परबत अस्ट-कुळीए[1], धरणी-[2]-धर धूजिया[3] त्रिण ऐ ॥२॥

छंद झांफताळी

धडहडे सात-पुडि[4] धूजि[5]धम-हम[6] धरा ।
डंब औधूळ अंबर चडे डंबरा ॥
वावंता नास वेगाळ तेजी वहै ।
गाहटां[7] गोम पाहाड[8] पाए गहै ॥१॥

साट सीरम्म ऊरम्म[9] हुइ[10] साहणां[11] ।
घाघरट थाट घांसार हालै घणां[12] ॥
तापडै ऊपडै[13] तेज मांही[14] तुरा ।
उड्डिया[15] जांण वेवांण[16] आकासरा ॥२॥

फरहरै वांनरा[17] जेम फाळां फुरणि ।
धमता नास वरहास हूआ[18] धमणि ॥
पंथि[19] पाखांण पीठौ करै पैनुहै ।
मन्न सूधा[20] भरै डांण वांकै[21] मुहै[22] ॥३॥

ऊबटां विक्कटां औघटां ऊपरा ।
दौडतौ[23] है - थटां राह हूआ दरा[24] ॥
ऊछळै फीण है सास वाजै उरै ।
ताडि कोमंडमें[25] फाडि कीया तुरै ॥४॥

चाबके[26] झालिया[27] चंचळा चप्पळा ।
नांम[28] "जै" अंग ऊतंग वाहै नळा ॥

---

१. आ.इ. कुल । २ इ. धरणि-धर । ३ आ. धूजीया । इ. धुजीय । ४ आ पुड । ५ इ. धुजि । ६ अ. धम-हमि । ७ अ. गांहटां । ८ अ. पहाड । ९ आ. उरम । इ. मोरम । १० इ. हुई । ११ इ. सांहणां । १२ इ. घणा । १३ आ.इ. उपडै । १४ अ. मांहि । १५ आ.इ. उडीया । १६ आ. विवांण । इ. वींवांण । १७ इ. वांनरां । १८ इ. हुआ । १९ इ. पथि । २० आ.इ. सुधा । २१ इ. वांके । २२ इ. मुहे । २३ इ. दोडतो । २४ आ.इ. हुआ-दरा । २५ आ.इ. कोमंडमै । २६ इ. चावकै । २७ आ.इ. झालीया । २८ इ. नीम ।

सांमटै ऊलटै कमधजां साहणे[1] ।
सांकियां[2] सात पायाळ[3] जम्मी सुणै ॥५॥

*खेडरा जोध तुरंगांण[4] ताता खडै[5] ।
पैखुरै[6] वीखणी[7] खोण[8] खांना पडै ॥
तप्पिया[9] ताळूए[10] लोह घोडातणै ।
आड झांफां भरै तेजसूं[11] ऊफणै[12] ॥६॥

राति सांमीर सारंग डांणे[13] ग्रहै ।
वाइ ऊपडीया[14] लोण जांणै[15] वहै ॥
हद्द वेहद्दपै वेगपै हैमरां ।
पाधरा जांण[16] पाहाड[17] उड्डै परां[18] ॥७॥

घ्रूस[19] रावत तेजी वहै घूवडा[20] ।
घस्ससी[21] घूंघली[22] फौज काळी-घडा ॥
ऊजळा दांत गय सांमळा आगळी ।
सुंड उल्लाळता[23] हींडळै[24] सिंगळी[25] ॥८॥

मंद मंदोमता[26] व्रक्ख[27] धक्का मुडै ।
गाजता मेघ पांहाड[28] काळा गुडै ॥
ओप[29] ढैंचाळ[30] ढालां[31] घटा ऊपडै[32] ।
ऊपरै[33] चींध[34] आकास नेजा अडै ॥९॥

आंकुसां[35] गज्ज कूंभाथळां[36] ऊजळी[37] ।
वादळो[38] सीस जांणै[39] खिमै[40] वीजळी ॥

---

१ अ. सांहणें । २ आ. सांकीया । इ. सांकीयो । ३ आ.इ. पयाल । *'आ' प्रति में यह पंक्ति इस प्रकार है—'खेड रा जोध ताता खडै ।' ४ इ. तोषार । ५ इ. षडे । ६ अ. पषुरे । इ. पैषुरे । ७ इ. विषुणी । ८ इ. षौण । ९ आ. तपीया । इ. तषीया । १० अ. तालऐ । ११ आ.इ. सु । १२ आ.इ. उफणै । १३ आ. डांण । १४ आ. उपडीया । इ. उपाडीया । १५ आ.इ. जांणे । १६ अ.आ. जांणि । १७ आ. पहाड । १८ आ.इ. परा । १९ इ. घूस । २० आ.इ. धुवडा । २१ आ.इ. धससी । २२ आ.इ. घुघली । २३ आ. उलालता । इ. उछालता । २४ आ.इ. हिंडलै । २५ आ. सिघली । इ. सिंघली । २६ अ. सदोमता । इ. मदिसधोमता । २७ आ.इ. वृष । २८ अ. माहाड । २९ आ.इ. ओपि । ३० आ. टेचाल । इ. ढैचाल । ३१ आ. टालां । ३२ आ.इ. उपडै । ३३ आ.इ. उपरै । ३४ आ. चीध । ३५ अ. आंकुसा । ३६ इ. कुंभाथलां । ३७ आ.इ. उजली । ३८ आ. बादलां । ३९ आ.इ. जांणे । ४० आ.इ. खिवै ।

उमंडै मह्न गै-सुंड[1] डोहै[2] अगे[3] ।
पांखिया[4] जांण[5] पाहाड हालै पगे[6] ॥१०॥

लाइयां लंगरां पेखि पट्टाभरां ।
डील भोळौ[7] पडै कुंजरां डूंगरां[8] ॥
गज्ज ऊधोळिया[9] रज्ज सूं गूडळा[10] ।
धोममैं पब[11] दीपै किरे धूंधळा[12] ॥११॥

वोम लागा वहै लोडता वारणूं ।
हल्लवै द्रोण ऊपाड[13] जांणै[14] हणूं[15] ॥
पाटमें भूल[16] गै घातियां[17] पाखरां ।
भार-अट्ठार[18] आबू किरै[19] भाखरां ॥१२॥

कुंजरां[20] ढूंहरी[21] ढाल[22] कुंभा-थळै[23] ।
वादळा जांण[24] फाबत्त[25] वींजा-चाळै[26] ॥
धम्मळी पीयळी[27] लाल नीली-धजं ।
गाजता जांण गोरंभ दीसै गजं[28] ॥१३॥

ओपियै[29] बैरकां कुजरां ऊपरै[30] ।
गुड्डियं[31] उड्डियं[32] जांण[33] पब्बै-गिरै[34] ॥
सांमठौ हल्लकौ मैंगळां[35] सब्बळौ ।
वाट ऊभी[36] वहै जांण आडौ-वळौ ॥१४॥

सांमळा गात डोहत्ति[37] गै-सूंडयं ।
स्रप्प हींडै[38] किरै[39] साख स्री खंडयं ॥

---

१ इ. गैसूंड । २ इ. माहै । ३ आ.इ. अगै । ४ अ. पांषीया । इ. पांषीयां । ५ आ.इ. जांणि । ६ आ.इ. पगै । ७ आ.इ. भौलो । ८ इ. डुंगरां । ९ आ. उधोलीया । इ. उधौलीयां । १० आ. गुडला । ११ अ. पेब । १२ आ. घूघला । इ. घुधला । १३ आ.इ. उपाडि । १४ आ. जांणे । १५ इ. हणु । १६ इ. फूल । १७ आ.इ. घातीयां । १८ आ. भार-अटार इ. अढार । १९ आ.इ. फिरे । २० आ. इ. कूंजरा । २१ आ. टूहरी । इ. ढूंहरी । २२ आ. टाल । २३ आ. कूंभा-थले । इ. विचा-चले । २४ अ.इ. जांणि । २५ आ.इ फाबित । २६ अ. वीजा-जले । इ. विचा-चले । २७ आ. पीबली । २८ इ. गजां । २९ आ.इ. ओपीयै । ३० आ.इ. उपरे । ३१ आ. गुडीय । इ. गुडीयां । ३२ आ. उडीयं । इ. उडीयां । ३३ इ. जांणि । ३४ इ. पबै-गिरे । ३५ इ. मेगलां । ३६ आ.इ. उभी । ३७ इ. डोहंड । ३८ इ. हिडै । ३९ ओ.इ. फिरे ।

घूघरां[१] पाखरां रोळ घंटा-सुरं[२] ।
चोळ कप्पोळ[३] सिंदूरमैं[४] चम्मरं ॥१५॥

मारुवै[५] रावतां[६] गाजतां मैणळां[७] ।
वाधियौ[८] वाद[९] सूं इंद्ररौ[१०] वादळां ॥
अद्द भू - मद्द समूळ ऊपाडतां[११] ।
भद्र-जाती गुडै[१२] सूंड[१३] भंमाडतां ॥१६॥

हिल्लिया[१४] हेम हैथाट फौजां[१५] हुवै[१६] ।
ध्रूंस[१७] नौबत्ति दम्मांम[१८] भेरी धुबै[१९] ॥
तब्ब अंधारमें मैन खेहांतणी ।
ऊजला[२०] बूग नाखत्र भालां अणी ॥१७॥

आवळा-भूल[२१] भालांतणा आमंळां ।
ऊमडै[२२] खैंग राठौड आचागलां ॥
ऊलकै[२३] हैमरै[२४] सेन ले आपरौ[२५] ।
साह सांमौ[२६] अयौ[२७]'मालदे' दूसरौ[२८] ॥१८॥

महाराजारौ बादसाहसूं मिळाप

गाहा

'जोध' कळोधर जोध अंसली । 'गाजीसाह' तेग भुज भल्ली[२९] ।
आवै[३०] सूं[३१]'जिहगीर[३२]'अदल्ली[३३] । मींयौ[३४] विच[३५] अजमेरह दिल्ली ॥१॥
कमळ बारै ऊगा[३६] किरणाळा । भाळै "गागीसाह" भुजाळा[३७] ।
वप[३८] भूडंड पसारि विसाळा । असपत्ति-राइ आपि[३९] अंकमाळा ॥२॥

---

१ इ. घुघरां । २ इ. घटा सुरं । ३ इ. कपुरमै । ४ अ. सिंदुरमें । ५ अ. मारुवै । ६ आ. रावरां । इ. राव मैरां । ७ आ. मैंगंली । ८ आ. वाधीयौ । इ. वादीयौ । ९ इ. वाद सु । १० इ. इंद्ररां । ११ आ.इ. उपाडतां । १२ इ. गुडे । १३ आ. सुंड । इ. सुड । १४ आ.इ. हिलीया । १५ इ. फोजां । १६ इ. हुवै । १७ आ. ध्रुस । इ. ध्रूस । १८ इ. दमांन । १९ आ. धूबै । २० आ.इ. उजला । इ. उजलां । २१ अ. अवला-भूल । २२ आ.इ. उमडै । २३ आ. उलकै । इ. उलके । २४ आ. हेमेरे । इ. हैमरे । २५ इ. अपुरो । २६ इ. सांम्हो । २७ आ.इ. आयो । २८ आ. दूसरो । इ. दुसरौ । २९ इ. छली । ३० इ. आव । ३१ आ. सुं । इ. सु । ३२ इ. जहंगीर । ३३ आ. अदली । इ. अदिली । ३४ आ. मियो । ३५ इ. वीच । ३६ आ.इ. उगा । ३७ अ.आ. भुजीला । ३८ आ.इ. वपि । ३९ आ. आपी । इ. आपीया ।

खूरम[1] खरबै खलक[2] नित्रीठौ[3] । किरि पलवाडौ सांड पईठौ ।
मेळौ "गजण" दिलीवै मीठौ । अरक क छींक[4] अमूंभी[5] दीठौ ॥३॥

दूहा

राजा तम[6] हमसूं[7] मिळै, हमह मिळै[8] सुख - सात[9] ।
हजरत रळियायित[10] हुओ[11], हसि[12] पूछी[13] कुसळात ॥१॥
तूं[14] भासंकर भाळियळ[15], वरै घडा अणओट ।
भागा जो[16] वड भाखरां, डर हूंदा सीकोट[17] ॥२॥
आजूणै[18] दिन कारणै, तो[19] जेहा कमधज्ज ।
मरद मुहंगा[20] रक्खियै[21], दूभर[22] रक्खण[23] लज्ज ॥३॥
हाजर हिंदूवै[24] तुरक, लियै[25] न पर भुंइ[26] लोडि[27] ।
चींत[28] वटावण हेक तूं, वीत वटावण[29] कोडि[30] ॥४॥

गाथा

साइर[31] मझेण लंका, रांण[32] कूंभेण[33] इंद्रजित सत्रं[34] ।
अगली[35] नृप[36] रांम चंदां[37], तत्र[38] गछे हणुमांन से[39] ॥१॥
आतमा अभै - दांनं, किन्या - दांन[40] द्योत[41] मेदनी विद्या ।
चत्वारि[42] दांन धरमं[43], तं तुल्यं[44] सांम धरमयं[45] ॥२॥
खत्र मग खग धारा[46], धारा *खग जोग धारणया ।
आरूढ़ पतितै पुरखा, गणा गणपति[47] गतिपाळह[48] ॥३॥

---

१ आ.इ. षुरम । २ इ. षलषे । ३ अ. नित्रीवो । ४ आ.इ. छीक । ५ आ.इ. अमूझी । ६ इ. तुम । ७. हमसुं । ८ आ.इ. मिले । ९ इ. सा । १० आ. रलीयां-यित । इ. रलीयाइत । ११ आ. हूओ । इ. हुवो । १२ इ. हसी । १३ आ. पुछी । १४ आ.इ. तु । १५ आ.इ. भालीअल । १६ आ.इ. जे । १७ इ. सीकोट । १८ आ.इ. ओजुणै । १९ इ. तो । २० अ.आ. मुहगा । २१ आ.इ. रषीयै । २२ इ. दुभर । २३ आ. रषण । इ. राषण । २४ आ. हिंदुवै । इ. हीदुवै । २५ इ. लीयै । २६ आ.इ. भुई । २७ इ. लौडि । २८ इ. चिंत । २९ अ.आ. वदावण । ३० इ. कोडि । ३१ आ. साईर । इ. सायर । ३२ इ. राण । ३३ अ. कूंभेण । ३४ अ. सत्र । आ. सन्त । ३५ आ.इ. अगलि । ३६ आ. निृप । इ. नृप । ३७ अ. रांमचंदः । ३८ इ. तत । ३९ आ.इ. सै । ४० अ. किना-दांन । इ. कन्या-दांन । ४१ अ. द्यात । ४२ आ.इ. चत्वार । ४३ अ. धरेमं । ४४ अ. तुलं । इ. तूल्यं । ४५ इ. धरम-मयं । ४६ इ. धारा । *इ. प्रति में यह पंक्ति इस प्रकार है । 'षग जाग धारणया' । ४७ आ.इ. गपति । ४८ अ. गतियाल । इ. गतियालं ।

कुळ जनंम[१] पांणि खगै, आसण तुरियां[२] सुरत न अंगे ।
किं भवति[३] राज चिंता, खत्रियांणै[४] नैव दळिद्रः ॥४॥

सनमुखे महा - जुद्धे[५], सनमुखे मंगते - दांनं[६] ।
सनमुख सांम[७] अग्यां, नविहड ऐ[८] सूर धीराई[९] ॥५॥

राजा मेक सजीहा, कमण[१०] वखांण तूझ[११] वरणवए ।
फण सहस सेस - नागं[१२], सहस दुजीह जोग सोभागं ॥६॥

'पररेज' साह[१३] सत्थे, दे कमधज लज भूडंडे ।
सुरतांण[१४] खुरम मत्थे, दे बीडो कीध फुरमांणं[१५] ॥७॥

महाराजारो खुरमसूं जुध करणारो बीड़ो उठाणो

छंद कांमिखी[१६]

फुरमांणं पाणं बीडो झल्लै, नीमज्जै भुज्जा डंडं ।
राठोडां[१७] मोडां[१८] खत्रह्-घोडां[१९], धन्नं[२०] मन्नं[२१] बळि-बंडं ॥
संग्रांमं[२२] कांमं[२३] हांमं[२४] मत्ते, दाढ़ी मूंछां[२५] कर घत्ते ।
*गयणंगं लग्गं खग्गं, तोलै वीरं धीरं वीरत्ते ॥१॥

तेरस्सै हस्से कोपै[२६] ओपै[२७], रोपै[२८] बंधै[२९] रिणवट्टं ।
निल्लाटै पट्टै तप्पै दिप्पै, भांणं दूणं मैवट्टं ॥
चोळम्मै रुक्खं मुक्खं चक्ख, वपं रूपं परचंडं ।
भारत्थं बत्थं पत्थं भीमं, मांझी[३०] मेरं ब्रहमंडं[३१] ॥२॥

भीखम क्रन्नं द्रोणं जांणे, सल्लं भूरी भगदत्तं ।
गाहेवा लंका वंका गड्डं, किरि अंगद्दं हणिमंतं[३२] ॥

---

१ आ.इ. जनम । २ आ.इ. तुरीयां । ३ इ. भवती । ४ आ.इ. षत्रीयाणे । ५ आ. महाजुधे । इ. महाजुध । ६ आ. मंगत-दांन । ७ इ. स्यांम । ८ इ. ए । ९ इ. धीराए । १० इ. कवण । ११ आ.इ. तुझ । १२ आ. सेषनाग । १३ अ. साद । १४ आ. सुरताण । १५ इ. फुरमाणं । १६ अ. कामिषी । इ. कामीषी । १७ अ. राठोड़ं । १८ अ. मोड़ं । १९ अ. षत्र-घोडं । २० आ.इ. धनं । २१ आ.इ. मनं । २२ आ.इ. अंग्रांमं । २३ इ. कामं । २४ आ.इ. हामं । २५ आ.इ. मुछां । * इ. प्रति में यह पंक्ति इस प्रकार है । गयणंगं लगं पगं षगं । २६ आ.इ. कोपे । २७ आ.इ. ओपे । २८ आ.इ. रोपे । २९ आ.इ. बंधे । ३० इ. माझी । ३१ अ. व्रह्मंडं । इ. व्रह्मंडं । ३२ आ.इ. हणमंतं ।

विक्कासें हासें सीसे बंध[1], मेले मूंछां[2] भ्रूंहारे[3] ।
धारा लंकाळं पांणे घूणे, अब्भं नब्भं आधारे[4] ॥३॥

सत्तोलं बोलं मुक्खे दक्खे, खेलेवा खत्रं-धौडं ।
साहिजादै माथं विद्दा हूओ, हिन्दू - पत्ती[5] राठौडं ॥
पडिगाहं साहं बाहं उब्भे, भारं भुज्जे संभाए ।
दुर-बारा मज्झे 'मालौ'[6], दूजौ[7] बळियौ[8] राजा वेडाए ॥४॥

सज्जोडा घोडा तेजी तत्ता, सद्दोमता सूंडाळं ।
खज्जानां ग्यानां लक्खां कोडो, आंणै दीना अच्चाळं ॥
अंबाडी गज्जां धज्जां नेजां, घोडे[9] घत्ते पल्लांणं ।
कोठारं भारं ऊंठा[10] पूठी, डेरा तंबू साइवांणं[11] ॥५॥

नाफेरी[12] भेरी सद्दं नद्दं, हुब्बै धुब्बै नीसांणं[13] ।
दम्मामं दीयं कूचं कीयं, मौडे मौडे मेल्हांणं[14] ॥
सुरतांनां खांनां वड्डा वड्डा, मिल्लिकं मीयं मीरं ।
रट्ठौडं रावं 'गाजी साहं'[15], सत्थे हिन्दू[16] हम्मीरं ॥६॥

गाथा

फुरमांण वेग फिरियं[17], असपति[18] नर गजपति[19] अगै ।
दिस आठ राठ विडियं[20], मझि समुंद्र हेम यबांइ ॥१॥

छंद मेहांणी

घोडां नै वेसांरा नांम

हूरम्मजि[21] केची मुकरांणी[22] ।
खंधार हरेबी खुरसांणी ॥
आरब्बी रूमी उजबक्का ।
समहदी संभर - कंदक्का ॥१॥

---

१ आ. वधे । २ इ. मूछं । ३ अ. चुहारे । इ. भ्रुहारं । ४ आ.इ. अधारे । ५ इ. हींदू-पती । ६ इ. मालो । ७ इ. दुजो । ८ आ. वलीयो । ९ आ.इ. घोडे । १० इ. उठां । ११ इ. धाईवाणं । १२ अ. नफेरी । इ. नफरी । १३ इ. निसाणं । १४ अ. मोहाखं । इ. मेल्हांणं । १५ अ.आ. गाजीसाव । १६ अ. हीदु । १७ इ. फिरीयं । १८ इ. असिपति । १९ इ. गजपती । २० अ. बिडीयं । २१ आ. हुरमजी । इ. हुरंमजि । २२ आ.इ. मूकराणी ।

बंगस्सी[1] भम्मर खोहाए ।
बदकस्सी काबिल रोहाए ॥
गलबल्ला[2] मक्का मद्दीना ।
कसमीर भुटंती राज्जीना[3] ॥२॥

मुलतांणां सिंधू घट्टाए ।
आरोडा भक्खर थट्टाए ॥
लौहौरी[4] हांसी हंसारी ।
पूरब्बी देसी गंगपारी ॥३॥

नाळनौळ[5] डोडू नग्गौरा ।
अजमेरा[6] बोली दुग्गौरा ॥
ग्वालेर[7] ओलो सहोडाए[8] ।
रिणथंभर सैंभर[9] तोडाए ॥४॥

कस्सूरी भेहर कुस्साबा ।
देपाळपुरी - सा[10] पंजाबा ॥
वितुंडा सरसा त्रीहाडा[11] ।
सीहांन दी कोठी बाजवाडा ॥५॥

कम्माउ नग्गर कोटाए ।
मेवाती मुहमद दोटाए[12] ॥
धम तोडा पक्खलिया लाए ।
जंगळिया[13] जंबूबा लाए ॥६॥

मरहट्ठी भट्ठी मंडहाडा ।
पठ्ठांण[14] धौळा-गिर[15] पाहाडा[16] ॥
दळ डाहुळ-गळिया दांणीए ।
पीयळिया[17] काळा पाणीए ॥७॥

---

१ इ. बगसी । २ इ. कलबला । ३ अ.आ. गजनी । ४ आ.इ. लाहोरी । ५ आ. नाल-नोल । ६ अ. अजमेरी । ७ इ. गुवालेर । ८ आ.इ. सहोडाए । ९ आ.इ. सैभर । १० अ. देपालपुर । इ. देपालपुरा । ११ इ. त्रिहाडा । १२ इ. दोठा ए । १३ अ.इ. जंगलीया । १४ अ. पैठांणं । इ. पैठाणं । १५ आ. धौला-गिरि । इ. धोला-गिर । १६ आ.इ. पहाडा । १७ अ.इ. पीयलीया ।

पांणी-पंथ पडुर[1] वेसा ए।
करणाटक[2] कूंकण[3] देसा ए[4] ॥
बोजा-पुर कनडो बुगलांणा[5]।
गोळ-कुंडा[6] वेदुर[7] तिलगांणा[8] ॥८॥

देव-गिरी[9] दौलत[10] वहाए[11]।
नासका त्रंबक[12] हद्दा ए॥
अहमदा नगर[13] आसेरा।
साल्हेर मोल्हेरक भंभेरा॥९॥

* नरबद्दा कंठा नमियाडा।
चौरासी गड्डां[14] बरुआडा॥
गुंड-वांणा[15] झाड खंडी-सा ए।
छिडि तांडा[16] गोड उडीसा ए॥१०॥

रोहितास काळी-झर बंगाळा।
नील-कंठ नांदर नेपाळा॥
कांमरे वैसंकर जट्टाए।
सूरती सेन उलट्टा ए[17] ॥११॥

लोहा-गिर पट्टण हांजी ए।
गड्डां[18] वैरागर लांजी ए॥
कन्नौजां[19] चीणी[20] चरणोढा[21]।
मांडव्वा बंधव सन्नाढा[22] ॥१२॥

---

१ आ. पडर। इ. पंडर। २ आ.इ. करणाट। ३ आ.इ. कुंकण। ४ अ. ऐ। ५ अ.इ. बूगलांणा। ६ अ. गोल कूडा। इ. गोल कुडा। ७ इ. वेदूर। ८ अ. तीलगांणा। ९ आ. देवगिरि। इ. देवगिर। १० आ.इ. दोलत। ११ इ. वदा-ऐ। १२ आ. त्रंबकं। १३ अ. अहम-नगर। * 'अ' प्रति में ९ वें छंद के बाद १० वां छंद दो बार लिखा हुआ है—

प्रथम १० वें में पुनः—"नरमदा नगर आसेरा। साल्हर मोल्हेरक भंभेरा॥१०॥

इसके बाद फिर १० वां छंद है जो बराबर 'इ' आदि प्रतियों से मेल खाता है। नोट—यह लिपिक की भूल मात्र है। १४ अ. गटां। १५ अ. गुडवांणां। १६ अ. तांड। १७ इ. उलटाए। १८ अ. गटा। १९ आ.इ. कनोजा। २० इ. चरणी। २१ अ. चरणाटा। २२ अ.आ. सनाटा।

व्रंम - पुत्रह[१] कासो वेरारा ।
सोनारा गांमी[२] पंचुग्रारा ॥
मागध्धह राजा[३] महला ए ।
तो सांम तिजाउर टिल्ला ए ॥१३॥

मांडव्वा पट्टण चौरासी ।
छिडिया[४] मांन-धाता सत्यासी ॥
गूंजव्वै सत्तरि[५] हज्जारा ।
बांणूं लक्ख बलख बवखारा ॥१४॥

भर - अच्छी खंभा - इत्ती ए ।
प्रति-काळ किरंग विलाती ए ॥
ककडाळा पाउ कच्छी ए[६] ।
दरियावां[७] कांठां[८] मच्छी ए ॥१५॥

गिरनारा[९] जूना[१०] गड्ढा ए ।
दळ वंका[११] वहण[१२] दुवड्डा[१३] ए ॥
छिडिया घर घोडा घट्टा ए[१४] ।
जळ - वट्ट अनै थळ-वट्टा ए ॥१६॥

नवकोटी मारू मेवाडा ।
हाडोती वागड ढूंढाडा[१५] ॥
पूरब[१६] पच्छिम परचंडा ए ।
दखणाधा[१७] उत्तर खंडा ए ॥१७॥

खुरसांणां हिंदुस-थांना[१८] ए ।
खिडिया[१९] सुरतांणां[२०] खांना ए ॥
खूंदालम[२१] आगळि[२२] आवीया ।
दे बीडौ[२३] वेग चलावीया[२४] ॥१८॥

---

१ आ. व्रह्म-पुत्र । इ. वृह्म-पुत्र । २ इ. गामी । ३ आ.इ. राज । ४ इ. छिडीया । ५ इ. सतिरण । ६ इ. ऐ । ७ इ. दरीयावां । ८ अ. कंठा । इ. कांठा । ९ अ. गिरिनारां । १० आ. जुंना गटा । इ. जुंना गढा । ११ अ. वंगा । १२ इ. वेंहण । १३ अ. दुवटा । १४ इ. ऐ । १५ अ.इ. ढढाडा । १६ इ. पुरब । १७ अ. दषणाध । इ. दषणाधी । १८ अ.इ. हीदुसथांना । इ. हिदुस्थाना । १९ अ.इ. षिडीया । २० इ. सूरतांणां । २१ अ. षुदालम । इ. षुदालिम । २२ अ. अगलि । २३ आ. बीडो । २४ अ इ. चलाईया ।

तांम[1] सताब हुआ[2] त्यारू ए।
जवन हिंदू[3] वूहा ज्यारूं ए॥
हिंदूवै[4] सेन मुगल्ली ए।
दळ दद्दळ फौजां चल्ली ए॥१९॥

साही सेना रो कूच

गाहा

गज भेरि नींसांण[5] ननदं। परबतमाळ[6] दियै[7] पड सद्दं।
साह सेन चल्ले सरहद्दं। गूधळियो[8] गयणाग[9] गगद्दं॥१॥

असपति सेन असंख उलट्टं[10]। हिले हेम दे महै पट्टं।
गिरवर धर झंगर गाहट्टं। थिउ पैमाळ[11] पाघरा पट्टं[12]॥२॥

गाही गोम गयण गुडळांणो[13]। धज्ज[14]पताकां[15]अरक ढकांणो[16]।
दहळ पयाळ[17] सेख दहलांणो। पतसाही[18] दळ कीध पयांणो॥३॥

छंद रसाउला[19]

सेनमैं सब्बला। हुई हीलोहळा।
जांण निध्धेजळा[20]। पुळे[21] पाइद्दळो[22]॥
*मल्हपै[23] मैंगळा[24]। सूंड[25] लल्लवळा।
आगळी ऊजळा। सेत - दांतू - सळा[26]॥
सोहिया[27] सांमळा। वप्पि वींजा - चळा[28]।
स्रंग[29] कूंभा-थळा[30]। वोम किरि वद्दळा[31]॥

---

१ अ. ताम। २ इ. हूआ। ३ आ.इ. हीदु। ४ अ. हीदूवै। इ. हिदूवे। ५ इ. निसांण। ६ अ. परब-माल। ७ इ. दीयै। ८ आ.इ. गुधलीयो। ९ इ. गैणाग। १० इ. उदलं। ११ इ. पैमोल। १२ आ. थटं। १३ अ. गूडलांणो। १४ अ. धजा। इ. धजां। १५ इ. पताषां। १६ अ. टकांणो। इ. ढैकांणो। १७ अ. पयालि। १८ इ. पतिसाही। १९ अ. रसाऊला। इ. रसावला। २० अ.इ. निधजला। २१ इ. पुले। २२ आ. पाईदला। *प्रति अ. में यह छंद अशुद्ध है जिसका पाठ इस प्रकार है।
"महला सेत दांतूसला, सोहीया सांमला, वपि वीजाचला, श्रिग कूंमाथला"
२३ अ. महला। इ. मल्हपे। २४ आ.इ. मंगला। २५ इ. सुंड। २६ आ. दांतूसलो। इ. दांतुसला। २७ आ.इ. सोहीया। २८ आ. वीजा-चला। इ. विजा-चला। २९ इ. श्रिग। ३० इ. कुंभा-थला। ३१ आ.इ. वादला।

कसस्सै कंठळा । आंकुसां वीजळा[१] ।
चमक्कै चप्पळा । बैरकां बंबळा[२] ॥
ढेच[३] ढालव्वळा[४] । अस्सि ऊतांमळा[५] ।
वहै वेगागळा । वाज वाहै[६] नळा ॥
कांपिया[७] कम्मला । धूजि रस्सातळा ।
सेख सळळसला । नाग नव्वै कुळा ॥
प्रब्बंता प्रज्जळा । टंक[८] टळा टळा[९] ।

खंड खळम्भळा

गहपती[१०] गिगन्नह गूधला[११], गोभ गिरव्वर गूडळा[१२] ।
महि मेर मेहागिर[१३] मेखळा, थियौ धुळीरव[१४] धूंधळा ॥१॥

धूंधळौ[१५] अंबरं । खैह[१६] मै डंबरं ।
बंब रातं - बरं । जांणि जन्नै करं ॥
तूटि जाईतरं । झेरमै झंगरं ।
पट थियौ[१७] पध्धरं । हींजरै[१८] हैमरं ॥
रोळ है - पक्खरं । गै गुडै भक्खरं ।
मद्दमै नीझरं । घोर घट्टा सरं ॥
भूल पाटंबरं । लोहमै लंगरं ।
भ्रक्कुटै[१९] चम्मरं । मलप्पै[२०] कुंजरं[२१] ॥
सैन किरि वांनरं । साथ सीतावरं ।
उलट्टा सायरं[२२] । जांण चत्रमुरं ॥
भोम भारम्भरं । हार कंपै[२३] हरं ।
कोम क्रोड डरं । है - खुरै[२४] पत्थरं ॥

---

१ इ. विजला । २ अ. बंबंला । ३ आ. टैच्च । ४ अ.आ. लालवला । ५ आ. उतामला । इ. उतांमला । ६ आ.इ. वाहे । ७ अ. कांपीयं । इ. कांपीयां । ८ अ. टक । ९ अ. टलवला । १० आ.इ. गहपति । ११ आ.इ. गुघला । १२ आ.इ. गुडला । १३ आ.इ. मैहागिरि । १४ आ.इ. घूली-रव । १५ अ. घूघलो । इ. घूघला । १६ इ. षेद । १७ आ.इ. थीयो । १८ अ. हीजरै । १९ आ.इ. भ्रिकुटे । २० आ.इ. मलये । २१ आ.इ. कूजरं । २२ अ. साइर । २३ इ. कंपे । २४ इ. है-षुरे ।

उड्डि वैसन्नरं[1] । सांमठा सध्धरं ॥
सुब्भटां भूलरं[2] । फौज घांसाहरं ॥
असमांनक[3] फटौ उद्दरं । गयण[4] गरदां गाहंबरं[5] ।
लख थाट दगग्गै लसकरं । गाहट्टे गिर - कंदरं ॥२॥

कंदरां अन्नडा । गाज[6] तूटै गडा ।
ढोल नीधस्सडा । हूकळै है - घडा ॥
फूरणियां[7] फडहडा । घज्ज धू अध्धडा ।
है खडै वांकडा । ताजवै ताकडा ॥
नभ्भ हू नीयडा । खिरै जांणै उडा ।
हुवै[8] हूबच्छडा । अस्स[9] ऊरव्वडा ॥
वाजिया[10] वेगडा । व्रिक्ख[11] भाजै थडा ।
ऊजडै[12] सभ्भडा । धूज प्रिथ्थी पुडा ॥
खट्टमै हैकडा[13] । कोम कंधं[14] मुडा ।
कोडि कंपं दडा । दाढ खडहक्खडा ॥
मेहलां[15] मंकडा । सैन तै समवडा ।
मत गयंद गुडा । प्रब्बतां जेहडा ॥
फरहरै कप्पडा । नीलमै रत्तडा ।
झाभ भूलभ्भडा[16] । कूंतमै[17] झंगडा ॥

रण-खेत[18] चडंदा रिहखडा । कमण आया की बप्पडा ।
पतसाह[19] तणा दळ प्रग्गडा । पूरब पहुंचै[20] ढूकडा ॥३॥

ढूकडा हूबयं । सेन पूरब्बयं ।
नगारां[21] धूबयं[22] । गुडै गज खंभयं ॥
जांण[23] गोरंभयं । साट सीरंमयं ।
असी ऊरंमयं । कीध ऊमंगयं ॥

---

१ आ.इ. वैसनरं । २ इ. झुलरं । ३ इ. असमांन । ४ गण । ५ इ. गहबरं । ६ अ. गाज । ७ अ. पूरणीयां । इ. फूरणी । ८ इ. हूह । ९ इ. असि । १० आ. वाजीया । ११ अ.इ. व्रिष । १२ अ. उडै । १३ इ. हेकडा । १४ अ. कंध । १५ इ. महला । १६ आ. भूल-भडा । इ झुल-भडा । १७ आ.इ. कूतमै । १८ आ.इ. रिण-षेत । १९ आ.इ. पतिसातणा । २० अ. पहुचै । इ. पहूचे । २१ अ. नमारा । २२ अ. धूबये । इ. धुबयं । २३ इ. जांणि ।

ऊपडै वग्गयं । गाजवां लग्गयं ।
गोम गयणंगयं । धूजिया[1] नग्गयं ।।
सेख वासग्गयं । डंबरे डंबयं ।
गाहिजै पब्बयं । सात सांमंदयं ।।
जांण ऊलट्टयं । हेम परबत्तयं ।
जांण[2] कि[3] हिल्लये । खळभळे खंडयं ।।
डोलिया[4] दीपयं । मेर व्रहमंडयं[5] ।
सिंघळी सुंडयं । रेण उच्चंडयं ।।
बेरका भुंडये[6] । गिरगने लोडयं ।
फौज हेमज्जयं । त्रिग[7] अमूंजयं ।।

पतिसाह[8] नमो[9] पारंभयं । सैन[10] असंख्या लभ्भयं ।
इम किया[11] रांम आंरभयं । धूंधळिया[12] धर अभ्भयं ।।४।।

अब्दुररहीम खांना खांनरौ कैद होणौ

गाहा

आभा किरि गज दळ[13] उपडिया[14] ।
खूंदालम[15] कट्टक इम खडिया[16] ।।
राडि बरारी[17] भूंभे[18] पडिया[19] ।
खांना - खांन जंजीरे जडिया[20] ।।१।।

भीम - नाद भेरी घूंमाडै[21] ।
भालां डंबर गयण भमाडै ।।
पडिया[22] घोडां[23] घंस[24] पहाडै[25] ।
असपत[26] दळ वागां ऊपाडै ।।२।।

---

१ आ.इ. घूजीया । २ आ.इ. जांणि । ३ अ. कै । ४ आ.इ. डोलीया । ५ इ. वृह्मंडयं । ६ इ. भूडयं । ७ आ.इ. म्रिघ । ८ आ.इ. पातिसाह । ९ आ.इ. नमो । १० इ. सने । ११ आ.इ. कीया । १२ आ.इ. घूघलीया । १३ अ. दाण । आ. दांण । १४ आ.इ. उपडीयां । १५ आ.इ. पूदालम । १६ आ इ. षडीया । १७ आ.इ. बरारि । १८ आ.इ. भूम्भे । १९ आ.इ. पडीया । २० आ. जडीया । इ. जुडीया । २१ आ. घूमाडे । इ. घुमाडे । २२ आ.इ. पडीया । २३ इ. घोडां । २४ आ.इ. घस । २५ इ. पूहाडे । २६ अ.इ. असपति ।

गोम गज[1] है - पाऐ[2] गाही ।
स्रप फुण सहस तपे सगळाही[3] ।।
लागा अंबर करण लडाई[4] ।
पूरब[5] दळ आया पतसाही ।।३।।

साही वळरो वरणण

कवित्त

भीम भयंकर नाद, भेर नीसांणां गरजै ।
गुहिर सद्द गडगडै, गयण बारह धण गरजै[6] ।।
खिमै[7] कूंत[8] अदभूत, भडां वांकां भूडंडै ।
वादळ[9] वादळ वळकि[10], वीज लत्ता व्रहमंडै[11] ।।
तळ जोड पटै[12] कुंजर वहै, अनड नदी नड दडियडे[13] ।
असपती[14]-राव[15] असमांनरा, दळ वदळ वदि वदि[16] चडे ।।२।।

भूमंडळ भैकंपे, जांण रैणाइउ[17] फट्टौ ।
प्रळै-काळ कळिपंत[18], प्रथी[19] उतपात प्रगट्टौ[20] ।।
रांम चंद सिरि लंक, कीध जांणै आरंभह ।
जटा-जूट[21] किरि धूणि,[22] रुद्र किय[23] नाटारंभह ।।
वन खंड दुरग्गां[24] गिर-वरां, आवरत्त वूहौ सब्बळ ।
सुरतांण खुरम ऊपर[25] खडै[26], दिस प्राची पतिसाह दळ ।।२।।

महाराज गजसींघरो वरणण

करिमरि कंकण सुकरि, नेत्र बाघो सिखराळह ।
वीर रस्स वरसोह, कंठ लज्जी वरमाळह ।।

---

१ अ. गजं । २ आ. पाए । ३ अ. सगलाइ । इ. सगलाई । ४ आ. लड़ाई । ५ अ. पूरव । ६ इ. गजे । ७ आ.इ. षिवै । ८ इ. कूत । ९ इ. वादलि । १० इ. वलक । ११ अ. ब्राह्मंडे । इ. व्रह्मंडे । १२ इ. पडै । १३ आ. दडीयडे । इ. दडीयाडे । १४ आ.इ. असपति । १५ आ.इ. राउ । १६ आ. चतुरंगी दल वर चडै । १७ इ. रैणाईर । १८ अ. कलपंत । १९ आ.इ. प्रिथी । २० आ.इ. प्रघटो । २१ इ. जटाजुटि । २२ इ. घुणि । २३ इ. कीयो । २४ इ. दुरंगां । २५ आ.इ. उपर । २६ इ. षडे ।

विकट रूप वींदणी[१], खुरम[२] घड[३] कीध[४] आडंबर ।
लगन[५] प्रब्ब[६] रणताळ[७], धमळ-मंगळ सिंधू[८]-सुर ॥
अधपती[९] बहूतरि[१०] ऊमरा[११], सतरि - खांन सुरतांणरा ।
दळ-थंभ 'गजण' दुल्लह[१२] हुओ, जांन सेन जोगणपुरा[१३] ॥३॥

तीरथ-राउ[१४] प्रयागि[१५], राव[१६] कमधज्ज पधारे ।
ब्रंम-सूत[१७] निय[१८] पहरि[१९], करगि अंजलि कुस[२०] धारे ॥
करि मंजन विधि[२१] सहित[२२], कीध तरपण गंगा तड[२३] ।
विवह दांन दै विप्रां, अंकमाळी अक्खै वड ॥
त्रिविध[२४] मै ताप[२५] पापह त्रिविध[२६], आप हूंत[२७] अळगा करे ।
'सूरउत' गोत ऊधरि[२८] सपत[२९], एकोतर कुळ ऊधरे[३०] ॥४॥

वेद-मंत्र बोलंत[३१], वेद पाठी ब्राहंमण[३२] ।
पहरे[३३] पट्ट अबोट, द्रब्ब आपै[३४] घण[३५] सघण ॥
सूं[३६] जमदड्ढा तेग, जोड[३७] चौधार बडप्फर ।
सहित 'भांण' सारधू, सोळ सिंगार निरंतर ॥
कीयौ तुलाब[३८] कमधज्ज नृप[३९], जस सस[४०] सूरज[४१] समवडै[४२] ।
हिंदुआं-छात[४३] हिंदू[४४] तुरक, धरम न तोलै तो धडै ॥५॥

कासीराव[४५] कमधज्ज, नीर - गंगा तद नांहै[४६] ।
मुगति-खेत सिव-पुरी, महा तीरथ अवगाहै[४७] ॥

---

१ अ. वीदणी । इ. विदणी । २ इ. षुरमि । ३ अ. घडि । इ. षड । ४ अ. की । ५ अ. लग्न । ६ अ. प्रबं । ७ इ. रिण-ताल । ८ अ. सिघ-सुर । ९ अ.इ. अघपति । १० इ. बहुतर । ११ अ. उमरी । १२ अ. दुलह । १३ अ. गणि-पूरा । १४ अ. तीरथ राइ । १५ अ. पीयागि । इ. प्रयागि । १६ अ.इ. राउ । १७ अ.इ. व्रह्म-सूत । १८ अ.इ. नीय । १९ इ. पहिर । २० इ. कूस । २१ इ. विध । २२ अ. सहति । २३ अ. तडि । २४ अ. त्रिविधि । २५ इ. तात । २६ अ.आ. त्रिविधि । २७ अ. हुत । इ. हूत । २८ आ. उघरि । इ. उघर । २९ इ. सपति । ३० आ. उधरे । इ. उधारे । ३१ आ.इ. बोलंति । ३२ आ. ब्राहमण । इ. ब्राहमण । ३३ आ. पहरि । इ. पहिर । ३४ आ.इ. आप । ३५ इ. घणे । ३६ आ.इ. सु । ३७ इ. जोडि । ३८ इ. तुलाव । ३९ आ.इ. नृप । ४० आ. ससि । इ. सिस । ४१ इ. सुरज । ४२ अ. समवेडै । इ. समवडे । ४३ आ. हीदूआं-छात । इ. हींदुवां छात । ४४ आ. हीदू । इ. हिदु । ४५ अ.इ. कासीराउ । ४६ अ. नांहे । इ. न्हाहे । ४७ इ. अविगाहे ।

दीध द्रब्ब दक्खणा, करगि[1] बंभणा[2] कळप्पै[3] ।
कपिल धेन कळ-धूत, भोम[4] आगाहट[5] अप्पे[6] ॥
भौ[7] मेटि उभै संसार भव, इम कुण कुळ[8] उद्धारसी ।
परसियौ[9] राय[10] जोधहपुरै[11], विस्वनाथ बांणारसी[12] ॥६॥
गया राव राठौड, विद्ध देखे परपूरण[13] ।
प्रेत सिला भरि[14] पिंड[15], पीर[16] रिण हूहुइ ऊरण[17] ॥
मात पक्ख पित पक्ख, पितर कारज[18] संभारे ।
सपत गोत उद्धरे, वंस इकोत्तर[19] तारे ॥
वड दांन दीध ब्रांह्मणां, वडौ धरम जस विसतरे ।
गज सिंघ वंस राठौड हर, इम भागीरथ अवतरे ॥७॥

गाथा

पुत्रज वैर वराहौ, पुत्र जग मां[20] उधरै पिंडौ[21] ।
पुत्रज सांम सनाहौ, पुत्रज पाट उद्धरण धीर ॥१॥
सागर वंस उद्धरण कारणि[22], आंण[23] मथा सीस मंदागणि ।
तै भागीरथ तणौ सहजे, 'गाजीसाह' हुग्रौ[24] कमधज्जे ॥२॥

कवित्त

प्रिथम पाट उद्धरे, त्याग उधारि[25] खट व्रन्नां[26] ।
ग्राच खडग ऊधरे[27], मुदति[28] सुरतांणां खानां ॥
खत्री-धरम[29] उद्धरे, खत्र खेले[30] खत्र-घौडां[31] ।
गया पिंड[32] उद्धरे, वंस उद्धरि राठौडां ॥
पीयार[33] प्रिथी पुड उद्धरे, सर वापी उद्धरि वरण ।
'गजसाह'[34] 'गांगेहर'[35] ऊठियौ[36], पतिसाहां छळ उधरण ॥१॥

---

१ इ. करणि । २ इ. बांभणां । ३ अ. कलपै । इ. कलपे । ४ आ. भौम । ५ आ. आगाहद । इ. अगाहद । ६ आ इ. अपे । ७ आ. भो । ८ अ. कूल । ९ आ.इ. परसीयौ । १० आ. राउ । ११ अ. जोधपुरै । १२ आ. वाणारसी । इ. बाणारसी । १३ इ. परिपूर्ण । १४ आ. इ. भर । १५ आ.इ. पींड । १६ आ.इ. पिर । १७ इ. उर्णं । १८ आ. कारजि । १९ इ. ईकोतर । २० इ. मा । २१ इ. पिडो । २२ अ. कारण । २३ इ. आंणी । २४ अ. हूग्रौ । इ. हुवौ । २५ इ. उधारि । २६ इ. षट-वृनां । २७ इ. उधरे । २८ इ. मुदिति । २९ इ. षत्रीधर्मं । ३० अ. षैले । ३१ इ. षत्र-घोडां । ३२ इ. पिड । ३३ अ. पायार । ३४ इ. गजसीह । ३५ इ. गणे । ३६ आ.इ. उठीयौ ।

गाथा

आरंभ जुध उभ्भयौ[१], त्रितिय[२] नैवच[३] जुध आरंभौ ।
जोधांणै[४] जोध विद्या, सिधांणै जोग संग्रांम[५] ॥१॥

तयौ देव (त्रिविध गुणया), त्रिविधि ह्यायसि[६] त्रिविध मे जोगौ[७]।
त्रिकाळ[८] त्रिविध[९] कज्जं, देवौ पिता सांमि[१०] कारज्जौ[११] ॥२॥

रट्ठौड रूप राए दीनौ[१२], सुरतांण नांम दळथंभण[१३] ।
हिंदुवै[१४] मुसलमांणौ[१५], विरदावियै[१६] जोध विरदैता[१७] ॥३॥

गुणि-अणे[१८] गुणमाला, गढि गुंथाइ[१९] गूंथिया[२०] गाथा ।
गजसिंघ विंद[२१] सोभा, दंपति जथा[२२] सोभिय[२३] मौड[२४] ॥४॥

कवित्त

जपै[२५] सीह 'गजसीह', सुणौ[२६] हिंदुवां[२७] तुरक्कां[२८] ।
कहै वेद कत्तेब, तत्त साहस त्रिहुं[२९] लोकां ॥
मारण मरण नै दांन, पांण रहमांण तणै बे ।
दियै[३०] तांह जगदीस, आसमांनी फत्तै ए ॥
एकाज टूंस आडी नदी, नैडौ सहि जादौ[३१] खुरम ।
अणकियै[३२] जुद्ध आपां[३३] अग्रिम, महाजुद्ध कीयौ धरम[३४] ॥१॥

महाराजा गजसींघ की चढाई करणी

दे दमांम[३५] गजपती, तांम[३६] चडियौ[३७] बोले बळ ।
चडे सेन घण सघण, तांम[३८] कंपे हर मेखल ॥

---

१ आ.इ. उभयो । २ आ.इ. त्रितीय । ३ इ. नइवच । ४ इ. जोधांण । ५ आ. इ. संग्राम । ६ आ.इ. लोयसि । ७ अ. जोरगो । ८ अ. त्तिकाल । ९ आ. त्रिविधी । १० अ.इ. साम । ११ अ.इ. कारिजो । १२ इ. दीनो । १३ इ. दल-अंभ । १४ अ. हीदूवै । इ. हीदुवै । १५ इ. मुसलमांण । १६ अ. विरदावीयो । इ. बिरदाबीयो । १७ अ. बिरदैत । १८ आ. गुणीअणे । इ. गुणीयणे । १९ अ.इ. गंथाई । २० आ. इ. गूंथीया । २१ इ. विंद । २२ इ. जदा । २३ अ.इ. सोभीय । २४ अ. मोड । २५ अ.इ. जंपै । २६ इ सुणो । २७ अ. हीदुवां । इ. हींदुवां । २८ इ. मैं तुरकां शब्द नहीं है । २९ आ. त्तिहु । ३० इ. दीयै । ३१ इ. साहिजादो । ३२ इ. कीयो । ३३ इ. आयां । ३४ इ. धमर । ३५ अ. दमां । ३६ इ. ताम । ३७ आ.इ. चडीयो । ३८ इ. ताम ।

चडिया[1] हिंदू[2] तुरक, तांम[3] चडियौ[4] सहिजादौ[5] ।
गजथट्टां गाहटे[6], कीध सळिता जळ कादौ[7] ।।
ऊत्तरै[8] टूंस[9] असपत्ति[10] दळ, दुहुं[11] कोसे डेरौ कियौ[12] ।
तिण वार खुरम सुरतांण सूं[13], जोधपुरै जुध कापियौ[14] ।।२।।

कमध राव[15] कोरटै, खुरम खैरागढ आयौ ।
बिहुंवै[16] बळ बोलियौ[17], करै बेकंध सुहायौ ।।
गज समूह गजसींह, खुरम आगिना[18] आई[19] ।
काळ'नळ कोपिया[20], लियण असमांन लडाई ।।
लाभसी विगत[21] लाठां[22] भलां, नरां नाच आयौ नहै ।
जिहंगीर खुरम उभै दळां, उभै कोस अंतर रहै ।।३।।

वळि भरियौ[23] विरडियौ[24], खुरम माझी गहवंतौ ।
भ्रुंह[25] चडै चख त्रिडे[26], रोस हूं[27] मुंह[28] हुइ[29] रातौ[30] ।।
रिडै[31] जांण आहज्ज[32], अगन[33] धडहडती ऊपरि ।
सघण गाज सांभळे, जांण[34] सादूळै[35] केहरि ।।
वांकिम्म वींद[36] दिन वांकडै[37], वाद न छंडे[38] वंकपण ।
वांकडौ[39] सेर ऊठै[40] विढण, वदै जीह वंका वयण ।।४।।

खुरमरौ भीम सीसोदियानै विरुदाणौ

तांम[41] रांण[42] सीसोद[43], खुरम सुरतांण पडिग्गर ।
मूझ सेन दळ - थंभ, आज कुण तूझ बराबर[44] ।।
दिल्ली दावा - मुदी, तुं हिंज आगळ है रांणां[45] ।
तो दादौ 'संग्रांम', ग्रहण मोखण सुरतांणां ।।

---

१ आ.इ. चडीया । २ आ. हीदु । इ. हिंदु । ३ इ. ताम । ४ आ.इ. चडीयो । ५ इ. साहिजादौ । ६ इ. गाहेट । ७ अ. कांदौ । ८ आ. उतरे । इ. उधरे । ९ इ. ढंस । १० आ. असपति । इ. अघपती । ११ अ. दुहूं । इ. दहु । १२ आ.इ. कीयो । १३ आ. इ. सुं । १४ अ. कावीयो । इ. काबीयो । १५ अ इ. कमधज राउ । १६ आ. बिहूंवै । इ. बिहुंवे । १७ आ.इ. वोलीयो । १८ अ. अगिना । १९ इ. आइ । २० आ.इ. कोपीयो । २१ आ इ. विगति । २२ आ. लांवां । इ. लावा । २३ आ.इ. भरीयो । २४ आ.इ. विरडीयो । २५ आ.इ. भ्रूह । २६ आ. तिडे । २७ आ.इ. हुं । २८ इ. मुहि । २९ आ. हूइ । इ. हुय । ३० आ. रतो । ३१ अ. रिणे । ३२ आ. आहज । इ. आहाज । ३३ इ. अगनि । ३४ अ.इ. जांणि । ३५ आ.इ. सादुल । ३६ इ. विंद । ३७ आ. बंकडै । इ. वांकडे । ३८ अ. छेकै । ३९ इ. वांकडो । ४० आ इ. उठै । ४१ आ.इ. ताम । ४२ आ.इ. राण । ४३ आ. सीसोद । ४४ आ.इ. बराबरि । ४५ इ. राण ।

खूमांण[१] दळे खुरसांण[२] सूं[३], कमण जुद्ध मंडै बियौ[४]।
'भीमेण' ऊठि[५] 'अमरेस' रा, तो सिरि[६] नेत[७] परट्टियौ[८] ॥५॥

तांम[९] 'भीम' ऊठियौ[१०], खाग[११] धूणै[१२] भूडंडह।
जडै पाउ पायाळ, अडे मत्थौ ब्रहमंडह[१३] ॥
जिम वांमण[१४] बळ छळण, नेम वधियौ[१५] देहा दळ।
घणौ ध्रित[१६] सींचियै[१७], जांण धिखियौ[१८] जाळं-नळ ॥
'भीमेण' भयंकर[१९] भड सिहर, इसै[२०] रूप[२१] 'अमरा' सुतन।
जळ-निधी कूंभ[२२]-सभ्रम जिहीं, एक करै जळ आचमन ॥६॥

गाथा

जोगाभ्यासी[२३] कीजै, कीजै संग्रांम[२४] सांम[२५] छळ मरणौ।
पांमीजै[२६] मित[२७] मोखौ, निस्चयं तत निरबांण ॥१॥

वदंति लोक वाक्या, पपीलिका मारगं पयणै[२८]।
सिधंति सूर पंथं, विहंगम[२९] पथ[३०] पणयह[३१] ॥२॥

धीर जो लज मांणौ, अवसांण मै सिध अणभंगौ।
पौरस पराक्रमौ, सूराणै सपत चिहनांनि ॥३॥

'भीमेण' वयण वंका, कहियासि[३२] पेख सेन सुरतांणी।
ग्रह धांम ठांम दूरे, आसन्नौ सूरमां सरग ॥४॥

मरणौ लाभंति[३३] भागे, दखै खुमांण रांण दस-सहसौ।
असपति उभै जुद्ध ए, एह ओसर कदं प्रांमेस ॥५॥

---

१ आ.इ. खुमांण। २ इ. पुरमांण। ३ आ. सुं। ४ आ.इ. बीयौ। ५ आ.इ. उठि। ६ आ.इ. सिर। ७ आ.इ. वेत। ८ आ.इ. परठीयौ। ९ अ. ताम। १० आ.इ. उठीयौ। ११ आ.इ. षग। १२ अ. धूंणे। १३ इ. वृह्मंडह। १४ अ. वामण। इ. बामण। १५ आ.इ. वधीयौ। १६ इ. ध्रीत। १७ अ. इ. सीचींयै। १८ आ.इ. धिषीयौ। १९ अ. भियंकर। २० इ. ईसै। २१ अ. रूपि। २२ अ. कूच-संभ्रम। इ. कुभ-संभ्रम। २३ इ. जोगास्यांस। २४ आ.इ. संग्राम। २५ आ.इ. साम। २६ अ.इ. पामिजे। २७ इ. मृत। २८ अ. पयणे। इ. पणए। २९ अ. विहंगमं। इ. विहंगष। ३० अ. पथं। इ. थष। ३१ अ. षयाणेह। इ. पाणेह। ३२ अ.इ. कहीयासि। ३३ इ. भालंति।

कुरुखेत[1] जुध करणौ, भमाडण गज गयणंगे।
जीपणौ जुरासिंघौ, ऊठियो[3] गजा 'भीम' उप्पाडि ॥६॥

भीम सीसोदियारौ वरणण

छंद पोमावती

उठियौ[4] गजां[5] उपाड[6], 'भीमेण' भुजाळजी।
चीतोडौ[7] चईनौ[8] कोप, चम्मर बंबाळजी॥
नेत-बंधौ[9] नागंद्रहौ[10], मेवाडौ मसंदजी[11]।
आहाडौ[12] खूमांणौ[13] ओपै, निड्डर नरिंदजी[14] ॥१॥

कैल-पुरो कुंभळमेरी[15], निप्पट[16] निराटजी।
दस-सहंसौ[17] सीसोदौ[18], पह मेद-पाटजी॥
'अमरसी' 'प्रतापसी', 'उदैसी' अपालजी।
साहण-समंद 'सांगौ', रांणौ रायमालजी[19] ॥२॥

कूंभ-क्रन्न[20] 'मोकल्ल' नै, 'लाखौ' खेतसींहजी।
उजाळै 'हम्मीर' आज, अरस्सी अबीहजी॥
'अजैसो' भमाडै भलो, हिंदुवांणौ[21] छातजी[22]।
लखमणसी मंडळीक, गिरव्वर गातजी ॥३॥

सीसोदियो[23] सेलगुर, बापौ[24] बिरदैतजी।
उजाळै[25] 'अमर' उत, वडाळौ[26] वांनैतजी॥
सोह चाडै समरसी, सारिखां[27] सधीरजी।
विढेवा विलागौ[28] वोम, वड्डौ वर वोरजी ॥४॥

---

१ अ. कुरूषेत। २ अ. जीमणं। ३ आ.इ. उठीयो। ४ आ.इ. उठीयो। ५ आ.इ. गजा। ६ आ.इ. उपाडि। ७ आ. चीतोडो। इ. चीत्रोडो। ८ इ. चइनो। ९ इ. नेत-बंधे। १० अ. नानोंद्रहो। ११ अ. मसंद्रनो। १२ इ. आहाडो। १३ अ. षूंमांणां। इ. षुमांणो। १४ अ. नरिद। आ नरंद। १५ अ. कूंभलमेरौ। १६ इ. निपवृ। १७ अ. दस-सहसो। इ. दस संहसो। १८ अ.इ. सीसोदो। १९ अ. राइमाल। २० अ. कूंभक्रत। इ. कूभक्रंन। २१ अ. हीदूवांणो। इ. हींदुवांणे। २२ इ. छात्र। २३ इ. सीसोदीयो। २४ अ.इ. बांपो। २५ अ. उजालो। २६ इ. वंडालो। २७ इ. साषां। २८ इ. विलगो।

मूछां अणी अ्रूंह[1] मेळ[2], दाढी[3] कर दाखिजी[4] ।
विढ़सी वीराध - वीर, सूर[5] जितै[6] साखिजी[7] ।।
बळवंत बोलै बोल, चीतौड[8] नरेसजी ।
उजाए[9] वांमौ[10] उदक्क, माथै मो महेसजी ।।५।।

दूहा

माथै उदक महेस मौ, साखी सिसहर भांण ।
जुध अब मेलै[11] जीवबौ[12], इम दक्खै 'खूमांण'[13] ।।१।।

बे[14] खूंदालम[15] बहसिया[16], बिढवा[17] आग व्रजागि[18] ।
आजु[19] वडी अब आवियौ[20], भीम कहै[21] मो भागि[22] ।।२।।

'भीम' कहै भूलूं[23] नहीं[24], खेलैबो खत्र-धौड ।
मो भग्गै[25] सीसोद हर, गढ़ लज्जै चीतौड[26] ।।३।।

मेवाडौ नीमे मरण, रत्तौ रिण गिम्मार ।
लोह सबाहै भुज्ज-बळ[27], छंडै[28] मोह संसार[29] ।।४।।

माया मोह प्रमुक्कियो[30], इम 'खूमांण' नरिंद ।
जेम लखमण रांमचंद, भरथर गोपीचंद ।।५।।

नूप[31] माया तजि सिद्ध थिउ[32], निन्नांणवै[33] करोडि ।
सूरज - मंडळ भेदही, सूरां मज्झै कोडि ।।६।।

सूरां लज्जी बळ वही, लच्छी कोइ[34] न कज्ज ।
लच्छी गच्छी बाहुडै, गई न आवै लज्ज ।।७।।

---

१ इ. अ्रुंह । २ अ.इ. मेलि । ३ अ. दाटी । इ. दाषी । ४ इ. दाषजी । ५ इ. सुर । ६ आ.इ. जतै । ७ इ. साषजी । ८ अ. चीत्रौड । इ. चीत्रोड । ९ आ.इ. उजाऐ । १० इ. वामो । ११ अ. मे । १२ अ. जीववो । १३ अ. षुमांण । इ. षुंमांण । १४ अ. वे । १५ अ. षुदामम । इ. षुदालम । १६ अ. बहसीयर । इ. बहसीया । १७ अ. विटवा । इ. विडवा । १८ आ.इ. वूजागि । १९ अ. आउ । इ. आज । २० अ. आवीयौ । इ. आबीयो । २१ अ. कहे । २२ इ. भाग । २३ अ. भूलू । इ. भुलुं । २४ अ.इ. नही । २५ अ. भगै । इ. भगे । २६ अ.इ. चीत्रौड । २७ अ.इ: भुज-बलि भुज-बली । २८ आ. छंडो । इ. छांडे । २९ अ. ससार । ३० आ. पमुकीयौ । इ. प्रमुकीयो । ३१ अ.इ. नूिप । ३२ अ.इ. थीउ । ३३ अ इ. निनांणुवे । ३४ इ. काइ ।

गाथा

गरजंति भीम नादं, पूरण[1] चंदाइ[2] पेखि[3] उफणिए[4] ।
धन समद घोरं, नह लंघत[5] लाज मरजादं[6] ।।१।।

गज 'भीम' गयण लग्गे, पौरसि[7] मदमत जोध परचंडं ।
सोहिया [8]पैहर पगे[9], सांकळा लाज रांण सीसोदह[10] ।।२।।

पलमेक प्रांण कस्टं, सूरा सहंत रण संग्रांमै ।
जांमणौ जरा-म्रितो[11], भव भाजै भाखितं भीम ।।३।।

कवित्त

सिव नै सिसहर निलै, सकति नै सीह[12] चइन्नी ।
बांमण[13] अनियै[14] वळै[15], वाच बळ राजा दीनी ।।
रांमचंद नै भीच, हणु[16] मुंह[17] आगळ[18] कीधौ ।
थावर नै बारमौं, अघड नै अम्रत[19] पीधौ ।।
गोइंद अनै चढियौ[20] गुरड[21], पावक नै बळ पवनरौ ।
सुरतांण खुरम नै सेलगुर, कनै भीम[22] केलहपुरौ[23] ।।१।।

साह सेन संपेख, खुरम सुरतांण निहट्टौ ।
पग पाछा नह दियै[24], जेण पंच-रूप आरट्टौ ।।
काळ रूप जम रूप, ग्रहै गयणागक उंडळ ।
वासंग बळ वज्जरै, भुज्ज[25] धूणौ वीजूजळ[26] ।।
असमांन थंभ उड्डै इसौ, पकडै मेर पहाड[27] नूं ।
सुरतांण खुरम जुध सूत्रियौ[28], पातसाह[29] अल्लाह नूं[30] ।।२।।

---

१ अ.इ. पूर्णं । २ अ. चंदाई । ३ अ. पेषी । इ. पेषीयं । ४ आ. उफणए । इ. फणए । ५ आ. लंघण । ६ अ. रजाद । ७ अ. पोरसि । इ. पोरस । ८ आ. सोहोया । इ. सोहीयं । ९ इ. पगै । १० इ. सीसोदे । ११ इ. जरा मृतो । १२ आ. सिंह । इ. सिंघ । १३ आ.इ. वामण । १४ अ.इ. अनीयै । १५ अ. वले । १६ अ. हनू । १७ इ. मुहि । १८ इ. आगलि । १९ अ.इ. अमृत । २० आ.इ. चडीयो । २१ इ. कुरड । २२ इ. भिम । २३ अ. कैलपुरौ । २४ आ.इ. दीयै । २५ आ.इ. भुजि । २६ इ. विजुजल । २७ इ. पडाड । २८ आ.इ. सूत्रीयो । २९ अ. पातिसाह । ३० इ. सूं ।

खुरम्मरी वरणण

छंद भुजंगी

खुरम्मं[1] सुरतांण धूणै[2] खडग्गं ।
वधै वांमणं[3] वोमि जांणै[4] विलग्गं ॥
वणै चोळ[5] चक्खं मुखं चोळ व्रन्नं[6] ।
ग्रहै जे वहौ घात[7] बाथां गिगन्नं[8] ॥१॥

*महाकाळ क्रोधन्नळं क्रोध मन्ने ।
दुम्रादस्स आदीत ऊगा वदन्ने[9] ॥
भुजाडंड नीमज्ज[10] माफी भुजाळी ।
किरे[11] चंपियौ[12] ऊफणै नाग काळी[13] ॥२॥

गढां भूखियौ[14] कांमरी हांम गाढी ।
दिनौ मूछ वळ पांण स-त्तांण दाढ़ी ॥
पौरस्से तरस्सै उसस्सै प्रचंडं[15] ।
विकस्सै[16] हसै ऊधसै[17] वैण-डंडं[18] ॥३॥

भुजाडंड ऊलाळि भालौ भमाडै ।
आजोकौ इसौ मेर बाथां उपाडै ॥
गरज्जे भलौ[19] बोलियौ[20] भोम ग्राही ।
पतीसाह[21] सूं[22] माहरी पातसाही ॥४॥

कटक्कां मिळै मेखळा मेर कांनै ।
खडा ऊमरा खांन दीवांण खांनै ॥
विढ़ेवा[23] कियौ[24] साहिजादै[25] विचारं ।
अणी फौज वांटौ हुऔ[26] अस्सवारं ॥५॥

---

१ अ.इ. तौ पुरम । २. आ. धूंरण । इ. घूरणे । ३ आ. वामारणं । इ. वामरणं । ४ इ. जांरणे । ५ इ. चौल । ६ अ.इ. चोल-वृनं । ७ अ. घाति । ८ इ. गिननां । * अ. प्रति में यह पंक्ति इस प्रकार हैं—"महाकाल क्रोध मनं" । ९ इ. वदने । १० अ.इ. नीमजि । ११ अ.इ. किरे । १२ अ. चंपीयो । इ. चांपीयो । १३ अ. कालो । १४ आ. भुषीयौ । इ. भूषीयौ । १५ अ. पचंडं । १६ अ. किकसै । १७ इ. उघसे । १८ इ. वेरण-डंडं । १९ इ. भलो । २० आ.इ. बोलीयो । २१ इ. पतिसाह । २२ इ. हु । २३ अ. विटेवा । २४ आ.इ. कीयो । २५ आ. साहीजादे । इ. सहिजादै । २६ आ. हूवो । इ. हूओ ।

नगारी हुम्रो[1] भेरि[2] नीसांण[3] नद्दं ।
सरद्दं गरज्जै करै मेघ सद्दं ॥
हळा-बोळ है - थाट हूए[4] हमल्लं ।
आउल्ला असव्वार तेजी अलल्लं ॥६॥

लगावै[5] लगांणं[6] पवंगां[7] पलांणै[8] ।
बिपेटा[9] किया[10] बेवडा तंग तांणै[11] ॥
विडंगां सिणंगार सोभा वणांणी[12] ।
रुळै पाखरां घूघरां[13] जांण[14] रांणी ॥७॥

विडंगं तुरक्की ऐराकी विलाती ।
मचै पाखरां रोळि है - हींस माती ॥
सिणगारिया[15] पीलरांणै[16] सुंडाळा ।
असमांन सांम्हा दियंता[17] उलाळा ॥८॥

हलक्कां तांणै आंठुए बांध[18] हालां ।
ढळक्काविये[19] दूहरी[20] पूठि ढालां ॥
करै हाथळां टोप रागां कडालं ।
जुवांणं[21] वपे[22] ओपवै जीण-सालं ॥९॥

जमं-जाळ हिंदू[23] तुरक्काळ जूआ ।
जडे सीलहा[24] जोध[25] जोगिंद्र[26] हूआ ॥
जमंदाढ तेगां फरी कूंत[27] जोडं ।
खरां खग्ग ढाबै[28] दूण[29] खोडं[30] ॥१०॥

---

१ अ.इ. हुवो । २ अ. भेर । ३ अ. नीसाण । इ. निसांण । ४ अ. हुए । इ. हुऐ । ५ आ.इ. लगावे । ६ अ. लगाण । इ. लगाणं । ७ अ. पंवंगां । ८ अ.इ. पलांणे । ९ इ. विपेटा । १० अ. आ.इ. कीया । ११ आ.इ. तांणे । १२ इ. वणीणी । १३ अ. घूघरा । इ. घुघरा । १४ अ.इ. जांणि । १५ आ.इ. सिणगारीया । १६ इ. पिलबांणे । १७ इ. दीयंता । १८ इ. बांधि । १९ अ. टळकाविये । इ. ढलकीवीये । २० अ. टूहरी । २१ अ. जुवीणं । २२ आ.इ. वपे । २३ हीदू । २४ अ. सिलहां । इ. सिलहं । २५ इ. जोधि । २६ इ. जोगंद्र । २७ इ. कूत । २८ अ. डावे । इ. डावै । २९ अ.इ. दूंण । ३० आ. खोड । इ. खोडं ।

हुऐ हूब है-हींस मातौ हुलाहं ।
चढै[1] चंचळै[2] आवळा चत्र-बाहं ।।
चढै[3] भीम खूमांण[4] चीत्तौड[5] रांण ।
किरै[6] भाद्रवै नीसरै सिसर भांण ।।११।।

चढे[7] खांन अबदुल्ळ[8] बोलै अबाबं ।
निभैसार जूझार मांझी निवाबं ।।
चढै[9] खांन दरियाव[10] संग्रांम सूरं ।
पठांण[11] पराक्रंम पौरस्स पूरं[12] ।।१२।।

चढ़ै[13] खांन पाहाड[14] चलतौ पहाडं ।
वरसिंघ दे सुत्त फौजां विभाडं ।।
चढे[15] 'भीम' कमधज्ज सुत्तं 'किल्यांण' ।
रिमां-राह राठौड राउ[16] जम्मरांणं[17] ।।१३।।

चढै 'पीथलौ' बांधि है[18] गज्ज गाहं ।
'बलू' सुत[19] विरदैत[20] अज्जांन-बाहं ।।
चढे तांम[21] हरदास 'रांमा' सुतन्नं ।
धरै[22] धारणा धूधडै मेर मन्नं ।।१४।।

चढ़े[23] रावतां राउला[24] राव[25] रांणा ।
चढ़े[26] सुहड साखेत[27] जोधा जुवांणां ।।
चढ़े[28] मीरजां-मीर[29] मीयां किलक्कं ।
चड़े[30] खांन निब्बाब खांडा[31] खाइक्कं ।।१५।।

---

१ अ. चडै । इ. चडे । २ इ. चंचले । ३ अ.इ. चडे । ४ इ. षुमांण । ५ आ. चीतोड़ । इ. चित्रोड । ६ इ. किरे । ७ अ.इ. चडे । ८ अ.इ. अबदूल । ९ अ.इ. चडे । १० अ.इ. दरीयाव । ११ आ.इ. पठाण । १२ इ. पुरं । १३ अ.इ. चडे । १४ अ. पहाड । १५ आ.इ. चडे । १६ आ. राऊ । १७ इ. जमराणं । १८ अ. दै । १९ अ. सूत । २० अ. बिरदैत । २१ अ.इ. ताम । २२ इ. धरे । २३ आ.इ. चडे । २४ आ.इ. राऊला । २५ अ. राउ । इ. राऊ । २६ अ.इ. चडे । २७ आ.इ. साषैत । २८ अ.इ. चडे । २९ अ. मीरजा-मीर । ३० आ. चडै । ३१ इ. षंडा ।

चडै[1] मत्तवाळा सरै फूल मत्ता ।
चडे[2] रूप अल्लेख[3] रहमांण[4] रत्ता ॥
चडे नवलमै वाजि तरकस्स[5] - बंधं ।
चडे रौद्र रिम - राह जमबाह जुद्धं ॥१६॥

चडे सब्बदां - वेध लूघा[6] सिंघांणं[7] ।
चडे तूणमैं[8] घातिआ[9] झूल बांणं ॥
चडे पंच - हज्जारियां[10] पंच-सट्ठी ।
चडे मल्ल[11] पायक्क[12] बंगसी[13] अहट्ठी ॥१७॥

चडे कन्नडा[14] हब्बसी नेज-बाजं ।
चडे मीर खंधार बहतीर नाजं ॥
चडे बाहदर[15] दैतरूपी दिवांना[16] ।
चडे खिजमती हूमती[17] खेल खांना ॥१८॥

चडे कुदरती हुकमती असलि-जद्दा[18] ।
चडे दौलती नेखवा हुकम-बंदा ॥
चडे उजबकी रौद्र रूमी फिरंगी ।
चडे मुगळ पट्ठांण[19] सैईद[20] संगी ॥१९॥

चडे जांम जंगाह बल्लोच जत्तं ।
चडै वंस छत्तीस है राजपूतं[21] ॥
चडे उमरा[22] बहतरी सत्तरि[23] खांनं ।
जिकै पाकडै डोलतो[24] अस्समांनं ॥२०॥

चडे खांन सुरतांण सेनस प्रमांणं[25] ।
चडे बहुत[26] हिंदू[27] अनै मुलळमांण[28] ॥

---

१ आ. चडे । २ अ.इ. चडे । ३ अ. अलेक । ४ अ. रहमाण । ५ इ. तकस । ६ इ. लुघा । ७ इ. सिघाणं । ८ अ.इ. दूण । ९ अ. घातीआ । १० अ. पंच-हजा-रीयां । इ. पांच हजारीयां । ११ इ. मल । १२ अ.इ. पाइक । १३ अ. बगसी । १४ अ.इ, कनडा । १५ इ. बाहादर । १६ इ. दीवानां । १७ अ. दुमती । १८ अ. असली जादा । १९ इ. पठाण । २० अ. सईद । इ. सइद । २१ इ. राजपुतं । २२ आ.इ. उमर । २३ इ. सतिर-षांन । २४ इ. डोलतो । २५ इ. सप्रमाणं । २६ इ. बोहत । २७ अ.इ. हीदू । २८ अ. मुसमांनं । इ. मुसलमानं ।

चडे पूठि सूंडाहळां[1] पीलवांणं[2] ।
अडे चींध[3] नेजा लगै अस्समांणं ॥२१॥
चडे सेन चतुरंग गै मद्द कादौ ।
चडे रांम रक्केब दे- साहिजादौ ॥
सुरतांण खुरम्म चडियौ[4] सत्रांणं ।
सहन्नाय[5] नौबति[6] घुरियौ[7] साईदांणा ॥२२॥
गरज्जै दमांमा[8] गजं[9] थाट गुडिया[10] ।
रिणं[11] तूर[12] मै भेर नीसांण रुडिया[13] ॥
असंमांन[14] सूं[15] सीस लागा अभंगां[16] ।
हुऐ पक्खरां रोण[17] हाहूलि तुरंगां[18] ॥२३॥
अगै[19] है-दळां मैंगळां थाट आयौ ।
छिलै[20] फरहरां चींध[21] व्रहमंड[22] छायौ ॥
कटक्कां - तणा ऊपडै धूस काळा ।
मिळै भाद्रवै जांण[23] किरि मेघमाळा ॥२४॥
भडां धूंघली[24] फौज भालां भळक्कै ।
विचै वादळां जांण वीजां बळक्कै ॥
जटाजूट किया[25] आगळी गै अनेरं ।
पवै अठ-कुळं[26] जांण परबत्त मेरं ॥२५॥
बळौ मैंगळां - फौज दूजौ बखांणै[27] ।
जटाजूट गौरंभ गज - खंभ जांणै[28] ॥

भीमरो हरोळमें होणौं

'दूजां' ऊबरां लोह लागै दुखाळौ ।
कियौ[29] आगळी 'भीम' पाहाडकाळौ[30] ॥२६॥

---

१ अ. सुंडहलां । इ. सुडाहला । २ इ. पीलवाणं । ३ अ.इ. चीध । ४ अ.इ. चडीयो । ५ अ. सहनाइ । इ. सहनाई । ६ इ. नौबत । ७ आ.इ. घुरीया । ८ इ. दमामा । ९ आ.इ. गज । १० आ.इ. गुडीया । ११ अ.इ. रिण । १२ आ. तुर । १३ आ.इ. रुडीया । १४ अ.इ. असमांन । १५ आ.इ. सुं । १६ आ.इ. अभंगा । १७ इ. रोळि । १८ आ.इ. तुरंगा । १९ अ.इ. आगै । २० आ.इ. छिले । २१ इ. चीध । २२ अ.इ. व्रहमंड । २३ इ. जांणि । २४ आ.इ. धूंघली । २५ अ.इ. कीया । २६ इ. अठकुल । २७ आ. वषांणे । २८ आ.इ. जांणे । २९ आ.इ. कीयौ । ३० अ.इ. पहाड-कालो ।

विढेवा[1] बधे दाखियो[2] वीर-रस्सं।
'अरस्सी' हरो कूंत[3] तोलै अरस्सं॥
ओपै फौज माही अमर सिंघ-तन्नं।
किरै[4] जांण लंका दळ कूंभ-क्रन्नं[5] ॥२७॥

तवै 'भीम' वांका[6] वचन्नं तियारं।
खुमांणै आदू जुद्धसूं खूंदकारं[7] ॥
दुवै 'भांण' रा[8] भीच आगै दुझलं।
'मनो'[9] गोकळाणंद आखाड मल्लं ॥२८॥

वर-व्वीर खूमांण[10] वीराध-वीरं।
कळी-मूळ सादूळ बैवै कंठीरं॥
भलो भीच[11] कल्यांण-मल्लौ भुजाळी।
'मांनावत' वेढीमणो मच्छराळी ॥२९॥

हुओ[12] हेक-मौनूं[13] महा-जुद्ध[14] हांम।
गळ-माळ तुळछी अनै साळिग्रांमं[15] ॥
सहू भीमरा[16] भीच आखाड-सिध्घं।
मरण प्रब्ब संपेख मैंगळीक किद्धं[17] ॥३०॥

तुरां तोरवै[18] मेलवा लोह तातो।
मरेवातणी होडरो कोड मातो॥
वरस्सोह वध्धावळै आंक आडो।
लखै[19] थाट जांनी हुओ 'भीम' लाडो ॥३१॥

कियां[20] जाग[21] जोडां खडं पंज कावै।
अडा-भीड आकास माथो[22] अडावै॥
हुवै हैमरां हूह सम्मूळ हल्लै[23]।
चली फौज गैं-जूह पाहाड[24] चल्लै[25] ॥३२॥

---

१ अ. विटेवा। २ आ.इ. दाषीयो। ३ अ.इ. कूत। ४ आ.इ. किरे। ५ अ. कूमक्रनं। इ. कुंभ-क्रनं। ६ अ.इ. वंका। ७ अ.इ. षूदकार। ८ इ. भाणरा। ९ अ. मांनो। १० अ.इ. षुमांणे। ११ अ. नीच। १२ इ. हूओ। १३ इ. हेक-मनू। १४ इ. महो-जुध। १५ ओ.इ. सालिगरांमं। १६ इ. भीचरा भीच। १७ अ.इ. कीवं। १८ अ. आ. तोलवै। १९ अ.इ. लष। २० आ.इ. कीयां। २१ अ. बै-जाग। २२ इ. थांथो। २३ अ.इ. हले। २४ अ.इ. पहाड। २५ इ. चले।

चौरासी[१] धमक्कै गजां-पुठि[२] चींधां ।
गिगन्नां-पती ढांकियौ[३] पंथि ग्रीधां ।।
असंख्या खुरै हैमरां खेह उड्डी ।
गजां चींध जांणै[४] गिरां-सीस गुड्डी ।।३३।।

धसस्सै घणूं थाट घासांरु[५] घट्टा ।
फुणां-फाट[६] अहिराउ[७] दरियाव[८] फट्टा ।।
दिलीवै सुरत्तांण उट्टाइ[९] दुदं ।
निहट्टां[१०] किरै[११] रांमणां[१२] रांमचंदं ।।३४।।

धरत्तीतणै खेध धर - वेध धारी ।
बहस्से उभै साह जुध वळाकारी ।।
बिन्है साहिजादा लियै[१३] लोह बत्थां ।
कुरां-पांडवां[१४] जेम भारत्थ कत्थां ।।३५।।

खुरम्मं[१५] सुरत्तांण खब्बर पढाई ।
लडौ वेग मैदांन आपां लडाई ।।
इसौ[१६] ऊफणै[१७] साहिजादौ अछायौ ।
असमांन हूंता[१८] असंमांन आयौ ।।३६।।

गाहा

आयौ असमांनां ऊतरियौ[१९] ।
घुरै दमांम क घणहर घुरियौ[२०] ।।
धारण धूम्र-धडै[२१] मन धरियौ[२२] ।
सहजादौ[२३] विमुह न संचरियौ[२४] ।।१।।

वसुंह तुरां खुरताळे वाजी ।
आगळ मांडी आतस बाजी ।।

---

१ इ. चोरासी । २ आ. पूठ । ३ अ. ढंकीयो । ४ इ. जांणे । ५ इ. घांसरु । ६ अ. फुणा-फाट । इ. फूणां-फाट । ७ आ. अहिराव । ८ अ.इ. दरीयाव । ९ अ. उठाई । इ. उठाय । १० अ. निहटा । इ. निहटां । ११ अ. किरे । इ. किरि । १२ अ. रांमणा । १३ अ. लीयै । १४ अ.इ. कुरां-पांडवा । १५ इ. पुरमं । १६ अ. इसो । १७ अ. उफणे । १८ अ. असमांन हूता । १९ अ.इ. उतरीयो । २० आ.इ. घुरीयो । २१ इ. धूह धडै । २२ अ.इ. धरीयो । २३ इ. साहिजादो । २४ आ.इ. संचरीयो ।

वांसै[1] तेग[2] ज फौज[3] विराजी[4] ।
मुहि-अड[5] भोम हरोळां माझी[6] ॥२

वड्डा - वड्डा गोळा वज्जर ।
धूम्रा-धार[7] उठंदा धोमर ॥
आरब्बो असमांन अवाहर ।
गडडै नाळि अणगाळिक[8] अंबर ॥३॥

'गज्जणवै' पाखरिया[9] गज-दळ ।
कससै[10] मेघक काळी कांठल[11] ॥
उतराधा[12] सांमळ[13] के ऊजळ ।
वोम क चडे चडाऊ वद्दळ ॥४॥

दूहा

खुरम न भागौ[14] पुरब[15] दिस, ऊब क आसाढ़ांह[16] ।
सालुळियौ[17] चडि सांमहौ, जिम घणहर सिहरांह ॥१॥

खुरम समंदी मच्छ जिम, लहरी लक्ख दळांह ।
चडियौ[18] पांणी सांमुहौ[19], सुरतांणी फौजांह ॥२॥

पूरब[20] पराक्रम पूरियौ[21], सिर लग्गै असमांन ।
गिरे झंगर[22] भागे न गौ[23], चडि आयौ मैदांन ॥३॥

सुरतांणी घड सांमुहौ[24], सहिजादौ[25] सुरतांण ।
आवि खडौ वौ[26] चापडै, तब दीठा नीसांण ॥४॥

---

१ अ. वासै । इ. वास । २ अ. तेग । ३ अ.इ. फौ । ४ आ.इ. वीराजी । ५ अ.इ. मुहीअड । ६ आ.इ. माजी । ७ इ. धुवा-धार । ८ इ. आणिगालिक । ९ आ.इ. पाषरीया । १० इ. कससे । ११ इ. कंठलि । १२ इ. उधराधा । १३ इ. सांमे । १४ अ. भागो । १५ अ. पूर्बं । १६ अ. आसाटांह । १७ अ. सालुलीयौ । इ. साललीयौ । १८ आ.इ. चडीयौ । १९ अ. सामहै । २० अ. पूब । २१ अ. पूरीयौ । इ. पुरीयौ । २२ अ. झगर । २३ अ. मो । २४ अ. सामहौ । २५ आ.इ. साहिजादौ । २६ इ. वो ।

गाहा

सांहण[1] संख न को[2] सूंडाळै[3] ।
नेजे संख न को[4] नेजाळै[5] ।।
खुरम प्रगट्टो जडण जडाळे ।
आग न दब्बी रहै पराळे[6] ।।१।।

आयो[7] खुरम विलागै[8] अंबरि[9] ।
पूरै[10] पारंभ है गै पक्खरि ।।
ऊपाडेह छरा आंधतरि ।
जांणे सींह विरुत्तो छप्परि ।।२।।

गै गिरवर सरजीत गुडंदा ।
गोडी-रव क करै गडडंदा[11] ।।
सद्दे मेघ क पंच-सबद्दा[12] ।
भेर दमांम क भाहर सद्दा ।।३।।

एहो[13] खुरम कियो[14] आडंबर[15] ।
गिरि-कुळ आठ कनव कुळ-मिणधर ।
नवकुळ[16] नाखत्र[17] माळक निड्डर ।
बारह मेघ क सातइ[18] सायर ।।४।।

धरियै[19] आभ लगै धाराळै ।
भीरी भीम लियै[20] भुज्जाळै ।।
दिल्ली फौजां मरग निहाळै ।
खुरम[21] खडो मैदांन विचाळै ।।५।।

---

१ अ. सांहंण । २ अ. को । ३ अ. इ. सुडाले । ४ अ.को । ५ अ. नोजाले । ६ अ. पराले । ७ इ. आयो । ८ अ. विलागे । इ. विलगै । ९ इ. अंबर । १० इ. पुरै । ११ अ. गडडदा । १२ इ पंच-सबदा । १३ इ. एतो । १४ आ.इ. कीवो । १५ अ. अडंबर । १६ अ. नवकुले । १७ इ. नाषेत्र । १८ अ.इ. सातई । १९ आ.इ. घरीयै । २० आ.इ. लीयै । २१ अ. पुरम ।

साहजादारी महाराजा गजसींघनै विरदावणो

घुरे दमांम पक्खरां[1] घरहरि ।
फौज[2] गजां नेजां धज फरहरि ॥
आयौ खुरम खडे[3] तौ[4] ऊपरि ।
'गाजीसाह' ऊठि गज केसरि ॥६॥

जपै साह 'परवेज' जबाबं ।
बोलै महबतखांन नबाबं ॥
सिलह करौ अब चडौ सताबं ।
तो दळ - थंभण- तणी किताबं ॥७॥

बंभ त्रिकाळ - दरस बोलावै ।
जनम - जोग आगम जोवावै ॥
कहियौ[5] पैज निबाव कहावै ।
राजा जैत दमांम रुडावै ॥८॥

पेख जनम - पुत्ती[6] परपूरण[7] ।
जनम-जोग ग्रह - वेळा जांमण ॥
मुणै जवाब नवाब निभै-मण ।
दियौ दळां आडौ[8] दळ-थंभण ॥९॥

'गजण'[9] वहण माझी गळ जोडै ।
राउ[10] राठौड तिलक राठौडें ॥
'माल'[11] हरौ मुख मूंछ मरोडै ।
उठियौ[12] सींह क आळस मोडै ॥१०॥

महाराजा गजसींघ

छंद पद्धडी[13]

ऊठियौ[14] 'गजण' वरजागि आगि ।
जुडिवा जडागि गयणागि लागि ॥

---

१ अ-इ. षरां । २ इ. फोज । ३ इ. चडे । ४ अ. तो । ५ अ. कहीयो । ६ इ. जनम-पुत्री । ७ अ. परपूर्णं । इ. पर पुर्णं । ८ अ. आडि । ९ इ. गंजण । १० अ. राऊ । ११ अ. "मल" हरो । इ. मलहरो । १२ अ.इ. उठीयो । १३ इ. पधरी । १४ अ.इ. उठीयो ।

नीमझे भुज्ज नव सहस नाद ।
सादूळ सुणे किरि[1] मेघ - साद ॥१॥

वीरत्ति विढ़ेवा विळकुळेय ।
मुख राग मूंछ भ्रूंहां मिळेय ॥
चख लाल कीध मुख कीध चोळ ।
कळकळै तेज विकसै कपोळ ॥२॥

त्रिस्सळौ तांण निल्लाट तांम[2] ।
कमधज्ज करण संग्रांम कांम[3] ॥
व्रहमंड[4] लगै भुजडंड[5] वध्धि ।
महमहण मथण किरि[6] महोदध्धि ॥३॥

संपेख खुरम सुरतांण साथ ।
नरसिंघ रूप नवकोट नाथ ॥
'सूरजमल' संभ्रम तै सरीख ।
वधियौ[7] किरि वांमण[8] दियण वीख ॥४॥

मछरियौ[9] राउ[10] मारू[11] मसंद ।
रांमण सीस जिम[12] रांमचंद ॥
गरजियौ[13] विढण दूजौ[14] 'गंगेव' ।
मारिवा त्रिपुर[15] किरि महादेव ॥५॥

ऊससै तरसि पौरस्स ईम[16] ।
भारत्थ करण किरि पत्थ भीम ॥
चौरासी पट्टण करण तल्ल ।
मछरियौ[17] जांण घूंघली - मल्ल[18] ॥६॥

राठौड राउ[19] असमांन रुक्ख ।
सींचियौ[20] ध्रित्त किरि[21] सुरांमुक्ख ॥

---

१ अ. कि । २ अ.इ. ताम । ३ इ. काम । ४ अ. व्रह्मंड । इ. व्रह्म । ५ इ. भुअ-डंड । ६ अ. किर । ७ आ.इ. वधीयो । ८ अ.इ. वामण । ९ आ.इ. मछरीयो । १० अ. राऊ । ११ अ. मारू । १२ अ. जांणे । इ. जेणे । १३ आ.इ. मरजीयो । १४ इ. दुजो । १५ इ. त्रिपूर । १६ अ.इ. इम । १७ आ.इ. मछरीयो । १८ अ.इ. घुघलीमल । १९ इ. राव । २० आ. सीचीयो । इ. सिचीयो । २१ इ. किर ।

चडि कोप ओप घूघडै[1] चीत।
ऊगा वदन्न[2] बारे[3] अदीत[4] ॥७॥

'सूरउत' सुकर करिमाळ सज्झि।
मुळकियौ[5] मछरि घण रोस मज्झि॥
कमधज्ज कहै कर घूणि तेग।
वरियांम[6] विडगां चडौ वेग ॥८॥

मुख बंध खैग[7] छोडै मरद्दं।
सांहणी सांहणी हुऐ[8] सद्दं॥
पाकडै जोध बाथां प्रचंड।
हुइ लेह देह छूवै[9] हुसंड ॥९॥

डाचै लगांण खैंगां[10] दियंत।
असि जीण पटोटां उकढंत[11]॥
पै जुग्रळ लग्ग पक्खर रुळेय[12]।
गजगाह तुरां बाधा गळेय ॥१०॥

परचंड जूह पब्बै प्रमांण।
पुत्तार धरै गज-वाग पांण॥
सींगळी गज्ज गरजंत साद।
नभ जांण दवादस मेघनाद ॥११॥

सेनारौ वरणण

चौरासी पक्खर चमर-बंध।
गडडंत मदोमत[13] मंद-गंध॥
ढाळौ ढकि पताख धज्ज।
गेरू सिंदूर[14] पाहाड गज्ज ॥१२॥

घूघरी[15] रोळ घंटा सबद्द।
मोखत्त पटै[16] तळ जोड मद्द॥

---

१ अ. घुघडै। २ इ. वदंन। ३ अ. वारे। ४ इ. आदीत। ५ आ.इ. मुळकीयौ। ६ आ.इ. वरीयांम। ७ अ. षंग। ८ इ. हुए। ९ इ. छूटै। १० अ. षैगा। ११ अ.इ. उकढंति। १२ अ. रूलेय। १३ अ.इ. सदोमत। १४ अ. सदूर। इ. सिदूर। १५ इ. घुघरां। १६ इ. पटे।

गुडिया[१] गयंद विहुव[२] गमेय ।
पाहाड[३] जांण हालै पगेय ॥१३॥

मदगळत जूह मैंगळ मसंत[४] ।
सिणगार खडा[५] किय[६] सदोमत्त[७] ॥
वरियांम[८] विढ़ोबा[९] वड बडंत[१०] ।
जमदूत जोध सिलहां जडत ॥१४॥

पोरस्स नकुळ पंडव प्रमांणि ।
तण[११] बंध्रे जूसण कसण तांणि ॥
ओपंत राग हाथां अनोप ।
तुडतांण[१२] सीस रोपंत[१३] टोप ॥१५॥

ओपिया सिलह पहरी अपार[१४] ।
किरि जांण[१५] सिध्ध मिळिय[१६] केदार[१७] ॥
जोधार जडी वपि[१८] जीण साळ ।
पेखियै[१९] जांण परवत्त माळ ॥१६॥

मारू सुभट्ट गज थट्ट मोड[२०] ।
जमदाढ तेग डाबंत जोड ॥
बाहू[२१] डंड ढालां[२२] अलीबंध ।
कर ग्रहे कूंत[२३] धूणै[२४] कमंध ॥१७॥

आवध्ध डाबि छतीस अंग ।
नीमजे भुज्ज अड़िया निहंग ॥
गज केसर[२५] जांमळि गज विभाड ।
पंचरूप जांमळि जांणे[२६] पहाड ॥१८॥

---

१ अ.इ. गुडीया । २ इ. चिहूवै । ३ अ.इ. पहाड । ४ इ. मसत । ५ इ. षडो । ६ अ.इ. कीय । ७ अ. सदोमत । ८ इ. वरीयाम । ९ इ. विढ़ेवा । १० इ. वडंत । ११ अ.इ. तांण । १२ इ. तुडितांण । १३ अ. रोपत । १४ अ. अयार । १५ अ. जांणि । १६ अ. मिलै । इ. मिले । १७ अ. केदांर । १८ अ. जडीचाप । १९ इ. पेखियै । २० इ. मोड । २१ अ.इ. बाहु । २२ अ. ठालां । २३ अ.इ. कूत । २४ अ. धुणै । इ. धुणै । २५ इ. केसरि । २६ अ.इ. जांणै ।

पडगरियौ[1] सोहड[2] खेड-पत्त[3] ।
निस मयंक[4] जांण[5] माळा नखत्त[6] ।।
घाघरढ़[7] घ्रूस घण[8] थाट घेर ।
मिळिया[9] सुभट्ट मेखळा मेर ।।१९।।

महाराजा गजसींघरा घोड़ारो वरणण

कमधज्ज कहै केवियां[10] काळ ।
सांहणी आंण[11] साहण उजाळ ।।
सर वेग जंग[12] सर वेग चंग ।
तेगागळ चंचळ 'जै'[13] तुरंग ।।२०।।

जोइवा[14] जगत आवंत जात ।
गिर-वर विहग उतंग गात ।।
दीपक्क चक्ख सोभा दिवस्सि ।
असराळ तेज कोडीक[15] अस्सि ।।२१।।

चौरंग दंत गयंदां चडंत ।
पाखांण भीत आंठूं[16] पडंत ।।
धूनौ विसाळ चौडौ घडेय ।
आंणां[17] गुण घातै आपडेय ।।२२।।

दहलै पयंग[18] पायळां[19] दौड[20] ।
परसाद थंभ पै जांण पौड ।।
कांगारी[21] कन सिखराळ कंध[22] ।
बळ उतळ घाट घट गरट[23] बंध ।।२३।।

तेजी वितंड ऊडंड[24] तेव ।
विख्यात वाग अख्यात वेव ।।

---

१ अ. पडगरीयौ । २ अ. सोहडा । ३ अ.इ. पेड पति । ४ अ. मयक । ५ अ. जां । इ. जांणि । ६ अ.इ. नषति । ७ अ.इ. घाघरट । ८ इ. ण । ९ अ.इ. मिलीया । १० अ. केवीयां । ११ अ.इ. आंणि । १२ आ. चंग । १३ अ. लजै । इ. जै । १४ इ. जोइव । १५ इ. कोडक । १६ अ. आठू । इ. आंठुं । १७ अ. ऊंणां । इ. डोणां । १८ इ. पतंग । १९ अ.इ. पायलां । २० अ. दोड । २१ अ.इ. कांगारि । २२ इ. षंध । २३ अ. घट । २४ अ.इ. उडंड ।

परबत[1] पंख पक्खर प्रचंड ।
एराकी[2] पिठ[3] खुरसांण खंड ॥२४॥

थोडी[4] पडछि जाझी पठाढ[5] ।
देहादळ[6] मैंगळ[7] गाढ[8] दाढ[9] ॥
निकुळीण त्रिया जिम पैज[10] रति ।
फरहरै कपी[11] जेही फुरंति[12] ॥२५॥

अन्नूप रूप चित्रांम[13] अंग ।
वेगागळ थळ[14] नाचै विडंग ॥
अदभूत पराक्रम[15] गुण अछेह ।
ऊंचास[16] कना सपतास अेह[17] ॥२६॥

पाइगाह[18] मंडण[19] चढण[20] पाट ।
सांहणी छोड[21] सिणगार थाट ॥
लाखीकतणों मुंह[22] दीध लोह ।
सोव्रन्न[23] जोत[24] नग जडत सोह ॥२७॥

पल्लांण परट्ठे[25] तांण तंग ।
साकत्ति हेम हीरे सुचंग ॥
वरहास वणी पक्खर विसाळ ।
गजगाह स-डंबर चमर माळ ॥२८॥

सिख नक्ख लगै पंडव[26] सिंगार[27] ।
आंणियो[28] लूण[29] ऊपरि[30] उतार[31] ॥

महाराजा गजसींघरो वरणणं

कमधज्ज राय[32] मंजन करेय ।
चरणोदक[33] चत्रभुज तणो लेय ॥२९॥

---

१ आ. परछत । २ अ. अैराकी । इ. अैराकि । ३ इं. पुठि । ४ अ.इ. थौडो । ५ अ. पटाटि । ६ इहेहादल । ७ अ. मेगल । इ. मैगल । ८ अ. गाट । ९ अ. दाट । १० अ. पै । इ. परै । ११ अ.इ. कपि । १२ इ. फुरति । १३ अ.इ. चित्राम । १४ अ.इ. थाल । १५ अ. पराकम । १६ इ. उचास । १७ अ. ऐह । इ. एह । १८ इ. पाइगहि । १९ आ. मडंण । २० अ. चटण । इ. चडण । २१ अ.इ. छोडि । २२ अ इ मुह । २३ अ. श्रोव्रन । इ. सोव्रन । २४ अ.इ. जोट । २५ अ. परठ । इ. परठे । २६ अ. पंडवु । २७ अ.इ. सिगार । २८ अ.इ. आंणीयो । २९ अ. लुंण । इ. लुण । ३० अ.इ. उपरि । ३१ अ.इ. उतारि । ३२ अ.इ. राइ । ३३ अ.इ. चरणोदष ।

पैरिया-स[1] तांम[2] पांचै[3] वसत्र[4] ।
बंधे[5] वि-पाघ सिरि बाह चत्र ।।
राठौड बगत्तर जडे राग ।
खेडचै[6] वाहण खळां खाग ।।३०।।

झालरी टोप सिर[7] झळहळेय ।
किरि भांण[8] उदे[9] गिरि कळकळेय ।।
बळवंत[10] जडे हाथांळां[11] बेय ।
पैहरिया[12] सार मोजा[13] पगेय ।।३१।।

सोहियौ[14] सिलह पहरी समाथ[15] ।
अवधूत राय[16] गोरक्ख-नाथ ।।
जगजेठी जोधपुरे[17] जुआंण ।
जमदाढ़ जडी कडि जम्मरांण ।।३२।।

राठौड[18] रचेवा[19] रणंताळ[20] ।
वामंग डहै[21] बीजला झाळ ।।
बांधे[22] कंदील[23] संधे[24] विबांण ।
कोसीस[25] भुजे[26] दीना[27] कबांण ।।३३।।

दीपियौ[28] 'गजण' दूसरौ 'माल' ।
धूहंडौ[29] राव[30] भुजधरी ढाल[31] ।।
खेडपति धूणियौ[32] कूंत खीज ।
वळकी[33] किरिकाळै सिहर[34] बीज ।।३४।।

'सूराउत' डाबि छतीस[35] सार ।
मलपियौ[36] मयंद गति यंद[37] मार ।।

---

१ अ. परीया । इ. पैरीया । २ अ.इ. ताम । ३ इ. पांचु । ४ अ. वसत् । ५ अ.इ. वंधे । ६ अ. षेडेचै । ७ अ. सिरि । ८ अ. भांणु । ९ अ. दै । इ. उदै । १० अ.इ. बलिवंत । ११ अ. हाथला । १२ अ.इ. पहरीया । १३ इ. मोजां । १४ अ. सोहीयो । इ. सोहीयो । १५ अ. समाथं । १६ अ.इ. राइ । १७ अ.इ. जोधपुरै । १८ इ. राठोडि । १९ इ. रचैवा । २० अ.इ. रिणताल । २१ आ. वहे । २२ अ.इ. वांधे । २३ अ. कदील । २४ अ. संधे । इ. सांधे । २५ अ.इ. कासीस २६ अ.इ. भुजे । २७ अ.इ. दीनी । २८ अ.इ. दीपीयो । २९ इ. धूहडै । ३० अ. राउ । ३१ अ. टाल । ३२ अ.इ. धूणीयो । ३३ इ. बलिकी । ३४ इ. सैहर । ३५ इ. छत्रीस । ३६ अ.इ. मलपीयो । ३७ इ. गयंद ।

रैवंत[1] वंदि राठौड राव[2] ।
चड्डियौ[3] परठि पागडै पाव[4] ॥३५॥

सैनारौ वरणण

रट्ठौड[5] सहू[6] चढ़िया[7] तुरेय ।
कुरु[8] पंडक रत्थां आरुहेय ॥
रुडिया[9] दमांम रिणतूर[10] सद्द ।
नाफेर[11] भेर नीसांण[12] नद्द ॥३६॥

चिहुं[13] दिस्सि[14] नगारै[15] पडे चोट ।
कोग्रण कटक्क ऊपडै[16] कोट ॥
सहिजादौ[17] चडियौ[18] सुरत्तांण ।
चढिया[19] सह[20] हिंदू[21] मुसळमांण[22] ॥३७॥

महबतखांन चडियौ[23] नबाब ।
साह छळि सिळह[24] बंधै[25] सताब[26] ॥
आंबेर धणी जैसिंघ[27] देय ।
चडियौ[28] फवज्ज चतुरंग लेय ॥३८॥

सेखावत राजावत सुभट्ट ।
ताबीन चडे कूरमां थट्ट ॥
सूरजसिंघ खेलण खत्र-दाव[29] ।
राठौड चढे जंगळी-राव[30] ॥३९॥

वरसिंघ देव राजा वडाळ ।
वूंदेल चडै[31] चम्मर[32] बंबाळ ॥

---

१ अ.इ. रेवंत । २ अ. राउ । ३ अ.इ. चडीयौ । ४ अ इ. पाउ । ५ इ. राठोड । ६ अ.इ. सहु । ७ अ.इ. चडीया । ८ इ. कूरु । ९ अ. रुडया । इ. रुडीया । १० इ. रिणतुर । ११ अ.इ. नफेर । १२ इ. विसांण । १३ अ.इ. चिहु । १४ इ. दिस । १५ अ.इ. नगारे । १६ अ.इ. उपडे । १७ अ.इ. साहिजादो । १८ अ.इ. चडीयो । १९ अ.इ. चडीया । २० अ. सिह । इ. सहि । २१ अ. हींदू । इ. हीदु । २२ अ. मुसमांण । इ. मुसलमांन । २३ अ.इ. चडीयो । २४ अ.इ. सिल । २५ अ.इ. बंधे । २६ अ. साताब । २७ अ. जेसीघ । इ. जेसिंघ । २८ अ.इ. चडीयो । २९ अ.इ. षत्र दाउ । ३० अ.इ. राउ । ३१ अ.इ. चडे । ३२ इ. चंमर ।

सारंग देव राजा सकाज।
वहवांणं चडे पक्खर[1] वाज ॥४०॥

साही अमीरांरी नामावळी

बहलोल खांन[2] चडियौ[3] पठांण[4]।
वरियांम[5] जोध असली वखांण॥
आलम्मखांन[6] चडियौ[7] अजीत।
खुरसांण हिंदुवांणह[8] वदीत ॥४१॥

चढ़िया[9] बलोच अब्भूल बांण।
चड्डे सयद्द[10] पढ़्ढे[11] कुरांण॥
चढ़िया[12] पठांण चढ़िया[13] मुगल्ल।
तांणै[14] कबांण जमरांण तुल्ल ॥४२॥

कन्नडा चडे[15] हबसी कटक्क।
खंधारी चढिया[16] उजब्बक्क॥
रांमीय फिरंगी[17] चडै[18] रौद्र।
लख चडै[19] बारहां[20] हुई[21] लौद्र ॥४३॥

काबिली[22] चड्डिया[23] कटक कोम।
दांणवां[24] ऊमरां[25] अवळि[26] दोम॥
बंदूकदार चढ़िया[27] खंधार।
तरकस्स बंध चढिया[28] अपार ॥४४॥

बह चढ़े[29] बहत्तरि[30] ऊमरांह[31]।
चढ़ि[32] सत्तरिखांन अजांनबाह[33]॥

---

१ अ. षयरे। इ. पषरे। २ अ. वहलोलखांन। ३ अ.इ. चडीयौ। ४ इ. पवांण। ५ अ.इ. वरीयांम। ६ इ. आलंम। ७ इ. चडीयौ। ८ अ. हीदुवाणह। इ. हिंदूवांणह। ९ अ. चषीया। इ. चडीया। १० अ. सयद। ११ अ. पटे। आ. दपटे। १२ अ.इ. चडीया। १३ अ.इ. चडीया। १४ इ. तांणे। १५ इ. चढ़े। १६ अ.इ. चडीया। १७ अ. फिरीरंगी। १८ अ.इ. चडे। १९ अ.इ. चडे। २० अ.इ. बारह। २१ अ.इ. हुइ। २२ इ. काबली। २३ आ.इ. चडीया। २४ अ.इ. दाणव। २५ अ.इ. उमरा। २६ इ. अविल। २७ अ.इ. चडीया। २८ अ.इ. चडीया। २९ अ.इ. चडे। ३० इ. बहितर। ३१ अ.इ. उमराह। ३२ अ.इ. चडि। ३३ अ. षांनबाह।

पट हेथे[१] चढिया[२] पीलबांण[३] ।
परबते जांण पडिया[४] पखांण ॥४५॥

सुरतांणखांन चढिया[५] सधीर ।
मीयां[६] मिलक्क[७] मीरजा मीर[८] ॥
नरपत्ति चडे असपत्ति[९] राव[१०] ।
गजपत्ति चडे हुय[११] भेर घाव[१२] ॥४६॥

अधपत्ति[१३] चढे[१४] देवमै अंस ।
रजपूत चढे[१५] छत्तीस[१६] वस ॥
मंडोवर राजा मुहरि-मंड[१७] ।
डावै[१८]ली जोगणि[१९] भुजाडंड[२०] ॥४७॥

राठोड वधे मेळसी राड[२१] ।
मुहगवत सिगळै[२२] मारवाड[२३] ॥
गयणाग लागि[२४]...ऊससै[२५] गात ।
हूग्रो[२६] हरोळ[२७] हिंदुवां[२८] छात ॥४८॥

गजसिंघ वाज[२९] पाखर गजंद ।
सबळै जुध ढोया[३०] नर समंद ॥
गाजियो[३१] गयण गोळा निहाय[३२] ।
रण[३३] जंग रचै[३४] राठोड राय[३५] ॥४९॥

नायकं[३६] निळै बांधियै[३७] नेत ।
खूंदालम[३८] निहटा बिनै[३९] खेत ॥

---

१ इ. पट हृथे । २ अ.इ. चडीया । ३ इ. पिलवांण । ४ आ. चडीया । ५ अ.इ. चडीया । ६ इ. मियां । ७ अ. मीलक । इ. मिकल । ८ इ. अमीर । ९ अ. अंसपति । १० अ. इ. राउ । ११ अ. हुइ । इ. हुई । १२ अ. घाउ । १३ इ. अत्रिपति । १४ अ.इ. चडे । १५ अ.इ. चडे । १६ इ. छत्रीस । १७ अ. मुहरिमंडि । इ. मुहरि मंड़ । १८ आ. डावे । १९ इ. जोगण । २० अ. भुजाडंडि । २१ अ. राडि । इ. राहि । २२ अ.इ. सिगले । २३ अ.इ. मारवाडि । २४ अ. गयणगल । २५ अ.इ. उससे । २६ इ. हूओ । २७ अ. हेरोल । इ. हरोल । २८ अ. हींदूवो । इ. हीदुवो । २९ इ. वाजि । ३० अ. ढोया । ३१ अ.इ. गाजीयो । ३२ अ.इ. निहाई । ३३ इ. रिण । ३४ अ. रचे । ३५ अ. राइ । इ. राई । ३६ अ. नाइकं । इ. नाइक । ३७ अ. बांधायै । इ. बंधीयै । ३८ अ.इ. खुदालम । ३९ इ. बिन्है ।

घूजिया अमर नर धूज[1] नाग ।
वडु संग्रांम[2] हुय[3] वडो-राग ॥५०॥

जुध प्रिय देवांरो वरणण

वैताल वीर मिळिया[4] विहद्द ।
सीकोतरि साकणि महा सद्द ॥
मिळ[5] समळ ग्रीध ग्रामंख भक्ख ।
जंबक्क रींछ[6] वड्डाक जक्ख ॥५१॥

हेकठा हुआ[7] बळितणै हेत ।
पळहारी वैतर[8] भूत प्रेत[9] ॥
खेचरा भूचरा[10] खेत - पाळ ।
काळिका पुत्र भैरव[11] कंकाळ[12] ॥५२॥

रहियो[13] रवि कौतिग[14] तांण[15] रत्थ ।
सिव सुरां[16] कोडि तेतीस[17] सत्थ ॥
अपछर विवांण ऊपरि[18] वहंत ।
हुय[19] ओसर[20] नारद हड-हडंत ॥५३॥

डमडमै सकति डम्मरू डाक ।
हैं-थाट हुब्ब[21] हुय[22] वीर हाक ॥
गडि-अडै[23] भेर दम्मांम गज्ज ।
गयणगज[24] बारह घण गरज्ज ॥५४॥

हगमगै[25] थाट गहमहै[26] हूर ।
डहडहै[27] डुंड[28] त्तहत्रहै[29] तूर ॥

---

१ इ. घूजि । २ अ. संग्रांम । ३ अ. हुइ । इ. हुई । ४ अ.इ. मिलीया । ५ इ. भिल । ६ इ. रीछ । ७ अ. हूआ । इ. हुवा । ८ इ. वेंतर । ९ अ. पेत । १० अ.इ. भूचर । ११ अ.इ. भैर । १२ अ.इ. ककाल । १३ अ.इ. रहीयो । १४ अ. कोतगि । इ. कोतग । १५ इ. तांणि । १६ इ. सूरां । १७ इ. तेत्रीस । १८ अ.इ. उपरि । १९ अ. हुइ । इ. हुई । २० इ. ओसर । २१ अ. ब । इ. हुबे । २२ अ. हुइ । इ. हुई । २३ अ.इ. गडीअडे । २४ इ. गयणगक । २५ अ.इ. गहमहे । २६ अ.इ. गहगहे : २७ अ.इ. डहडहे । २८ अ.इ. डूट । २९ अ.इ. त्रहत्रहे ।

रिणतूर रुडै[1] तुडडै[2] बुरंग[3] ।
नीसांण धुबै[4] धुडडै[5] निहंग ।।५५।।

हथनाळ[6] हवाई[7] हूकळंत[8] ।
गजनाळां[9] गोळा गडिअडंत[10] ।।
बळती व्रजागि उडै[11] बहंत[12] ।
आराबौ छूटौ[13] आवरंत[14] ।।५६।।

गोळा वहत्त[15] धूजत्त[16] गोम ।
धुब्बियौ[17] गगन[18] धडहडै[19] धोम ।।
आतस घोर मिळियौ[20] अंधार ।
रिणसोर जोर हुय[21] रौद्रकार ।।५७।।

कुदरत्त विछूटा[22] कुहक[23]-बांण ।
आकंप[24] इळा[25] पुड आसमांण ।।
ळयां[26] ताड[27] विपरीत गत्त[28] ।
ओअडै[29] गडै[30] किरि मेह अत्त[31] ।।५८।।

धिखि[32]सोर धूवर[33]धूंवा[34]-धार[35] ।
आव्रत मिळै[36] तब अंधकार ।।
रांमायण[37] भारथ रूप सुद्ध ।
जोधपुरै मातौ खुरम जुद्ध ।।५९।।

जुध वरणण

भड वाहै नीमझ भुजा-डंड ।
कैबरां सोक[38] गरजै कोमंड[39] ।।

---

१ अ.इ. रुडे । २ अ.इ. तडडे । ३ इ. वूरंग । ४ अ.इ. धुवे । ५ अ.इ. धडडे । ६ अ. हथनालि । ७ अ इ. हवाइ । ८ अ इ. हुकलंत । ९ अ.इ. गजनाल । १० अ. गडीअडे । ११ अ.इ. उडे । १२ इ. बहति । १३ इ. छुटे । १४ अ.इ. आवरत । १५ इ. वहत । १६ इ. धुजंत । १७ अ.इ. धुबीयो । १८ अ. गिगन । इ. गिगंन । १९ अ.इ. धडहडे । २० अ.इ. मिलीयो । २१ अ. हुइ । इ. हुई । २२ इ. विछुटा । २३ अ.इ. कूहक-बांण । २४ अ.इ. आकंपि । २५ इ. ईला । २६ अ.इ. गोलीयां । २७ इ. ताडि । २८ अ.इ. गति । २९ अ.इ. ओअडे । ३० अ.इ. गडे । ३१ अ.इ. अति । ३२ इ. धिख । ३३ अ. धूम्रा-रव । आ. धूवर । ३४ अ. धू । ३५ अ. आधार । इ. वाधार । ३६ अ.इ. मिले । ३७ अ. रांमाइण । इ. रांमाईण । ३८ इ. सो । ३९ इ. कोमंड ।

उड्डिया[1] तीर उभ्भे[2] दळांह[3] ।
मांकडा जांण किरि मेहळांह ॥६०॥

असमांन विछूटै[4] सर असंख ।
धूंकारव[5] गाजै[6] गुण धनंख ॥
सूरज्ज वोम छायौ सरेय[7] ।
किरि जांण काळ छाया करेय[8] ॥६१॥

कन्नाढ़ बांण छूटै कवांण[9] ।
पंजरां महा[10] लेजाय[11] प्रांण ॥
नळयार मार सेलार भंग ।
खरडकै[12] भडां फूटै[13] खतंग ॥६२॥

बंदूक मार बांणां[14] पडेय ।
कळळिया[15] थाट चडिया[16] कडेय ॥
नीमजै[17] कूंत[18] भुज काळ नाग ।
खांपां[19] उसांटि काढ़िया[20] खाग ॥६३॥

झूंझारां[21] आवध झळहळेय ।
व्रहमंडक[22] वीजां वळवळैय[23] ॥
सैफळौ[24] वाजियौ[25] सांमतांह[26] ।
मेलियौ[27] लोह मुह रावतांह ॥६४॥

भारत्थ हाक वाजी[28] भडांह ।
घैधूंबि[29] थाट लूंबै[30] घडांह ॥
निहसिया[31] जोध घाए[32] निव्रीठ ।
रिण खळै रूक[33] वाजियौ[34] रीठ ॥६५॥

---

१ अ.इ. उडीया । २ अ.इ. उभैरे । ३ अ. दलाह । ४ इ. विछुटै । ५ अ. धूंकार । ६ अ. वृगाजे । इ. वगाजै । ७ अ.इ. सरेअ । ८ इ. करेअ । ९ इ. कबाण । १० इ. माहा । ११ अ.इ. लेजाइ । १२ अ. खडकै । १३ अ. फूट । १४ अ. बाणां । इ. वांणा । १५ अ.इ. कललीया । १६ अ.इ. चडीया । १७ अ. नीमजे । १८ अ.इ. कूत । १९ इ. षापां । २० अ. काटीया । इ. काढीया । २१ अ.इ. झूझारां । २२ अ. वृहमंडक । इ. वृह्मंडक । २३ इ. चलवलेय । २४ इ. सैंफलो । २५ अ.इ. वाजीयो । २६ इ. सामतांह । २७ अ. मेलीयो । २८ अ. वांजी । २९ अ. घैधुवि । इ. घैधुबि । ३० अ. लूवै । इ. लुबै । ३१ अ.इ. निहसीया । ३२ इ. घाये । ३३ इ. रुक । ३४ अ.इ. वाजीयो ।

उड्डियौ[1] बूर धारा अंगार।
खळखट्ट निहट्टा खूंदकार[2] ।।
हुब्बिया[3] कटक[4] वाप्परि[5] हीक।
झूंझार[6] झट्टकै[7] हुवै झीक ।।६६।।

संघार मार लैकार सेन।
मिळ सार धार अंधार मेन ।।
घड मुंड[8] खंड बे-रुंड[9] धक्क।
करमाळ[10] वहै किरि काळ चक्क[11] ।।६७।।

सांमठी[12] धाक पड[13] साबळांह[14]।
वळवळै[15] धार विजूजळांह[16] ।।
गजवाज गडौ-थळ भड गुडंत।
निरलंग अंग धड नीजुडंत ।।६८।।

घण फुरणि जोध वाहंत घाव[17]।
पायाळ डरै[18] पडतै निहाव[19] ।।
लडथडै लोह वाहै लडाक।
बडडंत हाड भाजै बडाक ।।६९।।

भड खळां[20] भडां ऊतरै[21] भूंभ।
कुंजर[22] कड-डंत गूडंत कूंभ ।।
तेगां तमच्छ[23] तूटंति[24] तोब[25]।
झबरक्क हुळां साबळां झोब ।।७०।।

सीसोद अनै कमधजां सत्थ।
गळबांह[26] गळोबळ गूथ-बत्थ[27] ।।

---

१ अ.इ. उडीयौं। २ अ.इ. खुंदकार। ३ अ.इ. हुबीया। ४ अ.इ. कटंक। ५ अ. वापरी। इ. वावपरी। ६ अ.इ. भूझार। ७ अ. झटके। इ. झटकै। ८ अ.इ. मुड। ९ अ. रुड। इ. रूंड। १० अ.इ. करिमाल। ११ अ. चंक। इ. चंक। १२ अ.इ. सामठी। १३ अ.इ. पडि। १४ अ. सावलाह। १५ अ. वलववै। १६ अ. विजुजलाह। इ. बीभूजलांह। १७ अ. घाउ। १८ इ. डरे। १९ अ.इ. निहाउ। २० अ. तनुखलां। २१ अ.इ. उतरैं। २२ अ. कूंझर। २३ इ. तिमछ। २४ इ. तुटंति। २५ अ. तौब। २६ इ. गलबाह। २७ इ. गुरवथ।

मेवाड[1] मंडोवर[2] जुद्ध माचि[3] ।
नटग्ररां जेम धड धूम्र नाचि ।।७१।।

दस सहस राव[4] नव सहस देस[5] ।
निहसिया[6] नेत-बाधै[7] नरेस[8] ।।
भूझारां[9] माथै पडै झाट[10] ।
मिळि धाइ मंडोवर[11] मेदपाट ।।७२।।

मेवाडी मेलै नही मांण ।
खेडेचौ[12] लोहडौ[13] खुरासांण[14] ।।
हम्मीर सळक्खा हुवै[15] दूठ[16] ।
पतसाह[17] खडा वै[18] बेहुं[19] पूठ[20] ।।७३।।

भीम सीसोदियारौ वरणण

परवत्त मेर दक्खे[21] प्रमांण ।
रिणखंभ[22] हुग्रौ[23] चीतोड[24] रांण ।।
संग्रांम निहट्टौ निरां सीम[25] ।
भूडंड[26] उपाडै[27] गजां[28] भीम ।।७४।।

"ग्ररसी" हर ग्रोपम[29] रिण ग्रनींद[30] ।
वधियौ[31] किरि तोरण चडण वींद[32] ।।
गज दळां वीच फौजां गसूर ।
सीसोद[33] रांण झळहळै[34] सूर ।।७५।।

---

१ इ. मेवाडि । २ इ. मंडोवरि । ३ ग्र. माछि । इ. माच । ४ ग्र.इ. राठ । ५ इ. दैस । ६ ग्र.इ. निहसीया । ७ इ. नेत-बांधै । ८ ग्र. तरेस । ९ ग्रा. झूझारा । १० इ. झटझाट । ११ इ. मांडोवर । १२ इ. खैंचेची । १३ ग्र. लोहडौ । इ. लोहडो । १४ इ. खुरासाण । १५ इ. हुवै । १६ इ. दुठ । १७ ग्र.इ. पतिसाह । १८ ग्र. वे । १९ ग्र. बेहु । इ. वैहू । २० इ. पुठि । २१ ग्र.इ. दपे । २२ इ. रिणथंभ । २३ ग्र.इ. हूग्रो । २४ ग्र. चीत्रौड । इ. चित्रोड । २५ ग्र. सीस । २६ ग्र.इ. भुडंड । २७ ग्र.इ. उपाडे । २८ ग्र.इ. गजा । २९ ग्र. ग्रोपम । ३० ग्र.इ. ग्रनीद । ३१ ग्र.इ. वधीयो । ३२ ग्र.इ. वीद । ३३ ग्र. सीसोद । ३४ ग्र. झलहले ।

अमरावत ऊपरि[1] दळ अचाळ।
माथै किरि आबू मेघमाळ ।।
सीसोद[2] सीस स्रोणी निवेस ।
मस्तक्क जांण गंगा[3] महेस ।।७६।।

खूमांण जुडंतौ जैत - खंभ[4] ।
थाटां विच होळी हुम्रौ[5] थंभ ।।
धडहडे धरा ब्रह्मंड[6] ध्रुबेय[7] ।
है-थाट 'भीम' माथै हुबेय ।।७७।।

जुध वरणण

खळहळे[8] रत्त[9] परनाळ[10] खाळ।
डोळियां[11] पडै धड जूह डाळ[12] ।।
करडकै कंध संधांण[13] घट्ट ।
फरडकै फीफरां[14] आळ[15] फट्ट ।।७८।।

झट्टकै झेर फाटै[16] झराड ।
झीकौ[17] पडंत आसुरां[18] झराड ।।
मरगडां जूह मुरडंत माड ।
चूनौ[19] हुइत्त[20] चौसट्ठि[21] हाड ।।७९।।

उड्डै कपाळ खग ओझडांह[22] ।
दीझंति जांण दोटा दडांह[23] ।।
हम्मलां ढ़है[24] ढालां हसत्ति[25] ।
ध्रूबकै दांत वाजै धरत्ति[26] ।।८०।।

है तूट[27] तुंड[28] रुळि रुंड[29] मुंड[30] ।
भाजै[31] भ्रसुंड[32] गै हाड-गुंड ।।

---

१ इ. उपरि। २ अ.इ. सीसोद। ३ अ. गंग्म। ४ अ. जैते-षंभ। ५ अ. हूअ्रौ। इ. हुअ्रो। ६ अ. वृह्मंड। इ. वृंमंड। ७ अ. धुवेस। इ. धुवेह। ८ अ. षलहलै। ९ इ. नालरत। १० अ. परिनालं। इ. प्रनाल। ११ अ.इ. डोळीयां। १२ अ. जूंडाळ। इ. जुआ-डाल। १३ अ.इ. संधाण। १४ अ.इ. फीफर। १५ अ.इ. अल। १६ अ.इ. फाटे। १७ इ. झीकं। १८ अ.इ. असरां। १९ अ. चूंनो। २० अ. हुइत। इ. हुवंत। २१ इ. चौसट। २२ इ. ओझडांह। २३ अ. दडाह। २४ इ. ढेहै। २५ इ. हसंति। २६ इ. धरंति। २७ इ. तुट। २८ अ. तूड। इ. तूंड। २९ अ. रुड। ३० अ. मूड। ३१ अ. नाजै। ३२ अ. भ्रसूड। इ भ्रसूंड।

वीछडै[1] संघ अनमंघ वप्प ।
झूंझार[2] दियै[3] तेगां झडप्प[4] ॥८१॥

वेसूल[5] फूल - धारां विहार ।
भाले पडंत डोले भंभार ॥
संग्रांम[6] लोह वाहै सनड्ड[7] ।
विपरीत घाउ[8] ऊखळा[9] वड्ड[10] ॥८२॥

तडछिया[11] जांहि गोडिया[12] तांण ।
जम-दढां[13] टेवउ[14] ऊठै[15] जुवांण[16] ॥
लागै[17] भड लोहै[18] लोहछाक ।
घूमंति[19] जांण पीयै ऐराक[20] ॥८३॥

ऊजडै कडा जिरहां अळग्ग ।
खडखडै जोध वाहै[21] खडग्ग ॥
खसरक्क[22] पटै[23] खांडै[24] खडाक ।
नीजुडै नरां सिरि रहै नाक ॥८४॥

त्रिज्जडां त्रिजड वाजै[25] नित्रीठ[26] ।
डांडेहड[27] गेहरि जांण दीठ[28] ॥
उड्डै तिमच्छ खागां[29] अघात ।
आकास जांण उल्लका-पात ॥८५॥

चोटां सूं[30] सुरि छंदै चौधार ।
वाजंति वास[31] जांणेवा[32] वार ॥

---

१ अ.इ. विछडै । २ अ.इ. झूझार । ३ इ. दीयै । ४ इ. झडिप । ५ इ. वेसुल । ६ अ. सग्रांम । इ. संग्राम । ७ अ. सनट । ८ आ. घाव । ९ अ.इ. उखला । १० अ. वट । ११ अ.ड. तडछीया । १२ अ. गोडीया । इ. गोडीयां । १३ अ. जमदटां । इ. जमदढां । १४ अ. टवे । आ. वहै । १५ अ.इ. उठै । १६ अ. जवांण । १७ अ. लागे । १८ अ.इ. लोहे । १९ अ. घूमति । आ घूमंत्त । २० अ.इ. अैराक । २१ इ. वाहे । २२ अ. षसरस । २३ अ. पटे । २४ अ. षांडे । २५ अ. वाजे । २६ अ. निठाउ । आ. निवाव । २७ अ.इ. डाडेहड । २८ आ. दाव । २९ अ.इ. पगां । ३० अ. सुं । इ. सु । ३१ इ. वांस । ३२ अ. जांणेबा ।

मारका[1] जुडै[2] घाए मयंद ।
गुड्डिया[3] गुडा खावै गयंद ।।८६।।

बैरुंड[4] खंड धड बेहडांह ।
काली किरि भांजै कूलडांह ।।
सेलां उभेळ फाटै सनाह ।
धरहरै[5] स्रोंण[6] धारां प्रवाह ।।८७।।

घडधवै[7] धीर सींगी[8] धमोड[9] ।
फूटंत अणी सर जिरह फोड[10] ।।
पळ खंड[11] पडै सिर पांण पाउ[12] ।
राउत्तां[13] रूकां[14] घाव[15] राउ[16] ।।८८।।

जोधपुरौ राजा जम्म-जाळ[17] ।
केवियां[18] कूंत[19] वाहै कराळ ।।
है थाट पडै पाधरी हीच ।
भारत्थ भिडै गजसिंघ भीच ।।८९।।

राठौड राव रिम गोडवंत ।
हणमंत जेम हाकां करंत ।।
त्रिम्भाग[21] सेल ग्रहियै[22] तयार[23] ।
गजसिंघ उथांमै गज्ज - भार ।।९०।।

बळवंत भरंतौ[24] भुजै[25] बाथ ।
हाथियां[26] ठेलि वाहंत हाथ ।।
गजसिंघ करंतै गज्ज - गाह ।
कुंजरां गडां[27] घातियौ[28] क्राह ।।९१।।

---

१ अ.इ. मारकार । २ इ. जुटे । ३ अ.इ. गुडीया । ४ अ. वेरूडं । इ. वेरूड । ५ इ. घरैहरै । ६ अ. श्रोण । ७ आ. धवधवै । ८ अ.इ. सीगी । ९ अ.इ. धमोडि । १० अ.इ. फोडि । ११ इ. षळपड । १२ आ. पाव । १३ का. राव । १४ अ. रकां । इ. रांकां । १५ अ. घाउ । १६ अ.इ. राउ । १७ इ. जंमजाल । १८ अ.इ. केवीया । इ. केवीयां । १९ इ. कूत । २० अ. करत । २१ अ.इ. तिभाग । २२ अ. ग्रहीयै । इ. ग्रहीये । २३ अ.इ. तियार । २४ अ.इ. भरती । २५ अ. भुंजे । इ. भुजे । २६ अ.इ. हाथीयां । २७ अ.इ. गडा । २८ अ. घासीयो ।

राठौड भमाडै छरा रूक ।
भद्र-जाती भांजै[1] करै भूक[2] ।।
कमधज्ज हिणै हाथळां काळ ।
ढहि हुवै ढिग्ग ढालां ढैचाळ[3] ।।९२।।

भीम सीसोदिया अनै गजस घरो जुध

भारत्थ भिडै गजसिंघ[4] भूप ।
राठौड राव नरसिंघ रूप ।।
'सूरउत'[5] अनै 'अमरा' सुतन्न[6] ।
कुरखेत जांण अरजन करन्न[7] ।।९३।।

'भीमेण' 'गजैसी' भिडै तांम[8] ।
रांमायण[9] रांमण जांण[10] रांम[11] ।।
दिढ[12] भिडै[13] 'गजैसी' 'भीम'[14] दोय[15] ।
हणमंत अनै[16] किरि जुद्ध होय[17] ।।९४।।

सीसोद[18] कमधज्ज सज्जगीस ।
आरांण चडै[19] किरि त्रिपुर ईस[20] ।।
दूजै[21] 'संग्रांम'[22] दूसरौ[23] 'गंग' ।
अडिया[24] पहाड[25]बै[26]बै[27] अभंग ।।९५।।

जुध

संग्रांम मेर माझी सग्रोध ।
जाकुळै वीर दूसरौ[28] जोध ।।
गज केसरि[29] गाहण गजां[30] थट्ट ।
सांघणै लोह ढोया सुभट्ट ।।९६।।

---

१ अ. भांजे । २ अ. सूक । ३ अ. टैचाल । ४ अ. गजसीघ । इ. गजसींघ । ५ अ. सूरउ । ६ इ. सुतंन । ७ इ. करंन । ८ अ.इ. ताम । ९ अ.इ. रांमाइण । १० अ. जाणि । इ. जांणि । ११ इ. राम । १२ अ. दिट । इ. दिढि । १३ इ. भिडे । १४ इ. भीडैम । १५ अ. दोइ । इ. होइ । १६ अ. अने । १७ अ. होई । इ. होइ । १८ अ. सीसौद । १९ अ.इ. चडे । २० इ. इस । २१ इ. दुजै । २२ अ. संग्राम । २३ अ. दूरो । इ. दुरै । २४ अ.इ. अडीया । २५ इ. पाहाड । २६ इ. बे । २७ अ. वै । २८ इ. दुसरो । २९ इ. केहरि । ३० अ.इ. गज ।

मारको रूक वाहै 'महेस'।
दळपत्त[१] सुत्त विढता[२] अदेस[३] ॥
भूझारसिंघ निहसै जुझार[४]।
जगजेठ[५] 'दलावत' जोरदार ॥९७॥

भुजबळी[६] कांन भाराथ मंड[७]।
खीमउत करै[८] खळ विहंड खंड[९] ॥
राजधर रूकि राखंति[१०] राज[११]।
'सांमळ'[१२] सुतन्न सबदी सकाज[१३] ॥९८॥

नीधक्क विढे[१४] सींधुवै[१५] नाद[१६]।
'उदैसिंघ' 'माल' 'सीहा'[१७] औलाद॥
त्रिजडे मयंक 'कूंपा' त्रि-सींग[१८]।
भम्माडै[१९] रुंडां[२०] भाव-सिंघ[२१] ॥९९॥

माधव दीयंत[२२] सात्रवां[२३] मार।
पूरणमलोत[२४] बाहां[२५] पगार॥
विढता धन गोवरधन वराह[२६]।
चांदावत[२७] चौरंग[२८] चत्रबाह ॥१००॥

तोगावत रावत तुडी[२९] तांण।
केवियां[३०] 'भीम' वाहै केवांण॥
'अचळेस' 'भुजं'[३१] ओडवै भार।
'वीकमसी' संभ्रम जमवहार ॥१०१॥

१ अ.इ. दलपति। २ अ. विटसा। ३ अ.इ. आदेस। ४ अ. भूझार। ५ अ. जमजेठ। ६ अ. भुजब्लि। इ. भुजुवलि। ७ अ.इ. मंडि। ८ अ. करे। ९ अ.इ. षंडि। १० अ.इ. राषंत। ११ इ. राजि। १२ इ. सामळ। १३ अ.इ. सकज। १४ अ. विटैसी। इ. विढै। १५ अ. सीधूवै। १६ अ. नादं। इ. नाथ। १७ इ. सिहां। १८ अ. तिसीग। १९ अ.इ. भवाडै। २० अ. रुडा। इ. रूडा। २१ अ. भावसिंग। २२ अ. दि। २३ इ. सत्रवां। २४ इ. पुरणमलोत। २५ इ. बांहां। २६ अ.इ. षाराह। २७ अ. चोदावत। इ. चौंदावत। २८ अ.इ. चौरंगि। २९ अ. इ. तुडि। ३० अ.इ. केवीयां। ३१ अ.इ. भुजे। ३२ अ. संमभ्रम। इ. संमभ्र।

रुघनाथ भिडै[1] रजवट्ट[2] रीत ।
मांनउत हुग्रो[3] भरु ग्रच्छ भीत ।।
जोधार करै "ग्रमरेस" जुद्ध ।
ग्रासक्न्न सुत्त ग्रवसांण सिद्ध ।।१०२।।

वाहंत[4] खग्ग 'केहरि'[5] विहद्द ।
'जसवंत' समोभ्रम[6] जो मरद्द ।।
खेतसी खाग[7] खेळंत खत्त[8] ।
'गोपाळ' सुत्त गोडंत सत्त ।।१०३।।

कलियांण-मल्ल कळहै कंठीर ।
"वैरसल" सुत्त वीराध-वीर ।।
कूंपावत[9] एता कळह वार ।
सांमि छळि सत्रां वाहंत[10] सार ।।१०४।।

भगवांन भडां[11] दो[12] करै भाग ।
वाघावत सिंधल[13] तणौ वाघ ।।
गोइंद[14] गुडावै गज्ज[15]-खंभ ।
दोमज्झि 'वाघ' सुत[16] दळां[17]-थंभ ।।१०५।।

ऊजळा[18] करै कमधज्ज ग्राज ।
पंचायण[19] 'जैतौ' प्रथी-राज[20] ।।
'नरपाळ' नेत बाधै[21] निहट्ट ।
'भांणोत' भडां भड खळै घट्ट ।।१०६।।

'वीठलै' ग्रांक ग्रोडौ[22] वळंति[23] ।
'गोपाळ' सुत्त गैमर गिळंति[24] ।।
'करनौ' करंत भारत्थ कत्थ ।
'भूपाळ'[25] तणौ वल्लाळ बत्थ ।।१०७।।

---

१ इ. विढै । २ इ. रजवटि । ३ ग्र.इ. हूवो । ४ ग्र.इ. वाहंति । ५ ग्र. केहर । ६ इ. समोभ्रम । ७ ग्र.इ. षागि । ८ इ. षग । ९ ग्र. कुपावत । इ. कुंपावत । १० इ. वाहंति । ११ ग्र. भडा । १२ ग्र. दोइ । इ. दोय । १३ ग्र. सिंघल । १४ इ. गोइंद । १५ इ. गजह । १६ ग्रा. तद । १७ इ. दला । १८ इ. उजला । १९ इ. पांचाइणौ । २० ग्र. प्रिथीराज । इ. प्रीथीराज । २१ ग्र. बाधै । इ. बंधै । २२ ग्र. ग्रोडौ । इ. ग्राडो । २३ ग्र.इ. वलंत । २४ ग्र.इ. गिलंत । २५ इ. भुपाल ।

पडियालग[1] पडे[2] प्रिसेण[3] पीघ ।
"सुरजन्न" समोभ्रभ[4] मांनसिंघ[5] ।।
ओडै[6] भूडंड[7] व्रहमंड[8] ओट ।
'चांपावत' गुडै गयंद चोट[9] ।।१०८।।

जगमाल जुडै जिम्म[10] जग्गमाल ।
दूदावत ढाहै[11] गजां[12] ढाल ।।
सूरत्ति[13] सरीखी[14] नांम[15] सिद्ध[16] ।
'वीरम्मां' 'मालां' जोध विद्ध[17] ।।१०९।।

'मोहण' लडंत वाहंत[18] लोह ।
'गोपाळ' सुत गजदळां डोह ।।
दळपत्ति खळां दळ दुगम गति ।
'भीमौत[19] भमाडै भीम भति ।।११०।।

नरसिंघदास सूरत[20] समूह[21] ।
जगमाल सुत्त गौडवै[22] जूह ।।
'कांनौ'[23] भिडंत चालतौ कोट[24] ।
'माधव्व' समोभ्रम मन्न मोट ।।१११।।

ऊदावत[25] जूटा[26] अरि दळांह ।
किरि सीह[27] बिछूटा सांकळांह ।।
आसकन्न[28] भिडै[29] भांजै[30] असंध[31] ।
'मांनौत[32] खळां मैंगळां[33] कंध ।।११२।।

---

१ अ.इ. पडीयालघ । २ इ. पडै । ३ अ. प्रिह्मेण । इ. सिसण । ४ इ. समौभ्रम । ५ अ.इ. मांनसीघ । ६ अ.इ. ओंडै । ७ अ. भूंडंड । ८ अ. व्रहमंड । ९ इ. चौट । १० अ. म । ११ इ. ढाहे । १२ अ. गज । १३ अ.इ. सुरति । १४ अ. सरिखी । १५ इ. नाम । १६ अ. सीघ । १७ अ.इ. विधि । १८ अ.इ. वाहंति । १९ इ. भीमोत । २० इ. सुरत । २१ इ. समुह । २२ अ. गोडेवै । २३ इ. कानौ । २४ अ. कौट । २५ इ. उदावत । २६ इ. जुटा । २७ इ. सिंह । २८ इ. आसक्नंन । २९ इ. भिड । ३० इ. भाजै । ३१ अ. असध । ३२ अ.इ. मांनउत । ३३ अ.इ. मैंगलां ।

'राजौ'[१] भिडंत सूरिमा[२] राह ।
'विसनावत' सीहक सिंधुराह[३] ॥
'जगतौ'[४] जुडंत जमदूत जुद्ध[५] ।
'रांमा' सुत 'नारण'[६] वडी[७] बुद्ध[८] ॥११३॥

'गोकळसी' चूरै[९] गजदळांह ।
विसनावत[१०] हत्थळ वीजळांह[११] ॥
'सुंदर'[१२] भिडंत संग्रांम[१३] घोर ।
'रांमउत' रूक राखंत नीर ॥११४॥

'जगनाथ' प्राग[१४] बे[१५]वे[१६]जुडंत ।
हरसिंघ[१७] सुत्त हाथां[१८] हणंत ॥
हररांम रूक वावरै हद्द ।
'गोदउत' भडां मेळै गरद्द ॥११५॥

'अभैरांम' भिडै आहिवै[१९] अगाहि[२०] ।
'गोइंद' समोभ्रम गज्ज गाहि[२१] ॥
'उदैसिंघ' वधारै[२२] वंस[२३] आधि[२४] ।
आसकन्न[२५] सुत्त डोहै[२६] अताघ ॥११६॥

'अमरसी'[२७] विमर[२८] पैठौ अरांण[२९] ।
'रासाउत'[३०] साध्रक रूक पांण[३१] ॥
साहिब्ब-खांन नाहर सुजाव[३२] ।
धण झूंझौ[३३] वाहै सत्रां[३४] घाव[३५] ॥११७॥

हरदास हियै[३६] पूरवै हांम ।
'सुरजन्न' हरौ जीपण सग्रांम[३७] ॥

---

१ इ. राजो । २ अ. सूरिम । इ सुरिम । ३ अ.इ. सिंघूराह । ४ इ. जगतै । ५ अ. जुधि । ६ अ.इ. नरिण । ७ अ.इ. वट । ८ अ.इ. बंधि । ९ इ. चुरै । १० अ. विसनाउत । ११ अ. वीजुलांह । इ. विजुलांह । १२ अ. श्रुंदर । इ. सुंदरि । १३ अ. स्रग्रांम । इ. संग्रांम । १४ अा. प्रांम । १५ इ. बै । १६ अ. वै । इ. वे । इ. बे । १७ अ. हरसीघ । १८ अ.इ. हयां । १९ अा. अहिवे । २० अ. अगहि । २१ इ. गांहि । २२ अ. वधोरै । इ. बधारे । २३ अ. वस । २४ अ.इ. आघ । २५ इ. आसक्रंन । २६ अ. डोहे । २७ अ. अमसी । २८ अ. विरमर । २९ अ.इ. आरांण । ३० अ.इ. रास-उत । ३१ अ.इ. पांणि । ३२ अ.इ. सुजाउ । ३३ अ.इ. झूझौ । ३४ इ. सत्र । ३५ अ.इ. घाउ । ३६ अ. हीयै । ३७ अ. सग्रांम । इ. संग्रांम ।

त्रिसणां दियंत[1] धारां प्रहारि[2] ।
'दूदावत' 'सगळै[3] रिण दळारि ।।११८।।

जगनाथ[4] जुडै जुध[5] बाथ जोड[6] ।
कणियागिर[7] रुपक चडै कोड[8] ।।
चहवांण "दयाळ"[9] गज थटां चूर ।
'सिखरा'[10] सुतन्न पेखंत सूर[11] ।।११९।।

देवडौ विढै[12] 'अचळेस' दूठ ।
रावत्त[13] समोभ्रम रिमां रूठ ।।
खळखट्ट करै खत्रवट्ट दाय[14] ।
*चहवांण[15] न चूकै[16] घायवाय ।।१२०।।

रोळंत रिमां धड[18] रांमचंद ।
'संग्रांम'[19] सुत्त सूंरत[20] कंद ।।
'सांगो'[21]भिडंत संग्रांम[22] रस्सि ।
'नगराज' सुत्तन[23] धाए[24] निहस्सि ।।१२१।।

लंकाळ लडै रिण रांमदास ।
'गोपाळ' सुत्त सूंडाळ[25] ग्रास ।
'करमसी' भिडै कळिमथण कोपि ।
राठोड नग्ग सिरि[26] पग्ग रोपि ।।१२२।।

कूंपौ[27] भिडंत डूचियै[28] कूत ।
जैमाळ समोभ्रम जम्मदूत ।।

---

१ अ. दियत। २ अ.इ. पहार : ३ अ.इ. सगले। ४ इ. जमनाथ। ५ अ.इ. जुधि। ६ अ.इ. जोडि। ७ अ. कणीयोगरि। इ. कणियागर। ८ अ.इ. कोडि। ९ अ.इ. द्याल। १० अ. सिपरां। ११ इ. पूर। १२ इ. विढे। १३ अ. राबत। १४ अ.इ. दाई। १५ अ. चवांण। १६ इ. चुकै। १७ अ.इ. घाइवाइ। १८ इ. धडि। १९ अ. सग्रांम। २० अ. सूरत। इ. सुरत। २१ अ.इ. सांगो। २२ आ. संग्राम। २३ अ.इ. सुत। २४ अ.इ. घाए। २५ अ. सूडाल। २६ इ. सिर। २७ इ. कुंपौ। २८ अ.इ. डूचीयै।

*इस छन्द के आगे 'इ' प्रति में निम्न पंक्तियां विशेष हैं :—

हरदास पग वाहंत हद। मेसउत पलांडै मरद।।
कलियांण लडै केवीयांकाल। चूरे नेतावत चमरांल।।

'आसौ' भिडंत[1] अंबर अडेय[2] ।
'नींबावत'[3] चौरंग[4] भुंइ[5] चडेय ॥१२३॥

'भगवांन' लोह भेळै[6] भिडज ।
'सुरतांण' सुत्त छळ सांम निज्ज ॥
'नरपाळ' खाग पाडै[8] खळांह ।
जळ चाढै[9] जोगां रावळांह ॥१२४॥

रायसिंघ[10] समोभ्रम[11] मेघराज ।
संग्रांम हांम पूरण[12] सकाज ॥
आरण[13] भिडंत जोवंत अग्ग[14] ।
ऊहड परट्ठि[15] अहिसीस[17] पग्ग ॥१२५॥

मारक्की ऊहड़ भिडै 'मेघ' ।
असमांन[17] लगै ऊभारि[18] तेग ॥
'रांमौ'[19] भिडंत केवियां[20] कंस ।
'माहेस' सुत 'मालदे' वंस ॥१२६॥

भाटीं भिडंत[21] गोपाळ-मल्ल ।
'आसावत' रावत गिडि[22] इकल्ल[23] ॥
'केसव' भिडंत केसरी सीह ।
'वाघावत' दारण विढण[24] दीह ॥१२७॥

रांमचंद[25] करै[26] राहा[27] चरक्क ।
सुरतांण सुत्त आषी अरक* ॥

---

१. अ. भिडंत । २ अ. अडैय । ३ अ. नीबावत । इ. निबावत । ४ अ.इ. चौरंगि । ५ इ. भूई । ६ इ. भांजै । ७ अ. भिडंज । ८ अ. पालै । ९ अ.इ. चाडै । १० अ. इ. राइसिंघ । ११ इ. समोभ्रम । १२ अ. पूरै । इ. पुरै । १३ अ.इ. अरण । १४ अ.इ. जग । १५ इ. परिठ । १६ इ. सिस । १७ इ. असमान । १८ अ. उभारि । इ. भुभारित । १९ अ.इ. रांमो । २० अ.इ. केवीयां । २१ इ. भीडंत । २२ अ. गिंडि । इ. गिड । २३ अ. एकल । इ. ऐकल । २४ अ. विटण । २५ इ. राम-चंद । २६ इ. करण । २७ इ. राह । २८ इ. चक ।

* प्रति 'अ' में "सुरतांण सुत आपी अरक" पंक्ति नहीं है ।

*'अचळो' भिडै ते वाह आच ।
सुरतांण सुत्त सीमंत[1] साच ॥१२८॥

'पीथौ'[2] भिडंत संग्रांम पीठ ।
'गोइंद'[3] सुत्त गहवंत ग्रीठ ॥
ईसर[4] भिडंत धाए अनंत ।
भाटी भड भूरी भाग[5]-दंत ॥१२९॥

हरदास हियै[6] चाडै हसम्म[7] ।
'कांनावत' दाखै पराक्रम्म ॥
रुघनाथ समोभ्रम जोगराज ।
वाहंत तेग किरि इंद्र वज्र[8] ॥१३०॥

केसब भिडंत कुदरत्त[9] गत्त[10] ।
रायसिंघ[11]'सुत्ता[12] खग सावरत्त[13] ॥
'नाहरौ' भांण संभ्रम[14] निराट ।
घण घाइ घडै[15] अरिहरां घाट ॥१३१॥

'नरपाळ' भिडै नेठाह नग्ग ।
गोदउत वधै[16] गयणग लग्ग ॥
भाटी भिडंत कूंभा[17] थळांह[18] ।
मिळिया मयंद किरि मैंगळांह[19] ॥१३२॥

वाधंत बिढतो[20] वाज खांन ।
लखधीर सुत्ता लग आसमांन ॥
'सादूळ' भिडै गोपाळ सुत्त ।
राठौड रूक ग्रहियां[21] दुरत्त[22] ॥१३३॥

---

* प्रति अ' में पंक्ति— "अचलो भिडै तेवाह आच" लुप्त है ।

१ इ. सींमंत । २ अ. पीथो । ३ इ. गोइंद्र । ४ इ. इसर । ५ अ.इ. भग दंत । ६ अ.इ. हीयै । ७ इ. हसंम । ८ इ. वाज । ९ अ.इ. कुदरति । १० अ.इ. गति । ११ अ. राइसिंघ । इ. राइसिघ । १२ अ. सूत । १३ इ. सांवरत । १४ अ. संमभ्रम । इ. समभ्रम । १५ इ. अडै । १६ अ.इ. वधे । १७ अ.इ. कुंभा । १८ इ. थलाह । १९ अ.इ. मंगलांह । २० अ. विटंतो । इ. विढतो । २१ इ. ग्रहीया । २२ अ.इ. दुरित ।

'पूरौ' भिडंत वाहंत पांण।
भांणोत जुद्ध[1] जोवंत भांण ।।
जगमाल जुडै हींगोळ[2] जाव[3] ।
"रूपा"-हर[4] ओपम जम्मराव[5] ।।१३४।।

'देदौ'[6] भिडंत दाठक्क मल्ल ।
'रांणावत' रूकै[7] रिम पथल्ल ।।
'सेखौ'[8] भिडंत डूचियै[9] सेल ।
दुज्जण-सलौत[10] खत्रवट्ट खेल ।।१३५।।

'ईंदौ'[11] भिडंत पूरौ अनिंद ।
देखत देव विभ्रम[12] दुडिंद[13] ।।
वरियांम[14] 'जसौ' वाहंत खग्ग ।
सींधलां[15] राव[16] लेवा सरग्ग ।।१३६।।

'भाखरौ' छरा असमर[17] भमाड[18] ।
'पीपाडौ' पडियौ[19] खळां पाड[20] ।।
धींधियौ[21] 'धीर' 'वीकौ' धसंत ।
उतबंग ढळै[22] धड ऊकसंत[23] ।।१३७।।

सत्रवां[24] घडा घाए[25] सकूप ।
'रूपसी' भिडै रोहडां रूप ।।
जोधार 'गजैसी' जुद्ध वाहि[26] ।
मैंगळां[27] गहिण[28] घातिया[29] माहि[30] ।१३९।

---

१ अ.इ. जुधि । २ अ. हीगोल । ३ अ.इ. जाउ । ४ अ.इ. रूपांहर । ५ इ जमराउ । ६ इ. देदो । ७ अ.इ. रूके । ८ अ. सेखो । ९ अ. डूचीयै । इ. डुचियै । १० इ. दुजण सलोत । ११ अ. इंदौं । १२ अ. वीभ्रम । १३ अ. दुडिद । इ. दुडंत । १४ अ. वरीयांम । इ. वरयांम । १५ अ. सीधलां । १६ अ.इ. राउ । १७ अ असिमरि । इ. असिमर । १८ अ.इ. भमाडि । १९ अ.इ. पडीयो । २० अ.इ. पाडि । २१ आ. धीधीयो । इ. धांधीयो । २२ अ.इ. ढले । २३ अ.इ. उकसंत । २४ अ. सांत्रवां । इ. सत्रुवां । २५ इ. धाऐ । २६ अ. ठाहि । इ. ठांहि । २७ अ.इ. मैगलां । २८ इ. गांहिण । २९ अ.इ. घातीया । ३० इ. मांहि ।

धांधल्ल भिडै धजवडां धार ।
पैला पडंत[1] भड-पंख[2] पार ॥
खीची भिडंत खाडक्क[3] मल्ल ।
केवियां[4] कडा तूटै[5] कगल्ल[6] ॥१३९॥

पडिहार भिडै आगळी पाट ।
सांहणी धणी मांणक्क थाट ॥
आवध्धे दक्खै इद्धकार ।
पैंतीसे साखे परम्मार ॥१४०॥

दारण भिडंत लागंत आभ ।
लोहै[7] सुजस्स खाटंत लाभ ॥
मांगळिया[8] कळिह[9] कळिह मूळ ।
सांभळी गाज जांणै[10] सादूळ[11] ॥१४१॥

धांधल्ल[12] भिडंत वाहंत धक्क ।
सांमरै कांम संग्रांम[13] सक्क ॥
आसायच[14] धाए[15] आफळंत ।
आव्रत महारिण ऊकळंत[16] ॥१४२॥

पंचोळी[17] पैठा सार पूर ।
संग्रांम[18] सांमि[19] हुआ[20] हजूर ॥
भंडारी प्रिसणां करै[21] भंग ।
आवध्धां ओडै आप अंग ॥१४३॥

जोधार भिडै[22] सगळै[23] जवांन[24] ।
वरियांम[25] हजूरी पासवांन[26] ॥

---

१ अ.इ. पडंति । २ इ. पखै । ३ इ. खाडुकमाल । ४ अ.इ. केवीयां । ५ अ. त्रूटे । इ. त्रुटे । ६ अ.इ. कंगल । ७ इ. लोहे । ८ अ.इ. मांगलीया । ९ अ.इ. कलहै । १० इ. जांणे । ११ अ. सादुल । १२ अ. धाधं । इ. धांधां । १३ आ. सग्राम । १४ इ. आसाइजा । १५ इ. धाऐ । १६ अ.इ. उकलंत । १७ इ. पांचोली । १८ अ. संग्रामि । इ. संग्रांमि । १९ इ. सांम । २० अ.इ. हूआ । २१ अ. करे । २२ अ. भुडे । २३ अ.इ. सगले । २४ अ. जुवांण । इ. जूवांण । २५ अ. वरीयांम । इ. वरीयाम । २६ अ.इ. पासवांण ।

श्रोकट्ट कट्ट थिउ श्राहरट्ट ।
गाहट्ट थट्ट फौजां गरट्ट ॥१४४॥

तरवारि[1] तिमच्छां छणहणंत ।
झाळरी सद्द[2] किरि झणहणंत ॥
वाजै निहाव[3] घाए[4] विमोह ।
लोहार जांण कूटंत[5] लोह ॥१४५॥

रावतां रोस[6] वाहंत[7] रूक[8] ।
इक[9] इक्क घाव दुयं[10] दोय[11] टूक[12] ॥
धू-माळ झाळ कळकळै[13] धूप ।
ऊजळै[14] जुद्ध श्राव्रत[15] रूप[16] ॥१४६॥

मारका जांण जूटंत[17] मल्ल ।
गजथाट गहै भड गडो-थल्ल ॥
पींजर[18] पडंत पडियालगांह[20] ।
सिर[21] श्रडादडा पड[22] सुभट्टांह ॥१४७॥

तुडतांण[23] पांण काया तजंत ।
जै रांम रांम जीहा जपंत ॥
रोसाळ हुवा[24] विकराळ रीस ।
पडियालग[25] वाहै दांत पीस ॥१४८॥

बगतरै[26] श्राग उड्डैत बूंग[27] ।
दवहरण जांण[28] होळी दवूंग[29] ॥
घण झूंझा[30] बाथां पडै घोट ।
लोटीगण[31] खावै लोट-पोट ॥१४९॥

---

१ इ. तरवार । २ श्र. सेद । ३ श्र. मिहाव । ४ इ. घाऐ । ५ इ. कुटंत । ६ श्र. रोसि । ७ श्रा. वाहंति । ८ इ. रूंक । ९ श्र. एक एक । इ. ऐक ऐक । १० इ. दोय । ११ श्र. दोइ । १२ इ. टुक । १३ श्र.इ. कलकले । १४ श्र.इ. उजले । १५ श्र.इ. श्रावृत । १६ इ. रुप । १७ इ. जुटंत । १८ श्र. गडोथल । १९ श्र. पीजर । २० श्र. पडीयांलगांह । इ. पडीयालगांहं । २१ श्र. सिरि । २२ श्र. पडि । २३ इ. तुंडतांण । २४ श्र. हूश्रा । इ. हुश्रा । २५ श्र.इ. पडीयालग । २६ श्र.इ. बगतरे । २७ श्र. छूङ्ग । २८ इ. जांणे । २९ श्र.इ. दवंग । ३० श्र. झूझा । इ. झुझा । ३१ इ. लीटीगण ।

दुध्धार पटा खांडा[१] दुवाढ।
जमदूत अवाहै[२] जम्म-दाढ ॥
कटिया[३] लाखिक[४] लोटै[५] केकांण।
पाखरां सहित वढिया[६] पलांण ॥१५०॥

असमरां[७] धार धड ऊतरेय[८]।
चित तांम सु दरसण[९] हर चडेय ॥
वळकंति[१०] खग्ग चहुंवै वळाव[११]।
सिहरेक जांण वीजां[१२] सिळाव[१३] ॥१५१॥

कुंभाथळ फाटा कुंजरांह।
दीसति[१४] खोहे[१५] किरि डूंगरांह[१६] ॥
जूवटां जांहि घट अनै जिंद।
गै जूह[१७] मुडै[१८] खावै गुडंद ॥१५२॥

सैखंड पिंड पळ खंड सीस।
छच्छोह लोह लागै[१९] छत्तीस ॥
घजवडां धाय[२०] ढालां[२१] ढहंत[२२]।
दांताळ पडै ओलरै दंत ॥१५३॥

कूंभाथळ मैंगल कडि[२३] अडंत।
परबतां स्रंग[२४] किरि खड-हडंत[२५] ॥
है थाठ हीस[२६] हीजर हमस्स।
धारां पहार माती धमस्स ॥१५४॥

दुहुं[२७] दळां माचि संग्रांम दुंद।
गयणाग गोम गाजै गिरंद[२८] ॥

१ अ. खाडा। २ अ. आवाहे। ३ अ. कटीया। इ. कढीया। ४ अ.इ. लाषीक। ५ अ. लोटे। ६ अ. पटीया। इ. वढीया। ७ इ. असरां। ८ अ.इ. उतरेय। ९ इ. सुंदरण। १० अ. वलकति। इ. वलवंति। ११ अ.इ. वलाउ। १२ इ. वीजल। १३ अ. सिलाउ। इ. सलाउ। १४ इ. दिसति। १५ इ. षोह षोह। १६ अ. डुंगरांह। १७ इ. जुह। १८ इ. गुडै। १९ आ. भागै। २० अ.इ. घाइ। २१ आ. ढीलां। २२ अ. टहंत। २३ अ.इ. कडी। २४ अ.इ. श्रंग। २५ अ.षड हडत। २६ अ. हीक। इ. हींक। २७ इ. दुहू। २८ अ.इ. गिरद।

जडधार[1] तार जैकार किद्ध ।
भरि पत्त[2] रत्त[3] जोगणी पिद्ध[4] ॥१५५॥

झट्टकै[5] झाट ओझडौ[6] झीर ।
फेरी फुरंत फारक्क फीर ॥
तांडळां दळां डूंगळां[7] टूक[8] ।
रुंडळां रुळां सीकळां रूक ॥१५६॥

विप्पळां पळां आवळां[9] वाढ[10] ।
ग्रीधळां खळां साबळां[11] गाढ[12] ॥
साबळां हुळां मैंगळां[13] सल्ल ।
ढेंचळां ढळां तूलांह[14] ढल्ल ॥१५७॥

खळ हळां चलै[15] रळतळां खाळ ।
वीजळां झळां वीमळां[16] व्राळ ॥
गूंछळां[17] गळां गूथळां गड्डु ।
सिंघळां[18] कळां[19] सांकळां सड्डु ॥१५८॥

जूम्रळां[20] भलां भूबळां जाळ[21] ।
डांखळां डळां[22] डीगळां डाळ[23] ॥
ऊछळां[24] लुळां[25] वाकुळां एम ।
*तोछळां जळां मछळां[26] तेम[27] ॥१५९॥

हैमरां[28] नरां खंडरां[29] हाड[30] ।
नीझरां झरां रुध्धिरां नाड ॥
जुध्धरां वरां सध्धरा[31] जूट[32] ।
करमरां करां पंजरां[33] कूट ॥१६०॥

---

१ इ. नडघार । २ अ.इ. पत्र । ३ अ. र ·· । इ. रत्र । ४ इ. पीध । ५ अ.इ. झटके । ६ इ. ओझडै । ७ इ. डूंगला । ८ इ. टुक । ९ अ.इ. अवलां । १० अ. वाट । ११ अ.इ. सबलां । १२ अ. गाट । १३ अ. मेगलां । इ. मैगलां । १४ अ.इ. अतुलां । १५ अ.इ. चले । १६ अ.इ. विमलां । १७ अ.इ. गूछलां । १८ अ.इ. सिघलां । १९ अ. कला । २० अ.इ. जुम्रलां । २१ इ. जोल । २२ अ. डलो । २३ अ.इ. डोल । २४ अ.इ. उछलां । २५ इ. तुलां । २६ अ. मेछलां । २७ अ.इ. जेम ।

*'अ' और 'इ' प्रतियों में अन्तिम पंक्ति इस प्रकार है :—'मछलां जलां तोछलां जेम ।'

२८ अ. हैमरा । २९ अ. खंडरा । इ. खांडरा । ३० अ. डाह । ३१ अ. सधरा । ३२ अ. जुट । ३३ अ.इ. पींजरां ।

जाजरां सिरां कौपरां[1] जोर ।
घर-हरां तुरां पाखरां घोर ॥
गिरवरां धरां अंबरां गाज[2] ।
वज्जरां[3] छरां[4] निड्डरां वाज[5] ॥१६१॥

पंजरां उरां खंजरां पेल ।
सूंसरां[6] फरां बगतरां सेल ॥
हींजरां खरां हुंखरां होड ।
लोहरां भरां लल्लरां[7] लोड ॥१६२॥

सिंधुरां[8] गरां साथरां[9] सूर ।
पै करां थरां संघरां पूर ॥
लोहडां लडां लडथड़ां लोट ।
बेहडां धडां मर-गडां बोट ॥१६३॥

ऊभड़ां[10] भडां नीभड़ा[11] अंग[12] ।
वीजडां[13] गडां वीछळां[14] वंग[15] ॥
जमजडां घडां समवडां जंग ।
त्रिज्जडा[16] झडां तडफडां तंग[17] ॥१६४॥

अन्नडां नडां अप्पडां[18] अंत ।
फड फडां जीव[19] जांणै फुरंत ॥
छक्कडां कडां खडखडां[20] छूट[21] ।
तूंबडां[22] जिहीं[23] सिर[24] पडै तूट[25] ॥१६५॥

हींसलां[26] भलां अप्पलां हूंत ।
झंगळां सळां आधळां[28] कूंत[29] ॥

---

१ इ. कोपरां । २ अ.इ. गाजि । ३ अ. वझरा । ४ अ. निडरां । ५ अ.इ. वाजि । ६ अ. सुंसरां । इ. सुसरां । ७ अ. नहीं है । ८ अ. सिघुरा । ९ अ. साथरा । १० आ.इ. उझडां । ११ आ.इ. नीजुड़ां । १२ अ.इ. अंगि । १३ अ.इ. विजडां । १४ इ. वोछडां । १५ अ.इ. बंगि । १६ अ.इ. त्रिजडां । १७ अ.इ. तूंग । १८ अ. अपडा । १९ अ. जीव जीव । २० अ. षडषडा । २१ अ.इ. छुटि । २२ अ.इ. तूवडां । २३ अ.इ. जिही । २४ अ.इ. सिरि । २५ अ.इ. तूटि । २६ आ.इ. हीसलां । २७ इ. अपलों । २८ इ. आंधलां । २९ अ. कूत ।

पत्थळां ढलां[१] मातळां पील ।
डर-बळां डळां बरघळां डोल ॥१६६॥

खागळां[२] झलां ग्रोखळां खोब ।
घायलां[३] मलां घूमलां धोब ॥

रीधळां[४] रिलां ऊजळां[५] रत्त ।
गडथळां भडां भडरवळां[६] गत्त ॥१६७॥

खखरमां[७] बक्खलां रत्त खाळ ।
पैलां-दळ[८] हूग्रौ[९] प्रळै-काळ[१०] ॥

दुज्जला[११] हमल्ला[१२] होठ[१३] डस्सि ।
रिणमल्लां जोधा[१४] वीर रस्सि ॥१६८॥

कवित्त

वीर रस्स वाधियौ[१५], वीर लागा व्रहमंडै[१६] ।
रांमायण[१७] भारत्थ, कना देवाइण[१८] मंडै[१९] ॥
ऐरापत्त[२०] गजिंद्र[२१], फौज गै जूह गडाडां ।
तिकरि[२२] मेर परबत्त, मज्झि कुळ[२३] ग्राठ पहाडां ॥
बंदूक मार गोळा[२४] सरै[२५], लागै[२६] पार न लोहडै[२७] ।
रिण खेत खुरम सुरतांणरौ[२८], जटा - जूट कुंजर[२९] पडै[३०] ॥१॥

प्रळै काळ रण ताळ, वडौ इक[३१] ग्राव्रत[३२] वूहौ ।
सीसोदां[३३] सैंफळां[३४], सरिस[३५] राठौडां हूग्रौ ॥

---

१ ग्र. टला । २ ग्र. षागलों । ३ ग्र.इ. घाइलां । ४ ग्र.इ. रींघलां । ५ ग्र.इ. उजलां । इ. भड । ७ ग्र. षषरंभा । इ. षषलां । ८ ग्र. पेला दलां । इ. पैदलां । ९ हूवौ । १० ग्र. पलैकाल । ११ इ. दुजलां । १२ इ. हमलां । १३ इ. होठि । १४ इ. जोधां । १५ ग्र·इ. वाधीयो । १६ ग्र. वृहमंडे । इ. व्रह्मंडे । १७ ग्र.इ. रांमाइण । १८ इ. देवायण । १९ ग्र. मंडे । इ. मांडे । २० ग्र.इ. ग्रैरापति । २१ इ. गजेंद्र । २२ इ. तिकिरि । २३ ग्र. कूल । २४ इ. गोलां । २५ ग्र.इ. सरे । २६ ग्र.इ. लागे । २७ ग्र.इ. लोहडे । २८ ग्र. रो । इ. रै । २९ ग्र. कूजर । ३० ग्र.इ. पडे । ३१ ग्र. एभ्क । इ. ऐक । ३२ ग्र.इ. ग्राव्रत । ३३ ग्र. सीसोदां । इ. सिसोदां । ३४ इ. सैंफलां । ३५ ग्र. सरसि । इ. सरस ।

गोवरधन रट्ठवड़[१], पडै[२] पिंड लोहै[३] पूरै[४] ।
कियै[५] कूंत[६] सावरत, दळां चतुरंगां चूरै[७] ।।
कीधौ विसेख[८] करतै कळह, तरसि तूंग 'चांदै' तणै ।
वणियोक[९] 'चंद' संकर वदन, सुजड घाइ मुहि सांमणै[१०] ।।२।।

सुसग्रांम[११] गजसिंघ[१२], सीस गयणंगण लग्गै ।
वीज जिहीं[१३] वळकतै, खाग ग्रहियै[१४] ऊनग्गै[१५] ।।
जेम 'खेम' 'जैतसी[१६], जोध विद्या खेलंतौ[१७] ।
गजथट्टां[१८] गाहतौ, साह फौजां फुरळंतौ ।।
वरियांम[१९] जणै[२०] जण[२१] वाजतौ[२२], जोधपुरां[२३] जोधह[२४] पुरौ ।
वजरंग हुग्रौ[२५] हणमंत वरि, भलौ 'भीम' कल्यांणरौ[२६] ।।३।।

छूरा[२७] खग्ग ऊपाडि[२८], सीह करि सांकळ[२९] छूटा ।
मुरडि खंभ मदमोख, जांण सूंडा-हळ जूटा[३०] ।।
मारू सँधै[३१] मुहै[३२], दुरति[३३] धौळै दीहाडै[३४] ।
जग - जेठी जमदूत, 'मल्ल' जांणै[३५] ग्राखाडै ।।
रिणमल्ल कळोधर वीर रस, बज्र[३६] जांण वज़्ह[३७] मिळी ।
नरपाळ प्रिथीमल निहसिया[३८], बे जमरांण[३९] महाबळी ।।४।।

जै मथिया[४०] के महण, मेर कळि मत्थण माझी ।
हेट हेट ग्रविणास[४१], तेग प्रिथमी[४२] पुड[४३] प्राझी ।।
तात वैरि ततकाळ, लियौ[४४] जिण चालुक लोहै[४५] ।
जिण 'मोहण' मारियौ[४६], बिजड[४७] बूंदी घड डोहै[४८] ।।

---

१ इ. राठबड । २ ग्र.इ. पडे । ३ ग्र. लोहे । इ. लोहां । ४ ग्र.इ. पूरे । ५ ग्र.इ. कीयै । ६ ग्र.इ. कूत । ७ ग्र.इ. चूरे । ८ ग्र. विसैष । ९ ग्र.इ. वणीयोक । १० इ. सांमणी । ११ ग्र.इ. सुसंग्रांम । १२ ग्र. गजसीघ । १३ ग्र.इ. जिही । १४ ग्र.इ. ग्रहीयै । १५ ग्र. उनगै । इ. उनगे । १६ ग्र. जेतसी । १७ ग्र. खेलतौ । १८ ग्र. गजथटा । १९ ग्र.इ. वरीयांम । २० ग्र. जणी । २१ ग्र. जणां । २२ ग्र. वाजतो । २३ इ. जोधपुरं । २४ ग्र.इ. जोधपुरौ । २५ ग्र. हूग्रो । इ. हूवो । २६ ग्र. कळरांणरी । २७ ग्र.इ. छरा । २८ ग्र.इ. उपाडि । २९ इ. संकल । ३० इ. जुटा । ३१ इ. सैधे । ३२ ग्र.इ. मुहे । ३३ ग्र. दुरएति । ३४ ग्र.इ. दिहाडै । ३५ ग्र.इ. जांणे । ३६ ग्र. वजर । ३७ इ. वज्र । ३८ ग्र.इ. निहसीया । ३९ ग्र. जमरांणण । ४० ग्र.इ. मथीया । ४१ ग्र. ग्रविणास । ४२ ग्र. प्रिथीमी । ४३ ग्र.इ. पुडि । ४४ ग्र.इ. लीयौ । ४५ ग्र.इ. लोहे । ४६ ग्र.इ. मारीयौ । ४७ ग्र. बिजड । ४८ ग्र.इ. डोहे ।

भांणरै भीच बळभद्र[1]रो, ऊथालै[2] साबळ अणी ।
नरपाळ प्रिथीमल पाडियौ[3], दांणव सिंघ[4] दरस्सणी ॥५॥

सीसोदां[5] कमधजां, जुद्ध मातौ[6] जोधारां ।
घाइ घोर[7] अंधार, धमस धारां अंगारां ॥
पक्खरिया[8] है पड़ै[9], ढहै[10] ढैंचाळ[11] घैघंगर[12] ।
जीण-साल ऊजडै[13] पडै[14] सुहडा[15] पंचाहर ॥
हैरांन हुआ[16] हिंदू[17] तुरक, आया लोह न आडडै ।
गजगाह 'भीम' 'गाजी' हुओ[18] व्याहक[19] लाडी लाड[20]डै ॥६॥

जिम अरजण[21] जुध करन, जेम भीमह[22] दूसासण ।
जिम हणमंत जुध अमै, रांमचंदह जिम रांमण ॥
भ्रिगुपति[23] सहसा-रजण, जेम जुध संकर त्रिप्पुर ।
जिम किसन्न[24] सिसपाळ, जेम इंद्रह वैतासुर ॥
लखमण[25] इंद्रजित्तह कियौ[26], साखी ससि सूरज बिबुध[27] ।
'सूर' उत कियो[28] जिम 'अमर' सुत, जुड 'गजपत्ती' 'भीम' जुध ॥७॥

चीतोडो[30] चालणी, अंग[31] हूओ[32] आरिब्बह[33] ।
कुरव्व दळ[34] अंतरै, जांण भीखम पितामह ॥
आरुहता[35] भगदंत, अस्सि रागां चाडंतो[36] ।
गै जूहां गोडतो, खग्ग भूबळि झाडंतो[37] ॥
भूडंड[38] वधे व्रहमंड[39] लग, धन्न पराक्रम सूरतन ।
पाडियौ[40] जोध आउट्ठमो, दौढौ[41] रावत कुंभक्रन[42] ॥८॥

---

१ इ. अ.इ. बलिभद्र । २ अ.इ. उथालै । ३ अ.इ. पाडीयो । ४ अ. सीघ । ५ इ. सीसौदां । ६ इ. मातो । ७ इ. घोर । ८ अ.इ. पषरीया । ९ इ. पडे । १० अ. टहै । इ. ढहे । ११ अ. टैचाल । इ. ढैचाल । १२ अ. घेधंगर । इ. घेघीगर । १३ अ.इ. उजडे । १४ अ.इ. पडे । १५ अ. सीहडा । इ. सोहडां । १६ अ. हूआ । हुवा । १७ अ. हींदू । इ. हींदू । १८ अ.इ हूओ । १९ अ. वाहक । २० अ. लाडरै । २१ इ. अरजन । २२ इ. भीम । २३ अ. भिगुपति । इ. भिगुपति । २४ अ इ. क्रस्ण । २५ इ. लषमण । २६ अ.इ. कीयो । २७ अ.इ. त्रिवूध । २८ अ.इ. कीयो । २९ इ. गजपति । ३० अ. चीत्तोडो । इ. चीत्रोडो । ३१ अ. अंगि । ३२ इ. हुवो । ३३ अरि वह । इं. पारिबह । ३४ इ. बदल । ३५ इ. आरूहता । ३६ अ. चांडतो । ३७ अ.इ. झाडितो । ३८ इ. भडंड । ३९ अ.इ. व्रहमंड । ४० अ.इ. पाडीयो । ४१ अ. दोटो । ४२ अ.इ. कूभक्रन ।

वपि विहंड पळ खंड, तेग तिमछां[१] मुहि तुटौ ।
धारां मुहि धडछियौ[२] , कुंभ[३] किरि काली फूटौ ।।
हाड हाड संघांण, हुग्रा[४] जूजुग्रा[५] जडाळै[६] ।
ढळतौ[७] धड ऊपरा[८] , सीस संकर उद्दाळै ।।
तिण स्रोण[९] वदन कीग्रौ तिलक, सुकरा[१०] स्रोण[११] बंबाळियौ[१२] ।
खूमांण तणै[१३] रिण मांणसर, ग्रछरि[१४] हंस वरमाळियौ[१५] ।।९।।

मांनसिंघ[१६] सीसोद, भिडै[१७] रहियौ[१८] भांणावत[१९] ।
गोकळ जीवत-संभ[२०], विढै[२१] हूग्रौ वड रावत ।।
सीसोदौ[२२] 'कल्यांण', रहै रावत निभ्भैयण[२३] ।
हरीदास रट्ठववड[२४], रहै 'कचरौ' रिण डोहण ।।
हरिसिंघ[२५] हेक भाटी रहै[२६], दुल्लह[२७] सुरतांणी घडा ।
'भीमेण'[२८] रहंतै 'ग्रमर' रै, रहिया[२९] रावत ग्रेतडा[३०] ।।१०।।

भागौ[३१] खांन पहाड, छाड[३२] छळ[३३] बळ[३४] बूंदेलौ ।
भागौ दरिया[३५] खांन, राड[३६] मूकै[३७] रोहिल्लौ ।।
गौ[३८] भज्जै[३९] ग्रबदूल[४०], रिदै नारायण[४१] हाडौ ।
गौ[४२] 'सादूळ'[४३] पमार, धणी[४४] गायड[४५] रौ गाडौ ।।
खौजा[४६] 'गयार' सावर गयौ, खग संपेखे ऊनगा[४७] ।
सुरतांण खुरम जुध[४८] भाजतै, कायर[४९] ग्रेता[५०] भाजगा[५१] ।।११।।

---

१ इ. तिमडां । २ ग्र.इ. धडछीयौ । ३ ग्र.इ. कूंभ । ४ ग्र. हूग्रा । ५ ग्र. जुजूग्रा । इ. जूजूग्रा । ६ ग्र.इ. जडाले । ७ ग्र. टलतौ । ८ ग्र.इ. उपरा । ९ ग्र.इ. श्रोण । १० इ. सुकर । ११ ग्र. श्रोण । इ. श्रौण । १२ ग्र. बंबालीयौ । १३ ग्र.इ. तणौ । १४ इ. ग्रछरे । १५ ग्र.इ. वरमालीयौ । १६ ग्र. मांनसीघ । १७ ग्र.इ. भिडे । १८ ग्र.इ. रहीयौ । १९ ग्र. भांणाउत । इ. भांणाऊत । २० ग्र. जीव-संभ । २१ ग्र. ग्र. विटे । २२ ग्र.इ. सीसोदौ । २३ ग्र.इ. निभैमण । २४ इ. राठवड । २५ ग्र. हरीसिघ । इ. हरीसिंघ । २६ ग्र.इ. रहे । २७ इ. दूलह । २८ ग्र. भीमेणा । २९ ग्र.इ. रहीया । ३० ग्र.इ. एतडा । ३१ इ. भागो । ३२ ग्र.इ. छाडि । ३३ ग्र.इ. छलि । ३४ इ. बलि । ३५ ग्र.इ. दरीया । ३६ इ. राडि । ३७ ग्र.इ. मूके । ३८ ग्र.इ. गो । ३९ ग्र.इ. भजे । ४० इ. ग्रबदुल । ४१ ग्र. नाराइण । ४२ ग्र. गो । ४३ इ. सादुल । ४४ ग्र.इ. घणी । ४५ ग्र.इ. घाइड । ४६ ग्र.इ. षोजौ । ४७ ग्र. उतगा । इ. उनगा । ४८ ग्र.इ. जुधि । ४९ ग्र.इ. काइर । ५० ग्र. ईता । इ. एता । ५१ ग्र.इ. भजिगा ।

खाळ रत्ता खळहळै[1], जांण वरसाळ नदी जळ।
गज तुरंग[2] गुड्डिया[3], गुडै[4] भड हूवा[5] गूंछळ[6] ।।
रुंड[7] मुंड रोळिया[8], "भीम" पाडियौ[9] भुजाळौ।
भारथ कुर-खेत रै[10], हुऔ[11] जुध लंका वाळौ।।

गजसिंघ[12] गिरंदां[13] कमधजां, माहि मेर माझी खडौ[14]।
पतसाह[15] दुहूं[16] गजगाह प्रव, हुइ नीमडियौ[17] हेकडौ[18] ।।१२।।

घाइ घांण उतरै[19], खांन सुरतांण निघट्टा।
राव[20] रांण हुइ रहच[21], मीर उमराव[22] अहट्टा[23] ।।
खुरम गयौ नीसरै[24], "भीम" अमरावत साटै।
केसूरा[25] लडि[26] मुआ[27], लूण[28] किरि मिळियौ[29] आटै।।

वीर हर तिलक वावाडिया[30], साइदांण[31] वज्जै[32] कटक।
गजसिंघ[33] कियौ[34] भिड गजदळां, रिण सँग्रांम राहाचरक ।।१३।।

नवै कोडि कतियांण[35], छपन कोडी चौमंडा[36]।
चौसट्ठी[37] जोगणी, बीस जैरै[38] भुज[39] डंडा[40] ।।
रगत पिद्ध वळि लिद्ध[41], जपै[42] जैकार सकत्ती।
कियौ[43] संकर[44] सिंगार[45], रुंडमाळा गळ[46] घत्ती।।

कौतगि[47] दीठ भासंकरह, वरे वडा वर अच्छरां।
रट्ठौड[48] दीध रण चाचरहि, धूहड धवड पळच्चरां ।।१४।।

---

१ अ.इ. खलहले। २ अ तूरंग। ३ इ. गूडीया। ४ अ.इ. गुडे। ५ अ. हूआ। इ. हुआ। ६ अ.इ. गूछला। ७ अ इ. रूंड। ८ अ.इ. रोलीया। ९ अ.इ. पाडीयौ। १० इ. रो। ११ अ.इ. हूऔ। १२ इ. गजिसिंघ। १३ अ.इ. गिरिदां। १४ अ. खडो। १५ अ.इ. पतिसाह। १६ अ. दुहुं। इ. दुहु। १७ अ. नामडीयौ। इ. नीभडीयौ। १८ इ हेठडौ। १९ अ.इ. उतरे। २० अ. रांउ। इ. राउ। २१ इ. रहव। २२ अ.इ उमरा। २३ अ.इ. आवटा। २४ अ.इ. नीसरे। २५ अ.इ. सुरा। २६ अ. लडी। २७ अ.इ. मूआ। २८ अ. लुण। २९ अ.इ. मिलीयौ। ३० अ. वावाडीया। इ. वावोडीया। ३१ अ इ. साइदांणा। ३२ अ.इ. वजे। ३३ अ. गजसिंघ। ३४ अ.इ. कीयौ। ३५ अ.इ. कतीयांण। ३६ अ. चांमडा। इ. चांमुडा। ३७ इ. चौसठ। ३८ इ. जे। ३९ अ. भू। इ. भूज। ४० अ. डंड। ४१ इ. लीध। ४२ अ.इ. जंपै। ४३ अ.इ. कीयौ। ४४ अ. सकर। ४५ अ. सिगार। इ. सिणगार। ४६ प्र. गलि। ४७ इ. कौतग। ४८ इ. राठौड।

जरख रीछ[१] वड्डाख, सिवा सत लस्स मलक्का ।
साकणि डायणि[२] सकति, काळ भैरव काळक्का[३] ।।
भूत प्रेत[४] पेसाच[५], बहत चेडा बह वैतर[६] ।
वीर सिद्ध[७] वैताळ, निसाचर भूचर खेचर ।।

राठौड ज तै कीयौ रिणह[८], गहण भुजाई भटकळह[९] ।
पळ धाप[१०] कियौ[११] पळहारियां[१२], कळळ, बिंद कोळाहळह[१३] ।।१५।।

एक[१४] गया भगवाट[१५], सांमि छळ मेल्हे[१६] कुळ छत्र ।
हेक मुगति[१७] साजोत[१८], गया भेदे रवि मंडळ ।।
अरस हूंत[१९] ऊतरे[२०], एक[२१] वर अच्छर वरिया[२२] ।
एक[२३] पडै[२४] लोहडै[२५], लोह छक्का[२६] लालुरिया[२७] ।।

प्रिथीराज "भीम" गोकळ प्रचंड, अभंग पाड[२८] ऊपाडिया[२९] ।
जुध कमंध जोध-विद्या नमौ[३०], जोध मार जीवाडिया[३१] ।।१६।।

रांमायण रांमचंद, वहै[३२] कूंभक्रन रांमण ।
हणमंत खोडौ[३३] हुऔ[३४], मरे जीवियौ[३५] लखंमण[३६] ।।
अरजण[३७] भारथ कियौ[३८], लियण हथणापुर[३९] ढूकौ[४०] ।
जै दसरथ अहि-वन्न[४१], करन मारियौ[४२] घडूकौ[४३] ।।

गजसिंघ कियौ[४४] गजगाहणौ[४५] "भीम" मारि भागौ[४६] खुरम ।
कमधज्ज पखै जीतौ कमण, साजै नाद संग्रांम[४७] इम ।।१७।।

---

१ इ. रींछ । २ अ.इ. डाइण । ३ अ.इ. कालिका । ४ अ. पेत । ५ इ. पिसाच । ६ इ. बैतर । ७ अ. सिंध । ८ अ.इ. रिण । ९ अ.इ. भाटकलह । १० अ.इ. धापि । ११ अ. कीयो । १२ अ इ. पलहारीयां । १३ अ.इ. कौलाहल । १४ इ. ऐक । १५ अ.इ. भंगवाट । १६ इ. मेले । १७ इ. मुगत । १८ इ. सासीज । १९ अ. हुंत । इ. हुत । २० अ इ. उतरे । २१ अ इ. ऐक । २२ अ.इ. वरीया । २३ इ. ऐक । २४ अ.इ. पडे । २५ अ.इ. लोहडे । २६ अ. छकां । २७ अ.इ. लालुरीया । २८ अ.इ. पाडि । २९ अ.इ. उपाडीया । ३० अ. नमो । ३१ अ. जीवाडीया । इ. जीवाडीयो । ३२ अ.इ. वहे । ३३ अ.इ. खोडो । ३४ अ. हूंओ । इ. हूओ । ३५ अ.इ. जीवीयो । ३६ अ.इ. लखमण । ३७ अ. अरजणि । ३८ अ.इ. कीयो । ३९ अ. हथणांपुर । ४० अ. टुको । ४१ इ. वृंन । ४२ अ.इ. मारीयो । ४३ अ. घड़को । ४४ अ.इ. कोयो । ४५ अ. गजगाहणो । इ. गहगाहणी । ४६ अ. भागी । ४७ इ. संग्राम ।

जिसौ पत्थ भारत्थ, रांम जीतौ[१] रांमायण[२] ।
जिसौ[३] लखण इंद्रजीत[४], भीम भग्गै[५] दुज्जोग्रण[६] ।।
जिसौ जोध बळि भद्र, पळंब दांणव संहारियै[७] ।
जिसौ वीर नरसिंघ, हरिणकस्सिप[८] वैहरियै[९] ।।
साभियै[१०] तिपुर[११] संकर जिसौ, वांमण[१२] चंपि पयाळ[१३] बळि ।
गजसिंघ[१४] भीम गोडव्वियो[१५], तिसौ दीठ रवि चक्र तळि ।।१८।।
पडे[१६]ढाल[१७]दिसि[१८]एक[१९], पडे[२०]एक दिस पक्खर[२१] ।
पीलवांण इक[२२] दिसा[२३], पडे[२४] परचंड बहादर ।।
हाड गूड[२५] कप्पाळ, सेत दांतूसळ[२६] सब्बळ ।
चरम मांस झडि पडे[२७], जांण धमळागिर ऊजळ[२८] ।।
गजसिंघज गैमर गोडिया[२९], तीह कलेवर[३०] पंजरां ।
सावज्ज सीह व्याया[३१] सघण, रहि भोळै गिर कंदरां ।।१९।।
सोळह सै[३२] संमंत्त[३३], हूग्रौ[३४] जोगण-पुर चाळै ।
सम्मै एकासियै[३५] मास काती वडाळै[३६] ।।
पूनम[३७] थावर वार, सरद रित[३८] है पालट्टी ।
वीर खेत पूरब्ब रित्त हेमंत प्रघट्टी ।।
सुरतांण खुरम भागों भिडे[३९], चाडि[४०] चकथां चक्कवै ।
गजसिंघ प्रवाडौ खट्टियौ[४१], वहै भीम चीतौडवै[४२] ।।२०।।

इति स्री महाराजाधिराज महाराजाजी स्री गजसिहजी री गुण रूपक बंध गाडण केसोदास[४३] री[४४] कह्यो संपूर्ण[४५]

श्लोक

जाद्रिसं पुस्तकं द्रिष्ट्वा ताद्रिसं लिषितं मया ,
यदि श्रुद्धमश्रुद्धं वा मम दोषो न दीयते।

---

१ अ. जीतो । इ. जितौ । २ अ. रांमाइण । ३ इ. जिसो । ४ इ. इंद्रजित । ५ अ.इ. भगै । ६ अ.इ. दुजोग्रणि । ७ अ.इ. संघरीयै । ८ अ. हिरिणकसप । इ. हिरणकसप । ९ अ. वैहरीयै । इ. चैहरीयौ । १० अ.इ. साभीयै । ११ इ. त्रिपूर । १२ अ.इ. वामण । १३ अ. चंपि । इ. चांपि । १४ अ. गजसींघ । १५ अ. संगोडवीयौ । इ. संगोडीयौ । १६ अ. पडं । १७ अ. टाल । १८ अ. जिदिस । इ. जदिस । १९ इ. ऐक । २० अ. पडै । २१ अ. पषर । २२ अ.इ. एक । २३ इ. दीसा । २४ अ. पडै । २५ इ. गुड । २६ इ. दांतुसल । २७ अ. पडै । २८ अ.ई. उजल । २९ अ. गोडीया । इ. गोमरडीया । ३० इ. कलवर । ३१ इ. व्यायां । ३२ इ. सहं । ३३ इ. समंत । ३४ अ. हुग्रे । इ हूऐ । ३५ अ.इ. एकासीये । ३६ अ. वंडाले । ३७ इ. पुनम । ३८ इ. रि । ३९ इ. भिडै । ४० अ. चाडि । ४१ अ.इ. पटीयौ । ४२ इ. चीत्रोडवै । ४३ आ. कैसोदास । ४४ आ. रो । ४५ इ. प्रति में इस प्रकार है—२० इति श्री महाराजा श्री गजसिघजी री गुण रूपक-बंध संपूर्णं । सिंघींजी श्री मेघराजजी पठनारथं ।। श्रीरस्तु ।। कल्यांणमस्तु ।। १ ।। श्री

परिशिष्ट १

जोधपुर राज-वंश के गीत

[राजस्थानी साहित्य की अपनी एक निजी विशेषता है—"डिंगळ गीत साहित्य"। यह गीत साहित्य राजस्थानी तथा गुजराती चारण कवियों की देन है। यही कारण है कि इन उपर्युक्त दोनों भाषाओं के साहित्य के अतिरिक्त अन्यत्र दूसरी भाषाओं के साहित्य में इनका नितान्त अभाव है। अतः इस प्रकार से गीत साहित्य का महत्व राजस्थानी साहित्य में और भी बढ जाता है।

यों तो इन गीतों ने साहित्य-रंगमंच के हर रंग को निखारा है, लेकिन साहित्य का ऐतिहासिक पक्ष इनका विशेष आभारी है क्योंकि इन गीतों ने इतिहास की उन महान् विभूतियों की स्मृति एवं प्रसंगों को अपने आंचल में आश्रय दे जीवित रखा है जिनको कि इतिहास तक ने भुला दिया था। स्यात् ही ऐसा कोई वीर योद्धा इन गीतों द्वारा प्रशंसित तथा सम्मानित होने से बचा हो। आज गीतों में उल्लेखित ये पवित्र स्मृतियां, राजस्थानी ऐतिहासिक साहित्य की अमूल्य निधि बन गई हैं। ये साहित्यिक आभूषणों के आभावान् रत्न हैं।

इन गीतों ने ऐतिहासिक साहित्य के सभी पक्षों को प्रदीप्त किया है। यथा-शौर्य, गांभीर्य, वदान्यता आदि। ये गीत ऐतिहासिक स्मृतियों को जीवित ही नहीं रखते बल्कि ऐतिहासिक घटनाओं आदि की प्रामाणिक पुष्टि भी इन से होती है।

प्रस्तुत परिशिष्ट में प्रधान सम्पादक पूज्य श्री मुनि जिनविजय जी के निर्देशानुसार गज गुण रूपक बंध में उल्लेखित ऐतिहासिक व्यक्तियों तथा प्रसंगों से संबंधित सभी प्रकार के मुख्य गीतों को समाविष्ठ किया गया है —संपादक]

१ रावं सहौ

गीत छोटो सांणोर

सूघै मन जात हालियौ सीहौ,
"सेत" सुतन अंग बौहळौ साज[1] ।।
मूळ राज नाळै र मेलियौ,
ऊपर करौ कनौजा आज ।।१।।

शब्दार्थ—हालियौ – चला। सुतन – पुत्र। बौहळौ – बहुत। साज – सामान। मेलियौ – भेजा। ऊपर – मदद, सहायता। कनौजा – कनौज का, राठौड़।

---

*यह गीत ख्यातों के आधार पर रचा हुआ प्रतीत होता है। क्योंकि मूल राज तो राव-सीहा से बहुत पूर्व हो चुका था। [दे. डॉ. गौ. ही. ओझा कृत जोधपुर का इतिहास, प्रथम खंड पृ. १४६ से १५७]

पाठान्तर

१ ख. प्रति में सेत सुतन नीधां संग साज।

जात गोमती चालिया[1] जात्री,
सगपण छै आगई[2] सात ।।
जादव राय जोय आवां जद,
वळता करां सगपण री वात ।।२।।
पाटण "सीह" अचळ परणिया,
"मूला" तणै मांढहै माल ।।
भाटी तणौ कमंध घट भांजै[4],
सत्र तणौ अरधंगौ साल[4] ।।३।।
कमधज[5] जादवै वैर कदोकौ,
ऊंचासरै उजाळै आय ।।
"सीह" मारियौ "लाखौ" सांमौ[6],
जग जाय[7] पण वात न जाय ।।४।।

(अज्ञात)

२ राव आसथांन*

गीत पंखाळो

पाली ऊपडै गा खेड पहली । गोयल खागां गाळै ।।
सीह तणा विरद सीहावत । आसथांन ऊजवाळै ।।१।।
ईडर संखोधार ऊपरा । आंण वधारै येती ।
नवकोटी मारवाड खगां नर । सीहै लीध सहेती ।।२।।

शब्दार्थ—जात – यात्रा । आगई – पहिले ही । जादव-राय – श्री कृष्ण । जोय – दर्शन करके । वळता – वापिस लौटते समय । सगपण – सम्बंध । तणै – के । मांढहै – कन्या पक्ष वालों का स्थान । कदोको – कभी का । ऊंचासरै – जन्म स्थान, निकास स्थान । सांभौं – यादवों की समा शाखा का व्यक्ति ।

गाळै – ध्वंस किए, नष्ट किये । विरद – विरुद । कीर्ति । सीहावत – सीहा का पुत्र । लीध – ली ।

---

*यह गीत राव सीहा के तीनों पुत्र आसथान, सोनंग और अज के संबंध में है जिन्होंने क्रमशः पृथक-पृथक खेड, ईडर और शंखोधार (द्वारका) पर अधिकार किया था ।

पाठान्तर

१ ख. आया । २ क. ही । ३ ख. भागे । ४ ख. सत्रां तणी यर घला साल । ५ ख. कमंद । ६ ख. जादवां । ख. सी है लाखो जांम साजीयो । ८ ख. जुग जासी ।

आसथांन सोनंग अज ऊभा । भाई त्रहूँ भुजाळा ।
गोयल खागां भार गाळिया । कमधज वड करनाळा ।।३।।
(अज्ञात)

३ राव धूहड*

गीत पंखाळौ

सत्र पेठा बनै मनै सक संबळी । दियै वरस डंड अेकरण दोय ।
अण गंजियौ नह रहियौ अेकौ । कोट छत्र तो आगळ कोय ।।१।।

आसथांनोत कियां बळ असमर । धर "धूहड" करते धक चाळ ।
पौह जैसांण सोनगर पहली । रसै पेस कस संभर साल ।।२।।

खळ अनमंद अखूटी खूटै । दीह रात सारसी डर ।
कोटां दहूं विचै राव कमधज । नेसां पेस लियंत नर ।।३।।
(अज्ञात)

४ राव रायपाळ[1]

गीत पंखाळौ

थह कोट ऊथाप धरा थरसलै । रिम रेसां रेसे रिम-राह ।
रायां-पाळ वसै रढ-रांभण । बाघां दहूँ विचै वाराह ।।१।।

आळ भयंकर कांन अळत्रै । टाळै नहीं कांइ कांटाळ ।
गाळ नाहरां हियै खेडेचौ । आठूं पौर करै गिड आळ ।।२।।

शब्दार्थ—गाळिया – संहार कर दिये । वड – बड़ा । करनाळा – शूर, वीर ।

मनै – मानते हैं । संक – भय, शंका । अण गंजियौ – अपराजित । आगळ – अगाडी । असमर – तलवार । धकचाळ – युद्ध । पोह – राजा । जैसांण – जैसलमेर । सोनगर – स्वर्णगिरि, जालोर । खळ – शत्रु । नेसां – घरों ।

थह – स्थान । ऊथाप – उखाड कर । थरसलै – कंपायमान होती है । रिम – शत्रु । रेसां – पराजय । रेसे – पराजित करता है । रिम-राह – शत्रुओं के लिए राहू रूप । रढ-रांमण – रावण के समान हठ करने वाला । आळ – लड़ाई । कांटाळ – सिंह । गिड – सुअर ।

---

*इस गीत में वर्णित इतिहास ख्यातों आदि में नहीं मिलता है ।
[1]गीत में कवि ने रायपाल के शौर्य का वर्णन किया है ।

कांठै रहै कंठीर कणणतौ । लोपै तकै नहीं तळ लीह ।
धूहड़ ऊत सदा दिन धोळै । ग्रेकल चरै वळै ग्रण-बीह ।।३।।

(ग्रज्ञात)

५ राव कनपाळ*

गीत पंखाळो

भारथीयै ध्रहै ग्रस झांफां भर । पोयण नाळी तेग परठै ।
कांन बहावै कांन नरेसु । सात्रव काळ गंजै ·····गंठै ।।१।।
वोल विचाळव बांह बहेवळ । मंडप ग्रथ ग्रह कसप मथै ।
केवी पग स "सीह" कळोधर । नांम पराक्रम उनथ नथै ।।२।।
···सभोभ्रम "पाळ" ज नदण । जोर महा त्रस ग्रात्रस जांणै ।
"कांन" उभै ग्रह कालंग केवी । येह ग्ररी दळ खेबर ग्रांणै ।।३।।

(ग्रज्ञात)

६ राव जालणसी"

गीत पालवणी

सलह सोहड सज्ज अस पलांणै । 'जालण' जोगंद्र कीध जुग्रांणै ।
ग्राप तणै पहला धन ग्रांणै । वांका ढोवा थाट विनांणै ।।१।।

शब्दार्थ— कंठीर – सिंह । कांठै – समीप । कणणतौ – गर्जना करता हुग्रा । दिन-धौळै – दिन दहाड़े । ग्रेकल – ग्रकेला रहने वाला सुग्रर । ग्रण बीह – निडर ।

भारथियै – युद्ध में ? ग्रस – घोड़ा । झांफां – छलांगों । केवी – शत्रु । कळोधर – वंशज । उनथ – जिसके नाथ नहीं । नथै – नाथ डालता है ।

सलह - सिलह – ग्रस्त्र शस्त्र, हथियार । सोहड – सुभट, योद्धा । ग्रस-ग्रश्व – घोड़ा । पलांणै – चारजामा कसते हैं । जोगंद्र – योगीन्द्र । कीध – किये । जुग्रांणै – योद्धाग्रों को । वांका – विकट, बांकुरा । ढोवा – ग्राक्रमण, युद्ध । थाट – सेना, दल । विनांणै –

---

*राव कनपाल का इतिहास बहुत ही संक्षेप में मिलता है ग्रत: इस गीत में वर्णित शौर्य का मेल ठीक नहीं बैठता है । वैसे गीत भी बहुत क्लिष्ठ है ।

"राव जालणसी ने ऊमरकोट के सोढा रांणा गांगा को परास्त कर दण्ड स्वरूप में खिराज वसूल किया था । इसी प्रकार ग्रपने चाचा का प्रतिशोध लेने के निमित्त हाजी मलिक सराई को मारा डाला तथा थट्टा प्रांत को लूट कर मुल्तान के शासक से चौथ वसूल की थी । इन्होंने जैसलमेर के भाटियों तथा भीनमाल के सोलंकियों को भी युद्ध में परास्त करके कर वसूल किये थे । इन्हीं घटनाग्रों के संबंध में किसी समकालीन कवि ने उपर्युक्त गीत की रचना की थी ।

'पाळ' कळोधर पक्खर पूरै । खैंगां गाहण खागां खूरै ।
थाटां मुहडै थांणा थूरै । आरांणां माथै दळ ऊरै ॥२॥

पाखरियौ तेजी पीयावै । 'कांन' समोभ्रम कांटा कावै ।
अणभंग आप सत्रां सर आवै । वाळै केवा ढोल वजावै ॥३॥

दूजड हथौ बडै दस देसां । नर नायक जळ चाढै नेसां ।
प्रसण हूंत भरावै पेसां । अेम करै 'जालण' घर अैसां ॥४॥

(अज्ञात)

७ राव छाडौ*

गीत छोटौ सांणोर

तलवाळा हूंत महा दळ तांणै , ऊतरियौ ईसाळू आय ।
जैसल-मेर तणा जालणवत , धडां उडाया सहर धकाय ॥१॥

तुंग प्रमांण 'छाडै' त्रजडां हथ , धाव माडेचां फौज धड़ी ।
रावळ सर आयौ खड-रावह , प्रगट त्रखूणै भीड़ पड़ी ॥२॥

शब्दार्थ—पाळ – रायपाळ । कळोधर – वंशज । पक्खर – हाथी या घोड़े का झूल नुमा कवच । पूरै – सजाता है । खैंगां – घोड़ों । गाहण – ध्वंस या संहार करने को । खागां – तलवारों । खूरै – काटता है ? थाटां – दळों । मुहडै – अगाड़ी । थांणा – चौकी । थूरै – ध्वंस करता है । आरांणां – युद्धों, युद्ध स्थलों । माथै – ऊपर । ऊरै – झोंकता है । पाखरियै – कवचधारी घोड़ा या हाथी । तेजी – घोड़ा । पीडावै – पीड़ित होते हैं । कांन – कनपाल । समोभ्रम – पुत्र । कांटा – आततायी । कावै – मिटाता है, दूर करता है । अणभंग – वीर । सत्रां – शत्रुओं । सर – ऊपर । वाळै – प्रतिशोध लेता है । केवा – कष्ट, दुख । दूजड़हथौ – खड्ग धारी । जळ – आभा, कांति । नेसां – वंशों । प्रसणां – शत्रुओं । हूंत – से । भरावें-पेसां – दण्ड या कर वसूल करता है । अेसां – आराम ।

तुंग – सेना । त्रजडांहथ – खड्ग धारी । माडेचां – भाटियों । सर – ऊपर । त्रखूणै – जैसलमेर के गढ का नाम । भीड – संकट, कष्ट ।

---

*राव छाडाजी ने जैसलमेर के तत्कालीन शासक को कहला भेजा कि अगर वे गढ के बाहर नगर बसायेंगे तो उनको खिराज देना होगा । जैसलमेर के नरेश ने इस पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया । यह देख छाडाजी ने जैसलमेर पर चढाई कर दी, भाटी पराजित हो गये और अपनी कन्या का विवाह छाडाजी के साथ कर सुलह करली ।

कमधज "छाडै" कीध कोपियै, माड-धरा ऊपर मच्छर ।
"घहड" हरौ धूण खग धारां, सत्र लूटै वलीयौ समर ।।३।।
भाटी मांण पांण तज भागो, पुळ लगौ आथांण पखै ।
सुज जीतौ समहर नव-सहसै, दणियर ससहर साख दखै ।।४।।

(अज्ञात)

८ राव तीडौ*

गीत छोटौ सांणोर

सांमंत सभ्भ सार संग्रांम सजूजा[1], मिळतै कमंध महा जुध माय[2] ।
भीनमाळ[3] हूंत[4] ताडै[5] भागा, सोनंग रा दळ सबळ संभाय[6] ।।१।।
छोडावियौ[7] मच्छर "छाडावत"[8] कळह वार ग्रहे केवांण ।
भिड़तै खेत भील-पुर भागौ, चोरंग सांवतसीह चहुवांण ।।२।।
गोतमपुर हुंता ग्रह गांजै, वळै प्रसण मुकावी बाळ ।
खांडां बळ भांगै खेडेचै, रावत साचोरौ रण-ताळ ।।३।।
विच साचोर भीलपुर[9] वासी, "सीहा" हरै मनाडै संक ।
मातंगपुर कटकां मरवाडै, धणियां ताय ढीलविया धंक[10] ।।४।।

(अज्ञात)

शब्दार्थ—माड-धरा – जैसलमेर राज्य । मच्छर-मत्सर – कोप, गुस्सा । वळियौ – लौटा । समर – युद्ध । मांण – मान, गर्व । पांण-पांण – प्राण-बळ । पुळ – जाकर । आथांण – आस्थान, घर, देश । पखै – पक्ष में । समहर – युद्ध । नव सहसौ – राठौड़ । दणियर-दिनकर – सूर्य । ससहर – चंद्रमा । साख – साक्षी । दखै – कहते हैं ।

सांमंत – सामंतसिंह चौहान, योद्धा । सार – तलवार । सजूजा – योद्धा । मच्छर – गर्व, अभिमान । वार – समय, वेला । केवांण – तलवार । चोरंग – युद्ध । वळै – फिर, और । प्रसण – शत्रु । मुकावी – छोडा कर । रण-ताळ – युद्धस्थल । हरै – वंशज । मनाडै – मना कर । संक – भय । आतंक । ढीलविया – शीथिल किये । धंक – इच्छा ।

---

*यह गीत इतिहास की कसोटी पर ठीक नहीं उतरता है, क्योंकि सांवतसिंह शिलालेखों के अनुसार राव आसथान और धूहड़ का समकालीन था ।

पाठान्तर

१ क. सांमतसी जसा सग्राम सजूडा । २ क. माहे । ३ ख. भीलमाल । ४ ख. सूं ५ ख. तीडो । ६. क. सोनंग राव लियो वध साहे । ७ क. छांडाडियौ । ८ क. छांडावत । ९ क. कणंगर । १० क. मुह भाजवै गयो मछरीक ।

६ राव सलखौ*

गीत छोटौ सांणोर

वाहरुवां हुग्रै न कौ वैराई, घण वहस केकांणां धुग्रा ।
पोह फुटंत समी दे पर भूय, "सलख" लिया ताय सलख हुग्रा ।।१।।
दुजडां-हत्थे ग्रहे दस देसां, घड़ सबळी माचंतां घाय ।
कमळा भेट करै केवीहर, कप लोयै ज कनौजै राय ।।२।।
करै न कळह क्रमै जाय केवी, करै जियां करमाळ कर ।
"छाडा" हरौ कहै नह छांड़ू आथ संग्रवी जका यर ।।३।।
ऊगमण लगै सूर उछजियै, मिळै महादळ मच्छर मांण ।
तांणै वतलायौ "तीडावत", ढांणियां ताय ढीलवियै ढांण ।।४।।

(ग्रज्ञात)

१० राव वीरम॥

गीत

वटाऊ वात कहौ वीरमायण, जोखम दीह तणै जुडिया ।
पोरस वात सहु को पूछै, पैला केता रण पडिया ।।१ ।

शब्दार्थ—वाहरुवां – चोरों का पीछा करने वाला दळ, रक्षक । वैराई – शत्रु । पोह-फुटंत – प्रातःकाल होते ही । समी – समय, पर । पर-भुय – पराजय । दुजडां-हत्थे – खड्गधारी । घड़ – सेना । कमळा – लक्ष्मी । केवीहर – शत्रु वंशज, शत्रु । कळह – युद्ध । क्रमै – चलते है । केवी – शत्रु । करमाळ – तलवार । कर – हाथ । हरौ – वंशज । ऊगमण – पूर्व दिशा । उछजियै – उदय । वत – धन, द्रव्य, मवेशी ।

वटाऊ – राहगीर । वीरमायण – वीरम+ग्रयण – वीरम देव का चरित्र या वृतान्त । जोखम – ग्रापत्ति, कष्ट । दीह – दिन । जुड़िया – भिड़े, युद्ध किया । पोरस – पौरुष, बल, प्रराक्रम । सहु – सब । पैला – विपक्षी के, उस ग्रोर के । रण पड़िया – वीर गति प्राप्त हुए ।

---

*यह राव तीडा का छोटा पुत्र था । भीनमाल के चौहान शासक को पराजित कर वहां का बहुत सा माल लूट कर ग्रपने साथ ले ग्राया । इसी घटना के संबंध में किसी समकालीन कवि ने उपर्युक्त गीत की रचना की थी ।

॥यह राव सलखा का छोटा पुत्र था । वि. सं. १४४० में जोहियो से युद्ध करते हुए जोहियावाटी में लखवेरे के पास वीर-गति को प्राप्त हुग्रा । उक्त गीत में इसकी वीर गति प्राप्त होने का किसी समकालीन कवि ने वर्णन किया है ।

जुडिया "वीर" तणी जुग जांणै, दाखव पंथी देख दुयै ।
काळा सूं विढतां के वेळा, हांमै के हथवाह हुयै ।।२।।
"वीरम" सूं "देपाळ" विढंतां, अणी चढै नह ऊहवियौ ।
राव राठौड़ तणै रहंतै, राव जोइयां रिण रहियौ ।।३।।
विढण वखांण करै वाटाऊ, अेतौ जांणू आवडियौ ।
सत्रां सहेत महेवा सांमी, पाडी माझी रण पडियौ ।।४।।
(दूदौ बारहठ)

११ राव चूंडौ*

गीत पंखाळौ

चंडराव प्रवाडौ सुर चवीजै, दीजै यम लीजै यम देस ।
पंडर वेस पाड गढ पैठौ, पडियां पैठौ पंडर वेस ।।१।।
वारां बेहूं समोभ्रम वीरम, कह केतां जम कहतां कहेस ।
वह दुरवेस दुरंग कीधौ वस, दीधौ सौ वेही दरवेस ।।२।।
चहुँ चकै नव खंड चूंड-रज, परवाडांमल बहुँ पर ।
मेछां कहा दुरग मेछां रौ, मारै लीधौ दीधौ मर ।।३।।
(दूदौ बारहठ)

शब्दार्थ—वीर – वीरमदेव । दाखय – कह । विढंतां – युद्ध में भिड़ने पर । ऊहवियौ – बचा, जिवत रहा । रहंतै – रहने पर । विढण – युद्ध । वखांण – प्रशंसा । वाटाऊ – राहगीर । आवडियौ – (?) । महेवा – बाड़मेर के आस पास का भू प्रदेश जिसे आजकल मालानी भी कहते हैं । पाडी – मार कर । माझी – मुखिया, प्रधान । पडियौ – वीरगति को प्राप्त हुआ ।

चंड-राव – राव चूंडा । प्रवाडौ – युद्ध । सुर – देवता । चवीजै – कहा जाता है, वर्णन किया जाता है । पंडर-वेस – बादशाह, यवन । पैठौ – प्रविष्ट हुआ । पडियां – वीर गति प्राप्त होने पर । वारां – समय । बेहूं – दोनो । समोभ्रम – पुत्र । दुरवेस – बादशाह, यवन । कीधौ – किया । दीधौ – दिया । चहूंचकै – चारों दिशाओं में । चूंडरज – राव चूंडा । परवाडां-मल – योद्धा । मेछां – मुसलमानों । लीधौ – लिया ।

---

*राव चूंडा ने नागौर के यवन शासक से युद्ध करके नागौर को अपने अधिकार में कर लिया था परन्तु कुछ समय के बाद पूंगल के भाटियों और मुलतान के सेनानायक सलीम की सहायता प्राप्त कर यवन शासक ने पुनः राव चूंडा पर आक्रमण कर दियां । यहां पर पुंगल के भाटियों के धोखे से राव चूंडा युद्ध में वीर गति को प्राप्त हुआ । कवि ने उक्त घटना के संबंध में उपर्युक्त गीत की रचना की । यह घटना वि. सं. १४८० की है ।

१२ राव रिडमल*

गीत छोटौ सांणोर १

ग्रै पूरब वात सांभळी ग्रेही, रण चूकै ग्रत दिन "रयण" ।
सूतें तै काढी जै सुजडी, जागियां काढै घणा जण ।।१।।

ग्रत दिन चूक रचै मेवाडां, यम हल हुग्रै हुग्रै ऊखेळ ।
रिडमल तेथ कियौ रायां-गुर, मन भुजबळां कटारी मेळ ।।२।।

चूक हुग्रां के नर चीतारै, वाहै कई पडंतां वाढ ।
पौंढियां "रयण" ज्यूं प्रतमाळी, केथी कोय न सकियौ काढ ।।३।।

ग्रै ग्रखियात "सलख" हर ग्रोपम, ग्रगै न कोधी सुर ग्रसुर ।
कर सूतै मेलिया कटारी, ग्रणी ज फूटै प्रसण उर ।।४।।

ऊससै ग्राभ लगां ग्रावंतां, राव तणौ रज देख रथ ।
रैवंत रोक न रहियौ रांणौ, पुळिया विमुहा पाट पत ।।५।।

(चांनण खिडियौ)

शब्दार्थ—सांभळी – सुनी । ग्रेही – ऐसी । रयण – राव रिणमल । सुजडी – कटारी । चूक – धोखा, षडयंत्र । ऊखेळ – युद्ध । तेथ – वहां । रायां-गुर – महाराजा । चीतारै – स्मरण करते हैं । वाहै – प्रहार करते है । वाढ – धारदार शस्त्र । प्रतमाळी – कटारी । केथी – कहीं पर । ग्रखियात – ग्रद्भुत । ग्रोपम – उपमा शोभा । कीधी – की । सुर – देवता, हिंदू । ग्रसुर – यवन, राक्षस । प्रसण – शत्रु । ऊससै – जोश में ग्राकर । ग्राभ – ग्राकाश । रज – पराक्रम, शौर्य । रैवत – घोड़ा । रांणौ – सूर्य । पुळिया – चले गये । विमुहा – उलटे । पाट-पत – राजा ।

*राव रणमल को मारने हेतु वि. सं. १४९५ की कार्तिक वदि ३० की रात्रि में महाराणा कुंभा के व्यक्ति उसके शयनागार में पहुचे । उस समय वह घोर निद्रा में था । उसे निद्रा में सोते हुए को उन्होंने पलंग से बाध दिया ग्रौर वंधे हुए पर शस्त्र प्रहार करने लगे । वीर रणमल भी जिस पलंग से वंधा हुग्रा था उसको लेकर खड़ा हो गया ग्रौर विपक्षियों पर ग्रपनी कटार से प्रहार करने लगा । इस मारकाट के ग्रंदर वीर रणमल ने ग्रठारह व्यक्तियों को कटार से मार कर स्वयं भी वीर गति को प्राप्त हुग्रा ।

गीत संख्या (२) में ग्राये हुए व्यक्तियों की ठीक संख्या (१८) दी गई है ।

गीत छोटो सांणोर २

मोकाळिया "कूंभ रांण" "राव" मारण, अठारै अमराव अचूक।
लोह रडमाल अठारै लागां, भांज अठारै कीधा भूक ॥१॥

"चूंडा" सुतन लोहड़ां चवतां, यम उठियो ढोलियो उपाड।
पिंड नव दूण घाव पूरविया, प्रसण नव दूण दिया पछाड ॥२॥

कमधज कळह अकाळ कोपियो, सूतां सरस वजावै सार।
"वीरम" हरै अेकले वडतै, चवदै अनै मारिया च्यार ॥३॥

घावां घाव आहाडां घायै, विजडां बाढे चाढ धज-बंध।
लेगो सुरग वरै रंभ लारां, कमधज सारां करे कबंधे ॥४॥

रहसी अमर घणा जुग रिडमल, अै वातां जग सिर अणपार।
अंत दीह घावां रिण अरि हण, लीधां गयो आपरी लार ॥५॥

(अमरो बारहठ)

गीत छोटो सांणोर ३*

सिर संपत संग्रहे निहसे नित प्रत, करिमर नीप सहीयै करि।
रैवंत पूठि वसै ज इ रणमल, वास म गिण तई वैर हरि ॥१॥

शब्दार्थ—मोकळिया – भेजे। लोह – शस्त्र प्रहार। कीधा – किये। भूक – चूर चूर, नाश। लोहड़ां – शस्त्र प्रहारों। चवतां – अवते हुए। यम – इस प्रकार। पूरविया – पूरे हुए। प्रसण – शत्रु। सार – कटार। वडतै – कटने पर। आहाड़ां – सीसोदियों। घायै – मार कर। विजडां – कटारियां। बाढ – शस्त्र की धार। धजबंध – वीर। रंभ – अप्सरा। लारां – पीछे। कबंध – बिना शिर का धड़ राठौड। अण-पार – असीम। दीह – दिवस। लार – पीछे।

करिमरि – तलवार। नीप – (?)। साहीयै – धारण किए हुए। करि – हाथ में। रैवंत – घोडा। पूठि – पीठ पर। वैर-हरि – शत्रु वंशज।

---

*इस गीत में राव रणमल के शौर्य का वर्णन है।

कीजै "रयण" तणौ नित कुळ ऋत, वैरां ऊपरी वत्र अवत्र ।
जई अहोनिस दुहिला जंगम, सुहिला तइयां म गिणि सत्र ।।२।।

"सळखा" हरी समझौ सवदी, सेना ऊलि मेले सधर ।
घाए तइ ऊपाडै अरि घर, घोडै जइयां करै धर ।।३।।

सुजड-हथा "चांड राउ" समोभ्रम, विधि वीरातन वैर विधि ।
रोपै जई पवंगि आसण रिध, रिप तई भंजै राज रिधि ।।४।।

(अज्ञात)

१३ राव जोधौ*

गीत खुडद सांणोर

वह रांणा राव विवाद विवरजित,"जोध"कळह कथ जिका जुइ ।
वैरायतां तो वाळी भगवट, हव जांणै कुळवाट हुइ ।।१।।

मारग "वीरम" हर कुळ मंडण, मुडिया तो सूं नूभै-मण ।
मुडियां तणी हमै जळ मांझळ, परियां वट जांणै प्रसण ।।२।।

शब्दार्थ—रयण – रणमल । दुहिला – कठिन, कष्टमय । जंगम – घोडा । सुहिला – सुळभ, सुखप्रद । सत्र – शत्रु । सुजड हथा – खड्गधारी । समोभ्रम – पुत्र । पवंगि – घोड़े पर । रिध – अटल । रिधि – ऋद्धि ।

विवाद – वाक्‌युद्ध, झगड़ा । विवरजित – निषिद्ध मना । कळह – युद्ध । कथ – कथा, वार्ता । जिका – वह । जुइ – पृथक, भिन्न । वैरायतां – शत्रुओं । तो-वाली – तेरी । भगवट – भगना क्रिया । हव – अब । जांणै – मानो । कुळवाट – वंश का मार्ग । नूभै-यण – निर्भय मन वाले । परियां – पूर्वज । वट – मार्ग । प्रसण – शत्रु ।

---

*राव रणमल के चित्तौड़ में सीसोदियों द्वारा धोखे से मारे जाने के कारण राव जोधा को मेवाड छोड़ कर मारवाड़ की ओर भागना पड़ा । राजपूत वीरों के लिये पलायन अशुभ तथा कायरता की निशानी समझा जाता है । इस पलायन का राव जोधा के हृदय में बड़ा क्षोभ बना रहता था । इस क्षोभ को मिटाने हेतु किसी समकालीन कवि ने उपर्युक्त गीत रच कर राव जोधा को सुनाया था ।

इसी भाव का गीत महाराणा सांगा को भी बारहठ जमणाजी ने सुनाया था ।

(देखो महाराणा यश प्रकाश पृ. ७०)

सुजड वहंतां "रयण" सभोभ्रम, अंतर किम दीसै अकळ ।
कुळ छळ थायां हमै केवियां, छांडवा संग्रांम छळ ।।३।।
प्रब प्रब "जोध" प्रसण पडियालग, निहसंतां रण भड निवड ।
लगै जकां बापीकी लाधी, भू भांजेवा प्रसण भड ।।४।।
जोयौ आज तूझ वड जोधा, धीर अखाडै खडग धर ।
न रहियौ सत्र हर अरण नमियौ, नमिया चहरणहार नर ।।५।।
(महम्मदजी बारहठ)

गीत पंखाळौ २*

गह रांणा कसूमन दाखै गढौ, थाट "कूंभक्रन" वाट थया ।
"जोधा" तणै सांमहां जाता, गाडां भय हाथियां गया ।।१।।
सांमौ "जोध" तणै सै जूतै, साझी सलह सजतै सैण ।
थय कुंजर विमुहां कुंभाथळ, कागमुहा दीठां "कूंभेण" ।।२।।
धर खेहां छाई "धुहडियै", खेडैचे अस खेडिया ।
नर हैमर नागंद्र नरेसुर गैमर गाडा देख गया ।।३।।
(गेहो खिडियौ)

शब्दार्थ—सुजड – कटार, तलवार । रयण – राव रणमल । सभोभ्रम – पुत्र । अकळ – वीर । छळ – कर्त्तव्य । हमै – अब । केवियां – शत्रुओं । छळ – कीर्ति, मर्यादा । प्रब – पर्व, अवसर, युद्ध । पडियालग – तलवार । निहसंतां – संहार करते हुए । निवड – जबरदस्त । बापीकी – बपौती । लाधी – प्राप्त हुई । धीर – धैर्यवान । अखाडै – युद्ध, युद्धस्थल । सत्र – शत्रु । हर – वंशज । अरणनमियौ – बिना झुका हुआ । चहरणहार – आलोचना करने वाला, निंदा करने वाला ।

दाखै – कहता है । थाट – सेना । सांमौ – सम्मुख । सलह – सिलह । कागमुहा – शकट, गाडा । धूहडियै – राव धूहड़ का वंशज. राव जोधा । हैमर – घोडा । नागंद्र – नागदहा । गैमर – हाथी ।

---

*ख्यातों के अनुसार राव जोधा ने मेवाड़ पर आक्रमण करने हेतु एक बड़ी सेना तैयार कर ली थी । परन्तु उतने घोड़े तैयार नहीं हो सके जितनों की आवश्यकता थी । अतः राव जोधा अपने सिपाहियों को गाडियों में बैठा कर ले गया । महाराणा के पास काफी बड़ी सेना थी जिसमें हाथी-घोड़े भी थे, परन्तु राव जोधा की गाड़ियों में भरे सिपाहियों की सेना देख कर महाराणा के योद्धा घबरा गये और राव जोधा से संधि करली । उक्त घटना से संबंधित उपर्युक्त गीत गेहा कवि ने रचा था ।

१४ राव सूजौ*

गीत प्रहास साँणोर

तुरक चालियौ वासदे विध मरणवा त्रियां, देस छळ जाग रिडमाल दूजा ।
भाईयां सरसी वार "सातल" भणौं, समर भर झाल राठौड "सूजा" ।।१।।

सुर नरां साह अवगाह सारां सरै, घाततौ घांण घमसांण घेरै ।
रोद दळ झाडतौ पाड़तौ खाग रिम, डांण भर गयौ सुरतांण डेरै ।।२।।

सारसा "दूद" सत्रसाल परगह सहत, जोध रा जोध अणपाल जुडिया ।
सूर पड ऊपडै सरै आंन म सगत, मुग्गळां थाट दहवाट मुड़िया ।।३।।
(पातौ बारहठ)

शब्दार्थ—वासदे – अग्नि आग । विध – प्रकार, तरह । त्रियां – वहां । छळ – लिए । दूजा – द्वितीय, वंशज । सरसी – समान । वार – वेला, समय । समर – युद्ध । भर – भार, उत्तरदायित्व । अवगाह – युद्ध । घाततौ – डालता हुआ । घांण – संहार । घमसांण – सेना । रोद – यवन । झाडतौ – काटता हुआ । पाड़तौ – मारता हुआ । रिम – शत्रु । डांण – कूदना, छलांग । सारसा – समान । दूद – राव दूदा राठौड़ । परगह – परिग्रह । जोध – राव जोधा । जोध – पुत्र । अणपाल – निशंक, निर्भय । जुड़िया – भिड़े । थाट – सेना । दहवाट – दशों दिशाओं में, तितर-बितर ।

---

*राव सातल का छोटा भाई वरसिंह मेड़ते में शासक था । उसने वहां से चढ़ कर सांभर को लूटा । इस पर अजमेर का तत्कालीन सूबेदार मलिक युसुफ (मल्लु खां) सिरियां खां और मीर घडूला को साथ लेकर ससैन्य मेड़ते पर चढ आया । तब वरसिंह और दूदा दोनों भाग कर जोधपुर में राव सातल के पास पहुंचे । पीछे-पीछे यवन सेना भी आई और जोधपुर राज्य में लूट खसोट करती हुई पीपाड़ से तीजणियों को पकड़ कर ले गई । राव सातल भी चुपचाप बैठा न रहा । वरसिंह दूदा सूजा वरजांग आदि को साथ लेकर ससैन्य कोसाणा में पहुंच कर रात्रि में यवन सेना पर आक्रमण बोल दिया । दूदा ने सिरियाखां का हाथी छीन लिया और राव सातल ने बड़ी वीरता से युद्ध कर मीर घडूला को मार डाला तथा तीजणियों को छुडवा लिया । यवन सेना भाग छूटी ।

इस युद्ध में गीत नायक वीर सूजा भी अपने भाई के साथ था और युद्ध में बड़ी बहादुरी दिखाई जैसा की गीत में वर्णन है ।

(यह घटना वि. सं. १५४७, ४८ की है)

१५ कुंवर वाघो*

गीत पंखाळो १

निस महल नह पौढै प्रसण निचिता, विमरे गिरे बसाव किया ।
वंस तणौ उंडाव वीडरै, सीसोदा बकरा संकिया ।।१।।
सांकै राव सको सीरोही, पोहरा कुंभळमेर पडै ।
सत्र तोसूं समहर "सूजावत", चाळ-बंध नह कोय चढै ।।२।।
'जोधा' हरै खेडिया जंगम, यर खग झाल लियै न उसास ।
ग्राहडा पहाडां चढ ओद्रकै, विमरे गिरे मांडिया वास ।।३।।
(मेपौ-बारहठ)

गीत छोटौ सांणोर** २

नर दूजां दसो नयण नरखेवा, लोपै अन न मांडै लाग ।
सुजड़ां तणै सूंस सूजावत, वसुधा जु तै करावी "वाग" ।।१।।
त्रां सी है अन पोहां दिस "वाघा" दीठा दयंता लागै दोस ।
खांडा तणै वसुधा बळ खंडां, कमधज जतै करावी कोस ।।२।।
सूरजमल संभ्रम नव-सहसा, रावां बियां अकूप रहै ।
धजवड तणै देव चै धरती, "वाघा" सूं पाधरी वहै ।।३।।

शब्दार्थ—प्रसण – शत्रु । निचिता – निश्चिंत । विमरै – विवरे, गुफाएं । गिरै – पहाड़ों में । वसाव – निवास । सत्र-शत्रु । समहर – युद्ध । सूजावत – सूजा का पुत्र, कुमार-वाघा । चाळ-बंध – युद्ध । खेडिया – चलाये । जंगम – घोड़े । यर-अरि – शत्रु । उसास – श्वास । ग्राहडा – सीसोदिया वंश का । ओद्रकै – भय भीत होते हैं । मांडिया – बनाये । वास – निवास स्थान ।

सुजड़ां – कटारों, शस्त्रों । सूंस – शपथ । अन – अन्य । पोहां – राजाओं । वसुधा – पृथ्वी । संभ्रम – पुत्र । नव-सहसा – राठौड़ । बियां – दूसरों ।

---

*यह राव सूजा का ज्येष्ठ कुमार था । वि. सं. १५६७ में महाराणा सांगा ने मारवाड़ में सोजत पर अधिकार करने के लिए सेना भेजी थी, उस समय कुमार वाघा ने अपने पिता की आज्ञा से महाराणा सांगा की सेना का मुकाबिला किया और उन्हें पराजित कर भगा दिया । उक्त घटना की ओर संकेत करते हुए कवि ने वाघा के शौर्य का वर्णन उपर्युक्त गीत में किया है ।

**इस गीत में कुमार वाघा के शौर्य का ही वर्णन है ।

विलसणहार वींद तूं वाघा, मन तो सरस "सलख" हर मोड़ ।
रैणा तै न ... ... में राखी, रावां अन हूंता राठौड़ ।।४।।

जुडिया वीर तणी पूछै जग, दाख न पंथी वात दुई ।
काळै मरतै सु केवीलां, हीमत की हतवाह हुई ।।५।।

१६ राव गांगौ*

गीत छोटो सांणोर

घड हसत म जोड म बंध वीर घंट, ढुळवायै म ... ढाल ।
मांडू कटक नहीं मेवाडा, मंडोवर औ अै रिडमाल ।।१।।

"रतना" म कर सनाह सिंधुरां, डांफर मतो कर आडंबर ।
बीहै तिकै जिकै घर बीजा, रांणां अै राठौड हर ।।२।।

शब्दार्थ—विलसण-हार – उपभोग करने वाला । वींद – दुल्हा, पति । सलख हर – राव सलखा का वंशज । रैणा – पृथ्वी । दाख – कह । काळै – वीर

घड-घटा – सेना । हस्त – हस्ती, हाथी । जोड – तैयार कर । सनाह – कवच, पाखर । सिंधुरां – हाथियों । डांफर – बाह्य ठाट-बाट, तैयारी । आडंबर – युद्ध घोषणा । बीहै – डरते हैं । हर – वंशज ।

---

*राव गांगा की सेना ने महाराणा रतनसिंह की सेना को परास्त कर दिया था । उक्त घटना से संबंधित उपर्युक्त गीत है । घटना का वृत्तांत इस प्रकार है ।

वीरमदेव राव गांगा का ज्येष्ठ भ्राता था । अतः राज्य का अधिकारी था परन्तु कारणवश सामंतों ने गांगा का पक्ष लिया और उसे जोधपुर के सिंहासन पर बैठा दिया । इस पर वीरम के पक्ष वालों ने वीरम का अधिकार सोजत पर करवा दिया, अतः वीरम सोजत का पृथक शासक बन गया । वि. सं. १५८७ में होली के अवसर पर जिस समय धौलेराव की चौकी के सरदारगण अपनी-अपनी जागीर के गांवों में गये हुए थे तब वीरम के पक्ष वालों ने आक्रमण कर उस चौकी को लूट लिया । इसका संदेश प्राप्त होते ही वि. सं. १५८८ में स्वयं राव गांगा ने राजकुमार मालदेव को साथ लेकर सोजत पर आक्रमण बोल दिया और वीरम को सोजत से निकाल दिया । विवश होकर वीरम ने तत्कालीन महाराणा रतनसिंह से सहायतार्थ प्रार्थना की जो रिश्ते में वीरम के साले लगते थे । महाराणा ने वीरम की सहायतार्थ बड़ी सेना भेजी । इधर राव गांगा ने भी मुकाबले में बड़ी सेना भेजी । दोनों पक्षों में घमासान युद्ध हुआ । महाराणा की सेना पराजित हुई । राव गांगा ने इस पर मेवाड़ वालों से गोडवाड़ का प्रदेश भी छीन लिया ।

भिड़ते नयर "रयणतै" भिळिया, आहव ग्रै आगा असुर ।
ग्रै बंगाळ नहीं बांणालख, ग्रै जोधा ग्रो जोधपुर ।।३।।
"सांगा" "गांगा" राव सरीखो, रांणा अमळी वात म रोड़ ।
लेय सजकै लेहरी लह्तो, लेसी अठै न बीजी लोड़ ।।४।।
गढ जोधपुर गरजियो 'गांगो', 'वाघ' समोभ्रम वाघ वर ।
सांमू हुई समझे सीसोदो, घाटो लांगे गयो घर ।।५।।

(तेजसी बारहठ)

१७ राव मालदेव*

गीत प्रहास सांणोर १

मुडै माळवी आज चीतोड मचकोडतै, छात री छांह रिण-थंभ छायो ।
ढेलडी ढगमगी कोट गढ धूजिया, आगरो बियै ग्रो "माल" आयो ।।१।।
हैमरां गैमरां हुग्रै हीसा-रवण, चासटू ऊपरा "माल" चडियो ।
गौड बंगाळ खुरसांण दळ गंजणो, पालटै कोट भग-वाट पड़ियो ।।२।।
हसम है थट होय हेकटा हालिया, धोम ग्रंधार मिळ वाजतै धात्र ।
सांकिया देस सुरतांण सह सांकिया, रीत ग्रण ग्रावतां मारुवै-राव ।।३।।
धार उजैण चांपवतां धूणिया, सकज "गांगा" तणो दीह साजै ।
हैम सूं धरा हैकंप ऊली हुई, भोम पूरव गया गयालेर भाजै ।।४।।

(ग्रज्ञात)

शब्दार्थ—ग्राख – युद्ध । बंगाळ – यवन । बांणालख – मालवा प्रदेश । जोधा – राव जोधा के वंशज । सरीखो – समान, सदृश । ग्रवळी – बांकुरी, विकट । लेसी – लेगा । लोड़ – लूट कर । समोभ्रम – पुत्र । घाटो – ग्ररावली पर्वत । लांघे – उलंघन कर के ।

मचकोडतै – भयभीत होने पर, दबने पर । छात – छत्र । छांह – छाया । रिण-थंभ – रण-थंभोर । छायो – ग्राच्छादित हुग्रा । ढेलडी – दिल्ली । ढगमगी – विचलित हुई । बियै – डरता है । हैमरां-हयवरां – घोड़ों । गैमरां-गजवरां – हाथियों । हीसा-रवण – हिनहिनाहट की ध्वनि । गंजणो – पराजित करने वाला । भगवाट – भगदड़ । हसम – सेना । हैथाट – ग्रश्व दल । हेकटा – एकत्रित । हालिया – चले । सांकिया – भयभीत हुए । मारुवै-राव – मारवाड़ के राजा । दीह – दिवस । साजै – कुशल । हैम – हिमाचल पर्वत, या सुमेरु पर्वत । हैकंप – भयभीत । ऊली – इस ग्रोर की ।

---

*गीत में राव मालदेव के शौर्य का ग्रतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन है ।

गीत छोटौ सांणोर २*

कसा जतन कोट करो पमंग काय पाखरी, ढोव कर हिंदवा-कटक ढूका ।
सुणै सुरतांण यम कहै साहजादियां, "माल" भय पूगडै पीर मूका ।।१।।

पुणै जोगण-पुरी गुजरी पारखौ, गूडर गोखै चढी गयण छायौ ।
बीबियां आंचळै छोडिया बाळकै, ईख सुरतांण गढ "माल" आयौ ।।२।।

आवियौ 'गंग' ऊत कहै घरण ऊसरां, इसी दीवांण गहवात आई ।
पौढ पैसै बचा दूध पीवै नहीं, पीड पहु ओहरै बोल पाई ।।३।।

जळवटी थळवटी "माल" जीता जुडै, मेंछ यर मारिया देस मांही ।
गोरियां डाभरू गात गाळिया गळण, नीसरै कांहां लै ठौड नांही ।।४।।

गीत छोटौ सांणोर ३ॐ

त्रण वरसां सरीस विखौ तुरकांणां, रहचै थांणा रुद्र···रज ।
"माले" वळै आपरा महलां, गांगावत बांधिया गज ।।१।।

करतै कळह इळाचै कारण, खेसे असुरां जोस खरे ।
असपत प्रगट आपांणै······, हाथी बाधा जोध हरै ।।२।।

शब्दार्थ—कसा – कैसे । जतन – यत्न, रक्षा । पमंग – घोड़ा । पाखरी – घोड़ों पर कवच सजाते हो । ढोव – आक्रमण । ढूका – पहुंच गये । यम – इस प्रकार । पूगडै – शाहजादे । मूका – छोड दिये । पुणै – कहती है । जोगण-पुरी – दिल्ली । पारखो – परीक्षा करो । गूडर – (?) । गयण – आकाश । आंचळै – आंचल से, स्तन से । ईख – देख । गंग-ऊत – राव गांगा का पुत्र । ऊसरां – असुरों, यवनों । घरण – स्त्री । इसी – ऐसी । दीवांण – स्वामी, अधिपति । गह – गंभीर । पहू – (?) । ओहरै – (?) । जळवटी – द्वीप । थळवटी – मरुस्थल, रेगिस्तान । मेछ – म्लेच्छ, यवन । यर – अरि, शत्रु । डाभरू – डिम्ब, बच्चा । ठौड – स्थान ।

त्रण – तीन । विखौ – संकट के दिन । रहचै – ध्वस्त किये । वळै – फिर, पुनः । गांगावत – गांगा का पुत्र । गज – हाथी । कळह – युद्ध । इळाचै – पृथ्वी, पृथ्वी के । खेसे – छीन लिये, पराजित किये । असपत – बादशाह ।

---

*इस गीत में भी मालदेव के आतंक और शौर्य का ही वर्णन है ।

ॐइस गीत में वर्णित इतिहास ठीक प्राप्त नहीं हुआ । संभव है नागोर के शासक दौलतखां के हाथी छीन लिए हों, क्योंकि दौलतखां पराजित होकर भाग गया था ।

राव राठोड रैंण थिर राखण, उथल्ल थांणा चढै उर ।
पतसाहां मालम जुध पूरै, पट-झर बाधा जोधपुर ।।३।।
किलमां घड़ा विधूंस करंतै, धर कारण रचतै धकचाळ ।
"सलख" हरै सांकळ सांकळिया, सात खणा आगळ सूंडाळ ।।४।।
(द्वारकादास आसियौ)

गीत सावझडो ४*

भगे खांन नागौर अजमेर गौ भाखरां, ऊतरै मेछ खागां मुहिं ऊंबरा ।
किलभणी गात काढै गढां कांगुरां, पसरदे 'मालदे' विरोळै पाखरां ।।१।।
झालतै तेजियां पखर रिमझोलियां, गणण नळियार हद हवाई गोळियां ।
चढै गढ बीवडी हाथ कर चोळियां, पाडियौ मेछ नागौर री पौळियां ।।२।।
पहरियां जरद ताऊसर पाळियां, जूंजवा गात देखाळती जाळियां ।
मारिया मेछ दळ आगळी माळियां, जोइयौ माल राव बीबियां जाळियां ।।३।।
सिवा जंवक किया त्रपत पळ साबळां, वींट नागौर गढ फेरि चहुंवैवळां ।
आंवळै मीर घड़ वळै आलूमलां, पछटिया माल-राव मेछ दळ प्राघळां ।।४।।
(अज्ञात)

शब्दार्थ—रैंण – पृथ्वी । थिर – स्थिर, अटल । उथल्ल – उलट पलट । थांणा – चौकियों । पट-झर – हाथी । किलमां – यवनों । घड़ा – सेना । विधूंस – विध्वंस धर – धरा, पृथ्वी । धकचाळ – युद्ध । सलख – राव सलखा । हरै – वंशज । सांकळ – शृंखला, जंजीर । सांकळिया – जंजीरों से बांध लिये । सात-खणा – सात मंजिल के भवन । आगळ – अगाड़ी । सूंडाळ – हाथी ।

किलमणी – यवन स्त्री । विरोळै – नष्ट करता है । पाखरां – कवचों (हाथी, या घोड़ा) झालते – पकड़ते, पकड़ते हुए । तेजियां – घोड़ों । रिमझोलियां – ध्वनिमान होते हुए । नळियार – बंदूक, तोपादि । गणण – ध्वनि । बीवडी – बीबी । पाडियौ – गिरा दिया । पौळियां – दरवाजों पर । पहरियां – धारण किए हुए । जरद – कवच । जूजवा – पृथक । देखाळती – दिखाती है । जाळियां – झरोखों । आगळी – अगाड़ी । माळियां – छोटे महल । सिवा – शृंगाली । जंबक – शृगाल । पळ – मांस । वींट – घेर कर । चहुंवै वळां – चारों ओर । प्राघळां – पुशकल, बहुत, अपार ।

---

*राव मालदेव ने नागौर के खांनजादा के दीवान दौलतखां से वि. सं. १५९२ में युद्ध किया था । युद्ध में दौलतखां पराजित होकर भाग गया । उक्त युद्ध के वर्णन का उपर्युक्त गीत ख्यात में मिला है ।

गीत छोटो सांणोर ५*

सांकै मत समंद सहस फरा मम संक, गण मत जोखौ लंक गिर ।
राव मालदे सबळ दळ रूठै, सझिया कुंभळमेर सिर ॥१॥

कांप म ऊवह डरप म काळी, कर न सोनगिर आकंप काय ।
मेद-पाट सर "माल" मछरियै, रचिया है थट-मारू राय ॥२॥

सिंध म झळझळ चळचळा म म स्रप, चळ त्रिकूट मम रह अचळ ।
कीधा नव-सहसै राय कोअण, दस सहंसा ऊपरै दळ ॥३॥

शब्दार्थ—सहस-फरा – शेष नाग । संक – भयभीत हो । गरा – समझ, मान । जोखौ – हानि, नुकसान । सोनगिर – लंका । आकंप – भययुक्त । मेद-पाट – मेवाड़ । मछरियै – कोप करने पर । है-थट – घुड़ सेना । मारू-राय – राठौड़ राजा । सिंध – समुद्र । झळझळ – विलोड़ित होने की अवस्था । चळचळ – चलायमान होने की क्रिया । स्रप – सर्प, शेष नाग । त्रिकूट – लंका गढ़ । कीधा – किये । नव सहसै – राठौड़ । कोअण – (?) । दस सहेसा – सीसोदिया वंश का क्षत्रिय ।

---

*राव मालदेव का एक विवाह खैरवा के जागीरदार झाला राजपूत जैतसिंह (मतान्तर तेजसिंह) की कन्या स्वरूपदेवी के साथ हुआ था । यह झाली राणी अत्यन्त रूपवती और गुणवती थी । इसकी छोटी बहन इससे भी अधिक रूपवती थी । रावजी ने जैतसिंह से उसकी छोटी पुत्री से भी पाणिग्रहण करने की इच्छा प्रकट की ।

झाला जैतसिंह का विचार उस कन्या को महाराणा उदयसिंह को देने का था जिससे उसने दो मास की अवधि चाही । राव मालदेव ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर दो मास की अवधि दे दी । जैतसिंह के मन में कपट था ही, उसने खैरवा छोड़ दिया और कूंपलमेरगढ़ के पास गुढ़ा नामक ग्राम में जाकर रह गया और अपनी दूसरी कन्या का विवाह महाराणा उदयसिंह के साथ कर दिया ।

जब यह संदेश राव मालदेव को मिला तो वे अत्यन्त कुपित हुए और महाराणा पर सेना भेज दी । महाराणा की सेना भी मुकाबले के लिए आई । गोढ-वाड़ में भयंकर युद्ध हुआ । महाराणा की सेना पराजित हो कर भाग गई और गोढवाड़ पर राव मालदेव का अधिकार हो गया । राव मालदेव ने गोढवाड़ में अपना थाना बैठा दिया । इस घटना से संबंधित उपर्युक्त गीत है जिसमें राव मालदेव के पराक्रम का वर्णन् है ।

रे मथियळ रे नथियळ थिर रहि, थरक म कनक-कोट थिर थाव ।
गांगावत गांजियै न गांजै, गांजै राव अगंजिया गाव ।।४।।

१८ राव चंद्रसेण*

गीत वेलियौ सांणोर

अणदगिया तुरी ऊजळा असमर, चाकर रहण न डिगियौ चित ।
सारै हिंदुसथांन तणै सिर, "पातल" नै चंद्रसेण प्रवीत ।।१।।

पमंग अदग अदग पडियाळग, खरहंड तणी न लागी खेह ।
रांण "उदैसी" तणौ अरेहण, राव "मालदे" तणौ अणरेह ।।२।।

तुरियै विगत खत्रीवट अजडै, असपत दळ रहिया अगिण ।
कळंक विना "कुंभेण" कळोधर, "वाघ" कळोधर कळंक बिण ।।३।।

असत्रां लाड साह घर असमर, दियौ न दुहवै हीणौ दाव ।
रवि सिरखौ मेवाड़ौ रांणौ, रवि सिरखौ जोधपुरौ राव ।।४।।

(दुरसौ आढौ)

शब्दार्थ—मथियळ – जो मथा गया हो, समुद्र । नथियळ – जिसके नाथ डाली गई हो । काली नाग – शेष नाग । थरक – डर । कनक-कोट – लंका । थिर – स्थिर । थाव – हो । गांगावत – गांगा का पुत्र । गांजियै – पराजित किए हुए । गांजै – पराजित करता है । अगंजियां – जो पराजित नहीं हुए हैं ।

अणदगिया – बिना दाग वाले । तुरी – घोड़ा । असमर – तलवार । डिगियौ – डिगा । चीत – चित । प्रवीत – पवित्र । पमंग – घोड़ा । अदग – दाग रहित । पडियाळग – तलवार । खरहंड – सेना । खेह – धूलि, रज । तणौ – तनय – पुत्र । तुरिय – घोड़ों ; विगत – (?) । खत्रीवट – क्षत्रियत्व । अजडे – तलवारों । असपत – बादशाह । अगिण – (?) । कुंभेण – महाराणा कूंभा । कळोधर – वंशज । असत्र – अस्त्र, शस्त्र । लाड – प्यार । साह – बादशाह । असमर – तलवार । दुहवै – दोनों । हीणौ – कायर, कमजोर । दाव – वचन । रवि – सूर्य । सिरखौ – समान ।

*इस गीत में चन्द्रसेन के साथ ही महाराणा प्रताप की भी प्रशंसा की गई है ।

१६ रायसिंह*

गीत पंखाळो

धन धन सुत "चंद" वाहतां धजवड, हूबता अरि मोरै उर हूंत ।
ऊकसता धसता ओल्हरता, कसता वरण विकसता कूंत ॥१॥

राउ वणाव वदै धन "रासा", मारि मारि कहि करता मार ।
लोह दुसर वड बडता चढता, पड़ चड़ करत सेलड़ा पार ॥२॥

रिम ऊझेल झेलता "रासा" थाट थिडंब ठेलता अठेल ।
धन नर निडर निहसता धसता, सौसर कहर पहरता सेल ॥३॥

२० महाराजा सूरसिंह

गीत छोटौ सांणोर[a] १

कूर-खेत सिर कटक कळहलिया, निसांणै धुवतै निहंग ।
अरजण अरथ चढै रथ ऊरर, राजा चढै कलाल रंग ॥१॥

शब्दार्थ—धन धन – धन्य-धन्य । चंद – राव चंद्रसेण । वाहता – प्रहार करते हुए । धजवड – तलवार । हूबता – युद्ध करता । अरि – शत्रु । मोरै – अगाडी । हूंत – से । ऊकसता – ऊंचा उठा हुआ । ओल्हरता – (?) । कसता – (?) । विकसा – चमकता हुआ । कूंत – भाला । वणाव – सजधज, तयारी । वदै – कहते हैं । धन – धन्य । रासा – रायसिंह । लोह – शस्त्र । दुसर – दो धार वाला । सेलड़ा – भाला । रिम – शत्रु । ऊझेल – प्रहार झेलता, सहन करता हुआ । थाट – सेना । थिडंब – समूह । ठेलता – धकेलता हुआ । अठेल – न धकेला जा सके ऐसा, जबरदस्त । निहसता – मारता हुआ । सौसर – (?) । कहर – भयंकर । सेल – भाला ।

कटक – सेना, दल । कळहळिया – (?) । नीसांणै – नगाडे । धुवतै – ध्वनिमान होते हुए । निहंग – आकाश । कलाल-रंग – (?) ।

---

*रायसिंह राव चंद्रसेण का ज्येष्ठ पुत्र था । वि. सं. १६३६ में यह सोजत में राव की पदवी धारण कर राज्य सिंहासन पर बैठा । वि. सं. १६४० में प्रसिद्ध "दतांणी" के युद्ध में महाराणा प्रताप के छोटे भाई जगमल के साथ सिरोही की सेना द्वारा अचानक रात्रि में निद्रावस्था में घिर जाने से युद्ध करते हुए वीर गति को प्राप्त हुआ । उपर्युक्त गीत में राव रायसिंह के युद्ध कौशल का वर्णन है ।

[a]इस गीत का संदर्भपूर्वक इतिवृत्त प्राप्त नहीं हुआ ।

वरिणयां कर सिर सत्रां वळकता, पळका दव विच गढुता पाव ।
दांमण जिहां भळकता दीठा, रेंवत नै जोधपुरो राव ।।२।।

पांडवां जहीं किता पळ खंडिया, विहरै हाड विजू-जळ वाह ।
सहुग्रां सिर महुओ सूरजमल, मेल्यौ मेछ तणौ दळ माह ।।३।।

तैं एकठा कीया "ऊदा" तण, रत मैंगळा ··· ··· मद ।
हरडां तणा पाव वणिया हद, हींदू धावां वाह विहद ।।४।।

दस दैसोत भांज हेकण दिन, "माल" कुळोधर माभी मार ।
ग्रस लसकरां हूवो उप्रवट, ग्राडै-ग्रांक हुओ ग्रसवार ।।५।।

(ग्रज्ञात)

गीत सांणोर २*

दिली "सूरसा" सेत-बंध डोहतै, वप वणै सार मे स्वेत वागै ।
लाल ढालां मही भोकते लोहडा, लाल भालौ कियौ ग्राभ लागै ।।१।।

उजळै वंस छळ सिलह जड उजळी, उजळा विरद सोहै ज तू ग्रंग ।
चोळ साबळ कियौ चोळ ग्रस चकव तो, गयण छिबतौ वहै ग्रभनमौ "गंग" ।।२।।

कांम पतसाह रै जरद भळहळ कियां, सेल सींदूरियौ सजै जगीस ।
पवंग सींदूर व्रन चाढतां पट-हथां "सूरै" सूर-मंडळ नांमियौ सीस ।।३।।

शब्दार्थ—पळका – चमक । दांमण – दामिनी, बिजली । भळकता – चमकते हुए । दीठा – देखे । रेंवत – घोड़ा । जोधपुरो-राव – जोधपुर का राजा । विहरै – विदीर्ण किए । विजू-जळ – तलवार । वाह – प्रहार । सहुग्रां – सब । महुग्रो – ? हरडां – घोड़ों । ग्रस – घोड़ा । उप्रवट – विशेष, ग्रधिक ।

वप – वपु, शरीर । सार – ग्रस्त्र शस्त्र । वागै – पोशाक । भोकतै – भोंकते । लोहडा – ग्रस्त्र शस्त्रों । ग्राभ – ग्राकाश । छळ – युद्ध । सिलह – कवच । जड – धारण करके । विरद – विरुद, यश । चोळ – लाल । ग्रस – घोड़ा । चकव – राजा । गयण – ग्राकाश । छिबतौ – स्पर्श करता हुग्रा । ग्रभनमौ – वंशज । गंग – राव गांगा । जरद – कवच । भळहळ – चमक युक्त । सींदूरियौ – लाल । जगीस – युद्ध । पवंग – घोड़ा । व्रन – रंग । पट हथां – योद्धाग्रों ?

*उपर्युक्त गीत नं० २ महाराजा के किसी दक्षिण-युद्ध-संबंधी है ।

ज़ैत-हथ लडे दखणाध लीधौ जरू, साह छळ सेल रंग वधै मन सोय ।
"ऊद" उत किया तै इता रंग एकठा, ढाल रँग ऊपरा लाल रँग ढोय ।।४।।
(मालौ सांदू)

गीत वडोसांणोर ३*

मनै सेज ऊतारिया महल सुख माळिया, मछर मछरीक मेले मछर-मांण ।
"सूर" भय ताहरै कमंध ग्राखाड सिध, साथरै पाथरै सुये "सुरतांण" ।।१।।
झंगरै डूंगरै खोहळै झलंतौ, नवड कमधज जतू ग्रनड नडिया ।
"ऊद" उत तूझ भय "भांण" उत ग्रहोनिस, जोगियै पोढणै जंद जुडिया ।।२।।
"मालदे" दूसरा तूझ भय कांध मल, जीव हातळ हरण हियैज कियै ।
केवियां देवड़ै किया घर कंदरै, तन हरण ग्रतीतां तणा तकियै ।।३।।
मार जुध सार भय सिवपुरी मनायै, ईखतां ग्रवर कोई ठौड़ ग्रोढै ।
सुख करै सौड पौढै नकूं सिवपुरी, पांण तज सौड सिव-ढांण पौढै ।।४।।
(दुरसौ ग्राढौ)

शब्दार्थ—दखणाद – दक्षिण । साह – बादशाह ।

माळिया – छोटा महल । मछर – कोप । मछरीक – चौहान । मेले – छोड कर । मछर – गर्व । मांण – मान, प्रतिष्ठा । ताहरे – तेरे । कमंध – राठौड़ । ग्राखाड-सिध – वीर, योद्धा । साथरै पाथरै – घास के बिछौने पर । झंगरै – झाडी में, डूंगरै – पर्वतों में । खोहळै – कंदरा में । नवड – नहीं झुकने वाला । ग्रनड – वीर । नडियां – बंधन में डाल दिये । ऊद – उदयसिंह । उत – पुत्र । ग्रहोनिस – रात दिन । पोढणै – शयन करने के स्थान पर । कांधमल – वीर । केवियां – शत्रुग्रों । देवडै – देवड़ा शाखा का चौहान । कंदरै – गुफाग्रों में । तकियै – तकिया । सिव-पुरी – सिरोही । ईखतां – देखने पर । ग्रवर – ग्रपर, ग्रन्य । ठौड – स्थान । ग्रोढै – विकट । सौड ? । पांण – प्राण, बल, शक्ति । सिव-ढांण – शिव-स्थान, शिव के रहने का स्थान, श्मशान भूमि, या कंदरा । पौढै – शयन करते हैं ।

---

*पहले लिख ग्राए हैं कि दताणी के युद्ध में राव रायसिंह का वध सिरोही वालों ने किया था । वि. सं. १६६६ में बादशाह के बुलाने पर राजा सूरसिंह दक्षिण से लौटते हुए सिरोही के गांव पाडली में पहुँचे । यहां पर सूरसिंहजी को राव रायसिंह को सिरोही वालों द्वारा मारे जाने की घटना स्मरण ग्राई । उन्होंने सिरोही के तत्कालीन राव राजसिंह से ग्रपना पुराना बदला लेना चाहा । राव राजसिंह ने भयभीत होकर ग्रपने छोटे भाई की कन्या का राजकुमार गजसिंह के साथ विवाह कर दिया । उक्त घटना संबंधी उपर्युक्त गीत है जिस में महाराजा सूरसिंह के पराक्रम तथा शौर्य का वर्णन है ।

२१ महाराजा गजसिंह*

गीत सोहणो १

गंगा तट कमळ खळां गज-बंध, थाहर थाहर गंज थिया ।
देवळ देवळ हार दीपावै, कासी सिव सिणगार किया ।।१।।

भागीरथी तणै तट भारथ, यर धड़ वेहड कीध अचंभ ।
महादेव हड़हड़ते माथै, थांन थांन रचिया दळ-थंभ ।।२।।

"सूर" तणो सुरसरी तणै सर, मांनव विहंडिया वजावै मार ।
रण रेखग भेळा कर रचिया, सिव घर घर सिवपुरी सिणगार ।।३।।

मारे घणा चाढिया माथा, त्रिजड विकट तट गंग तणी ।
राजा जिम भारथ महारुद्र, कासी न पूजियो किणी ।।४।।

(किसनौ आढौ)

गीत खुडद सांणोर २

वादळ दळ मेल खडग सभ वीजळ, कमंधां कांठळ फौज कर ।
घण गाजै गजसींग विरद घण, आफळ भरै कंठीर यर ।।१।।

शब्दार्थ—कमळ – शिर, मस्तक । खळां – शत्रुओं । गज-बंधी – महाराजा गजसिंह । थाहर – स्थान । गंज – ढेर, समूह । थिया – हुए । देवळ – देवालय, मंदिर । दीपावै – शोभित करके । हार – मुंडमाळ । तणै – के । यर – अरि, शत्रु । वेहड – एक के ऊपर एक रख कर जमाने या ढेर लगाने की क्रिया । कीध – की । अचंभ – आश्चर्य युक्त । हड़हड़ते – हंसते हुए । माथै – मस्तक, शिर । दळ-थंभ – महाराजा गजसिंह का विरुद या पदवी । सूर – महाराजा सूरसिंह । तणै – तनय, पुत्र । सुरसरी – गंगा नदी । सर – ऊपर, पर । विहंडिया – मार डाले, संहार किया । वजावै – चला कर । मार – सार, तलवार । सिव-पुरी – काशी । माथा – मस्तक । त्रिजड – तलवार । विकट – जबरदस्त, भयंकर । तणी – की । गंग – गंगा नदी । किणी – किसी ।

खडग – तलवार । वीजळ – विद्युत, बिजली । कमंधां – राठौड़ों । कांठळ – घन-घटा । घण – घन, मेघ । विरद – विरुद, यश । घण – अधिक । आफळ – टक्कर खा कर । कंठीर – सिंह । यर – शत्रु ।

---

*भीम सीसोदिया से किए गये युद्ध संबंधी गीत है ।

कोरण सुभट घटा थट कटकां, ग्रजडां हथ दांमणी तप ।
"सूर" तणौ धरहरै नरेसुर, वनपत यर खैंगरै वप ।।२।।

मेघाडंबर छतर धर मसतक, मही लग गमै खळां चा मूळ ।
जळहर गरज करै जोधपुरौ, सत्र ग्राफलै मरै सादूळ ।।३।।

मारू देस वंश री मंडण, काला सुपह जु ईढ करै ।
गाजै गयंद ग्रभनमौ "गांगौ", मयंद प्रसण मांमलै मरै ।।४।।

(देवराज रतनू)

गीत वडौ सांणोर* ३

मुहरि मांडिजै काजि दिग-विजय मंडोवरौ, धुर धमळ सिरै परिगह धरीसै ।
दिलीवै सोच "गजसाह" मुख देखिजै, दिलीवै हरख तोई "गजण" दीखै ।।१।।

करण भारथ महा महाराजा कमंध, मिळै......भड तांम गयणि मेळै ।
चींत सुरतांणी ग्रागळि "चौंडरज", चैन सुरितांण तिम न कौ चेलै ।।२।।

शब्दार्थ—कोरण – काले बादलों के किनारे किनारे श्वेत बादलों का भाग । सुभट – योद्धा । घटा – घन घटा । थट – समूह । कटकां – सेनाएं । ग्रजडां – तलवारों । हथ – हस्त, हाथ । दांमणी – विजली । तप – चमक, तेज । सूर – महाराजा सूरसिंह । धरहरै – गर्जना करता है । नरेसुर – नरेश्वर, राजा । वन-पत – सिंह । यर – शत्रु । खैंगरै – नाश करते हैं, कष्ट सहन करते हैं । वप – शरीर । गमै – नाश करता है । खळां चा – शत्रुओं के । मूळ – जड़ (वंश) । जळहर – वादल । सत्र – शत्रु । सादूळ – सिंह । मारू – राठौड़ । मंडण – ग्राभूषण । काला – पगला, पागल । सुपह – राजा । ईढ – समानता । गयंद – हाथी । ग्रभनमौ – वंशज । मयंद – सिंह । प्रसण – शत्रु । मांमलै – युद्ध में ।

मुहरि – ग्रग्र, हरावल । मांडिजै – रखा जाय । काजि – लिए । दिगविजय – दिग्विजय । मंडोवरौ – मंडोवर का ग्रधिपति गजसिंह । धुर – बैलों के कंधे पर रखा जाने वाला, जुग्रा । धमळ – बलिवर्द, या वीर । सिरै – श्रेष्ट । दरिगह – दरबार । दिलीवै – दिल्लीपति, बादशाह । हरख – प्रसन्नता । तोई – तो भी । दीसै – दिखाई देता है । गयणि – ग्राकाश । चींत – चिंता । सुरतांणी – बादशाह की । ग्रागळि – ग्रगाडी । चौंडरज – राव चूंडा का वंशज, गजसिंह । चेळै – ? ।

---

*गीत न. २ से गीत नं. १२ तक केवल महाराजा गजसिंह के प्रशस्ति के ही गीत हैं।

आभ थोभै भुजै "माल" हर आभरण, वधै आधक छत्रां विसोवा-वीस ।
दुचित दिल्लेस तद खळां माथै दुगम, सुचित तद परठिजै ऊमरां सीस ।।३।।
भिडै पतसाह सै हाथि जिण भांजियां, वडिम विधि जास दरिगह विराजै ।
इसै विरदे लियै ओ जगत ऊपरां, "सूर" सुत तपै खत्रवाट साजै ।।४।।
(केसोदास गाडण)

गीत वडो सांणोर ४

हळा-बोळ चौरंग दळां बीच मूजै हरण, गजां कूळटचा कुळत हुआ घर गाह ।
व्याकुळत भमंग रव बळत धूळी रवण, "सूर" रौ चढै तिणवार 'गजसाह' ।।१।।
घमंख पखरांण नीसांण वज घूमरां, परी थाक थकत होय म्रग पडै पास ।
तरां जड ऊपडै भरां सूकै तरंग, उरंग रस रंग चडै कुरंग अकळास ।।२।।
गोम डमर हुआ बोम गाहीजियै, अंत रै वोम गर दोम आगा ।
सोनरा ऊघडै धोमरा संकुडै, गयण गजगाह दळ राह लागा ।।३।।
दूसरा "माल" संग लियां चतुरंग दळ, यर हरां मार सेणां ऊबारै ।
रण-चडां सहल जूझा गहल राठवड, सहल रमतां पडै दहल सारै ।।४।।
(कल्यांणदास महडू)

शब्दार्थ—आभ – आकाश । थोभै – सम्हालता है, थामता है । माल – राव मालदेव । हर – वंशज । आभरण – आभूषण । आधक – अधिक । छत्रां – राजाओं । विसोवा-वीस – पूर्ण, पूरा । वडिम – वडप्पन । जास – जिसकी । इसै – ऐसे । विरदे – बिरुद, कीर्ति, यश । ओ – यह । सूर – महाराजा सूरसिंह । तपै – ऐश्वर्य का उपभोग करता है । खत्रवाट – क्षत्रियत्व । साजै – सम्पूर्ण, पूर्ण ।

हळा-बोळ – पूर्ण, पूरा । चौरंग – चतुरंगिनी । दळां – सेनाओं । कुळत – ? । घर-गाह – संहार । व्याकुळत – व्याकुल होता है । भमंग – शेष नाग । रव – रवि, सूर्य । बळत – आच्छादित होता है । धूली-रवण – धूलि कण । सूर रौ · महाराजा सूरसिंह का पुत्र । गज-साह – महाराजा गजसिंह । घमंख – ध्वनि । पखरांण – हाथी या घोड़ों के कवचों । नीसांण – नगाड़ा । घूमरां – सेनाएं । परी – ? । म्रग – मृग । पास – जाल ? । तरां – वृक्षों । भरां - जलाशय ? । उरंग – शेष नाग । रस – ? । कुरंग – हरिण । अकळास – व्याकुल । गोम – पृथ्वी । डमर – धूलि समूह । बोम – आकाश । गाहीजियै – ? । सोनरा – । संकुडै – संकुचित होते हैं । गयण – आकाश । गज-गाह – युद्ध । यर – अरि, शत्रु । हरां – वंशजों । सैणां – हितैषियों । जूझा-गहल – युद्धोन्मत्त । सहल – क्रीड़ा, खेल । दहल – आतंक, भय ।

गीत वडौ सांणोर ५

वडै-कांमि दळ-थंभ "गजसाह" दळ तोइ वदै, छात्रपति कमंध अै बोल छाजै ।
रूकि पतिसाह दळ लाजते राखियौ, भिडे पतसाह रिणि तिहिज भांजे ॥१॥
सेर-सुरतांण सुरतांण सम चाडि सबळ, अमर-मंडळ लगे अेह आगाज ।
ऊबेळण परी-भव तणै छळ आवगौ, ऊजळा खत्री थारै भुजां आज ॥२॥
अभिनमा चौंडरज भुजां बळ अेरसौ, छात्रपति ग्रहै ग्रहै हूंत छोडै ।
असपति तणा दळ पूठि तो ऊबरै, मुहि चढै असपति तूहिज मोडै ॥३॥
"सूर" सुत सुछळि दिल्लेस सक-बंध सह, तेज वधि दळांहूं पैंज तांणी ।
खाग-झल खूंद-वळ छांडि खिसाया खळ, वदै जैकार सुर अखिळ वांणी ॥४॥

(खेतसी लाळस)

गीत पंखाळौ ६

गज-बाधा वहै उपगार खत्री-गुर, वदन वहै खग आंकविया ।
तै ऊबारिया वडफरां ओटां, कोटां पावण हार किया ॥१॥
सत्र सर दाव वहै सूरावत, भिळतै लोह अभिनमा "माल" ।
ढालां हेट राखिया ढांकै, ढळकै त्यां आगै गज ढाल ॥२॥

शब्दार्थ—दळ-थंभ – सेना को रोकने वाला । महाराजा गजसिंह की पदवी । दळ – सेना । तोइ – तुझ को । वदै – कहते हैं । छात्रपति – राजा । कमंध – राठौड़ । अै – ये । बोल – कीर्ति के शब्द । छाजै – शोभा देते हैं । रूकि – तलवार से । रिणि – युद्ध में । तिहिज – तूने ही । भांजै – भगा दिये । अमर-मंडळ – अंबर-मंडल, आकाश । अेह – यह । आगाज – गर्जना, ध्वनि । ऊबेळण – रक्षा करने को । परी-भव – पराजय । छळ – युद्ध । आवगौ – सम्पूर्ण, पूर्ण । थारै – तेरे । अभिनमा – वंशज । चौंडराज – राव चूंडा । हूंत – को । असपति – बादशाह । पूठि – पीछे ऊबरै – बचते हैं, रक्षित रहते हैं । मुहि – अगाड़ी । सुछळि – लिए । दिल्लेस – बादशाह । सक-बंध – वीर, योद्धा । पैंज – प्रण, प्रतिज्ञा । खाग-झल – खड्गधारी । खूंद-बळ – बादशाही सेना । खिसाया – हटाये । खळ – शत्रु ।

उपगार – उपकार । खत्री-गुर – राजा, वीर । वदन – शरीर, मुख । आंकविया – चिन्हित । तै – तूने । ऊबारिया – बचाये । वडफरां – ढालों । ओटां – आड, ओट । पावणहार – प्राप्त करने वाला । सत्र – शत्रु । सर-दाव – ? । सूरावत – सूरसिंह का पुत्र । लोह – शस्त्र, या शस्त्र प्रहार । अभिनमा – वंशज । माल – राव मालदेव । हेट – नीचे, ओट, आड । ढांके – ढक कर । ढळकै – लुढ़कती है । त्यां – उन । गज-ढाल – हाथी के मस्तक में लगाया जाने वाला उपकरण ।

प्रसण वखांण करै जोधांपत, वडम तुहाळी साख वळै ।
श्रै जो जिकै वहै ऊबेडा, खेंडां तळा राखिया खळै ।।३।।

(अज्ञात)

गीत छोटो सांणोर ७

छत्रपत 'गजबंध' गांजणो छत्रपत, बिया "मालदे" चमर-बंबाळ ।
मो चीत्रिया न जावै मारू, तूं तेवडा करै रणताळ ।।१।।

हैदल पैदल प्रबळ हैडतो, नीजोड़तो कितां नर नाह ।
समरथ कही न सकूं सूरावत, गुण म्हारा थारा गजगाह ।।२।।

आळस न कूं कहै आतां-बर, "बाघ" कळोधर इळा वरीस ।
कांकळ हक्क बणांणू कमधज, वळ सांभळूं जितै दस-वीस ।।३।।

सरस तणो पसाव सोधिया, बयण विना बाखांगण वग ।
"चूंड" हरा आकास चित्रणो, खेडेचा ताहरो खग ।।४।।

(केसोदास गाडण)

शब्दार्थ—प्रसण – शत्रु । वखांण – प्रशंसा । जोधां-पत – राठोड़ों का स्वामी, वीर । वडम – वडप्पन । तुहाळी – तेरी । साख – साक्षी । वळै – फिर । श्रै – ये । वहै – चलते हैं । ऊबेधा । विरुद्ध । खेडां – ढालों । तळ – नीचे । खळै – युद्ध में ।

छत्रपत – राजा । गज-बंध – गजसिंह । गांजणो – पराजित करने वाला । बिया – द्वितीय, वंशज, पुत्र । चमर-बंबाळ – महान शक्तिशाली, वीर, योद्धा । मो – मुझ से । चीत्रिया – चित्रित किया । मारू – राठोड वीर । तेवड़ा – तिगुना, तैसा । रण-ताळ – युद्ध । हैदल – अश्व दळ । पैदल – पदाति । हेडतो – चलाता हुआ । नीजोड़तो – प्रहार करता हुआ, मारता हुआ । नर – नाह, राजा । सूरावत – सूरसिंह का पुत्र । गुण – काव्य, कविता । म्हारा – मेरे । थारा – तेरे । गजगाह – वीर, योद्धा । बाघ – कुमार बाघा । कळोधर – वंशज । इळा – पृथ्वी, भूमि । वरीस – देने वाला । कांकळ – युद्ध । हक्क – अधिकार या कर्त्तव्य । बखांणू – वर्णन करता हूं । कमधज – राठोड़ । वळ – फिर, और । सांभळू – सुनता हूं । पसाव – दान, प्रसाद । बयण – वचन । वग – वर्ग, शक्ति, बल । चूंड – राव चुंडा । हरा – वंशज । खेडेचा – राठोड । ताहरो – तेरा । खग – तलवार ।

गीत छोटो-सांणोर-८

अनकारां पहांतणा आवटसी, घणौ जतन बांधिया घणा ।
"गजन" तणा अविणसो गैंवरा, ताजी गाजीसाह तणा ॥१॥

अदवां खै जाइस ज्यां अपजस, चक्रवत व्रवै न जांणै चौज ।
राजा अमर करै ले रूपग, मैंगळ बेगागळ दे मौज ॥२॥

"गाजी साह" अमनमों "गांगौ" महियळ "सूर" सुभ्रमकुळमौड ।
वहता हसत कूदता वाजंद्र रहता करै बडा, राठौड ॥३॥

रिध दातार पयंपै राजा, यां आपवा तणो अधिकार ।
असत दधी तणा ऊबरिया सिर जगदेव तणा भव सार ॥४॥

(किसनौ-आढ़ौ)

गीत-छोटो-सांणोर-९

है थाटां बीच हींडलै हाथी, चक्रवत जिम चालिया चढै ।
"गजबंध" तणा देखतां गढवा गढ-पत जडै किमाड-गढें ॥१॥

दैखे हसम दियै दरवाजा, धर-पत अवर न धीर धरै ।
"चूंडा" हरा तणा जे चारण, करै सूंस सुभराज करै ॥२॥

शब्दार्थ—अनकारां – कृपणों । पहां – राजाओं । आवटसी – समाप्त हो जायेंगे, खतम हो जायेंगे । घणौ – अधिक । जतन – उपाय, कोशिश । बांधिया – बांधे हुए रखे । घणा – बहुत । गजन – महाराजा गजसिंह । तणा – के । अविणसी – जो नाश न हो । गैंवर – गजवर, हाथी । ताजी – घोड़ा । गाजी साह – महाराजा गजसिंह । अदवां – कृपणों । खै – क्षय, नाश । जाइस – जावेंगे । ज्यां – जिन । अपजस – अपयश । चक्रवत – राजा । व्रवै – देते हैं । चौग – उमंग, उत्साह । मैंगळ – हाथी । वेगागळ – घोड़ा । मौज – प्रसन्नता से दिया जाने वाला दान । अमनमो – वंशज । गांगौ – राव गांगा । महियळ – महितल, भूमि । सूर – सूरसिंह । सुभ्रम – पुत्र । वहता – चलते हुए । हसत – हाथी । वाजंद्र – घोड़ा । रहता – अमर रहने वाले । रिध – ऋद्धि – लक्ष्मी । पयंपै कहते हैं । यां – इन । आपवा – देने को । असत – अस्थि, हड्डी । भव – संसार ।

है – घोड़ा । थाटां – सेनाओं । हींडळै – झूमता हुआ चलता है । चक्रवत – राजा । गढवा – चारण कवि । गढपत – राजा । जडै – बंद कर देते हैं । किमाड – कपाट, दरवाजा । हसम – दल, सेना । धरपत – राजा । अवर – अन्य । धीर – धैर्य । हरा – वंशज । सूंस – शपथ ? ;

हैमर ग्रैराकी हीसंतां, हाथियां मद वहता हमल ।
देखे "गजन" तणा दूहत्थी, दूजा दैसोतां पडै दहल ।।३।।

"जोधा" हरे किया ग्रणजाची, जग देखै ओद्रके जिसो ।
दांन तणौ उनमांन देखतां, कीरत रो पूछणो किसो ।।४।।

(किसनौ-आढो)

गीत छोटो सांणोर १०

गरवा तन गात जोवतां "गजबंध", ताहरो ··· ··· सूरजमाल तण ।
ग्रवडो सायर नहीं ऊंडवण, ग्रवडो मेरू नह ऊंचपण ।।१।।

गहरा-पणो एह खत्रियां गुर, गरवा नमो ग्रभिनमा "गंग" ।
माछ रहंतै थाय महोदध, देव रहंतै माघ - दुरंग ।।२।।

ग्रथग ग्रचळ धिन "जोध" ग्रभिनमा, सावज कुळ पैतीस सिरै ।
हरि मेलियौ मथै हीलोहळ, गांजियौ रांवण मेर - गिरै ।।३।।

ग्राहं कमंध तूझ पग ऊंडा, हार्थां गयण छिबै हथवाह ।
मथियळ नै धुणियळ नह मीढी, समवड तूझ तणी "गज साह" ।।४।।

(किसनौ ग्राढो)

शब्दार्थ—हैमर – घोड़ा । ग्रैराकी – घोड़ा । हमल – समूह । दूहत्थी – चारण कवि । दैसोतां – राजाग्रों । दहल – ग्रातंक, भय । जोधा – राव जोधा । हरे – वंशज । ग्रणजाची – ग्रयाचक । ग्रोद्रके – भयभीत होते हैं । उनमांन – ग्रंदाज । किसो – कैसा ।

गरवा – गंभीर, गहरा । ताहरो – तेरा । तण – तनय, पुत्र । ग्रवडो – इतना । सायर – सागर, समुद्र । ऊंडवण – गहरापन । मेरू – सुमेरू पर्वत । ऊंचपण – ऊंचाई । खत्रियां - गुर, वीर, राजा । ग्रभिनमा – वंशज । गंगराव – राव गांगा । माछ – मत्स्य, मछली । महोदध – समुद्र । माघ – इंद्र । ग्रथग – जिसकी थाह न ले सके । धिन – धन्य । जोध – राव जोधा । सावज – सिंह, वीर । सिरै – श्रेष्ठ । हरि – विष्णु । मेलियौ – रखा, छोड़ा । हीलोहळ – समुद्र । गांजियौ – पराजित किया । गयण – ग्राकाश । छिबै – स्पर्श करता है । हथवाह – हाथों का प्रहार, प्रहार । मथियळ – समुद्र । धुणियळ – मंदराचल पर्वत, यहां सुमेरु के लिये प्रयुक्त किया गया है । मीढी – तुलना की । समवड – समानता ।

गीत छोटो सांणोर ११

आजूणी वार संसार इखतां, चौरंग अमिट अखूटत चाय।
तड-वड नह गजसींघ तुहाळी, नाकतणां आभूखण न्याय ॥१॥
पग पग लगै सरीखी पायल, हाथ हाथ प्रत कांकण होय।
सरज्या नहीं अभनमा "सलखा", दो पासा नासा नग दोय ॥२॥
स्रवण स्रवण कुंडळ सारीखा, आंख आंख प्रत अंजन अेम।
सुभ्रम "सूर" तुहाळी समवड, जुडै नहीं नक-वेसर जेम ॥३॥
अन अधपत अबळा आभूखण, इढवतां नर बीया अनेक।
नासा अग्र मोती नव सहंसा, हेकांणअै तपै तूं हेक ॥४॥
राजा तूझ समी अन राजां, होड कियां नृप विया हसै।
पांणी-हंड पहरै दोहुं पासां, नासा नार जिहुँइ नकसै ॥५॥

(सांइयौ-झूलौ)

गीत सुडियळ अठताळो १२

घख-पंख घमळ धीर धारण, निहंग तो डर केळ वारण,
दुखळ-पंखी गुरड दारण, सलह खाग सधीर।
यर केण छाजै खाग उछ्ज, अणी झटां चंच आवाज,
कळहियो "गजसाह" कळियज, वरळ वध वर वीर ॥१॥

शब्दार्थ—आजूणी – आधुनिक, आज की। वार – समय। इखतां – देखने पर। चौरंग – युद्ध। अमिट – न मिटने वाला। अखूटत – अपार। चाय – ? । तड़वड़ – समान, तुल्य। तुहाळी – तेरी। सरीखी – समान। पायल – स्त्री के पैर का आभूषण। प्रत – प्रति। कांकण – हाथ का आभूषण, कंकन। सरज्या – रचे, बनाये। अभनमा – वंशज। पासा – पार्श्व। नासा – नाक। सुभ्रम – पुत्र। सूर – सूरसिंह। समवड़ – समान। जुडै – मेल खाता है। नक-वेसर – लम्बोत्तरा या सुराहीनुमा मोती, स्त्री के नाक का आभूषण। अन – अन्य। अधपत – अधिपति, राजा। अबळा – स्त्री। इढवतां – समानता करने पर। बीया – दूसरे। नवसहंसा – राठौड़। हेकांणअै – एक ओर। तपै – ऐश्वर्य का उपभोग करता है। हेक – एक। तूझ – तेरे। समी – समान। होड – प्रतिस्पर्धा। पांणी-हंड – मोती।

घख-पंख – गरुड़। धमळ – धवल। विहंग – पक्षी, गरुड़। वारण – हाथी। दुकळपंखी– ? । यर – अरि, शत्रु। उछ्ज – उठा कर। अणी – नोंक, धार। आवज – आवध, आयुध, अस्त्र शस्त्र। कळहियो – युद्ध में लीन या डूबा हुआ। गजसाह – महाराजा गजसिंह। कळियज – युद्ध। वरळ – ? ।

सादूळ अमंगळ सिह सावज, ग्रीठ केहर मयंद रिपु गज,
बांण बाघ लँकाळ वनरज, दोख गम दाढाळ।
ऊपाड हथळ छरा असमर, सार साझै धडा सिंधुर,
मयंद रूपी धणी मुरधर, खळां दळ खैंगाळ ॥२॥
हुतासण मंगळ जळण हुबह, दावक-नळ पावक वन दह,
धखण ऊसण दहण धोमह, वासदेव वज्राग।
जुडै अरियण खाग जाळै, प्रसण तर धाये प्रजाळै,
वडै राजा अंक-वाळै, अरी बाळै आग ॥३॥
सामंद हुवह सुजळ सायर, रैण सुत जळनध रैणायर,
सुजळ गौडीरेव सायर, महण घण महरांण।
सुतन "सूरज" सुजळ सारै, अरि ओहाळे उतारै,
मारका सत्र वोढ मारै, जुडै "गंजण" जुवांण ॥५॥
(अज्ञात)

गीत वडो सांणोर* १३

खवां खेलतौ खांन असहां कमळ खूंदतौ, रूक छिवतौ निहंग देईव-रायौ।
साह दळ भांज गजसींग नव-साहसौ, ओ वळै साह दरगाह आयौ ॥१॥

शब्दार्थ—सादूळ – शार्दूलसिंह। सावज – सिंह, सिंह का बच्चा। ग्रीठ – सिंह। केहर – केसरीसिंह। मयंद – सिंह। रिपु-गज – सिंह। लंकाळ – सिंह। वनरज – वनराज, सिंह। दाढाळ – बडी दँष्ट्रा वाला सिंह। हथळ – सिंह के अगले पैर का अग्रभाग। छरा – सिंह का पंजा। असमर – तलवार। सार – तलवार। धड़ा – सेना। सिंधुर – हाथी। खळां – शत्रुओं। खैंगाळ – संहार। हुतासण – अग्नि, आग। मंगळ – अग्नि, आग। जळण – आग। दावकनळ – दावाग्नि। पावक – अग्नि। वनदह – आग। धखण – अग्नि। ऊसण – उष्ण, आग। दहण – जलाने वाला आग। धोमह – आग। वासदेव – आग। वज्राग – वज्राग्नि। जुडै – भिड़ता है। अरियण – अरिजन, शत्रु। प्रसण – शत्रु। तर – तरु, वृक्ष। धायै – प्रहारों से। प्रजाळै – जला देता है। अंक-वाळै – महान कार्य किये। सायर – सागर, समुद्र। रैण-सुत – समुद्र। जळनध – जलनिधि, समुद्र। रैणायर – रत्नाकर, समुद्र। गौडीरेव – तरंगों की ध्वनि वाला, समुद्र। महण – महार्णव, समुद्र। महरांण – समुद्र। ओहाळै – तालाब, समुद्र, नदी आदि के तट पर जल-प्रवाह से फेंका हुआ कूड़ा-करकट। वोढ – काट कर। गजण – गजसिंह। जुवांण – जवान।

खवां – कंधों। असहां – शत्रुओं। कमळ – शिर, मस्तक। खुंदतौ – रौंदता हुआ। रूक – तलवार। छिवतौ – स्पर्श करता हुआ। निहंग – आकाश। निहंग-देईव-रायौ – सूर्य। साह – बादशाह। नव साहसौ – राठोड़। ओ – यह। वळै – फिर, पुनः। दरगाह – दरबार।

---

*गीत नं. १३ महाराजा गजसिंह का बादशाह जहांगीर की मदद में तथा सुलतान खुर्रम के विरुद्ध युद्ध करने के आशय को प्रकट करता है।

कमंध देतौ चलण भडां क्यांहि कमळ, कहर भर खूंदतौ भडां क्यांही।
मारुवौ-राव खुरसांण गांजै मछर, माल्हियौ वळै खुरसांण मांही ॥२॥
"सूर" रौ दिली दरगाह असहां सिरै, हियै चड प्रवाडा लियण हिळियौ।
मूहां सैंदां तणा मार हिंदू मुगळ, मछर सैंधां-मुहां आंण मिळियौ ॥३॥
दिलीवै कहर पतसाह रा भांज दळा, सोहियां दळां विच वीर साजा।
सदा जोरावरां तणा नव-साहसौ, राह सिर ऊपरै हुअै राजा ॥४॥
(देवराज रतनू)

गीत पालवणी १४*
(प्रथम दूहौ सोरठौ)

तूं तोलै तरवार, सिर साहां गजसिंध दे।
है तुरकांणै हार, हिंदवांणै उछब हुवै

शब्दार्थ—कमंध – राठोड़। चलण – पैर, कदम। भडां – योद्धाओं। क्यांहि – कई, कितने ही। कहर – आफत, विपत्ति। मारुव-रावौ – मारवाड़ का राजा, राठोड़ राजा। खुरसांण – बादशाह। गांजै – भंजन करके, मिटा करके। मछर – गर्व। माल्हियौ – मस्त चाल से चला। मांही – में। सूर – महाराजा सूरसिंह। सिरै – ऊपर, पर। प्रवाडा – युद्ध। लियण – लेने को। हिळियौ – आदी हो गया। मूहां-सैंदां तणा – परिचित व्यक्तियों का। मछर – रौब, प्रभाव, गर्व। सैंधा-मुहां – परिचितों। दिलीवै – दिल्लीपति, दिल्ली का। सोहियौ – शोभित हुआ। साजा – कुशल, स्वस्थ, अखंड।

---

*खुर्रम की ओर से राजा भीम सीसोदिया महाराजा गजसिंह से युद्ध करता हुआ वीर गति को प्राप्त हुआ। भीम ने युद्ध अत्यन्त कौशलता तथा वीरतापूर्वक किया था तथा बहुत से शत्रुओं को युद्ध में धराशायी कर दिये थे उपर्युक्त घटना की सूचना जब महाराणा कर्णसिंह के पास पहुंची तो उन्होंने दरबार में राजा भीम के पराक्रम, शौर्यादि का वर्णन कवियों के मुख से सुनने की अभिलाषा प्रकट की। महाराणा के दरबारी कवि खेमराज सौदा बारहठ ने तुरंत ही एक गीत जिसका अन्तिम चरण "पांडव नांमी नीठ पाड़ियो लग ऊगमण आथमण लग" है, रचकर सुनाया। दरबारियों ने तथा महाराणा ने कवि को वाहवाही का पुरस्कार दिया, लेकिन दरबार में बैठे चतुरा मोतीसर को गीत में प्रयुक्त "पाड़ियौ" शब्द उपयुक्त नहीं लगा। चतुरा के असंतोष प्रकट करने पर कवि खेमराज सौदा ने चतुरा को ही अन्य गीत रच कर सुनाने को कहा। चतुरा आशु कवि था, तुरन्त ही सुंदर गीत रच कर महाराणा के दरबार में सुनाया जिसमें राजा भीम सीसोदिया के शौर्य, पराक्रम, और युद्ध-कौशल का वर्णन महाराजा गजसिंह से अपेक्षाकृत विशेष था।

गीत

चक्ख लागां धिक्खै चहुँ-दिस चोळै, हीलोहळ सातूं हीलोळै ।
अधपत सको ताहरै ओळै, तूं खग आज किणी सिर तोलै ॥१॥
खंड देवड़ा भरै डंड खंधी, सगपण कर भाटी सनबंधी ।
सारां मिळै तूझ सूं संधी, बळ दाखै किण सिर "गजबंधी" ॥२॥
पूरब पछम धरा दध-पारू, दिखण तणौ खूटौ बळ दारू ।
सक उतराध धरा तो सारू, मछर धरै किण ऊपर मारू ॥३॥
वाजै वळै चहुं दिस बाजा, "सूर" तणा उत्तर दध साजा ।
पूगो जस सातूं दध पाजा, रोस धरै किण ऊपर राजा ॥४॥

(चतुरौ मोतीसर)

शब्दार्थ—चक्ख – चक्षु, नेत्र । धिक्खै – प्रज्वलित होती है । चहुँ–दिस – चारों दिशाएँ । चोळै – कम्पायमान होती है । हीलोहळ – समुद्र । हीलोळै – तरंगयुक्त होते हैं । अधपत – अधिपति, राजा । सको – सब । ताहरै – तेरे । ओळै – ओट में, शरण में । खग – तलवार । किणी – किस । सिर – ऊपर । तोलै – प्रहार हेतु उठाता है । खंड – देश । देवड़ा – चौहानवंश की एक शाखा । खंधी – किश्त । सगपण – विवाह सम्बन्ध, संबंध, रिश्ता । सनबंधी – रिश्तेदार । संधी – संधि, सुलह, मेल । दाखै – प्रकट करता है, बतलाता है । किण – किस । सिर – पर, ऊपर । गज-बंधी – महाराजा गजसिंह । दध – उदधि, समुद्र । पारू – पार तक । तणौ – का । खूटौ – समाप्त हो गया, मिट गया । बळ – शक्ति, सेना । दारू – बारूद । सक – सब, पूर्ण । उतराध – उत्तर दिशा । धरा तो सारू – तेरे अधिकार में है, तेरे वश में है । मछर – कोप । मारू – राठौड़ वीर । वाजै – बजते हैं । वळै – फिर, ओर । सूर – महाराजा सूरसिंह । तणा – तनय, पुत्र ।

"सूर" तणा उत्तर दध साजा – हे सूरसिंह के पुत्र, उत्तर से (दक्षिण) समुद्र पर्यन्त सब अखण्ड रूप से तेरे अधिकार या वश में हैं ।

उक्त गीत संबंधी वृत्तान्त जब महाराजा गजसिंह के कर्ण गोचर हुआ तो वे चतुरा पर बहुत कुपित ही नहीं हुए बल्कि मोतीसर जाति के लिए देश निष्कासन का आज्ञा-पत्र जारी कर दिया । इस पर चतुरा शीघ्र ही चंडावल ठाकुर गोवर्द्धनदास कूंपावत के मारफत महाराजा गजसिंह के दरबार में पहुँचा, ज्योंही महाराजा की चतुरा पर दृष्टि पड़ी तो तुरन्त ही तलवार उठाकर उसे मारने हेतु तैयार हुए । ठीक इसी समय चतुरा ने अपनी काव्य-प्रतिभा द्वारा उपर्युक्त सोरठा और गीत रचकर महाराजा को सुनाए । महाराजा का कोप शांत हो गया—और चतुरा दण्ड के स्थान पर पुरस्कार से सम्मानित हुआ ।

गीत वेलियौ सांणोर १५*

तेतीसै सुरां हिंदवां तुरकां, कोय न यू जन मांडें कंध ।
आराधियां बिना वह आयौ, बीजौ महादेव "गजबंध" ॥१॥
चूका वयण मंदार चाढतां, सुर नर साहौ मांन असत्त ।
भोळै भाव आवियौ भूरौ, भोळा संभू तणी भत्त ॥२॥
नरंद आजका गुणै नह रीझै, बूझै ताय ओगणां अबूझ ।
मिळियां गुणां ओगणां मेटे, मंडोवरौ महारुद्र मूझ ॥३॥
मोटा पह सहज रावमारू, रुद्र दूहत्थौ करै फिर रीझ ।
अम लोगां ऊपरा न रावै, खूंदाळमां हिळाई खीज ॥४॥

(चतुरौ-मोतीसर)

२२. महाराजा जसवंतसिंह

गीत प्रहास सांणोर १**

हुसंड हुकळै बांघळा प्रचंड गज हिंडुळै, वळै दळ वाज त्रंबाळ वाजा ।
गढपती पोकरण लीध लागै गढ़ां, राज री ताप "जस राज" राजा ॥१॥

शब्दार्थ—आराधियां – आराधना करने पर । बीजौ – दूसरा । वयण – बचन । मंदार – (?) । भोळै-भाव – सहज में ही, बिना विचारे । भूरौ – वीर, योद्धा । भोळा – छल-कपट-रहित, सीधा सादा, सरल । भत्त – भांति, प्रकार । नरंद – नरेंद्र, राजा । गुणै – गुनों पर, काव्यों पर । बूझै – पूछते हैं । ओगणां – अवगुणों । अबूझ – न पूछने योग्य । ओगणां – अपराधों । मंडोवरौ – मंडोवर का अधिपति, महाराजा गजसिंह । मूझ – मेरे । मोटा – महान, बड़ा । पह – प्रभु, राजा । राव मारू – राठोड़ राजा । दूहत्थौ – दो हाथ वाला । रीझ – पुरस्कार, दान । अम – हम । खूंदाळमां – बादशाहों । हिळाई – समान, प्रकार । खीज – कोप ।

हुसंड – घोड़ा । हुकळै – मस्ती में हिनहिनाहट की ध्वनि करते हैं । बांघळा – जबरदस्त । हिंडुळै – मस्ती में झूमते हैं । वळै – फिर, और । दळ – सेना । त्रंबाळ – नगाड़ा । वाजा – ध्वनिमान हुए । गढपती – राजा । राज री – श्रीमान का, आपका । ताप – प्रभाव, ऐश्वर्य ।

---

*गीत नं० १४ सुन कर महाराजा गजसिंह ने जब चतुरा के अपराध को क्षमा कर दिया तब चतुरा ने यह गीत फिर नवीन रचकर सुनाया ।

**वि.सं. १७०६ की कार्तिक मास की पूर्णिमा को जयसलमेर के रावल मनोहरदास का देहावसान हो गया । तब उसका पुत्र रामचंद्र राज्यासीन हुआ । यह रामचंद्र उत्पाती और उद्दण्ड था । इससे समस्त प्रजामंडल तथा सामन्त गण असंतुष्ट थे ।

हुंकळै तुरां घैंधिगरां हार हर, सहर पाधर करण काज साका ।
पाखरां घरर "गजबंध" रा पाटपत, थरर गढ पत गढां पांण थाका ॥२॥

चौसरै थरां नर कांगुरै चाढ़िया, ऊमरां भुजा - डंडां अड़ीया ।
प्रथी रा नाथ वांकौ दुरंग पलटतां, प्रथी रा गिरवरां भंग पडीया ॥३॥

प्रघळ दळ मेल गढ भेळियौ पोहकरण, छळ "सबळ" "माल"…खळां छीजैं ।
कमँध अन कोट जळ-थाळ झळ-झळ करैं, दूसरा "मालदे" धीर दीजैं ॥४॥

(खेतसी लाळस)

शब्दार्थ—तुरां – घोड़ों । घैंधिगरां - हाथियों । हार-हर – (?) । पाधर – सीधा । काज – लिए । साका – युद्ध । पाखरां – घोड़ों हाथियों के कवचों । गज-बंध – महाराजा गजसिंह । पाट पत – पट्टाधिकारी । थरर – कंपायमान होते हैं । गढ-पत – राजा । पांण – प्राण-बल । थाका – थकित हो गये, थक गये । चौसरे – चारों ओर । थरां – स्तरों, तहों । ऊमरां – अमीरों, सरदारों । भुजा-डंडां – महान, जबरदस्त, शक्तिशाली । अड़ीया – छू गये, स्पर्श किया । प्रथी रा नाथ – पृथ्वीनाथ, राजा । वांकौ-दुरंग – जयसलमेर का गढ । गिरवरां – पर्वतों । भंग – भय, भगदड़ । प्रघळ – पुष्कल, बहुत । दल सेना । गढ भेळियौ – गढ़ में प्रवेश कर दिया, घुस गये, अधिकार कर लिया । छळ – लिए । सबळ – सबलसिंह भाटी । माल – रावल मालदेव (जयसलमेर) । खळां – शत्रुओं । छीजैं – क्षीण होते हैं । कमंध – राठौड़ । अन-कोट – अन्य गढ़ । जळ-थाळ – थाल के पानी के समान । झळाझळ – कंपायमान, डोलायमान । दूसरा – द्वितीय, वंशज । मालदे – राव मालदेव राठौड़ । धीर – धैर्य ।

अत: उन्होंने रावल मालदेव (जयसलमेर) के तृतीय पुत्र खेतसिंह के पौत्र सबलसिंह को राज्याधिकारी बनाने का विचार किया। यह सबलसिंह बादशाह शाहजहाँ के दरबार में उपस्थित हुआ । सामन्तगण इसके पक्ष में थे ही । यह भी पहिले पेशावर की मुहिम पर नियुक्त होकर बादशाह की अच्छी नोकरी बजा चुका था । अत: बादशाह इससे पूर्ण परिचित था । बादशाह ने महाराजा जसवंतसिंह को कहा कि पोकरण नगर पहले से ही तुम्हारा ही है । राव चंद्रसेण ने जयसलमेर के रावल हरराज के गिरवे रख दिया था । तब से पोकरण पर भाटी वंश का अधिकार है । अब हम पोकरण तुम्हें इनायत करते हैं । वहाँ जाकर पोकरण पर अपना अधिकार कर लो और जयसलमेर के राज्यसिंहासन से रामचंद्र को हटा कर सबलसिंह को रावल बना दो, यह कह कर बादशाह ने महाराजा जसवंतसिंह को पोकरण का फरमान दे दिया और सबलसिंह को भी महाराजा के साथ भेज दिया ।

गीत प्रहास साणोर २

दळाकार चहुँग्रै वळा जोध वांका दिपै, ग्राज जग-जेठ ग्रचडां ग्रबारू ।
"जसौ" वांका खळां वांक काढै जुडै, मार वांका-दुरंग लिए राव मारू ।।१।।

सुतन "गजसाह" गज-गाह बांधै समर, सगत बळ जळहळै तेग साथै ।
गांजवा खळां जस करण वांका गढां, हींदवा - छात रै फतै हाथै ।।२।।

विभाड़ै जादवां - कोट धर कीध वस, सबळ ब्रद खाटिया भवां सारू ।
तप-बळी ग्रभनमा "माल" "गंगेव" तो, ममारक पोकरण राव मारू ।।३।।

... ... , ... ।
... ... , ... ।।४।।

(ग्रज्ञात)

शब्दार्थ—दळा-कार – सेना, फौज । चहुंग्रै-वळा – चारों ग्रोर । जोध – योद्धा, वीर । वांका – बांकुरे । दिपै – शोभायमान हैं । जग-जेठ – वीर, राजा । ग्रचडां – कीर्ति, श्रेष्ठ बातें । ग्रबारू – बचाने के लिए, बचाने वाला । जसौ – महाराजा जसवंत सिंह । खळां – शत्रुग्रों । वांक – गर्व, ऐंठ । काढै – निकालता है, मिटाता है । जुड़ै–भिड़ कर, युद्ध कर । मार – लूट कर । बांका-दुरंग – जयसलमेर का गढ, बांकुरा गढ़ । राव-मारू – राठौड़ राजा । सुतन – पुत्र । गजसाह – महाराजा गजसिंह । गज-गाह – (?) । समर – युद्ध । सगत – शक्ति । जळहळै – देदीप्यमान होती है, चमकती है । तेग – तलवार । गांजवा – पराजित करने को । वांका गढां – जयसलमेर का किला । हींदवा-छात – हिंदू राजा, हिंदुग्रों का राजा । विभाड़ै – पराजित कर; लूट कर । जादवां-कोट – जयसलमेर का गढ़ । ब्रद – विरुद । खाटिया – प्राप्त किए । भवां – जन्मों । सारू – लिए । ग्रभनमा – वंशज । माल – राव मालदेव (जोधपुर) । गंगेव – राव गांगा का पुत्र । ममारक – मुबारक, शुभ, मंगलप्रद ।

महाराजा वि. सं. १७०७ में जोधपुर ग्राए ग्रौर पोकरण का फरमान दे कर ग्रपने विश्वस्त सामंतों को जयसलमेर भेजा । रावल रामचंद्र ने कहा कि इस प्रकार की याचना करने से पोकरण का गढ़ नहीं मिल सकेगा । हम मरेंगे तब गढ़ मिलेगा । यह वृत्तान्त सुनकर महाराजा ने ग्रपनी सेना जयसलमेर पर भेजी । रामचंद्र को राज्य-सिंहासन से हटा कर सबलसिंह को जयसलमेर का रावल बना दिया ग्रौर पोकरण पर भी ग्रपना ग्राधिपत्य जमा दिया । गीत नं० १, २, ३ उपर्युक्त घटना से संबंधित हैं ।

गीत बडो सांणोर ३

छिलै सेन साहण समँद कमंध ऊपरि छत्रां, ऊजळा करै आरंभ अनिमंध ।
पोकरणि पलटि "गज-बंध" रा पाट पति, बांधियो जोधपुर गळै 'गजबंध'. ॥१॥

वाजतै नगारै कटक वाळै विखम, जैत-हथ सूत्रियो इसो रण - जंग ।
गढां रा गरब गळिया "जसा" गढपती, गिरँद सिणगारियो अभिनमा "गंग" ॥२॥

बाप जिम वडा ही वडा वणिया विरुद, "सूर" हर आभरण भवां सारू ।
महाराजा जु तैं माड कीधो विमह, मंडोवर अंजसै राव मारू ॥३॥

खत्री-वट प्रगट करि जैत चाढी खवां, कुळ तिलक काढियो कोट लीयो ।
सपूता - चार पतिसाह सनमांनियो, वाळतै पोकरण अंक वळियो ॥४॥

गीत छोटो सांणोर ४

उजैणी[1] खेत घडा[2] बेहुँ आवडै, नाळ निहाव गजां[3] नीसांण ।
"सूर" हरो माथै साहिजादां, राजा उलट्टियो महरांण ॥१॥

पाठान्तर

१. ख. उजैण । २. क. घड । ३. क. गाजै ।

शब्दार्थ—छिलै – उमड़ कर । साहण – घोड़ा । छत्रां – राजाओं । अनिमंध – धीर । पाट-पति – पट्टाधिकारी । कटक – सेना । वाळै – मोड़ कर, मोड़ दिया । विखम – भयंकर, विषम । जैत-हथ – विजय हस्त । सूत्रियो – (?) । इसो – ऐसा । रण-जंग – युद्ध । गरब – गर्व । गळिया – मिट गये, नष्ट हो गये । जसा – महाराजा जसवंतसिंह । गढ-पती – राजा । गिरँद – गिरींद्र, पर्वत । सिणगारियो – सुसज्जित किया । अभिनमा – वंशज । गंग – राव गांगा । बाप – पिता । सूर – महाराजा सूरसिंह । हर – वंशज । सारू – लिए । माड – जयसलमेर राज्य । कीधो – किया । विमह – मान या मद-रहित । अंजसै – गर्व करता है । राव-मारू– राठोड़ राजा । खत्रीवट – क्षत्रियत्व । प्रगट – प्रकट । जैत – विजय । खवां – कंधों । सपूताचार – सुपुत्र के आचरण या कर्त्तव्य । सनमांनियो – प्रतिष्ठा दी, सम्मान किया । वाळतै – वापिस लेते हुए । अंक वळियो – मान बढ़ गया, अति श्रेष्ठ कार्य हो गया ।

घडा – सेना । आवडै – भिड़ती है ? नाळ – तोप । निहाव – ध्वनि, प्रहार । गजां – हाथियों । नीसांण – नगाड़ा, या झंडा । सूर – महाराजा सूरसिंह । हरो – वंशज । माथै – ऊपर । उलट्टियो – उमड़ गया । महरांण – महार्णव, समुद्र ।

अवडां गजां धजां[1] आराबां, जूह हूह जै जूह जुआ ।
हौद नबाब रोद हेकारूं, हीलोहळ गरकाब हुआ ।।२।।

सुज छिलियौ माथै साहजादां[2], असमर[3] लहर लगै असमांण ।
"गजबंध" तणौ अखंड[4] गळिया, खारै समँद छ खंड खुरसांण ।।३।।

लोहां लोड बोड[5] जळ लागै, सूर आवरत्त संभ्रमिया[6] ।
काळै थाट तणा कलमायण[7], काळै वार आहार किया ।।४।।

जग कळंपत तणी "जसवंत", फेरा लहर कहर फिरियौ ।
लोह धार[8] गैणाग लागतां, "औरँग"[9] ध्रु जिम ऊबरियौ ।।५।।

घडा विरोळ मार चौधारां, काळ वहंतां कमण[10] कळै ।
रोळै दळ बोळै रुद्रांयण[11], वळियौ जैम समंद वळै ।।६।।

(नाथौ सांदू)

पाठान्तर

१. क. छोळ । २. सायजादां । ३. ख. आवध । ४. क. आठ मै गळिया । ५. क. बोढ । ६. क. संजमिया । ७. क. किलमाइण । ८. क. लहर । ९. ख. अवरंग । १०. क. कवण । ११. क. रोद्रायण ।

शब्दार्थ—अवडां – इतने । धजां – घोड़ों । आराबां – तोपों ? । जूह – यूथ, समूह । हूह – ? जै-जूह – हाथियों का दल । जुआ – पृथक, और । हौद – हाथी की अम्मारी में बैठने का स्थान । रोद – यवन । हेकारू – एक बार, एक दफे । हीलोहळ – समुद्र । गरकाब – निमग्न । सुज – वह । छिलियौ – सीमा के बाहर हो गया । असमर – तलवार । असमांण – आसमान । गजबंध – महाराजा गजसिंह । तणौ – तनय, पुत्र । गळिया – निमग्न कर दिए । खुरसांण – यवन । लोहां – शस्त्र, शस्त्र-प्रहारों । लोड – बड़ी लहर या तरंग । बोड – ? आवरत्त – युद्ध । संभ्रमिया – भ्रमित हो गये । काळै – वीर । थाट – सेना । कलमायण – यवन । काळै – श्याम । वार – जल । जग कळपंत – जगत कल्पान्त के समान । कहर – भयंकर आपत्ति । गैणाग – आकाश । ऊबरियौ – बच गया । विरोळ – विध्वंश कर के । चौधारां – भालों । काळ – मौत, यमराज । वहंतां – चलने पर । कमण – कौन । कळै – ? रोळै – ध्वंस करके । बोळै – डुबाकर । रुद्रायण – यवन । वळियौ – लौटा, वापिस आया । वळै – लौटता है, वापिस आता है ।

गीत प्रहास सांणोर ५

सजै फौज कांठळ घरर घणा नीसांण घुर, अनळ धुंआ रवण रण ऊजाथै ।
वहण दळ दिलेसुर तणा फाटा वरस, मेर-गिर "गजण" रा तणै माथै ॥१॥
भडज वादळ सबळ वीज साबळ झळक, खळक जळ रुधर घट नाळ खाळा ।
वार सुरतांण दळ अकळ खूटा वरस, "माल" हर सीस सुर-गरंद-माळा ॥२॥
कठठ कांठळ कटक रोस चांमास कर, जवनपत हिंदवां-छात जूटा ।
अभंग जसराज सर कणैगिर ऊपरा, खैंग वादळ वरस वार खूटा ॥३॥
अनड सर कमँध वन थाक रहिया अनख, उभै पत-साह देखै अछायौ ।
पखां जळ चाढ खळ पाड बांहां प्रळंब, असुर घण पाड खग झाड आयौ ॥४॥

(अजबौ बारहठ)

गीत प्रहास सांणोर ६

दिलो-साह छळि उजेणी वाह खग दाखतै, लडण ऊछाह अवसांण लाधै ।
"जसा" चतरबा गजगाह रचि तूं जुड़ै, बिहूं पतसाह सूं नेत-बांधै ॥१॥

शब्दार्थ—कांठळ – घन-घटा । घरर – ध्वनि । घणा – बहुत । नीसांण – नगाड़ा । घुर – बजकर । अनळ – अग्नि । रवण – ध्वनि । रण – युद्ध, युद्ध-स्थल । ऊजाथै – ? वहण-दळो – सेना के चलने पर । दिलेसुर – बादशाह । तणा-तनय – पुत्र । बरस=उरस – आकाश । गजण – महाराजा गजसिंह । तण – तनय, पुत्र । माथै – ऊपर, पर । भडज – घोड़ा । वीज – बिजली । साबळ – भाला । झळक – चमक कर । खळक – प्रवहमान होकर । रुधर – रुधिर, रक्त । घट – शरीर । नाळ-खाळा – नाले । वार – जल । सुरतांण – बादशाह । अकळ – अपार, बहुत । खूटा – समाप्त हो गये । माल – राव मालदेव । हर – वंशज । सुर-गरंद-माळा – सुमेरु पर्वत रूपी श्रेणी । कठठ – सेना, रथ आदि के चलने की ध्वनि । कटक – सेना, दल । चांमास – वर्षा काल । जवनपत – यवनपति, बादशाह । हिंदवां-छात – हिंदू राजा, हिंदुओं का राजा । जूटा – भिड़ गये । अभंग – वीर । कणैगिर – सुमेरु पर्वत । खैंग – घोड़ा । वार – पानी, जल । अनड – वीर, पर्वत । कमँध – राठौड़ । वन – जल, वर्षा । थाक – थक कर । अनख – शत्रु । उभै – दोनों । अछायौ……… ? पखां – पक्षों । जळ – कांति, आभा, चमक । खळ – शत्रु । पाड – मार कर । बाहां-प्रळंब – आजानु-बाहु । असुर – यवन । घण – बहुत । झाड़ – प्रहार करके ।

छळि – लिए । खग – तलवार । दाखतै – कहते हुए । उछाह – उत्साह । अवसांण – अवसर । लाधै – प्राप्त होने पर । जसा – महाराजा जसवन्तसिंह । चतरबां – चारों ओर ? गजगाह – युद्ध । जुड़ै – भिड़ कर । बिहूं – दोनों । नेत-बांधै – झंडा धारण किए हुए ।

बाजुवा कमंध रचि पहां बौळावतौ, अरि हरि गांजतौ भुजां अकारैं।
सांफळै तुहिज 'गजसाह' रा सींघळी, साह आलम दुवै सरिस सारै ।।२।।
ठेल्हतौ गजां है-थाट लागा अटळ, रीठ वागां खगां दुवै राहां।
जोध "जसराज" पूगौ भलौ जूजबौ, सेल रोळै दुहूं पातिसाहां ।।३।।
चखाडै कूंत चखतां धणी चापड़ै, रौद-घड़ पछाड़ै अचळ राखी।
जीवतां-सिंभ महाराज वणियौ "जसौ", समर चा करे रवि चंद साखी ।।४।।
(अज्ञात)

गीत-प्रहास सांणोर ७

भुजा कूंत ऊपाड रण वार नांखै भिड़ज,
खसण चलियौ[1] दिली-थाट खांगै[2]।
नांखियौ "जसै" "महबूब" लागां निहंग,
गै-घड़ा ऊपरै बियै "गांगै" ।।१।।

पाठान्तर—१. ख. छालियौ। २. ख. खागै।

शब्दार्थ—बाजुवां – एक ओर, तरफ। रचि – रचकर। पहां – राजाओं। बौळावतौ – मिटाता हुआ। अरि हरि – शत्रु वंशज। गांजतौ – पराजित करता हुआ। अकारैं – तेज, जबरदस्त। सांफळै – शस्त्र प्रहारों में, युद्ध में। गजसाह – महाराजा गजसिंह। सींघळी – वीर, वीर पुत्र। साह – बादशाह। आलम – जन-समूह, दुनिया। दुवै – दोनों। सरिस – सम न। सारै – ? ठेल्हतौ – धकेलता हुआ, पीछे हटाता हुआ। गजां – हाथियों। है-थाट – अश्व दल। अटळ – अचल, स्थिर। रीठ – प्रहार। वागां – बजने पर। खगां – तलवारों। दुवै-राहां – (हिंदू और मुसलमान) दोनों धर्म। जोध – योद्धा, वीर। पूगौ – पहुंच गया। भलौ – ठीक। जूजबौ – युद्ध करने को। सेल – भाला। रोळै – प्रहार किए। दुहुं – दोनों। कूंत – भाला। चखतां-धणी – मुगल-बादशाह। चापडै – युद्ध मैदान में। रौद-घड़ – यवन सेना। पछाड़ै – पराजित करके। अचळ – कीर्ति। जीवतां-सिंभ – युद्ध में घायल होने वाला, युद्ध में घायल होकर जीवित रहने वाला। जसौ – जैसा या जसवंतसिंह। समर – युद्ध। चा – के। रवि – सूर्य। चंद – चांद। साखी – साक्षी।

कूंत – भाला। वार – वेला, समय। नांखै – झोंकता है। भिड़ज – घोड़ा। खसण – युद्ध। थाट – दल, सेना। खांगै – वीर, योद्धा, राठौड़। नांखियौ – झोंक दिया। जसै – महाराजा जसवंत सिंह। महबूब – महाराजा जसवंतसिंह के घोड़े का नाम। निहंग – आकाश। गै-घड़ा – हाथी दल। बियै – द्वितीय, वंशज। गांगै – राव गांगा राठौड़ (जोधपुर)।

सामँतां[1] मो'र[2] चोधार यर[3] साजतौ,
समर बागौ बिनै पातसाही[4] ।
मारवै - राव तोखार वद मेलियौ,
मार सारां गजां भार माही[5] ॥२॥

झलण[6] करतौ घड़ा सेल रंगियं "जसौ",
जुध वट[7] खेलतौ "गजन" जायौ ।
पमँग[8] पड़तालतौ[9] पछाड़रण पाड़तौ,
अफारै चकारै चाल आयौ ॥३॥

सायजादां[10] हूता सरस कर सैफळै,
मिटी राखी भुजां जांण माजा ।
साज सकिया नहीं खळां दळां साजतां,
रण अकळ जीवतां - संभ राजा ॥४॥

(नाथौ सांदू)

गीत बडो सांणोर ८

सकज वाहतौ सेल अण-ठेल नव साहसौ, खेलियै खेल खत्रवाट रौ खूत्र ।
छोह लागै "जसै" ओरियौ छत्रपति, मोकळा लोहरै बोह "महबूत्र" ॥१॥

पाठान्तर—१. क. सेवतां । २. क. मोहर । ३. ख. अरि । ४. क. पातसाई । ग. पातसाहै । ५. ख. माहै । ६. क. जलरण । ७. ख. जोधवटे । ८. क. पनंग । ९. क. परताल । १०. क. साहजादां ।

शब्दार्थ—मो'र – हरावल । चोधार – भाला । यर – अरि, शत्रु । साजतौ – मारता हुआ । समर – युद्ध । वागौ – हुआ । बिनै – दोनों । मारवै-राव – राठौड़ राजा, मारवाड़ का राजा । तोखार – घोड़ा । वद – बढ कर । मेलियौ – झोंक दिया । सारां – तलवारों, अस्त्रशस्त्रों । गजां-भार – हाथी दल । झलण – ......? घड़ा – सेना । सेल – भाला । जसौ – महाराजा जसवंतसिंह । जुध-वट – युद्ध मार्ग । गजन – महाराजा गजसिंह । जायौ – पुत्र । पमंग – घोड़ा । पड़ताळतौ – तेज गति से चलता हुआ । पछाड़रण – पछाड़ने वाला । पाड़तौ – मारता हुआ, गिराता हुआ । अफारै..............? माजा – मर्यादा । साज – मार । साजतां – मारने पर । रण – युद्ध । अकळ – भयंकर, जबरदस्त । जीवतां-संभ – युद्ध में घायल होकर जीवित रहने वाला वीर ।

अण-ठेल – नहीं रुकने वाला वीर । नवसाहसौ – राठौड़ वीर । खत्रवाट – क्षेत्रियत्व । छोह – क्षोभ, जोश । जसै – महाराजा जसवंतसिंह । ओरियौ – झोंक दिया । छत्रपति – राजा । मोकळा – बहुत, अधिक । लोह – शस्त्र । बोह – प्रहार, बौछार ।

कूंत आहावतौ ढाहतौ केवियां, अजड रांमत रमें कमँध त्यारा ।
"गजण" रै नांखिया बाज मचती गहण, "सूर" हर आभरण पूर सारा ।।२।।

धीबिया छडाळां किता लोटे धरा, प्रगट रजपूत वट दाख पूरै ।
"माल" दूजै वधै महाजुध मेलियौ, खाग अणिरां तणै प्रगट खूरै ।।३।।

वाहि चौधार अरि ढाहिया पार विण, रूक सारगहियौ हिंदू राहां ।
गवाडै प्रवाड़ा "जसौ" धारियां गुमर, समर गांजै बिहूं पातसाहां ।।४।।
(महेसदास आढौ)

गीत प्रहास सांणोर ६

वदन तेज कळपंत रौ वयळ वाडव वणै, ऊफणै क्रोध पोरस अमांमौ ।
मंडांणौ हेक राजा घणै मछर सूं, साहजादां दुहुँ तणै सांम्हौ ।।१।।

भूप निघडक इसा रचै अणियां-भमर, त्रिलोकी नमै विध न्याय तोनूं ।
दहलिया देख गजसिंघ रौ दीकरौ, दीकरा साहजांह तणा दोनूं ।।२।।

शब्दार्थ—कूंत – भाला । आवाहतौ – प्रहार करता हुआ । ढाहतौ – गिराता हुआ । केवियां – शत्रुओं । अजड़ – तलवार । रांमत – खेल । त्यारा – तब । गजण – महाराजा गजसिंह । नांखिया – झोंक दिये । बाज – घोड़ा । गहण – युद्ध । सूर – महाराजा सूरसिंह । पूर – पूर्ण, पूरा । धीबिया – संहार किए । छडाळां – भालों । किता – कितने ही । प्रगट – जाहिर । रजपूत-वट – क्षत्रियत्व, शौर्य । दाख – बता कर । पूरै – पूर्ण । माल – राव मालदेव । दूजै – वंशज । वधै – बढ कर । मेलियौ – झोंक दिया । खाग – तलवार । अणियां – नोंक, पैनी धाराएं । बाज – घोड़ा । खूरै – समूह में । वाहि – प्रहार करके । चौधार – भाला । ढाहिया – मार डाले, गिरा दिए । पार-विण – अपार, बहुत । रूक – तलवार । साराहियौ – प्रशंसा की । हिंदू-राहां – हिंदू धर्मावलंबियों । गवाडे – गायन करवा कर । प्रवाडा – युद्धों, शौर्य के कार्यों । जसौ – महाराजा जसवंतसिंह । गुमर – गर्व । समर – युद्ध । गांजै – पराजित करके । बिहूं – दोनों ।

वदन – मुख । कळपंत – कल्पान्त, प्रलयकाल, नाश । वयळ – सूर्य । वाडव – वडवानल । ऊफणै – उबाल खाता है, जोश खाकर ऊपर उठता है । अमांमौ – अधिक, अपार । मंडांणौ – मंड गया, डट गया । घणै – अधिक । मछर – गर्व, अभिमान । दहुँ – दोनों । तणै – के । सांमहो – सन्मुख, सामने । निधडक – निर्भय, निशंक । अणियां-भमर – सेना में अग्र रहने वाला । त्रिलोकी – तीन लोक, संसार । विध – विधि । तोनूं – तुझको । दहलिया – भयभीत हुए । दीकरा – पुत्र । तणा – के ।

उरड हड़वड़ मचै हूब-छड़ ग्रोरियां, खूब "महबूब" ग्रस भिड़ण खाथै ।
जंग जस बीजळां धार बूठौ "जसौ", मुरादाबगस 'ग्रवरंग' माथै ।।३।।

उजेणी-खेत सुण वात ग्रखिग्रात ग्रा, छातपत बिया ग्रहमेव छांडै ।
दुरत गत दिखण गुजरात रा दळां सूं, मुरधरा नाथ भाराथ मंडै ।।४।।
(रुघौ-मुहतौ वाळरवा वाळौ)

गीत छोटौ सांणोर १०

धुडहड़ियौ सुणै वाजतां ढोले, हव वागी कळपंत हुग्रा ।
धूहड उलटतां धमळा-गिर, खूंद पखै कुण धरै खवा ।।१।।

ग्रायुसां तणा बरफ ऊपड़िया, बाहुड़िया गुड़िया बंगाळ ।
"जसौ" पहाड़ हेमचौ जांणै, तरफ तरफ तूटौ रिण ताळ ।।२।।

तूटै ग्रसण धसण तरवारां, झीक छडाळां दियै झळ ।
"गज-बंध" तणा हेम-गर गळिया, दुहै पतसाहां तणा दळ ।।३।।

"ग्रवरंग" थाट झाट ग्राछटिया, धड़ लूटिया भेळा धरण ।
वाळै हेम जिम बाहुडियौ, रूक रहळि दे झीक रण ।।४।।
(नाथौ सांदू)

शब्दार्थ—उरड – धसान, या साहस । हड़वड – घबराने से उत्पन्न जल्दबाजी, खलबली । हूब-छड़ – भालों के प्रहार । ग्रोरियां – झोंकने पर । ग्रस – ग्रश्व, घोड़ा । भिड़ण – भिड़ने को । खाथै – तेजी से । बीजळां – तलवारों । बूठौ – वर्षा की । जसौ – महाराजा जसवंतसिंह । मुरादा-बगस – शाहजहां का सबसे छोटा पुत्र मुरादबख्श । ग्रवरंग – शाहजहां का तीसरा पुत्र ग्रौरंगजेब । माथै – पर, ऊपर । ग्रखिग्रात – ग्रभूतपूर्व । ग्रा – यह । छातपत – छत्रपति, राजा । बिया – दूसरे । ग्रहमेव – गर्व, ग्रभिमान । दुरत – भयंकर, विकट । भाराथ – भारत । मंडै – रचा ।

धुड़हड़ियौ – ग्रावेगपूर्वक या जोश के साथ उलट पड़ा, ध्वनि करता हुग्रा उलट पड़ा । हव – ग्रब । वागी – विद्रोही । कळपंत – भयभीत । धूहड़ – राव धूहड़ के बंशज, राठोड़ । धमळा-गिर – धवल गिरि, हिमालय पर्वत । खूंद – बादशाह । पखै – पक्ष में, ग्रथवा बिना । खवा – कंधा । ग्रायुसां – ? तणा – के । बाहुड़िया – लौट गये, विसर्जन हो गये । गुड़िया – गिर गये । बंगाळ – यवन । जसौ – महाराजा जसवन्तसिंह । हेमचौ – हिम का । जांणै – मानो । तरफ तरफ – इधर-उधर, चारों ग्रोर । रिण-ताळ – युद्धस्थल । ग्रसण – तीर, बाण । झीक – प्रहार । छडाळां – भालों । तणा=तनय – पुत्र । हेमगिर – हिमालय पर्वत । गळियां – पिघल जाने पर । दल – समूह । थाट – सेना । झाट – प्रहार । ग्राछटिया – पछाड़े । धड़ – शरीर । भेळा – साथ । धरण – भूमि । वाळै – नाला ? हेम – हिमालय । बाहुड़ियौ – वापिस ग्राया, वापिस मुड़ा । रूक – तलवार । रहळि – वायु का ठण्डा ग्रौर महीन प्रवाह । झीक – प्रहार । रण – युद्ध ।

गीत वडो सांणोर ११

भडां पाडतां खूंदता घणा विपरीत भत, ऊपटै डोहतां थटै आरांण ।
दूहूं दळ वहता खिमंता देखिया, पाव "महबूब" जसराज रा पांण ।।१।।

आंठुआं चाढतां धकै साबळ अणी, खेलतां घसळ खत्रवाट आखेट ।
विढंतां सेस मण-गयण लागा वधै, नग भिड़ज करग राजा तणा नेट ।।२।।

चापडै सरद्दां तूसळां चाढतां, पाड़ता चकारै गजां जिम पाथ ।
खळां करता जळण दळां दीठा खरा, है तणा चरण हिंदूपती हाथ ।।३।।

चौगांन करता खुरी वाहता चरण, सोहिया साह थाटां सिघाळा ।
जंग "महबूब" पै आंकवाळिया "जसा", वांक टळियौ भुजां "गजन" वाळा ।।४।।

(नाथौ सांदू)

गीत खुड़द सांणोर १२*

पुडी चडियौ "जसौ" सीस पत-साहां, सुभट जोत भेजवा सक ।
रच कंदळ त्रिण पोहर राखियौ, तरण-मंडळ नट कुंडळ तक ।।१।।

शब्दार्थ—भडां – योद्धाओं । पाडता – गिरता हुआ, मारता हुआ । खूंदता – रौंदता हुआ । भत – भांति, प्रकार । उपटै – ऊमड़ते हैं । डोहतां – ? । थटै – होता है । आरांण – युद्ध । दुहूं – दोनों । खिमंता – चमकता हुआ । पाव – पैर । जसराज – महाराजा जसवंतसिंह । पांण=पाणि – हाथ । आंठुआं – घोड़े के दोनों अगले पैरों और गर्दन के नीचे का भाग । आंठुआं चाढतां – घोड़े के अगाड़ी सेना को लेते हुए, घोड़े के वक्षस्थल का प्रहार दिलाते हुए । धकै – अगाड़ी । साबळ – भाला । अणी – नोंक । घसळ – ? खत्रवाट – क्षत्रियत्व । आखेट – शिकार । विढंतां – युद्ध करते समय । सेस – शेष-नाग । मण-गयण=गगनमणि – सूर्य । वधै – बढते हैं । नग – पैर, चरण । भिड़ज – घोड़ा । करग – हाथ । नेट – ? चापड़े – युद्धस्थल में । सरद्दां – ? तूसळां – ? चकारै – ? । पाथ – अर्जुन । खळां – शत्रुओं । दीठा – देखे । खरा – निश्चय । है-हय – घोड़ा । खुरी – ? । वाहता – प्रहार करते हुए । सोहिया–शोभित हुए । साह – बादशाह । थाटां – सेनाओं । सिघाळा – वीर । पै – पैर । आंकवाळिया – पराकाष्ठा पर पहुंच गया । जसा – महाराजा जसवंतसिंह । वांक – वक्रता, टेढ़ापन । टळियौ – दूर हो गया, मिट गया । गजन – महाराजा गजसिंह । वाळा – के ।

पुडी – युद्ध । जसौ – महाराजा जसवंतसिंह । सीस – पर, ऊपर । कंदळ– युध्द । त्रिण – तीन । पोहर – पहर । तरण-मंडळ – सूर्य मंडल । तक – प्रकार, तरह ।

---

*गीत नं० ४ से गीत नं० १२ तक इतिहास-प्रसिद्ध धरमत (उज्जैन) के युध्द सम्बन्धी हैं जिसके बिषय में विशेष जानकारी देने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती है ।

चौरंग भडां मोख चालवतै, थीयो तमासो तेण थिर।
वादी तणा कड़ा जिम वणियो, "सूर" तणो बिबंद सर ॥२॥

समर उजैंण रचै नव - सहसो, सूर सहस भेदे नव थांन।
ख्याली चकर जहीं खेडेचै, अरक रथां भेदे असमांन ॥३॥

जुध "जसराज" जि तूं जोधारां, धारां मुहै निजोड़ धड़।
नट - कुंडळ जिम भेदे निसरै, भांण - मंडळ तिम छेद भड ॥४॥

संपेखियो उभै सुरतांणां, सुरां नरां असुरां सारांह[*]।
हिंदू तुरक खिलाय हिलाया, गाजी रै बाजी गजसाह ॥५॥
(जगन्नाथ सांदू)

गीत-प्रहास सांणोर १३[•]

उभै फाबिया विरद "जसराज" खगि ऊजळा,
भुजां भारथ दिली भार भळियो।
वाळियौ आंक "औरंग" सरिस वाजतै,
वळै ही मुरडतै आंक - वळियो ॥१॥

चौरंग –युद्ध। थीयो – हुआ। थिर – स्थिर। वादी – नट, बाजीगर। नव-सहसो– राठोड़। ख्याली – बाजीगर। जहीं – जैसे। खेडेचै – राठोड़। अरक – सूर्य। धारां – तलवारों। मुहै – अगाड़ी। निजोड़ – काट कर, पृथक कर। भांण-मंडळ – सूर्य-मंडल। संपेखियो – देखा। उभै – दोनों। सुरतांणां – बादशाहों।

फाबिया – शोभित हुए। विरद – विरुद, कीर्ति, यश। खगि – तलवार। ऊजळा – उज्ज्वल। भार उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी। भळियो – स्वीकार किया, जिम्मे लिया। वाळियौ-आंक – महान कार्य किया, पराकाष्टा का कार्य किया। सरिस – समान। वाजतै – युद्ध करने पर। वळै – फिर, और। मुरडतै – क्रोध करने पर, क्रुद्ध होने पर। आंक-वळियो – पराकाष्टा का कार्य हो गया।

---

[*] गीत का अन्तिम द्वाला छंद-शास्त्र के अनुसार अशुद्ध है।

[•] गीत नं १३ और १४ का संबंधित इतिहास निम्न प्रकार है—"धरमत के युद्ध के पश्चात् औरंगजेब आगरे की तरफ चला। उस समय उसके पास ८०००० के लगभग सेना थी। इस महती सेना को लिए औरंगजेब और मुराद समूगढ (फतेहबाद) पहुँचे जो आगरे से साढे सात कोस हैं। वहीं पर दारा और औरंगजेब में मुकाबला हुआ और महा घोर युद्ध हुआ। इस युद्ध में दारा के बांई ओर की सेना का सेनापति राठोड़ रामसिंह ने बड़ा

ही वीरोचित कार्य किया। उसने शत्रु सेना की पंक्तियों को चीर कर मुरादबख्श को बड़ी वीरता और फुर्ती से घायल कर दिया। इतना ही नहीं वरन वह अम्बारी का रस्सा काट कर उसे हाथी से गिराने की कोशिश कर रहा था। मुराद घायल हो गया था और चारों ओर से राजपूत वीरों से घिर गया था। इस समय उस पर रामसिंह राठौड़ भूखे सिंह के समान टूट पड़ा। इतने में उसके एक तीर मर्म स्थान पर लगा जिससे वह अपने अभिष्ट कार्य में सफल नहीं हो सका और स्वर्ग को सिधारा।

इसी प्रकार उधर औरंगजेब पर महाराजा जसवंतसिंह का चचेरा भाई राठौड़ रूपसिंह चला। यह वीर आगे बढा और औरंगजेब के हाथी के पास पहुंचा और वहां पर घोड़े से उतर ऐसा पराक्रम दिखाया कि औरंगजेब उसके रण-कौशल, फुर्ती और साहस को देख कर चकित हो गया। इस वीर को जीवित पकड़ने की आज्ञा दी परन्तु वह रूपसिंह को पकड़वा नहीं सका। वह वीर रणभूमि में कई शत्रुओं को धराशायी करता हुआ स्वयं भी टुकड़े-टुकड़े होकर वीर-गति को प्राप्त हुआ। इस स्थान पर दारा को खलील-उल्ला खां ने कुमंत्रणा दी—वह पराजित होकर आगरे की तरफ भाग गया और वहां पर खजाने के कीमती जवाहरात और आवश्यकीय सामान लिया और वहां से दिल्ली चला गया।

औरंगजेब भी वहां से सीधा आगरे गया और अपने पुत्र सुलतान मुहम्मद को भेज वहां के किले पर अधिकार कर बादशाह शाहजहां को कैद कर लिया। यहां पर औरंगजेब ने विचार किया कि मैंने मुरादबख्श को राज्य का प्रलोभन देकर अपने शामिल किया था। बादशाह को तो कैद कर लिया परन्तु एक कंटक अभी अवशेष है। इसकी सफाई कर लेनी चाहिए। इस बात को मन में रखा और दारा के पीछे चला, मार्ग में जाते हुए मथुरा पहुँचा, वहां मुराद को खूब शराब पिलाया और उसे पागल बना दिया तथा इस अवस्था में इसको भी कैद कर लिया। अब उसके लिए दारा ही एक कंटक था, उसे मिटाने के लिए वह दिल्ली आया। इतने में दारा दिल्ली छोड़ कर लाहोर की ओर चला गया। औरंगजेब उसके पीछे गया। मार्ग में जाते सं० १७१५ की श्रावण सुदि १ (ई० सन् १६५८ ता० २१ जुलाई), अज्जाबाद में तख्त पर बैठा। इधर औरंगजेब ने वि० स० १७१५ भाद्रपद वदि ११ (ई० स० १६५८ ता० १४ अगस्त) आम्बेर के राजा जयसिंह के मारफत महाराजा जसवंतसिंह को अपने पास बुलाया। इस समझौते में राव अमरसिंह राठौड़ का पुत्र रायसिंह भी शामिल था। महाराजा जसवतसिंह के पास बादशाह ने पत्र भेजा, उसमें लिखा था कि तुम स्वामिभक्त हो, मैं भी ऐसे स्वामिभक्तों को चाहता हूं। हमारे हजूर में हाजिर हो जाओ और खर्च के लिए सांभर के खजाने से पांच लाख रुपये और पचास हजार की हुंडियां भेजीं। महाराजा जसवंतसिंह ने भी समय की गति देख कर तदनुसार व्यवहार किया। जोधपुर से चल कर पंजाब में जहां औरंगजेब का पड़ाव था, वहां पहुंचे। औरंगजेब ने इनका इस समय भली भांति सत्कार किया। खासा खिलअत, जरदोजी झूल और चांदी के साज वाला एक हाथी और एक हथनी तथा एक बहुमूल्य जड़ाऊ तलवार दी। तत्पश्चात् औरंगजेब सतलज नदी पर पहुंचा तब उसने महाराजा को फिर खासा खिलअत, जड़ाऊ जमधर मोतियों का एक गुच्छा और एक परगना, जिस की आमदनी ढाई लाख रुपया

वार्षिक थी दिया, और महाराजा को कहा कि अब तुम दिल्ली जाओ और वहां की निगरानी रखो। महाराजा जसवंतसिंह औरंगजेब का आदेश पाकर वहां से वि० सं० १७१५ की आश्विन सुदि १ को दिल्ली पहुंच गये।

औरंगजेब दारा के पीछे चला। दारा ने लाहोर में किलेबंदी करने की चेष्टा की परंतु वह विफल रहा। अब वह पंजाब से मुलतान की तरफ चला। उस समय उसके हितैषियों ने उसको काबुल जाने की सलाह दी, परन्तु दुर्भाग्यवश दारा ने काबुल जाना स्वीकार नहीं किया और कच्छ में होता हुआ अहमदाबाद में पहुंचा। उस समय औरंगजेब का श्वसुर अहमद खां वहां सूबहदार था। उसने दारा के साथ बहुत अच्छा बरताव किया। तब यह खबर औरंगजेब को मिली कि दारा अहमदाबाद में है। उसने कई वार तो दारा के पीछे अहमदाबाद जाने का विचार किया परन्तु इतने में यह खबर उसको मिली कि शुजा दिल्ली पर आता है, सुनते ही उसने दारा के पीछे जाने का विचार छोड़ दिया और शुजा को रोकने के लिए तत्काल ही वि० सं० १७१५ के मार्गशीर्ष में मुलतान से रवाना हो दिल्ली पहुंचा। महाराजा जसवंतसिंहजी दिल्ली से औरंगजेब का स्वागत करने को सामने गए। उस समय उसने फिर महाराजा को खासा खिलअत और एक सदरी दी और जशन के उत्सव पर मार्गशीर्ष सुदि ९ को एक जड़ाऊ तुर्रा और दिया।

शाह शुजा ने खजुआ नामक एक छोटे गांव के निकट पड़ाव डाला और औरंगजेब की राह देखने लगा, क्यों कि उसको सूचना मिल गई थी कि औरंगजेब ने अपने पुत्र सुलतान मुहम्मद को बड़ी सेना देकर मुकाबले के लिए रवाना कर दिया है। ज्यों ही सुलतान मुहम्मद सेना लिए वहां आया त्यों ही औरंगजेब स्वयं भी वहां पहुंच गया। शुजा इलाहाबाद के समीप कड़ा नामक नगर में है, जो इलाहाबाद से चार कोस के फासले पर था। वि० सं० १७१५ माघ सुदि ६ (ई० सं० १६५९ ता० ४ जनवरी) को खजुऐ के पास लड़ाई के योग्य एक विशाल मैदान था उसको बीच में रख कर युद्ध की तैयारी हुई। उस समय महाराजा जसवंतसिंह औरंगजेब के दक्षिण भाग की सेना का संचालक था।

इसी समय शाह शुजा ने महाराजा जसवंतसिंह के पास पत्र भेजा। उसमें उसने लिखा था कि आप जैसे स्वामी-भक्त राठोड़ वीर के विद्यमान होते हुए भी औरंगजेब ने अपने वृद्ध पिता (शाहजहां) को बंदी कर दिया है तथा भाई-भतीजों का संहार करने के विचार में है। ऐसे महापापी कुटिल हत्यारे की सहायता न करके आप मेरी सहायता करें और बूढे शाहजहां को कारागार से मुक्त करें। महाराजा ने शुजा की प्रार्थना पर ध्यान दिया और संदेश भेजा कि आज रात्रि के पिछले प्रहर में मैं (महाराजा जसवंतसिंह) सुलतान मुहम्मद की सेना पर पीछे से आक्रमण बोल दूंगा। आप भी ठीक इसी समय सामने से आकर विपक्षी की सेना पर टूट पड़ें। रात्रि के आक्रमण से औरंगजेब का बल एकदम क्षीण हो जायगा और अपना मनोरथ सफल हो जायगा। महाराजा ने वैसा ही किया। उसी रात्रि में राठोड़ महेशदास, रामसिंह, हरदास और चोहान बलदेव आदि वीरों के साथ सुलतान मुहम्मद की सेना पर पीछे से आक्रमण बोल दिया। रात्रि का समय था एकाएक आक्रमण हुआ जिससे औरंगजेब की सेना घबरा कर इधर उधर भागने लगी। कहा जाता है कि आधी

कीध तैं तिका राव-रांण जांणै कमध, रहावण वात सिर दुवै राहां ।
"जसा" अखिआत अै साहि सूं जूटतां, सार बळि लूटतां पातसाही ।।२।।

"गजन" रा नमो तो पराक्रम खत्री-गुर, समर दुहुँ तणा रवि-चंद साखी ।
खागि दाखै अचळ खूंद वड खैंगरे, दूंद करि खूंद सू अचड़ दाखी ।।३।।

शब्दार्थ —कीध – किया । तैं – तूने । तिका – वह । राव-रांण – राजा महाराजा । जांणै – जानते हैं । कमध – राठौड़ । रहावण – रखने के लिए । सिर – ऊपर, पर । दुवै – दोनों । राहां – धर्मों । जसा – महाराजा जसवंतसिंह । अखिआत – अद्भुत, अपूर्व । अै – ये । साहि – बादशाह । जूटतां – युद्ध करने पर । सार – तलवार । बळि – बल, शक्ति । गजन – महाराजा गजसिंह । खत्री-गुर – महान् वीर, राजा । समर – युद्ध । दहुँ – दोनों । तणा – के । रवि-चंद – चांद सूर्य । साखी – साक्षी । दाखै – कह कर, प्रकट कर । अचळ – अटल, कीर्ति । खूंद – यवन, बादशाह । वड – बड़ा, महान् । खैंगरे – संहार कर के, मार कर के । दूंद – द्वन्द्व-युद्ध । करि – करके । अचड़ – कीर्ति । दाखी – प्रकट की, बताई ।

के करीब सेना तितर बितर हो गई । परन्तु शुजा वहां नियत समय पर नहीं आ सका । यदि वह उस समय वहां पर पहुंच जाता तो विजय उसके हाथ ही थी । परन्तु बादशाही तख्त औरंगजेब के भाग्य में बदा था । महाराजा ने सेना तितर बितर हुई देख बादशाही खजाना और सामान लूट लिया और शुजा की प्रतीक्षा में कुछ दूर हट कर ठहर गए । जब शुजा को आता नहीं देखा तो प्रातः काल होते ही महाराजा ने मारवाड़ की ओर गमन कर दिया । शुजा देरी से पहुंचा ।

अब दारा से संबंधित वृत्तान्त भी पढिए । शुजा से निपट कर औरंगजेब ने एक बड़ी सेना अमीनखां मीरबख्शी को देकर जोधपुर पर भेजी तथा जोधपुर का राज्य राव अमरसिंह के पुत्र रायसिंह के नाम लिख दिया । औरंगजेब को महाराजा जसवंतसिंह का बड़ा भय था अतः वह स्वयं भी अजमेर जाने का बहाना कर वहां से रवाने हुआ । जब महाराजा को यह संदेश मिला कि जोधपुर राव रायसिंह को लिख दिया है और उसकी तामील करने के लिए अमीन खां एक बड़ी सेना लेकर आ रहा है तो महाराजा नं आसोप ठाकुर कूंपावत नाहर खां राजसिंहोत और मुहणोत नैणसी को दस हजार सेना के साथ औरंगजेब की सेना से मुकाबला करने के लिए रवाने कर दी । उसने मेड़ता नगर में पड़ाव डाला । तत्पश्चात् महाराजा स्वयं एक बड़ी सेना लेकर जोधपुर से बीलाड़ा आए । इसी अर्से में दारा शिकोह गुजरात में था। उसने अहमदाबाद के सूबेदार को निकाल दिया । गुजरात से दारा ने सहायता के लिए महाराजा के नाम पत्र लिख भेजा कि यह समय है, आप हमारी सहायता करें । महाराजा ने भी सहायता देना स्वीकार कर लिया । उपर्युक्त ऐतिहासिक विवरण का ही वर्णन इन गीतों में हुआ है । अतः गीतों के स्पष्टीकरण के लिए ही इतना विस्तारपूर्वक यह नोट दिया गया है ।

साह कळि सेन लूटै तखत साह चा, वजाड़े "जोध" हर जैत-वाजा ।
दीपिया ऊजळा प्रवाडा दुवै दुहु, राज रा भुज सुजस महाराजा ।।४।।
(नरहरदास बारहठ)

गीत वडो सांणोर १४

तरफ हुग्रो "दारा" तणो हुग्रो "सूजा" तरफ, पिढु लिया खजांना पार पखै ।
खून जिता करै "जसो" बळ खाग रै, रोद इता राह मांही राखै ।।१।।
लूट मालू सहर खोस खेळू लियौ, ग्रावियौ मिळण कर कटक ग्राटोप ।
छत्र-धरण दिली बैठो भला छिपावै, कमध रा गुना ग्रर ग्रापरो कोप ।।२।।
ग्रागरै हवैली साहजां ग्रटकियौ, हूग्रो कुळ कातल करण हेवा ।
इसौ चिकतौ जिकौ मन माहि ग्रावटै, कमंध सू सकै नहीं मांग केवा ।।३।।
उजैणी खेत "महबूब" ग्राफाळियो, गजां कूंतां भलां ग्रभनमै "गंग" ।
जद लियो परख ग्रोगुण न कुं जतावै, ग्रांख रै फरूकै साह "ग्रवरंग" ।।४।।
हियै होळी हुग्रै दीध दुख हजारां, विचारै नित मुख सूं वाखांणै ।
सूरपण "जसा" महराज रो जगत सिर, जिसौ है तिसौ ग्रवरंग जांणै ।।५।।
(नरहरदास बारहठ)

शब्दार्थ—साह – बादशाह । कळि – युद्ध । चा – का । वजाड़े – ध्वनिमान कर के, बजा कर । जोध – राव जोधा । हर – वंशज । जैत – विजय, जीत । दीपिया – शोभित हुए । प्रवाड़ा – युद्ध, युद्ध के कार्य । दुवै – दोनों । राज – श्रीमान्, ग्राप ।

पिढु – ? पार-पखै - पर-पक्ष, शत्रुपक्ष । खून – गुनाह, ग्रपराध । जसो – महाराजा जसवंतसिंह । रोद – यवन । इता – इतने । राह – मार्ग । मांही – में । खेळू – मुखिया, प्रधान । कटक – सेना, दल । ग्राटोप – विस्तृत, बड़ी । छत्र-धरण – बादशाह, राजा । भला – ठीक । कमध – राठौड़ । ग्रर – ग्रौर । साहजां – बादशाह शाहजहां । ग्रटकियो – रोक में दिया, बदी बनाया । कातल – कातिल, हत्या करने वाला । हेवा – ग्रादी । इसौ – ऐसा । चिकतौ – चकताई वंश का । ग्रावटै – कुढता है, जलन करता है । केवा – गुनाह, ग्रपराध । ग्राफाळियो – टक्कर ली, भिड़ाया । कूंतां भालो । भलां – ठीक । ग्रभनमै – वंशज । गंग – राव गांगा । जद – जब । परख – परीक्षा कर के । ग्रोगुण – ग्रवगुण, ग्रपराध, गुनाह । न कुं – कुछ भी नहीं । जतावै – प्रकट करता है । ग्रांख रै फरूकै – ग्रांख के इशारे पर, संकेत पर । साह ग्रवरंग – ग्रौरंगजेब बादशाह । वाखांणै – प्रशंसा करता है । सूरपण – शौर्य, बहादुरी । जसा महराज – महाराजा जसवंतसिंह । सिर – में, पर, ऊपर । जिसौ – जैसा । तिसौ – तैसा, वैसा ।

गीत प्रहास सांणोर १५

समर सगत-पुर मँडोवर छतर-धर समोसर,
तकर कर बजर बर धजर तांजौ।
उसर बगतर ऊग्रर वीर[1] सांसर अतर,
"गंग" हर कळोधर कहर[2] गांजौ ॥१॥

मेलियौ "जसै" वळ दिली-दळ मचकतां,
प्रबळ भुज बळ सरळ तरळ पूगौ।
धुब्बै[3] मुगळ[4] अकळ[5] कांठळां सरल धर,
अरळ साबळ भरळ करळ ऊगौ ॥२॥

वार विकरार सिरदार विध वाहियौ,
समर भर भार[6] धर भार[7] सूरै।
सार सेलार ऊग्रार भंभार[8] सर,
पार चौधार कर पार पूगौ ॥३॥

काळ लंकाळ करठाळ जड़ियौ कमंध,
वहै विकराळ रगताळ[9] वांई।

पाठान्तर

१. क. मगर। २. क. कहै। ३. क. ध्रवै। ४. क. मैंगल। ५. ख. सदळ। ६. क. भीर। ७. क. धार धर। ८. ख. वंभार। ९. ख. रत खाळ।

शब्दार्थ—समर – युद्ध। सगत-पुर – दिल्ली। छतर-धर – राजा, बादशाह। समोसर – बराबर। तकर – त्वरा। बजर – वज्र। धजर – भाला। तांजौ – तेरा। उसर – असुर, यवन। बगतर – कवच। ऊग्रर – उर, वक्षस्थल। सांसर – ? गंग – राव गांगा। कहर – भयंकर, आपत्ति। गांजौ – भाला। जसै – महाराजा जसवंतसिंह। वळ – फिर। मचकतां – दबने पर। अकळ – ? कांठळां – घटाएं। सरळ – ? । अरळ – ? । साबळ – भाला। भरळ – चमक, चमकयुक्त। करळ – भयंकर। ऊगौ – उदय हुआ। वार – समय। विकरार – भयंकर। वाहियौ – चलाया। सार – शस्त्र। सेलार – भाला। ऊग्रार – वक्षस्थल में। भंभार – बड़ा छेद। चौधार – भाला। लंकाळ – वीर। करठाळ – भाला। जड़ियौ – प्रहार किया। कमंध – राठौड़। रगताळ – खून।

भेद छकडाळ चगताळ चूनाळ[1] भिद,
ताळ गो झाळ भर धरण तांई ।।४।।

खतम अवसांण खैंपांण रहिया थकत[2],
रीझियौ भांण दइवांण[3] राजी ।
सिव सगत सवाडा अखाड़ा सेल रा,
गवाड़ै प्रवाड़ा सुतन "गाजी" ।।५।।

(नाथो सांदू)

गीत वडो सांणोर १६

कहर करांमत "जसा" हिंदवांण चा सहसकर,
झूझ कुण छात-धर अवर झालै ।
तेज सुजडां तणै ताप सत्र "गजण" तण,
हेम - अनड़ां ज्यूं ही गळै हालै ।।१।।

पिता जमराज खट - तीस करणाधपत,
ओपियौ जगत कीधां उजाळौ ।
धोम तो खाग वरियांम जोधां - धणी,
प्रसण पिघळै चलै ज्युं हिज पाळौ ।।२।।

पाठान्तर

१. ख. चुगलाल । २. क. थरक । ३. क. हिंदवांण ।

शब्दार्थ—छकड़ाळ – कवच । चगताळ – यवन । चूनाळ –कलेजा । धरण – पृथ्वी । तांई – तक । खतम – पूरा । अवसांण – अवसर । खैंपांण – यवन । रीझियौ – प्रसन्न हुआ । सवाडा – सवाया, विशेष । अखाड़ा – युद्ध । सेल – भाला । गवाड़ै – गवाते हैं । प्रवाड़ा – युद्ध । सुतन – पुत्र । गाजी – महाराजा गजसिंह ।

कहर – आपत्ति, भयंकर । करांमत – चमत्कार । जसा – महाराजा जसवंतसिंह । हिंदवांण चा – हिन्दुस्तान का, या हिंदुओं का । सहसकर – सूर्य । झूझ – युद्ध । छात-धर – राजा । अवर – अन्य, और । झालै – सहन कर सके । सुजडां – तलवारों । तणै – के । ताप – तेज । सत्र – शत्रु । गजण – महाराजा गजसिंह । तण–तनय, पुत्र । हेम-अनड़ां – हिम पर्वतों, बर्फ के पर्वतों । हालै – चला जाता है । करणाधपत– सूर्य । ओपियौ – शोभित हुआ । कीधां – किए हुए । उजाळौ – प्रकाश । प्रसण – शत्रु । पिघळै – द्रवीभूत होते हैं । पाळौ – बर्फ ।

कळकळां दळां चहुंवळां फाबै करण,
घरै वार हेकल पाट - ऊधोर ।
तूटतो जाय वीजू - जळां तणो ताव,
जळां बाधां ज्युंही खळां चौ जोर ।।३।।
कहर लसकर डमर पसर घरहर कियां,
"सूर" हर तेज खत्रवाट साजा ।
हेम-गर ज्यूं ही गळै यर हर हलै,
रूक नद कर तणो ताप राजा ।।४।।

गीत पंखाळो १७

हळवळ दळ अकळ "जसा" हीलोहळ, भळहळ कूंत हद बीज भत्त ।
झळहळ खाग दोयण स झाडण, गढ अरियण घरां विसम गत्त ।।१।।
बिनै सबळ भुज अकळ सहंस बळ, खळ दळ खेरू करण खग ।
'गजपत' सुतन सनढ गढ गाहण, कोय न तो सरखौ करग ।।२।।
फौजां लगस तेजियां फरहर, घर-हर त्रंबागळ दळ घेर ।
कोटां मोटां कळह केवियां, "जोधा" हरी करै जुध जैर ।।३।।
(सादूळजी खिड़ियौ)

शब्दार्थ—कळकळां – चमचमाते हुए । चहुंवळां – चारों ओर । हेकल – एक । पाट-ऊधोर – राजा । वीजूजळां – तलवार । तणो – का । खळां – शत्रुओं । चौ– का । डमर – समूह । सूर – महाराजा सूरसिंह । खत्रवाट – क्षत्रियत्व । साजा – पूर्ण, अखंड, कुशल । हेम-गर – हिमालय पर्वत । यर – अरि, शत्रु । हर – वंशज । हलै – चलते हैं । रूक – तलवार । नद – नदी ।

हळवळ – चलने या गतिमान होने की ध्वनि, चाल, गति । दळ – सेना, फौज । अकळ – महान, जबरदस्त । जसा – महाराजा जसवन्तसिंह । हीलोहळ – समुद्र, सागर । झळहळ – चमकता है, दीपता है, चमक । कूंत – भाला । हद – तेज, बहुत । बीज – बिजली । भत्त – भांति, प्रकार । झळहळ – देदीप्यमान, चमक-दमक-युक्त । खाग – तलवार । दोयण – शत्रु । स-झाड़ण – संहार करने को, मारने को । अरियण – शत्रु । विसम – विषम, भयंकर । गत्त – गति, हालत । बिनै – दोनों । अकळ – बहुत ? । सहस-बळ – अधिक शक्तिशाली । खळ – शत्रु । खेरू – संहार, ध्वंस । खग – तलवार । गजपत – महाराजा गजसिंह । सुतन – पुत्र । सनढ – वीर । गाहण – ध्वंस करने को । तो – तेरे । सरखौ – समान, सदृश । करग – तलवार । लगस – लम्बकायमान, पंक्ति, समूह । तेजियां – घोड़ों । फरहर – ? । घर-हर – ध्वनि । त्रंबागळ – नक्कारा । घेर – आवेष्ठन । मोटां – बड़ों, महान । कळह – युद्ध । केवियां – शत्रुओं । जोधा – राव जोधा । हरी – वंशज । जेर – तंग, परेशान ।

गीत वेलियो सांणोर १८

चौधारां लाल लाल खग चौरंग, वयँडां थँडां ओरवै वाज।
फौजां कहर तिमर भर फाड़ै, रवि जिम जळहळियो "जसराज" ॥१॥

अत महबूब तेज ऊफणतै, घण आसुर घड़ रो धण घाव।
"गजपत" तणौ वहै खत्रियां-गुर, रज-पत ज्युं ही प्रथीपत राव ॥२॥

चौधारां लाखीक चाडतो, किलम पंचाहर कीयां कर।
राड़ विभाड़ सोहियौ राजा, अरक्क ज्यूंई दळ फाड यर ॥३॥

अस सपतास आलमां ऊपर, खळ दळ राकस वाहै खग्ग।
कमंधां घर ऊजळौ कळहण, जग-चख जिम पेखीयौ जग्ग ॥४॥

(चांवडदांन बारहठ)

गीत छोटौ सांणोर १९

दध पाजा टळी कना छिळियौ दळ, ताजा भड़ साजा है तंत।
राजा आज सवारा रुड़िया, बाजा कै ऊपर "जसवंत" ॥१॥

शब्दार्थ—चौधारां – भालों। खग – तलवार। चौरंग – युद्ध-स्थल, युद्ध। वयँडां – हाथियों। थँडां – सेनाओं। ओरवै – झोंकता है। बाज – घोड़ा। कहर – भयंकर। तिमर – अंधेरा। भर – पूर्ण, घना। फाड़ै – विदीर्ण करता है। रवि – सूर्य। जळहळियो – प्रकाशमान हुआ, देदीप्यमान हुआ। जसराज – महाराजा जसवंत सिंह। अत – अति, अधिक। महबूब – घोड़े का नाम। ऊफणतै – जोश खाते हुए। घण – बहुत। आसुर – यवन। घड़ – सेना। गजपत – महाराजा गजसिंह। तणौ – तनय, पुत्र। वहै – चलता है। खत्रियां-गुर – वीर, राजा। रज-पत – कांति, दीप्ति वाला (सूर्य)। ज्युंही – जैसे ही। प्रथीपत-राव – राजा। लाखीक – लाख रुपयों का, घोड़ा। किलम – यवन। पंचा-हर – ? । कीयां – किए हुए। राड़ – युद्ध, लड़ांई। विभाड़ – नाश कर, मिटा कर, संहार कर। सोहियौ – शोभित हुआ। अरक्क – सूर्य। फाड – विदीर्ण करके। यर-अरि – शत्रु। अस सपतास – सप्ताश्व। आलमां – संसार। कळहण – युद्ध। जग-चख– सूर्य। पेखियौ – देखा। जग्ग – संसार।

दध – उदधि, समुद्र, सागर। पाजा – सीमा, मर्यादा। टळी – पृथक हुई, उल्लंघन हुई। कना – अथवा, या। साजा – सुसज्जित। है-हय – घोड़ा। तंत – तंत्र, सेना। सवारा – विशेष, सवैरा, प्रातःकाल। रुडिया – बजे, प्रतिध्वनित हुए। वाजा – वाद्य। कै – किस। ऊपर – पर।

थरहर सेस कोम कँध थरकै, जोध अडर कै माथै जोर ।
फरहर चींध नवरै फारक, घरहर सिलह त्रंबाळां घोर ।।२।।

तरवर डहै ऊक्कसै ताजी, परबत जुग्रळै हुग्रै पण ।
मद-झर वहै किणै सिर मारू, त्रहै दमांमा "गजन" तण ।।३।।

वदै महल छतीस राज-वंस, कमध नगारा त्रहळ कियै ।
दहल पड़ै अवरां देसोतां, थारै सहल सिकार थियै ।।४।।

(रुघौ मुहतौ)

गीत वेळियौ सांणोर २०*

अरि सीस धरै ज्यां राख करे अंग, पूगै रण साचो पारीख ।
... ... ।।१।।

वप असहथां प्राजळै विढतां, पूगो कीरत समँदां पाज ।
जटी करग आभूखण जिसड़ौ, जडळग तूझ तणौ जसराज ।।२।।

शब्दार्थ—थरहर – कंपायमान । कोम – कूर्म, कच्छपावतार । थरकै – कंपायमान होते हैं । जोध – वीर । अडर – निर्भय । माथै – पर, ऊपर । फरहर – लहलहाना । चींध – ध्वजा, झंडा । नवरै – ? फारक – शत्रु । घरहर – आवाज । सिलह – अस्त्र-शस्त्र । त्रंबाळां – नगारों । घोर – ध्वनि । तरवर – वृक्ष । डहै – ? ऊक्कसै – छलांग भरते हैं । ताजी – घोड़ा । जुग्रळै – पैर । पण – भी । मद-झर – हाथी । किणै – किस । सिर – ऊपर, पर । मारू – राठौड़ । त्रहै – बजते हैं । दमांमा – नगाड़ा, या ढोल । गजन – महाराजा गजसिंह । तण – तनय, पुत्र । वदै – कहती है । महल – महिला, स्त्री । कमध – राठौड़ । त्रहळ – ध्वनिमान । दहल – भय, आतंक । अवरां – अन्य । देसोतां – राजाओं । थारै – तेरे । सहल – सहज, साधारण । थियै – होती है ।

सांची – सत्य । पारीख – परीक्षा ।

वप – वपु, शरीर । असहथां – शत्रुओं । प्राजळै – जलता है । विढतां – युद्ध करते (समय) । पूगी – पहुंच गई । पाज – तट, सीमा । जटी – महादेव । करग – हाथ । जिसड़ौ – जैसा । जडळग – तरवार । तूझतणौ – तेरा ।

---

*गीत नं० १५ से गीत नं० २० तक की रचनाओं में महाराजा के भाले, तलवार, सेना आदि के वर्णन में कवियों ने भिन्न-भिन्न प्रकार के अनूठे भावों को प्रदर्शित किए हैं ।

जग सारी जांणै जोधपुरा, चौरंग तणी वार अण-चूक ।
जुडतां लाख दोयणां जाळै, रूद्र कड़ा सारीखौ रूक ।।३।।

हाथै तूझ कमाळी हाथै, कळह समै चालतौ काळ ।
करणा भसम रिमां नवकोटा, कांकण भसम जिसौ करमाळ ।।४।।

(जगन्नाथ सांदू)

गीत-प्रहास सांणोर २१*

प्रबळ दुरंग "वधनोर" वस करंतै जगपति, दाह दावायतां सबळ दीधौ ।
पहट थीया कटक कळै खैंगां-पगै, केल-पुर घूंधळौ गिरंद कीधौ ।।१।।

हैमरां हींस नर लसकरां ऋह हुई, वहै सिंधुर कहर समर वैंडा ।
आहाडा खंड रज-मँडळ ओछाइयौ, पहाडां अगम सर सुगम पैंडा ।।२।।

हाक सुण गरद छायौ दुडै वेर हर, वडम जस डाक जग सरै वाजी ।
लसकरां तणा राह वळोवळ लुंबिया, गिरवरां ऊपरा सुतन "गाजी" ।।३।।

शब्दार्थ—चौरंग – युद्ध । वार – प्रहार । अणचूक – अमोघ । जुडतां – युद्ध करते समय । दोयणां – शत्रुओं । रूद्र - महादेव । सारीखौ – समान, सदृश । रूक – तलवार । हाथै तूझ – तेरे हाथ में । कमाळी हाथै – महादेव के हाथ में । कळह – युद्ध । काळ – मृत्यु, यमराज । नवकोटा – नवकोट (मारवाड़) का अधिपति, राठौड़ । कांकण – कंकन, वलय । भसम – भस्मासुर । जिसौ – जैसा । करमाळ– तलवार ।

दुरंग – दुर्ग, किला । जगपति – राजा दाह – जलन, कुढन । दावायतां – शत्रुओं । दीधौ – दिया । पहट – ध्वस्त । थीया – हो गये । वळै – फिर, और । खैंगां – घोड़ों । पगै – पैरों से । केल-पुर – सीसोदिया वंश का राजपूत । गिरंद – पर्वत । कीधौ – किया । हैमरां-हयवरां – घोड़ों । हींस – हिनहिनाहट । ऋह – ध्वनि । सिंधुर – हाथी । कहर – भयंकर, जबरदस्त । समर-वैंडा – युद्धोन्मत्त । आहाडा – गहलोत वंश का क्षत्रिय । रजमंडळ – धूनि, समूह । ओछाइयौ – आच्छादित हुआ । अगम – दुर्गम्य । सर – ऊपर, पर । पैंडा – यात्रा, गमन । हाक – आवाज, पुकार । गरद – धूलि । छायौ – आच्छादित हो गया । दुड़ै – भाग गये । वैर-हर – शत्रु, वंशज । वडम – बड़प्पन, महानता । डाक – नगाड़ा । वळोवळ – चारों ओर । लूंबिया – झूम गये । सुतन – पुत्र । गाजी – महाराज गजसिंह ।

---

*इस गीत का वास्तविक इतिहास उपलब्ध नहीं हुआ ।

अकळ खूमांण यर रजी अवछाइयो, वाजै रस त्रंबागळ प्रबळ वाजा ।
फौज आगळ गजां बरंग धजां फब, राज पंथ सुरंगां सीस राजा ।।४।।

(अज्ञात)

गीत सीहणो २२

मन-भावै चलै खत्रीवट मारग, वीरत दावै घड़ा वरै ।
राजा-पती "जसो" महाराजा, कमध सुहावै जकूं करै ।।१।।

दोखियां तणी घणी धर दाबै, फाबै जुध जुध करै फतै ।
साह तूझ संक वहै "गजन" सुत, मैमत चित वहै आप मतै ।।२।।

पालै दळद सेवगां पांणां, दुरंग पालटै "खुरम" दुवै ।
"सूजा" हरौ असहतां सालै, हालै मन मांनियै हुवै ।।३।।

खत्रवट चलै "जसौ" खेडेचौ, डिगियौ व्रहमंड भुजां डहै ।
रंग पारकै न रीझै राजा, राजा रंग आपरै रहै ।।४।।

(नाथौ सांदू)

गीत वडौ सांणोर २३

"जसै" पाड़िया खेत भड नेत-बंधा जिकै, लगै परमळ सदळ लोह लागै ।
सबळ पत्र भरै रत्र पी न सकै सकति, अलिअळां तणा गुंजार आगै ।।१।।

शब्दार्थ—अकळ – सम्पूर्ण, पूरा । खूमांण – रावल खूमान के वंशजों का देश । रजी – धूलि । अवछाइयो – आच्छादित हो गया । रस – ? । त्रंबागळ – नगाड़ा । आगळ – अगाड़ी । बरंग – ? ? धजां – ध्वजाएं । फब – शोभित होकर । सुरंगां – ? । सीस – ऊपर ।

खत्रीवट – क्षत्रियत्व । वीरत – शौर्य, बहादुरी । दावै – कारण, हेतु । घड़ां – सेना । वरै – वरण करता है, स्वीकार करता है । जसौ – महाराजा जसवंतसिंह । दोखियां – शत्रुओं । तणी – की । घणी – अधिक । धर – भूमि, धरा । दाबै – अधिकार में करता है । साह – बादशाह । संक – भय, डर । गजन – महाराजा गजसिंह । मैमत – मस्त, मदोन्मत्त । मतै – विचार । पालै – रोकता है, मिटाता है । दळद – कंगाली, निर्धनता । पांणां – भुजाओं । दुवै – पुत्र, वंशज । सूजा – राव सूजा । हरौ – वंशज । असहतां – शत्रुओं । सालै – खटकता है । हालै – चलता है । खत्रवट – क्षत्रियत्व । खेड़ेचौ – राठौड़ । व्रहमंड – आकाश । डहै – सम्हालता है, थामता है । रंग – स्वभाव, आनंद । पारकै – दूसरे के । रीझै – प्रसन्न होता है ।

पाड़िया – मार डाले, वीर गति को पहुंचा दिये । खेत – युद्धस्थल । भड़ – योद्धा । नेत-बंधा – झंडा धारी । जिकै – वे । परमळ – महक, सुगंध । लोह – शस्त्र । रत्र – रक्त, खून । अलिअळां – भौरे । तणा – के । आगै – अगाड़ी ।

जोधपुर धणी चा अणी लाग जीयां, लाख सत्र पोढिया अतर लायै ।
कहर भरिया खपर पिय न सकै सकति, इसा मंडै डमर भमर आयै ।।२।।

पोवतो सावळां खळां बाहां-प्रलंब, जोवतो सूरमा जूझवी जाति ।
जोगणी तणा भरिया पत्तर जांमिया, भमै मधुकर भँवर अनोखी भांति ।।३।।

अंजसिया "माल" सग्रांम "उदा" उभै, धमळ "गज-बंध" रो आव धूरी ।
कारणां भूतचा नाख चंपा कुसम, पियै रत दियै आसीस पूरी ।।४।।

(नाथो रोहडियो)

गीत वडो सांणोर २४*

कुतब गौस अबदाळ सूफी अनै कळंदर, पीर-जादा मिळै सांझ परभात ।
कांन पातसाह रा भरै एक राह कज, वरै नह पडै "जसवंत" जितै वात ।।१।।

मौलवी कराडै अरज काजी मुला, पाडजै देवहर दळां कर पेल ।
मेच्छ वांचै जिको हिंद इकळीम मज्झ, खडो राजा जितै वणै नह खेल ।।२।।

शब्दार्थ—अणी – भाला । जीयां – जिनके । सत्र – शत्रु । अतर – इत्र । कहर – भयंकर । मंडै – रचते हैं । डमर – समूह । पोवतो – पिरोता हुआ, छेदता हुआ । सावळां – भालों । खळां – शत्रुओं । बाहां प्रलंब – आजानबाहु । सूरमा – वीर । जूझवी – युद्ध की ? पत्तर – पत्र, खप्पड़ा । जांभिया – जम गये । मधुकर– मधु को बनाने वाला भँवर, भौंरा । अंजसिया – गर्व किया । माल – राव मालदेव । उदा – राजा उदयसिंह । उभै – दोनों । धमळ – वीर । गजबंध – महाराजा गजसिंह । धूरी – ? रत – रक्त, खून ।

कुतब – ? । गौस – मुसलमान फकीरों की एक उपाधि । अबदाळ – अब्दाल, एक प्रकार के मुसलमान वली या महात्मा, धार्मिक व्यक्ति । सूफी – बहुत उदार विचारों का मुसलमानों का एक सम्प्रदाय । अनै – और । कळंदर – एक प्रकार के मुसलमान साधु और त्यागी । पीरजादा – पीरों के पुत्र । सांझ – संध्या । कांन पतसाह रा भरै – बादशाह को बहुत सी अंट-संट बातें सुनाते हैं, बादशाह को बहकाते है । एक राह कज – एक ही सम्प्रदाय के लिए । वरै नह पड़े – वह बात उनकी नहीं चलती है । जितै – जब तक । कराड़ै – करवाते हैं । पाडजै – गिरा दिरावें । देवहर – देवालय । पेल – भेज कर । मेच्छ – म्लेच्छ, यवन । वांचै – चाहते हैं । जिको – वह हिंद – हिंदुस्तान । इकलीम – अकलीम, देश, मुल्क । मज्झ – मध्य में ।

---

*कट्टर इस्लाम धर्मावलंबी कलंदर गोस, मुल्ला, मौलवी बादशाह को सदैव हिंदु धर्म के विरुद्ध आचरण करने हेतु कुरान शरीफ की प्रबल दलीलें देते हैं । बादशाह भी उन्हीं की इच्छानुसार हिंदुओं के साथ अन्याय, अत्याचार करना चाहता है परन्तु महाराजा जसवन्तसिंह की जीवितावस्था में वह ऐसा करने में असफल रहता है, गीत नं० २४ में उत्तम वर्णन है ।

अरथ कर नवा फुरमांण री आयतां, लिया कर साहरै कांन लागै ।
कहै मखदूम जुग हेक मजहब करौ, "जसौ" हिंदू-धरम मदत जागै ।।३।।

देवळां मूरतां हूंत जौ किणी दिन, खुरम रौ डीकरौ कुबध खेलै ।
दूठ तो तुरत गजसींघ रौ दीकरौ, मसीतां आभ रा धुंआ मेलै ।।४।।

सुरह दुज देव तीरथ निगम सासतर, जनेऊ तिलक तुळसो निरंजण जाप ।
राह हिंदू-धरम तणै सावत रहै, प्रगट मुरधर धणी तणौ परताप ।।५।।

(नरहरदास बारहठ)

गीत प्रहास सांणोर २५*

हियै धारियां खांन जुवान छिबतौ निहंग, अवर नर विसरै तणा अचंभा ।
विखम गत देख "जसराज" खग वाहतौ, रही रथ साह गज-गाह रंभा ।।१।।

शब्दार्थ—फुरमांण – राजकीय आज्ञापत्र, फरमान । आयतां – कुरान के वाक्यों । कर – हाथ । मखदूम – एक प्रकार के मुसलमान धर्माधिकारी । जसौ – महाराजा जसवंतसिंह । देवळां – देवालयों । मूरतां – मूर्तियों । हूंत – से । किणी – किसी । डीकरौ – पुत्र । कुबध-खेले – शरारत करता है । दूठ – वीर । तो – तब । दीकरौ-पुत्र । मसीतां – मसजिदों । सुरह-सुरभि – गाय । दुज-द्विज – ब्राह्मण । निगम – वेद । सासतर – शास्त्र । प्रगट – प्रकट । धणी – राजा । तणौ – का । परताप-प्रभाव, बदौलत ।

छिबतौ – स्पर्श करता हुआ । निहंग – आकाश । विसरै – विस्मरण होते हैं । अचंभा – आश्चर्य । गज-गाह – गजगामिनी । रंभा – अप्सरा ।

---

*गीत नं० २५ और २६ में कवियों ने बड़ी अनूठी युक्ति से महाराजा जसवंतसिंह के धरमत के युद्ध से पलायन करने पर व्यंग कसा है। प्रथम गीत में महाराजा ने बड़े दल-बल के साथ मुगळ साहजादों (औरंगजेब और मुराद) से बड़ा विकट युद्ध किया । इस युद्ध को आकाश स्थित दो अप्सराएं देख रही थीं । उन दोनों अप्सराओं ने दोनों ही शाहजादों को वरण करने का दृढ निश्चय मन में ठान लिया परन्तु दुर्भाग्यवश महाराजा उक्त शाहजादों को बिना वीर गति प्राप्त कराए ही युद्ध भूमि से लौट गये । अतः वे अप्सराएं निराश होकर बिना पतियों के ही स्वर्ग लोक में इन्द्र के दरबार में लौट गईं । इसी प्रकार दूसरे गीत में उनके अग्रेज राव अमरसिंह के वीर कृत्य का स्मरण कर अप्सरा महाराजा जसवंतसिंह को वरण करने हेतु आई परन्तु महाराजा के युद्ध से भाग जाने पर वह अप्सरा उबटन लगाई हुई ही रुदन करती हुई रह गई ।

दुरत गत डांण उसरांण सिर दियंतौ, लियंतौ फुरलबौ थाट लाहौ।
सुतन "गज-बंध" सुर कांमणी संपेखै, विवांणां ठांभियौ खाग-त्राहौ ॥२॥

वाहतां तेग अनमंध कंध वीछड़ै, हसत-बंध हसत दोय टूक होवै।
सायजादा दळै हिंदवा-पातसाह, "जसा" अवसर अच्छर तूझ जोवै ॥३॥

हिंदवा राव हथवाह अचरज हुई, न सारी सुरीति चीत नरंदां।
गई स्त्रुग विवांणां बैस इंद्र आगळी, वुही वारंगना विना वींदां ॥४॥

(अज्ञात)

गीत-प्रहास सांणोर २६

महा मांडियौ जाग उज्जैण खागां मधै, रुदन विलखावती रही रोती।
हेळवी "अमर" री हीय करती हरख, "जसा" अपछर रहो वाट जोती ॥१॥

किया काचा समर "सूर" हर कळोधर, डरत गत न पीधो फूल दारू।
वडा री भोळवी हूर आवी वरण, मेलती गई नीसास मारू ॥२॥

पाटवी हेळवी वेगमै पैलकै, तैं समै अैलकै लीध टाळा।
पागती "दलो" नै "रतन" परणीजतां, वाट जोती रही "गजन" वाळा ॥३॥

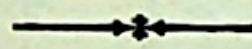
शब्दार्थ—दुरत – भयंकर। डांण – कदम, डग, चाल। उसरांण – असुर, यवन। दियंतौ – देता हुआ। लियंतौ – लेता हुआ। थाट – सेना। लाहौ – लाभ, आनंद सुर-कांमणी – अप्सरा। संपेखै – देखती है। विवांणां – विमानों। ठांभियौ – रोका। खाग-वाहौ – योद्धा। अनमंध – वीर। कंध – कंधा। वीछड़ै – पृथक होते हैं। हसत-बंध – सामन्त, योद्धा। हसत – हाथी। टूक – खंड। जसा – महाराजा जसवंतसिंह। अच्छर – अप्सरा। तूझ – तेरा। जोवै – देखती है। हिंदवा राव – हिंदू राजा। हथवाह – प्रहार, वार। अचरज – आश्चर्य। नरंदा – नरेंद्रों, राजाओं। स्त्रुग – स्वर्ग। बैस – बैठ कर। आगळी – अगाड़ी। वुही – चली गई। वारंगना – अप्सरा। वींदां – पतियों।

मंडियौ – रचा गया, बना। जाग – यज्ञ, विवाह। विलखावती – विलाप करती हुई। हेळवी – आदी की हुई। अमर – राव अमरसिंह। हीय – हृदय में। हरख – प्रसन्नता। जसा – महाराजा जसवंतसिंह बाट जोती प्रतीक्षा करती हुई। काचा – कायर। समर – युद्ध। सूर – महाराजा सूरसिंह। हर – वंशज। कळोधर – कुल को धारण करने वाला। पीधो – पिया। फूल-दारू – हलका मद्य। वडा – अग्रज। भोळवी – भ्रमित की हुई। हूर – अप्सरा। नीसास – नि:श्वास। मारू – राठौड़। पाटवी – पटाधिकारी, अग्रज। हेळवी – आदी किया। पैलके – पहिले। तैं – तूने। अैलकै – इस समय। लीध टाळो – किनारा ले लिया, दूर हो गया। पागती – पार्श्व में, पास में। गजन वाळा – महाराजा गजसिंह के पुत्र।

जे तो वीमाह री वाट जोती जगत, रूक बळ त्रासियौ गयौ राजा ।
मराड़ी जांन घर ग्रावियो मांडवै, तेल चढी रही ग्रच्छर ताजा ।।४।।
(ग्रज्ञात)

गात छोटौ सांणोर २७*

भूपाळ बीया सेवाळ तणी भत, कळिया सह संसार कहै ।
माया जळ कळजुग छै माही, राजा कमळ सरूप रहै ।।१।।
जळ जंजाळ जाळ ग्रंबु ज्युंही, ग्रनळ पठांण भूप ग्रनमंध ।
"गजन" तणौ नैडौ न्यारी गत, कमळा जळ पंकज कमँध ।।२।।
चित नेम लियै बिया चकवतियां, कमधज वार मही महकंत ।
जस रस लियै मही-पुड जसवंत, भेळां थकां निराळी भंत ।।३।।
ध्यांन ग्यांन ग्रदभुत धारणा, वध कर जोतां ईस वर ।
सिध रूपी गजसिंघ समोभ्रम, सिध तौ वांदै दिले-सुर ।।४।।
(जगन्नाथ सांदू)



शब्दार्थ—त्रासियौ – भयभीत हुग्रा । मराड़ी – मरवा कर । जांन – बरात । मांडहै – विवाह में कन्या के पिता पक्ष का स्थान । ग्रछर – ग्रप्सरा ।

बीया – दूसरे । सेवाळ – काई । तणी – की । भत – भांति, प्रकार । कळिया – फसे हुए है । जाल-ग्रंबु – पानी का बुदबुदा । ग्रनळ – ? । ग्रनमंध – वीर । तणौ – तनय, पुत्र । नैड़ौ – निकट । न्यारी – पृथक । भेळां – शामिल, साथ । थकां – होते हुए । निराळी – ग्रद्भुत । भंत – भांति, प्रकार । समोभ्रम – पुत्र ।

*यह गीत महाराजा का वेदान्त ज्ञान-सम्बन्धी है ।

परिशिष्ट २

अन्य राठौड़ वीरों के गीत

राव - अमरसिंह नागौर

गीत बडो सांणोर १* -

दळां-नाथ आगळ दिली वंस रौ दीपयण,
रूप - राई तणा राउ राठोड़ ।
"अमर वणियौ सधर धारियै आत-पत्र,
"माल" रौ तिलक 'रिणमाल" हर मोड ॥१॥

वडा ही वडा आचार दीपै विसवि,
वहै सबळां खळां खेति बागै ।
जग हथै बंधियै "गजरण" रौ जैत-हथ,
जग हथां बंधपण विरद जागै ॥२॥

"सूर" हर सूर सक-बंध साहण समँद,
ताधि सांमंद्र असमांण तोलै ।
अतग अण रैण अण-मंग ऊंचासिरी,
बहळ खळ सार में चोळ-बोळै ॥३॥

शब्दार्थ—आगळ – अगाड़ी । दीपयण – शोभा बढाने वाला । रूप-राई – राजाओं की शोभा । तणा – के । राउ – राव । सधर – दृढ़ । धारियै – धारण करने पर । आत-पत्र – छत्र । माल – राव मालदेव । आचार – कर्त्तव्य, दान । दीपै – शोभित होते हैं । विसवि – संसार में । वहै – मारता है । सबळां – बलवानों । खळां – शत्रुओं । खेति – युद्ध-स्थल, युद्ध । बागै – होने पर । जैत-हथ – विजयहस्त । सूर – महाराजा सूरसिंह । सक-बंध – बड़े-बड़े युद्ध करने वाला । साहण – घोड़ा । समंद – समुद्र । साहण-समँद – बड़ी सेना वाला । ताधि – थाह लेकर । असमांण – आसमान । अतग – अपार । अण-रैण – निष्कलंक । अण-भंग – वीर । ऊंचासिरी– उदार, श्रेष्ठ । बहळ – बहुत । सार – तलवार । चोळ-बोळै – रक्त-रंजित ।

---

*राव अमरसिंह के राज्याभिषेक के समय का यह गीत है ।

घोख मद-घोख जस तणा वादित्र घुरै,
जोध सांमंत में थाट जोपै ।
चमर ढळतै नृपति अभिनमौ "चौंडरज",
"अमर" मेघाडंबर सीस ओपै ॥४॥
(केसोदास गाडण)

गीत छोटौ सांणोर २

गढपतिअै घण किया गढ-रोहा, परगह ले जूझिया पह ।
जिम किधौ "अमरेस" जड़ाळी, किणोहि न कीधों एम कळह ॥१॥

कोटां ओट घणा जुध कीया, फौजां घणा किया पग-फेर ।
राउ राठोड जिही सूं रौद्रां, अध-पत विढियौ न को अनेर ॥२॥

कोटां प्रांण प्रांण के कटकां, सूं पहरिया दिली पतिसाह ।
अेक कटारी कियौ न अेकेण, गजसिंघोत जिसौ गजगाह ॥३॥

दांणव बि त्री पगां-तळ दीधा, वणियै मरण दिखाळियौ बाढ ।
वाही अेकण "गंग" कळोधर, जम-दाढां मांही जमदाढ ॥४॥
(केसोदास गाडण)

शब्दार्थ—वादित्र – वाद्य । घुरै – बजते हैं । जोध – योद्धा । थाट – सेना । जोपै – जोश में आता है । अभिनमौ – वंशज । चौंडरज – राव चूंडा ।

गढ-रोहा – गढों पर आक्रमण, युद्ध । परगह – परिग्रह, सेना । जूझिया – युद्ध किया । पह – प्रभु, राजा । जिम – जैसा । कीधौ – किया । अमरेस – राव अमरसिंह । जड़ाळी – कटार । किणहिं – किसी ने । एम – इस प्रकार । कळह – युद्ध । ओट – आड़, पनाह । कीया – किए । पग-फेर – आवागमन । राउ – राव । रौद्रां – यवनों, मुसलमानों । जिहीं – जिस । अध-पत – राजा । विढियौ – युद्ध किया, वीर गति प्राप्त हुआ । को – कोई । अनेर – अन्य । प्रांण – बल, शक्ति । कै – कई । कटकां – सेनाओं । पहरिया – ? अेकण – एक । गजसिंघोत – गजसिंह का पुत्र । जिसौ – जैसा । गज-गाह – युद्ध । दांणव – असुर, यवन, मुसलमान । बि – दो । त्री – तीन । पगांतळ दीधा – पैरों के नीचे दबा दिये, मार डाले । वणियै – होने पर । मरण – अवसान । दिखाळियौ – दिखा दिया । बाढ – शस्त्र, शस्त्रबल । वाही – प्रहार किया । अेकण – अकेले ने, एक ने । गंग – राव गांगा । कळोधर – वंशज । जम-दाढां – यवनों, मुसलमानों । मांही – में । जमदाढ – कटार ।

गीत-प्रहास सांणोर ३

असुर बोलियौ कुबोल पतसाह मुह आगळी,
राज विण खत्री धरम कमण राखै ।
दूसरा "माल" वरदांन तोनूं दिवूं,
"अमर" मो काढ जम-दाढ आखै ॥१॥

आछटी कमर सूं हाथ चाढी "अमरा",
जोर जमदाढ मैं खुधा जागी ।
ऊमरा साह रा साह मुह आगळी,
लोह छीपाविया गळण लागी ॥२॥

उजळै भुजां-डंड चढे "अमरेस" रै,
देव बळ लियण वरदांन देवा ।
कठहड़ै कटारी खाय गळौ कीयौ,
लचर कै वधै पतसाह लेवा ॥३॥

झाळ व्रन हुई अंब-खास विच झळहळै,
मार हेकां बियां हियै मिळती ।
"अमर" ची भगवती खुरम मुह आगळी,
गळ ग्रजै ऊग्रजै मीर गळती ॥४॥

चरच केसर अगर धूप हूं चंदणां,
पाट-पत तैं ध्रवी सुधार पूजा ।
"अमर" जुगां लग नरां नांम रहसी अमर,
दाखियौ कटारी "सूर" दूजा ॥५॥

(केसोदास गाडण)

शब्दार्थ—आगळी – अगाड़ी, सम्मुख । राज – श्रीमान्, आप । कमण – कौन । दूसरा – वंशज । माल – राव मालदेव । अमर – राव अमरसिंह । मो – मुझको । काढ – निकाल दे । जम-दाढ – कटारी । आखै – कहती है । आछटी – झटका देकर निकाली । अमरा – राव अमरसिंह । खुधा – क्षुधा । जागी – प्रज्वलित हुई । लोह–अस्त्र-शस्त्र । छीपाविया – छिपा दिये । बळ – बलि । कटहड़ै – बादशाह के बैठने के सिंहासन के चारों ओर काठ का बना घेरा । लचर – कायर । झाळ – आग की लपट । व्रन – वर्ण, रंग । अंब-खास – आम खास । विच – मध्य में । झळहळै – चमकती है, प्रदीप्त होती है । अमर – राव अमरसिंह । ची – की । गळग्रजै – निगलती है । ऊग्रजै – गर्जना करती है । गळती – भक्षण करती है । पाट-पत – पटाधिकारी । तैं – तूने । ध्रवी – प्रहार किया । जुगां-लग – युगों-पर्यन्त । दाखियो – कहा । सूर – महाराजा सूरसिंह । दूजा – वंशज ।

गीत वेलियौ-सांणोर ४

अतुळी-बळ "अमर" न सहियौ ओकर, साहि आलम आगळै सनाढ ।
मुगळ कुबोल बोलियो मौड़ी, जड़ियौ तै वेगौ जम-दाढ ॥१॥
गजसिंघोत कमंध नर गाढिम, ततखिण माचवियौ रणताळ ।
दु-वयण वयण काढियौ दुआ-सुं, प्रिसण परां काढ़ी प्रतमाळ ॥२॥
कांनां लगे हेक गौ कु-वयण, कमध भला बांधतौ कडि ।
पूंचा लगै भुजा-डंड पैली, धाराळी अरी तणै ज धडि ॥३॥
असपत राव सनमुख अणियाळी, "अमर" जु तैं वाही अवसांण ।
कु-वयण कमळ वाय हंस केवी, अै क्रम नीसरिया आरांण ॥४॥
सूरत छोह निमो नव-सहसा, खमियौ कु-बोल नह खत्री गुर ।
मरण तणौ प्रब भला ज मरिया, अेकण कटारी बहु ज असुर ॥५॥
(केसोदास गाडण)

गीत वेलियौ सांणोर ५

देखो तो "अमर" करामत अंत-दिन, साह धडक्क असुर मन सोह ।
दुजडी हेकज वहंती दीसै, पड़ता दीसै ज घणा पोह ॥१॥

शब्दार्थ—अतुळी बळ – अतिबल, बलशाली । ओकर – कटु बचन । साहि – बादशाह । आलम – संसार । आगलै – अगाड़ी । सनाढ –वीर । कु-बोल – कुवचन । मौड़ी – विलंब से, देरी से । जड़ियौ – प्रहार किया । तैं – तूने । वेगौ – शीघ्र, जल्दी । गाढिम – वीर । ततखिण – तत्क्षण, तुरन्त । माचवियौ – मचा दिया । रिण-ताल – युद्ध । दु-वयण – दुर्वचन । वयण – वचन । दुआसु – ? प्रिसण – शत्रु । परां – ऊपर । काढी – निकाली । प्रतमाळ – कटारी । कुवयण – दुर्वचन । कमंध – राठौड़ । भलां – ठीक । बांधतौ – धारण करता था । कडि – कटि, कमर । भुजाडंड – वीर । पैली – प्रथम । धाराळी – कटार । अरि – शत्रु । तणै – के । घड़ि – शरीर में, धड़ में । असपत – बादशाह । अणियाळी – कटार । अमर – अमरसिंह वाही – चलाई, प्रहार किया । अवसांण – अवसर – मोका । कु-वयण – कुबचन, दुर्वचन । कमळ – मुख । वाय-हंस – प्राण-वायु । केवी – शत्रु । अेकण – एक ही साथ । नीसरिया – निकल गये । आरांण – युद्ध । छोह – क्षोभ, कोप । निमौ – नमस्कार है । नव-सहसा – राठौड़ । खमियौ– सहन किया । खत्री-गुर – वीर । तणै – के । प्रब – पर्व, उत्तम, अवसर । भला – ठीक । असुर – यवन ।

करामत – चमत्कार । धडक्क – भय, डर । सोह – क्षोभ । दुजड़ी – कटार । हेकज – एक ही । वहंती – चलती हुई । दीसै – दिखाई देती है । पोह – प्रभु, वीर ।

सुत गज-बंध आदि तो सुजड़ी, मोहियौ-वसु सवै मुर-लोक ।
असपत इण अजमति इचरजियौ, एक देह अरि पाडै अनेक ।।२।।

भुजां भार "जोधा" ब्रिद भळिया, "अमरा" ऊफळियौ ओगाढ ।
छत्रपत दिली तणा सह छळिया, जोगण छत्र-धारी जम-दाढ ।।३।।

उधम होय इचरज धर असुरां, धम धम तखत जड़ाळी धार ।
धम धम विखम अरि तणा धाटा, वारंगना झमझम जुध-वार ।।४।।

भांजै असुर भख दे भगवती, संकर लीयै मुंड कर सीस ।
असमर हंस समापै "अमरा", समर कीयौ करतब सु-जगीस ।।५।।

(लूणकरण)

गीत प्रहास सांणोर ६

वडै ठौड राठौड अखिआत राखी वडी, जोरवर जोध जम-दाढ जमरा ।
सलावत दिली-पत देखतां साझियौ, अयी तिण वार रा रूप "अमरा" ।।१।।

"गजन" रा केहरी-सिंघ जूझार-गुर, मांण तजि जगत्र सहु हुकम मांनै ।
पाडिया तैं ज पतिसाह री पाखती, खांन सुरतांण दीवांण खांनै ।।२।।

हाकतौ दिली दरीयाव हीळोतौ, ढूकड़ै साह अमराव ढाहै ।
आगरै सहर हट-नाळ पाड़ी "अमर", मारूआ-राव दरबार मांहै ।।३।।

शब्दार्थ—गज-बंध – महाराजा गजसिंह । सुजड़ी – कटारी । मोहियौ – मोहित कर लिया । मुर-लोक – तीन लोक । असपत – बादशाह । इण – इस । अजमति– महत्ता । इचरजियौ – आश्चर्य किया । भार – उत्तरदायित्व । जोधां – राव जोधा । ब्रिद – विरुद । भळिया – धारण किए, स्वीकार किए । अमरा – अमरसिंह । ऊफळियौ– उबाल खाया । ओगाढ – वीर, बल । जोगण – देवी, रणचंडी । छत्र-धारी – राजा । जम-दाढ – कटार । उधम – उत्पात । इचरज – आश्चर्य । असुरां – यवनों । जडाळी – कटार । वारंगना – अप्सरा । झम झम – । वार – समय । भख – भक्ष । असमर – तलवार । हंस – प्राण । समापै – देकर । अमरा – अमरसिंह । समर – युद्ध । करतब – कर्त्तव्य । जगीस – इच्छा ?

वडै – महान, बड़ा । अखिआत – न क्षय होने वाली, अमर । जोर-वर – शक्तिशाली । जोध – योद्धा । दिली-पत – बादशाह । साझियौ – मार डाला । अयी – अरे, हे, ओ ! तिण – उस । वार – समय । अमरा – अमरसिंह । जूझार-गुर – महान योद्धा । मांण – गर्व । तजि – छोड़ कर । जगत्र – संसार । सहु – सब । पाडिया – मार डाले । तैं ज – तूने ही । पाखती – पार्श्व में । हाकतौ – चलाता हुआ । हीळोतौ – विलोडित करता हुआ । ढूकड़ै – पास, निकट । अमराव – अमीर । ढाहै – मार डाले । हट-नाळ – ? मारूआ-राव – राठोड़ राजा । मांहै–में, अंदर ।

पगै पहरै जठै हाथ सूं परहरै, लोह सझि न कौ असमांन लागै ।
तो "जिसौ" जूझियौ न कौ हिंदू तुरक, "अमर" अकबर तणा तखत आगै ।।४।।

(किसनौ आढौ)

गीत वेलियौ सांणोर ७

मुगळां राव तणै जवाब मरोडै, घर घातिया निबाबां घाव ।
चालियौ काळ जड़ाळ चुअंती, रूपा तणौ कटहडै राव ।।१।।

अड़िया सुजि पड़िया मुँह ऊंधै, सहज कोय देखे सुर-असुर ।
आखतौ वेह कोय नह आयौ, "अमरा" जम राव तणै ज उर ।।२।।

पहली मुखे चमर - बँध पड़िया, गौडै गज-बंधां ओगाढ ।
जवन तणी दरगा जोधपुरौ, जड़िया सह हेकण जम-दाढ ।।३।।

बहतरि सतरि अनेक बहादर, खळ खूटा तूटा खुरसांण ।
पड़ियौ ले आधी-पतसाही, राजा "गजन" तणौ जम-रांण ।।४।।

(जोगीदास कंवारियौ)

गीत छोटौ-सांणोर ८

"अमर" आगरै अखिआत उबारी, भड़ जीपण व्रद भारी ।
पंच हजारी मुगळ पाड़ियौ, कमधज तणी कटारी ।।१।।

शब्दार्थ—पगै – पंगों से । लोह – अस्त्र-शस्त्र । सझि – धारण करके । जूझियौ– युद्ध किया । आगै – अगाड़ी ।

मुगळां-राव – मुगल सुल्तान । तणै – के । मरोडै – कुपित होकर । जडाळ – कटारी । चुअंती – स्रवती हुई, टपकती हुई । रूपा – रोप्य, चांदी । राव – राव अमरसिंह । अड़िया – अकड़ गये, भिड़ गये । सुजि – वे । मुँह-ऊंधै – औंधे मुह । सुर – हिंदू । असुर – यवन । आखतौ – शीघ्रता करता हुआ । वेह – होकर । चमर-बंध – चमरधारी । गोडै – गिरा दिये । गज-बंधां – गजधारियों । ओगाढ – वीर । तणी – की । दरगा – दरबार । हेकण – एक ही । खळ – शत्रु । खूटा– समाप्त हो गये । तूटा – निर्बल हो गए । खुरसांण – बादशाह । गजन – महाराजा गज सिंह । तणौ – तनय, पुत्र । जम-रांण – वीर, योद्धा ।

अखिआत – अद्भुत, विचित्र । व्रद – बिरुद, कीर्ति । भारी – महान, बड़ा । पाड़ियौ – मार डाला ।

झूरै रे अग-नैणी झलर, मेह तणी परि मोरां ।
जोगण-पीठ दियां सायजादी, घूमरि ऊपरि घोरां ।।२।।

दस दस पास खवासी दासी, चंपक वरण ओढियां चोर ।
सिस-वदनी नांखै सिसकारा, मीरां कहां हमारा मीर ।।३।।

आस अळूझ गोखड़ै ऊभी, कोयां काजळ कीबी ।
गळती रात पुकारै गोरी, बाबहिया जिम बीबी ।।४।।

(रूघो मुहतौ)

गीत छोटौ-सांणोर ६

सुरतांण हुवौ भै-भीत संपेखे, गुडिया खांन सु पड़ियौ गाढ ।
"अमर" तणा भुज हूंता अंबर, जांणै वजर पड़ी जम-दाढ ।।१।।

वाही गजसिघोत विसरिअै, असुरां फुटा अफर अणी ।
मुगळां तणै पड़ी किर माथै, त्रिजड़ी तडित अकाळ तणी ।।२।।

हुय हैकंप कांपियौ हजरति, लागुआं परै नीसरी लाग ।
वहमंड "अमर" भुजा-डंड वहती, वाढाळी जळहळी व्रजाग ।।३।।

असपति राव चमकि ओद्रकियौ, खेड़ैचैं वाही करि खीज ।
सुकरि आकास हूंत सेलारां, वीजुल विढण क वुही वीज ।।४।।

जवनां सूं "अमरेस" जूटवा, कटारी दांमणी करग ।
खांना घणां तणौ खण खांनौ, स्रोण रंगी झबकी सारंग ।।५।।

(केसोदास गाडण)

शब्दार्थ—झूरै – रुदन करती है । अग-नैणी – मृगाक्षी । झूलर – समूह । मेह–वर्षा । जोगण-पीठ – दिल्ली । सिसवरदनी – चंद्रमुखी । नांखै – डालती है । सिसकारा – निःश्वास । आस – आशा । उळूझ – उलझ कर । बाबहिया – चातक ।

सुरतांण – बादशाह । भै-भीत – भयभीत । संपेखै – देखकर । गाढ – बल । हूंता – से । अंबर – आकाश । जांणै – मानो । वाही – चलाई, प्रहार किया । विसरिअै – कुपित होकर । अफर – वीर । किर – मानों । त्रिजड़ी – कटार । तडित – बिजली । अकाळ – असामयिक । तणी – की । हैकंप – भयभीत । हजरति – बादशाह । लागुआं – शत्रुओं । व्रहमंड – आकाश । वाढाली – कटार । जळहळी – चमकी । व्रजाग – वज्राग्नि । असपति-राव – बादशाह । ओद्रकियौ – भयभीत हुआ । खेडैचै – राठौड़ । खीज – कोप । वीजळ – कटार । दांमणी – बिजली । करग – हाथ । स्रोण – रक्त, खून । झबकी – चमकी । सारंग – कटार ।

गीत वडौ सांणोर १०

कियौ प्रथम साकौ वडौ दिली कणियागरै, दळां-थंभ कमध चीतौड खत्र दाव ।
"अमर" अवगाढ जमडाढ जम आछटे, "रांण" "रिडमाल" उजवाळिया राव ॥१॥
प्रथी-पत बै पखां पद्रू मोटा प्रगट, औछबै धकै जुध भार आयै ।
तोल अणियाळ जळ-बोल चखतां तणा, रोद हीलोळिया दईव रायै ॥२॥
साझियौ भलौ "वणवीर" उत सांकड़ै, अभंग "चूंडा" तणै तोल असमांन ।
दुरत-गत "गजण" रै दिली-पत देखतां, खेड-पत मारियौ सलाबत खांन ॥३॥
अेकलै भुजां दहूं छ खंड घाते अवर, दस दिसां वजै जस तणौ डाकौ ।
"माल" हर "वीर" हर पछै वेढीमणौं, "सूर" हर तीसरौ कियौ साकौ ॥४॥
मारियौ घणा मिळ सीह मंडोवरौ, लाज सांकळ सबळ पाय लागा ।
हाल सो(ह) दिली उमराव आंकल हुआ, ऊबरै राव जम राव आगा ॥५॥

(नरहरदास बारहठ)

गीत प्रहास सांणोर ११*

प्रथम मारियौ सलाबत खांन किताई पछै, सांकड़ै सूर रुधै सबांही ।
"अमरसी" तखत पतसाह मुंह आगळी, वीर-रस गाढ जमदाढ वाही ॥१॥

शब्दार्थ—साकौ – युद्ध । वडौ – महान । कणियागरै – सोनंगरा चौहान । दळां-थंभ – योद्धा । कमध – राठौड़ । खत्र – क्षत्रियत्व । अमर – अमरसिंह । अवगाढ – वीर । आछटे – प्रहार करके । रांण – महाराणा । रिडमाल – राव रिडमल का वंश, राठौड़ । उजवाळिया – उज्ज्वल किये । प्रथी-पत – राजा । बै – दोनों । पखां – पक्षों, वंशों । पद्रू – साक्षी । औछबै – ? । धकै – अगाड़ी । अणियाळ – कटार, भाला । जळ-बोळ – भयंकर, विकट । चखतां – मुगल वंश के । रोद – यवन । हीलोळिया – विलोडित किये । दईव रायै – राजा । साझिओ – मार डाला । उत – पुत्र । सांकड़ै – विकट, तंग । अभंग – वीर । तणौं – तनय-पुत्र । खेडपत – राठौड़ । डाकौ – नगाड़ा । पछै – पश्चात् । माल – मालदेव सोनगरा । वेढीमणौं – वीर ।

सांकड़ै – तंग स्थान में । रुधौ – रोका गया । आगळी – अगाड़ी । वाही – चलाई ।

---

*गीत नं० ३ से गीत नं० १२ तक के गीत बख्शी सलावत खां को बादशाह के दरबार में ही मारने के संबंध में हैं । ये गीत भिन्न भिन्न कवियों के रचे हुए हैं । घटना का सार इस प्रकार है—वि० सं० १७०१ के श्रावण सुदि द्वितीया को राव अमरसिंह बादशाह के दरबार में मुजरा करने को गये । संध्या का समय था । अमरसिंह ने बख्शी सलावत खां से कहा कि हमारा मुजरा मालूम करा दीजिए । ठहर जाओ यह कह

छात्र साह रा "गाजी" तणै छावड़ै, जपै जण जण वयण जुआ-जूआ।
उपरां असुर दळ कटारी उभारी, हजारी हजारी गरद हूआ ॥२॥
ऊठ गौ खूंद जड ताक ग्रहि अंतरै, दाख आतस अवर सेन दुडिया।
"सूर" हर आभरण तणी प्रत-माळ सूं, प्रगट उलट पालट मेच्छ पडिया ॥३॥
केसरी सिंघ राव "मालदे" कळोधर, चाइआं-गुर सदा लग वडां चेळौ।
विचत्र साह आलमी जालमी विजुळा, मरण मिळियै कियौ ताळ-मेळौ ॥४॥
(माधोदास गाडण)

शब्दार्थ—छात्र-छत्र – अमीर, सरदार। गाजी – महाराजा गजसिंह। छावड़ै – पुत्र। वयण – बचन। जुआ-जूआ – पृथक-पृथक। हजारी – पंच हजारी। गरद – ध्वस्त, संहार। खूंद – बादशाह। दाख – कह कर। आतस – जोश। दुडिया – छिप गये। सूर – सूरसिंह। प्रतमाळ – कटार। मेच्छ – यवन। चाइआं गुर – । सदा-लग – सदैव। चेळौ – पलड़ा। ताळ-मेळौ – अवसर, मौका, संयोग।

कर वह भीतर चला गया परन्तु उसे अवसर नहीं मिला जिससे विलम्ब हो गया। जब राव अमरसिंह ने उसे वापिस बाहर आते नहीं देखा तब स्वयं भीतर चले गये और ९ मुहरें नजर करके अपने स्थान पर खड़े हो गये। सलावत खां बीकानेर के राजा करणसिंह के कारण पहले ही से शत्रुता रखता था। उसने करणसिंह का पक्ष लेकर नागौर पर अपनी सेना भेजने की व्यवस्था जमा ली थी। क्योंकि वह इन पर जलता ही रहता था। उसको इनका अपमान करने का उपयुक्त अवसर मिल गया। एकदम अपने मुंह से गंवार शब्द का उच्चारण कर दिया। राव अमर जैसे वीर पुरुष को भला यह कब सहन हो सकता था। इस प्रकार के तुच्छ शब्द मुख से निकलते ही राव अमरसिंह ने उसके कलेजे में कटार भोंक दी, सलावत खां वहीं पर ढेर हो गया। बादशाह भाग कर अन्दर चला गया और आदेश दिया कि अमरसिंह जाने न पाये। परन्तु भूखे सिंह के सदृश उस वीर के सामने जाने का साहस किसी का भी नहीं हुआ। राव अमरसिंह दरबार से निकल कर अपने डेरे जाने लगा। उसके पीछे पठान खलीलुल्लाह खां ने तलवार का वार किया परन्तु वह कारगर नहीं हुआ। फिर गौड विट्ठलदास का पुत्र अर्जुन गौड राव अमरसिंह के पीछे आया। राव ने पीछे फिर कर देखा तो गौड अर्जुन ने निवेदन किया कि मैं तो आप ही का हू। राव ने उसका विशेष ध्यान नहीं रखा। गौड ने अवसर देखकर तलवार का प्रहार किया, वह सफल हो गया। उस समय भी राव (अमरसिंह) ने कटार से तीन व्यक्तियों को मारा और अर्जुन गौड के भी कान के पास कटार का घाव लगा जिससे उसका कान कट गया। इस समय में गुर्जबरदारों का दल आ पहुँचा, राव इन सबसे युद्ध करता हुआ वीर गति को प्राप्त हुआ। अन्तिम गीत में कविवर किसना आढा ने अनूठी उक्ति से चांद को तो युद्ध देखने का आनन्द प्राप्त कराया है और भगवान भास्कर (सूर्यदेव) को इस युद्ध के न देखने से बड़ा रंज होने का भाव प्रकट किया है क्योंकि युद्ध संध्याकाल में ही हुआ था।

गीत वडौ सांणोर १२

निसा-पड़तां झूंबोयौ जुतै-अनड़ां नडण, जवन दळ सिर सबळ दाखि जमरा ।
सिसि करै जेण उदमाद नव-साहंसा, अरक धोखौ करै जेण "अमरा" ॥१॥

दुधारां वाहतो ढाहतौ दुज्जणां, नरां सिणगार बँध चोगाणै नूर ।
मोहियौ मयंक कर देख अखाड़मल, "सूर" हर छोहियौ आभरण सूर ॥२॥

राति विढियौ इसी भांति नरवै रयण, सम-समी मार देतौ सबांही ।
तेण उदमादियौ चंद कमधां तिलक, मांत मांदौ थियौ सूर मांही ॥३॥

भिड़तै "अमर" अखीआत कीधी भुयण, सुत "गजण" वात संसार कहसी ।
देखसी अदेखां तेण वातां दहूं, रात दिन हरख मन मांहि रहसी ॥४॥

(किसनौ आढौ)

२. बलू गोपालदासोत चांपावत

गीत छोटौ-सांणोर १*

घड़ लाकड़ हुवै बळै हंस धुआ, झाळ हुऔ रणताळ झलू ।
बळगौ खाग अभाग बैरियां, बळती आग वजाग "बलू" ॥१॥

ऊपर सत्रां पड़तां ईंधण, घ्रत रत दरड़ै पूर घणौ ।
पौरस झाळ काळ पँडवेसां, तगस भटकियौ "पाल" तणौ ॥२॥

शब्दार्थ — निसा – रात्रि । पड़तां – होने पर । झूंबीयौ – छापा मारा । अनडां-नडण – वीरों को बंधन में डालने वाला । सिसि – शशि, चंद्रमा । उदमाद – हर्ष, प्रसन्नता । नव साहंसा – राठौड़ । अरक – सूर्य । धोखौ – पश्चात्ताप । दुधारौ – भालो । ढाहतौ – मारता हुआ । दुज्जणां – दुर्जनों, शत्रुओं । मोहियौ – मोहित कर दिया । मयंक – चंद्रमा । अखाड़-मल – योद्धा, वीर । सूर – महाराजा सूरसिंह । छोहियौ – खिन्न हुआ । विढियौ – युद्ध किया । नरवै – नरपति, राजा । रयण – रत्न । सम-समी – समान, बराबर । उदमादियौ – प्रसन्न हुआ, हर्षित हुआ । कमधां– राठौड़ों । मांदौ – रुग्ण, धिमौ हो गया । भुयण – संसार । गजण – गजसिंह ।

घड़ – सेना । लाकड़ – काष्ठ । हुवै – प्रज्वलित होते हैं । हँस – प्राण । झाळ – ज्वाला । रणताळ – युद्ध । झलू – उत्तरदायित्व लेने वाला ।

---

*बलू गोपालदासोत चांपावत राव अमरसिंह राठौड़ के वीर गति प्राप्त होने पर उनकी सहधर्मिणी को सती होने के निमित्त राव अमरसिंह का शव लाने हेतु यवन सेना के साथ भयंकर मार-काट करता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ । इस घटना संबंधी गजगुण रूपक ग्रंथ के रचयिता कविवर केसोदास गाडण ने बलू गोपालदास की प्रशंसा में कई डिंगल गीत रचे थे, उन गीतों में से तीन गीत यहां पर दिये गये हैं ।

मेछां घड़ा अभनमी "मांडण", सांफळगी पुळगी सबळ ।
बटका हुय कटका बांणांसां, झटकां भटकै धोम झळ ॥३॥

हाथां मछरं केवांण हुबिया, सुरतांणां माथै यर सूळ ।
असुरां थाट काट आवटियौ, मंगळ जुध ठरियौ कळ-मूळ ॥४॥

(केसोदास गाडण)

गीत वडो सांणोर २

अमर राव वाळै दिवसि दाव जांणै अभंग, सूर वर साथि लीधां समेळा ।
पटै जो हूंतौ "बलू" पतिसाह रै, "बलू" भेळौ हुओ मरण वेळा ॥१॥

तण "गजण" साथि भाराथ चित तेवड़ै, त्यार भड़ मुहरि आगळी खत्री ताइ ।
असुर रौ वित खावतौ खत्री अंत रै, अंत रै तंत सुज मेळियो आइ ॥२॥

जोधपुर सुपह री चाड मांडै जुडण, आपरा लियां परिग्रह उजासै ।
"पाल" रौ खूंद वरतणि जुदी पांमतौ, पूजियौ विघन ची वार पासै ॥३॥

मारियौ सुणै पतिसाह राव अमरसी, साह सूं मांनि जुध भवां सारू ।
मरण दिन पटौ परहरि नवौ मौड बांधि, मुओ जूना पटा साथि मारू ॥४॥

(केसोदास गाडण)

गीत प्रहास सांणोर ३

विजड़ ऊठियौ धूण गिर-मेर रौं बहादुर, पछै म्हे कदे अवसांण पावां ।
"अमर" ने सुरग दिस मेल नै अेकलौ, आगरै लड़ेवा कदे आवां ॥१॥

शब्दार्थ— वाळै – के । अभंग – वीर । लीधां – लिए हुए । समेळा – अनुकूल । भेळौ – शामिल, साथ । तण – तनय, पुत्र । गजण – महाराजा गजसिंह । भाराथ – भारत, युद्ध । तेवड़ै – विचार करके । त्यार – तब । मुहरि – मुह के । आगळी – हरावल, अगाड़ी । असुर – यवन । वित – वेतन । सुपह – राजा, वीर । चाड – सहायता । मांडै – रच कर । जुडण – युद्ध । परिगह – परिग्रह । पाल री – गोपालदास चांपावत का । खूंद – बादशाह । वरतणि – वेतन । जुदी – पृथक । पांमतौ – प्राप्त करता था । पूजियौ – ? । विघन – युद्ध । वार – वेला । भवां – जन्मों । सारू – लिए । परहरि – छोड़ कर । मारू – राठौड़ ।

विजड़ – तलवार । धूण – घुमा कर । पावां – प्राप्त करें ।

अम्हे तो "अमर" राजा तणा ऊमरा, जूड़ेवा पारकी छठी जागां ।
बोलियौ "बलू" पतसाह रै बराबर, मारवै - राव रौ वैर मांगां ॥२॥

केसरया मांह गरकाब वागा करे, सेहरौ बांध हलकार साथै ।
"अमर" रौ भतीजौ तोल खग आखवै, "बलू" अर अगरौ हुआ बाथै ॥३॥

पटा नै नांखि भिड साह सूं चटापड़, कांम नव-कोट साचौ कमायौ ।
वाद कर साहसूं वैर नूप वोढियौ, "अमर" नै मुहर करि सरग आयौ ॥४॥

(केसोदास गाडण)

३. महाराजा सूरसिंह बीकानेर

गीत-प्रहास सांणोर १*

गिरंद गाहटण नूभै-मण सझै रिण विसम गत, दोयण घण दावटण 'जैत" दूजौ ।
जपै मन सहू जन "सिंघ" तणा विजै जस, साह मोखण ग्रहण भूप "सूजौ" ॥१॥

शब्दार्थ—जूड़ेवा – युद्ध करने को । पारकी – दूसरे की । मारवै – राव राठौड़ राजा । गरकाब – तरबतर । वागौ – पहनावा । सेहरौ – मौर । हलकार – ? । आखवै – कहता है । हुआ-बाथै – भिड़ गये । पटा – जागीर के गांवों की सनद । नांखि – डाल कर, फेंक कर । चटा-पड़ – लड़ाई । नव-कोट – मारवाड़ । साचो – बढिया । वाद – युद्ध । वोढियौ – वसूल किया । मुहर – हरावल ।

गिरंद – गिरीन्द्र, पर्वत । गाहटण – ध्वस्त करने को, ध्वस्त करने वाला । नूभै-मण – निर्भय मन वाला । सझै – कटिबद्ध होता है । विसम-गत – विषम गति से । दोयण – शत्रु । घण – अधिक । दावटण – दबाने को । जैत – राव जैतसिंह (बीकानेर) । दूजौ – द्वितीय, वंशज । सिंघ – रायसिंह तण – तनय, पुत्र । साह– बादशाह । मोखण – छोड़ने को, छोड़ने वाला । ग्रहण – पकड़ने को, पकड़ने वाला । सूजौ – महाराजा सूरसिंह (बीकानेर) ।

---

*वि० सं० १६७९ में शाहजादा खुर्रम विद्रोही बन गया । वह दक्षिण में उत्पात करने लगा, तब बादशाह जहांगीर ने महाराजा सूरसिंह (बीकानेर) को शाहजादा के विरुद्ध दक्षिण में शांति-व्यवस्था स्थापित करने के लिए भेजा । महाराजा अपने दल-बल सहित दक्षिण में गये । खुर्रम के उपद्रवों को दबा दिया । उसी की साक्षी का उपर्युक्त गीत है ।

उभै विध खाग गयणाग लग ऊछजै, जिता जुध ताकवै तिता जीपै ।
सितर नै बौहतर धणी नवसाहसौ, दिली भांजण घड़ण "सूर" दीपै ।।२।।

वाळ गजराज सिरताज वहता विसर, लाख दळ लियै असमांण लागै ।
प्रबळ-पातसाह रौ हुकम कर "जंगळ-पत","खुरम" घर घर कियौ मार खागै ।।३।।

परै जोधांण बोकांण मोटा पढ़ूं. आज री लाज तोसूं अनाजा ।
राज जहांगीर रौ करां थिर राखियौ, राव रांणौ सिरै 'सूर' राजा ।।४।।

(किसनौ सिंढायच)

गीत प्रोढ २*

पूगळ पालटी थरकियौ विकंपुर, कहै छूटां कांहि ।
उदधि राजा सूर उलटौ, जादवां गढ जाहि ।।१।।

वैरसळपुर छाडियौ बळ, आज नहीं का ओट ।
समंद जिम रायनिध संभ्रम, कमध वोढै कोट ।।२।।

देवरावर अत घड़ दीठौ, भाटियां भंगांण ।
उलट ढाहण वडा अनडां, मिलौ छंडै मांण ।।३।।

गुहिर दुरंग अजीत गांजै, जादमां क्यू जेर ।
सकै नह जुधि सूर सांमुहौ, मांडि जैसळ - मेर ।।४।।

(हरखौ बारहठ)

शब्दार्थ—विध – प्रकार । खाग – तलवार । गयणाग लग – आकाश तक । ऊछजै – ऊंची उठाता है । जिता – जितने । ताकवै – तकता है । तिता – उतने ही । जीपै – विजय प्राप्त करता है । धणी – स्वामी । नवसाहसौ – राठौड़ । भांजण – तोड़ने को । घड़ण – बनाने को । सूर – महाराजा सूरसिंह (बीकानेर) । दीपै – शोभित होता है । जंगळपत – बीकानेर का राजा । खागै – तलवारों से । जोधांण – जोधपुर । बीकांण – बीकानेर ।

---

*महाराजा सूरसिंह (बीकानेर) पुंगल, वरसलपुर तथा वीकूंकोर के भाटी सामन्तों पर कुपित हो गये थे । उस आशय का उपर्युक्त गीत बारहठ हरखा का रचा हुआ है ।

गीत प्रहास सांणोर ३*

अजा सिंघ चालै बिन्है वाट हुइ अेकठा, अेक छति देव गत हाथ आंणी ।
मार कै सार कै पांणी गह मेदनी, मांन-धाता पछै "सूर" मांणी ॥१॥

वाघ छाळी बिन्है बाट सूधा वहै, कोई मारै नहीं जोर कांहीं ।
मांन-धाता तणै राज माल्हावियौ, मारवै-राव बीकांण मांही ॥२॥

आसिया गया मेवासिया छोडे ग्रहि, रूक प्राझौ लगै साह रांणै ।
अजा पंच-मुख बिन्है अेकठा उछरै, जंगळ पतिसाह समझाय जांणै ॥३॥

चमर माथै ढुलै पलै सेवग चलण, पाट उधोर पखै बिन्है पूरौ ।
सोहियौ भलो रायसिंघ रौ सिंघळी, साजि मेवास अेवास सूरौ ॥४॥

(संकर बारहठ)

गीत छोटौ सांणोर ४*

"सूजा" महाराज नमौ सूरातन, दाखै धिन धिन राह दुवै ।
हुवै सदाय घाव तो हाथां, हाथां तो दत्त वडा हुवै ॥१॥
अें दोय वात अथग…; सारौ भय दाखै संसार ।
आचां तूझ वहै रिण-असमर, आचां तूझ हुवै आचार ॥२॥

शब्दार्थ—अजा – बकरी । बिन्है – दोनों । अेकठा – एक साथ । छति – पृथ्वी । सार – तलवार । मेदनी – पृथ्वी । सूर – महाराजा सूरसिंह (बीकानेर) । छाळी – बकरी । सूधा – सीधे । कांही – कुछ । माल्हावियौ – चलाया । मारू-राव – राठौड़ राजा । बीकांण – बीकानेर । मांही – में । आसिया – ? । मेवासिया – लुटेरे, चोर । ग्रहि – घर । प्राझौ – प्रबल । पंचमुख – सिंह । उछरै – जंगल में विचरण करते हैं । जंगळपति साह – बीकानेर का राजा । पखै – पक्षों, वंशों । पूरौ – पूर्ण । सोहियौ – शोभित हुआ । भलो – ठीक, श्रेष्ठ । साजि – सजा देकर । मेवास – लुटेरों । अेवास – स्थान ।

सूजा – महाराजा सूरसिंह (बीकानेर) । सूरातन – शौर्य, वीरता । दाखै – कहता है । धिन धिन – धन्य धन्य । राह दुवै – दोनों पथ, या धर्म (हिन्दू और मुसलमान) । सदाय – सदैव । दत – दान । अथग – असीम, अपार । आचां – हाथों । तूझ – तेरे । वहै – चलती हैं । असमर – तलवार । आचार–दान ।

---

*इस गीत में महाराजा सूरसिंह (बीकानेर) के न्याय-संगत राज्य का काव्यात्मक वर्णन है जिसकी तुलना मानधाता से की गई है ।

*प्रस्तुत गीत में कवि ने महाराजा सूरसिंह (बीकानेर) की वदान्यता और शौर्य का वर्णन किया है ।

पोहौ सिरताज आज वीक पुरा, सूर-वीर दाता सुभियांन।
करगां ज तूं वडा रिण करणौ, दियणौ ज तूं करां वड दांन ॥३॥

दळ-विभाड रायसिंग दूजां, रिमां-पछाड कहै दोय राह।
दत खग तणा अै विरद दोढा, वणिया तूझ खवां सिरवाह ॥४॥
(केसोदास गाडण)

४. कूंपावत गोरधनदास राठौड़ चंडावल*

गीत छोटौ सांणोर १

गज-बंध सुछळि अण भंग "गोवरधन, घण दळसां बाधियौ घणौ।
कमळि घाव वणियौ नव कोटा, टीकौ जुध मेलिया तणौ ॥१॥

शब्दार्थ—पोहौ – राजा। सुभियांन – श्रेष्ठ। करगां – हाथों। करणौ – करने वाला। दियणौ – देने वाला। करां – हाथों। वड दांन – बड़े दान। दळ-विभाड़ – सेना को ध्वंस करने वाला। रिमां – शत्रुओं। दत – दान। खग – तलवार।

सुछळि – युद्ध। अण-भंग – वीर। घण - बहुत। बाधियौ – बढ़ा। घणौ – विशेष। कमळि – शिर, भाल, ललाट। वणियौ – बन गया। नवकोटा – राठौड़। तणौ – का।

---

*यह मारवाड़ राज्यान्तर्गत चंडावल ग्राम का ठाकुर था। महाराजा गजसिंह का पूर्ण विश्वास-पात्र था। इसने महाराजा गजसिंह के साथ दक्षिण के कई युद्धों में बड़े वीरतापूर्ण कार्य किये थे। वि.सं. १६८१ में शाहजादे खुर्रम के विद्रोह के फलस्वरूप बादशाह जहांगीर की सेना और शाहजादे खुर्रम की सेना के बीच युद्ध ठन गया। इस युद्ध में बादशाह की ओर से महाराजा गजसिंह भी अपनी सेना सहित शाही सेना के साथ थे। युद्धारम्भ में शाहजादा पर्वेज ने मिर्जा राजा जयसिंह को हरावल में रखा था परन्तु भीम के भयंकर आक्रमण में पर्वेज और मिर्जा राजा जयसिंह विह्वल हो गये—ऐसे समय में महाराजा गजसिंह व चंडावल ठाकुर गोरधनदास ने खुर्रम की सेना में भयंकर मार-काट मचाई। भीम वीर गति को प्राप्त हुआ। ठाकुर गोरधनदास भी इस युद्ध में घावों से क्षतविक्षत हो गया परन्तु जीवित रह गया। कालान्तर में (वि सं. १७१४ में) बादशाह शाहजहां के पुत्रों ने राज्य-सिंहासन प्राप्त करने के लिए युद्ध छेड़ दिया—इन शाहजादों (औरंगजेब और मुराद) का मुकाबला करने हेतु महाराजा जसवंतसिंह को भेजा गया। इस समय वीर गोरधनदास कूंपावत महाराजा के साथ था। उज्जैन के पास धरमत नामक स्थान में भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में यह वीर ठाकुर वीरगति को प्राप्त हुआ। इन्हीं युद्धों-संबंधी गीतों में से कुछ गीत ठाकुर गोरधनदास कूंपावत के शौर्य व पराक्रम के यहां दिये गये हैं।

मुह विहंडियौ भुजै राव मारू, दुजड़ै भड़ां दाखतै देख।
चौरंगि चहुं दळां 'चांदावत', आगळि हुआ तणौ अविरेख ॥२॥

असहां रिख अणिया में आखित, होई बेदो-धुनि वीर हक।
असिमर अंक कळोधर "ईसर", तो सिरि खत्रवाट चौ तिलक ॥३॥

मुह भांजिया तणा मोहेला, मिळी ते साखी गयण-मिणि।
कुळ आभरण अभिनमा "कूंपा", भू-मंडळि चाढियौ भरणि ॥४॥

गीत छोटो सांणोर २

दहुँवे पतिसाह तणा दळ देखे, खत्री न भाजै मेछ खळै।
"गाजीसाह" कहै गोवरधन, मेळ लोह जिम लोय मिळै ॥१॥

असपत दहूं कडच्छिया ऊभा, खळ दळ हिंदू तुरक खहै।
राव कहै चांदावत रांवत, बाव घाव तिम घाव बहै ॥२॥

मोहर तलाड गजोड़ माझियां, भला भवाड चंद भाराथ।
हाथ उपाड पछाड़ हाथियां, हय उपाड़ संपेखे हाथ ॥३॥

डसण गजां फौजां रिए डोहण, बाघ भेख भख बिळकुळियौ।
धणी वयण अणियां 'गोरधन', मुंह भाखतां समौ मिळियौ ॥४॥

शब्दार्थ—विहंडियौ – क्षत-विक्षित हुआ, या किया। राव-मारू – राठोड़ वीर। दुजड़ै – तलवारों से। भड़ां – योद्धाओं। दाखतै – बतलाते हए, वर्णन करते हुए। चौरंगि – युद्ध। चहुदळां – चारों ओर की फौज। चांदावत – चांदसिंह का पुत्र। आगळि – हरावल। अविरेख – निशान, चिन्ह। असहां – शत्रुओं। रिख – ऋषि, ब्राह्मण, पंडित। अणियां – शस्त्रों की नोकें। आखत=अखत=अक्षत – पूजा के चांवल। वीर हक – वीर हाक – वीर ध्वनि। वेदो-धुनि – वेद-ध्वनि। असिमर – तलवार। अंक – चिन्ह। कळोधर – वंशज। ईसर – ईसरदास कूम्पावत जो गोरधनदास कूंपावत का पितामह था। खत्रवाट – क्षत्रियत्व। मोहेला – महोला – कोरनिस। साखी – साक्षी। गयणमिणी – सूर्य। भू-मंडळि-चाढियों भरणि – संसार को भ्रमित कर दिया, कपायमान कर दिया।

खळै – युद्धस्थल। कडच्छिया – सन्नद्ध हुए। खहै – युद्ध करते हैं। राव – महाराजा गजसिंह। भला – उत्तम। भवाड़ – बना कर। चंद – चांदसिंह का पुत्र। भाराथ – युद्ध। डसण – दशन, दांत। बिळकुळियौ – लालायित हुआ, उतावला हुआ। धणी – स्वामी। वयण – वचन। भाखतां – कहने पर। समौ – ही, पर।

जुध अरि मार जीवै जोवियौ, कमधज करता हूकम कियौ।
...., ... ॥५॥

(अज्ञात)

गीत छोटो सांणोर ३*

(प्रथम - दूहो)

आडी छड़ी न दीजियै, वह आवां खट - व्रन्न।
चौडै बंधी 'चंद' तण, धज तै गोवरधन॥

गीत

खूंदाळम खूरम वाजिया खागै, करणानुज ऊकळी कळ।
"गज - बंधी" आगै गोवरधन, दीधी चोट अबोट दळ॥१॥
पिंड वाजिया बेहूं पतसाहां, मोहर मंडोवर नूभै मण।
मारू ताती अणी मेलिया, तातै रावत "चांद" व तण॥२॥
पाडण खळ मैंगळां पछाड़ण, 'जोध' हरै चाढण जळ जैत।
नव सहंसै तुरांट नांखिया, बानैतां ऊपर बांनैत॥३॥
छिनतै मछर संसार छेतरै, आगै वध मिळीयौ अणी।
धिन जीतै गोवरधन धिन, धिन गोवरधन तणा धणी॥४॥

(चतरौ मोतीसर)

शब्दार्थ—खूंदाळम – बादशाह। वाजिया खागै – युद्ध किया। करणानुज – भीम सीसोदिया। दीधी – दे दी। चोट – प्रहार। अबोट दळ – बिना युद्ध किया हुआ दल या सेना। पिंड – युद्ध। वाजिया – भिड़े, युद्ध किया। मोहर – हरावल। नूभै मण – निर्भय मन वाला। मैंगळां – हाथियों। जोध-हरै – राव जोधा के वंशज। जळ – कांति, आभा। जैत – विजय। नवसंहसै – राठोड़। तुरांट – घोड़ा। नांखिया – झोंक दिये। बानैतां – वीरों। मछर-मत्सर – कोप। छेतरै – (?)। अणी – सेना।

---

*यह गीत चतुरा मोतीसर कृत है। चतुरा मोतीसर पर महाराजा गजसिंहजी नाराज हो गये थे। अतः चतुरा प्रथम चंडावल ठाकुर गोवरधनदास के पास गया और उपर्युक्त गीत व दोहा सुनाया जिस पर ठा० गोवरधनदास ने चतुरा को महाराज गजसिंह के दरबार में उपस्थित किया।

वि० वि० के लिए देखो पृ० २७६-२७७ के फुटनोट।

(उजैण रै जुध रा गीत)

गीत छोटौ सांणोर ४

आयौ जुध जेम "मुराद" ऊपडै, फौजां घण बारा फिरिया ।
गढपतियां गिरवर गोवरधन, आडौ दियां सह उबरिया ।।१।।

मूसळ धारां तूसळ मैंगळ, धडां दरड़ पडतां चौधार ।
वडा पहाड गोवरधन वांसै, सारा ऊबरिया सरदार ।।२।।

खाळ नाळ रुधरां खळकतां, जाझा कण वरसंतां जाळ ।
ओळै कमधज तणै ऊबरिया, गढपत वाळा बाळ गोपाळ ।।३।।

अवडौ भार सहै सिर ऊपर, बेहूं खग झाटां बौछाड ।
व्रज जिम राख लियो दळा वांसै, पडियौ "चांद" तणौ पहाड ।।४।।

(अज्ञात)

गीत छोटौ सांणोर ५

नारद पूछियौ गिरवर रिख नायक, वर ऊबरियौ रुद्र वहै ।
रांणी दोय परणी रुद्रांणी, किसी सुहागण साच कहै ।।१।।

चांदावत ब्रह्मावत चवियौ, मांड ऊहीज बेहूं जुध मांह ।
पुरब घडा जीप सुख पाया, चाहियौ वळै दखण तण चाह ।।२।।

राजा करूप रिख रिख राजा, गौदै कहौस सुणै गुर ।
रीझै फौज खुरम री रहियौ, ओरंग री गौ छोड उर ।।३।।

शब्दार्थ—आडौ – ओट, आड । उबरिया – बच गये । तूसळ – दांत (?) । मैंगळ – हाथी । दरड – द्रव पदार्थ का प्रवाह या प्रवाह की ध्वनि । चौधार – चारों ओर । वांसै – ओट में, आड में, पीछे । ऊबरिया – रक्षित रहे । रुधरां – रुधिर । खळकतां – ध्वनियुक्त बहने पर । जाझा – घना । अवडौ – इतना । चांद – गोवरधन कूंपावत का पिता चांदसिंह । तणौ – तनय, पुत्र ।

गिरवर–गोवरधन कूंपावत के लिए प्रयोग किया गया शब्द । वर–पति । ऊबरियौ – रक्षित रहा । रुद्र – यवन । वहै – मारे गये । रुद्रांणी – यवन स्त्री । (यहाँ यवन सेना के लिए प्रयोग किया गया है) । सुहागण – सौभाग्यवती । चांदावत – चांदसिंह कूंपावत का पुत्र गोरधनदास कूंपावत । ब्रह्मावत – नारद मुनि । चवियौ – कहा । पूरब घडा जीप सुख पाया – खुर्रम की सेना में विजय प्राप्त कर हर्ष मनाया । वळै – फिर । दखण – दक्षिण की सेना (ओरंगजेब और मुराद की सेना) । गौदै – ? रीझै – प्रसन्न होकर ।

सरखी कमंध वरी सायजादी, सार नार पडजनां सगार।
विसव ऊपरै हेक बखांणै, मांणै वीजी सुरग मझार ।।४।।

(महेसदास आढो)

गीत छोटो सांणोर ६

ग्रहसी अगनी भखै की ग्रीधरण, परम किसूं बांधै गळ पोय।
धड-धारां सारां गोवरधन, लागै गयो तुहाळी लोय ।।१।।

चरै अगन की पंखण आचरै, सिव कंठ किसूं करै सिणगार।
करमाळां "चांदोत" कलेवर, वाढ चढेगो भारत वार ।।२।।

आतस विहंग किसी आचरै, ईसर की ठाळै उतबंग।
अरि आवधां अभनभो "ईसर', ऊबरियो धांरां लग अंग ।।३।।

चरियां अगन न को चांचाळी, भव में कांम न आयो भाळ।
मारू-राव असमरां मुहडै, तिल तिल हुय पडियो रिण ताळ ।।४।।

(अज्ञात)

शब्दार्थ—वरी – वरण की। पडजन – विवाह की एक रस्म जिसमें कन्या पक्ष वाले बरात का स्वागत करने हेतु बरात के सामने जाते हैं, सीमान्त पूजा। विसब – विश्व, संसार। मांणै – उपभोग करता है।

परम – महादेव। किसूं – क्या। गळ – कंठ, गर्दन। तुहाळी – तेरी। चरै – भस्म करे। पंखण – पक्षी (मांसाहारी)। आचरै – भक्षण करे। करमाळा – तलवारों। चांदोत – चांदसिंह का पुत्र। कलेवर–शरीर। वाढ–शस्त्र का पैना भाग, शस्त्र की धार। भारत – युद्ध। वार – समय। आतस–अग्नि। विहंग – पक्षी। ईसर – महादेव। ठाळै – तलाश करता है। की – क्या। उतबंग – उत्तमाङ्ग। आवधां – आयुधों, अस्त्र-शस्त्रों। अभनमो – वंशज। ईसर – ईसरदास कूंपावत जो गोवरधनदास कूंपावत का पितामह था। चांचाळी – गिद्ध, चिल्ह भव – महादेव। चै – के। भाळ – देख। मारू राव – राठौड़। असमरां – तलवारों। मुहडै – अगाड़ी। रिणताळ – युद्धस्थल।

५. कूंपावत राजसिंह

गीत प्रहास सांणोर १*

प्रगट स्यांम ध्रम पुरस हद मांटी पणौं, पुन बड भाग म्है धणीज पायौ।
स्यांम रै काज जिण लूण री सरीगत, आज व्रिद उजाळण समौ आयौ ॥१॥
जोग सूं वात वण भूप "जसवंत" पर, प्रेत रौ आय वड चक्र पड़ियौ।
पुत्र पर-धांन बिन प्रांण जावै परौ, अचांणक भयंकर स्वाल अडियौ ॥२॥
कहै कर जोड़ तिण समै "राजड" कमंध, पती कज पियालौ मनै पावौ।
आज मो मरत "जसवंत" नृप ऊबरै, जाय छै जीव तौ परौ जावौ ॥३॥
आपरौ प्रांण दे धणी नै ऊबारियौ, "राजसी" अवेढी बात राखी।
स्यांम ध्रमपणा मैं "कूंप" हर सिधाळा, सदा इण वात रौ जगत साखी ॥४॥

(अज्ञात)

गीत-प्रहास सांणोर २

हसी करीजै चाकरी भूप इळ ऊपरा, बापरै नांम पर सुजळ बाढै।
इळा पर नांम ऊण अमर आदू कियौ, कोई नह चूक फिर मुवां काढै ॥१॥
करीजै चाकरी जैडी "राजड़" करी, गीत जिण कीत रा दुनि गाया।
आवतां आपदा भूपरै ऊपरा, "कूंप" रै छोकरै तजी काया ॥२॥

शब्दार्थ—पुन – पुण्य, सुकृत। व्रिद – विरुद। समौ – समय। चक्र – बाधा? स्वाल – प्रश्न, सवाल। राजड़ – राजसिंह कंपावत। अवेढी – विकट।

इळ – इला, पृथ्वी। चूक – गलती; दोष।

---

*यह आसोप का ठाकुर था। महाराजा गजसिंह का पूर्ण विश्वासपात्र था। वीर शिरोमणि भीम सीसोदिया के टूस नदी के युद्ध में यह महाराजा गजसिंह के साथ था। इस युद्ध मे राजसिंह ने बड़ी बहादुरी दिखाई थी। वि०सं० १६९५ में महाराजा गजसिंह का देहावसान हो गया। उस समय महाराजा जसवंतसिंह की आयु १२ वर्ष की थी। जसवंतसिंह का राज्यतिलक बादशाह शाहजहाँ ने आगरे में ही किया और ठाकुर राजसिंह को महाराजा का प्रधान नियुक्त किया। वि० सं० १६९७ में महाराजा जसवंतसिंह के शरीर में प्रेत-बाधा उत्पन्न हो गई। इस समय मन्त्रोपचारक द्वारा मंत्रित जल पान कर इस बीर ने महाराजा जसवंत सिंह के लिए अपना नश्वर शरीर त्याग दिया। इस घटना सम्बन्धी दो गीत ऊपर दिये गये हैं। कुछ लोगों का ऐसा विश्वास है कि महाराजा ने राजसिंह का वध करने हेतु यह षड्यंत्र रचा था।

प्रेत जद पैसियौ "जसारा" पिंड में, कोइ नह जीव रौ जतन कीधौ ।
"खींव" सुत आपरै पिंड खेद ले, पियाळौ मंत्र रौ आप पीधौ ।।३।।

जीवतौ बचाड़ै भूप जोधांण नै, कमंध सुरगा बिचै वास कीधौ ।
अमर जस राख आपरौ इळा में, लाख-मुख हूंत स्याबास लीधौ ।।४।।

(अज्ञात)

६. कूंपावत भीम*

गीत सोहणो

अजमेरे डेरैज अरी आंणै, गोविंद भाटी चूक गह्यौ ।
पायै हुकम "सूर" नरपत रौ, लड "कूंपै" वड वैर लियौ ।।१।।

पतसाहां सेना विच पोचै, हणियौ सजन हरांमां ।
मुरधर रै राजा मोकळियौ, लीन्हौ वैर ... ... ।।२।।

सूर सिंघ सेना बिच संचर, कपटां 'गोविंद' चूक कियौ ।
मांन हुकम महपत रौ मारू, बाहरू चढै 'तिलोक' वियौ ।।३।।

आंण पोथै जिसणां दळ ऊपर, कटक बाढ निज खाग कियौ ।
सांम कांम सत्र घट भांजै, रण भूमी "भीमेण" रह्यौ ।।४।।

(अज्ञात)

शब्दार्थ—पैसियौ – प्रविष्ट हो गया । खेद – कष्ट । पीधौ – पीलिया । कीधौ–किया । लीधौ – लिया ।

मोकळियौ – भेजा । महपत – महिपति, राजा । मारू – राठौड़ । बाहर – रक्षक । तिलोक – तिलोकसिंह कूंपावत । वियौ – वंशज । पोथै – पहुंच कर । पिसणां – शत्रुओं ।

---

*यह वीर "भाटी गोविंददास" की हत्या के पश्चात तुरन्त ही शत्रु-दल के पीछे महाराजकुमार गजसिंह के साथ गया और विपक्षियों से युद्ध करता हुआ वीर गति को प्राप्त हुआ ।

७. कूंपावत कचरौ राठौड़*

गीत छोटो-सांणोर

परणीजण पतसाह जांन पतसाही, चहुंग्रै दिस ढुळतां चंमर ।
गावैं ग्रच्छर वेद-धुनि गह-मह, "कचरौ" परणीजै कवर ॥१॥

पेखण कळह कमंध परणावण, लिखिया रुद्र नारद लगन ।
जोगण-पुरा मांडहौ जांनी, जोगणपुरां रचियौ जगन ॥२॥

तीर अखत डालां-गज तोरण, चहुं दिस कळस मंगळा-चार ।
चौंरी वडी पेखियौ चिगथै, "कूंप" कळोधर राज कँवार ॥३॥

पौढियौ पिलंग चाव सत्र पाथर, रहै महलां बीच घणौ रस ।
तो नूं दियौ हिंदवै तुरकै, "जसवंत" रा डायजौ जस ॥४॥

(किसनौ ग्राढौ)

शब्दार्थ—परणीजण – विवाह करने को । जांन – बरात । ग्रच्छर – ग्रप्सरा । गह-मह – ? । पेखण – देखने को । कळह – युद्ध । परणावण – विवाह करने को । लगन – लग्न, मुहूर्त । जोगणपुरा – मुसलमान, बादशाह । मांडहौ – विवाह में कन्या पक्ष वालों का स्थान । जगन – यज्ञ-विवाह । ग्रखत – बिना टूटा चावल, ग्रक्षत । ढालां-गज – गज ढाला, हाथी के शिर पर धारण कराया जाने वाला उपकरण । तोरण – विवाह के ग्रवसर पर कन्या के पिता के भवन के मुख्य द्वार पर लगाया जाने वाला काष्ट की खपच्चियों का बना हुग्रा मांगलिक उपकरण । मंगळाचार– मांगलिक गायन । चौंरी – विवाह मंडप का यज्ञ-कुण्ड । पेखियौ – देखा । चिगथै – चगताई वंश का,मुगल । पौढ़ियौ – शयन किया । चाव–उमंग । सत्र – शत्रु । पाथर– बिछा कर । रस – ग्रानन्द । डायजौ – दहेज ।

---

*कूंपावत कचरा राव कूंपा राठोड़ के पुत्र महेशदान का प्रपौत्र तथा जसवंत सादूलोत का पुत्र था । यह खुर्रम की ग्रोर से टूंस नदी पर युद्ध करने वाले प्रसिद्ध वीर भीम सीसोदिया की सेना का प्रमुख योद्धा था । इसी युद्ध में बड़ी बहादुरी के साथ युद्ध करता हुग्रा वीर-गति को प्राप्त हुग्रा । प्रस्तुत गीत में कविवर किसना ग्राढा ने दोनों बादशाहों में एक को दूल्हे के पक्ष का ग्रौर दूसरे कन्या पक्ष के व्यक्ति की तुलना करते हुए कचरा को दूल्हा बनायो है । सेना रूपी दुलहिन का वर्णन करके युद्धस्थल रूपी पर्यङ्क पर कचरा सदैव के लिए शयन कर गया ।

८. राव जैतो*

गीत पंखाळो १

नवलाख कटक नवलाख नेजाइत, गढ थरहरै वडा गजगाह ।
"जैता" तणा भुजा-डंड जोवा, "सूर" पधारे पहर सनाह ।।१।।

मुर-खट लाख मेछ दळ मोड़ै, सत्र हर चढत मंडोवर सीम ।
जोगिणि-पुरौ आइ इम जोवै, भुज राडोड तणा जुध-भीम ।।२।।

रिण-मल" हरौ मुवौ पग रोपै, धाइ विहंड असुरांण घणा ।
ऊभौ करै जोहयो असपति, तांह भुजा-डंड "जैत" तणा ।।३।।

(अज्ञात)

शब्दार्थ—नेजाइत – भालाधारी, झंडाधारी । थरहरै – कंपायमान होता है । गज-गाह – युद्ध, योद्धा, वीर । सूर – बादशाह शूरशाह । सनाह – कवच । मुर – तीन । जोगिणिपुरौ – बादशाह, यवन । आइ – आकर । इम – इस प्रकार । भीम – जबरदस्त । रौ – वंशज । धाइ – प्रहार । विहंड – मार कर । असुरांण – बादशाह । ऊभौ – खड़ा । जोइयो – देखा । असपति – बादशाह । तणा – के ।

---

*राव जैता प्रसिद्ध महावीर मंडोवर के अधिपति राव रिणमल के पुत्र अखैराज का पौत्र तथा पंचायण का पुत्र था । राव मालदेव के गिर्री समेल के युद्ध में यह वीर बड़ी बहादुरी के साथ बादशाह शेरशाह सूर की सेना से युद्ध करता हुआ राव कूंपा के साथ ही वीर-गति को प्राप्त हुआ । बादशाह शेरशाह इन वीरों से युद्ध करता हुआ विह्वल हो गया था । युद्ध से निवृत्त होने के पश्चात बादशाह ने इनकी लाशें देखनी चाहीं, जिनको बादशाह के सेनापति ने तलाश करके ला कर हाथियों के सहारे खड़ी कर दी । बादशाह इन को देखकर चकित हो गया और इनकी खूब प्रशंसा कर के कहा "खुदा का शुक्र है कि राव मालदेव इन वीरों के साथ नहीं था वर्ना जान से हाथ धोने पड़ते ।

ग्रंथ के मूलपाठ पृ० २१५ में राव जैता का नामोल्लेख है । गीत में वर्णित इतिहास ठीक है, परन्तु सेना की संख्या में कवि ने अतिशयोक्ति का सहारा लिया है ।"

गीत छोटो सांणोर २

डाळा अनि सुहड घणा डोलांणा, सार लहरी बाजती साह ।
जड वह लाज महा-ध्रू "जैता", निर्भ-स थुड थरहरियो नाह ।।१।।

झूंबै अवर नर कंपै झांबळी, वाढाळा खमि सकै न वाड ।
ध्रु-वळा सरिखौ अचळ रहियो, धूरि, रूंख वडौ रिणमल हर राड ।।२।।

भड-अनि साख झळझळै भारथि, धाउ मैं कोरण पेखि घणौ ।
मूळ सुं नह डिगियो राव मारू, तर "जैतो" "पंचायण" तणौ ।।३।।

मुर-खंड नाइक सुछळि मुरधरा, घाइ असुर दळ साजि घणा ।
सु व्रख सुहाइ "जैत" अण संकित, तुड यो कुटकै आप तणा ।।४।।

(अज्ञात)

६. जैतावत प्रथीराज राठौड़*

गीत छोटो सांणोर १

सिव आगै सगत पयंपै साचो, सार चढावीया घणा सत्र ।
पत्र पांडवां न भरिया पूरा, "पीथळ" ताय पूरिया पत्र ।।१।।

शब्दार्थ—डाळा – बड़ी टहनी, वृक्ष की शाखा । सुहड – सुभट । अनि – अन्य, दूसरे । डोलांणा – हिल गये, दोलायमान हो गये । सार – तलवार । लहरी – वायु, झोंका, हवा । साह – बादशाह । महा-ध्रु – महान ध्रुव, अटल । जैता – राव जैतसिंह । निर्भै – निर्भय । थुड – तना । थरहरियो – कंपायमान हुआ । नाह – नहीं । झूंबै – पकड़ते हैं । झांबली – टहनी । वाढ़ाळा – खड्गधारी, वीर । खमि – सहन कर । वाउ – वायु । ध्रुवळा – ध्रुव । सरिखौ – समान । धुरि – अगुआ । रिणमल हर – राव रिणमल का वंशज । साख – शाखा, टहनी । झळहळै – कांपते हैं । भारथि – युद्ध में । पेखि – देख कर । राव मारू – राठोड़ वीर । तर – तरु, वृक्ष । जैतो – राव जैता । तणौ – तनय, पुत्र । सुछळि – लिए । घाइ – प्रहार । तुड – तना ।

पयंपै – कहती है । पत्र – खप्पर । पीथळ – पृथ्वीराज । पूरिया – पूर्ण किए ।

---

*यह पूर्वोल्लिखित राव जैता का प्रथम पुत्र था । वि० सं० १६१० में राव वीरमदेव के पुत्र राव जयमल को राव माल देव ने जोधपुर बुलाया, परन्तु वह उपस्थित नहीं हुआ,

माहाभारथ "पीथल" मेड़तँ, घट घट वाहै लोह घणौ।
"अरजण" हूंत रह्या था आधा, ताय (पत्र) भरीया "जैत"-तणौ ॥२॥
खपीया जठै अठारै खोयण, आघी रहीया तेण अवाह।
चौसट खपर पूरिया चळुअळ, हेकण कमध तणै हथवाह ॥३॥
सुरां नरां पतगरियौ समहर, हिंदू नमौ तुहाळा हाथ।
"सलखा" हरा तणौ अत सहलां, सगत तणौ सो धायौ साथ ॥४॥
(अज्ञात)

गीत पंखाळो २*

रांणी म म रोय "प्रथै" रण रीधल, रण भाजे स तिके भड़ रोय।
घण-जूझा रिडमाल तणैं घर, हुअै मरण जद मंगळ होय ॥१॥
"पीथल" तणौ म कर दुख पचियत, दढ तज गया तीयां कर दुख।
आद-जुगाद "अखा" हर आगैं, सार-मरण घण-घणौ सुख ॥२॥
म कर अदोह "जैतवत" मरतै, आया भाज-स रोय अयार।
आ कुळवाट सदा "अखै-राजां", चडतां कूंतां मंगळ-चार ॥३॥
(अज्ञात)

शब्दार्थ—जैत – राव जैता। खपीया – समाप्त होगये। अवाह – देवी का खप्पर। चळुअळ – रक्त, खून। हेकण – एक ही। हथवाह – प्रहार। पतगरियौ – प्रशंसा की। समहर – युद्ध। तुहाळा – तेरे। सगत – शक्ति, रणचंडी। तणौ – का। सो – सब। धायौ – तृप्त हुआ।

प्रथै – पृथ्वीराज। रण – युद्ध। रीधल – वीरगति प्राप्त होने पर। भाजे – भग जाते हैं। घण-जूझा – बहुत युद्ध करने वाले। तणैं – के। घर – वंश। मंगळ – आनंद। पीथल – पृथ्वीराज जैतावत। पचियत – (?)। दढ – साहस, दृढता। तीयां – उनका। आद-जुगाद – परम्परा से। सार – तलवार। अदोह – दुख, संताप। जैतवत – राव जैता का पुत्र। अयार – शत्रु।

जिससे कुपित होकर राव मालदेव ने मेड़ते पर चढ़ाई कर दी। इसका मुकाबला करने को राव जेमल के प्रतिष्ठित और विश्वासपात्र वीर युद्धार्थ कटिबद्ध हुए। कुछ समय के बाद ही भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में राव मालदेव की ओर से जैमल की सेना से लड़ता हुआ इन तीन गीतों का चरित्र-नायक जैतावत पृथ्वीराज राठौड़ वीरगति को प्राप्त हुआ। प्रस्तुत गीतों में गीत नायक पृथ्वीराज के वीरतापूर्ण कार्यों का अनूठा वर्णन है।

*प्रस्तुत गीत में पृथ्वीराज जेतावत के वीरगति प्राप्त होने के पश्चात् उसके कुटुम्बियों को सान्त्वना देने तथा वीरगति प्राप्त होने के महत्व का दिग्दर्शन मात्र है।

१०. जैतावत भगवानदास राठौड़*

गीत-प्रहास सांणोर

भिड़णि जेम "भगवांन" असमांन अड़ियै भ्रिगुट,
भार धरि भुजै गढ सनढ भेळै ।
दळां रा तिके रखपाळ न्याइ दाखिजै,
मुहरि वधि भड़ांहूं सार मेळै ।।१।।

अभनमा "प्रिथीमल" जिही धरियै अधणि,
आवळां - दळां वधि खळ ऊथाळै ।
भुजै बीड़ौ तिकै बहसि मांगै भलां,
झूझ भर आवगौ सीस झालै ।।२।।

जंगि जूपै धवळ जोध लागां जिही,
जिकै अरि लाख तिल मात जोवै ।
दळां सिरदार ताइ भलां कीजै दुझल,
हुबंतां दळां दळ - थंभ होवै ।।३।।

हैडवै थाट अविग्राट "जैता" हरै,
सारीखं मरण संसार सीधौ ।

शब्दार्थ—भिड़णि – युद्ध । अड़ियै – स्पर्श किए हुए । भ्रिगुट – भृकुट, शिर । भार – उत्तरदायित्व । सनढ – वीर । भेळै – लूट लेता है ? रखपाळ – रक्षक । दाखिजै – कहे जाते हैं । मुहरि – हरावल । भडांहूं – योद्धाओं से । सार-मेळै – युद्ध करते हैं । आवळा-दळां – सुसज्जित सेनाएं । खळ – शत्रु । ऊथाळै – गिरा देता है । बहसि – जोश में आकर । भलां – ठीक । झूझ – युद्ध । भर – उत्तरदायित्व । आवगौ – पूर्ण, पूरा । दुझल – वीर । हुबंतां – भिड़ने पर । दळ-थंभ – सेना को रोकने वाला वीर । हैडवै – ढकेलता है । थाट – सेना । अविग्राट – वीर । जैता– राव जैता राठोड़ । हरै – वंशज ।

*भगवानदास जैतावत राठौड़ बाघसिंह का पुत्र बगड़ी का ठाकुर था । मूल ग्रंथ पृ० २२५ में इस वीर का नाम महाराजा गजसिंह के प्रमुख योद्धाओं की नामावली में आया है । गीत में प्रदर्शित वीरता का संबंध वि० सं० १६८५ में होने वाले युद्ध से है, जो सीसोदरी तैपुर सीकरी के निकट) के किले पर अधिकार करने के लिए हुआ था । इस युद्ध में यह वीर बड़ी बहादुरी के साथ युद्ध करता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ था ।

"वाघ" रै रांम रा भींच त्युही वधै,
कमधि जुधि रमायण बियो कीधौ ।।४।।
(अज्ञात)

११: राठौड़ रामसिंह*

गीत बड़ो सांणोर

चढै धार अणियां अड़ै काज चकतां तणैं, सूर सूरां तणी वणै भुज सीम ।
पौढणै समर बिच पांतरौ पड़तां, "भीम" "रांमौ" हुआ आंतरौ "भीम" ।।१।।
गुडै पाखर गजां नौबतां गड-गड़ी, चौवड़ी भांज गज लोह चड़ियौ ।
लाख सूं अड़ै सीसोद पड़ियौ लड़ै, पाखती झड़ै राठौड़ पड़ियौ ।।२।।
खाग दहुंवै दळां आग लागी खिवण, लाग अंबर मरण बाग लीधी ।
"अमर" रै घमजगर समर बिच ओरतां, "कमा"-रै वरोबर भली कीधी ।।३।।
अभंग तिल तिल हुओ छात आहुटतै, प्रथी असपत बखत कमध पायौ ।
चढै रथ रंभ इक सरग दिस चालियौ, एक आधा सरग हूंत आयौ ।।४।।
(चतुरो मोतीसर)

शब्दार्थ—भ च – योद्धा । कीधौ – किया ।

चकतां तणैं – चग़ताई वंश के । अड़ै – भिड़ गये । पौढणै – शयन । पांतरौ – बिछौना ? आंतरौ – दूर, दूरी । पाखर – घोड़ा (कवचधारी) । चौवड़ी – चतुरंगिनी । अड़ै – युद्ध करके । पड़ियौ – वीरगति को प्राप्त हुआ । पाखती–पार्श्व में । झड़ै – युद्ध में कट कर । पड़ियौ – धराशायी हुआ । खिवण – चमकने लगी । अंबर – आकाश । लीधी – ली । अमर – महाराणा अमरसिंह । घमजगर – भयंकर, घमासान । समर – युद्ध । ओरतां – झोंकने पर । कमा-रै – कर्मसेन के पुत्र । कीधी – की । अभंग – वीर । छात – राजा । आहुटतै – युद्ध करते हुए । असपत–बादशाह । रंभ – अप्सरा । हूंत – से ।

---

*राठौड़ रामसिंह जोधपुर के राव चन्द्रसेण के पुत्र उग्रसेण का पौत्र और कर्मसेन का पुत्र था । राव कर्मसेन और महाराजा गजसिंह के अनबन रही अतः राव कर्मसेन को मारवाड़ से खदेड़ कर बूंदी की ओर निकाल दिया था । राव कर्मसेन का विवाह मेवाड़ में महाराणा के कुटुम्ब में हुआ था । अतः उपर्युक्त वीर रामसिंह महाराणा का रिश्ते में भानजा लगता था । इसलिए यह भी कई वर्षों तक उदयपुर में रहा और उसने राजा भीम सीसोदिया के साथ कई युद्धों में भाग लिया । हाजीपुर पट्टन (टौंस नदी) में होने वाले युद्ध में भी वह भीम सीसोदिया की सेना में महाराजा गजसिंह के विरुद्ध घमासान युद्ध करता हुआ घायल हो गया । वीर न वीरगति को प्राप्त हुआ ।

१२. ऊहड अरजुनसिंह गोपालदासोत*

गीत छोटो सांणोर

पह चढ देस छळ मीर पलटतां, कुळवट तैं पूछियौ किसौ ।
इहतौ जिसौ जनम लग "ऊहड", "अरजुण" अत सांपनौ इसौ ।।१।।

घरियै अधरिण आप तन "धूहड", मिळियौ सारै निभै मन ।
निहसै खसै ऊससौ निग्रहै, वंछतौ ताइ जुड़ियौ विघन ।।२।।

"पाल" तणी उजवाळण परियां, घट तूटै आवाहै घाव ।
मिळियौ दिनि धवळै राव-मारू, पह प्रीणतौ तिसौ परिजाव ।।३।।

शब्दार्थ—पह – राजा । छळ – लिए । मीर – शाहजादा । पूछियौ – पूछा । किसौ – कैसा । इहतौ – इच्छा करता हुआ । लग – पर्यन्त, भर । सांपनौ – प्राप्त किया । इसौ – ऐसा । धूहड – राव धूहड़ का वंशज । सारै – तलवारों । निभै-मन – निर्भय वीर । निहसै – जोश करता है । खसै – युद्ध करता है । निग्रहै – युद्ध में । वंछतौ – चाहता था । ताइ – वह, उस । जुड़ियौ – प्राप्त हुआ । विघन-युद्ध । पाल – गोपालदास । तणी – पुत्र । उजवाळण – उज्ज्वल करने को । परियां–पूर्वजों । घट – शरीर । आवाहै – आवह में, युद्ध में । दिनि धवळै – दिन दहाड़े । राव-मारू – राठोड़ वीर । प्रीणतौ – चाहता था । परिजाव – अवसर, मौका ।

उपर्युक्त गीत में कवि चतुरा मोतीसर ने राजा भीम सीसोदिया एवं राठोड़ रामसिंह की तुलना करते हुए भीमसिंह को स्वर्ग प्राप्ति का श्रेय दिया है और रामसिंह को स्वर्ग प्राप्ति से वंचित होने का वर्णन किया है। परन्तु, यहीं वीर धरमत के युद्ध में दारा शुकोह के पक्ष में रहता हुआ औरंगजेब और मुराद के विरुद्ध युद्ध करता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ था ।

*अर्जुनसिंह ऊहड शाखा का राठोड़ वीर कोढने का ठाकुर था । वह महाराजा गजसिंह का पूर्ण विश्वासपात्र व्यक्ति था । महाराजा गजसिंह ने जब भीम सीसोदिया से युद्ध करने के निमित्त प्रस्थान किया तब अपने सामंतों का एक बड़ा सम्मेलन किया था । उक्त सम्मेलन में मूल पुस्तक के पृ. १५१ पर भी इस वीर का उल्लेख है । भीम से युद्ध करने के समय महाराजा गजसिंह ने इस वीर को महाराजकुमार अमरसिंह व जसवंतसिंह का अभिभावक नियुक्त किया था । अतः यह उस समय जोधपुर में ही रहा । गीत में वर्णित इतिहास का ठीक-ठीक पता नहीं चल सका ।

जिमई "माल" अभिनमै "जैमल", हालियो दिलि दळ-थंभ हुनो ।
"कोढणै" जळ चाढै नवकोटै, मोटै प्रबि सांपनो मुनो ॥४॥

(अज्ञात)



शब्दार्थ—माल – जैतमाल ऊहड़, जो राव चंद्रसेण की सेना का एक प्रमुख योद्धा था। वह वि०सं० १६३६ सरवाड़ के बादशाही थाने पर अधिकार करते समय बादशाही सेना से मुकाबला करता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ। अभिनमै – पुत्र। जैमल – ऊहड़ नेतसी का पुत्र तथा ऊहड़ जैतमाल का पिता था। यह वीर भी अपने पुत्र जैतमाल के साथ ही बादशाही सेना से युद्ध करता हुआ वि०सं० १६३६ में वीरगति को प्राप्त हुआ। हालियो– चलने पर। दळथंभ – सेना को रोकने वाला वीर। नवकोटै – राठोड़। मोटै – महान। प्रबि – पर्व, अवसर। सांपनो – प्राप्त होने पर।

परिशिष्ट ३

सीसोदियों के गीत

१ भीम सीसोदिया•

दूहो

अमर गरज्जै अमर-पुर, घर लज्जै जहांगीर ।
"भीमाजळ" भज्जै नहीं, भज्जै खुरम अधीर ।।

गीत छोटो सांणोर १*

खित लागा बाद बिन्है खूंदाळम, सूता अणी सनाहै साथ ।
थापै खुरम जेहडा थांणा, "भीम" करै तिहड़ा भाराथ ।।१।।

हूआ प्रवाडा हाथ हिंदुआँ, असुर सिंघार हुअै आरांण ।
साह आलम मुकै साहिजादौ, राइजादौ थापलियौ रांण ।।२।।

मंडियो वाद दिली मेवाड़ां, समहर तिको दिहाड़ै सींव ।
भवस न पैठा किसा भाखरां, भाखर किसै न विढियौ "भींव" ।।३।।

आरंभ-रांम "अमर" घर ऊपर, लड़ै "अमर" छळतां अलंग ।
आवटियौ घटियौ असुरायण, खूंमांणै मांजियौ खग ।।४।।

(अज्ञात)

शब्दार्थ—खित – पृथ्वी । बाद – युद्ध । बिन्है – दोनों । खूंदाळम – बादशाह । थापै – स्थापित करता है । जेहडा – जैसे । तेहडा – वैसे । भाराथ – युद्ध । प्रवाडा – युद्ध, कीर्ति के कार्य । असुर – यवन । सिंघार – संहार । आरांण – युद्ध । आलम – दुनिया । मुकै – भेजता है । राइजादो – राजपुत्र, (भीम) । थापलियौ – पीठ ठोकी, उत्साहित किया । रांण – महाराणा । मंडियौ – रचा गया । समहर – युद्ध । दिहाड़ै – दिन में । सींव – सीमा । भवस – यवन । विढियौ – युद्ध किया । भींव – भीम सीसोदिया । आरंभ-रांम – राम के समान ही कार्य प्रारम्भ करने वाला । अमर – महाराणा अमरसिंह । आवटियौ – कुढ़ कर या जल कर कम हो गया । असुरायण – बादशाह । खूंमांणै – रावल खुमान का वंशज भीम सीसोदिया । मांजियौ– मार्जन किया । खग – तलवार ।

•भीम सीसोदिया महाराणा अमरसिंह का छोटा पुत्र था ।

*वि०सं० १६७० में बादशाह जहांगीर के आदेश से खुरंम और अब्दुल्ला खां ने बड़ी भारी सेना से मेवाड़ राज्य पर आक्रमण किया । खुरंम विजय प्राप्त करता हुआ जहां-तहां मेवाड़ में बादशाही चौकियाँ स्थापित करता था, वीर भीम सीसोदिया खुरंम की सेना का पीछा करता हुआ बादशाही थानों को उठा देता था । प्रस्तुत गीत में भीम का बादशाही चौकियों को नष्ट करने तथा उठा देने का किसी समसामयिक कवि ने उपर्युक्त गीत में बड़ा न्दर वर्णन किया है ।

गीत वडो सांणोर २

इसा रूप सूं भीम खग वाहतो आवियो,
विखम भारत तणी वणी वेळा ।
भांज दळ सैद जैसींघ सू भेळिया,
भांज गजसींघ जैसींघ भेळा ॥१॥

खत्री-वट प्रगट "अमरेस" रौ खेलतो,
ठेलतो थाट रहिया न कूं ठाह ।
मार तुरकां दिया सार कमधां मही,
मार कमधां दिया कुरमां माह ॥२॥

असंख दळ दिली रा भुजां उछांडतो,
सबळ भड़ "भीम" दीठौ सबांही ।
घेच बछ बारहो मंडोवर घातिया,
मंडोवर घेच आंबेर मांही ॥३॥

"भीम" "सांगा" हरो विखंड करतो भड़ां,
आवरत सावरत खगां उझाळौ ।
पछै असुरै सुरै घणू माथौ पटक,
कटक मर मारियो नीठ काळौ ॥४॥

(चतरो मोतीसर)

शब्दार्थ—वाहतो – चलाता हुआ, वार करता हुआ । आवियो – आया । विखम–विषम, भयंकर । भारत – युद्ध । तणी – की । वणी – हुई । वेळा – समय । सैद – सैयद, यवन, मुसलमान । भेळिया – मिला दिये । भेळा – साथ । ठेलतो–धकेलता हुआ । थाट – सेना । ठाह – ज्ञान । कमधां – राठौड़ों । मही – में । कूरमां – कछवाहों । माह – में । उछांडतो – पराजित करता हुआ । दीठौ – देखा । घेच – खदेड़ कर । घातिया – मिला दिये । मांही – में । सांगा – महाराणा संग्रामसिंह । हरो – वंशज । विखंड – संहार, मार-काट । भडां – योद्धाओं । आवरत – संहार, ध्वंस । सावरत – लाल । उझाळौ – (?) । पछे – बाद में । असुरै – यवनों । सुरै – हिंदुओं माथो-पटक – बहुत प्रयत्न करके । नीठ–कठिनता से । मारियो – मार डाला । काळौ – वीर ।

गीत पंखाळो ३

भाखै धिन मरण तुहाळो "भीमा", मुडि संचरता भाग मिठै ।
जळ भूलियां मिटै ग्रभ जेथी, तूं धारा झीलियौ तठै ॥१॥
ग्रंत ग्रखिग्रात वात "ग्रमरा" सुत, ग्रवरै नरे न होय ग्रांन ।
वार सनांन जठै जगि वांछै, सार तठै तै कियौ सनांन ॥२॥
सीसोदिया सुग्रित ग्रीत सारीख, घरण दळ हुग्रो वहंतै धाय ।
तातै लोह छोह गंगा तट, मंजन कियौ महा-रिण माय ॥३॥
(चतरौ मोतीसर)

गीत छोटौ-सांणोर ४

जुग चार हुग्रा मो भारत जोतां, ग्ररक कहै ग्रा वात ग्रथाह ।
"भीम" तणै घड़ भांजे भवसां, माथौ साबैसै रण मांह ॥१॥
सीसोदिया तणौ सूरापण, भांण गयण-पत साख भरै ।
दळ ग्रफड़ै दळां दहुं दुजड़ी, कमळ कळह बाखांण करै ॥२॥
विढतो "भीम" साथियां वधतौ, साखी सूर उडंतै सास ।
धड़ वढियौ घड़च्छै ग्ररि धारां, सिर पड़ियौ ग्राखै साबास ॥३॥
ग्रै बातां ग्रखिग्रात "ग्रमरावत", कैरवां पांडवां जेम कर ।
पड़तौ धड़ पाड़तौ पंचाहर, सिव बींधियौ बोलतौ सर ॥४॥
(कल्यांणदास महड़ू)

शब्दार्थ—धिन – धन्य । तुहाळो – तेरा । मुडि – मोड खाने पर । संचरता – गमन करने पर । भाग – दुष्कर्म । मिठै – नाश होते हैं । भूलियां – स्नान करने पर । झीलियौ – स्नान किया । धारा – तलवार । तठै – वहां । ग्रखिग्रात – ग्रद्भुत । वार– वारि, जल । सनांन – स्नान । जठै – जहां पर । जगि – संसार में । वांछै – इच्छा करते हैं । सार – तलवार । तैं – तूने । मंजन – स्नान ।

ग्ररक – सूर्य । ग्रथाह – ग्रद्भुत, विचित्र । भवसां – यवनों । माथौ – मस्तक । साबासै – धन्य धन्य करता है । गयण-पत – गगनपति, सूर्य । साख भरै – साक्षी देता है । दळ – शरीर । ग्रफड़ै – युद्ध करता है । दळां – सेनाग्रों । दुहुं – दोनों । दुजड़ी – तलवार । कमळ – मुख । कळह – युद्ध । बाखांण – प्रशंसा । विढतो – युद्ध करता हुग्रा । साथियां – साथ वालों । वधतौ – विशेष । धड़ – शरीर । वढियौ – कटा हुग्रा । घड़च्छै – काटता है, मारता है । ग्ररि – शत्रु । धारां – तलवारों । ग्राखै – कहता है । साबास – वाह वाह । पाड़तौ – मारता हुग्रा । पंचाहर – ? बींधियौ – बींधा ।

गीत वडो सांणोर ५*

प्रळै होवै भड़ भिड़ज रिण-ताळ लेखा पखै,
खत्रीपत भीम आवाहतै खाग ।
गिरंद वत राखियां तणी परियड़ी गज,
नीजूड़ै सूंड पांखवा-नाग ॥१॥

अरि चंचळ घणा लाखां गणा आवटै,
"अमर" रै खाग आवाहतै एम ।
ढाळिया सिखर जेम हसती ढहै,
तूंड तूटै वहै परी रह तेम ॥२॥

पिसण हैमर कचर कीधा केलपुरै,
निबह खग पछटतै बळव-नांमी ।
गिरंद वत राखिया पांखिया-भुयंग पत,
गज-घड़ां पोगरां गयण-गांमी ॥३॥

मिटतै "खुरम" "भीमेण" म्रत दिन मछर,
वीढै बीछोड़िया खाग बाहै ।
पड़ै गज सबळ - घड मंडळ ऊपरा,
मिळै गज-कमळ वाउ-मंडळ मांहै ॥४॥

(चतरौ मोतीसर)

शब्दार्थ—भिड़ज – घोड़ा । रिण-ताळ – युद्ध, युद्ध-स्थल । पखै – बिना । गिरंद – पर्वत । वत – समान । नीजूड़ै – कटकर दूर होती है । पांखवा-नाग – पंखों वाले सर्प । चंचळ – घोड़ा । ढाळिया – गिराए । ढहै – गिर गये, गिर पड़ते हैं । पिसण – शत्रु । हैमर – घोड़ा । कचर – ध्वंस । केलपुरै – सीसोदिए भीम । पछटतै – प्रहार करते हुए । बळव-नांमी – भीम । पोगरां – सूंडों । गज-कमळ – हाथियों के मुख । वाउ-मंडळ – वायु-मंडल ।

---

*गीत नं० २ से गीत नं० ५ तक में टौंस नदी के तट पर पटना के पास हाजीपुर के मैदान में होने वाले शाहजादा परवेज तथा खुर्रम के युद्ध के संबंध में भीम सीसोदिया के विषय का विस्तृत तथा काव्यात्मक बड़ा सुन्दर वर्णन है ।

२. मानसिंह सकतावत

गीत छोटौ सांणोर १*

मेवाड़ थकां पूरब गढ माल्है, अइयौ "सगत-हरा" उनमांन ।
जग परदेस जीववा जावै, मरवा गयौ करारौ 'मांन' ।।१।।

मांटोपणौ तुहाळौ "मांना", रहियौ घणूं घणां दिन रोस ।
कोस हेक मरवा जावै कुण, कवळौ गयौ हजारां कोस ।।२।।

मानसींघ धन धन मेवाड़ा, अत प्रब "भीम" तणौ अवसांण ।
जोळा हुअै घणा नर जीवा, भेळौ हुऔ समो-भ्रम "भांण" ।।३।।

पोह वदियौ "जांगीर पातसा", कहीयौ धिन्न रांणै "करण" ।
ऊगतां सूरज जिम ऊगौ, मानसींग वाळौ मरण ।।४।।

(दुरसौ आढौ)

गीत सोरठियौ २.

सूरा बहसिया कारिमा सूसिया, नहसिया नीसांण ।
"मांनड़ा" तो जस मेलियौ, आज रौ अवसांण ।।१।।

जाळ खाधौ साहिजादे, ढाल गज तूं ढाहि ।
"मांनड़ा" दळ तणा मंडण, मांडि पग रिण मांही ।।२।।

शब्दार्थ—थकां – होते हुए । माल्है – गया । अइयौ – अरे, हे । सगत – महाराणा प्रतापसिंह का छोटा भाई शक्तिसिंह । हरा – वंशज । उनमांन – अनुमान । करारौ – वीर । मांन – मानसिंह शक्तावत । मांटीपणौ – बहादुरी, पराक्रम । तुहाळौ – तेरा । घणू – बहुत । कवळौ – वीर । मेवाड़ा – मेवाड़ का, सीसोदिया वंश का । अत – अति, महान । प्रब – पर्व, महोत्सव । जोळा – पृथक् दूर । भेळौ – साथ, शामिल । समो-भ्रम – पुत्र । भांण – मानसिंह शक्तावत का पिता । पोह–वीर । वदियौ – कहा । जांगीर पातसा – बादशाह जहांगीर । करण – महाराणा करणसिंह ।

सूरा – वीर । बहसिया – जोश में आये । कारिमा – कायर । सूसिया–भयभीत हुए । नहसिया – बजे । नीसांण – नगाड़ा । मांनड़ा – हे मानसिंह । मेलियौ–भेजा । जाळ – कपट । दळ – सेना । तणा – का । मंडण – आभूषण ।

---

*गीत नं० १ से गीत नं० ३ का नायक मानसिंह शक्तावत महाराणा उदयसिंह के पुत्र शक्तिसिंह का पौत्र तथा भाण शक्तावत का पुत्र था। प्रसिद्ध वीर भीम सीसोदिया का घनिष्ठ मित्र था तथा भीम सीसोदिया के साथ ही हाजीपुर पट्टन के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ । विशेष विवरण के लिए ग्रंथसार देखें ।

खुरम खां दराब खीसिया, ग्रहसिया ग्रांबाट ।
ग्रवियाट दूजा ग्रचळा, थोभियो गज-थाट ॥३॥

फिरै मुहडै गजां फोजां, धजां नेजां ढाहि ।
"भांण-रो" गौ गयण भेदे, "मांन" हरी-पुर मांहि ॥४॥

(जंतो महियारियो)

गीत प्रहास सांणोर ३.

समंद पूछियो गंग सूं रूप पैखे सुजळ, वहै जमना किसूं नवल वांनै ।
ऊजळी धार पतसाह घड़ ग्राछटै, मेळियो रातड़ो नीर "मांनै" ॥१॥

महोदध पूछियो कहो मो सहसमुख, जमन की नवो सणगार जुड़ियो ।
"भांण"-रै लोह सुरतांण घड़ भेळियो, चळोवळ पंड मो पूर चडियो ॥२॥

थागियळ पूछियो भणो भागीरथो, सांवळो नीरज किसो समोहां ।
साहरी फौज "सगता" हरै सींघळी, लाल रंग चढियो मार लोहां ॥३॥

जोय जमना जुगत रीझियो समंद जळ, विगत हेकण वडी गंग वाती ।
हिंदवै-राव ग्रोताळियो लोह हद, रगत मेछां तणो नदी राती ॥४॥

(चतरो मोतीसर)

शब्दार्थ—ग्रहसिया – बजे । ग्रांबाट – नगाड़ा । ग्रवियाट – वीर । थोभियो – रोका । गज-थाट – हाथियों की सेना । भांण – मानसिंह के पिता का नाम । हरी-पुर – विष्णुलोक ।

पैखे – देखकर । नवळ – नवीन, नया । वांनै – पहनावा, पोशाक । घड़–सेना । ग्राछटै – मार कर । मेळियो – मिला दिया । रातड़ो – लाल, रक्त । मांनै – मानसिंह सीसोदिया । महोदध-महोदधि, समुद्र । भणो – कहो । सांवळो–श्याम । समोहां–मोहित करने वाला । साहरी – बादशाह की । सगता – शक्तिसिंह । हरै – वंशज । घळी – वीर । जोय – देख कर, समझ कर । जुगत – युक्ति । रीझियो – प्रसन्न हुआ । विगत – वृत्तान्त । हेकण – एक । हिंदवै-राव-हिंदू राजा । ग्रोताळियो – प्रहार किया । लोह – ग्रस्त्र-शस्त्र । हद – बहुत । रगत – रक्त, खून । मेछां – यवनों, म्लेच्छों । तणो – के ।

३. गोकलदास सकतावत*

गीत छोटो सांणोर १

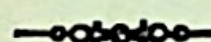
"भीमाजळ" मोहोर झेलिया भारत, घणें पेसि गज-बोह घणौ ।
लागा "मोकळ"-तणे जे लोहड़, ताह दूखै भागिली तणौ ॥१॥

बीजू - झळां खळां बीहरतौ, मेलिया घाव पडंतां मार ।
भंजिया अंग तणा भांणावत, साले पहां तजिया त्यां सार ॥२॥

"सगता"-हरा तणौ समरांगण, वणिया तन ह्वै खंड विहंड ।
रूक न लागा तियां रावतां, पीड़ा मिटै नह तियां पिंड ॥३॥

कूंत बांण केवांण कटारो, केलपुरै खमिया कंठीर ।
राजा मेल्हे गया तिके रण, साजा नह ह्वै तियां सरीर ॥४॥

(चतरौ मोतीसर)



शब्दार्थ—भीमाजळ – भीम सीसोदिया । मोहोर – हरावल, पूर्व । झेलिया – सम्हाला, सहन किया । गज-बोह – गज-व्यूह, हाथी-दल । लोहड़ – शस्त्र प्रहार । ताह – वे । भागिली – भग जाने वाला, कायर । बीजू-झळां – तलवारां । खळां – शत्रुओं । बीहरतौ – मारता हुआ । मेलिया – लगाये । हरा – वंशज । समरांगण– युद्ध-स्थल । रूक – तलवार । रावतां – योद्धाओं । तियां – उन । कूंत – भाला । केवांण – तलवार । कैलपुरै – सीसोदिये । खमिया – सहन किये । कंठीर – वीर । मेल्हे – छोड़कर । रण – युद्ध । साजा – स्वस्थ ।

*यह वीर गोकुलदास महाराणा प्रताप के छोटे भाई शक्तिसिंह का पौत्र, भाण का पुत्र तथा पूर्वोल्लिखित मानसिंह का छोटा भाई था। जोधपुर के मोटे राजा उदयसिंह का दोहिता था। भीम सीसोदिया के साथ यह युद्ध में घायल हो गया था । महाराजा गजसिंह युद्ध-स्थल से इसे उठा कर अपनी सेना में ले आये और उन्होंने इसकी चिकित्सा का प्रबन्ध किया। इसके पूर्ण स्वस्थ होने पर इसे जागीर भी प्रदान की ।

परिशिष्ट ४

ग्रंथ में वर्णित अन्य वीरों के गीत

१. राव रतनसिंह हाडौ (बूंदी)

गीत खुड़द सांणोर*

असिमर आचार भार आवरियै, मेर प्रमांणै कीयै मन।
हींदूकार तणौ ध्रम हाडा, रहीयौ पै आवै "रतन" ॥१॥

पिडि पतसाह भांजिजै पाधरि, सरणै पिडि गाहिजै सुज।
तो सुजाउ वेद मै भाखित, भुजै विराजै इसा भुज ॥२॥

दळां सनाह सगाह दिलीवै, वाह वाह वाधै वयण।
रज छाडियौ बियै राई-तनि, रज ताइ वपि छाजै "रयण" ॥३॥

कळिया असुर तापि अनिकारां, नहंगि विलागै वडिम नित।
सवदी वधै कळोधर "सुरिजन", कमळ जिहीं चह्वांण क्रत ॥४॥

शब्दार्थ—असिमर – तलवार। आचार – दान, वदान्यता। पिडि – युद्ध। पाधरि – खुला मैदान। भाखित – कहा गया है। दिलीवै – बादशाह। वाह वाह – धन्य-धन्य, शाबाश। बाधै – बढते हैं। वयण – वचन। रज – क्षत्रियत्व, शौर्य। छाडियौ – छोड़ दिया। बियै – दूसरे। राइ-तनि – राजाओं। ताइ–तेरे। वपि–शरीर में। छाजै – शोभित होता है। रयण – रतनसिंह। कळिया – फँस गये। असुर – यवन। तापि – भय, आतंक। अनिकारां – वीरों। नहंगि – आकाश में। विलागै – लगता है। वडिम – बड़ा। कळोधर – वंशज, कुल को धारण करने वाला।

---

*प्रस्तुत गीत में राव रतन हाडा के शौर्य और पराक्रम का वर्णन मात्र है।

२. मिर्जा राजा जयसिंह महासिंघोत कछवाह

गीत वडौ सांणोर*

लड़े मुड़ौ पतिसाह, विमुहा खडौ लसकरां,
रिण पड़ौ घणी धारां तणी रीठ ।
किम फिरै पीठ जैसिंघ क्रूरम तणी,
प्रिथी चौ भार क्रूरम तणी पीठ ।।१।।

लोप हिंदवांण पाताळ अणलोपियां,
कोप असुरां सुरां घणो करतां ।
निज बिन्है मोर फेरै नहीं परम-अंस,
फुरै पुड धरा चौ मोर फिरतां ।।२।।

तदि हुवौ "मांन" हर अडिग "माहव" तणौ,
साह सेनाह जदि पड़ै सांसै ।
कछव कछवाह वांसौ पलट करै किम,
वसुह ची मांड बिहुं भड़ां वांसै ।।३।।

अडग हिंदवांण परसाद तीरथ अनंत,
सहू आलम कलम हुआ साखो ।
कूरमां बिहू रण पूठ अण-फेर करि,
रैण ऊथल-पथल हुती राखी ।।४।।

(पूरौ महियारियौ)

शब्दार्थ—विमुहा – उलटा, विमुख । खडौ – चलाओ । लसकरां – सेनाओं । तणी – की । रीठ – प्रहार । हिंदवांण – हिन्दुस्तान । बिन्है – दोनों । मोर – पीठ । परम-अंश – कच्छपावतार । फुरै – डोल जाता है । पुड – तह, प्रत । तदि– तब । तणौ – पुत्र । जदि – जब । सांसै – संशय में । कछव – कच्छपावतार । वांसौ – पीठ । वसुह – पृथ्वी, संसार । मांड – रचना । बिहुं – दोनों । भडां – योद्धाओं । वांसै – पीठ पर । परसाद – देवमंदिर । सहू – सब । साखी – साक्षी । रैण – पृथ्वी ।

---

*इस गीत में भी मिर्जा राजा जयसिंह प्रथम के शौर्य पराक्रम का ही बड़ा सुन्दर वर्णन है ।

३. जोगीदास भाटी

गीत वेलियौ सांणोर*

गजदंतां परै फूटै गज केसरि, गज चै कमळ पडंतै गाढ ।
जादव मांहि थकै जमदाढां, "जोगै" श्रा वाही जमदाढ ॥१॥

गोइंद - उत दाखवै गाढिम, दंत दूवा सूं थकै दळ ।
काळ तणै वसि थियै कटारी, काळ तणै वाही कमळ ॥२॥

भांगै डील भलौ राय भाटी, कुंजर थकै भयंकर काळ ।
श्रायै मुख रांणा मुख श्रंतर, मुख जम तणै जड़ी प्रत माळ ॥३॥

श्राधंतर काढै श्रणियाळी, कुंभाथळ वाहो कर क्रोध ।
श्रंतक सूं "जोगै" जिम श्रागै, जुध करि मुवौ नहीं कोई जोध ॥४॥

(केसोदास गाडण)

शब्दार्थ—कमळ – मस्तक । मांहि – भीतर, में । थकै – होते हुए । जमदाढां–यमराज के दांत । जमदाढ – कटार । दाखवै – प्रकट करता है, बताता है । गाढिम–बल, शक्ति । दूवा – दो । दळ – शरीर । भांगै – तोड़ कर । डील – शरीर । प्रत माळ – कटार । श्राधंतर – श्राकाश के मध्य । श्रणियाळी – कटार । श्रंतक – यमराज । जोध – वीर, योद्धा ।

---

* १. जोगीदास भाटी गोइंददास भाटी का पुत्र था । इसको महाराजा सूरसिंहजी ने बींजवाड़िया ग्राम जागीर में दिया था । वि०सं० १६६८ में श्रांबेर के राजा मानसिंह कछवाह के नौकरों ने किसी कारणवश मस्त हाथी को जोगीदास पर छोड़ दिया । उस समय जोगीदास घोड़े पर सवार था । मस्त हाथी ने जोगीदास को घोड़े पर से सूंड में पकड़ कर श्रपने मुख में ले लिया । वीर जोगीदास के पास कटार थी, उसने भी कटार के कई वार हाथी के कुंभस्थल पर किये, जिससे हाथी मर गया; परन्तु हाथी ने इसको इस प्रकार से श्रपने दांतों में दबोच लिया था कि उस के मुख से छूटने पर भी यह वीर जीवित नहीं रहा । उक्त घटना संबंधी गीत में ग्रंथ-रचयिता महाकवि केसोदास गाडण ने जोगीदास की बहादुरी का वर्णन किया है ।

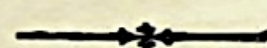
४. सादूल पंवार

गीत पंखाळो*

करि लेखणि कूंत पुडि करि कागद, मस करि मांस रुधर करि मूळ ।
मांडै मंडोवर मेड़ता माथै, सबळा खत लिखिया "सादूळ" ।।१।।

कलम छड़ियाळ समर करि पाठौ, घण खळ सुद्रब आखरां घाव ।
साखां तेरह सम्है समरि करि, सल्है वैर धरि "माल" सुजाव ।।२।।

लेख घणौ साबळां लिखांणौ, अंग असि मसि करि दैत अरि ।
धार पुरा लगि कटि धूहड़, कळिनांमौ राखियौ करि ।।३।।



शब्दार्थ—मस – मसि, स्याही । मांडै – लिखकर । खत – पत्र । छड़ियाळ – भाला । समर – युद्धस्थल । पाठौ – कागज । साखां तेरह – राठौडों की तेरह शाखाएं । सुजाव – पुत्र । असि – तलवार । मसि – स्याही । धूहड़ – राव धूहड़ के वंशज । कळिनांमौ – युद्ध का लेख ।

*सादूल-पंवार संबंधी विवरण—भूमिका में देखें ।